

॥६०॥ उर्वरमः ॥ अथतीनचौईसीजीकानामअतीतलिष्यतेः ॥ छे
 निर्वाणजी ॥ १॥ सामरजी ॥ २॥ महासाधजी ॥ ३॥ विमलप्रभुजी ॥ ४॥
 मुखप्रभुजी ॥ ५॥ श्रीधरजी ॥ ६॥ दत्तजी ॥ ७॥ अमलप्रभुजी ॥ ८॥ उ
 रजी ॥ ९॥ अनिजी ॥ १०॥ संजमजी ॥ ११॥ शिवजी ॥ १२॥ पुंजांज
 लिजी ॥ १३॥ शिवगणजी ॥ १४॥ नत्साहजी ॥ १५॥ हानेश्वरजी ॥ १६॥
 होपरमेश्वरजी ॥ १७॥ विमलेश्वरजी ॥ १८॥ यशोधरजी ॥ १९॥
 हरजी ॥ २०॥ ज्ञानमतिजी ॥ २१॥ सुद्धिमतिजी ॥ २२॥ श्री
 रजी ॥ २३॥ श्रीशान्तिजी ॥ २४॥ इतिष्यम ॥ अथदितीपना
 श्रीकृष्णजी ॥ २५॥ अजितजी ॥ २६॥ संजवजी ॥ २७॥ अनिनंदनजी ॥ २८॥
 सुमति ॥ २९॥ पद्मप्रभुजी ॥ ३०॥ सुपाश्र्वीजी ॥ ३१॥ चंद्रप्रभुजी ॥ ३२॥ पुष्प
 दंतजी ॥ ३३॥ श्रीतलजी ॥ ३४॥ श्रेयांसजी ॥ ३५॥ वासपुष्पजी ॥ ३६॥
 विमलजी ॥ ३७॥ अनंतजी ॥ ३८॥ धर्मजी ॥ ३९॥ शान्तिजी ॥ ४०॥ कुं
 यनाथजी ॥ ४१॥ अरुदनाथजी ॥ ४२॥ मोमद्विनाथजी ॥ ४३॥ मनि
 सुव्रतजी ॥ ४४॥ नमिनाथजी ॥ ४५॥ नेमनाथजी ॥ ४६॥ श्रीपार्श्वत
 थजी ॥ ४७॥ वर्धमानजी ॥ ४८॥ इतिवृत्तिमानचौईसीनामसंपूर्ण ॥
 ॥ २॥ अथअनागतनाम ॥ महापद्मजी ॥ १॥ सुरदेवजी ॥ २॥ सुप्रभु
 जी ॥ ३॥ स्वयंप्रभुजी ॥ ४॥ सर्वायुधजी ॥ ५॥ जयदेवजी ॥ ६॥ उदयदे
 वजी ॥ ७॥ प्रनादेवजी ॥ ८॥ उदंकजी ॥ ९॥ प्रह्लाकीर्तिजी ॥ १०॥ जयकीर्त
 जी ॥ ११॥ पूर्णबुद्धिजी ॥ १२॥ निःकषायजी ॥ १३॥ विमलप्रभुजी ॥ १४॥ बह
 लजी ॥ १५॥ निर्मलजी ॥ १६॥ चित्रगुप्तिजी ॥ १७॥ समाधिगुप्तिजी ॥ १८॥
 स्वयंभुजी ॥ १९॥ कंदर्पजी ॥ २०॥ जयनाथजी ॥ २१॥ श्रीविमल
 २२॥ दिव्यवाहजी ॥ २३॥ अनंतवीर्यजी ॥ २४॥ इतितीनचौईसी
 कानामसंपूर्ण ॥ श्री ॥ ॥ छे ॥ ॥ अथजिनदर्शनलीष्यते ॥ दर्शनं
 देवदेवस्य ॥ दर्शनं पापनाशकं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं ॥ दर्शनं मो
 क्षसाधनं ॥ १॥ दर्शनेन जिनैज्ञाणं ॥ साधुनाम वंदनेन च ॥ न चियं
 तिष्ठते पापं छिद्रह्ययोदकं ॥ २॥ वीतरागमुखं हृष्टं ॥ पद्मरागस
 मप्रज्ञं ॥ अनेकजन्मकृतं पापं ॥ दर्शनेन विनश्यति ॥ बोधने
 तपस्य ॥ समस्तार्थप्रकासकं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य ॥ सम

करचरमशरीर॥ पावापुरस्वामीमहो॥ सिधरसमेदजिनेसुरवीस
 नावसहितवंदौजगदीस॥ ३॥ चरदतश्रौरइंद्रमुनिदसायरदत
 आदिगुणचंदनगरतारावरमुनिआवकोडि॥ वंदौनावसहितक
 जोडि॥ ४॥ श्रीगिरनारिसिधरविष्णुता॥ कोडिंवहेतरिअरुसैसात
 संवृष्टुमनकुमरदेनाय॥ अनिरुद्धआदिनमृतमुपाया॥ राम
 चंदकेसुतधैवीशलाडिनिरंदआदिगुणधीश॥ पंचकोडिमुनिमुक
 तिमफारा॥ पावागिरिवंदौनवपारा॥ ६॥ पंडवतीनवडेराजातअ
 वकोडिमुनिमुकतिप्रबाना॥ श्रीसितुंजसिधरकैसीस॥ नावसहित
 वंदौनिसदीस॥ ७॥ जेवलिनइमुकतिमैंगये॥ आवकोडिमुनिश्रै
 रनए॥ श्रीगजपंथसिधरसुविसाल॥ तिनकेचरननमूर्तिउंका
 ८॥ रामहणंसुग्रीवसुडील॥ गवगवधिनीलमहानील॥ कोडिनि
 न्याएवेमुकतिप्रमानि॥ तुगीगिरचंदौधरिधमान॥ एणनगानंग
 कुमारसजाना॥ पंचकोडिअरअर्थप्रबाना॥ मुकतिगएसे॥ नगि
 रसीस॥ तेवंदौत्रिभुवनपतिइसा॥ १०॥ रावणकेसुतआदिकुमार
 मुकतिगएरेवातटसरा॥ कोटिपंचअरलाषपंचास॥ तेवंदोधरिण
 रमउल्हास॥ ११॥ रेवानंदीसिधवरकुटा॥ पछिमदिसादेहजिह्व
 टधैचक्रीदसकामकुमार॥ अठकोडिवंदौनवपारा॥ १२॥ वडवाण
 वडनयरसुचंग॥ दषणदिसिगिरिचुलउतंग॥ इंद्रजीतेअरकुं
 नकरण॥ तेवंदौनवसारतिराण॥ १३॥ सुवर्णनइआदिमुनिआ
 रिपावागिरिवरसिधरमफारा॥ चलनानदीतीरकेपासि॥ मुकते
 ज्येवंदौनितितास॥ १४॥ फलहोडीवडगामअनुप॥ पछिमदिस
 दौंनगिररूप॥ गुरदत्तआदिमुनीस्वस्जहां॥ मुकतिनयेवंदौने
 तितास॥ १५॥ बालमहाबालमुतिदोय॥ नागकुमारमिलैत्रय
 होय॥ श्रीअष्टायदमुकतिमफारि॥ तेवंदौनितिपुरतिसनालि
 १६॥ अचलापुरकीदिसार्सान॥ तहांमेढगिरनामप्रधाना॥ सादे
 तीनकोडिमुनिगया॥ तिनकेचरणनमूचितलाय॥ १७॥ वंसस्थ
 वनकैदिगहोय॥ पछिमदिसाऊंयुगिरसोय॥ कुलनृषणदे
 सनृषणनामतिनकेचरनकरुप्रणांम॥ नसरथराजाकेसुतकहे

॥ देशकलिंगपं सेल है ॥ कोडिसिला मुतिको डिषावान वंदनको
 जोरि जुगपान ॥ १५ ॥ समोसरन श्रीपार्सेजिनंद ॥ रिसंदे गिरनेन
 नंद ॥ वरदत्त आदिपंचरिषराजाति वंदौ निति र्मजिहाजा ॥ २० ॥ ती
 नलोकके तीरथजहां ॥ निति प्रति वंदनकी जेतहां ॥ मनवचचा
 वसहित मिरनाय ॥ वंदनकरूं जगति उरलाय ॥ २१ ॥ संवतसत
 रास इकताल ॥ जाव वंदनाकरूं त्रिकाल ॥ जयति रवां एकांडगु
 णामाल ॥ २२ ॥ इति निर्वाणकांडनाषासंपूर्ण ॥ अथ गायानि
 ष्यते ॥ वाजकामरजीकी नाषालिष्यते ॥ दोहा ॥ आदिपुषिषाद
 सजिन ॥ आदि सुविधिकरतरा ॥ धरमधुरंधरपरमगुरा ॥ तमो आदि
 अवतार ॥ २३ ॥ चौपई ॥ सुरनरसमुत्तरतनडविकरै ॥ अंतरपापति
 मरसवहरे ॥ जिनपदवंदौ मनवचकाय ॥ जवजलपतति उधारन
 सहाय ॥ २४ ॥ श्रुतपाराग इंद्रादिकदेवा ॥ जाकी युतिकी नीकरिसेव
 सवदमनोहर अरथ विसाल ॥ तिसप्रभुकी मनोयुनमाल ॥ इति व
 धवंदिपदमैमतिहीन ॥ कै निलजयुतिमनसाकीन ॥ जलप्रतिवि
 वबुद्धिकोगहै ॥ ससिमंडलवालकहीचहै ॥ २५ ॥ गुणसमुद्रतुवगु
 णअविकार ॥ कहतनसुरगुरूपाधेपाग ॥ पलयपवनउद्धतजल
 जंत ॥ जलधितिरैकोनुजवलवंत ॥ २६ ॥ सौमैसकति हीनयुतिक
 रो ॥ जगतिजावचसिकडूनहीडेरें ॥ ज्योमृगनिजसुतपालन
 हेत ॥ मृगपतिसनमुषजायअचेत ॥ २७ ॥ ह्रसवसुधीहसनकै
 धाम ॥ तुममुफनगतिबुलवैशम ॥ ज्यौपिकअवकलीपरनावम
 धुरतिमधुरकरैआराव ॥ २८ ॥ तुमजसजंपतजिनछिनमाहि ॥ जन
 मजनमकेपापनसाहि ॥ ज्योरविउदैफटेततकाल ॥ अलिबल
 नीलनिसातमजालाग ॥ तुमप्रनावतैकरौविचार ॥ हेसीयह
 युतिजनमनुहार ॥ ज्येजलकमलपत्रमैपैरेसुकतिहलकं ॥
 इतिविवहरे ॥ २९ ॥ तुमगुणमहिमाहतउषदेय ॥ सोतौडरिगहो
 षपोषा ॥ पापविनासकहेतुमनाम ॥ कमलविकासैज्योर
 ॥ ३० ॥ नहिअचंजजोहोइतुरंत ॥ तुमसेतुमगुनव
 जोअधीनकौआपसमांत ॥
 इकटकजनतुमकौअवलोय ॥

कौकरिषीरजलधिजलपांन॥प्यारतीरपीवैमतिमान॥२१॥प्र
 दमवीतरागगुनलीन॥जिनपरिमाणुदेहंतुमकीन॥हेतितनी
 हीतेपरिमाणु॥तातैतुमसमरूपनश्राना॥२२॥कहंतुममुखअनु
 पमअविकार॥पुरनरनागनैतमनुहार॥कहंतुमचंद्रमंडलसकल
 क॥दिनमैठाकपत्रसपरंक॥२३॥पूरणचंद्रज्योतिष्ठविवंत॥तुम
 गुणतीनजगतलंघंत॥एकनाथजोतुमआधार॥तिनविचर
 तकोसकैनिवार॥२४॥जोसुरतियविजूमआरंज॥मननडिगैतुम
 तौनआचंन॥अचलचलावैप्रलयसमीर॥मेरसिधरडिगम
 गैनधीर॥२५॥धूमरहितवातीगतनेह॥परकासकत्रिभुवनध
 रएह॥वातगाम्पनांहीपरचंड॥अपरदीपतुमवलैअघंडा
 छिपहिनलिपहिरहकीछं हजगपरकासतहोछिनमांहि॥घनअ
 वरतरुदाहनिवारवितैअधिककरोगुणसार॥२६॥सदाउदाउ
 दितविदलिततममोहविषटितमेघराहअबोह॥तुममुषक
 मलअपूरवचंद॥जगतविकासीज्योतिअमंद॥२७॥निसदि
 नससिरविकौनिहीकाम॥तुममुषचंदहरेतमधामाजोसुम
 वतैउपजेनाज॥सजलमेघतेकौनैकाज॥२८॥जोसुबोधसोहैव
 ममांहि॥हरिहरादिकमैसोनांहि॥जोउतिमहारतनमैहोश
 काचघंडनहिपावसोइ॥२९॥नाराचछंदः ॥सागदेवदेधि
 वीतरागतपिछानिया॥कछुनताहिदेधितैतहांतुहीविसे
 धियो॥मनोगिचितचोरिअौरभूलिहूनदेधियो॥३०॥अनेकपृ
 त्रवंतनीनितंविनीसपूतहेनतौसमानपुत्रअोरमाततेप्रसूत
 हेदिसाधरंतितारिकाअनेककोटिकौगिनै॥दिनेसतेजवंता
 कपूर्वहीदिसाजानै॥३१॥पुरानंहौपुमानहोपुनीतपुंनिवांन
 हो॥कहेमुनीसअंधकारनासके॥सुजांनहोमहंततौहिजा
 नकैनहोइवसिकालके॥नअौरमोक्षमोषिपंथदेवातोहिद
 रिकौ॥३२॥अनंतनित्यचितकीआगम्परम्पआदिहो॥अौंसं
 षसर्वआपिदिसुबुब्रह्महोअनादिहो ॥३३॥महेसकामदे
 तजोगार्इसजोगजानहो॥अनेकएकपानरूपमुधसंतमान

०जाषा.
३

॥२५॥ तुही जितेस बुध हो सुबुद्धिके प्रमांनतैं ॥ तुही
जगत्रय विधांनतैं ॥ तुही विधात हो सही सुमो विपंथधारतैं
तुही प्रसिद्ध अर्थके विचारते ॥२६॥

प्रापदा निवार हो नमोक संसृजि मूलो कके सिंगार हो

तुही

यदेत हो ॥२७॥ चौपरी ॥ तुम पूरन जिन गुणगन नये
न करितुम परिहरे ॥ और देव गुण आश्रय पाय
फिरितुम आय ॥२८॥ तरु अ सो कत ली
तन सो नित है अ विकार ॥ मेघनि कट ज्यो ते ज फुरंत
ति मरनि हनंत ॥२९॥ सिंहासन मणि किरण
ति मपरिकंचन वरण प्रवित्र ॥ तुम तन सो नै किरण
॥ ज्यो न हया चल रचित मह रि ॥३०॥ कुंदन पद्म सित च
दलंत ॥ कनक चरन तुम तन सो जंत ॥ ज्यो सुमेर तट निरम
कांति फिरि नां जरे नीरु मगांति ॥३१॥ कुंचोर है मूर डति
प ॥ ती न छत्र तुम दिपै अगो प ॥ ती न लोक की प्रनुता
॥ मोती फालर सो छ विल है ॥३२॥ डंड नि सव दग ह
चंडि सि हो हितु हो र धीरै ॥ त्रिभुवन जन सि व

संगम करै ॥ मानो जय जय रवि न चरे ॥३३॥ मंद पवन मं
दक इष्ट ॥ विविध कलप तरु पुष्प सुदृष्टि ॥ देव करै विग
तदल सार ॥ मानौं धिज पंकति अवतार ॥३
डाल जे न चंद स वडति वंत करै त हे मंदा ॥ कोटि संष्पर
ज छिपाय ॥ ससिनिर्मल निमि करै अछाय ॥३५॥
मारग संकेत ॥ परम धर मउ पदेसन हेत ॥ दि
र अगाध ॥ सब जाषा गरजित हित साध ॥३६॥ दोह ॥
त सुवर्ण कमल सुतिने प्रदुति मिलि चमकां हि ॥ तुम पद
पद चीज ह धरै ॥ त हे सुर कमल रचां हि ॥३७॥ त्रै
तुम विषै और धरै न ही कोश ॥ सुरिज मै जो ज्यो ति है न ही
तारागत सोय ॥३८॥ ॥ डाल किकर पत की मद अलि
कपोल मूल अलि कलकं करै ॥ तिन सनि सष्ट प्रचंडक

उध तसि रथारे कालवरणविकरालकालवतसनमुषत्र १
 वै ॥ औरापतिकीसरससकलजननयउपजावै ॥ देषिगयं
 दनयकरै तुमपदमहिमांलीन ॥ विपतिरहितपतिसहित
 वरतैनागातिअदीन ॥ ३७ ॥ अतिमयमंतगयंदकुनथल
 नषनविदारे ॥ मोतीरक्तसमेतडारिभूतलसिंगारे ॥ वाकी
 दादविशालवदनमैरसनालोलै ॥ नीमनयकररूपदेषिज
 नथरहरडोलै ॥ अैसेमृगपतिपगततैजेनेरेआयाहेष ॥
 मरणगहैतुवचरती ॥ वाधाकरैतसोया ॥ ४० ॥ प्रलयपवनक
 रिउगीअगिजोतासपटंतर ॥ वमैफुलिंगीसिघाउतंग ॥ पर
 जलैनिरंतर ॥ अगतसमस्तहिनिगलिकैनसमकैगीमानैस १
 तडंतडाददावानलजोचहुदिसाउवानो ॥ सोइकछिनमै
 उपसंमैनामनीरतुमलेतहोइसरोवरपवनरतवैविगसि
 तकमलंसमेत ॥ ४१ ॥ कोकलकंवसमानस्यामतनक्रोध
 जलंतो ॥ रक्तनयनफुंकारमारविसकनउगलतौ ॥ फण ॥
 कोउचौकरैवेगिहीसनमुषत्रावै ॥ तवजनहोइनिसंकदे
 षिफणपतिकौआवैजोपचैनिजपावकौ ॥ आपैविषनल
 गारनागदमनिनुमनामकौ ॥ तिनकौहैआधार ॥ ४२ ॥ जिस
 रणमांहिजयांनकसवदअतिकरहितुरंगम ॥ घनसेगज
 गरजांहिमतमानौगिरजंगम ॥ अतिकोलाहलमांहिवात
 जहांनाहिसुणिजिराजनकौवलचंडदोषेचलधीरजडी
 जौ ॥ नाथतुहरेनामतैसोछिनमांहिपलायज्योदिनकर
 परकासतैअंधकारमिडिजाय ॥ ४३ ॥ मारेजहांगयंदकु
 सहाथिमारविदारे ॥ उमगेरुधिरप्रवाहवेगिजलसेविस
 तारे ॥ नएतरुणअसमर्थमहाजोधावलपूरे ॥ जिसरिण
 मैजिनतौहिनक्तजेहैरणसरे ॥ हर्जयअरिकुलजीति
 कौ ॥ जयपावैनिकलंक ॥ तुमपुंयंकजवनवसेतेनरसद १
 निसंका ॥ ४४ ॥ नक्रवक्रमकरादिमलुकरिनयनुपजावै ॥
 जामैवडाअगिनितेजनिजतीरजलावैपारनपायोनास

सथाहनहीलहियेजाकी॥गरजैओगंतीरलहरिकीगिएतिन
 ताकी॥सुप्रसौतिरैसमुद्रकौ॥जेजेतुमगुणमरांहि॥लोककिले
 लनिकेसिघरपारजांनलेजाहि॥ध५॥महाजलोदररोगनार
 पीडितनरैजेहे॥वातपित्तकफकुष्ठआदिजेरोगमहैहे॥सोवै
 रहैउदासनांहिजीवनकीआसा॥अतिघिनांवनीदेहधरै
 डगंधनिवासा॥तुमपदपंकजधूलिकौ॥जेलवैनिजअंग
 तेनियोगसरीरलही॥छिनमैहोहिअनंग॥ध६॥पावकंचै
 लेकरिवाधीसांकलनारी॥गाढीविडीपहरिमांहिजिनजाय
 विदारी॥जूषपासवितासरीरइषजेविलतानैसरननांहि
 तहांकोइरूपकैवंदीवाने॥तुमसुमरतस्वयमेवही॥बंधनस
 वषुलिजांहि॥छिनमैतेसंपतिलहैचिंताजयविनसांहि
 ध७॥महामत्तगजरजत्रौरमृगराजदावानलफणपति
 रणपरचंद्रनीरनिधिरोगमहावल॥बंधनएनयआवडर
 पिकरिमानौनामैतुमसुमरतछिनमांहिअनैयांनकपर
 गासै॥इसअपरसंसारमैसरननांहिअरुकोश॥यातैतुम
 पदजकिहीनक्तिहीइहोय॥ध८॥इहगुनमालविसालन
 यतुमगुणनिसवारीविविधिवर्णकेपुष्पथिमैजतिवि
 यारी॥जिनरपहरैकंतनावनामैनावै॥मानतुंगतेतिजाय
 नासिवलबमीपावै॥नाषाजक्तामरकीयो॥हेमराजहितहे
 ता॥जेनरपदैसुनावसौ॥तेपावैसिवघेताधर्ण॥इतिजक्ता
 मरजीकीनाषासंपूर्ण॥अथएकीनावजीकीनाषादोह
 वंदौश्रीजिनराजपदा॥रिधिसिद्धदातार॥विघनहरनमंगल
 कर॥हारिइदलनअपार॥१॥चौपई॥:मिथ्याजावकरम
 बंधनयो॥इनिवारनवनवडुषदयो॥सोसवनामसजागते
 तेहोश॥रहैनप्रभूडुषकारणकोश॥२॥गपीनिओतिअघ
 तमच्छयकार॥अघटप्रकासकहैगाणधार॥मोमननवन
 वसैतुमनांमतहांनरमतिमरकोकाम॥३॥पूजागदगदवच
 मनलाय॥करोहरषजलवदननुवाय॥विषैमालचिरका
 लअपार॥नाजैतजितनववईवार॥ध॥प्रथमकनकमैरुसक

नविकजागसुरतैश्रवतस्यौ॥चितयहभानतुमत्राय करेदे
 हेमजतचिन्नतकाय॥५॥वितस्वस्यसकजगसुषदाय॥जान्योस
 र्वद्वरवपस्जाय॥जगतिरचीतितसंज्यासोहितुमवसुषगन
 कैसैहोहि॥६॥जम्योजगतवनमैचिरका॥७॥उपजोषेदत्रमि
 विकराल तुमनेयमुधंसीतवावरीपुंतिउदैत्तहि सवतपहरी
 ७॥गमतप्रजावकमलकैदैत्त॥परिमलश्रीजुतकनकश्रे
 व॥मोमेनपरमैतुमसवकाय॥कौननमिलैमुकैसवसुषत्रा
 य॥८॥विधिवनतत्रिसिवसुषधरकीयो॥मदनमानछिनमै
 हरिलीयो॥पीतपात्रवचसुधापीवंत॥विषेरोगरिषत्रासह
 नंत॥९॥तुमदिगमानसयंजंजुरदै॥रतनरांसिवरुसोनाल
 है॥देषतमानरोगड्यहोय॥जदपीहैपाहणमैसोय॥१०॥तु
 ममूरतिगिरसपरसवाय॥लौंकर्मरजपुंजपुलाय॥ध्यान
 तैहिनुरकमलमकार॥होइपरमपदजगतिस्तार॥११॥
 जवजवपायोडुषत्रपार॥यादिकरतलागतत्रसिधार॥
 तुमसवजानप्रधानकपाल॥करीजगतित्रवहोहदयाल
 १२॥पापीस्वोनत्रतकीवार॥लह्योसुरगसुषसुनिनवका
 र॥जयोत्रमलमतुमजगवान॥त्रविरजकहावरोसिव
 थाना॥१३॥तुमप्रजुसुधगपानद्रिगवंत॥तोवीजगतिवि
 जोसंत॥मोहजरेदिहमोषिकिवार॥मोलिसकेनलहैसु
 षसाग॥१४॥मुकंतिपंथत्रघतमवहुजस्यौ॥गदेकलेसवि
 षमविसतस्यौ॥सुषस्यौसिवपंदपुहचैकोय॥जोतुमवचम
 नदीपनहोय॥१५॥करमधरात्रातमनिधिभूरि॥दवीकनी
 पाचैनहीचूरे॥जगतिकुन्दा लषोदिलहि॥मंतविलसैपरम
 नदतुरंत॥१६॥स्यादवादहिमगिरस्योचली॥तुमपदपरसिउद
 धिसिवरली॥जगतिगंगमैमोमंतन्हाय॥कौनपापमलका
 लुषितजाय॥१७॥परमातमथिरपदसुषमई॥मैसदोषतुम
 समबुद्धिनई॥यदपिवसतईहभानतुम्हार॥तदपिसुवांछि

कीजा-जा

५

तफलदाता॥१९॥ वचनत्रयधिसवजगविसतस्यो॥स्यादन्न
हरिमिय्यामलहस्यो॥धिरमनषादशांगमनधरे॥प्यानसु।
धापीजमनयहरो॥सोनारंचकूदेवनलहै॥तुमनियरिशह
अजेमतोग॥कोनकीजनृषनअमिजोगंतुमसोजानहीईइ।
जुन्यो॥एकाअवतारीसोजयो॥लोकनाथनचवारिधिपोत
मुकतिपंचइहिविधियुतिहोत॥२०॥एथुतिवचनमुपुदग
लरूप॥नहीआपैतुमगुणचिदुप॥तदपिनगतिदिदमुधा
जुगहै॥मनबंधितफलसुरतरलहै॥२१॥रागदोषविनुपर
मनुदास॥चाहरहितअरसवजगदास॥जुवनतिलकु
मदिगारिपुनसे॥यहपुनताकडुआंनलसै॥२२॥जसा
वेसुरनारिअपार॥ग्यानरूपग्यायकसंसार॥घादसांगप
गपविमोहनरहै॥थुतिकरिसुगमपंचमिवलहै॥२५॥अ
नतचतुष्टयरूपनिहाल्लधावेमनरूचिसहितत्रिकाल
पुनिवानसुनमारगहोश॥तीर्थंकरपदविलसैसोय॥२५॥
इंद्रसेवकरिपारनलहै॥गगंधरादिसवगुणनहीकहैह
ममतितनककियोकबहएह॥नगतिनिसिवसुरतरसमदे
ह॥२६॥दोहा॥शष्टकाचहिततर्कमै॥वादिराजसिरताजए
कीजावप्रगटकीयो॥चांनतिजगतिजिहाज॥२७॥इति
कीजावजीकीजाषासंघृणी॥श्री॥ श्री॥ ॥श्री॥ ।३॥ १
॥अथएकीजावजीसंस्कृतलीष्यते॥एकीजावंगतइवमयायःस्वयं
कर्मबंधोघोरंडखंभवनयद्गतोडुनिवारःकरोतितस्मापस्मात्वपि
जिनखेनक्तिरुमुक्तरुमुक्तयेवेज्जेतुंसकोनचतिनतयाकोपरा
स्तुपहेतुः॥ १॥।प्येतिरूपंउरितनिवहध्वांतविधंसहेतंत्वामिवाकुजि
नवरचिरंतत्वविद्यानियुक्तःवेतोवासेनवस्त्रिमसफारमुज्ञास्य
मानस्तस्मिन्नंहःकथामिवतमोवस्तुतोवस्तुमिष्टि॥२॥अनंदाश्र
स्तपितवदनंगइंदेचात्रिजस्वनश्चायेतत्वयिइदमनास्तोत्रम
मंत्रैर्जावतंतस्याम्यस्तादपिचसुचिरंदेहवल्मीकमंधान्तिःकासंते
विधिधंविषमव्याधयःकाञ्चियाः॥३॥।शगेवेहृदिजवनदेया

तादेवतिमेवयेदंधानहारंममरुचिकरंस्वांतगोहंश्रविष्टस्तत्किंचित्रंजि
नवपुरिहंयत्सुवर्णीशेषि॥४॥लोकस्यैकस्वमसितगवन्निर्निर्गमेतेत
बंधुस्त्वप्येवासौसकलविषयाशक्तिरप्रत्यनीकानक्तिस्फीतांवि
मधिवसन्मामिकांचित्तसप्यांमयुत्पन्नकथमिवततःक्लेशयु
येमहेयाः॥५॥जन्माटमाकथमपिमयादेवदीर्घमत्वाप्राप्तैवेयंत
वनयकथास्फरपीयूषवायीतस्यामधेहिमकरहिममहंश्रुतिते
तांतनिर्मगंमानजहतिकथेडुःस्वहापताया॥६॥पादन्पसाद
पिवपुनतोपात्रपातैत्रिलोकिंहेमानासोजवतिसुरनिःश्रीति
वासश्चयज्ञःसर्वागेणस्यश्रुतिनागवंस्त्वप्पशेषंमतोमेत्येयः
किंतत्त्वयमहरह्येन्नमारुफपैति॥७॥पश्यंतंत्वघनममृतंनके
पान्नापिवंतंक्मरीणपात्युरुषसमानंदधामप्रविष्टंत्वंदुर्वीरस्मरम
दहरंत्वत्ससादैकममिंक्रराकारकथमिवरुजाःकंटकानिलुवंति
जपाषाणात्मातदितरसमःकेवलंरत्नमूर्त्तिमानस्तंजोवतिव
परस्तादृशोरन्नवर्ग्यःदृष्टिशाशोहृत्तिसकथंमानरोगंनराणांश्र
स्यासर्तिर्येदिननवतस्तंमेतदुक्तिः ~~हेतुर्गर्भः~~ हेतुर्गर्भः
शाशोमरुदपिनवत्तूत्तैत्रैःलोपवाहीसद्यःपुंसानिरधिधरुजा
धूलिवंधंधुनोतिथ्यानाहृतोऽदयकमलयस्पतुत्वंप्रविष्टस्तस्या
शक्यःकःइहनुवतेदेवलोकोपकारः॥१०॥ज्ञानांसित्वंममजवम
वेपच्चकडुःखंजातंयस्मस्मरणमपिमेशस्त्रवन्तिःपिनष्टित्वंसा
र्वैराःसकृपइतिवत्वापुपेलोस्मितकर्पापत्कत्तैवंतदिहविषयेदे
वावप्रमाणं॥११॥प्रापदैवंतवदुतिपदैज्जीवकेनोषदिष्टैःपापत्
रीमरणमयेसारमेयेपिसौरखंकःसंदेहौयडुपलनतेवासवश्र
प्रभुत्वंजल्पनजाप्यैर्मणिनिरमलैस्त्वन्नमस्कारस्वक्रे॥१२॥शुद्धे
नेसुचिनिवरितेसत्पित्वप्पनीवाज्जक्तिर्नोवेदनवधिमुखावंचे
काकंविकेयंशक्तोऽद्याटेनवतिहिकथंमुक्तिकामस्पुंसोमुक्ति
धारंपरिहृदमहामोहमुचाकपाटे॥१३॥प्रचन्नःखत्वयमधमये
रंधकारैसमंतातपंथापुक्तेःस्थपुटेतपदःक्लेशगर्तैरगाधैःतल
स्तेनजतिमुखतोदेवतत्वावनासीयद्येयेतनवतिनवजारतीरन्दीपः॥१४

कीनाः संसृ
६

आत्मज्योतिर्निधिरनविधिर्दुष्टानंदहेतुः॥ कर्मदोषाण्यदलपिहितोयोन
वाप्यः परेषाहस्येकंवेत्यनतिचिरतस्तनवद्भक्तिनाजस्तोत्रैर्वदप्रकृतिप
रुषोद्दामघात्रीस्वनित्रैः॥ १५॥ प्रत्युत्पन्नातपहिमगिरायताचामताश्चे
र्यादेवत्वत्पदकमलयोः संगताः नक्तिगां गाचेतस्तस्यांममरुचिक्वशादापु
तंहालितांहः कल्पाषंयज्ञवतिकिमियंदेवसेदेहभूमिः॥ १६॥ प्राडुर्ता
स्थिरपदसुरवंत्वामनुध्यायतोमेत्वप्येवाहंस इतिमतिरुत्पद्यतेनिर्विक
ल्पा मिथ्यैवेयंतदपितनुतेदक्षिमन्त्रेषूपदोषात्मानोप्यनिमतिफल
स्त्वत्प्रसादाज्जवंति॥ १७॥ मिथ्यावादेमलमयनुदन्सप्तनंगीतरंगीर्वा
गंनोधिर्चुचनमखिलंदेवपर्येतिपस्तेतस्यावृत्तिसपदिविबुधाश्चेतसै
वाचलेनव्यातन्वंतः॥ सुचिरममृतांसं वयाहृषुवंति॥ १८॥ आहार्येभ्यः
सृष्ट्यतिपरोयः स्वनावांदक्षः शस्त्रयोहीनवतिसततं वैरिणोप
श्चशक्यं॥ सध्वीगेषुत्वमसिद्युजमस्त्वंनशक्यः परेषांतकिंभूषावस
नकुसुमैः किंचशस्त्रैरुद्वेष्टैः॥ १९॥ इन्द्रः सेवांतवसुक्करुत्वांकिंतस्त्वं
घनंतेतस्यैवेयंजवलयकरीश्लाभ्यतामातनोति त्वंनिस्तारीजनतजल
धेः सिद्धिकांतापतिस्त्वंलोकानां प्रचुरितितवश्लाघ्यतेस्तेत्रमिच्छे॥ २०
वृत्तिर्वावामपरसदृशीनत्वमन्येनतुल्यः स्तुत्युजाराः कथमिवतत
स्त्वप्यमीनकमेतंमैवंभूवंस्तदधिभवन्नक्तिपीष्पुष्टास्तेनव्याना
मनिमत्फलाः परिजातान्वंति॥ २१॥ कोपोवेद्रेणानतवनतवक्त्रयिदे
वप्रसादोव्याप्तंचेतस्तवहिपरमोपेक्षपैवानफेक्षंश्राज्ञावत्रपतद
पिनुवनंसन्निधिर्द्वैरहारीकैवंभूतंभूवनतिलकप्रजावत्वत्स्रेषु॥ २२
देवस्तोतुंत्रिदिवगणिकामंडलीगीतकीर्तितोत्कर्त्तित्वांसकलविष
यज्ञानमूर्त्तिर्जनीयः तस्यक्षेमंनपदतोदजातुजोहूर्त्तिपयास्तत्वशं
यस्मरणविषयेनैषमोमूर्त्तिमात्रम्॥ २३॥ चित्तेकुर्वन्निरवधिसुरवज
नहृवीर्यरूपं देवत्वांयः समपनियमादादरेणस्तदीने श्रेयोमार्गसं
सुसुकृतीतावताप्रयित्वाकल्याणनिजवतिविषयः पंचधापंचतान्
२४॥ नक्तिप्रकमहेद्रूपजितपदत्वकीर्त्तनेनक्षमाः सूक्ष्मज्ञानदृशे
पिसंपमनृतः केहंतमंदावयंत्रस्मान्निःस्तवनछलेनउपरस्त्वप्या
द्वरस्तन्यतेस्वात्मधीनसुरैर्विणासरवलुनः कल्याणकल्पद्रुमः
२५॥ वादिराजमनुशाष्टिः कलोकोवादिराजमनुताक्विकसिंहः व

दिराजमनुकाख्यकृतस्तेवादिजमनुजमसहायता ॥ २६ ॥ इति श्रीराज
राजा कवीश्वरितचित्तेस्तोत्रसमाप्तं ॥ २६ ॥ श्रीं श्रीं ॥ श्रीं ॥ श्रीं ॥ श्रीं ॥
॥ उैनमः ॥ अथ विषायाहारस्तोत्रलिखते ॥ स्वात्मस्थितः सर्वगतः
समस्तमापारवेदी विनिवृत्तसंगः प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरो वरेण
पायादपायात्सुरुषः पुराणा ॥ १ ॥ परैरचित्यं युगभारमेकः स्तोत्रं बह
न्योगिन्निरप्यशक्यः स्तुत्येद्यमेसौ ह्यपमो न जानोः किमप्रवेशो ॥
विशतिप्रदीपः ॥ २ ॥ तत्प्राजशक्रः शकनानिमानं नाहं त्यजामि स्व
वनानुबंधं स्वल्पेन बोधेन ततो धिकार्यं वातायनेनेव निरूप
यामि ॥ ३ ॥ त्वं विश्वदृश्या सकलैरदृशो विद्वानशेषं निखलैरे
द्यं ॥ वक्रुकियांकी दृश इत्यशक्यः स्तुतिस्ततो शक्तिकया तथा
स्तु ॥ ४ ॥ व्यापीडितं बालमिवात्मदोषरुदृश्याय तोलोरुमवाप्य
स्वंहिताहिता न्वेषणमाद्यजाजः सर्वस्य जंतोरसिवास्तवैद्यैः ॥
॥ ५ ॥ दाक्षानहर्ता दिवसं विविस्वानद्यस्वइत्यच्युतदर्शिताशः स
वाजमेवं गमयत्यशक्तः क्षणेन दत्से निमतं न ताप ॥ ६ ॥ उपैत्ति
नक्त्या सुमुखः सुखानि त्वजावाहिमुखश्च डः खंसदा वदातद्यु
तिरेकरूपस्तयोस्त्वमादर्श इवावनासि ॥ ७ ॥ अगाधताब्धेः सा
यतः पयोधिर्मेरोश्च उंगा प्रकृतिः सयत्रद्यावाद्यश्चिमां द्युत
ततथैव व्यापत्वदीपान्न वनांतराणि ॥ ८ ॥ तवानवस्थापरमार्थतत्वं
त्वयानागतः पुनरागमश्च हृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषीर्विरुद्धतो
पिसमंजसस्त्वं ॥ ९ ॥ स्मरः सुदग्धो नवतैव तस्मिन्नुभूलितात्मा
यदिनामशंभूः अत्रोतद्वेदोपहतोपिविभुः किं गृह्यते येन नव
नजागः ॥ १० ॥ सती रजस्यादपरोधवान्वातदोषकीर्त्येवं न ते गुणि
त्वं स्वसो बुशोर्मेहिमानदेवस्तोकायवादेन जडासयस्य ॥ ११ ॥ का
र्मस्थिते जंतुरने कर्ममिनं यत्समुंसावपरस्परस्य त्वेने वजावेहि
तयोर्नवाज्ञौ जिनें ज्ञौ नाचिकयोरिवारत्माः ॥ १२ ॥ सुखाय डः
खानिगुणाय दोषानधर्माय पापानिसमावरंति तैलाय बाला
ः सिकतासमूहं निःपीडयंति स्फुटमत्वदीयाः ॥ १३ ॥ विषापहा
रमणिमोषधा निमंत्रं सुमुद्दिस्परसायने च न्नाम्यं त्यहो नत्वम

तिस्मरेतिपर्यापनामात्तितवैवतानि॥१४॥चित्तेनकंचिकृतवान
 सित्वंत्वमवैस्त्रिलोकीस्वामीतिसंख्यानिपतेरमीषां बोधाधिपति
 श्रुतिना नचिष्यतेनेपिचेष्ट्याश्रदमूनपीदं॥१६॥नाकस्यपसुःयदि
 कर्मरम्यांतागप्यरूपस्यतदोयकारितस्यैवहेतुःस्वमुखस्यभाते
 रुचिन्तस्थत्रमिवादरेण॥१७॥कोपेत्तत्कत्वंकसुखोपदेशःस
 वेत्किमिच्छाप्रतिकूलवदःक्वासौक्कवासर्धेजात्त्रियःत्वंतन्नप
 यत्थमवेचिचंतो॥१८॥उंगात्फलंयत्तदकिंचताच्चषाण्यंसमूह
 न्मधनेस्वरादेः॥निरंजसोयुञ्जतमादिवादेर्नैकापिनिर्याति
 तीपयोञ्जेः॥१९॥त्रैलोक्यसेवानियमापदंडंदधेयदीजेविनये
 नतस्यतस्यातिहार्येनवतःकृतस्तंतत्कर्मयोगाद्यदिवातव
 स्तु॥२०॥श्रियापरंपर्यंतिमाधुनिस्वःश्रीमान्तकश्चित्कपणत
 दंमःयथाप्रकाशस्थितंमंधकारस्यायीक्षतेज्ञौतथातमस्य
 २१॥स्ववृद्धिनिश्चासतिमेवजाजिप्रत्यक्षमान्मानुनवेपिमूढकिं
 चांखिलज्ञेयविवर्तेबोधस्वरूपमध्यक्षमवैतिलोकः॥२२॥तस्य
 तमजस्तस्यपितेतिदेवत्वायेवमायंतिक्लंशकारपतेद्यापिनव
 स्मनमित्यवस्यपा ॥गौरुतंहेमवपुस्त्यजंति॥२३॥दत्तस्त्रिलो
 क्यंपठहोतिनृत्याःसुरासुरास्तस्यमहान्सलानःमोहस्यमोह
 स्वपिकोविरुद्धं॥मूलंस्पनाशोवलवहिरोधः॥२४॥मार्गस्त्वयैके
 ददृशेविमुक्तेश्चतुर्गातीनांगहनंपरेणसंर्द्धमयादृष्टमितिस्मये
 नत्वंमाकदाचिज्जुजामालुलोकः॥२५॥स्वर्नानुरक्तस्यहविर्जो
 जःकल्यांतवानोबुनिधेर्विधातःसंसारजोगस्यवियोगज्ञाबोधि
 क्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदस्ये॥२६॥अज्ञानस्त्वंनमतःफलंपतज्जान
 तोन्यंननुदेवतेतिहिरिणमणिकाचधिपादधनस्तंतस्यबुधा
 वहतोनरिक्तः॥२७॥प्रज्ञास्तवावंश्रुत्राःकषापेदेधस्यदेवम
 बहारमाहुःगतस्यदीपस्यहिनंहितत्वदृष्टंकपालसचमंगल
 त्वं॥२८॥मानार्थमोकार्थमदस्त्वडक्तं॥हितंवचस्तेनिसममव
 क्तुः॥निर्दोषानांकेनिविनावयंति॥ज्ञेरेणमुक्तःसुगमःस्वरेण
 २९॥नक्वापिवाञ्छां वृद्धतेववाक्तेकालेकचित्कोपितथानियो
 गःनपूर्याम्यंबुधिमित्युदंशुसयंहित्रीतद्युतिरसुधेति॥३०॥

एतन्नीयः परमाः प्रसन्ना वक्रप्रकारा बहवस्तवेति दृष्टो यमंतस्त
 नेन तेषां गुणो गुणानां किमतः परोस्ति ॥ २१ ॥ स्तुत्यारंता जिमतं उन्न
 त्वास्मृत्या प्रणात्पाचत तो न जा मिस्मरामि देव प्रणामा मि नित्यं
 केनायुं पायेत फलं हि साधुं ॥ २२ ॥ ततस्त्रिलोकीं तगरी नगर
 धि देवं नित्यं प्रसंज्योति तिर नंति शक्तिः अपुण्यपापं परपुण्यहे
 उं नमामाहं वंद्यम वंदितारं ॥ २३ ॥ अत्राहमस्पर्शम रूपगंधला
 नीरसं तद्विषया बबोधं सर्वस्य मातारम मे यमनैर्जिते इमस्मा
 र्मनुस्मरामि ॥ २४ ॥ आगाधमनैर्मनसाप्यलंघं नि किंचनं प्र
 र्थितमर्थं वक्रिः विस्वस्यारं तमदृष्टयारं पतिं जनानां शरणं व
 बुजमि ॥ २५ ॥ त्रिलोक्यदीक्षा गुरवे नमस्ते यो वर्धमानोपि निजे
 न्ततो नूत् प्रागांडशैलः पुनरदिकल्पः पाश्चात्तमेरुः कुल
 पर्वतो नूत् ॥ २६ ॥ स्वयंप्रकासस्य दिवानिशावानवाधिताय
 स्य नवाधकत्वं नलाधवं गोरवमेकरूपं वंदे विभुं कालकला
 मतीतं ॥ २७ ॥ इति स्तुतिं देवविधाय देव्यहरं यावेत्त्वमुपेक्षि
 सिद्धाय तु रुं संश्रयतः स्वतः स्यात्कश्चाययायाचितयात्मला
 नः ॥ २८ ॥ अथास्तिदित्सायदिवोपरोधस्वप्ने वशाकांदिश
 न्निबुद्धिकरिष्मते देवतथा कृपां मे कृपां मे कोवात्मपोष्ये
 सुमुखेन स्मरिः ॥ २९ ॥ वितरति विहितायथा कथं विज्जिन वि
 ननाय मनीषिता निनक्तिं त्वपि नुति विषया पुनर्द्विशेषादि
 श्रुति सुखानियशोधने जयं च ॥ ३० ॥ इति यन्नं जयं कृतं विषा
 यहास्तोत्रं समाप्तं ॥ ३१ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥
 ॥ अथ पार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ कल्याणमंदिरस्तोत्रं लिख्य
 ते ॥ कार्त्तं विसंति तिलकांडदः ॥ कल्याणमंदिरमुदारं मवद्य
 नेदि ॥ नीतानयप्रदमने हितमं क्रियमं ॥ संसारसागरनिमज्जदो
 षजं उ ॥ योतायमानं स्पजिते म्बरस्य ॥ य ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गारि
 षवुरात्रोः ॥ स्तोत्रसुवित्स्वतमतिर्न विनुर्विधात्री ॥ तीर्थेश्वरस्य क
 मवस्मयधूमकेतो ॥ स्तस्याहमे ॥ धकिलसंस्तवनं करिष्ये ॥ २
 युग्म ॥ सामान्यतोपितववर्णयिषुं स्वरूपं ॥ मस्महशाः कथ्यमा

किंकलधर्मरश्मे॥शमोहसयादनुभवन्तपिताथमस्यो,
एणांगणपिउंनतवक्षमेत॥कल्यांतवातपयसःप्रकटोपिय
मीयेतकेनजलधेर्नुरन्नराशिः॥६॥॥

णाकरस्यवा

नजवाङ्गुगं वित्तस्वित्सीर्षितां कथयतिस्वाधियांबु राशेः॥
पयोगितांमयिनयंतिगुणास्तवेशवक्तुकथंनव
काशःजातातदेवमसमीक्षितकारितेयंजल्यंतिवातिजगिरा
नुपहिणोपि॥६॥आस्तामचित्तमहिमाजिनसंस्तवस्तेनामा
पातिनवतो नवतो जगंतिश्रीत्यातपोपहतपांथजनंनिदधे
श्रीणातिपद्मस्यःसरसो निलोपि॥७॥अर्चति नित्यपि
थिलीनवंतिजंतोःक्षणेनतिविडाअपिकर्मबंधं
याइवमधनागमन्मागतेवनशिरंविनिबंदनस्य॥८॥
वमनुजास्तहसाजितेजरोरैरुपध्वंशतैस्त्वपिदीक्षितो
स्वमितिस्फुरतेतजसिदृष्टमात्रेचौरैरिवाश्रुपशवःप्रपलाथ
मानैः॥९॥स्वंतारकोजितकथंनवितां तराब्॥स्वामुद्धं
दयेनयडुत्तरंतःयदाहतिस्वरतियजलमेधन
तःसकिलानुजावः॥१०॥यस्मिन्हरप्रनृतयो
सोपित्वयारतिपतिःक्षपितःक्षणेनविधापिताकृतमुज
यसाथयेनपितंनकिंतदपिडुर्हरवामवेन॥११॥स्वामिन्तु

पिप्रयंन्नास्वाजेतवःकथम

नोदधिलघुतरंत्यतिलाघवेनचित्तोनहंतमहाताय

॥१२॥क्रोधस्त्वयापदिवि

वतकथं किलकर्मचौरा॥सोषत्पमुत्रपदिवाशिशिरा

पनानिनकिंदिमा॥१३॥स्वयंयोगि

नसदापरमात्मरूपमन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदे

वाकिमन्पादहंससंनविपदंतनुकर्णिकायाः॥

वधातुनेदाः ॥२५॥ अतः सदेवजितयस्य विनामसुत्वजमेः कथं तदापिन
 शयसे शरीर एतस्वरूपमयमध्यविवर्तिनो हि यद्विप्रशामयति महनुम
 वा ॥२६॥ आत्मा मनीषि निरयं त्वदनेदुवुद्याधातो जिते ज न वती ह म
 वस्य नावः पाती यमममृतमित्यनुचित्यमानं किं नाम नो विषविक
 रमया करोति ॥२७॥ त्वामेव वीततमसंपरवादिनो मिनृतं विनो हि
 रिहरादिधिया प्रपन्नाः किं काचकामलिनिरीशसितो पिशांस्वेनो
 गृह्यते विविधवर्णविषयैः ॥२८॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभाव
 दास्तां जनो न वतिते तत्परमशोक ॥ अस्युहते दिनपतौ समर्ह
 रुहोपि किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥२९॥ चित्रविनो क
 थमवाडमुषंघंतमे वविषकपतत्पविरलासुरपुष्यवृष्टेः त्वजे
 चरे सुमनसां पदिवा मुनीनां गच्छंति नूनमथावहिबंधनां नि
 स्याते गंजीर रुदयोदधिसंनवायाः पीयूषतां तव गिरः समुदीर
 यंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगनाजो ॥ नव्यावृजंति तरसाप्य
 जगमरत्व ॥३०॥ स्वामित्सुहृमवनम्यसमुत्पतंतो मत्सेवद
 शुचयः सुरचामरौघाः ये स्मै नति विदधते मुनियुगवापते

: खलु शुद्धनावा ॥३१॥ त्र्यामं गंजीर गिरमुज्वल

तसिहासनस्यमिहनमशिषंढिनस्वांन्त्रालोकपंतिरजसे

मुच्चैश्चामीकरादिशिरसीवतवांबुवाहं ॥३२॥ उहृच्छत

तवशितिक्रतिमं हलेन लुप्तञ्च विरशोकतरुर्वज्रसांतिध

पियदिवा तव वीतरागानीगतां वृजतिकोनसचेतनोपि

प्रमादमचभूयज्जधमेतमागत्यनिर्घृतिपुंरीप्रतिसा

र्थवादांतन्निवेदयति देवजगत्रयाय ॥ मन्येतदन्नमिननः

डंडनिस्ते ॥३५॥ उद्योतितेषु नवतानुवनेषु नाथताराचि

तो विधुरयं विहताधिकारः मुक्ताकलापकलितो ह्यसितात

त्रिधाघृततनुर्ध्रुवममुपेतः ॥३६॥ स्वेन प्रपूरित

पिंडनेन कंतिप्रतापयशासामिव संचयेन ॥ माणि

मरुजतप्रविनिर्मितेन ॥ सालत्रयेण नवन्नजितो विन

॥३७॥ दिव्यस्रजोजितनमत्रिदशाधियाना ॥ मत्स्रजरसर

पिमौलिवंधन ॥ यादौ श्रयेति नक्तो यदिवापरत्र ॥ त्व

मे सुमनसो नरमंस एव ॥३८॥ त्वनाथजन्मजलधे

साणमि.

७

मुखोपि। अक्षरयस्य सुमतो निजघृष्टलग्नान्। युक्तं हिया र्चिव।
 निपस्य सतस्तवैव। चित्रं विज्ञो यदिस कर्म विपाक शून्यः। २
 विश्वेश्वरोपि जनपालक दुर्गतस्त्वं। किं वाक्षर प्रकृतिरप्य
 पिं स्वमीश। आज्ञानवस्यपिसदैवकथं विदेव। ज्ञानं त्वपि
 रतिविश्वविकाशहेतुः। ३०। प्राज्ञारसंस्ततनां
 इच्छापितानिकमवेनशवे नयानि। ज्ञायापितैस्तव
 हताशो। प्रस्तस्त्वमीतिरयमेवपरं डरात्मा। ३१। यज्ञर्कं इ
 तयनौघमदनुमीमं। नृंस्यत्तडिनमुत्रालमांशालयो रधारं। दै
 त्येन मुक्तमथ इस्तरवारिदध्रेतेन वतस्यजिन इस्तरवारिकृत
 ३२। ध्वस्तोर्धकेत्रा विकृता क्तिरिति मर्त्यमंड। प्रालंबनृत्नयदव
 क्रविनिर्यदग्निः। श्वेलवृजः प्रतनवंतमयीरितोयः। सोस्यानव
 तप्रतिनवंनवदुःखहेतुः। ३३। धन्यास्तएव नुवनाधिपयेत्रि
 संध्यः। प्रागधयंति विधि विधि तुता न्यक्त्याः। नक्त्यो ह्यन्नसत्यु
 लकपक्षमलदेहदेशाः। पादघ्यंतव विज्ञो नु विजन्मनाजः ३४
 अस्मिन्नपारनववाशिनियो मुनीशे। मत्नेन मे अव एगोरतांग
 तोसि। आकर्णिते उत वापोत्रपवित्रमंत्रे। किं वा विपक्षिषधरी
 सविधं समति। ३५। जन्मांतरे पितवपादयुगं न देवा। मत्नेमया
 महितदानदहं। तेने ह्यजन्मनि मुनीशपराजवानां। जातो नि
 केतनमदं प्रथितशायानां। ३६। नूनं न मोहति मिरा हतलोचने
 न पूर्वविज्ञो सकृदपि प्रविलोकितो सि मर्माविधो विधुरयति
 हि मामनर्थाः। प्रोद्यस्त्वंधगतयं कथमन्यथैते। ३७। आ क
 र्णितोपि महितोपि नितोपि निरीक्षितोपि। नूनं न चेतसि मया
 विधृतोसि नक्त्या। जातोस्मितेन जनवांधवदुःखपात्रं पस्मा क्ति
 यः प्रतिफलंतिना नावशून्याः। ३८। तांतायदुःखिजनवस्तलहेत
 रण्यो। कारुण्यपुण्यवसते वशितां वरेण्यः। नक्त्या नते महिमहे

॥ दुःखां क्रोहलनतस्मरतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसं
 रक्षरणां शरणां शरण्यो। मासाद्यसादितरिपुः प्रथिताव
 ३९। त्यादपंकजमपि प्रणिधानबंधो ॥ बंधो
 हातोस्मि। ४०। देवं इवं च वदिताखि

रतारकविज्ञोनुवगाधिनाथ॥ त्रायस्वदेवकरुणाऊदमांपुनीहि
 सीदंतमद्यनमदवसनंबुराशे॥५॥ यद्यस्तिनायनवदं किसरे
 हाणा॥ नक्तः फलं किमपि संतति संचिताया॥ त्वन्मे त्वदेकरार
 णस्य त्राणपन्या॥ स्वामी त्वमेव नुवनेत्रनवांतरेपि॥५॥ ३६॥
 समाहिताधियोविधिर्वज्जितेऽ॥ सांप्रोहन्नसत्पुलककंबुकित
 गजागाः॥ त्वच्चिचनिर्मलमुखंबुजवहलक्षा॥ येसंस्तवं तववि
 ज्ञोश्चयंति नमाः॥५॥ जननयत्कमुदचं॥ प्रजारवराः स्व
 र्यसंपदोमुक्ता॥ तेविगलितमलतिचया॥ अचिरान्मोहं प्रपं
 तोधध॥ इति श्रीकल्पाणमिंद्रस्तोत्रसंपूर्णं॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
 ॥ अथ लक्ष्मीस्तोत्रलिख्यते॥ लक्ष्मीमहास्तुत्यशतीशतीशती॥ प्र
 हृदकालोविरतोरतोरतो॥ नगरुजायन्महताहताहता॥ पार्श्वफ
 लोमगिरौगिरौगिरौ॥ १॥ अर्घ्यमाद्यं सुमतामनामनायः सर्वे॥
 देशोनुविनाविनाविना॥ शमस्तविज्ञानमयोमयोमयो॥ पार्श्वफ
 ॥ वनिष्ठजंतोशरणंरणं॥ क्षमादितोयक्रमवंमवंमवं॥ ज
 मरासमक्रमंक्रमक्रमं॥ पार्श्वफ०३॥ अज्ञानशकामलतालताल
 ता॥ यदीयज्ञावतानतानता॥ निर्वीणसौख्यं सुगतागतागत
 ॥ पार्श्वफ०५॥ विवादिमात्रोषविधिर्विधिर्विधि॥ वनूवसर्पावह
 रीहरीहरी॥ विज्ञानशज्ञानहरोहरोहरो॥ पार्श्वफ०५॥ यद्विष्णु
 लोकैकगुरुंगुरुंगुरुं॥ विराजतापिनवरंवरंवरं॥ तमालनीला
 गजरंजरंजरं॥ पार्श्वफ०६॥ संरक्षतोदिवुवनंवनंवनं॥ विराजिता
 येषुदिवेदिवेदिवे॥ पार्श्वफ०७॥ दहयेनूत्सुरासुरासुरा॥ पार्श्वफ
 रराजनित्यंसकलाकलाकला॥ ममारटह्योवृजिनोजिनोजिन
 सहारपूज्यं वृषजात्रात्रात्रा॥ पार्श्वफ०८॥ नर्षेत्माकरणेनाटकच
 येकात्माकुलेकोशलेविरातातुवियद्यते॥ श्रीपद्मप्रभदेवनि
 र्मतमिदं॥ गंभीरंयमकाष्टकंनणियः शत्रूयसालन्यते॥ श्रीपद्म
 प्रभुदेवनिर्मतंप्रिदं॥ स्तोत्रंजगन्मंगलं॥ पार्श्वफ०९॥ रामगिरौगिरौगि
 रौ०३॥ इति श्रीपार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्रसंपूर्णं॥ ॥ श्री॥ श्री॥
 अथपार्श्वनाथसनुतिलिख्यते॥ नरेइंफनेइंसुरेइंअधीसं॥॥

भर्तृनमसिद्धिमैः॥ अथ जिनदेवपूजाजयमालालिङ्गते॥ मंत्रा
 जयजयजयनमोस्तुनमोस्तुनमोस्तु॥ एमो अरहेताणं॥ एमो सि
 णं॥ एमो आश्रियाणं॥ एमो उवज्जायाणं॥ एमो लोयसवसाऊ
 णं॥ चत्तारिमंगलं॥ अरहेतमंगलं॥ सिद्धमंगलं॥ साङ्गमंगलं॥ के
 वल्लेपसत्तोयमोमंगलं॥ चत्तारिलोगुत्तमा॥ अरहेतलोगुत्तमा
 सिद्धलोगुत्तमा॥ साङ्गलोगुत्तमा॥ केवल्लेपसत्तो॥ धम्मोलोपुत्त
 मा॥ चत्तारिसरणंपञ्चज्जामि॥ अरहेतसरणंपञ्चज्जामि॥ सिद्ध
 सरणंपञ्चज्जामि॥ साङ्गसरणंपञ्चज्जामि॥ केवल्लेपसत्तो॥ ध
 म्मोसरणंपञ्चज्जामि॥ उैनमोहर्त्ते॥ अपवित्रःपवित्रोवा सुस्ति
 तोडुःस्थितोपिवा॥ ध्मायेत्सेचनमस्कारं॥ सर्वपापैः प्रमुच्यते॥
 अपवित्रःपवित्रोवा॥ सर्वविस्थागतोपिचायः॥ स्मरेत्परमा
 त्माने॥ सच्चाह्मन्तरेशुचिः॥ अपरजितमंत्रोयं॥ सर्वविघ्न
 विनाशनः॥ मंगलेषुचसर्वेषु॥ इयममंगलंमतः॥ शण्णोपंच
 एमोयारो॥ सच्चपावपणामणो॥ मंगलाणंचसद्धेसिं॥ पटमंहे
 १मंगलं॥ ४॥ अर्हेमित्यक्षरेब्रह्मवाचकंपरसेष्टिनःसिद्धचक्र
 स्पसकीजं॥ सर्वतःप्रणामाम्पहंम्॥ ५॥ कर्माष्टकविनर्मुक्तं॥
 मोक्षलक्ष्मीनिर्हेतनम्॥ सम्पत्कादिगुणोपेतं॥ सिद्धचक्रंनमा
 म्पहम्॥ ६॥ श्रीमजिनेंद्रमजिबंधजगत्रयेशं॥ स्याद्वादनायक
 मनंतचतुष्टयार्हम्॥ श्रीमूलबंधमुद्दशांमुक्तैकहेतुजैनें॥
 ७॥ यज्ञविधिरेषमयाऽप्यधियि॥ ७॥ स्वस्तित्रिलोकगुरुवेजि॥
 नपुंगवाय॥ स्वस्तिस्वभावमहिमोदयस्वस्थिताय॥ स्वस्तिप्र
 काशसहजोज्जितहृग्मयाय॥ स्वस्तिप्रसन्नललिताङ्गुतवै
 जवाय॥ ८॥ स्वस्तुचुलद्धिमलबोधमुधाप्रवाय॥ स्वस्तिस्व
 भावपरभावविज्ञासकाय॥ स्वस्तित्रिलोकविततैकचिड
 गमाय॥ स्वस्तित्रिकालसकलायतविस्तृताय॥ ९॥ इत्यस्य
 अष्टमधिगम्यथानरूपे॥ भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतु
 कामः आलंबना॥ निविविधान्यवलं॥ अवलान्मृतार्थय
 श्शुपुरुषस्यकरोमियज्ञम्॥ १०॥ अरहेतपुराणपुरुषोत्तमपाव

तानि॥ वस्तुनि नूनमविलास्यमेकएव॥ अस्मिन् ज्वलन्दिमा
केवलबोधवज्रौ॥ पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥ ११॥ उचिदि
यज्ञप्रतिज्ञाताय जिनप्रतिमाये परिपुष्पांजलिद्विपेत् श्रीवप
नः॥ स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअजितः॥ श्रीसेनवः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीअने
नेदनः॥ श्रीसुमतिः स्वस्ति स्वस्ती श्रीपद्मप्रज्ञः श्रीसुषार्थः स्वः
स्ति॥ स्वस्ति श्रीचंद्रप्रज्ञः॥ श्रीपुष्पदंततः स्वस्ति स्वस्ति श्रीश्री॥
तलः श्रीश्रेयान् स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥ श्रीविमलस्वस्ते
स्वस्ति श्रीअनंतः॥ श्रीधर्मः स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीशान्तिः श्रीकुपु
स्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीरनाथः श्रीमहेश्वस्ति॥ स्वस्ति श्रीमनुसुब्बा
तः॥ श्रीनमिः स्वस्ती॥ स्वस्ती श्रीनेमिः श्रीपार्श्वः स्वस्ती॥ स्वस्ते॥
श्रीवर्धमानः नित्याप्रकंपाद्भुतकेवलौयाः स्फुरन्मनपर्यया
श्रुधिवोधाः दिव्यावधिज्ञानवलप्रबुधाः स्वस्ति क्रियासुः पर
मर्षयो नः॥ १२॥ कोष्ठस्य धान्योपममेकवीजं संनिस्तु संश्रो॥
तपदानुसारिचतुर्विधं बुधिवलंदधना॥ स्वस्ति क्रियासु
परमर्षयो नः॥ १३॥ संस्पर्शनं संश्रवणं च दृश्या॥ दास्वानन्दनाश्र
णविलोकनानि॥ दिव्यान्मतिज्ञानिवलाधहंतः स्वस्ति क्रि
यासु परमर्षयो नः॥ १४॥ प्रज्ञाप्रधानाः श्रवणसमृद्धाः ध्ये
कबुद्ध्यादत्रासर्वपूर्वैः प्रवादिनो ह्यंगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ते
क्रियासु परमर्षयो नः॥ १५॥ अणिमिदक्षाः कुशलामहि
मि लधि म्निशक्तः कृतिनोगरिणि॥ मनोवपुर्वागवलि
नश्रुनित्यं स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १६॥ सकामरूपैव
वशित्वमैत्र्यं॥ प्राकाम्यमंतर्हि मयातिमात्ता॥ तथाप्रतीयात
गुणप्रधानाः स्वस्ति॥ १७॥ जंघावलिश्लेषिफलानुतंतु॥ प्र
सूनवीजाकरचारणाका॥ नमो गणसैरविहारीण्यस्व
स्ति॥ १८॥ दीपतं वलसंमहातथोयं घोरतपोघोरपसकमाश्र
वृद्धापरंशोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रिया॥ १९॥ अर्धिशिशुर्वैष
धयस्तथाशी॥ विषं विषादद्विद्विषं विषाभ्या॥ सखिह्रविज
ह्नमलौषधीभ्या॥ स्वस्ति क्रिया॥ २०॥ दीरं श्रवंतौ त्रघृतं

तंश्रवंतोऽमकश्रवंतोमिमृतेश्रवंतः॥अक्षीणसंवासमहान
 साश्रु स्वस्तिक्रियासुःपरमर्षयोतः॥२१॥इतिस्वस्तिमंगलविधा
 तम्॥अथदेवशास्त्रगुरुपूजाप्रारंभ्यते॥सार्धैःसर्वकृताथश
 कलतनुमृतापापसंतापहर्त्री॥त्रैलोक्याक्रांतकीर्त्तिःक्षतम
 दनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशःश्रीमान्निर्वाणसंपहरयुवतिकर
 लीढकंठःसुकंठौ॥देवैर्देवैर्घृष्यादेजयतिजिनपतिःप्रासा
 कल्याणपूजः॥२२॥जयजयजयश्रीसत्कांतिप्रभोजगतांप
 ते॥जयजयजवानेयस्वामीनिवांनसिमज्जताम्॥जयजयम
 हामोहधांतप्रजातकृतेचेतं॥जयजयजिनेशत्वनाश्रुषी
 दकरोमहम्॥२३॥इत्युच्चार्येजिनचरणेषुपरिपुष्पांजलि
 क्षिपेत्॥जिनचरणपूजनप्रत्यज्ञा॥देवीश्रीश्रुतदेवतेभग
 वतित्वत्पादपंकेरुह॥दंडेयामिशिलीमुखत्वमपरंभक्त्या
 मयाप्रार्थ्यते॥मातश्रुतसितिष्ठमेजिनमुखोद्भूतेसदात्राहि
 मो॥दादानेनमयिप्रसीदन्नवतीसंपूजयामोक्षनां॥२४॥इत्यु
 च्चार्येपुस्तकायेपरिपुष्पांजलिंक्षिपेत्॥श्रुतपूजनप्रतिज्ञास
 पूजयामिपूज्यस्य॥पादपद्मयुगंगुरु॥तपःघासप्रतिष्ठस्यग
 रिष्ठस्यमहात्मनः॥२५॥इत्युच्चार्यगुरुचरणपूजनप्रतिज्ञा॥दे
 वेंद्रनागेंद्रनरेंद्रवंदान्॥श्रुतसदावशोन्नितसारवर्षीन्॥इ
 ष्वाहिसंस्पर्धिगुणैर्जलौघै॥जिनैश्चसिद्धांतयतीन्यजेहम्
 २६॥उंक्लींअर्हेश्रीपरमब्रह्मणोअनंतानंतज्ञानसंक्तयेत्तः

॥ जन्मजरामृत्युविनाशनाथअर्हेश्रुत

सिद्धेश्रुतःआचार्येश्रुतःउपाध्यायेश्रुतःसर्वसाधकेश्रुतःप्रथमानुयो
 गाय॥करणानुयोगाय॥चरणानुयोगाय॥द्विमानुयोगाय॥
 सम्पद्गीनाय॥सम्पद्ज्ञानाय॥सम्पद्कृत्वारिनाय॥जलंनि
 र्वयामीतिस्वाहांतामत्रिलोकोदरमधमवर्त्तिसमस्तसत्त्वा
 हितहारिवाक्यान्॥श्रीचंद्रनैर्गंधविलुप्तभृंगो॥जिनैश्च
 घातयतीन्यजेहम्॥२७॥उंक्लींअर्हेश्रीपरमब्रह्मणोअनंत
 नंतज्ञानसंक्तेनमःश्री॥अर्हेश्रुतःसिद्धेश्रुतःआचार्येश्रुतःउपाध

येभ्यः सर्वसाधकभ्यः ॥ आचार्येभ्यः उपाध्यायेभ्यः सर्वसाधकभ्यः प्रथम ॥
 मानुयोगाय ॥ करणानुयोगाय ॥ चरणानुयोगाय ॥ करणानुयोगाय
 सम्पददर्शनाय ॥ समग्रज्ञानाय ॥ सम्पक्वचारित्राय ॥ चंदनं ॥ अणु ॥
 रसंसारमहासमुद्र ॥ प्रोत्तारणोप ॥ ज्यतीन ॥ मुनक्तपा ॥ दीर्घाक्षतां
 गेर्घवलाक्षतौघे ॥ जितेन्द्रसिद्धांतयतीन्यजेहम् ॥ २० ॥ उँकी
 अर्हेश्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्तये नमः ॥ अखंडे
 तपदशासये ॥ अर्हेशः सिद्धेशः ॥ आचार्येभ्यः ॥ उपाध्यायेभ्यः
 सर्वसाधकभ्यः प्रथमानुयोगाय ॥ करणानुयोगाय ॥ चरण
 अनुयोगाय ॥ प्रथमानुयोगाय ॥ सम्पददर्शनाय ॥ समग्रज्ञानाय
 सम्पक्वचारित्राय अक्षतं निर्घ्यामीति स्वाहा ॥ अक्षतं ॥
 विनीतनकाज्वविषोधसूर्यान् ॥ वर्यामुचर्या कथंनैक
 धूर्यान् ॥ कुदारविंदप्रमुखप्रमुने जितेन्द्रसिद्धांतयतीन्यजे
 हम् ॥ २० ॥ उँकी ॥ अर्हेश्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्ता
 ये नमः कुसुमवाणविध्वंसनाय ॥ अर्हेशः ॥ सिद्धेशः ॥ आ
 चार्येभ्यः उपाध्यायेभ्यः सर्वसाधकभ्यः ॥ प्रथमानुयोगाय ॥ क
 रणानुयोगाय ॥ चरणानुयोगाय ॥ प्रथमानुयोगाय ॥ सम्पददर्श
 नाय ॥ समग्रज्ञानाय ॥ सम्पक्वचारित्राय ॥ पुष्पं निर्घ्यामीति स्व
 हा ॥ कुदर्यकंदर्यविसर्पसर्पप्रसज्जनिर्नाशनवेनते यान् ॥
 प्रज्ञान्यसारे श्रुतीरसाद्यैर्जितेन्द्रसिद्धांतयतीन्यजेहम् ॥ २
 ० ॥ उँकी ॥ अर्हेश्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्तये नमः ॥
 कथावेदनीयरोगविनाशाय ॥ अर्हेशः सिद्धेशः ॥ आचार्ये
 भ्यः उपाध्यायेभ्यः सर्वसाधुभ्यः प्रथमानुयोगाय ॥ करणानु
 योगाय ॥ चरणानुयोगाय ॥ प्रथमानुयोगाय ॥ सम्पददर्शनाय
 समग्रज्ञानाय ॥ सम्पक्वचारित्राय ॥ नेवेद्यं निर्घ्यामीति स्वा
 धस्तोद्यमाधीकृतविश्वविश्वमोहाधकारप्रतिघातिदी
 पान् ॥ दीपैः कनकाचतपात्रसंस्थैर्जितेन्द्रसिद्धांतयतीन्यजे
 हम् ॥ २१ ॥ उँकी ॥ अर्हेश्रीपरमब्रह्मणे नंतानंतज्ञानशक्तये
 नमः ॥ मोहक्षकारविनाशाय ॥ दीपं निर्घ्यामीति स्वा ॥ दीपं
 उषाष्टकमेधनपुष्टजालासंधूपतेनास्वरधूमकेतन ॥ २१ ॥

विविधतामसुगाधगधे॥ जितेन्द्रसिंहातयतीन्यजेहम्॥ ३३॥ ॐ श्रीः ॥
 अर्हेश्रीपरमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्तयेनमः॥ अष्टकर्मद।
 हनाया॥ अर्हेशः॥ सिद्धेशः॥ आचार्येशः॥ उपाध्यायेशः॥ सर्व
 साधुशः॥ प्रथमानुयोगाय॥ करणानुयोगाय॥ चरणानुयोगाय॥
 इमानुयोगाय॥ सम्पद्ग्रीनायसम्पद्ज्ञानाय॥ सम्पक्चारि
 त्राय॥ धूर्धनिर्वपामीतिस्वाहा॥ ७॥ धूर्ध॥ कर्मदिलुम्नमनस
 मगम्मान्॥ कुवादिवादास्वलितप्रजावान्॥ फलैरलंमोक्षफ
 लाजिसारैर्जितेन्द्रसिंहातयतीन्यजेहम्॥ ३३॥ ॐ श्रीः ॥ ॥
 श्रीपरमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्तयेनमः॥ मोक्षफलशसा
 यो॥ फलैस्वच्छायांघाक्षतपुष्पजाते॥ नैवेद्यदीपामलधूप
 म्भैः॥ फलैर्विचित्रैर्नपुण्ययोग्यान्॥ जितेन्द्रसिंहातयतीन्य
 जेहम्॥ इत्य॥ ॥ ॐ श्रीः ॥ श्रीपरमब्रह्मणेनंतानंतज्ञानशक्त
 येनमः॥ अर्हेशः॥ सिद्धेशः॥ आचार्येशः॥ उपाध्यायेशः॥ सर्व
 साधुशः॥ प्रथमानुयोगाय॥ करणानुयोगाय॥ चरणानुयोगाय॥
 सम्पद्ज्ञानाय॥ सम्पक्चारित्राय॥ अर्धनिर्वपामीतिस्वाहा
 येपूजानितनाथशास्त्रयमिनांनक्तासदाकुर्वते॥ त्रैसंभंमुवि
 चित्रकात्परचनांमुच्चारयंतोनराः॥ पुण्याद्यामुनियजकीर्ति
 र्तिंसहितामृत्वातपोनृषणा॥ स्तेजसाःसकलाविवोधरुचि
 रसिद्धिलनंतेपराम्॥ ३५॥ पुष्पाजलिद्वयेत्॥ वृषभोजितन
 मात्रसंजवश्चानिनंदनः॥ सुमतिःपद्मनासश्च॥ सुपाश्रीजिनस
 त्तमः॥ ३६॥ चंद्रःपुष्पदंतश्च॥ शीतलोत्तमगवानमुनिः॥ श्रेयांस
 वासुपूज्यश्च॥ विमलोविमलद्युतिः॥ ३७॥ अनेतोधर्मनामात्र
 शांतिःकुपुर्जितोत्तमः॥ अश्चमहिनाश्च॥ सुव्रतोत्तमितीर्थ
 कृत॥ ३८॥ हरिवंशसमद्गतो॥ रिष्टनेमिर्जितेश्वरः॥ धृस्तोपसर्गवि
 त्पारिःपाश्रीनागेद्रुजितः॥ ३९॥ कर्मात्तद्वन्महावीरःसिद्ध
 र्थकुलसंजवः॥ एतेसुरासयैद्येण॥ पूजिताविमलात्विषः॥ धर्
 पूजितात्तरतांश्चैश्चनृपैर्देवैर्नृतिनृरिभिः॥ चतुर्विधस्यसंघस

शांतिकुर्वंतुशाश्र्वतीम्॥४॥जितेनक्तिर्जितेनक्ति जितेन
क्तिःसदास्तुमे॥सम्पत्कमेवसंसार॥वारणंमोक्षकारणं॥४॥
श्रुतेनक्तिःश्रुतेनक्तिःश्रुतेनक्तिःसदास्तुमे॥संज्ञानमेवसं
सारवारणंमोक्षकारणं॥४॥गुरौनक्तिर्गुरौनक्ति॥गुरौनक्ति
सदास्तुमे॥चारित्रमेवसंसार॥वारणंमोक्षकारणं॥४॥
अथजयमाला॥पहरीच्छंद॥वत्ताणुहाणे॥जाफधएफदाणे॥
पश्योसितुतुङ्गखत्तधरु॥तवचरणविहाणेकेवलणणे॥तु
ङ्गपरमपुत्रपरमपरु॥४॥जयरिसहरि सीसरणमिया
य॥जयत्रजियजियंयरोसराय॥जयसंनवसंनवकयविउ
जयत्रहिणंदणणंदियपयोष॥४॥जयसुमद्रुमयसमय
ययास जयपुत्रमप्यहपुत्रमाणिवास॥जयजयहिसुपाससु
पासगता॥जयचंदप्यहचंदाहवत्त॥४॥जयपुष्कंदंतदंत
रंग॥जयसीयलसीयलवयणनंग॥जयसेयसेयकिरणोहस
ज्ज॥जयवासुपूज्यपुज्जाणपुज्ज॥४॥जयविमलविमलयु
णसेदिवाणे॥जयजयहित्रणंताणंतणाण॥जयधम्मधम
तित्ययरसेत॥जयसेतिसेतिविहियायवत्त॥४॥जयकुयु
कुयुपुङ्गुगिसदय॥जयत्ररत्ररमाहरविरहियसमय॥ज
यमस्त्रिमस्त्रिआदामगंध॥जयसुणि सुवयसुवयणिवंध
५०॥जयणामिणामियामरणियरसामि जयणेमिधम्मरह
वक्कणेमि॥जयपासपासच्छिंदणकिवाण॥जयवठमाण
जय८वठमाण॥५॥इयजाणियणमहिडुरियविरामहि
परहिंविणामियसुरावलिहि॥अणिहणहिअणाइहि
समियकुवाइहि॥पणविंवित्ररहंतावलिहि॥५२॥पुष्पाज
लि०००॥हृषजाजितसंनवत्तिनेदनसुमतिपन्नप्रसुप
श्र्वचंद्रप्रनपुष्पदंतशीतलश्रेयांसवासुपुज्यविमलानं
तधर्मशांति॥कुचुरमस्त्रिसुनि सुवुतनमितेमियाश्र्वना
यवर्धमान॥चतुर्विंशतितीर्थकरेभ्योर्धमहार्धनिर्वापीति
खा॥इतिदेवजयमालार्ध॥अथशास्त्रजयमालासंय

१ सुसूकारणकमवियारणं॥ नवसमुद्धारणतरणं॥ जि
 जिणवाणिणमस्समिसत्तिपयासमि॥ सगामोक्खसंगम
 करणं॥ ५३॥ जिणिदमुहानविणिगायतारं॥ गणिंदविणुंफि
 यगंयपया॥ तिलोयहमंडणधम्महंस्वाणि॥ संयापणंमामि
 जिणिंदहवाणि॥ ५४॥ अवगाहइहेअवायजुएहि॥ सुधार
 णनेयहितिणीसएहि॥ मईच्छहत्तीसवकूप्यमुहाणि॥ सया
 पणमामिजिणिंदहवाणि॥ ५५॥ सुदंमुणदोणिअणयपयार
 सुवारहनेय॥ जगतयसार॥ सुरिदणरिंदसमच्चिउजाणि॥
 सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥ दगणिंदणरिंदहरिच्छि॥ प
 यासइपुणपुरकिउलधि॥ णिउगुपहिह्मउएऊवियाणि
 सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥ ५७॥ जुलोयअलोयहजु
 त्तिकरेइ॥ जुत्तिस्सिविकालसरुवज्जणेइ॥ चउगाइलकव
 णइज्जउजाणि॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥ ५८॥ जि
 णिंदचरित्तुक्खित्तुमुणेइ॥ सुसावयधम्महजुत्तिजणेइ॥
 णिउगुवित्तिजवइच्चुवियाणि॥ सयापणमामिजिणिंदह
 वाणि॥ ५९॥ सुजीवअजीवहतच्चहवरकु॥ सुपुणवियाव
 विबंधविमुक्ख॥ चउच्चुणिउगुविजासइणाणि॥ सयापण
 मामेजिणेंदहवाणि॥ ६०॥ तिनेयहिउहिविणाएक्खित्तुव
 उथुरिजोविउलंमइउत्तु॥ सुखाइयकेवलणाएवियाणि
 सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥ ६१॥ जिणिंदहणाएक्ख
 गत्तयजाणुमहात्तमणासियसुक्खणिहाणु॥ पयच्चऊम
 त्तिनरेणवियाणि॥ सयापणमामिजिणिंदहवाणि॥ ६२॥ प
 याणि सुवारहकोप्पिसएण॥ सुलंकवतिरासियजुत्तिनरेण
 सहस्सअवावणपंचवियाणि॥ सयापणमामिजिणिंदह
 वाणि॥ ६३॥ इकावणकोप्पिउलकवअवेव॥ सहसचुलमी
 दिसयाच्चक्केव॥ सदाशावीसहांयपयाणि॥ सयापणम
 मिजिणिंदहवाणि॥ ६४॥ इयजिणवरवाणि विमुक्खमई
 जोअवियणणियमणियरई॥ सोसुरणरिंदसंपइलहिवि

केवलणाणविभसरश्री ६५॥ ३६॥ सरस्वतीवाग्वादिनीश्वर
 शांगश्रुतज्ञानेभ्योनमः॥ आचारंगं॥ सूत्रकृतं॥ गस्यानां
 समर्चयोगं॥ आरम्भाप्रज्ञस्यंगं॥ ज्ञातधर्मकथा॥ गोयासका
 ध्ययनांगातकृद्शांगानुत्तरोपपादकदशांगसूक्ष्ममाक
 रणांगविपांकसूत्रांगदृष्टिवादांगनामधेयहादशांगश्रु
 तज्ञानेभ्योर्धर्महार्थनिर्वपामीतिस्वाहा॥ इतिशास्त्रजवमा
 लासंपूर्णा॥ अथश्री गुराकीर्णजैयमाला॥ नवियहनवतारण
 सोलहकारणं॥ अज्जवितित्ययरत्तणहंतवकरमिन्नसं
 गशदयधम्मंगश्यालमियं वमहव्यहं॥ ६६॥ वंदामिम
 हरिसिसीलवंतं॥ पंचेदियसंजमजोगजुत्ता॥ जेग्यारहश्रंग
 हाअणुसरंति॥ जेचउदयपुत्रहमुणियुणंति॥ ६७॥ पादा
 एफसारिवरकुववुद्धि॥ उष्णमजाहआयासरिद्धि॥ जेपाण
 हरीतोरणीया॥ जेरुक्कवमुलआतायणीया॥ धीजेमोणे
 धायचंदाहिएणीया॥ जेजत्थत्थवणिएणवासणीया॥ जेपंचमह
 वयधरणधी॥ जेसमितिगुत्तिपालहणावीरा॥ ६८॥ जैवद्विहि
 देहविरत्तचित्तं॥ जेरायरोसजयमोहचित्तं॥ जेकुगइहिसंचर
 विगयलोह॥ जेडरीयविणएसणकामकोह॥ ७०॥ जेज ह्नम
 ह्यतिणालित्तगत्ता॥ अरंजपरिगाहजेविरत्तं॥ जेतिणिका
 लवाहरिगमंति॥ च्चववमदसमउत्वउचरंति॥ ७१॥ जेइक
 गसइइमासलेंति॥ जेणीरसजोयणरइकरंति॥ तेमुणिव
 रवंदववियमसाणिजेकम्मइइवमुक्कजाणि॥ ७२॥ वार
 विहसंजम॥ जेधरं॥ जेचारिउविकहापरिहरंति॥ वावीस
 परीसहजेसहंति॥ संसारमहाणउत्तेतरंति॥ ७३॥ जेधम्म
 धिमहियलियुणंति॥ जेकाउस्सगोणि॥ सिगमंति॥ जेसिद्धि
 लासिणिअहिलसंति॥ जेयक्कवमासआहारलंति॥ ७४
 गोइहएजेवीरासणीया॥ जेयणहसेज्जवज्जासणीया॥ जे
 तववलेणआयासजंति॥ जगिरिगुहकंदरविबुरथंति॥ ७५
 जेसत्तुमित्तसमजावचित्तं॥ तेमुणिवरवंदउद्विहवचित्तं॥
 चउवीसहगंथहजेविरत्ता॥ तेमुणिवद्वजगपवित्तं॥ ७६॥ जे

मुक्ताणि ज्जा एकचित् ॥ घंदा मि महारि सि मो क्वयत् ॥ रय एत य
 रं विय सु घना च ॥ ते सु णि वर वंद उ वि दि स हा वा ॥ ७७ ॥ जित पि सुरा सं
 ज म धी रा सि धि व धू ञ्ण रा श्या ॥ रय एत परं जिय क म हा गं निय
 ते रि सि वर म इ ञा इ ञा ॥ ७८ ॥ उं जी नु ह र्मा चा र्या दि गुरु न्नो न
 मः पु ला क व कु श कु शी ल नि र्ग थ स्ना त क गुरु न्नो र्ध म हा र्ध नि
 र्ध यामी ति स्वा हा ॥ इ ति यु ल्ज य मा ल सं पू र्णः ॥ ॥ श्री ॥ श्री ॥
 ॥ अथ गु रा व ली पू जा लि ष्य ते ॥ प्र ह्नी णे म णि व न्म ले स्व म ह सि
 स्वार्थ प्र का श आ त्म के ॥ निर्म मा नि रु पा ख म मो घ चि द चि त्त मो हा ॥
 र्थे ती र्थे क्षि पः ॥ कृ त्वा ना च पि ज न्म शां त म मृ तं सा द्य ष्य नं तं श्रि त ॥ ७
 न् ॥ स ह ग्धी न् न य वृ त्त सं य म त पः सि धा न् न जे र्ये ण वै ॥ १ ॥ अ ने न
 हे त् प्र ते मा ग्रे सि धा ना म र्ध द त्वा न क्त्वा सु वी त त था हि ॥ वृ षं वृ ष
 ज से ना द्याः सि ह से ना द यो जि तं सं ज वं वा रु षे णा द्या व जू न नि पु
 र स्म राः ॥ २ ॥ क पि ध जं वा म रा द्यां सु म ति पं च लां च नं ॥ ये व जू च म
 प्र ष्ठा सु पा श्र्व व ल पू र्व काः ॥ ३ ॥ चं इ प्र जं द त्त मु र्खाः ॥ पु ष्म दं तं स
 मा श्रि ताः वि द न्ना द्याः ॥ श्री त ले रा म न गा र पु रो ग माः ॥ ४ ॥ कुं यु प्र
 धा नाः श्रे यां सं ध र्मा द्या द्वा द रं जि नं वि म लं मे रु यो र स्साः ज या
 र्या द्या श्रु त् उ र्दे रा ॥ ५ ॥ ध र्मे ख रि ष्ठ से ना द्याः श्रु ति व क्रा यु धा द र्याः स
 यं ॥ स्व यं नु प्र मु खाः कुं युं ॥ कु न्ना र्या द्या स्त र प्र षुं ॥ ध म ह्नि वि श्रा ख प्र मु ख
 म ह्ना द्याः मु नि सु वृ त्त न मी रां सु प्र ना रा द्याः व र द ता य तः स राः ७ ॥
 नि मिं पा श्र्व स्व यं न्वा द्या गौ त मा द्या श्रु स न्म ति ॥ ते म्मो ग ण ध रे त्रै मी
 द त्तो र्धे यं पु ना तु नः ॥ ८ ॥ उं जी वृ ष न से ना दि स र्व ग ण ध रे त्रै यैः र्ध
 नि र्व यामी ति स्वा हा ॥ ये स न्म ते रिं इ नू ति ॥ वी यु भू त्प नि नू ति
 कौ सु ध र्म भो र्यो मौ ड्रा खः ॥ पु त्र मै त्रे य सं जि तौ ॥ ९ ॥ अ कं य नो
 ध वे ला खः प्र ना स श्रु ग ण धि यः ए का द शै दं यु गी न ॥ मु न्या दी
 स्ता नु पा स्म हे ॥ १० ॥ उं जी श्र्व र्च मा न जि ने शि नः ए का द श ग ण
 ध रे त्रै यै र्ध नि ॥ अ र्ध श्री गौ त म सु ध र्मा क जं
 क्षा ण न् ॥ श्रु त के व ली नो वि ष्णु नं दि मि त्रा पर जि ता न् ॥ ११ ॥
 गो व र्ध नं न इ वा ऊं द रा पू र्व ध रान् पु नः वि श्रा ख षौ ॥
 र्यो क्ष त्रियं ज य सा क यं ॥ १२ ॥ ना ग से न च सि हा र्यो ॥ इ ति षे ण स

यं॥ विजयंबुद्धिलिंगाग॥ देवाकंधर्मसेनकं॥ १३॥ एकादशांगविस्
 ता॥ नक्षत्रजयपालकौ॥ यंरुंचध्रुवसेतचकंसंचायानिमांगि
 णः॥ १४॥ सुनचंचयशोत्रंनचंनइवाकमनुक्रमात्॥ लोहार्यंचयज
 मोत्र॥ जिनसेनादिकानपि॥ १५॥ उंकीं॥ गोतमादिमुनिन्योऽ
 र्धनिर्व०॥ यजेहृदलिमुक्तांगंपूर्वात्रिमाघनंदितं॥ धरसेनगुरुं
 सुष्यदंतनूतवलितथा॥ १६॥ जिनचंद्रकुंदकुंदा॥ चायेमाश्रु
 तिवाचकौ॥ समंतनइस्वाम्यार्थेशिवकोटिशिवायतं॥ १७॥ पूज
 पादंचैलाचार्य॥ वीरसेनश्रुतेहाणं॥ जिनसेननेमिचंद्रं॥ रामसे
 नमुताकिंकान्॥ १८॥ अकलंकानंतविद्यानंदमाणिक्यनंद
 नः॥ प्रनाचंद्रामचंद्रवासवेडुमवाससं॥ १९॥ गुणानशदिक
 नन्या॥ नरिश्रुततयः परान्॥ वीरगजातानर्धेण॥ सच्चिनसंम
 चयाम्पहं॥ २०॥ उंकीं॥ माघनंदादिमुनिन्योऽर्धनिर्व०॥ अर्धनि
 र्धयाः उच्चरलोत्तरगुणमणिनिर्येनगारायतीयुःसंज्ञाब्र
 ह्मादिधर्मोऽरुषयइतिचयेबुद्धिलब्धादिसिद्धेश्रेणोपोरा
 रोहणैर्येनगारायतीयुःसंज्ञाब्रह्मादिधर्मोऽरुषयइतिचये
 बुद्धिलब्धादिसिद्धेश्रेणोपोरारोहणैर्येतयइतिसमग्रतराध्यक्षवे
 धैःर्येमुत्पारमाश्रुसर्वानप्रभुमहमिहतानर्धयामोमुमुक्षन्॥ २१॥
 उंकींजिनानुत्तरेणसर्वमहर्षिणामर्धनि०॥ अर्धइतिमहर्षिपु
 पासनविधानं॥ अश्वानबोधनविशुद्धविवर्धमानं वृत्तामुतानु
 जवसेनवसंमदोयाः॥ स्फूर्प्योत्तयः स्फुरितलब्धिगणाधिपसा
 स्वस्तिक्रियासुरसकृत्परमर्षयोत्तः॥ एकांतसंशयतमोभिते
 वेत्रामूलहृगमोहनियहृविकस्वरचित्स्वरूपाः स्याद्वादसंवि
 दमृतस्रवमानजावाः॥ स्वस्ति०॥ २२॥ उच्चहृयारसलिहः प्रियत
 म्पवाचः॥ प्रन्तोपयोग्यवगृहोहृतमारदर्प्यामूर्च्छाचिदोरजने
 नोजनवेर्जिनश्रुस्वस्ति०॥ २३॥ सूत्रानुसारिगमतालपना
 सनात्म॥ धर्मांगसंग्रहविसर्गावपुर्मलाना॥ याथात्मदर्श
 नखलीनजितेन्द्रियश्चास्वस्ति०॥ २४॥ सामायिकस्तवतवंदन
 पापनाम॥ सुजाप्रतिक्रमणाकायविसर्जनेसुद्धमादिषुद्धने
 हितात्मसुजागरुकाः॥ स्वस्ति०॥ २५॥ अस्मान्नूत्रायनलोच

विचेलते कनके घटं तधवने स्थितिने जने च शक्ताः परीषहस
 हाः सहितास्तपोनिः स्वस्ति ॥ ६ ॥ क्षां त्यर्ज्ज्वमृदिमसंयमसस
 शोच ॥ त्यागेरकिंचनतया तपसामलेन वृक्षवृते तच दशात्मवृषे
 एनांतः ॥ स्वस्ति ॥ ७ ॥ शुच्यष्टके तविनयां गवचो रुदीयमुत्स
 गीनैद्यशयनासनगोचरेण रोविह्नवः स उपयोगदृढाजिषे
 गः ॥ स्वस्ति ॥ ८ ॥ स्वस्पष्टदेशचलिपुङ्गुलपाकिदेहा ॥ नामोद
 यात्ततनुवागमनसस्पवीर्यं ॥ कर्मागमांगमपवर्गाधियांकषं
 तः स्वस्ति ॥ ९ ॥ साम्प्रतिक्रमपरेपरिहारशुभोलोनावृक्षकुरु
 पेकलुषेवः वृतेः नितोद्यतामुकुरधिष्ठितधर्मशुक्लाः ॥ स्वस्ति ॥ १० ॥ ह
 बोधसंचलितसंज्वलिनाकषायतीव्रैतरोदयसमापगमक्रमंते
 योगित्वयोगविगमाच्चरविप्रकाराः स्वस्तिक्रियासुरसकृत्परमर्ष
 योनः ॥ ११ ॥ स्वाध्यायदिवाहगनित्यपुरस्सरानुषेत्पासमीक्षणाव
 सीकृतचित्तदैत्याः ॥ एकत्वसत्वसुतपोघृतिभावनेशाः स्वस्तिक्र
 यासुरसकृत्परमर्षयोनः ॥ १२ ॥ जायज्जिनेज्जसमयासमशानु
 मित्रा ॥ बुध्यादिलब्धिर्महिमानुगृहीतविश्वाः ॥ धेयोरसाकुलि
 तसिंहगजादिसेवाः स्वस्ति ॥ १३ ॥ सत्रेपुलकचकुशाः प्रथि
 ताः कुशीलाः निर्गुथनामकलिताः सकलावबोधाः येस्तात
 कास्तद्ग्रहपंचतयोपसंगाः ॥ स्वस्ति ॥ १४ ॥ यत्र क्वचित्तनुजलो
 कद्ग्रहोपसर्गाः संसर्गाणः स्थिरधियोनुपसर्गाणोवा ॥ शुद्धा
 त्मसंविदमुदारमुदोन्नजंतः ॥ स्वस्ति ॥ १५ ॥ एवंविधस्वस्त्यय
 नाद्यास्तसंकेतान्नाबोधिकशुचिनावाः जिनानिषेकादिवि
 धीन्विधत्तेयः सोस्तुतेधर्मयशोपत्रार्म ॥ १६ ॥ इति स्वस्त्ययनम
 नः प्रशाधनविधानं ॥ ॐ क्लीं सर्वगणधरादिमुनिभ्यः पुलाक
 वकुशकुशीलस्तातकानिर्गुथोमः अर्धनिर्चयामिति स्वाहा
 ॥ अर्धं ॥ इति पूर्ववलीपूजासंपूर्णं ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥
 ॥ अथ सरस्वतीपूजालिख्यते ॥ प्रकटितपरमार्थशुद्धसिद्धांतसा
 र ॥ जिनपतिसमयेस्मिन्सारदं संदधानः जगति समयसारः की
 र्त्तितः सन्मुनीधैः सवसतुमनचित्तेसच्चु तज्ञानरूपः ॐ क्लीं सरस्व

स्वती
१६

तिनगवतिवाग्वादिनिघादशांगश्रुतज्ञानत्रत्राचतराचतरसंबोधका
कानतां॥ॐ क्लीं श्री सरस्वतिनगवतिवाग्वादिनिघादशांगश्रुतज्ञानत्रत्र
तिष्ठतिष्ठवः॥ॐ क्लीं सरस्वतिनगवतिवाग्वादिनिघादशांगश्रुतज्ञानत्रत्र
सन्निहितोन्नवन्नववषट्सन्निधापनं॥ॐ क्लीं॥अथाष्टत्रुलसोख्यनि
धानमनायकं॥शिवपदंविपदंतकरंपरं॥जिगमिषुर्जिननाथमुखे
ज्ञतंसमयसारमहंसलिलैर्यजे॥ॐ क्लीं श्री॥सरस्वतिनगवतिवा
दशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः॥आचारांग॥सूत्रकृतांग॥स्यातांगसमव
यांग॥आर्याप्रज्ञासंग॥ज्ञातधर्मकयांग॥उपासकाध्ययनांग॥अ
तकृद्शांग॥अनुत्तरोपपादकदशांग॥प्रह्नव्याकरणांगविद्या
कसूत्रांग॥दृष्टिवादांग॥नामधेयवादशांगश्रुतज्ञानेभ्योजलने
र्वयामीतिस्वाहा॥विषमयाखलुसुप्तमविद्यया॥त्रिभुवनंप्रतिवो
धमयंतमन्॥उदयमत्रगतोवरचंदनैः समयसारसहप्रकरोर्जि
ते॥२॥चंदनं॥भवविपक्षतचेतनसत्सुखं॥मदनमज्वरसंशामनै
षधं॥शुभनिधिंप्रतिवोधितसकुथंसमयसारमिमैःसदकैर्यजे
अक्षतं॥३॥शुभपदार्थमणिद्युतिनिर्जुतंप्रहतडर्भमोहतमोन्न
समयसारनिधिंस्वदरिद्रता॥प्रशामनायमहामिसरोरुहैः॥४॥ॐ
क्लीं सरस्वतीनगवतीवाग्वादनीनमैः॥आचारांग॥सूत्रकृतांग॥स्यातांगसम
वायांग॥आर्याप्रज्ञासंग॥ज्ञातधर्मकयांग॥उपासकाध्ययनांग॥अ
तकृद्शांग॥अनुत्तरोपपादकदशांग॥प्रह्नव्याकरणांग॥विद्याकसूत्रां
ग॥दृष्टिवादांग॥नामधेयवादशांगश्रुतज्ञानेभ्यः॥पुष्पं॥निर्वयामी
तिस्वाहा॥प्रसन्नरामरनाथमुखोज्ञतं॥शुचिवचःकुसुमोत्कदश्रुजि
तं॥समयसारमपाररसान्वितैः॥श्रुतवैःप्रयजे शिवशर्मणो॥५॥नै
वेद्यं॥विमलकेवलबोधविधायिनी॥समयसारमयीकिलदेवतां
हततमःप्रसरेर्मणिदीपकै॥नगवतीमहतीपरिपूजये॥६॥दीपं द
गवबोधसुवृत्तमदोषधं॥शुभितजन्मजरामरणमयं॥अगरुतिर्गु
रुनक्तिनरादहं॥समयसारमसारहरंयजे॥७॥धूपं॥समयसारमयी
त्रिदशापगा॥परमहंसकुलोन्नवस्तुचिका॥त्रिभुवनं कलुषक्षय
कारिणी॥शुभफलैःपुनतीपरिपूजये॥८॥फलं॥सरोरुहैःशुभान्
तैःसरेसचंदनैर्निर्मितं॥कनककनकजानस्थितमनर्ममर्षमुदाश्र

नीष्टफललब्धयेपरमपद्मनदीश्वरः॥ सुतायवितराम्पहंसमय
सारकल्पदुमे॥ ॐ ह्रीं सरणे॥ आचारांगमूत्रकृतांगस्थानांगस
मवायांगव्याख्याप्रज्ञसंम॥ ज्ञातधर्मकथांग॥ उपासकाध्ययनां
ग॥ अंतकृद्दशांगअनुत्तरोपपादकदशांगप्रथमाकरणांगवि
पाकसज्ञांगदृष्टिवादांग॥ नामधेयवाद्दशांगश्रुतज्ञानेभ्योर्ध
निर्वपामीतिस्वाहा॥ अर्घ्यं॥ अयजयमाला॥ त्रिजगदीशजितेन्द्र
सुरबोहवा॥ त्रिजगतीजनजातहितंकरा॥ त्रिभुवनेशनुताहिस
रस्वती॥ चिडुपलब्धिमियंवितनोतुमे॥ १॥ अखिलताकशिवा
धनिदीपिका॥ नवनयेभुविरोधविनाशिनी॥ मुनिमतोषुजमोद
ननानुजा॥ चिडुः॥ २॥ यतिजनाचरणदिनिरूपणा॥ विदशानेदा
तागतहृषणा॥ नवनयातपनाशनचंद्रिका॥ चिडुः॥ ३॥ गुणसमुद्भवि
शुद्धपरात्मने॥ शकटनैककथासुपरीयसी॥ जितसुधातिजनक्ति
शिवप्रदा॥ चिडुः॥ ४॥ विविधदुःखजलेनवसागरेगाद
जरदिकमीनसमाकुले॥ अश्रुनृतांकिलतारणातोसमा॥ चिडुः॥ ५॥
गगनपुम्लयधर्मतदत्यकैःसहसदासगुणोविदनेहसौकलय
तीहनरोपनुग्रहात्॥ चिडुः॥ ६॥ पुंरयंहितवाक्पमिदंशुरेश्च
मिदंजगतामथवाश्रुजं॥ यतिजनोहियतोत्रविलोकते॥ चिडुः॥ ७॥
त्यजतिदुर्मतिमेवशुभेमतिं॥ प्रतिदिनंकुफतेचगुणेरतिं॥ जमन
तपियपापिपितधधिताः॥ चिडुः॥ ८॥ खलुनरस्पमनोरमणीजतेन
रमतैरमतेपरमात्मनि॥ यदनुजक्तिनरस्पनरस्पवे॥ चिडुः॥ ९॥
विविधकासकृतेमतिसंनवे॥ नवतिचापितद्वयविचारणे॥ य
दनुजक्तिनरान्वितमानवे॥ चिडुपलब्धिमियंवितनोतुमे॥ १०॥ योह
र्निशंपवतिमानसमुक्तिमार॥ स्यादेवतस्यनवनीरसमृद्धारःमु
क्तेजिनेंद्रवचसोहृदयेचहार॥ सज्ञाननृषणकवेस्तवनंचकार
॥ ॐ ह्रीं॥ सरस्वतीजगवतिवाग्वादिनीवाद्दशांगश्रुतज्ञानेभ्योर्ध
महर्घ्यनिर्वपामीतिस्वाहा॥ अर्घ्यं शतिश्रीशास्त्रजीकजियमाला
युजासमाप्त॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥

॥ श्री॥

॥ श्री॥

॥ श्री॥

॥ श्री॥ १॥

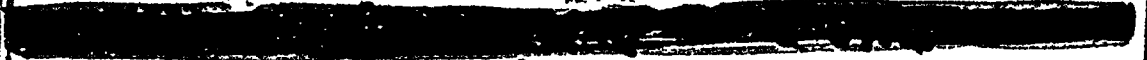
॥अथ लब्धिविधानपूजनजयमाललिख्यते॥ ॐ॥ श्रीवर्धमानजि
 नरजगिप्रयुक्तं॥ श्रीगोतमादिगणनायकबुधयुक्तं स्यापयंमि
 नवकेवललब्धिहेतो॥ योज्ञान्वपस्पदिहलब्धिविधानहृत्॥ १॥
 वीरंश्रीवर्धमानश्च॥ सन्मतिश्चजगत्रये॥ बुधैरपिमहांवीरो॥ म
 हाधीरप्रकीर्तितः॥ २॥ एतानिपंचनामानि॥ समुच्चार्यमुत्तकितः
 पुष्यांजलिविधतव्यं॥ कर्त्तव्यस्त्रीप्रदक्षणा॥ ३॥ ॐ क्लीं॥ श्रीमत्स
 हावीरवर्धमानस्वामिन् अत्रावतरावतरसंवौषट् आकाननं॥ १॥
 ॐ क्लीं श्रीमत्सहावीरवर्धमानस्वामिन् अत्रतिष्ठतिष्ठतः॥ २॥ स्याप
 नं॥ ३॥ ॐ क्लीं ॐ क्लीं श्रीमत्सहावीरवर्धमानस्वामिन् अत्रममसा
 निहितो नवनववषट्मनिधापनं॥ ३॥ कांमं॥ ४॥ ह्रीराब्धिते
 पेर्वकुंकुमाद्यैः॥ सस्त्रमचंगारविनिर्गतैश्च॥ चापेजितेशंजित
 मोहमहं॥ श्रीवर्धमानेनवलब्धिहेतो॥ ५॥ ॐ क्लीं श्री॥ अर्हन् श्री
 मत्सहावीरवर्धमानस्वामीन् अनंतज्ञानाय नमः॥ ६॥ अनंतदर्शन
 यनमः॥ ७॥ अनंतसौरव्यायनमः॥ ८॥ अनंतज्ञापिकायनमः॥ ९॥
 अनंतज्ञापिकायनमः॥ १०॥ अनंतलाजायनमः॥ ११॥ अनंतजोगाय
 नमः॥ १२॥ अनंतउपजोगायनमः॥ १३॥ अनंतवीर्यायनमः॥ १४॥ जलं नि
 र्वेषामीतिस्वाहा॥ १५॥ जलं॥ श्रीचंदनैश्चाफचरित्रतुल्यैः॥ गंधादिभि
 र्यतसारमिश्रैः॥ चापेजितेशंजितमोहमहं॥ श्रीवर्धमानं नवला
 ब्धिहेतो॥ १६॥ ॐ क्लीं अर्हन् श्रीमत्सहावीरवर्धमानस्वामिन् अत्र
 तज्ञानय नमः अनंतदर्शनाय नमः॥ १७॥ अनंतसौरव्यायनमः॥ १८॥
 अनंतज्ञापिकायनमः॥ १९॥ अनंतलाजायनमः॥ २०॥ अनंतजोगायन
 मः॥ २१॥ अनंतउपजोगायनमः॥ २२॥ अनंतवीर्यायनमः॥ चंदनं निर्व
 षामीतिस्वाहा॥ २३॥ चंदनं॥ सुकोपयोगैरिवमुष्यतासै शालिसि
 तेरक्षतसजुणोद्यैः॥ चापेजितेशंजितमोहमहं॥ श्रीवर्धमानं नवला
 ब्धिहेतो॥ २४॥ ॐ क्लीं अर्हन् श्रीमत्सहावीरवर्धमानस्वामिन् अनंत
 ज्ञानाय नमः॥ अनंतदर्शनाय नमः॥ अनंतसौरव्यायनमः॥ अनंतज्ञ
 षिकायनमः॥ अनंतलाजायनमः॥ अनंतजोगायनमः॥ अनंतउप
 जोगायनमः॥ अनंतवीर्यायनमः॥ अक्षतं॥ २५॥ कांमं॥ २६॥ सत्यमि

जातामलचंपकाद्यै॥ गुंजहिरेफैकुमुचपैश्र॥ चापेजिनेत्रं
जितमोहमहं॥ श्रीवर्धमानंनवलब्धिहेतो॥ ४॥ उँकीं॥ अर्ह
न्श्रीमन्महावीरवर्धमानस्वामिन्अनंतज्ञानायनमः॥ अनं
तज्ञानायनमः॥ अनंततनुपज्ञोगायनमः॥ अनंतवीर्यायनमः
पुष्पनिर्वपांमीतिस्वाहा॥ ५॥ पुष्पं॥ सिद्धान्तपक्वान्नसुपाप
साद्यै॥ नैवेद्यकैपात्रगतैरसाद्यै॥ चापेजिनेत्रंजितमोहमहं
श्रीवर्धमानंनवलब्धिहेतो॥ ५॥ उँकीं॥ अर्हन्श्रीमन्महाव
रवर्धमानस्वामिन्अनंतज्ञानायनमः॥ अनंततनुमेतनायनमः
अनंतसौरमायनमः॥ अनंतक्षायिकायनमः॥ अनंतला
जायनमः॥ अनंतज्ञानायनमः॥ अनंततनुपज्ञोगायनमः॥ अ
नंतवीर्यायनमः॥ नैवेद्यंनिर्वपांमीतिस्वाहा॥ ५॥ नैवेद्यंहीयेप्रदा
ताखिलदिग्विभागै॥ सत्केवलादिमकरैप्रचोद्यैः॥ चापेजि
नेसंजितमोहमहं॥ श्रीवर्धमानंनवलब्धिहेतो॥ ६॥ उँकीं
अर्हन्श्रीमन्महावीरवर्धमानस्वामीन्अनंतज्ञानायन
मः॥ अनंतदर्शनायनमः॥ अनंतसौरमायनमः॥ अनंतक्षाय
िकायनमः॥ अनंतलाजायनमः॥ अनंतज्ञानायनमः॥ अन
ंततनुपज्ञोगायनमः॥ अनंतवीर्यायनमः॥ ६॥ दीपं॥ ६॥ कृष्णागर
प्रभृतिधूपचपोरुदाकै॥ सौरमवासितसमस्तदिगंतरालैच
पेजिनेत्रंजितमोहमहं॥ श्रीवर्धमानंनवलब्धिहेतो॥ ७
उँकीं॥ अर्हन्श्रीमन्महावीरवर्धमानस्वामीन्अनंतज्ञानाय
नमः॥ अनंतदर्शनायनमः॥ अनंतसौरमायनमः॥ अनंतक्षाय
िकायनमः॥ अनंतलाजायनमः॥ अनंतज्ञानायनमः॥ अन
ंततनुपज्ञोगायनमः॥ अनंतवीर्यायनमः॥ ७॥ धूपं॥ निर्वपांमीतिस्वा
हा॥ ७॥ नारगपूगप्रकमात्रुलिंगै॥ नानाफलेमोक्षफलैतिदे
द्यै॥ चापेजिनेत्रंजितमोहमहं॥ श्रीवर्धमानंनवलब्धिहेतो
८॥ उँकीं॥ अर्हन्श्रीमन्महावीरवर्धमानस्वामिन्अनंतज्ञा
नायनमः॥ अनंतदर्शनायनमः॥ अनंतसौरमायनमः॥ अनं
तक्षायिकायनमः॥ अनंतलाजायनमः॥ अनंतज्ञानायनमः॥ अनंततनुपज्ञोगायनमः॥

अनंत उपनोगायनमः ॥ अनंत वीर्ययनमः ॥ फलं निर्वपं
 मिते स्वाहा ॥ जलादिद्रव्याष्टकसंगताञ्जै ॥ अर्थैरुदश्रैरुप
 मानमुक्ते ॥ चापेजिनेशं जितमोहमहं ॥ श्रीवर्धमानं न
 वलब्धे हेतो ॥ ए ॥ उक्ती ॥ अर्धेन श्रीमन्महावीरवर्धमानस्वामि
 न् अनंतज्ञानायनमः ॥ अर्था अनंतदर्शनायनमः ॥ अनंतसौ
 ख्यायनमः ॥ अनंतज्ञापिकायनमः ॥ अनंतलाजायनमः
 अनंतनोगायनमः ॥ अनंत उपनोगायनमः ॥ अनंतवीर्य
 यनमः ॥ अर्थ ॥ ए ॥ अयजयमालालिखते ॥ नानामहोत्स
 वेपेतं ॥ दत्वाचार्यजिनेशानं ॥ पश्चात्तन्मया जरा रा वै ॥ ऊर्वेते
 वांप्रदक्षिणं ॥ १ ॥ ॥ जयसकलसुरासुरनमितपाद ॥ जयवा
 क्स्विसज्जितकुमतिवाद ॥ जयपरमयोगनिर्मलविचार
 जयचरणादृतसंसारभार ॥ जयनिज्जिनिमिध्मावपनवो
 धः ॥ जयषंडितकर्मातिदेह ॥ जयपरिहरिताक्षलश्मगेह
 जयलोकसमुद्धरणैकधीर ॥ जयपापनिराकरणाषिवीरध
 जयमोहमहातरुनिदिक्कार ॥ जयमुक्तिपुरंधीकदयह
 रा ॥ जयछिन्ननिन्नकंदर्पसम ॥ जयरागद्वेषरिपुकृतप्रहार
 य ॥ जयस्तत्रयमूषितशरीर ॥ जयनपरविशोषितविषयनी
 रा ॥ जयपरिमलविमलनिनिचपाप्रमाद ॥ जयकरुणास्मित
 तिविषाद ॥ ६ ॥ जयलोकत्रयमहनीषरिष ॥ जयतिदितप
 परसग्रंथलेख ॥ जयकांचनमेरुकुताविषेकजयवोधेस
 माधिगुणीतिरेष ॥ ७ ॥ जयचातुमितुसमहेमलोह ॥ जयह
 रात्राशितयापरोह ॥ जयनिषलविमलकेवलविशालज
 यसहजबुद्धिहंसीमशक्त ॥ ८ ॥ जयसप्तपंचपन्वचरित ॥
 जयसध्पजनलक्षणपवित्र ॥ जयसमोसराविश्रवाधि
 कूट ॥ जयसिद्धमनाहतमंत्रशूद्र ॥ ए ॥ घत्ता च द ॥ इत्यादीनु
 तिसवकै ॥ हर्षकीर्त्तितुरंजके ॥ स्तुत्वाश्रीसत्पतिपश्या
 त ॥ पुष्पाजंलानिनिंदयेत् ॥ १० ॥ उक्ती श्रीअर्धेन श्रीमन्म
 हावीरवर्धमानस्वामिन् अनंतज्ञानसक्तेनमः ॥ अनंतदर्श
 नायनमः अनंतसौख्यायनमः अनंतज्ञापिकायनमः अनंतलाजायनमः अनंतनोगायनमः
 अनंत उपनोगायनमः अनंतवीर्ययनमः अर्थ ॥ इति तैलाकाहुतिलविधिविधानश्रुति ॥ ११ ॥

सुजाणि ज्ञासकवित्तः रंदा मिमह रिमिमो कवयत्त रयणाय
रंजिय सुधनावः ॥ ते मुनि चर ॥ विद्वल कीर्ति ज्ञानावना चर ॥
वज्रधर जिनपति नमो ॥ निति चंद्र प्रज चंद्रायणा ॥ चोती सत्र ॥
विद्वल चंद्र मुनि हि सहाच ॥ ७७ ॥ जेत विमुक्ष संनमवीर
विद्वि वधू प्रणु सइया ॥ स्वरात्त परं जिय कमह गंजिय त्तेरि
विबर मइ ज्ञाया ॥ ७८ ॥ ३ ॥ ई सुधर्मा जर्ष मदि मु रुन्मे नम खुल
कवइ प्र मुनी स निर्मा यस्तान क मु लाने र्वं लह र्वं नि र्व क मी ति
स्वाहा ॥ इति गुरु जय मालार्घ्य ॥ अथ वीरा विहर माणां की
जय माला लिखिते ॥ श्री मंधर जिण वंद स्पं जग सार है ॥
पुंडरी किणी जिण राय ॥ जं वृक्षी प वि दे ह मै जग सार है ॥ मेरु पूर्व
दिशि जाय ॥ वज्र नाय जुग मंधर जिने स्वर ते मो कर नर नागरो
त कवा ऊन मो कवा ऊ स्वामी अने क गुण मणि सागरो पांच
सैध बुध प्रमाण सो है ॥ कोटि र विस म वा ज ये ॥ अ व क ऊ न वि
यण कण हो जो जिन धत की घंड राज ये ॥ १ ॥ संजात क जि
न से य स्पं ज गि सार है ॥ शंति स्वयं प्र न दे व रिष न रा ण प्र ण
मूं स दा जग सार है ॥ अनंत वीर्य करि सेवा ॥ करि से व स्स रो प्य
ऊ जिणं द श्री वि शाल कीर्ति ज्ञा वनां ॥ वर वज्र धर जि न पति
नमो ॥ निति चंद्र प्र ज चंद्रायणा ॥ चोती सत्र तिसय गुण गरिष्ठा
समो सर ण सो ना धरा ॥ नागो इ इ इ न रे इ वं दं ते नि र चल जी व द
या परा ॥ २ ॥ पुष्करार्ध जि न से य स्पं ज गं सार हो ला गृ जि न जी
कै पाय ॥ चंद्रो प म जि न चंद्र न जो ज ग सार हो ॥ जि न से यां पा
ति ग जाय ॥ सब जाय पा ति ग जि न च्यं ग म ज ग न्ता थ क ई स्व
रो ॥ ने म प्र न प्य ऊ वी र से ण जी म हा न इ ज ती स्व रो ॥ जि न दे व
ज स अ र अ जि न वी र्य वि हर मा ण म हा व ला ॥ क न ग ना न के
वल दी प दी प त वि स्व त त्व च रा च रा ॥ ३ ॥ स म व सर ण जि न को
व जो ज ग सार हो ॥ मा न स्यं न क रं ग ॥ च ऊं दि शि सर स सो
वरी ज ग सार हो ॥ घा ई स ज ल त्त रे ग स त रं ग घा ई पु ष्य वा
डी कोट ती न वि रा ज ये व न च्छा रि वे दी च्छा रि सो हैं ना दिसा

गाजयेकनतूपहर्षीवलीमनोहरचैत्यहृक्षसुहावता॥
 शाकारस्फटिकमणिमयजहांसनादाद्गजावता॥धजे
 हविचिमिंघासराखोंजोगसारजीहो॥उपरिकमलत्रा
 नूपअंतरीषजैहैपरिरहैजगसारहै॥अतिसैश्रजिन्
 पजिननूपअतिशयवंतदीसैकराकरमनमोहीयो॥तालंता
 चोसविचमरकरपतिछत्रतीनजुसोहयोजहांअमरअप
 छरागीतगावैहावजावजसंतिया॥रुणिहुंणियेकमिकरे
 कमिकनाचवरणारुणिहुंणिकैतिया॥५॥एकजनावैजावा
 नांजगसारहै॥पूजाकरैईकचाव॥एककरैगुणवर्णनांज
 गसारहै॥एटपंटेमनलाया॥मनलायएकजपैजपालीएक
 करैप्रजावना॥एकत्वसारविचारनामैसूणोंअनेकमहा
 जनां॥जहांमोदिमारगसदाचालैकालचवयोईरहै॥सु
 विदेहषेत्रसंघेत्रताकीअवरमहिमांकोकहै॥६॥ऊंयमा
 यजिनकेसमैजगसारहै॥अवतरियजेनराय॥मुनिदि



सुव्रतवारैलहीजगसारहै॥जिनदिष्यसकपसायासुपसा
 यजिनजीकेकोडिपूर्वश्रायुमानपरमानिये॥आममचौ
 वीसीविषेकुलकरपुत्रजोजिनजानिये॥सातमांजिनजीके
 समैगामीमौषिजेसुदिगंवर॥जावनांजावैदुषकीर्तिहोए
 मुक्तिस्वयंवर॥७॥उदकचंदनतंडुलपुष्पकै॥चरुसुदीप
 सुधूपफलार्घकै॥धवलमंगलानरवाकुलै॥जिनग्रहे
 जिनवीशमहंयजे॥१॥उंईश्रीवीशविहरमाणविदेहषेत्र
 कैविषेसदांसांस्वताकेवलज्ञानमैविराजमांतहै॥आ
 मंधरजी१युगमंधरजी२~~सुव्रतजी~~वाऊजी॥३॥सुवाऊजी॥४॥
 स्वयंजातजी॥५॥स्वयंप्रजजी६रिषिताराणजी७अनंतवीर्यजी
 ८सूरप्रजजी॥९॥विशालकीर्तिजी॥१०॥वज्रधरजी॥११॥चंचा
 एजी१२चंचवाऊजी१३नूयंगमजी१४ईस्वरजी१५नेमप्रभुजी
 १६वीरसेणजी१७महानइजी१८देवजसजी१९अजितवीर्य

२०) एहवीशविहरमाण हैतिनकेचरणकमलकीपूजाअर्थनि
र्वयामीतिस्वाहा॥ इतिश्रीवीशविहरमाणजयमालासंपूर्
र्ण॥ कृत्याकृत्रिमदारुचैत्वनिलयान्॥ नित्यंत्रिलोकीनुतान्॥
वंदेजावतमंतरकृतिवराकल्पामरासर्वागतान्॥ सद्गुणहतपु
ष्पदामचरुकैदीपैश्चभूपैः फलेनाराद्यैश्चयजेप्रणम्यशिरसा
डुःकर्मणांशान्तये॥ ७०॥ उक्तीकृत्रिमाकृत्रिमचैत्यालयसं
बंधजिनविंबेभ्योर्धमद्वाधनिर्वयामीतिस्वाहा॥ वर्षेषुव
र्षोत्तरपर्वतेषु॥ नदीश्वरेयानिचमंदरेषु॥ यावन्तिचैत्यायतननि
लोके॥ सर्वाणिवंदेजिनपुंगवानाम्॥ ७१॥ अविनितलगतातां
कृत्रिमाकृत्रिमाणं॥ वतनवनगतातांदिव्यवैमानिकानाम्
इहमनुजकृतानां देवराजाश्चिंतानां॥ जिनवरतिलयानां नाव
तोदंस्सरामि॥ ७२॥ जंघातकिपुष्करार्धवसुधाक्षेत्रत्रयेयेन
वा॥ श्वशंभोजशिरखंडिकंवकनकशब्दघनानाजिनाः सम
ज्ञानचरित्रलक्षणधरादाधसकर्मधना॥ ज्ञानागतवर्त
मानसमयेतेभ्योजिनेभ्योनमः॥ ७३॥ श्रीमन्नेरौकुलाक्षैरज
तगिरिवरेणाल्मलोजंघुहृक्षेहृक्षारेचैत्सहृक्षेरतिकररुचके
कुंडलेमानुषांके॥ इषाकोरेजनाक्षौदधिमुखशिरखरेमंतरे
संगलोके॥ ज्योतिर्लोकेजिनवंदेजवनमहितलेयानिचैत्याल
याति॥ ७४॥ शौकुंदेडुतुषारहारधवलौकाचिंङ्नीलप्रभौक्षै
बंधूकसमप्रभौजिनचषौदौचप्रियंगुप्रभौ॥ शेषाः षोडशजन्म
मृत्पुरहिताः॥ संतप्तहेमप्रभा॥ स्तेसंज्ञानदिवाकराः सुरनताः
सिंहिप्रयच्छंतुनः॥ ७५॥ इच्छामिनेतेचेइयमत्ति॥ कार्त्तस्सगोक
वतस्सालोचे॥ अहलोयतिरियंलोयउदलोयमिक्किहिमा
किहिमाणि॥ जाणिजिण्णेइयाणि॥ ताणिसच्चाणितीसुच्चिलो
एसुन्नवणवामियवाणवितरजोयसियकप्पवासियत्तिच
उच्चिहादेवासपरिवारादिद्वेणगधेणदिद्वेणपुप्फेणदिद्वे
णधूपेणदिद्वेणचुसेणदिद्वेणवासेण॥ दिद्वेणन्हाणेणणि
। च्चकालंअचत्ति॥ पुज्जत्ति॥ वंदत्ति॥ वेदत्ति॥ एमंसंत्ति॥ अ
हमविइहसंतोतत्ससंताइयंणिच्चकालं॥ अचेमिपूजेमि॥ वं

१५० पू०
२०

दामि॥ एमं सामिडकवकवउकमकवउवोहिलाहोमु॥ शं॥
मएं समाहिं रणं॥ जिणगुणसंपतिहोउमजं॥ अथपूर्वकि
कमथ्याक्तिकापराक्तिकदेववंदनायांपूर्वाचार्यानुक्रमेण
सकलकर्मक्षयांर्यत्रावपूजावंदनास्तवसमेतां॥ श्रीपंचम
हागुरुक्तिकायोत्सर्गकरोमहम्॥ एमोअरइंत॥ एमोसि
घाणं॥ एमोआश्रियाणं॥ एमोनुज्जाय॥ एमोलोएसवसा
हणंतावकायंपावकमंडुचरिखंवोस्सरामि॥ जापं॥ धी दीय
ते॥ इतिदेवपू॥ संपूर्णं॥ अथसिद्धीकीपूजाविष्यत्रो॥
कामं॥ उ॥ धीघोरयतंसविंडुसपरंबलस्वरावेष्टितं वर्गापू
रिवदिगातांबुजदलंतलंधितत्वान्वितं॥ अंतःपत्रतटेष्म
हतयुतंकींकारसंवेष्टितं देवंध्यायतियः समुक्तिमुन्नोवैरी
नकंवीरवः॥ धीकीं एमोसिद्धां एं सिद्धपरमेष्ठिनूअत्रा
वतरावतरसंवेष्टितं आकानतं॥ १॥ अत्रतिष्ठतिष्ठः व
स्थापनं॥ २॥ अत्रममसन्निहितो नवन्नवसंनिधायनं॥
॥ ३॥ निवमनोमणिनाजिननारया॥ समरसैकमुधारसधार
या॥ सकलबोधकलारमणीयकां सहजसिद्धमहंपरिपूज
या॥ नुंकीं श्रीसिद्धचक्राधिपतेयेजलंनिर्वयामीतेसाहा॥ जलं स
हजकर्मकलंकविनाशनैः॥ रमलजावमुवासनचंदनैः॥ अनुयमा
नगुणावलिनायकां सहज॥ चंदनं

सहजोवसुनिर्मलतंडुलैः॥ सकलदोषविशालविशोधनेः
अनुपरोधसुबोधनिधानकं॥ सहजणे॥ अहतां समयसार
मुपुष्कसुमालया॥ सहजकर्मकरेणविशोधया॥ परमयो
गवलेनवसीकृतं॥ सहजणे॥ पुष्पां॥ अकृतबोधसुदिमा
निवेदकैः॥ इहतजातिजरा मरणंतकैः॥ निरवधिप्रचुर
त्मगुणालयं सहज॥ पा॥ नैवेद्यं॥ सहजरत्नरुचिप्रतिदीप
कैः॥ रुचिप्रतितमप्रविनाशनैः॥ निरवधिसुविकासप्रका
शनैः॥ सहज॥ हादीयं॥ त्रिजगुणाक्षयरूपसुधूपतैः॥ स्वगुण
घातमलप्रविनाशनैः॥ विसदबोधसुदीर्घसुखात्मकं॥ स्व

सदबोधसुदीर्घसुखात्मकं सहजं ॥ धूपं ॥ परमज्ञावफला
वलि संपदा ॥ सहजतावक्रतावविशोधया ॥ निजगुणस्फुरा
नात्मनिरंजनं ॥ सहजं ॥ फलं नेत्रोन्मीलविकाराज्ञावनिवहै
रसंतवोधायवै ॥ वारिगंधाक्षतपुष्पदामवरुकैसहीपक्षुपै
फलैः ॥ यश्चिंतामणिशुद्धतावपरमज्ञानात्मकैरच्ये ॥ सिद्धान्त
स्वाडमगाधबोधमचलंसंचर्यामोचये ॥ १५ ॥ अर्थः ॥ त्रैलोक्य
कोश्वरवंदनीयचरणः प्रायुःश्रियंशाश्रुती ॥ यानाराधयते
रुद्रः चंद्रमनसः संतोषितीर्थकरः ॥ सत्सम्पत्तविवोधवीर्य
विक्रदाकावाधताद्यैर्गुणैः युक्तां स्वातिहतोषवीमिसततंसे
धानविशुद्धोदयान् ॥ १६ ॥ विरागसनातमशांतनिरंसानिराम
यनिर्जयनिर्मलहंस ॥ सुखंमविवोधनिधानविमोह ॥ प्रतीद्वि
शुद्धसुसिद्धसमूह ॥ १७ ॥ विहरितसंस्तततावतिरंग ॥ समामृतपू
रितदेवविसंग ॥ अबंधकषायविहीनविमोह ॥ प्रसीद ॥ १८ ॥
निस्रारितडुःकृतकर्मविपात्रः सदामलकेवलकेलितिवा
सा ॥ नबोद्धियारगशांतविमोहप्रतीद ॥ १९ ॥ अनंतसुखामृत
तसागरधीरा ॥ कलंकरजोन्नरनूरिसमीरा ॥ विरवंडितकामवि
रामविमोह ॥ प्रतीद ॥ २० ॥ विकारविवर्जिततर्जितशोकवि
वोधसुनेत्रविलोकितलोकविहारविरावविरंगविमोह ॥ प्र
सीद ॥ २१ ॥ रजोमलस्वेदविमुक्तविगात्र ॥ निरंतरनित्यसुखाशृत
पात्र ॥ सुदृशिनराजितनाथविमोह ॥ प्रतीद ॥ २२ ॥ नशमरवंदि
तनिर्मलजाव ॥ अनंतमुनीश्वरपूजिविहाव ॥ सदोदयविश्व
महेशविमोह ॥ प्रतीद ॥ २३ ॥ विदंनः विदूषविदोषविनिंश
परापरसंकरसारवितंश ॥ विकीयविरूपविशोकविमोह ॥ प्र
सीद ॥ २४ ॥ विचिंतितनिर्मलनिरहंकार ॥ अचिंसचरित्रविद
र्येविमोह ॥ प्रतीद ॥ २५ ॥ विवर्णविगंधविमानविलोनाविमा
यविकायवित्राह्विशोना ॥ विमायविकायविश्राह्विशोना ॥ अ
नाकलकेवलसर्वविमोह ॥ प्रतीद ॥ २६ ॥ घृताः ॥ असमयमय
सारंघा रुचैतत्पचिंक्रं ॥ परपरणितमुक्तिपद्मनंदी इवंचं ॥ नि

सेवाकीपू

२१

खिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विमुहं ॥ स्मरति नमतियो वासोति ॥
 सो ज्येति मुक्तिं ॥ २१ ॥ इति सिद्धचक्रं पूजा जयमालसमाप्तं ॥ अ
 थेषो लाहकारणपूजा जयमाललिख्यते ॥ श्लोकः ॥ ऐं ह्रं ह्रं
 प्यपरं प्रमोदां धनात्मनामात्मनि मत्प्रमानः ॥ इत्युक्तिः मुष्
 निर्जितेन ह्रं ह्रं ॥ महाप्रहं षोडशकारणानि ॥ १ ॥ उक्तीद
 र्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेषु अत्रावतरणवतरसंबोध
 ट्त्राकाननं ॥ उक्तीदरुनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेषु अ
 त्रतिष्ठतिष्ठतः स्यात् ॥ उक्तीदरुनविशुद्ध्यादिषोडश
 कारणत्रयमसंनितो न क्वचविषट् संन्तिथीकरणं ॥
 गंगादितीर्थैश्च वारिपूरैः ॥ स्तायापहो र्धनसारसारैः ॥ ती
 र्थकरश्रीसुखसाधकानि ॥ यज्ञेमुदाषोडशकारणानि ॥ उक्
 तीदरुनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेषु जलनिर्वपामीति स ॥
 हा ॥ जलं ॥ थारसेतसच्चंदनयेन सारं ॥ कर्पूरगौरेण संनोह
 रण ॥ तीर्थकरश्री ॥ यज्ञेमुदा ॥ ३ ॥ अक्षतं ॥ कुदरमंदे
 : शुचिसिद्धचारैः ॥ सत्पारिजातैः सरसैः रुहेश्च ॥ तीर्थकर
 यज्ञेमुदा ॥ पुष्पं ॥ धः ॥ पक्कान्नशास्योदनपायसाद्यैः नैवे
 द्यकैः कांचननाजनस्यैः ॥ तीर्थ ॥ यज्ञेमुदा ॥ नैवेद्यं ॥ प्रस
 तरधांतहरेरुदरैदीपैर्ध्वंसकेवललब्धिहेतोः ॥ तीर्थकरश्री ॥
 ० ॥ दीपं ॥ धूपोद्गमावासितदिविनागैः ॥ धूपैर्नवजांतिवि
 नात्रानाया ॥ तीर्थकरण ॥ ७ ॥ धूपं ॥ नागिंपूरौफमाकुलिंगैः ॥
 श्रीमङ्गिरासैः कदलीफलैश्च ॥ तीर्थकरण ॥ ८ ॥ फलं नकिश्क
 शुभुरं ह्रंसं स्वत्मिदं तीर्थकराणां पदं ॥ लब्धवांछतियो विवा
 रचतुरा संसारजीनाशाय ॥ श्रीमहर्शनशुद्धिर्निविनय ॥
 तवतो दीनफलं ॥ नत्तमाषोडशकारणानि सनरा संपूज्यवा
 राधयेत् ॥ ए ॥ अर्घ्यं ॥ पुष्पा ॥ नवजनमणनिवारणसो लहका
 रण ॥ पयडमिगुणागणसायरायणविविचिचययत्प्रसु
 हस्वयंकरकेवलणाणदिवायर ॥ बुदिदधरक्यटमदं
 मणविमुक्तिमणवयणकायविरह्यतिशुद्धिमां चंडकेवे
 एनचउप्ययाका ॥ जोमुतिवारंगणिहियह्रहाका ॥ प्रणुदिए

३

१

१

परिपालकमीलने॥ जोशक्तिहरइसंसारहे॥ एणोपयोगजो
कालुगमश॥ तसुतणियकित्तिनुवणयलिजमइ॥ सवेउवाउजे
अणुसरंति॥ वेणोणवणुततरति॥ जेजउत्तवंतिवीरहपया
रु॥ तेसगासुरिदहवहवसारु॥ जोसाऊसमाहिधरंतिपकु॥
सोणहवइकालुमहिंयवकु॥ जोजाणइतयावच्चकरणसेहे
इसब्रदोसाणहरणु॥ जोचितइमणिअरहंउदेवतसावसयह
एंतहकवणधनं॥ पचयणहिंससरसगरुजंणवंति॥ वउप
इससरिणतेजमति॥ वउसुमहत्ततइजेणःऊरतितेअण
उरणतेपधरति॥ जोछहआवासहावतुदइसोसिधियु
सहसीलिइ॥ जेमगायहावणआयरंति॥ जेअहमिंदत्तणु
संजवंति॥ जेपचयणकज्जसमच्छुंति॥ तहकामजिणंतह
कवणंति॥ जेवडद्वस्सकारणुवहंति॥ तेतिछयरत्तणु॥
पउलंहंतिइयसोलहनावणजेधरंति॥ तेउतरमणुणवाण
हचटंति॥ घत्ता॥ इहसोलहकारणकम्मवियारण॥ जेधरं
तिवयसीलधरा॥ तेदिविअमरेस॥ पुहमिणरेस॥ सिधिव
राणिहियइहरा॥ ७॥ इतिश्रीसामानसोलहकारणं
जाजेमालसमाप्तं॥ ॥ ७॥ अथद्वालषणयुजालिष
ते॥ उतमादीघमादंत॥ ब्रह्मचर्यसुलषणंस्थापयेदसथाध
मी॥ जेमंजीननायीतं॥ उंकीदसलषणेकधर्मागाय॥ अत्राव
तरावतरसंवौषट्आकाननं॥ उंकीअत्रतीष्टतीष्टःवःवःस
यनं॥ उंकी॥ अत्रममसनीहीतोभवन्नवषट्सनिधापनं॥ ७॥ च
चकांचननृगारा॥ नालानर्गतसेजयै॥ सेजयै॥ सतषमाद
वरंधमी॥ जोजेहंदसलषणं॥ उंकीदसलषणेकधर्मीगाय
उत्तषमा॥ मादव॥ आर्जव॥ सत्ता॥ सोच॥ संयम॥ सतपस्या॥
आकीचनब्रह्मचर्याणीधर्मी॥ १॥ जलं॥ चंदनचंद्रगंधाद्वौ
मलीयाचलसंजवै॥ सतषमादीवरंधमी॥ यजेहंदसलष
णं॥ चंद्रतः॥ २॥ सालेयरघतेसीधै॥ रघतेसरलेसुनै॥ स
तण॥ अक्षते॥ ३॥ मंदारमालातीपुष्पे॥ पारीजाताञ्जचंप
के॥ सतण॥ पुष्पं॥ ४॥ धानेवैद्यैद्युतपुरादै॥ धीरानंदधीपुर्वकै

दशमपृष्ठ
२२

सतपथा॥ नैदेष्टा॥ दीपैर्दीपीतदीकचक्रै॥ कर्पुरावतीसंयुतास
तपो॥ धादी धुष्पैर्धुपीतदिकचक्रै॥ कर्पुरागुरुसंजवै॥ सतप
॥ धूपः॥ आम्रोदःफलसंघाते॥ नासातेत्रमुषावैहे॥ सतः
॥ फले॥ जलचंदनसालैयैःपुष्पनैवेददीपकैःधुपैःफलैः
स्तुसंकीर्णमर्घधर्मायवरंददेत्॥ ए॥ अर्घ्यं॥ जैर्देकानुएनीस्म
रं॥ जेएहंतीजषपंजरे॥ एणीरोयंअयरामं॥ तेलहंतीसोषपरं
॥ जेएमोषफलतंपायीजई॥ सुधम्मधिउएहोगीजई॥ षष
मा॥ ययुतुंगउदेहु॥ मद्रपलवअजवसाहु॥ २॥ सत्यसो
त्रमुलसंजमदलु॥ उवीहमहातवएवकुसुमायेलु॥ वनुषी॥
हचाउपसारीयपरीमलु॥ पीणीयनमलोयउपयलु॥ ३॥
दीहसंदेहसदाकयकलयलु॥ सुरतरवर्षेसुहसफलु॥ दीणा॥
एहदहसमणीगाऊ॥ सुधसमीतणीमीतपरीगाऊ॥ धावंज
चेरुचायारसीहासीउरायहंसणीयरहीसमासीउ॥ एहोद्यमो
उपीलषजिई॥ जीवदयावउवीधीयालीजई॥ पा॥ जाणवाए
नलारोकीजई॥ मीछामहीपयएदीजई॥ सीलसलीयधार
संचीजई॥ ऐमपयंतावदारीजई॥ ६॥ धत्ताः॥ कोहानलवकउ
होयगुरुकउ॥ जायरसंजमसीवई॥ युक्तायसुकु॥ धर्ममहा
तरु॥ देहफलायसुमीवई॥ शतिदशालक्षएपूजाजयमाल
संपूर्णः॥ अथश्रीरत्नत्रयपूजालिखितेश्रीवधंमानमान
म्प॥ गोत्मादीश्रुसहुरत्नत्रयवीधिवषे॥ यथाम्नायवीमुक्त
यो॥ उंजैश्रीअष्टांगसम्पदर्शनायअत्रावतरावतरसंबोसु
दःआकानना॥ उंजै॥ अष्टांगसम्पदर्शनायअत्रतीष्टःष्टः
वःवःस्थापने॥ उंजै॥ अष्टांगसम्पदर्शनायअत्रममसन्नि
हीतौनवनवषट्सनीधापने॥ ३॥ स्वर्धुनीनीस्थाराजी॥
गंधवीनीरादर्शनु॥ दे॥ द्यासदर्शनज्ञानं॥ चारीत्राम्प
र्चयाम्पहं॥ उंजै॥ त्रयोदशप्रकायय॥ जलं॥ हरीचंदननी
यसोदीगजसै॥ कांसहासीते॥ देद्या॥ चंदनंतडलेः
यांदुराषंडैपुनीतेरलीगुंजीतो॥ देद्या॥ प्रसुनेसोरजासु
नेरनुनेगुणउत्तनैद्योम॥ पुष्पं॥ ॥ धसान्नायैस्तजीता॥

अस्तं

नायेमी। नीकाद्यैगुणसंपदा॥ देद्या०॥ नैवेदा॥ ५॥ दीयैश्वदीपता
सैषै। दीकचक्रैतयनप्रीयैः॥ देद्या०॥ दीपं॥ ६॥ धुपतैधुमधुता
ग्रावीनुमैध्राणसंभ्रमौ॥ देद्या०॥ धुपं॥ ७॥ फलनेदैरसससैगीगधव
ऐंहीसंपदं देद्या०॥ फला॥ ८॥ अर्घ्यैर्गांधांबुडवीदी॥ इत्यसर्वस
हारीणा॥ देद्या०॥ अर्घ्यै॥ ९॥ इत्यचपंतीजेनेदा॥ नेदनेदरत्रय
संपदातेसीप्रसाधारणानक्षया॥ श्रीयोवदंतीनीर्षती॥ अर्घ्ये
यमाललीषते॥ एणवेपीणुजावे॥ वीमलसहावे॥ वीरजीणंद
गुणोहसिद्धी॥ गुणाणधरज्ञासइ॥ वीबुहपयासहैरयाण
यंसुवीहाणवीही॥ १॥ जादवमाससेयवारसीदणु॥ एहायीवी
सयवचुपरीहरीजाणपणु॥ योसऊसजीयमाणुलएयणुधमु
काणणिचीतववीजई॥ २॥ वारसीणीसीजागरणुगमीजिशते
रसीदीणएहकरेपणु॥ वरसमकीतपदमुपुज्जवीणु॥ सोत्रा
वंगपहावणसारज॥ ३॥ संकारहीनुगुणागणवाणु॥ तीही
णीकंघीववनुपुजीजही॥ नीवीदीगंभुनुगुणात्रचीजज्ञाणुमि
छणुअंग॥ पुणवचुलवीगुणहंगरीवनु॥ अत्रमआण
हाणवसारमु॥ ४॥ धत॥ इयह्रवयस्य॥ पुजासारय॥ पंढम
पहरीदंसणकरइ॥ नवसाधेरलीलांतरऊप्रतिपुजास
माप्तः अर्घ्यैः अर्घ्यैः ईजीकीपूजा लिष्यते॥ तीर्थोदकैर्मणिसु
वर्णघटोपनीतै॥ पीठेपवित्रवपुषिप्रविकल्पिताथै॥ लक्ष्
मुतागमनवीजविदर्जगै॥ संस्थापयामिनुवनाधिपतिंजि।
नेशं॥ ५॥ ईंजीं श्रीआषाडमासेशुकपक्षेआष्टाक्रिकायम
हामहेत्ववेनं दीश्वरदीपिकापंचात्राजिनायेपूर्वदक्षणापश्चिमे
तरएकएकअजनमिरमारिदधिमुखन्नावरतिकरादिकस्ये
तिजिनपतिमात्रावतरावतरसंबोषट्आकानन॥ अत्रतिष्ठ
तिष्ठवः वः स्थापन॥ अत्रममसन्निहितो नवनववषट्सन्निधा
पन॥ कर्पूरपरिपरिपरितनूरिनी॥ धारात्रिरात्रिरजितश्व
महारिणीजिनंदीश्वरेषादिवसानिजिनाधिपानां॥ मातंदिवः
घतकृतिपरिपूजयामि॥ ५॥ ईंजीं॥ श्री॥ जला॥ आद्याणतर्पण
रेपरितर्पसर्पिगंधै सुचंदनरसैर्धनकुंकुमाद्यैः॥ नंदी॥ ५॥ ईं चंद।

उन्निचचंद्रविलसतकरणावदातैसकुंदकोरकतिनैःकलिम
 धितोद्यै॥ नंदी०॥३॥ अक्षतं॥ मंदास्वारुहरिचंदनपारिजात
 संताननूरुहनवैकुसुमैर्विवित्रैः॥ नंदी०॥४॥ पुष्पं॥ सिद्धैर्वैशु
 धनवकाचनजाजस्थैः॥ पीष्पचारुनिरमैचरुत्रिविवित्रैः॥ नंदी
 ०॥५॥ नैवेद्यं॥ ध्रुवांधकारतिकरैः॥ करुणावदातैः॥ दीपैःप्रदीपि
 तसमस्तदिगंतरालैः॥ नंदी०॥६॥ दीपं॥ धूपैरधूमतरुसौरज
 लोनगुजितः॥ जंगकलीरगुरचंदनचंद्रमिश्रैः॥ नंदी०॥७
 धूपं॥ कामामृदाडिममनोहरमातुलिंगाजातैफलैःप्रत्तसौ
 रजस्तफलाद्यैः॥ नंदी०॥८॥ फलं॥ द्वीपेनंदीस्वरेस्मिन्विवि
 धमणिगणकोतिकांतानिकांसाशुंरापास्तचंडकतिक
 रध्रुस्तमोहांधकारः॥ चैत्याचैत्यालयश्रजलकुसुमफला
 द्यैरनद्यप्रजावैः॥ नैःन्यायेऽर्चयंतिसुकुटमसमसुखंतेजंति
 विमुक्तिं॥ ए॥ अर्घ्यं॥ परमेष्ठिणवेपिणजिणसुमेपिणनव
 अणोहडहणासणं॥ नवियणसकुणिज्जकुथिरमककिजा
 कुअकिदिमजिणगुणकितणु॥ असुरलघायचनुसविजिण
 मंदिरं॥ एणयचुलसीदिलखाश्रजिणमंदिरं॥ लघवहत्तरेहेस
 कुमःरालयं॥ दीवघहकरेपिणदिक्कमरालयं॥ दिसकुमारमि
 तहअणिपुणणामयं॥ उहकुमारणिउहकरेलरकयं॥ दत्र
 मिजवणणउणवद्यलखाणयंसंजवणणअमराणजि
 णगेहयं॥ सकुकोडीववहकरेलरकयं॥ एवकुजिणगेहजिम
 ह्ययकम्मखयं॥ पंचमेरुणअसियाणजिणगेहयं॥ वीसगय
 दंततहतीसकुलपद्यंरुवगिरिसोहयंजिणहसकरिसय
 कुरुदमेदत्रजिणअसीयवस्वारयंचारिमनुसोतरेचारिसु
 गारयंचारेकुंडलगिरिरुजगिचत्तारयं॥ अवमोदीवनंदीश्र
 रोसुंदरवंदिमोतस्सवावंमंजिणमंदिरं॥ तिरणारलोइस
 द्यायजिणगेहयंचवणणहियंचारिसयतंदिपं॥ अचमे
 याणतेचंतराजाणियं॥ संवरहियाणजिणगेहवंदियम
 यं॥ चंदसूराणग्रहत्तारणखत्तयं॥ पंचविहजोइसीयसंवर
 हियाणियं॥ तिणिसंजायमिच्छिकुडहनाचनं॥ एवकुजिणगे

हजिम होइ कमरकयं॥ पदमसगामिपुन कहमिजितगोहियं
लखवतीसईगानत्रववीसयं॥ सततकुमारीमेवारहक्लि
खाणयं॥ अत्रलखाइमाहेदसगाणयं॥ वंजवंजोतरेवारिल
खाणयं॥ लांतवेसगिकापिठजिणगोहियं॥ सहसयंचासमु
रवरहिवंदियमयं॥ सुकमहासुकसगामिसुहालयं॥ सहस
चालीसवंदांमिजिणगोहियं॥ सगिसत्तारिसहसारिवेसा
यं॥ सुरंवेरंमंहियजिणनवनसगीसयं॥ आणदेसगियण
पाणदेसगयं॥ आरणेसगितहअमुतेजाणियं॥ चउमकये
सजिणनवनसयसकयं॥ अहियेयारसेमेकगेवज्जयं॥ सत
अहिएसयंमज्ञगेवज्जयं॥ एवदिएयाहियंउवरगेवज्जियं
नणमिजिणनवनअहिमिंदसुरपूजयं॥ नवणवाणोदरेण
वदिजिणमंदिरं॥ पंचपंचोतरेपंचजिणमंदिरं॥ सबकृष्ण
हमिंदजिणसंखयं॥ लखचुलसीदिसत्ताणवदिसहसयं॥ अ
हियतेवीसवंदांमिडुहनाशनं॥ तिज्जयलोयंमिजंजिणव
रेजासयं॥ अत्रकोडीउछपनलखाणयं॥ सहससकाणव
दिअरियेयासयं॥ हिमयंदोवयंअकिहमंजिणवरं॥ नतिमा
रणतेणवमिजिणमंदिरं॥ अहियअठोतरेपदमसनजाणि
यं॥ पंचसयधनुहपडिमाकचतयंअहियपणवीसनवयको
डीनयं॥ लहतेवन्नसगवीससइसयजिणं॥ सईयनवत्रव
रअडियालजिणायणिमयं॥ सबगणियाहुवंदेतोडिनव
तोरणमंगलपाडिहेरवयं॥ तिणिसालाउचउगोवरंण
डयं॥ रथणथूहाइचउचेइयंसोहियंमाणयंनयविहडावि
यंमाणयं॥ नहसालाइसीयायत्रीतोदयं॥ हहसमीयेहि
कंचनगिरेसोहयं॥ तसुकुंडमिपडिवाउएकेकयंमेरुप
डिवधयंविणिसयपडिमयं॥ पंचमेरुतहसहसकूडोदयं॥
तिणचउवीसयंनरहणिमापयं॥ सवियंसिहरिकइवित्तास
तेवंदियं एउजिणगोहजिमहोयकमक्षयंदीवअठईयंजे
जिणगोह XXXXXXXXXX यंविणिकरावयंतेमयंवंदयंअ
छहीणाहियंजमएबुहयंखमहुजिण एणहजिम

मह्यं॥ घटा॥ इह घ्राण विजिणोसु
 रमहि परमेश्वर अमरसुखसोपावश॥ सोणारहो पिएण चरीयचो
 पिएण सिद्धसुखसोपावश॥ नवकोडिसयापणवीसातेवण
 लखायसहससताईसानरसैतिहं अडिलाला॥ जिणपडिमा
 अकडिमावंदे॥ २॥ इति श्रीनंदीश्वरजीकी पूजाजयमालासं
 पूर्णा॥ अथपंचमेरुपूजालिखते॥ संवोषडाह्यनिवेशिता
 न्यासातिथ्यमानीपचषट्पदेन॥ श्रीपंचमेरोस्यजिनालया
 नांयं जापत्रीतिप्रतिमांसमस्ता॥ उक्तीपंचमेरसंवंधीअसी
 तीजिनचैतेन्यौअत्राउत्रावतरसंवोषट्काननंअत्रतिष्ठा
 तिष्ठवःवःस्यापनं॥ अत्रममसन्निहतोसन्निधीकरणंअ
 अथाष्टकं॥ सुसिधुसुखाखिलतीर्थसार्थो॥ वजिसुनानोजर
 जोतिरामै॥ श्रीपंचमेरोस्तजिनालयाना॥ यजाम्पत्रीतिप्रति
 मासमस्ता॥ जलं॥ १॥ श्रीचंदनैमथविलुपुनंगैःसर्वीत्तमे
 गंधविलायुक्तंश्रीपंचमेरो॥ चंदना॥ २॥ शाल्यक्षतैकैरवंकुश
 लानां॥ गुणत्रयणममहाङ्गि॥ श्रीपंचमेरोः॥ अक्षतंशुप्रधा
 नसतानंकमुरमयुष्मैःसुगंधितागच्छदतुच्छमृगैः॥ श्रीपंचमे
 रो॥ ३॥ पुष्पं॥ वाक्कायमानैद्युतपृद्युरैःनातविधर्मात्तर्गतःसा
 द्गैः॥ श्रीपंचमेरो॥ ४॥ नैवेद्यं॥ तमोविनासप्रकटीकृत्यौतीर्थं
 दीपैरसेषजवचोचूरुपै॥ श्रीपंचमेरो॥ ५॥ दीपं॥ स्वयापरीक्षाप
 रिणासंधूमैः॥ रिवोरुकृष्णागुरुचंदनैद्यैः॥ श्रीपंचमेरो॥ ६॥
 धूपं॥ नारिगमुखैर्फलमातुलिगा॥ फलैःसुगंधिसरससुवर्णैः॥
 श्रीपंचमेरो॥ ७॥ फलं॥ वाग्धुपुष्पाक्षतं दीपधूपानैवेद्यं
 र्वाफलवक्तिरथै॥ श्रीपंचमेरोस्तजिनालया॥ यजाम्पत्रीति
 प्रतिमांसमस्ता॥ अर्घ्यं॥ १॥ अथजयमाला॥ जिनमजनपि
 ठं॥ मुनिगानईवुं॥ असीचैत्यमंदिरसहितं॥ चंदोगिरिनायकम
 हमालायक॥ पंचमेरतीर्थमहितं॥ १॥ जंबूदीपअधिकंउविड
 जाअधिसुदर्शनमेरुविराज॥ उन्नतजोजनलक्षप्रमानंरोमा
 त्प्रसिररिजुकविमानं॥ २॥ दीपधातकीषंडमकारा॥ मेरुजुगम
 आपमैत्रागमत्रनुसारा॥ विजयनामसूरिवदिसिसोह॥ प

छिमनागत्रचलमतमोहः॥३॥पुहकरार्धमैनीफुनियोही॥म
 दिरविद्युतमालीसोही॥वास्वोकीइकसारउचाइसहसत्रसी
 चोजोजनगाई॥४॥पांचौमेरमहागिराई॥अचलअनादि
 तिधनथिरजेई॥मूलवज्रमधिमतिमयनासै॥ऊपरकनकम
 इतमनासै॥५॥गिरिगिरिपरतिवनआरिवषाने॥वनवनदेव
 लआरिमाने॥चामीकरमयेचहुंदिसिराजरतनजंडितजो
 वतरंविताज॥६॥समौसरनाचनासंवरै॥धुजपांनतिसौंपा
 यविडारै॥सोजोजनआयामगतिजः॥आसतासतैअर्थनने
 ज्ज॥७॥तुंगपौनसैजोजननारेःनद्रसालजिनगुहसारे॥अपर
 अर्थअर्थसवजानुःपांडुकवनपरजंतवषानै॥८॥पांचौमेरु
 नकीसुनिलजै॥सुनिवरतनसरधानकरजै॥सोनावरना
 तपारतलहीए॥बूधिवोडीकसैकरिकहीय॥९॥वितत्रवो
 तरेसोइकमाही॥रतनमईदेवतडुषजाही॥आननजुरअ
 रविदहैसैहै॥लडनयंजनसहितलसैहै॥१०॥सिद्यासनपरि
 सोहतअसै॥जगसिरसिधविराजतजसै॥पद्मासनवरागवदा
 व॥सुरविद्याधरपुजनआवः॥११॥मैहैमाकौनकहजिनके
 री॥त्रिभूवननयनांनंदजितकेरी॥धनकपांचसैतनवितवै
 रै॥वंदौजावसहितकरजौरै॥१२॥गजदंतादिसिषरपरजेहक
 तिमअकृतिमजिनगैहै॥अरुत्रिभूवनमैअतिमांसरी॥निति
 प्रतिथोकत्रिकालहमारी॥घता॥नूधरपतियहाकरमनजे
 हानक्तिविषवहूचितधरी॥करियुजासारीअष्टप्रकारी॥पंच
 मेरजमालनणी॥१३॥इतिपंचमेरुजीकीपूजाजैयभालासं
 पूर्ण॥अथपदा॥नरनवपायफेरिडुषनरना॥त्रैसाकाजनक
 रनाहो॥नाहकममत्वगनिपुदगलसं॥करमजालकौपरना
 हो॥नरनवपायफेरिडुषनरना॥त्रैसाकाजनकरनाहो॥१४॥ह
 तोजडतृपानअरूपी॥तिलतुसज्यौंगुरवरनाहो॥रागदोष
 तजिममताकूंकर्मसाथकेहरनाहो॥नरनणे॥१५॥योनवपा
 यविषेसुषसेनांगजचदिईधनदोनाहो॥बुधजनसमजिसे
 यजिनवरपदा॥ज्यौनवसागरतिरनाहो॥नरनवपायफेरि

॥ अथ शान्तिपाठलिख्यते ॥ शान्तिजिनं शान्तिनिर्मलनक्तं शान्ति
लगुणं वृत्तसंजमपात्रं ॥ अष्टसतार्चितलक्षणगात्रं नौमिजे
नोत्तममंबुजनेत्रं ॥ १ ॥ पंचममीशितचक्रधराणां ॥ पूजितमिं
दनेरंशगणैश्च ॥ शान्तिकरं गणशान्तिमनीशुं ॥ षोडशतीर्थ
करं प्रणमामि ॥ २ ॥ दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टिः ॥ ईडनिराशन
योजनयोषै ॥ आतपवारणचामरयुग्मे ॥ यस्मिन्निवसति च सं
डलतेजः ॥ शान्तं जगदाचित् शान्तिजिनेऽं ॥ शान्तिकरं सिखा
प्रणमामि ॥ सर्वगणाय तु यच्चतुशान्ति ॥ मह्यमरं पठते परमं
च ॥ ४ ॥ येन चिंता मुकटकुंडलहाररत्नेः शक्रं दिनि सुरगणै
स्तुतपादपद्मः ॥ ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपातीर्थ
करं स्तुत शान्तिकरान्वंतु ॥ ५ ॥ संपूजकानां प्रतिपालकानां
यतींद्रसामान्यतपोधनानां ॥ देशस्वराष्ट्रस्य पुरुस्वराज्ञा
करोतु शान्तिनगवान् जिनेऽं ॥ ६ ॥ असोकवृक्षसुरपुष्पवृष्टि
दिमधनिं चामरुत्सनां च ॥ जामंडलं डुंडुनिरातपात्रं सत्
तिहार्याणि जिनेस्वराणां ॥ ७ ॥ हेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु क्ल
वानधर्मिको नृमिपाला ॥ काले काले च सम्यक् चिरतु च मे ध
नूमाधयोयांतिनाशं ॥ ८ ॥ इति तं चौरमारीक्षणमपि जग
तां मास्मन् जीविलोके ॥ जैनेऽधर्मचक्रं ॥ प्रभवतु सततं
सर्वसौख्यप्रदायि ॥ ९ ॥ प्रधुस्तथातिकर्माणः केवलज्ञानन
ना कुर्वतु जगतां शान्ति ॥ वृषभाद्याजिनो रवरा ॥ १० ॥ अथैष प्र
र्थनां प्रथमं करणं चरणं च मनमः शास्त्रस्यासौ जिनपतिवु
तिः संगतिसर्वदायैः सहृतातां गुणगणकथादोषवादी च
मौनं ॥ ११ ॥ सर्वस्यापि प्रियहितवचोनावर्तवात्मतत्वे संपद्यं
तां मम नवनवेयावदेतेष्वर्गः ॥ १२ ॥ तव पादौ मम हृदये म
म हृदयं तव पदद्वये ली ॥ तिष्ठं तु जिनेऽं द्वाव द्वाव निर्वीण
संप्राप्तिः ॥ १३ ॥ अणुरय यच्छहीणं मत्ताहीणं च जम्म ए नणि
यं ॥ तं स्वमगुणाण देव्यमप्रविडुखखयदितु ॥ १४ ॥ इत्थं स्व
उकमखउकमखउ ॥ समाहिमरणं च बोहिलादोर्शमम
होयजगतवंद्यव ॥ तुवजिणवरचरणसरणोण ॥ १५ ॥ दुःक

नुकमरवव॥बोहिलाहोयसुगायगमणंसमाहिमरणंजिणगुणंजि
 णगुणसंपत्तिहेनुगप्र॥२६॥नमोस्तुश्रीआचार्यचंद्रनाया॥सिद्ध
 नक्तिकायोत्सर्गकरोस्पहं॥एमोत्ररहंताणं॥एमोसिद्धाणंए
 मोत्राश्रियाणं॥एमोउवप्रायाणं॥एमोलोएसवसाहुणं॥६
 त्यादिजाप॥ए॥उच्चाम२१दत्त्वा॥इतिश्रान्तिपाठसंपूर्णं॥॥
 अथदिसरज्जनं॥ज्ञानतोज्ञानतोवापि॥शास्त्रोक्तंमक्तह म
 या॥तत्सर्वपूर्णमेवासु॥त्वत्प्रशादाजिनेस्वरा॥१॥आहंनतने
 वजानामी॥नैवजानामिपूजनंविमरजनंनैवजानामी॥हमस्त
 मप्रमेस्वरा॥२॥आहूताषेपरोदेवा॥स्तुजागावियाक्रमंतेग
 याप्यवितेनक्त्या॥सरवोवा - यथास्थते॥इतिश्रान्तिपाठ
 संपूर्णः॥॥अथअक्षयानंदजीकीपूजा॥ सर्वद्व - मानंम
 सिचार्थनिष्ठ॥गुणद्विद्वानुनमुनधर्महेतुव॥जजामिपादा
 ज्जिनेस्वरस्यअक्षातिथिप्रावणशुक्लदशमां॥॥॥श्रीप
 रमवह्मणोअत्रावतरावतरसंवोषट्आकाननं॥॥श्रीप
 रमवह्मणोअत्रतिष्ठतिष्ठवःवःस्थापनं॥॥श्रीप
 रमवह्मणोअत्रममसन्निहितोभवन्नववषट्सन्निधीकरणं॥अनीज
 णीतानिरतीवसद्ग॥विशुद्धकर्पूररजौयुतामि॥जजामिहस
 र्वसुखार्थहेतौ॥जिनेंश्रविंवनवतांशानाय॥॥॥जैलं॥सर्वदेने
 लोहितचंद्रनोर्धैसितानुकालगुरुजातमिश्रै॥जजामि॥॥॥चं
 दनं॥सदक्षतैरक्षतशुद्धदेहै॥कुंदोद्वलैःमौरनगंधगोहै॥जजामे
 ॥॥॥अक्षतं॥सन्मालिकावंपककुंदमूतै॥वैश्रसनैशुनगंधप
 रै॥जजामि॥॥॥पुष्पं॥विचित्रजक्षैरतिरंजिताहै॥माधर्यसौदर्व
 निवधनक्षै॥जजामिहं॥॥॥॥नैवेद्यं॥स दीपसद्यैमुनिहंदतु
 ल्यै॥प्रकाशितानेकपदर्थसारे॥जजामि॥॥॥॥दी॥मंगल्यका
 रागुणाव एंधूपै॥संबूलधूपैर्घणगंधरूपै॥जजामिहं॥॥॥पु
 ॥॥धूपं॥॥॥राजादिनश्रीफलमातुलिंगो॥निसर्गामाध
 र्ययत्तैरसौषै॥जजामिहं॥॥॥॥फलं॥॥॥जलमल
 यजकलमा तसा॥रसजनैवेद्यदीपधूपफलै॥॥॥अचितार्थ
 नयजेवरचिंतं॥जिनानुभावसंमसंज्ञिद्यै॥॥॥अर्थ॥अ॥

हेच -- मे॥ कलिमर

रप्रविहाय॥ ७॥ सुगंधसुसी

तलनिर्मलहार सदाहसदारसणीपीयतार॥ अरवैनिधिना
 मविधानत्रपार॥ सुवांछितस्वर्गपवर्गीशतार॥ सुकुंकुममे
 श्रितचंदनसार॥ सुराहुरमानवमानसहीर॥ अरवैनिधिनामो
 समाजितडाधपयोधिपरज॥ समानसमुजहंतंडुलपूजा अरवै
 धि०३॥ सरोनवचंपककुंदकदंब॥ सुरजुमजातजयेनिकरंव
 अरवैनिधि०४॥ निरनुदिवाकरराशिहृद्म॥ सुरन्ननिशाकर
 दीपसमूह॥ अरवैनिधि०५॥ अहीनत्रिमोदकमंडकरंबुप्रंबु
 सुधासमपायंपिड॥ अरवैनिधि०६॥ सुगंधितसर्वदिगंतस्वरूप
 मृतगादनसीतकरागुरुधूप॥ अरवैनि०७॥ मनोहररत्नसुवर्ण
 विशालसुजाजतरजितचोचरसाल॥ अरवैनि०८॥ अलंकुरु
 पुज्यपुरानशुद्धे शंममदेव अरवैनिधि॥ घत्ता॥ ज
 यजगपतिवरंपरमसुखाकरः गुणनिधानकलमलहरणः ज्ञा
 नादि विष्णुस्वनविहृतसरणवर॥ सेवकजनमंगलकरणा॥ १०
 ॥ इति श्री अरवैनिधिपूजाजिनालयसमाप्तः॥ ७॥ ॥ १२
 ॥ अथ चतुर्विंशतिस्वयंस्तोत्रलिरच्यते॥ येन स्वयं बोधमयेत्लो
 काः आश्रयिताः केचन वृत्तिकार्ये॥ प्रबोधिताः केचन मोक्षमार्गे
 तमादिनाथं प्रणमामित्यं॥ १॥ इति निःक्षीरसमुज्जतोयैः संस्त्र
 पितो मेरुगिरौजितेन्द्रः॥ यः कामजेता जनसौरमां कारी॥ तं शुचिनावा
 दजितं तमामि॥ ध्यानप्रबंधप्रभवेन येन॥ निहृत्कर्मप्रकृतीः
 समस्ताः मुक्तिस्वरूपीपदधीप्रपेदे॥ तं संनवं नोमिमहान् गगातश्च
 स्वप्नं येदीया जननीक्षीणयां॥ गजादिवहंतमिदं ददर्श प्रसोतैश्च
 स्याद्गुरुः॥ पुरो बं नैमिफमोदादनिन्दनंतः॥ ४॥ कुवादिवादं ज्य
 तामहांतं॥ नयप्रमाणैर्वचनैर्जगत्सु॥ जेतमंतं विस्तरितं चयेन॥ तं दे
 वदेवं सुमतिनमामि॥ ५॥ यस्यावतारे सति पैरधिष्णो॥ वं चरितानि हे
 तिदेशात्॥ धनाधियः षण्णवमासपूर्वैः पद्मप्रजंतं प्रणमामि साधुं॥ ६॥
 नरेन्द्रसर्पेश्वरनाकिनाथै॥ वीणीनवांताजगृहैस्वचितो॥ यस्यात्मो

स

धः॥ प्रथितासनाया॥ महं सुपाश्र्विननुतंनमामि॥ ७॥ सत्यातिहाय्याति
त्रायप्रपन्नो गुणप्रवीणो हृत्तदोषसंगः॥ यो लोकमोहांधतमप्रदीप
श्वं प्रजंतं प्रणमामि नावात्॥ ८॥ गुप्तित्रयं पंचमहावृतानि पंचोपस्थि
समितीश्वयेन वज्रावोक्षादशधातपोसि॥ तेषुष्यदंतं प्रणमामि देवांश्च
ब्रह्मवृत्तांतो जिननायकेनोत्तमक्षमादिदेशधार्मिधर्मः॥ येन प्रयु॥
कोवृतबंधवुष्मा॥ तं शीतलं तीर्थकरं नमामि॥ १०॥ गणोजानानं हकरे
धरोते॥ विध्वस्तकोपे प्रशमैकचित्तेयोश्चादशांगं श्रुतमादिदेश॥
श्रेयांसमानो मिजिनंतमीशं॥ ११॥ मुक्तंगनायैरचितं विशालं रत्न
त्रयं शोखरकाययेन॥ यत्कंवमासाद्यवभूवश्रेष्ठां तं वासुपूजं प्रणमा
मिवेगात्॥ १२॥ ज्ञानी विवेकी परमस्वरूपी ध्यानी वृत्तीश॥ गिहितोप
देशी॥ मिथ्यात्वघाती विवसौ॥ स्वजो जीवन्मुक्त्यस्तं विमलं नमामि
१३॥ आत्मंतरं वाह्यमनेकधायः परिग्रहं सर्वमपाचकारयो मार्गान्
द्विप्रहितं जनानां॥ स्वैजिनंतं ह॥ एवमात्मनंतं॥ १४॥ सौर्धपदा
र्यो नवसप्ततत्त्वैः॥ पंचस्त्रिकायाश्च न कालकाया॥ षट्पञ्चनिर्नाति
रलोकयुक्तिर्येनेचित्तं प्रणमामि धर्मि॥ १५॥ यश्चक्रवर्ती भुविषं च
मोक्षस्त्री नंदनोश्चादशांगो गुणानां॥ निधिः प्रभुषोऽशमोजिनं इत्सं
शान्तिनाथं प्रणमामि नैदात्॥ १६॥ प्रशान्तितो योनविनर्त्तिहर्षे॥ विराधे
तो योनकरोति रोषे॥ शीलवतब्रह्मपदंगतोयस्तं कुंभुनाथं प्रणमामि
दुर्घात्॥ १७॥ न संसृतो न प्रणुतः सनाया॥ यः सेवितो तर्गाणपूराणा
यापदाच्युतेः केवलिनितिर्जिनाया देवाधिदेवप्रणमाम्परंतं॥ १८॥ रत्न
त्रयं पूर्वजवांतरेयोवृतं॥ यद्विचक्रतवानशेषं॥ कायेन वाचामनसा
विशुद्ध्यात्तं महिनाथं प्रणमामि नत्त्या॥ १९॥ बुवं नमः सिद्धिपदा
यवाक्यमित्यगृहीद्यः स्वयमेव लौचं॥ लौकांतिकेभ्यः स्तवनं निश
म्पं॥ वंदे जिनेशं मुनिमुवृतं॥ २०॥ विद्यावते तीर्थकराय तस्मादाहार
दानं ददतो विरोधात्प्रहेतुपस्याजतिरत्नवृष्टिः स्तोमिप्रणामाय
नयोनमित्वं॥ २१॥ राजीमतीयः प्रविहाय मोक्षास्थितिं चकार पुनर
गमार्थं सर्वेषु जीविषु दयां दधानास्तं तेमिनाथं प्रणमामि नत्त्या॥ २२
सर्वाधि राजः कमचारितो यः॥ आवृषितस्यैव फणवितानैः यस्यैव पसे

सयंभवे
२५

गीतिरवर्त्तयन्तनमामिपार्श्वमहसादरेण ॥ २३ ॥ नवाणिविजंतुसमूहं
येनामाकर्षयामासहिधर्मपोतातमज्जंतमूर्धाक्षयजितंचयेन ॥
वर्धमानेप्रणामाम्पहंतं ॥ २४ ॥ योधर्मदशाधकरोतिपुरुषःस्त्रीवाहू
तोयस्कृता ॥ सर्वज्ञधनिसेनवंनिकरणायापारश्रुघातित्रं ॥ न
मानांजांजयमालयाविमलयापुष्पांजलेंदापये ॥ न्तित्यंसःप्रि
यमालनोतिमकलस्वर्गाणवर्गास्थितेः ॥ २५ ॥ इतिश्रीस्वयंभूसम
सं ॥ अथविशेषसोलहकारणपूजाजयमालातिरमते ॥ इति
सोलहमतइंडकवरवयेतशसोलइकोकइलिहिं ॥ अणुकमेणसुं
ठिहिंवरसुदिठिहिं ॥ पुणणिमुणहिसुयपुजंविहिं ॥ १ ॥ तंजिजंतु
वरपदवविज्ज ॥ तस्मयपवानवहकिज्जइयपयदहियइकव
रसयउरहि ॥ एहाविज्जइवकुंतइतरइ ॥ पुणकलसहिंएहाविवि
गंधोदउ ॥ वंदिज्जइणसिइतगुरोयउ ॥ पुणुपरकालिविवाचि
विजंते ॥ आयुणसमुकुजंजिविमंते ॥ पुणदंसणविमुद्धितिउ
वारहिमंतुपदेविणुडरियणिवारहि ॥ आवाहणविहिंपदमीकि
ज्जइतउथिरुचित्तकरिविवाविज्जइसणिहीयकरणनपु
णुतिज्जउ ॥ तउछावणुविहाणुभाविज्जउ ॥ पुणपुजावसु
नेयहिंदव्वहि ॥ प्पारेनिज्जइवियलियगव्वहिं ॥ तजह ॥ गाथापे
मदहादोणिगाय ॥ सुरसरिसलिलेणयुसिणमिस्सोण ॥ सोलह
कारणजंतं ॥ तेणमहामीहजावेण ॥ १ ॥ उंकींभीदर्शनविश्रुघादि
सोलहकारणोमो ॥ जलं ॥ सिरिकंडचंदनकुकुमरसत्तरिक
लिलेणकणयवेणेण ॥ अब्बमिजंतमणिगंधाविलेवयाजंतरी
मीहमविश्रुघं ॥ २ ॥ उंकीं ॥ चंदनं ॥ ससिकरसंणिहत्सुसुज्जिहिं
रकहअकवेहिअकवयसुहत्सुसोलहकारणजंतममचयामी
हज्जतीण ॥ ३ ॥ उंकीं ॥ अक्षतांमदारकुंदचंपक ॥ मालासालीहि
अतीरवाकाहि ॥ अब्बमिजंतमणगंधगुयगमणस्सदंसिबंवि
गंधां ॥ उंकीं ॥ पुष्पांमज्जुएहअज्जयक्काहि ॥ चित्तपमोएहिघेव
राइहिंणेवजेहिअहंपिय ॥ अउडःकारणंअवे ॥ ५ ॥ उंकीं ॥ श्री
॥ मैवेयंकपूरवत्तिकलियहिं ॥ दीवावलिएहिंदिसयासेहिंकेव
लणाणकंएहित्तरणिणहेहिजंतमवेहि ॥ ६ ॥ उंकीं ॥ दीपंसि

लहारसञ्जराइय॥द्विद्विदिमिस्तेणसरसंधूवेण॥उदूपयामि
जतंसुयसयसिधीएयसिधीए॥७॥धूपे॥एणरांगपूयवोचामल
कवित्येहिचित्तमहिदेहि॥फलंहिंफलसिधदेहो॥अबेवसुह
एकारणमहिया॥८॥फलं॥जलंगंधरकयकुसुमणेवयस
दीवधूपफलजुती॥कुसुमंजलिपुणुजत्यमि॥सुजंतरस्तपु
ब्रजणितस्मरणे॥अर्थः॥एवंपियन्नगाणं॥दंसणपमुहाइंअ
डुणाणं॥एकेकंपदिपुजाकायवनिस्मरणया॥२०॥ऐका
कौगंपदिपुणुनत्तारकुकणयपत्तचविन्नग्यं॥जस्तगयस
पूया॥तस्सपुईकिज्जएणगंधं॥२१॥अर्थमहार्थं॥जमंवहि
तारण॥कुगइणिवारण॥सोलहकारणशिवकरणं एण
द्विद्विद्विज्ञसिमि॥सत्तियत्तासमि॥तिस्यपरत्तुलविधरने
ज्जावज्जवियकुदंसणविंसुद्धिं॥एणवीसदोसवज्जियपसे
दि पंचविद्विद्विणयवपालकुजुकुत्तु॥जिणसासणिमूलुजि
जोवत्तुशीलविपालकुअइयारमुक्कु॥शिवपंथसहायउ
जोगुरुक्कु॥एणणोपउरवणिसवणिसरेकु॥संकप्पवियण
इपरिहरेवासंवेउअंगसावकुमणाम्मि॥धमुजिधम्मकुफलु
सेउतम्मि॥णियसत्तिएदिज्जइपत्त[redacted]ति
वंछिज्जइसाकुसमाहिविति॥एयाइयदोसहिं॥कियण्णि
विति॥वइयावच्चविद्वसनेयफारु॥विरइज्जइज्जदन्नावइ
णिचारु॥अरहंतत्तत्तिअहृणिसिउणेकु॥तउनामकरु
थिरुमणिगुणेकुपवहिज्जियपुणुआयुरियत्तति॥गुरुत्तित्तिदेव
वंदणइति॥वकुसुयहनत्तिदोसावहारि॥विरइज्जइणाणपवि
त्तियारि॥पवतणकुत्तित्तिजिणसमयपोसा॥किज्जइसंसयतमद
लनगोस॥छावासयकिरियाणिसकरे॥कुअसुहासुहअवंत
उहरेउ॥जिणमगापहावएकरुज्जव॥जिहिअएकुतायण
कुत्तिसत्या॥वच्चइभुक्किज्जइसंयकुपहाणु॥फेनेप्पिणडुरुमो
हमाणु॥घत्ता॥छे॥इयसोलहजावण॥सिवसुहदघण॥थिरहि
त्तित्तोक्कविकरइं॥पाविवितित्यत्तणु॥सच्चहियलाणुसोपं
चैमगइसंवरइं॥ईदरीनविशुघादिघोन्नाकारणेमो

नमः दर्शनविशुद्धिविनयसंपन्नताराश्रीलवलेषुततीचरा
 जीह्वाज्ञानोपयोगसंवेगशक्तितस्मागशक्तितस्तपः।
 साधुसमाधिवैयाहृत्तिकरणार्हेऽक्तिः॥आचार्यमन्त्रि
 वक्रमुत्तमक्तिप्रवचनमत्पावश्रपकापरिहाणिसंन
 गीप्रभावनाप्रवचनवात्सल्यत्वषोऽनूकारणभावनामे
 जलचंदनश्रद्धता।पुष्पा॥नैवेद्यदीपधूपफलादिसहितम
 श्रद्धासहाश्रद्धा॥निर्घ्नयामीतिस्वा॥श्रद्धा॥अथषोडशका
 रणप्रत्येकजयमालापूजनं॥यदायद्यथाससौराकारण
 तेतदातदा॥मोक्षसौरव्यस्यकहृदि॥कारणान्यपिषोऽनू
 शयंत्रमध्येदर्शनविशुद्ध्यादिषोऽनूकारणसंबन्धिषोऽनू
 कर्णिकातस्योपरिपुष्पांजलिंक्षिपेत्॥अथषोडशकारण
 षोऽनूजयमालालिख्यते॥असत्यसहिताहिंसा॥मिथ्यात्वचन
 दूरपते॥अष्टांगयत्रसम्पत्कंदर्शनंतद्विशुद्धये॥शार्वेक्रीदर्शनविशु
 द्धयेनमःपंचमगाऽकारण॥डाइणिवारुणु॥पणदहकरणा
 रणु॥नावडनवियडुमणि॥नवडहतममणि॥दंसएशुद्धिमवि
 यसरणु॥शंसकाकरवविदिगिच्छचित्॥दंसएविमुहयावण
 पविह॥णिमूदत्तैउवयहणेणु॥विदिकरणेवच्छेदनेगुणे
 णु॥सुपहावणुदंसएविमुद्धि॥मुंदत्तयवज्जणिताहमुद्धि
 ज्ञेयअणादणणुचां॥दंसएविमुद्धिवज्जियपमांशुण
 विजीवऊजांसहाजहो॥कम्मऊपरिणं॥इहनणहिंजो
 वनलुविच्छंडालकुलेणचतुसुगाइहिगकुलऊणुगुनुनुइ
 सनुचुनगाइनमणाहे॥णिगंथतिलोयडुहोइजेज॥सुववि
 सकुर्वनावडुविहिशु॥तडुगुवुकरइकिहमुणिपसणुमुजाण
 नविमिऊइणनवुएयादसंगुतहकवपुनव॥दंसएवज्जिउ
 तनुअहलुणु॥तवगवणुकिज्जेइनवतेण॥कम्मरिजिणिज्जा
 हिजिवलेण॥तिसुग॥वज्जुणुनकियमलेण॥जेहिजिविणण
 इजवजमेइ॥अणुनवुगाइजेणहिदमेइतिसयलजिकुविण
 णणइहवंति॥तहगसुणमणिमुणिवरवंति॥पणवीसदेव
 वज्जियतिशुद्धि॥ज्जाइवहियरमदंसएविशुद्धि॥पत्ता॥दंसए

विमुक्तिपदमंगलजि॥ प्रयकरेपिण्डुरियमङ्क॥ अशुभित्तरक
युद्धसहियासोसम्माणइसिदिवङ्काथइति॥ दर्शनज्ञानवास्त्रितय
सांयत्रगेरवे॥ मनोवाक्कायसंशुभासाप्रोक्ताविनयस्थिति॥ उँकी
विनयसंपन्नतायेनमः॥॥॥॥ इंद्राणाणाचरणवहिएउतवगुण
विमुक्तनवदलणु॥ मुक्तनतिएमहियलिणिवसिफाकिज्जइह
वणाकयजलणु॥ १॥ विणउविन्नवतकजलणुकिसाणु॥ विणउजे
तिलोयमज्जहयहाणु॥ विणउविजिएसासांणु॥

सयलमू

लु॥ विणउविमिच्छाइदियहिषूलु॥ विणएविणुमाणुसवमरु
कचुमाणागिएड्जेविसहइडुक्कु॥ तंविणउदेवगुरुसत्यहोइ
दंसणाणाएकुविजएंतिकेइचौरित्तविणउसंयमसराज॥ म्प्या
एविमाननावकुअनाउएकरावदोसगंजियइचिउ॥ नाविज
इवणित्त्वणिकिजिकविमित्तु॥ माचउगाइजमइविमुक्तजीअजहि
एरिसुचितइजबुजीअतसिच्छइविणउपउतुएकु॥ शिवण
यरयंयसंचलसुणेकु॥ धत्ताविणएविणुधडियमनाउमरुइम
नएंतिविणयगाणु॥ जोमहविअशुभरइइकु॥ सोधारइइ
वरमणिकरु॥ इति॥ अनेकशीलसंपूर्ण॥ वृत्तपंचकसंयु
तं॥ पंचविंशक्रियापत्र॥ तच्छीलवृत्तमुचते॥ ३॥ उँकीनिरति
चारशीलवृत्तायनमः॥ ॥॥॥॥ ॥ दुगाइइहहारणु॥ सुहाइ
कारणु॥ जीवित्तववयसंयमहं॥ शीलंगुत्तंजकपालकणम
कणमकु॥ मणुपचंगचंचलदमह॥ १॥ अइयारविचजित्तु
इसीलु॥ पालकस्वचकणिकुचित्तुपीलु॥ माणुसदेवीतिरियंच
नायि॥ छंदिज्जइमणवयतएविप्रारि॥ अणुणुअसालिकरु
वणुचलेइ॥ अणुकणउवएसुणुकुलेश॥ अवरकुकरित
तुकुगाइनीउणउअणुमोयइपुणुनबुजीअ॥ अवलावालायेच्छंतु
संतु॥ सुतीववियाणहिमणिमहंतु॥ जोवणकरिंदआरुदमूटांला
धणसलिलसंबंगगूदु॥ समयइसणिएविणुसससमाणमणए
नकरइसम्माणदांण॥ सीलेतियसेसरपयणमंति॥ शीलेश्वर
रिणिक्रयकमंतिसीलेणालंकितविगयरुत्र॥ तणुकुहित्तुविमो॥

हृदयमुक्त्वन्तु॥ मयणावयारुपुणुसीलचित्तुपुच्छुकारिज्ज
 सोणिकुत्तु॥ जंकिपययजववनवङ्ककिंदि॥ अकवलियपावि
 ज्जइतं वतं पितं पुणुनणं तिसीलुजिरिसीस॥ समरुचङ्करिक
 सहिएगुरुगरीस॥ इति॥ सीलेसहृथोवनपवरुफेलुणि।
 फलुवङ्कववतेणविणुइममुणवितितिजिसीलंगवरु॥ पुज्जइ
 अग्धइतीसदिणुव॥ इतिः॥ कालेपावःसमेपानां॥ अंगस्त्रेचित्त
 पुरौनतिः॥ यत्रोपदेशनालोके॥ शास्त्रेज्ञानोपयोगात्ता॥ धा
 ॥ उँकीं अनीद्वणज्ञानोपयोगायनमः॥ अतिरकणुणाणे
 उगुगुणे॥ अठयपारहिमहिमहवि॥ पुणुअपुत्तारिज्जइ
 विमलुकुसुमंजलिअगाइखिविचि॥ २॥ जंखणिखणिचेय
 एणुनाविज्जइतं जिअनीखणुणाणुमुणिज्जइअहवाजंसुअ
 त्यअंजासो॥ एवसिस्साणपुणुअजासो॥ क्वोणइविरतुचितं
 विज्ञावइजावडोनावंतरि॥ एङ्कविणाणोउगुपहिद्वत्रउफेदि
 यविसयकसायतिसहन्नउ॥ एणुअजासिमणुथिरुयकइएणं
 गेवियप्पगणुलुक्काइ॥ एणुअजासेअवियलुक्काणो॥ एणुअ
 सेचलइएद्वणे॥ एणुअजासेसामणुवइइ॥ एणुअजासेअसुहे
 हइइएणुअजासेसुपहावणुणु॥ एणुअइइइदलियइरियरि
 एणु॥ घत्ता॥ इयगुणहिः संकियउअंगवरु॥ तुखिसमंघिविअपु
 लईउत्तारइगेदत्यजिसधणुजावइसुमणुगिहत्त्यजई॥ इतिध
 पुत्रमिन्नकलत्रेअः संसारविषयार्थन॥ विरक्तिर्जायतेयत्न
 मसंवेगोबुधैः स्मृतः॥ ५॥ उँकीं लंबेगायनमः॥ वसुविहद्वंसं
 वेइगुणु॥ पुज्जिविकरणयथालनरिवि॥ अमुत्तारिज्जइवयजु
 एणु॥ नत्तिएकुसुमंजलिकरिवि॥ २॥ जिणुनासियदलकवणुस
 यमि॥ रयणत्तयत्सकवणुविगयत्तमि॥ साधाराहाधाराएव
 हाणे॥ दयजुत्तिविपत्तेयजीवताणे॥ एरिसयधमिजहहोइरा
 उ संवेउत्तेजिधनणुशविरउ॥ अहवत्यसकउपसत्यधमु
 केवलदंसणुएणुएणु॥ मु॥ तहरत्तविउसंवेउसिधुतेउफल
 नाविज्जइअइविमिधु॥ हरिपदिहरिहलहस्वकणुह॥ तिस्य
 परमुक्केवलिक्रवाह॥ अचित्तयसणुपुरवरतहसुरेस अह

मिदालयवासियविसेस॥परिसहवंतिधर्मकफलेण॥परजयत्र
रहियणिमलेण॥जहिमोत्रविहिज्जइतहफलमि॥तिपुणुसंवे
उविधरिमणमि॥घत्ताः॥साहम्मियजणिमोत्र॥नेयभायवइ
कणणिफु॥तंसंवेउपणंगु॥अग्धुत्तारकुडुरियहुरु॥इति॥५॥
दानपात्रेत्तपत्रेतिचतुर्वाद्दशापरं॥स्वशक्त्याविघतेयत्रस
दानः तपसोस्थिते॥६॥उक्तीशक्तिस्तगायनमः॥चाउवि
सुपसत्यधमउ॥अगुसमच्चिवित्तिसण॥तउत्तारिज्जइत्त
खुपुणु॥रुणिविहुरसयत्तत्थण॥७॥दोविहपरिगहंछंणवा
उ॥सकसाणदियडंमेणंचाउ॥चाउविहवेइरसचायणचउ
विहवेइअजचणेण॥८॥चाउविमणजायवियप्पणासिचउ
विहवेइमोहइविणमि॥जंधम्मकवाणुकहेइसाहु॥साव
यहुंपुरउकयसुगयत्ताहु॥तंचाउविजाणिच्चउजणेहिं
यालिच्चउणिरुमुणिवराणेहिं॥उत्तिममज्जिमवहणयाहे
जिणसमयहनणियतिपत्तयाहे॥अहारपमुहचउदाणता
हे॥दिज्जइत्तिएणगाणयआह॥उहियहंदिज्जइत्तएकं
पणेण॥तंचाउहोइवियपियमुहेण॥प्रत्ता॥चायेविणुमंदिफु
येयवणुपुरुसविपडयसुरिस्थर्त्त॥गिधोवमपुत्तकलत्तविया
खंतिधणामिसुणित्थउ॥इतिः॥इत्तयोक्तादशाघात्रोकांवास
अंतरनेदतःस्वशक्त्याक्रियतेनमैःस्वर्गामोक्षफलप्रदं॥९॥उक्ती
शक्तिस्तपस्तेनमः॥१०॥अस्मिन्नामपासच्छिंदणपरमु॥देहमुक
णिणसणउकोवीणइवच्छउचयण॥तंतउकरिदिच्चासणउ
तंतउजहितवनरदमियअंगु॥तंतउजहिणित्तोसित्तअणं
गु॥तंतउजहिदोच्चिहणत्थिसंगु॥तंतउजहिइंदियविसयनेय
तंतउजहिगिरिकंदरिणिवासु॥तंतउजहिइस्थियजतणुगसु॥उवस
गागमिकंपइणजंजितवयरणुअंगुनासियउतंजि॥णिज्जरइये
इज्जियकम्मइष्ठा॥कासोवरिणउणवुद्धिउठ॥अहवयपणपालणु॥
सनिदिपंव॥पालणुगेहणुइंदियहसंत्त॥सिरकेसहलुंचणुणि
यकरेण॥च्चावासइज्जइत्तियखणेण॥णगाउवियलइत्तित्तं
काललोशआजमुविअणहंणित्तुजोइत्तसयणजोयणिहासवे

मोला० जैमा

३०

शदंतविणिविभंगुलएउविवेशिदिजोयणुमउणइइक
वार॥ मुंजइणीरमुविसयावहार॥ एरिमुतउजइमइएउहोइ॥
केवलणावइतेपरमजोइ॥ घत्ता॥ तउपुज्जविश्रज्जिक्खिस्सुगण
अग्घुत्तारिविकरिवियुइजेजिवकामिणिइरंतरिमा॥ एवहि
मुम्हिकरइइ॥ इति॥ ७॥ मरणोपसर्गयोगा॥ दिष्टवियोगा॥
दनिष्टसंयोगात्॥ तनयंयत्रशक्तितातिसाधुसमाधिःसविज्ञेयं
८॥ ईंकीसाधुसमाधयेनमः॥ साऊसमाहिअंतकालहिंपणम

॥ अथ छ हा ल्यो लिखते ॥ सोरग ॥ सर्वद्वयमें सारा ॥ आतमहित
 कौ ^{जो} ~~हो~~ ^{है} नमो ताहि वितधार ॥ नित्य निरंजन जानिके ॥ शचो
 ॥ पर छ आयुध तै तेरी दिन राति ॥ होय नची तर ह्यो क्यौं ज्ञाता जोवन
 धनतन किं करनारि ॥ सब है जल बुद बुद नत हार ॥ १॥ पूरन आय
 बधे धिन ताहि ॥ दये को दिधन तीरथ मां हि ॥ इंडु चक्रवर्ति कह
 करै ॥ आयु अंत तै वेहू मरै ॥ त्रयो संसार असार महां न ॥ सार अप्रमै
 आपा जांनि ॥ सुषतै दुष दुषतै सुख होय ॥ समता आरु गति न
 हिकोय ॥ ४ ॥ अं नत काल गति गति दुष लक्षौ ॥ बाकी काल अ
 नंतौ कहौ ॥ मदा अं के लोचेत नये का तो मां ही गुन वसत अने
 का ॥ अतुन किसी का कोय न तोय ॥ तेरा सुख दुष तो कौ होय ॥ या तै
 तो कूंत वरधारि ॥ पर द्वय नितै मोह निधार ॥ ६ ॥ हा रुमां सतन
 लिपटी चाम रुधिर मूत्र मल पूरित थाम ॥ सो रूथिर नर है चय हो
 य ॥ या कौ तजौ मिलै सिव लोय ॥ ७ ॥ हित अनहित तन कुलज
 न मां हि ॥ छोटी वानि हरो क्यौं नां हि ॥ या तै पुं कुल कर्म न जोग ध
 न वेदाय क सुष डुरव रोग ॥ ८ ॥ पांच इंडी के तजि फैला ॥ चित मिरौ
 धिला गिसि वगैला ॥ तामै तेरी तू करि सैला ॥ कहार सौ कै को लखे
 ला ॥ एतजि कषाय मत कीच लिचाला ॥ धावे अपनां रूप रसात्
 ऊरे कर्म वंधन डुरवदांन ॥ वरु रिप्रकसै के चल गपांन ॥ १० ॥ तेरे
 जनम कुवोन हीं जहां ॥ अैसे धेत रनां हीं कह ॥ या हीं जनम मू
 मिकार चो ॥ चलो निकसितो विधिते वचो ॥ ११ ॥ सब औ हार क्रि
 या का पात ॥ जया अनंती वार प्रधांन ॥ निपट कठिन अपनी प
 हचानि ॥ ता कौ पावत होत कल्यांन ॥ १२ ॥ धर्म सुजा व आपस
 रधांन ॥ धर्म न सील न न्हां न दांन ॥ बुध जन गुर की सीध वि
 चार ॥ गहो धर्म आतमहित कार ॥ १३ ॥ इति द्वादशानुश्रेया ॥ अ
 य टाल जौ गी रासी की ॥ सुनिरे जीव कहत रूतौ कूंते रे हि
 त के काजौ ॥ कै निश्रुल मन जवतू धारै तव क दूय क तो लजै
 जो दुषतै था वरतन पायो वरन मरु सो नां ही ॥ गारे वार मू वै
 र जीयो ये कसास के मां ही ॥ १ ॥ काल अनंतानंतर होयो पुनि
 विकले अरु वै ॥ वरु रिअसै नी निपट अगांती छिन जीयो

यो मृवौ ॥ अत्रैसं जनमगयो करमनवसितेरो वसिनहिचाल्यो ॥ पुं
 न्यउदैसैनीपशुह्रवीतवह्नुपानतनाल्यो ॥ १॥ जवरमित्योते
 नतोहिसतायोनिबलमित्योतेषायो ॥ मातत्रिपासमत्रौगीपापी
 तातैनरकसिधायो ॥ कीटिकवीष्कावतजैसैश्रैसीनंमितहं
 हे ॥ रुधिररांधिपरवाहवहतदैडुरगंधनिपटजहांहै ॥ त्रयावक
 रतअसिपत्रअंगमैसीतउघ्नतनगालै ॥ कोईकाटेकरवतक
 रगहि कोईपावकजालै ॥ जथाजोगिसागरतिथिमुमतेडुष
 कोअंतनआवै ॥ कर्मविपाकअैसाहीकैतोमानुषप्रतित
 वयावै ॥ ४ ॥ मातउदरमैरहैगीदकैतिकसतहीविललावै ॥
 रुजादिंतलाविसफोटकमाकनितैवचिजावै ॥ तोजोव
 नमैजांमतिकैसंगितिसदिनजोगरचावै ॥ अंधाकैधं
 घादिनघोवैवृक्षानाहिदूलावै ॥ ५ ॥ जवपकरैजवजोरना
 चालैसैनासैनवतावै ॥ अंदकषायहोवैतोभाईमुवनंत्रिकय
 दपावै ॥ परकीसंपतिलविअतिऊंरैकैरतिकालगमावै
 आयुअंतमालामूरअजावैसवलविलविपिचुतावै ॥
 चलेतहांतैथावरहोवैरुलिहैकाएतअमंता ॥ याविधिपं
 चपरवृत्तपूरनडुषकोनाहीअंता ॥ काललवधिजिन
 गुरकिरपातैआपआपकौजातै ॥ तवहीबुद्धजनजव
 दधितिरकैपऊंचिजायसिवयांते ॥ ७ ॥ इतिदाला ॥ १॥ अथ
 जेमालकी ॥ याविधिजववतकैमांहिजीवा ॥ वसिमोहगह
 लसूतेसदीवा ॥ उपदेसतछासहजैप्रबोध ॥ तवहीजागै
 ज्योउवतजोध ॥ १॥ जवचितवतअपनेमाहिआपहंचि
 दानंदनहिपुमपा ॥ मेरोनाहीहैरामना ॥ योतोवेधिवसि
 उपजैविजावा ॥ २ ॥ इतिसनिरंजनमिहसमान ॥ ज्ञानावरनी
 आछादिज्ञान ॥ निश्रैसुधाएकयोहारजेव ॥ गुनगुनीअं
 मअंगीअतेव ॥ ३ ॥ मानुषसुरनारकपशुप्रजायासिसुजु
 वोनवृक्षवजूरूपकास्त्रधनवांनदरिडीदासरावायेतोवि
 देवमुफवनासुजाव ॥ ४ ॥ रसपरसगंधवरनादिनामामैरेन

हीमैं ज्ञानघांम ॥ १ ॥ क रूपनही होत ओर ॥ मुकमैं प्रतिबिंबत
 सकल वीर ॥ २ ॥ ततपुलकतवरहरषतसदीवा ॥ ज्यो न ईरं कधरे
 रिदिअलीवा ॥ जवप्रवलअप्रत्यानथाय ॥ तवचितपरणाति
 त्रैसीउपाय ॥ सोसुनौनविकचितधारिकांन ॥ वरणंतंरुंता
 कोंविधि विधान ॥ सवकरैकाजघरमां हिवासा ॥ ज्यो नित्त ॥
 कमलजलमैंतिवासा ॥ ६ ॥ ज्यो सतीअंगमो हीसिंगरा ॥ प्रति
 करतप्यारज्यो नगरनाशि ॥ ज्यो धायलजावतअंनवालसो
 जोगकरतनांही सुसाला ॥ ७ ॥ जहउदैमो हचारितप्रजावन
 हि होतरंचरुत्यागनावा ॥ तहकरैमंदपौटी कषाय ॥ वरुं
 उदासकेअथिरधाय ॥ ८ ॥ सवकीरिद्व्याजुतन्यायनीताजि
 नसासनगुरकीदिदप्रतीता ॥ वरुंरुलेअर्चपुंरुलप्रमांन ॥
 सीधरमरुंतेलेपर्मयांन ॥ ९ ॥ वैधन्तिजीवधननागसोय
 जाके त्रैसीपरतीतजोया ॥ ताकीमहिमांकेसुर्गलोय ॥ बुधज
 ननाषेमो तैत होय ॥ १० ॥ इति ॥ ३ ॥ हलसोरवा ॥ ३ ॥ पौत्रा ॥
 तमसूर ॥ इरिअयो मिथ्याततम ॥ अवप्रगदेगुनचूरुतिनमैंक
 छुयककहतं ॥ १ ॥ संकामनमैंनां हि ॥ तत्वार्यसरधानमैं
 निरवांछाचितमां हि ॥ परमरथमैंरतरहै ॥ २ ॥ नैकनकरत
 गिलांन ॥ वांफिमलनमुनिजनलंघे ॥ नांही होतअजांन ॥
 तत्वकृतत्वविचारमैं ॥ ३ ॥ वरमैंदयाविशेषि ॥ गुनप्रगदैओ
 गुनठकै ॥ शिथलधर्मतैदेवि ॥ जैसें तैसेंदिदकरै ॥ ४ ॥ साधर
 मीयहवांन ॥ धरैहेतगोवांछलौ ॥ महिमां होतमहानथ
 र्मकाजत्रैसैंकरै ॥ ५ ॥ मदनहिजो नृपताता ॥ मदनहि नृपते
 नांनको ॥ मदनहिजो परधान ॥ मदनहिसंपतिकोसको ॥ ६ ॥
 ह्रवो ॥ आतमपाता ॥ तजिगगादि विभावपरि ॥ ताकेकेके
 मांन ॥ जात्यादिकवसुअथेरको ॥ ७ ॥ वंदतहैअरिहंतजि
 नमुनिजिनसिधांतकौं ॥ नवैनदेविमहंता ॥ कगुरुकदे
 वकुग्रंथकौं ॥ ८ ॥ कृतसितआतमदेव ॥ कृतसितगुरुकु
 तिसेवक ॥ परसंसाषटनेव ॥ करै नसुमकितवानकै ॥ १० ॥ ४

गद्याऽसासुजाव॥ कस्यान्नजावमिथ्यातकौ॥ वंदो ताकेपावबुध
जनमनवचकायते॥ १॥ शीति॥ ४॥ ढालयमहस्तीसंपमसाधे॥
तिरजंचमिनषदोऊगतिमै॥ दृतधारकसरधाचित्तमै॥ सोअगलि
तनीरनपीवे॥ निसिजोजनतजतसदीवै॥ १॥ मुषअनिषवसु
नहिलावै॥ जिननक्तित्रिका लरचावै॥ मनवचतनकपदनि
वौरे॥ क्रतकारितमोदसवरि॥ २॥ जैसीउपसमतकषाया॥ तै
सातिनत्यागवताया॥ कोऊसातविसनकोत्यागौ कोईअनुष्ट
ततैपागौ॥ ज्ञानसजीवकवृन्हैमारे॥ विरथायावरनसंघारैपर
हितविनजंवनवोलै॥ मुषसांचविनां नहीषोलै॥ ४॥ जलश्रुति
काविनधनसवहू॥ विनदीयोलेनहिकवहू॥ आहीवेततावि
नतारी॥ लघुवहनवडीमहतारी॥ पातिसनाकाजोरसंकोचै
ज्यादापरिगहकौमोचै॥ दिसकीमरज्यादालावै॥ वाहरिनहिपा
वहलवै॥ ६॥ ताहूमैपुरसरसरिता॥ नितिराघतअघतैर
ता॥ सबअनरथदंडुनकरिहै॥ छिनछिननिजधर्मसुमरिहै
७॥ इव्यखानकलासुधमावै॥ समतासामायकथावै॥ पोसैरा
काकीहोवै॥ निहकिंचनमुनिज्यौसोहै॥ ८॥ परिग्रहपरमांतवि
चारे॥ नितितेमनोगकाधारे॥ मुनिआवनविरियांजोवै॥ जवजो
गिअसनमुषलावै॥ ९॥ येउत्तमक्रियाकरता॥ नितिरहैपाप
तैरता॥ जवतिकटमृत्युनिजजातै॥ तवहीसवममताजा
तै॥ १०॥ अिसैपुरुषोत्तमकेरा॥ बुधजनचरननकाचेरावैनिषे
सुरपदपावै॥ थोरैदिनमैसिवजावै॥ ११॥ इति॥ अथअहोजग
तपुरकीढालमै॥ अथिरथायपरजायजोगतैहोयनुदासी॥ नि
त्यतिरंजनजोतिआतमायतमैमासी॥ सुंतदारादिवुलायम
वतितैमोहनिवारा॥ त्यागसहरधतधांमवासचनवीचि
विचारा॥ १॥ अषनवसनउतारिनगानकैआत्मचीतां॥ पुरदि
गिदिष्याधारि॥ सीसकचलुंचजुकीता॥ नसयावरकाघाता
त्यागमनवचतनलीतां॥ ऊदवचनपरिहारा॥ गहैनहिजलवि
नदीना॥ २॥ चेतनजडतियजोगा॥ तज्यागतिडुषकारा॥ अहि

कंचुकज्यां निचिततैपरिगौतरो॥ गुपतिपलनकैकांजाकपठम
 नवचतमनांही॥ पांचूसमतिमहारिपरीसैसहिहैआईमो
 रिसकलजंजाला॥ आपकरिआपआपमै॥ अपनेंहितकौआ
 पकल्योकैसुखजापमै॥ ऐसीनिश्रलकायध्यांतमैमुनिजनके
 री॥ मांनंप्रथरशीकिधौचितरामनुकेरी॥ ६॥ आरिघातियाना।
 सिग्यानमैलोकनिहारा॥ देजिनमतनुपदेसनविककौडुरवतै
 टारा॥ वडुरिअधातेतोरि॥ समैमैसिचपदपाया॥ अलषअ
 प्रंडितजोतिसुखचेतनवहराया॥ ७॥ कालअतंतानंतजसेके
 तैसेरहैहै॥ अविकारीअविनासअचलअनुपमसुखलहि
 है॥ ऐसीभावनांजायअसेजेकरिजकरिहै॥ तेऐसेहीहोय
 दुष्टकरमनकौहरिहै॥ ८॥ जिनकेवरविसवास॥ वचनजिनसा
 मनतांही॥ तेजोगातुरहोयसहैदुषनरकतिमांही॥ सुषदुष।
 पूर्वविपाका॥ अरेमतिकालपैजीया॥ कवितकबिनतैमीतज
 नममानुषतैलीना॥ ९॥ सोविरथामतिघोय॥ जोयआपापरआईग
 ईतलाजैफेरिउद्धिमैमूवीराई॥ जलानरककावाससहितस
 मकितजेपाता॥ बुरेवनेजेदेवृपतिमिथामतमाता॥ १०॥ नहीष
 चधनहोयनहीकाहूतैलरनां॥ नहीदीनताहोयनहीघरकापर
 हरनां॥ समकितसहजसुजायआपकाअननवकरनायावि
 नजपतपह्याकष्टकैमांहीपरनां॥ ११॥ कोटिवातकीवातअरेबुद्ध
 जनवरधरनां॥ मनवचतनसुषहोयगहोजिनमतकासरनां॥ वा
 रासैपचासअधिकनवसंवतजांनूं॥ तीजसुकलवैसाषढालष
 टसुननुपजांनूं॥ १२॥ ६ तिषट्पाठसंपूर्ण॥ ॥ श्री॥ ॥

॥ अथ जिनपूजा अष्टक सुहरी छंद ॥ सलिलचंद्रतंत्रत
 पुहपत्ने ॥ चरुसुदीपसुधूपफलानले ॥ परममंत्रजपैष्ठवे
 कुजिये ॥ जिनगुरुगुरुसारदप्रजिये ॥ १ ॥ उँकी श्रीपरमदेव
 त्रावतरावतरसंदोसष्ट ॥ अत्रतिष्ठतिष्ठावः ॥ अत्रम
 मसंति ॥ २ ॥ जलविचित्रपवित्रमुलाश्रये ॥ विमलप्रासुक
 सुधकराईये ॥ त्रिविधधारसुधीयमुधांश्रये ॥ मलजरा मृतज
 जन्मवहाश्रये ॥ ३ ॥ उँकी श्रीपरमदेव ॥ जलं ॥ प्रमलप्रतिशीत
 लचंद्रनंतपतेदाहत्रथाहरिकंदनं ॥ करतं श्रीजिनदेवसुं
 वनं ॥ हरततापकराडपमोहनं ॥ ४ ॥ उँकी श्रीपरमदेव ॥ चंद्र
 नं ॥ उजल ॥ अथ तसुंदरचढतं
 श्रीगावंतकूपूजनिरंतरं ॥ मधुरवेनगचारसुगावंतं ॥ अक्षतहे
 हित्रैगुणपावनं ॥ ५ ॥ उँकी ॥ अक्षतं ॥ सुमन्वाहसुवासु
 वासतं ॥ अरवश्रीअरहतहतारतं ॥ मदनवानसुजांनवला
 धरं ॥ सुधिरहोयसुसीलसुषाकरं ॥ ६ ॥ उँकी श्रीसुषं ॥ उचत
 अन्नघनाष्टमंफितं ॥ सुनगमिष्टकधानपंडेतां ॥ धरत
 श्रीजिनराजविराजतं ॥ सवषुधादिकिदोषनुजाजितं
 ॥ ७ ॥ उँकी श्री ॥ नैवेद्यं ॥ तमविनासतदीपप्रकासतं ॥ चिलजे
 जोतिमहाच्चविनासतं ॥ अरत्श्रीगावांतविधानसौ ॥ लह
 तज्ञानप्रधांननुजांनसौ ॥ ८ ॥ दीपा ॥ दहीसुगंधसुधूमसुधूम
 तं ॥ दसदिसाविसत्तारसुधूमतं ॥ चरणश्रीप्रतिधूपच्छिपा
 श्रये ॥ करमश्रावसुकाऊराश्रये ॥ ९ ॥ उँकी ॥ धूप ॥ फलअने
 कशुकारसजोगता ॥ नगतनावविशेषपयोगता ॥ महतह
 र्धेवठाश्चठाश्रये ॥ सुफलमोषअधैफलपाश्र्वे ॥ १० ॥ उँकी श्री
 फलं ॥ अरधअष्टविथारकरौतरो ॥ दरवजावसमेतसद
 रो ॥ पदऊघांनैतिछंदसुसुंदरी ॥ जगतपासुतरकोतर
 ॥ उँकी श्रीपरमदेवअर्थ ॥ इतिजिनपूजाअष्टकं ॥ अथ
 जयमालकीअरती ॥ दोहा ॥ हृषनवीरधुस्थिरचितरी
 सनायसिरनाय ॥ विघनहरतमंगलकरतआरतिआ

रतिजाय ॥ १ ॥ चोपर्श ॥ जयजयन्त्रादिन्त्रादिन्त्रवतारं जय
 जयन्त्रजितन्त्रजित्तजितसारां ॥ जयजयसंनवसंनवहरणं
 न्नजिनंदननंदनधनधरतं ॥ जयजयसुमतिसुमतिपरव
 णं ॥ जयजयपदमपदमनविज्ञानं ॥ स्वांमिसुपाससुपास
 विनांसं ॥ चंदाप्रभुचंदागनदासं ॥ जयजयसुविधसुविध
 निधरचनं ॥ जयजयसीतलसीतलचनं ॥ जयजयश्रीयांसत्र
 न्नसश्रीगेहं ॥ वासपूज्यसुरपूज्यत्रणेहं ॥ जयजयविमज्जवि
 मलजसवानं ॥ जयजयन्ननंतन्ननंतगुणाघातजयजयध
 र्मेसुधर्मेतिगमनं ॥ जयजयसांतिसांतिपदपगनं ॥ कुंभुकु
 थुजियन्त्रादिदयालं ॥ जयजयन्नरन्नरिहरिवरचालं ॥
 जयजयमद्भिर्मद्भ्रमदद्यांतमुतिसुवृतमुतिसुवदानं
 जयजयणमिणमिसुरतरमहितं जयजयणेमिणेभिज
 यकहंतं ॥ जयजयपारसपारसनामं ॥ वीरवीरविधदतदि
 संधामं ॥ अज्ञानतेजिनस्वामी ॥ अंतरस्वामी ॥ सुरधिवि
 मी ॥ जौध्यामीसोहोतन्नकामी ॥ जगमैनामीसंपतयांम
 सिवमा ॥ इतिश्रीदेवपूजाजयमालसंपूर्णी ॥ अथदेवपू
 जात्रष्टकलिष्यते ॥ जलचंदनं चंदनफूलजुचरुदी
 पधूपफललाय ॥ मनवचकायकरोजिनपूजासुरासुक
 तसुप्रदाय ॥ केजिनपदध्यायलै ॥ जिनजिनधापेतिनसु
 षपां ॥ अंतरकीलोधार ॥ जातिविनांसंसारजलधितै
 कौतुगतौरेपां ॥ केजिनपदध्यायलै ॥ कंचनयारामनमै
 ञ्जारीगां ॥ जलनरिन्त्रांत ॥ मनवचकायकरोजिनपूजा
 सुत्रधारोगकीहोनि ॥ केजिनपदध्यायलै ॥ चंदनं ॥ द्वीरघ
 न्नमलसुंगेधन्नतसुनतंडुलचंदसमानं ॥ मनवचका
 यकरोजिनपूजाहौ ॥ हिन्त्राधितगुनुषानं ॥ केजिनपदध्या
 यले ॥ ॐ ह्रीं ॥ अक्षतं ॥ कवलकेवकुं ॥ जोकरनौकुंदकं
 लपनरुफूला ॥ मनवचकायकरोजिनपूजामिटैकामक
 मूल ॥ केजिनपदध्यायलौ ॥ सुषं ॥ मठीमवरीमगवमृगले
 मोदकमोतीचूर ॥ मनवचकायकरोजिनपूजाह्युद्यारे

गकरिहरकेजिनपदध्यायलें।नेवेद्यं।धा।दीपत्रदीपसमीपच
 रनकेजामगजगमगहोता।मनवचकायकरोजिनपूजाकेव
 लज्ञानतदोता।केजिनपदध्यायलें।५।॥उंकीदीपं॥।रुघ्यागुरुपाव
 कमैषेवौधूपधूपमहिकाय।मनवचकायकरोजिनपूजाकर्मका
 वजरिजार्शकेजिनपदध्यायलें।६।॥उंकीधूपं॥।सीताफलसं
 गतरेसदाफलश्रीफलसरदेसेव।मनवचकायकरोजिनपूजा
 होइमुक्तफलएव।७।॥उंकी॥।फलं॥।जलफलअर्घकरोथि
 रतासौनाचौगायवजाशमनवचकायकरोजिनपूजाद्यानत
 धर्मउपाय।केजिनपदध्यायलें।८।॥इतिश्रीअर्घ्ये।अष्टकसंपू
 ॥अथअरतीजयमाल॥चौबीसौजिनराजपदवंदोमनवचका
 य।कहौनेदचौबीसलौवंदोपानअधिकाय।२॥।आदिनाथपर
 मेश्वराकसरूपहै।अजितदेवदोदरसनज्ञानअनूपहै।संभव
 तीनदरवगुनपरजैजांत॥अजिनंदनचरौक्रोधादिकहांतए॥२॥
 सुमतिपंचपरवर्तीनिमागरतारहै॥पदमंभुकायकेजीवपालन
 हारहै॥३॥सुयासस्वामीसातमहानयनासए॥चंद्रप्रभुअविद्यु
 तमंफ्रितजासत॥४॥पुहपदंतनववाफनिकेरषवारहै।सीतलदंस
 धाधर्मरतननंदारहै॥५॥अथसावारप्रतिमाकथतसुनाईया॥वास
 पूज्यवारहविधि।तपसमुजाइया॥६॥विमलत्रयोदशायोनैपानवे
 लासिया॥अनंतचनुदहमारगनापरगासिया॥७॥धरमपात्रपे
 इहविधसर्ववषांतए॥सातिनाथसोलहकारनपरवांतए॥८॥कु
 थुनायसत्रहविधसंजमपालए॥अहवनेअष्टदसइषनेटाल
 ए॥महन्नवताएजीवसमासबनीसहै॥मुनिसुव्रतकहिपुहुल
 केगुनबीसहै॥१॥मजिनप्रावककेगुनइकईसौकहेनेमिना।
 यवाबीसपरीसहसवसहै॥पारसनाथवषांतीतेईसवरगतां॥
 माहावीरचौबीससंगतजिसुषसनां॥१॥घत्ता॥दोहा।महापुरुष
 कीआरती॥महापुरुषकीयांति॥पढतेसुनतेसुषलहै।मोतीगंम
 सुजांन॥२॥इतिसंपूर्णतीर्थकरकीआरतीअहक॥ ॐः॥॥

पू०
३६

॥ त्रयपूजाप्रष्टकलिष्यते ॥ दोहा ॥ प्रभुप्रंतरजाम
हृदयमोह ॥ करुंजथारथवीनतीहमपैकरुतां होय ॥ १ ॥ ॐ श्री
त्रावतरा ॥ अतिष्ठ ॥ अत्रममः ॥ २ ॥ छंदत्रिमंगी ॥ वरुत्रिषा
सतायो प्रतिदुषयायौ तुमडिगात्रायौ जललायौ ॥ उत्तमोगाज
लशुचिअतिसीतलप्रसुकनिरमलगुन्गायौ ॥ प्रभुअंतरजाम
त्रिभुवनतामीसवकेस्वामीनीतकरौ ॥ यहअरजसुनीजेटीलन
कीजेन्यावकरीजेदयाधरौ ॥ ३ ॥ ॐ श्री ॥ जलं अघतपतनिरंतर
अगतिपदंतरअगतिपदंतरमोउरअंतरखेदकरौ ॥ लैवावनचंद
नदाहनिकंदनतुमपदवंदतहरषधरौ ॥ प्रभुअंतरजामीत्रिभुवन
नामीसवकेस्वामीनीतकरौ ॥ यहअरजसुनीजेटीलनकीजेन्या
वकरीजेदयाधरौ ॥ ४ ॥ ॐ श्री ॥ चंदनप्रोगुनदुषदाताकहैनिज
तामोहिअसातावरुतकरौ ॥ तंडुलगुनमंडितअमलअघंफितवी
तधरौ ॥ प्रभुअंतरजामीत्रिभुवनतामीसवकेस्वामीनीतकरौ ॥ यह
अरजसुनीजेटीलनकीजेन्यावकरीजेदयाधरौ ॥ ५ ॥ ॐ श्री अक्षत
सुरनरपसुकौदलकाममहाबलवातकहाछमोहिलियाताके ॥
सगाकफूलचटाऊंनगतिवटाऊंघोलहिया ॥ प्रभुअंतरजामी
सवकेस्वामीनीतकरौ ॥ यहअरजसुनीजेटीलनकीजेन्यावक
रीजेदयाधरौ ॥ ६ ॥ ॐ श्री ॥ पुष्प ॥ ॥ सवदोषनिमांहीजासमतांही ॥
नृषसदांहीमोलागौ ॥ सदघेवरवरलाडुवरुधरियांलकतकंभ
रतुमअंगौ ॥ प्रभुअंतरजामीसवकेस्वामीनीतधरौ ॥ यहअरजसुनी
जेटीलकीजेन्यावकरीजेदयाधरौ ॥ ७ ॥ ॐ श्री ॥ नैवेद्य ॥ अज्ञां ॥
नमहातमछायरह्यौमंगपांतदक्यौहमदुषयावे ॥ तुममेदंनह
रीतेजअपागदीपसमाराजसगावे ॥ प्रभुअंतरजामीत्रिभु
नतामीसवकेस्वामीनीतकरौ ॥ यहअरजसुनीजेटीलनकी
जेन्यावकरीजेदयाधरौ ॥ ८ ॥ ॐ श्री ॥ श्रीदीपं ॥ एककर्मम
हावजनरुनराजनसिवमारगननयावतहे ॥ कछागुरधूपं
प्रमलअनूपंरुत्यसूरूपंध्यावतहे ॥ प्रभुअंतरजामीत्रिभुवन

रूपे

नामीसवकेस्वामीनीतकरो॥ यह अरजसुनीजेडीलनकीजेमा
वकरीजेदयाधरौ॥ ७॥ सवतैजोरावरअंतरायअरिसुफलवि
धनकरिमारितहै॥ फलपुंजविवधनरतैनमतोहरश्रीजितपद
तरधारितहै॥ प्रहृअंतरजांमीत्रिनुवननांसवकेस्वामीनीत
करो॥ यह अरजसुनीजेडीलनकीजेमावकरीजेदयाधरौ॥ ए॥
उ॥ श्री॥ अर्घी आवौडुषदांती आवतिसानी तुमदिगाअनी
वारनहै॥ दीनतमिसुतारनअधमनुधारनघानततारनका
रनहै॥ प्रनुअतजांमीत्रिनुवननामीसवकेस्वामीनीतकरो॥ यह
हअरजसुनीजेडीलनकीजेमावकरीजेदयाधरौ॥ १०॥ उ॥ श्री
श्रीअर्घी॥ अथतीर्थंकरकीजयमालछीयालीसतोलकीलि
ष्यते॥ दोहा॥ गुनअनंतकहिकोसकै॥ छीयालीसजिनराय॥ प्र
गटसुगुनगनतीकरुंतुमहीहोऊसहाय॥ १॥ छेद॥ एकज्ञानके
वलजिनस्वामी॥ दोआगमअथातमनांमी॥ तीनकालविधि॥
परगटजाती॥ आरअनंतचतुष्टयानी॥ २॥ पंचपरावरततिपर
कासी॥ छहौदर्वगुनपरजेजासी॥ सातजंगवांतीपरकासक
आवौकर्ममहारिपुनासक॥ अनंतततिकेजाघनहारे॥ द
सलचतसौत्रविजनतारे॥ गपारेप्रतिमांकेउपदेसी॥ वारैसना
सुधीअकलेसी॥ ३॥ तैरेविधचारतकेदाता॥ चौदैमारगताके
ग्याता॥ पंचैनेदप्रमादतिवारी॥ सोलैजावतिफलअविकारी
५॥ तारेसत्रैअंकतरतनुवा॥ वारैधांनदानदातातुवजावनु
नीसनकेहेप्रयमगुन॥ बीसअंकगनधरजीकीधुन॥ ६॥ इक
ईससरवघातविधजानै॥ वारैसबंधनवमगुनेथानै॥ सिइ
सतिधअरुतरतनरेश्वर॥ सोपूजेचौवीसजिनेस्वर॥ ७॥ प
चीसकषायनासकरीहै॥ देसघातछवीसहरीहैततद
रवसताईसदेषे॥ मतिविग्यानआवाइसपेघै॥ ८॥ उततीस
अकमनुषसवजाने॥ तीनकुलाचलसरववधाने॥ इमतिस
सपदलसुधर्मनिहारे॥ वतीसदोषसमाइकटारे॥ एतितेससागरु

करआणचौतीसनेदअलखिवताएपेतिमअछरजपसुघदाईठ
तीसकारनरीतमिटाई१७सैतिसमगाकहिगौरैगुनेमेअगति
सपदलहिनरकअपुनमे॥उततालीसउदीरनतेरमाचालिस
नचनइइपूजेनम॥१७॥इकतालीसनेदआरायनाउदेवियाली
सतीर्थकरनति॥तेतालीसबंधपातानहिद्वारचवालिसनर
चौथेमहि॥१७॥पैतालीसपत्यकेअछराछियालीसविनदोष
मुनीसराजकउदेतछियालीसमुनधुना॥प्रकृतिछियालीसा
नासदसगुना॥अछियालीसघतराजसाता॥मुवअंकछियाली
ससरसौकहिकुवा॥नेदछियालीसअंतरतपवरछियालीस
पूरनगुनजिनवरा॥१७॥छेदंघता॥मिआतपतनिवारनचंद
समानहै॥आपानतिमरवारनकारननानहै॥कालकया
यमिदोवनमेघमुनीसहै॥द्यांतसमकरतनत्रैगुनईसहै
१७॥इतिश्रीछियालीसबोलप्रारतीसंपूर्ण॥अथवीसतीर्थ
करकीपूजाआरतीलिखतेः॥दोहा॥दीपअदाईमेरपअवती
र्थकरवीस॥तिनसवकीपूजाकरौमनवचकरधरसीसा॥छेद॥
उंकीवीसतीर्थकरअत्रावतरां०अत्रतिष्ठः०अत्रममस०छेद
इइफनिंदनरिवंधनिरमलपदधारी॥सोतनीकसंसारसारगुन
हेअविकारी॥हीरोदधिसमनीसहैपूजेत्रिघातिवार॥श्रीमं
धरजिनआदिदेहोवीसविदेहमकारांउंकीश्रीवीसवीदेहमै
तीर्थकरविरामाजलनिर्विण॥जल॥पातीनलोककेजीवपापआ
तापसताए॥तिनकौसांतादातासीलवचनवताए॥वावनचं
दनसोजजोहोनरमतपतनिवार॥श्रीमंधरजिनआदिदेहो
वीसविदेहमकारश्रीजिनराजहै॥१७॥उंकीश्रीचंदनयहसंसा
रअपरमहासागरजिनसामी॥तातैतारैवहीनगतिनोकाजग
नामी॥तंडुलअमलसुगंधसौहैपूजेतुम॥गुनकारा॥सीमंध
रजिनआदिदेहोवीसविदेहमकारश्रीजिनराजहै॥उंकीश्री
वीदे॥अदंतनविकसरोजविकासनीदत्तमहररविसेगहै
जतिश्रावकअचारकथनकौतुमीवडेहोफूलसुवासअने

अनेकसौहो पूजोमदनप्रहार॥ सीमंधरजिनत्रादिद्वैहोवीस
 विदेहमफारश्रीजिनराजहो॥५॥ कांमनागविषधामनांस
 कौगाफकहेहो॥ छुधाप्रहादोज्वालतासकौमेघलहेहो॥ तिव
 जवरुष्टतमिष्टसौहो पूजोत्रूषविहार॥ श्रीमंधरजिनत्रा०॥
 उंकीश्रीवी० नैवेद्यं॥ नृमहौननंदेहसर्वजनमांहिनसौहो
 सोहप्रदातमघोरनासपरकासकस्योहो॥ पूजोदीपप्रकास
 सौहो ग्यानजोतकरतार॥ सीमंधरजिनत्रादिद्वैहोवीसविदेह
 मफारश्रीजिनराजहो॥७॥ उंकी॥ दी०॥ कर्मत्रावसचकावन
 रविस्तारनिहार॥ ध्यानत्रागनिकरिषगटसर्वकीनौतिखाए
 शूषानूपमषेवतैहो दुषजलनिरधार॥ सीमंधरजिनत्रादि
 ०६॥ उंकी॥ धूप॥॥ मियावादीदुष्टलोभहंकारनरेहो॥ सच
 कौछिनैजीतजैतकेमेखरेहो॥ फलत्रतिउत्तमसोजजोहो
 वंछतफलदातार॥ सीमंधरजिनत्रादिद्वैहोवीसविदेहफार
 श्रीजिनराजहो॥८॥ फलंउंकीवि०॥ जलफलत्रावोदक
 रघकरप्रीतधरीहो॥ गनधरइंजनरुनैशूतिपूरीतकरीहो॥
 द्योनतसेवकजानकैहो जातैलेकनिकार॥ सीमंधरजिनत्रा
 दिद्वैहोवीसविदेहमफारश्रीजिनराजहो॥ १०॥ इतिअर्ध
 अथजयमालआरती॥ सौरा॥ ग्यानसुधाकरचंदनक्कि
 षतहितमेघहो॥ नमतमजानत्रमंद॥ सीमंधरवीसोनमो॥११॥
 ॥ छंदौयई॥ सीमंधरसीमंधरस्वामी॥ जुगमंधरजुगमंधरना
 मी॥ सुवाहुवाहनिजगजतोर॥ वंहुवाहुवलकरमविदार॥१२॥
 सुजातसुजातकेवलग्यानं॥ स्वयंप्रभुप्रभुस्वयंप्रधानं॥ रिषनांन
 निरषनांनतिदोषं॥ अनंतवीरजवीरजकोषं॥ सौरीप्रभूसौर
 गुनमालं॥ विसालसुगुनविसालदयालं॥ वज्रधारमौगिरवा
 ज्जरहो॥ विज्ञाननिचंज्ञाननिवरहो॥ धामवाहुनइतिकेकरता
 श्रीजुगश्रीशुयंगजरता॥ इश्वरसवकेईश्वरबाजे॥ नेमप्रभुज
 मनेमविराजे॥५॥ वीरसैनवीरसेतजानै॥ महानप्रमहानइवषा
 नै॥ नमोजसोधरजसधरकारी॥ नमोअजितवीरजवलधारी॥

पुष्प

धनुषपाचमैकायविराजै आवकोरुपूर्वसवञ्जै। समौ
सरनसोनतजिनराज नौजलतारनतरनजिहाज। ७। स
मकरतनत्रैनिधदानी। का लोकप्रकासकणानी। सत्कं
इतिकरिवंदितसोहै। सुरनरपसुसवकेमनमोहै। ४।
दोह। तुमकौपूजावदनाकरैधन्नरसोय। चांततस
धामनधरैसोनाधरमीहोय। १॥ अथसिधौकेअष्टकले
षते। नुरधअधोरकाररुतविंदीसहनिहकारसिधच
त्रपूजोसदा। अरिकरिहरहरिसार। १। आजहमारेअन
०उंकीनमोसिधा। सिधपरमेधीनमअत्रावतराणे
अत्रति। अत्रममठेह। आजहमारेअनंदहै। अ
चली। मोहमहारिपुनासकेपायौसुषसम्पकचारयातै
पूजो। निरसो। मिथ्यातदृषानिवार। अजहमारेअनंदहै
३। उंकी। जलं। गपानावरनीजीतकैजविप्रगयौकेवल
गपान। चंदनसौपूजाकरौअगपानतपतिहीहानिआ।
जहमारेअनंदहै। ४। उंकीश्री। चंददर्शनआवरणी।
हस्यनये। दर। सअनंतअपार। पूजोअक्षतस्मायकै
श्रीगुनतमहंगुनकार। ५। आजहमारेअनंदहै। उंकी
। अक्षतो। अंतरायकौघातकैउपज्योवलअनंतरास। पू
लनिसौपूजोसदापुनुकाप्रकौजोरविनास। ६। आजह
। उंकी। पुष्प। कर्मवेदनीमिदगयौनिरवाधावाधाहीन
अन्वछहोससौपूजो। मेरौरोगक्षुधाकरिहीत। ७। आ
जहमारेअनंदहै। उंकीश्रीनैवेद्य। आपुकरमकौका
छेकि। योअवगाहअचलपरकास। पूजोदीपचढा
यकैकरनरमतिमरकौना। ८। आजहमारेअनंदहै।
धनामप्रकृतिसवचरकौ। नयेअमलअमूरतकदेवा।
धूपसुगंधीषेयकैसचकर्मजलैस्वयमेवा। ९। आजह
मारेअनंदहै। उंकीश्रीधूपं। १०। गोतकर्मगिरतौरकै
रुएअगुरुअलकधनमाश। फलसौपूजोआवसो

लडंमनवंचितफलसा॥१०॥ आजहमारैत्रानंदहै॥ फलं॥
हरषकरोउछाहसौनमौंआवैआनिवाया॥ आतंददौलत
गंमकौं॥ प्रमुजैजैहोइसहइ॥११॥ आजहमारैत्रानंदहै॥
विज्ञानधरुनहिदेखै॥ हमदेखैसरधावंत॥ जानैमानैअनुन
वेतुमराषीपासमहंत॥१२॥ जैकौनमौसिधाणसिद्धपरमे
ष्टिनअर्थेनिर्पामीतेस्वा॥ अर्थे॥ इतिअष्टक॥ अथअरती
जयमाला॥ दोहा॥ आवकमेदिठबंधसौनषसिधबंधमौजि
हांना॥ बंधरहितसुषगुनसहितनमौसिधनगर्वन॥१॥ सुषसं
सकदर्शनपातधरंवतनांगुरुनालघुवीधहरं॥ अचगा
हअमूरतिनायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥२॥
मलअचलअमनअततअवचअकलं॥ अजरअमरजग
गपायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥३॥ निरजोगसु
जोगअरोगपं॥ निरजोगअसोगविजोगहरं॥ असंसुरसं
डषघायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥४॥ सवकर्मक
लंकअटंकअजं॥ नरनाथसुरेससमूहजजं॥ मुनिध्यावतस
जनागपायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥५॥ अविदु
द्विसुधपुवुंघमयं॥ सवजानतलोकअलोकचयं॥ परमंध
रमंत्रिबलायकै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥६॥ निरबंध
अबंधअगंधपरं॥ निरनैनिरघैनिरनैअघरं॥ निररूपअनूपअ
कायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥७॥ निरनेदअषेदअ
छेदलहा॥ निरइंदसुछंदअछंदमहा॥ असुधाअत्रिषाअ
कचायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥८॥ असमअयसं
अतमंलहियं॥ अगमंसुगमंसुखयंगहियं॥ जमरायकीवि
दवचायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥९॥ निरधामसु
धामअकामजुतं॥ अविहारअहारनिहारचुतं॥ नवनासन
तीछनसायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥१०॥ निरवर्न
अकर्नअसर्ननं॥ आतंअमतंअचुतंअरतं॥ अतिउत्तिम
नावसुषायकहै॥ सवसिधनमौसुषदायकहै॥११॥ निररंग

नासि-
३७

असंगअमगदा॥ अतपंअजपंअवयंसुषदा॥ अमदंअ
गदंगुनदायकहै॥ सवसिधनमोसुषदायकहै॥ अविषा
दअनादअवादवरं॥ नगचंतअनंतमहंततरं॥ नुमधेय
महारिषधायकहै॥ सवसिधनमोसुषदायकहै॥ २३॥ नि
रनेहअदेहअगोहसुषी॥ निरमोहअकोहअलोहसुषी
तिहुलोककेनायकपापकहै॥ सवसिधनमोसुषदायकहै
२४॥ अंदरैसर्पनागमहातिवसैनव॥ लाषकेनागजघन
लसै॥ तनवातकेअंतसहायकहै॥ सवसिधनमोसुषदा
यकहै॥ २५॥ गीताछंद॥ जोपूजेगावैपुतिवटावैनवैनवै
ध्मावैशीतसौ॥ पुष्यालचंदकहैकहैरजसजिनौंकारीत
सौ॥ जिनामअछरजपैहरषैधनत्तेनरनारिहै॥ प्रनयततला
रनहुषनिवारनगतिकौंनिसतारहै॥ २६॥ इतिआरतीस
माप्ताः॥ अथगुरुकेअष्टक॥ दोहा॥ चक्रगतिहुषसाग
रविषैतारनतरनजिहाजरनत्रयनिरथनगनतनधनम
हामुनिरजो॥ गीताछंद॥ सुचनीरनिरमलहीरदधिसमसुष
स्वरनछुडारियातिहुंधारतिहुंगददारस्वामीअतिउछाह
वटाईया॥ नौनौगतनवैरागधारनिहारसिवतपतपतहै
तिहुंजगतनाथअराधसाधसुपूजनितंगुनजयतहै॥ २७॥
करप्रचेदनससलसौधससुगुरुपदपूजाकरौ॥ सवपापतापमि
टावस्वामीधरमसीतलविसतरौ॥ नौनौगतनवैरागधारनिहार
सिवतपतपतहै॥ सुनरुलरासप्रकासपरमलसुगुरुपीय
निपरतहै॥ निरवारमारुपा॥ धस्वामीसीलदिठउरधरतहै
नौगतनवैरागधारनिहारसिवतपतपतहै॥ २८॥ एकवांनमे
ष्टसलौनसुंदरसुगुरुपावनप्रीतसौ॥ करसुधारोगविनास
स्वामीसुथिरकीजैरीतसौ॥ नौनौगतनवैरागधारनिहारसिवत
पतपतहै॥ २९॥ तिहुंजगतना॥ उंकीपंचप्रकारकाश्रीमहापुत्र
श्रीगुरमोत्तमः॥ नैवेद्यं॥ ६॥ दीपकउद्यौतसजोतजगमगसु
गुरअहनजौसदा॥ तमनासापांतउजासस्वामीमोहिमोह

किनवाकमे॥ २४॥ वासवजलसुगुरुपाताधरतहै गुनकाश्रैगुनहारसाप्रचंदनाहमकरतहै नौनौगतनवैरागधार
निहारसिवतपतपतहै॥ २७॥ उंकीश्रीः॥ अक्षतं ५६

नहोकदा ॥ नौनौगतवैरागधारनिहारसिवतपतपतहै ॥ ७ ॥ उँई १
 पंचप्रकारश्रीगुरुमहामुनिमोहाधकारदीपं ॥ वरुअगरआदसुं
 धषेकंसुगुरुपादपदमधरे ॥ दुषपुजकाटजलावस्वामीगुनअ
 धोचितमैधरे ॥ नौनौगतवैरागधारनिहारसिवतपतपतहै ॥ ७
 ध्रुयं ॥ फी ॥ नरनालपरवादांमवहुविधसुगुरुकमआगेधरो ॥
 मंगलमहाफलकरौस्वामीजोरकरविनतीकरौ ॥ नौनौगतवै
 रागधारनिहारसिवतपतपतहै ॥ ७ ॥ ए ॥ उँई ॥ फलं ॥ जला
 धअक्षतपूलनेवजलदीपधूपफलावली ॥ द्यानतसुगुरयद
 देहस्वामीहमहमेनवआवली ॥ १० ॥ उँई ॥ महामुनिश्रीगुरु
 प्रकारकेमोअर्थ ॥ अथआरतीजयमाला ॥ दोहा ॥ कनकका
 मनीविषेवसदीषेसवसेसारा ॥ त्यागीवैरागीमहासाधुसुगुनने
 कार ॥ मीनघाटिनवकोरसववेदौसीसनचाय ॥ गनतीअवार्
 सलोकहौअरतीगाय ॥ एकदयापालैसुनराजा रागदोषदे
 हरनपरं ॥ तीनौलोकगुगटसवदेधै ॥ चारौआराधनिनिकरे ॥ पं
 पंचमहावृतदुषधरधारे ॥ छहौदरवजानैसुहितं ॥ सातनेगव
 नीमनलावै ॥ पावैआवरिखउचितंनवौपदारथविधसौना
 वंधदसौचूरनसरनं ॥ पारैसंकरजनिमने ॥ उत्तमवारैवृतध
 रनं ॥ तीरेजेदकाठियाचूरे ॥ चौदैगुनथानकलधिये ॥ महाप्रमाद
 पंचदसनासै ॥ सोलहकषायसवैतधिये ॥ वंधादिकसत्रैसतर
 लषवारैजन्मनमरनमुनं ॥ एकसमेउ नईसपरीसैवीसपरूप
 निमैतिपुनंजावउदीकइकीसौजानै ॥ वार्सअनषत्यागकरं ॥
 अहिमंदिरतेईसौचदै ॥ इंद्रसुरगचौसचरं ॥ पच्चीसौजावननि
 तजावै ॥ छठसौअंगुपंगपढै ॥ सांताईसौविषयविनासैअव
 ईसौगुनसुवढै ॥ सीतसमैसरचौपटवासी ॥ श्रीधमगिरसिजो
 धरे ॥ वरषाचक्षतलैथिरवाढै ॥ आवकरमसिधवरे ॥ दोहा ॥ क
 होकहालैनेदमेंबुधयोरीगुननरा ॥ हेमराजसेव कहियेनगतनरे
 नरपूर ॥ ७ ॥ इतिश्रीमुनिराजश्रीगुरुपूजाआरतीजयमाला
 संपूर्णः ॥ सुलाकथ ॥ बकुसशकुसील ॥ अनिरघंधधसनात

॥अथ जिनवाणीपुजाअष्टक। दोहा॥ जनमजरा मृतञ्चैकरैहरेज
नेजफरीत नवसागरतेलेतिरेपूजनेनवक्षीता॥ ३॥ ॐ श्रीजिव
वाणीजिनअत्रावतरा० अत्रति० अत्रम०॥ त्रिनेत्रीछंद। श्री
रौदधिगंगाविमलतरंगासललअनंगासुषसंगा॥ नरकचनफ
रीधारनिकारीत्रिषनिवारीहितचंगा॥ तीर्थकरकीधनगण
धरनेसुणअंगारचेचुनगपानमई॥ सोजिनवरवांनीसवसुषदान
त्रिनुवनमांनीपूजनई॥ करपूरमंगायाचंदनआयाकेसरला
यारंगनरी॥ सारदपदवदौमनअनिनंदौपापनिकंदंदाहहर
तीर्थकरकीधनिगणधरनेसुणअंगारचेचुन गपानमई॥ ३॥ ॐ
द्वल॥ सुषदासकमोदंधारअमोदअतअनमोदचंदसमं वरु
नगतवटाईकीरतगाईहोतसहाईमातममं॥ तीर्थकरकी
धुनगणधरनेसुणअंगारचेचुनगपानमई॥ ४॥ अक्षतं॥
वरुफुलसुवासंविमलप्रकासंआणंदरासंलायधैरेमेकं
ममिदायौसीलवदायौसुषउपजायौदोषहरे॥ तीर्थकरकी
धुनिगणधरनेसुणअंगारचेचुनगपानमई॥ ५॥ एकवानवन
या॥ वरुघतल्यायासवविधजायामिष्टमहा॥ पुजंश्रुतगा
कधीतवढाकषुद्यानसाकहरफलहा॥ तीर्थकरकीधुनिग
णधरनेसुणअंगारचेचुसगपानमई॥ ६॥ ॐ श्रीनेवेद्यं। करदी
पकजोतंतम छैहोतंजोतनद्योतंतुहैवदै॥ तुमहोपरकस
कनरमविनासकहमघटजासकगपानवढै॥ तीर्थकरकी
धुनिगणधरनेसुणअंगारचेचुनगपानमई॥ ७॥ ॐ श्रीदीपं॥
सुनंगंधदसौकरपावकमैधरधूपमनोहरखेवतहो सवपर
पजलावैपुन्यकमावैदासकहावैसेवतहो॥ तीर्थकरकीध
निगणधरनेसुणअंगारचेचुनगपानमई॥ ८॥ धूपं॥ वादाम
हुवारीलौगसुपारीश्रीफलनारीलावतहै॥ मनव छित
दातामेठअसातातुमगुनमाताध्मावतहै॥ तीर्थकरकीधु
निगणधरनेसुणअंगारचेचुनगपानमई॥ ९॥ फलं। निनानि
सुषकारीमूडुगुनधारीउज्जलनारीमोलधैरे। सुनंगंधसमारी

वसननिहारा तु मतरधारणपानकरै। तीर्थकरकी कनगाणध
 र्ने सुणत्रंगारवेचुनापानमई ॥ १० ॥ जलचंदनत्रक्षतफूला
 चरोचतदीपधूपत्रतिफललावे। पूजाकोवानतजोतुमजा
 नतसो नरघानतसुषपावे। तीर्थकरकी कनगाणधरने सुण
 त्रंगारवेचुनापानमई ॥ ११ ॥ अर्घ्य ॥ इतिजिनवानी अष्टकसं
 पूर्ण ॥ अथ अरतिजयमालः शास्त्रीजीकी लिखते ॥ सोरव
 र्नेकार्थनिसार ॥ आदशांगवानी विमला ॥ नमो नगवत उरधार
 णपानकरै जडतारहे ॥ शंभुचौपरी ॥ पहला अचारंगवधानं ॥ प
 दत्रगरे सहस्रप्रधानं ॥ इजे सूत्रकृतं अनिलापं ॥ पदछतीस
 सहस्रगुरजापं ॥ २ ॥ तीजागना अंगसुजाना ॥ सहस्रवियालीष
 पदसरधानं ॥ चौथासमवायंगनिहारं ॥ वोसवसहस्रलषाक
 धारं ॥ ३ ॥ पंचमवाष्पाप्रगतदरसं ॥ दोयलाषत्रवाइससहस्रं
 छवागपात्रकथाविसतारं ॥ पंचलाषछपनहजारं ॥ ४ ॥ सात
 मउपासकाध्यायनंगं ॥ सत्तरसहस्रापारलषनेगं ॥ अष्टमत्र
 तकृतंदसईसं ॥ वाइससहस्रलाषतेईसं ॥ ५ ॥ नवमत्रनुस
 दससुविसालं ॥ लाषवानवैसदसचवालं ॥ दसमप्रसन्नव्याक
 रनविचारं ॥ लाषत्रानवैसोलहजारं ॥ ६ ॥ ग्योरमविपाकसूत्रा
 सूजापं ॥ एककोडचौरासीलाषं ॥ चारिकिरोरपंदरैलाषं दोह
 जारसवपदगुरसासं ॥ ७ ॥ आदशादिष्टवाटपननेदं ॥ इकसौत्रवकी
 रपदवेदं ॥ अरवसविलाषसहस्रछपनहै ॥ सहतपंचपदमिथ्या
 हनहै ॥ ८ ॥ इकसौवैकोरिवधाने ॥ लाषतियासीउपरजाने
 ठावनसहस्रपंचप्रधिकाने ॥ आदसत्रंगसर्वपदमाने ॥ ९ ॥
 क्यावनकोरत्रावहीलाषं ॥ सहस्रचौरासीछसैजापं ॥ सादर
 कीससिलोकवताएं ॥ एकएकपदकेएगाए ॥ १० ॥ दोहाजाव ?
 नीकेपानतैसकेलोकअलोकघानतजगजैवंतकोसदा
 देतदौधोका ॥ ११ ॥ इतिशास्त्रीजीकी अरतीजयमालसंपूर्ण
 ॥ अथपंचमेरुकी अरतीपूजालीखते ॥ गीताछंद ॥
 तीर्थकरैकेन्हौनजलतै नएतीरथसर्वदा ॥ तातै १२ छनदेत

चमरेपू०
४२

सुरगनपंचमेरनिकीसदा॥ देजअगईदीपमै॥ सवगनतमूल
विराजही॥ पूजोअसीजिनधामप्रतिमां होहिसुषडुषनाजही॥
॥ उँकींकीपंचमेरअस्सीजिनचेत्यालयजिनेइत्योअत्र
वतरा॥ अत्रतीष्ठः॥ अत्रमम०॥ चौपई॥ सीतलमिष्टसु
वासमिलाय॥ जलसोपूजोश्रीजिनरामहासुषदहै॥ देषेना
नाथमहासुषदहै॥ पांचोमेरअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमांज
कोकरोप्रनामा॥ रामहासुष है॥ उँकींकीपंचमेरअस्सीजिन
चेत्यालय॥ अर्घी॥ जलकेसरकरपूरमिलाय॥ चंदनसोपूजो॥
श्रीजिनरायामहासुषहैदेषेनाथमहासुषहै॥ पांचो॥ सवप्र
॥ उँकींकीपंचमे॥ चंदन॥ अमलअपंडसुगंधसुहाय॥ अक्षतपू
जोश्रीजिनरायामहासुषहैदेषेनाथपरमसुषहै॥ पांचो॥ स
व॥ उँकीं॥ अक्षतं॥ वरनअनेकरहेमहिकाया॥ शूलनि
सोपूजोश्रीजिनरायामहासुषहैदेषेनाथपरमसुषदहै॥ पां
चो॥ सवप्रति॥ उँकींकीपंच॥ पुष्प॥ मन्त्रंछितबहुतुखु
पाय॥ चरुसोपूजोश्रीजिनरायामहासुषहै॥ देषेनाथपरमसुष
है॥ पांचो॥ सव॥ उँकीं॥ नैवेद्यं॥ तमहरउज्जलजोत
जगाय॥ दीपकपूजोश्रीजिनरायामहासुषहै॥ उँकींकीपं
चेमेर॥ दीपः॥ एकअगरप्रमलअधिकाय॥ धूपसोपूजो
श्रीजिनरायामहासुषहै॥ देषेनाथपरमसुषहै॥ पांचोमेर०
सव॥ उँकींकीपंच॥ धूपं॥ सरससुवरनसुगंधसुनाय॥ फल
सोपूजोश्रीजिनरायामहासुषहै॥ देषेनाथपरमसुषहै॥ पां
चो॥ सव॥ उँकींकीपंचमेर॥ फलं॥ आवदरवमैअरघवना
य॥ द्यांनतपूजोश्रीजिनरायामहासुषहै॥ देषेनाथपरमसु
षहै॥ पांचोमेरअस्सीजिनधाम॥ सवप्रतिमाजीसोकोरौप्र
णाममहासुषहै॥ देषेनाथपरमसुषहै॥ उँकींकीपंचमेरअ
स्सीजिनचेत्यालेजिनेइत्योः॥ अर्घी॥ जयमला॥ सोखा
अथमसुदरसनसामा॥ विजलअचलमंदरकहा॥ विह्वलमाली
नामापंचमेरजगमैगप्रगठा॥ छुदा॥ चौपईप्रथमसुदरसन

मनमेरुविराजौ॥नइसालवनरूपरवाजौ॥चैत्यालेआरौसुषकारो
 मनवचतनवंदनाहमारी॥२२॥कपरपांचसतकरिसोहै॥नंदन
 वनदेषतमनमोहै॥चैत्यालेआरुसुषकारी॥मनवचतनवंदना
 हमारी॥२३॥साढेवासविसहसनुचाई॥वनसौमनससौनैअधि
 कार्शचित्पालेआरुसुषकारीमनवचतनवंदनाहमारी॥२४॥
 कुंचाजोजनसहसचुतीसं॥पंडुकवनसौनैगिरसीसं॥चैत्प
 लेआरुसुषकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२५॥आरौमेरुस
 मांनवघाने॥अपरिनइसालचडुजाने॥चैत्यालेआरौसुषक
 री॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२६॥कुंचेपंचसतकपरभाषे॥वा
 रोकुंचदक्षवनअनिलाषे॥चित्पालेआरौसुषकारी॥मनवचत
 नवंदनाहमारी॥२७॥साढेपचपनसहसनुतंग॥वनसौमनस
 चारवडुरंग॥चैत्यालेआरौसुषकारी॥मनवचतनवंदनाहम
 री॥कुंचेवाईसहसवताणं॥पंडुकचारौवनसुजगाणं॥चित्पा
 लेसौलेकषकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२८॥सुरनरचा
 रनवंदनावै॥सोसोनाहमकिहसुषपावै॥चैत्यालेआरौसु
 षकारी॥मनवचतनवंदनाहमारी॥२९॥दोहा॥पंचमेरकीअ
 रतीपदैसुनैजोकोश॥घानतफलपावैपुष्पु॥नुरतमहासुषहे
 पा॥नैकीपंचमेरसंबंधीपूजाजयमालाअर्थ॥ः॥ः॥सुःसुः॥
 ॥अथअठाईकीपूजाजयमाललीप्रते॥अडिहना॥सर्व
 अठाईरवनमैवडोपरवहे॥नदीसुरखंडजाइहिलेपवडुदरवहे॥हमैस
 कतिसोनाहिइहांकरियापना॥पूजौजिनग्रहप्रतिमाहैहित
 आपना॥पानैकीस्थापनाअनछै॥

कंचनमनमैन्याग॥तीरथनीरनरातिकुधारदर्शनिरवारजर्मन
 मरणभिरा॥नदीस्वरश्रीजिनधाम॥वावनपूजकरौ॥वसुदिन
 प्रतिमाअनिराम॥आनेदजावधरौ॥नैकी॥जले॥१॥

दीश्व पूरे
५२

भवतहरसीतलवाचसोचंदननांही प्रभुयहगुनकीजेसांचअपे
तुमवांही॥नंदीसुरश्रीजिनधामवावनपूजकरो॥वसुदिनप्रतिमा
अनिराम॥३॥उंकीनंदीसुरदीपे॥चंदनंउत्तमअहितजिन
राजपुंजधरैसोहै॥सबजीतेअछसमाजा॥तुमसमअरुकोहै॥नं
दीसुरश्रीजिनधामवावनपूजकरो॥वसुदिनप्रतिमाअनिराम॥
आनदजावधरो॥^{अक्षत}॥तुमकामविनासकदेवधाऊफूलनिसौ ल
कुसीललछमीएवबूढोसुलनिसै॥नंदीस्वरश्रीजिनधामवावन
पूजकरो॥वसुदिनप्रतिमाअनिराम॥आनदजावधरो॥५॥उं
कीनंदी॥शुद्धतनेवजइंदीवलकारसोतुमनेचूरा॥चरुतुमदिग
सोहैसोरअचरजहेपूरा॥नंदीसुरश्रीजिनधामवावनपूजक
रो॥वसुदिनप्रतिमाअनिराम॥आनदजावधरो॥^{नैय}॥दीपककीजे
तिप्रकासतुमतनमाहिलसै॥टूठैकरमतिकीरासभानकीनीद
रसै॥नंदीसुरश्रीजिनधामवावनपूजकरो॥वसुदिनप्रतिमाअ
निराम॥आनदजावधरो॥७॥दीपेंद्यं॥कृष्णागुरुधुपसुवास
दिसदिसतारवरे॥अतिहरषजावपरकासमानोनृत्यकरै॥नद
सुरश्रीजिनधामवावनपूजकरो॥वसुदिनप्रतिमाअनिराम॥
आनदजावधरो॥८॥उंकी॥कैपं॥वकु~~वि~~विद्यफललेति
कुकाल॥आनदराचतहेतुमसबफलदेकुदयालातोकुजाचत
है॥नंदीसुरश्रीजिनधामवावनपूजकरो॥वसुदिनप्रतिमाअ
निराम॥आनदजावधरो॥उंकीनंदी॥फूलं यहअरघकियोनि
जहेत॥तुमकोअरपतहै॥द्यानतकीनौजिनहेति॥रूपसमरप
तहै॥नंदीस्वर^{श्री}जिनधामवावनपूजकरो॥वसुदिनप्रतिमाअ
निराम॥आनदजावधरो॥१०॥उंकीनंदीस्वरदीपे॥^दकुंघं॥
दोहकातकफागुनसाठके॥अंतआठदिनमाहि॥नंदीश्वरस्वजा
तहै॥हमपूजेइहवाहि॥११॥छंद॥एकसोतेसबकोडिजेजन
महा॥लाषचौरासीएकदिसमैलहा॥आठमोदीपनंदीश्वर
मास्वरं॥नौनवावनप्रतिमानमौसुषकरं॥१२॥आरदिसमार
अंजवगिरंराजही॥सहस्रचौरासीएकइकछाजही॥दोलस

मंगलकपरतलैसुंदरं॥ जौनवावन्नप्रतमानमौसुषकरं॥ १३॥
एकचारदिसचारसुताववरी॥ एकइकलाप्रजोजनत्रमलजल
नरी॥ चडुदिसचारवनलाप्रजोजनवरं॥ १३॥ जौनवावन्नप्रतमा
नमौसुषकरं॥ १४॥ सोलवापीतिमधसोलगिरदधिमुषसहसद
समहाजोजनलघतहीमुषावावरीकौतदौमाहिदोरतकरं॥ जौन
वावनप्रतिमानमौसुषकरं॥ १५॥ सैलवतीसइकसहसजोजनक
हे॥ चारसोलैमिलेपरववावनलहे॥ एकइकसीमपरएकजिन
मंदिरं॥ जौनवावन्नप्रतमानमौसुषकरं॥ १६॥ विवन्नएकसौर
तनमैसोहं॥ देवदेवीसरवनैनमनमोहही॥ पांचसैधनुषतन
पदमआसनपरं॥ जौनवावन्नप्रतिमानमौसुषकरं॥ १७॥ लाल
नघमुखनयनस्यामत्ररुसेतहे॥ स्यामरंगजौहसिरकेसु
विदेतहे॥ वचनवौलतमनौहसतकालपुहं॥ जौनवावन्नप्र
तिमांसुखकरै॥ १८॥ कोदसमनांनउति तेजछिपजालहेमहा
विरागपरनामनहरातहे॥ चैननहिकहेलघहोतसम्पकथ
रं॥ जौनवावन्नप्रतिमानमौसुषकरं॥ १९॥ घुलाखोरवा॥ न
दीखरनिजधांमप्रतमामहिमाकौकहे॥ ध्यानतलीनौनांम॥
यहीनातिसवसुषकरै॥ २०॥ इतिमहाअर्घं॥ इतिपूजापंचमे
हजीवानदीश्वरजीकीध्यानतरायजीकृत॥ अथसोलहका
रणपूजातिथ्यते॥ सोलैकारनभावतीर्थिकभा॥ हरषेइंड
अपारमेरपैलगण॥ पूजाकरतिजधां॥ नलणौवडुववसोहम
हूषोडसभावननवैनावसौ॥ २१॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगु
रुहोयहटेरमै॥ चौ० उ० श्रीदरसनविशुधीषोडसकारणेभौत्र
त्रावतरा० वत० आत्रतिष्ठ० अत्रममसन्निहितौत्रचछि०॥
चौपर्शकंचनजारीनिरमलनीर॥ पूजौजिनवरगुणांनीर॥ प
रमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ दरसविशुधिनावनाजांपस
लैतीर्थेकरपददाया॥ परमगुरुहो॥ जैजैनाथपरमगुरुहो॥ उ०
श्रीदर्शनविशुधिषोडसकारणेभौ॥ २१॥ जलं॥ चंदनकेसर
करपूरमिलाया॥ पूजौश्रीजिनवरकेपापपरमगुरुहो॥ जैजैना

दर्श विशुद्धिनाचनां जाय। सौले तीर्थं ० ॥ ३ ॥ ३ ॥ शचंदनं ॥ तंडुल
 अक्षतसुगंधं ॥ पूजं जिनवरतिङ्गजगन्मूपापरमगुरुहो ॥ द
 सविशुद्धनाचनां जाय ॥ सौले तीर्थं कणे ० ३ ॥ ३ ॥ अक्षतं
 कुलसुगंधं मंफुपुंजारा ॥ पूजौ जिनवरजा अधारा ॥ परमपदहो द
 रसविशुद्धनाचनां जाय ॥ सौले ती ० ॥ ५ ॥ ३ ॥ पुष्पं ॥ सद्नेवजव
 कविधपकवांन ॥ पूजौ श्रीजिनकेवलधाम ॥ परमगुरुहो ॥ दरसविशु
 द्धनाचनां जाय ॥ ७ ॥ सौ ० ३ ॥ ३ ॥ षोडसकारणे ॥ नैवेद्यं ॥ दीपकजोति
 तिमरुच्यकार ॥ पूजौ श्रीजिनकेवलधार ॥ परमगुरुहो ॥ दरसविशु
 द्धनाचनां जाय ॥ सौले ० ॥ माहसुषुहो जैनाथ परमगुरुहो ॥ ७ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 ॥ दीपं ॥ आरकपूरगंधसवषेय ॥ श्रीजिनवरत्रागै महकेय पर
 मगुरुहो ॥ दरसविशुद्धनाचनां जाय ॥ सौ ० ॥ ३ ॥ ३ ॥ धूपं ॥ श्रीफल
 दिवकुतफुलसारा ॥ पूजौ जिनवंछितदातारा ॥ परमसुषुहो ॥ दरसवि
 विशुद्धनाचनां जाय ॥ १ ॥ ३ ॥ ३ ॥ श्रीफलं ॥ जलफलत्रागौ दरवच
 ठाय ॥ द्वां नतवर्तकरो मनलाय ॥ परमगुरुहो ॥ दरसविशुद्धिनाच
 नाचनां जाय ॥ १ ॥ ३ ॥ ३ ॥ षोड ॥ अर्थ ॥

अथ आरती जयमल्लिष
 ति ॥ षोडसकारनगुनकरै ॥ हरेचतुरगतवास ॥ पापपुंनसवनास
 को ॥ ग्यानज्ञानपरकास ॥ १ ॥ चोपई ॥ दरसविशुद्धरैजोकोय ॥ ताकौ आ
 वागमननहो शविनैमहाधारैजोप्रांनी ॥ सिववनताकीसषीवघान
 २ ॥ सीलसदादिदजोनरपालै ॥ सौ औरनकी आपदहालै ॥ ग्यान
 न्यासकरै मनमांही ॥ ताकै मोहमहातमंतंही ॥ ३ ॥ जोसंवेगनाववेस
 तारे ॥ सुरगमुकतेपद आपनिहारे ॥ दानदेयमनदुर्षविसेधै ॥ इहजो
 जनपरनौ सुषुदेधै ॥ ४ ॥ जोतपतपैषपै अनिलाषा ॥ चूरैकरमसिषर
 गुरनाषासाधसमाधसदा मनलावै ॥ तिङ्गजानोगनोग सिवजवै ॥ पति
 सदिनवैयावृतकरइया ॥ सोतिहचैजोनीरतरइया ॥ जोअरिहंतनगत
 मनअनै ॥ सोजनविषेकषायनजातै ॥ ६ ॥ जोआचारजनगतकरैहै
 सोतिरमलआचारधरैहै ॥ वरुमुतवंतनगतजोकरइ ॥ सोतरसंपूरन
 श्रुतधरई ॥ प्रवचनगतकरैजोपाता ॥ लहैग्यानपरमांतमदाता ॥ ७ ॥
 दआवपककलजोसाधै ॥ सोरतनत्रैआरथै ॥ धरमअजावकरैजोग

नी। तिनसिवमारगरीतपिछांती। व छलअंगसदा जोधावे।
सोतीर्थकरपदवीपावे। ए॥ दोहा॥ ॥ ईसोलेनावतांसहतधरेरुत
जोईदेवइंद्रविचंद्रपति। अंतसिवपदहोयए॥ इतिश्रीसौलेक
रणजीकीपूजासंर्णः॥ अथदशलक्षणाजीकीपूजा
लिखते। अडिला। उत्तमप्रथमामारदवत्राजवजाचे। सतिसौ
चसंजमतपत्यागउपावे। आकेचन्नबुद्धचरजधरमदसमारहे। व
चक्रातिउषतेकाटमुकतकरतारहे। ॥ ॐ क्लीं ॥ श्रीउत्तमहिमादि
दशलक्षणीकपरमधरमायत्रावत्रावतरसंवौषट्त्राट्टानतं॥
अत्रतिष्ठति॥ अत्रमम॥ सोरगा॥ हिमाचलकीधारमुनिचित
समसीतलसुरजि। जोआतापनिवार॥ दसलक्षनपूजोसदा। ज
कीदशल॥ जला॥ चंदनकेसरफाराहो॥ ~~यसु~~
वासदसौदिसा। जोआतापनिवार॥ दसलक्षनपूजोसदा॥ २
॥ ॐ क्लीं॥ चंदनः॥ अमलअषंडतसारा॥ तंडुलचंदसमानसुम
नवआतापनिवार॥ दशलक्षनपूजोसदा॥ ३॥ ॐ क्लीं॥ अक्षतं
फूलअनेकपरकार॥ महिकैकरधलोकलौ। नवआताप
निवारदसलक्षनपूजोसदा॥ ४॥ ॐ क्लीं श्रीपुष्पं। नैवजविव
घनिहाश॥ उत्तमषट्ससंजुगता॥ नवआतापनिवार॥ द
सलक्षनपूजोसदा॥ ॐ क्लीं नैवेद्यं। आरधूपविसतार। फैलै
सरवसुगंधता॥ नवआतापनिवार॥ दशलक्षनपूजोसदा
॥ ॐ क्लीं॥ धूपं॥ फलकीजातअपार॥ घाननैनमनमोहने
नवआतापनिवार॥ दसलक्षनपूजोसदा॥ ६॥ ॐ क्लीं। आवोदरवसमार
घानतअधिकउठाह॥ नवआतापनिवार॥ दसलक्षनपूजोसदा
॥ ॐ क्लीं दसलक्षणा॥ अर्थ॥ सोरगा॥ यीमैउष्ट्रअनेका। बांधमार
वक्रविधकरै। धरियेहिमाविवेक। कोपनकीजेपीतमां॥ १४॥ छे
परी। गीतामलारुंदा॥ उत्तमहिमागहोरेनाई॥ इहजलजसपर
मौसुषदार्श। गालीसुतमनषेदतआतौं॥ गुनकौंश्रीगुनकहेअ
यानौं॥ कहिहेअयानौवसुचिनै। बांधमारववक्रतकरै। धरतौं
निकौरैवजोनतहांधै। तैकरमपूरवकियेघोट। सहेकौन
वधरा॥ अतिकोधअपाबुजावप्रांनी सोमजललेसीपरा॥ क्षमा

श्रीसौलेक
रणीकीपूजा
संर्णः
अथदश
लक्षणा
जीकीपूजा
लिखते
अडिला
उत्तमप्र
थमामार
दवत्राज
वजाचे
सतिसौ
चसंजम
तपत्याग
उपावे
आकेच
न्नबुद्ध
चरजधर
मदसमा
रहे
व
चक्राति
उषतेका
टमुकत
करतार
हे
ॐ क्लीं
श्रीउत्तम
हिमादि
दशलक्ष
णीकपर
मधरमा
यत्रावत्रा
वतरसं
वौषट्त्रा
ट्टानतं
अत्रतिष्ठ
ति
अत्रमम
सोरगा
हिमाचल
कीधार
मुनिचित
समसीत
लसुरजि
जोआता
पनिवार
दसलक्ष
नपूजोस
दा
कीदशल
जला
चंदनके
सरफारा
हो
यसु
वासदस
ौदिसा
जोआता
पनिवार
दसलक्ष
नपूजोस
दा
२
ॐ क्लीं
चंदनः
अमलअ
षंडतसा
रा
तंडुलचं
दसमान
सुम
नवआता
पनिवार
दशलक्ष
नपूजोस
दा
३
ॐ क्लीं
अक्षतं
फूलअने
कपरकार
महिकैकर
धलोकलौ
नवआता
प
निवारद
सलक्षन
पूजोसदा
४
ॐ क्लीं
श्रीपुष्पं
नैवजवि
व
घनिहाश
उत्तमषट्
ससंजुग
ता
नवआता
पनिवार
द
सलक्षन
पूजोसदा
६
ॐ क्लीं
नैवेद्यं
आरधूप
विसतार
फैलै
सरवसु
गंधता
नवआता
पनिवार
दशलक्ष
नपूजोस
दा
७
ॐ क्लीं
धूपं
फलकी
जातअपार
घाननैन
मनमोहने
नवआता
पनिवार
दसलक्ष
नपूजोस
दा
८
ॐ क्लीं
आवोदर
वसमार
घानतअ
धिकउठा
ह
नवआता
पनिवार
दसलक्ष
नपूजोस
दा
९
ॐ क्लीं
दसलक्ष
णा
अर्थ
सोरगा
यीमैउष्ट्र
अनेका
बांधमार
वक्रविध
करै
धरियेहि
माविवेक
कोपनकी
जेपीतमां
१४
छे
परी
गीतामल
ारुंदा
उत्तमहि
मागहोरे
नाई
इहजलज
सपर
मौसुषदार्श
गालीसु
तमनषेद
तआतौं
गुनकौंश्री
गुनकहे
अ
यानौं
कहिहेअ
यानौवसु
चिनै
बांधमार
ववक्रत
करै
धरतौं
निकौरै
वजोनत
हांधै
तैकरम
पूरवकिये
घोट
सहेकौन
वधरा
अतिको
धअपाबु
जावप्रांनी
सोमजल
लेसीपरा
क्षमा

न
द्वारा पूजा
ध

मानमहाविषरूप। करैनीचगतजातमै॥ कोमलमुधाअनूप
मुषपावैप्राणीसदा॥ १॥ उत्तममार्दवगुनमनमाना॥ मानकरतक
कौनठिकाना॥ वस्योतिगोदिमाहितैत्राया॥ दमरीरुकनना
गविकाया॥ २॥ रुकनविकायाकरमवसलैदेवातिराकेंडीम
या॥ उत्तममूवाचंडालरूवा॥ नूपकीमौमैगाया॥ जीवधुजोव
नधनुगुमानकहाकरैजलबुदबुदाकरिविनयवहुगुनवमे
जनकीपातकापावैउटा॥ ३॥ मारदवा॥ सोरवा॥ कपटनकी॥
जैकोया॥ चोरंतकेपुरनांवसो॥ सरलमुनावीहोया॥ लोकेघरव
हुसंपदा॥ ४॥ उत्तमआहुं वरीतवषांनी॥ रंचकदगावहुतउष
दांनी॥ मतमैहोसोचवचनउचरिये॥ वचनहोयसोतनसौक
रिये॥ करियेसरलतिहुंजोगअपनेदेपिनिरमलआरसीमुष
करैजैसालधैतैसा॥ कपटधीतअंगारसी॥ नहिलहैलडि
मीअधकलखकरकरमबंधविसेषता॥ जैत्यागइधविलाव
यीवैआपदानहिदेषता॥ ५॥ आर्यव॥ मोरंग कवतवचनम
तबोलपरनिघाअरुहुंवतज॥ सांचजवाहरषोला॥ सतवा
दीजगमैमुषी॥ उत्तमसत्तविरतपालजै॥ परविसवासघात
नहीकीजे॥ सांचेफूवेमानकदेषो॥ आपनपूतस्वंपासन
पेषो॥ पेषोतिहायतसुस्वसांचेकौदरवसवदीजिये॥ मुनि
राजप्रावककीप्रतिष्ठा॥ सांचगुनलक्षलीजिये॥ कुंचेसिध
सनवैवेवसनृषधरमकाअपतनया॥ वचंहुंवेतीनरक
पहुंचै॥ सुरगमैनारदगया॥ सतसोरवा॥ धरहिरहैसंतोषकरै
तपस्पादेहसै॥ सोचसदानिरदोष॥ धरमवमासंसारमै॥ ५॥ उ
त्तमसौचसरवजगजातां॥ लोनपापकावापवघातां॥ आस
पासमाहाडुषदानी॥ दुषपावैसंतोषीप्रांती॥ प्रांतीसंदासु
चलीलजमतयापानध्यांनप्रभावतै॥ नितसंगजमुनस
मुइन्हाएअसुचदोषमुजावतै॥ कपरअमलमदनस्योनी
तरकौनविधघटमुचकहै॥ वहुदेहमैलीसुगुनथैलीसौच
गुनसाधुलहै॥ ५॥ सोच॥ सोच॥ सकायबहोप्रतिपालपंचे
डीमनवसकरै संजमरतनसंजाल विषेचैरवहुफिरतै

उत्तमसंजमगाऊमतमेरे॥ जो जो के जाजे अघतेरे॥ सुरगनरकप
 सुगतिमेंताही॥ आलसहरकरनरसुषवाही॥ वाही प्रथी जित
 आगपरतस्त्रसककहनांधरौ॥ सपरसनरसनांघाणनैना
 कनमनसवसकरौ॥ जिसवि ननही जिनराजसी फेत्तूरुलो
 जगकीचमै॥ शुकुघरीमतिविसरौकरौ॥ नितआवजम
 सुषवीचमै॥ ७॥ संजमसोखतपचाहै सुररायकरमसिष
 कौवजसमाना॥ वस्योअनादिनिगोदिमजाराअमि वि
 कलत्रैययसुतनधारा॥ ए॥ धारामनुषतनमहांडहनन
 सुकुलआवनिरोगता॥ श्रीजैनवांनीतत्वपानीनाईविषेय
 योगता॥ अलिमहाडहननत्पागविषेकषायजेतपआदरे
 नरजोअनोपमकनकघरपरमनमईकलसाधरौ॥ १७॥ ताए॥
 सोरवा॥ दांनमारपरकारचारसंघकैदीजिये॥ धनविजल
 उनहारवरजोलाहीलिजिये॥ १८॥ उत्तमत्पागकहैजगसारा॥
 औषदसास्त्रअनैअहरा॥ निहचैरागदोषतिरवारे॥ गपाता
 दोनोदानसंनारौ॥ १९॥ दोनोसंनारैरूपजलसमदरवघसै
 परनया॥ निजहाथदीजैसाथलीजैषायषोयाचहगया॥ धन
 साधनास्त्रअनैदिवैयात्पागारागविरोधकौ॥ विनदानअ
 वकसाधदोनोलहैनांहीबोधकौ॥ २०॥ तागपरगृहचौबी
 मनेद॥ त्यागकरैमुनिराजजी॥ असनांजावउछेदघटती
 जांनघटाइयै॥ २१॥ उत्तमआकिंचनगुनजांनौ॥ परगृहचिं
 ताडुषहीमानौ॥ फांसतनकसीतनमैसालै॥ चाहलंगोटी
 कीडुषजालै॥ जालैनसमतासुषकजीनरविनामुनमुजाय
 रै॥ धननगनपरतननगनवाहेसुरअसुरयायनिपरै॥ धरमां
 हितिसनाजोघटावैरुचनहीसंसारसौ॥ बडुधनवुराहूम
 लाकहिणलीनपरउपगारसौ॥ आकिंचनसोरवा॥ सीलवाहि
 नौराष॥ ब्रह्मजावअंतरलषौ॥ करिदोनौअजिलाषाकरौस
 फलनरनौसदा॥ २५॥ उत्तमब्रह्मचर्यसवमानै॥ माताचहनसु
 तापहचानै॥ सहेवानसरषांबडुसुरै॥ टिकेननेवांनलषकरै
 करैत्रियाकेअसुवतनमैकामरोगीरतकरै॥ बडुमृतकसफेमसां

सानमांहीकाकहीवै॥ चैनैसंसारमें विषवेलनारीतजगा
 जोगीस्वरा॥ द्यांतधरमदसपैदिचटकेसिवमहलमेंपा
 धरा॥ १६॥ ब्रह्मचरजा॥ दोहा॥ दसलच्छनचंदौसदा मनवंछि
 तपददाय॥ करुआरती नारती हामंपरहोयसहाय॥ १७॥
 छंदबौपरई॥ उत्तमहमाजहंमनहोइ॥ अंतरवाहरशत्रुने
 शत्रुसममाईवविनैपकासै॥ नातानेदपानससवनासै॥
 उत्तमहमाजहामनहोइ॥ अंतरवाहरशत्रुनकोइ॥ उत्तमम
 ईवविनैपकासै॥ नातानेदपानसवनासै॥ उत्तमअर्जवक
 पंठमिटावै॥ दुर्गातित्यागसुगतिउपजावै॥ उत्तमसत्यववन
 मुषवोलै॥ सोशानीसंसारनहोलै॥ १७॥ उत्तमसौचलोनपरहं॥
 रीसंतोषीगुनरतनजंडारी॥ उत्तमसंयमपालैपाता॥ नरजोस
 फलकरैलहि साता॥ १७॥ उत्तमतपनिरवंचिकपालै॥ सोनरर
 रमसकतकौढालै॥ उत्तमत्यागकरैजोकोइ॥ जोगप्रिसुरसे
 वसुषहोइ॥ उत्तमआकिचिनव्रतधारे॥ परमसमाधदसावि
 सतारे॥ उत्तमब्रह्मचर्यमनलावै॥ नरसुरसहितमुकतिपदपा
 वै॥ २०॥ दोहा॥ घृता॥ करैकर्मकीनिर्गनौपिजराविनास॥ अज
 रअमरपदकौलहे॥ द्यांतसुषकीरास॥ २१॥ इतिश्रीदशालक्ष
 णाजीकीपूजाजयमालआरतीसंपूर्णा॥ ॥ ॥ ॥ श्री॥ ॥ ॥ उतमः ॥ ॥
 ग्रधरतत्रैपूजाधरतीजयमाललीष्यते॥ चङ्गातिफनवि

नमन॥ उषपावकजलंधारसिवसुषसुधासरोवरीसम
 ॥ १॥ सोरवा॥ हीरोदधिउ नहार॥ उज्जलजल
 ॥ ता॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्पकरतत्रैनजो॥ २॥ उतमः ॥
 ॥ जलं॥ चंदनकेसरधारपरमलमहसुरंग
 ॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्पकरतत्रैनजो॥ ३॥ उतमः ॥
 ॥ तंडुलअमलचितारा॥ वासमलीसुषदासके॥ जनमरोगनि
 गनिरवार॥ सम्पकरतत्रैनजो॥ ४॥ उतमः ॥ अह्वतं॥ महिकैपू
 लअपाया॥ अलिगजेज्यौपुतकरै॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्प
 करतत्रैनजो॥ ५॥ उतमः ॥ पुष्पा॥ लामूवडुविसतार॥ चीकै
 हसुगंधता॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्पकरतत्रैनजो

निवेद्यं॥ दीपरतनमें सारजोत प्रकारे जगतमै॥ जनमरोगनि
 रवार॥ सम्पकरतनत्रै जजौ॥ ७६॥ धूप सुवासविद्यार॥ चंद
 नत्रागरकपूरक॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्पकरतनत्रै
 जजौ॥ ७७॥ धूप॥ फलसोना अधिकार॥ लौगचु हारे जायफ
 ल॥ जनमरोगनिरवार॥ सम्पकरतनत्रै जजौ॥ ७८॥ फल
 आवद्रवतिरधार॥ उत्तमसौ उत्तमलिया॥ जनमरोगनि
 रवार॥ सम्पकरतनत्रै जजौ॥ ७९॥ श्रीसम्पकदरसन अर्थ
 निर्यामीतेस्वा॥ अर्थ॥ सम्पकदर्शनपात॥ वृत्तसिवम
 गतीनोमई॥ पारुतारनजाना॥ द्यांनतपूजौ व्रतसह
 ति॥ १०॥ अथदर्शनपूजा॥ दोहा॥ सम्पकदरसप्रधान
 ॥ ११॥ श्लोक॥ नीरसुगंधअपारा॥ त्रिषाहरेमलचैकरे॥
 सम्पकदर्शनसार॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ १२॥ जल॥ जल
 केनासरघनसार॥ तापहरेसीतलकरे॥ सम्पकदरसनधा
 रा॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ चंदनं॥ अष्टतत्ररूपनिहारदा
 लदनासैसुषुप्तरे॥ सम्पकदर्शनसार॥ आवत्रंगपूजौस
 दा॥ १५॥ अक्षतं॥ पुहपसुवासउदार॥ वेदहरेमनसुषुक्त
 सम्पकदरसनसार॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ १६॥ पुष्पनेव
 जविवधप्रकार॥ कृधाहरेधिरताकरे सम्पकदरसनसा
 र॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ १७॥ नैवेद्यं॥ दीपजोतितमहार॥ घटपटपरकासैम
 दा॥ सम्पकदरशनसार॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ दीपंधूप
 ध्यांणसुषुकार॥ रोगविघ्नजडताहरे॥ सम्पकदरसनसा
 र॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ १८॥ धूप॥ श्रीफलत्रादिविद्यार॥
 निहचैसुरसिवफलकरे॥ सम्पकदरसनसार॥ आवत्रं
 गपूजौसदा॥ फलं॥ जलगंधाक्षतचार॥ दीपधूपफलशु
 लचरु॥ सम्पकदरसनसार॥ आवत्रंगपूजौसदा॥ २१॥
 दोहा॥ आपआपनिहचैलघै॥ ततपीतयोहार॥ रहतदो
 षपचीसहे॥ सहतिअष्टगुनसार॥ २२॥ जकरीचौपईमि

रतनत्रयपृ
ध६

लागीताछंद। सम्पकदर्शनरतनगहीजे॥ जिनवचमैसंदेह
नकीजे॥ इहजोविनोचाहइषदांती॥ परनोन्नोचहैमति
प्रांती॥ प्रांतीगिलानतकरिअसुमलबधरमगुरप्रनुकरह
रषिये। परदोषटकियेधरमनिगतेकौसुधिरकरहरषिये
चरुसंघकोवाञ्छुलुकीजे। धरमकीपरजावतां। गुनत्रा
वसौगुनत्रावलहिके॥ इहांफेरनत्रावतां॥ २३॥ अथज्ञा
नपूजादेहा॥ पंचनेदजाकेप्रगतोपप्रकासनेजांन। मोह
तपतहरचंद्रमांसोईसम्पकज्ञान॥ २४॥ स्थापनाः॥ सोरग
नीरसुगंधअपारत्रिधाहरेमलछैकरै॥ सम्पकापानविवा
रा। आवनेदपूजोसदा॥ २५॥ जलं॥ जलकेसरघनसारंता
पहरसीतलकरै॥ सम्पकज्ञानविचार। आवनेदपूजोस
दा। चंदन। अक्षतअनूपतिहार। दालदनासैसुषनेरै।
सम्पकज्ञानविचार। आवनेदपूजोसदा॥ २७॥ अक्षतं॥
पुहपसुवासगदार॥ वेदहरेमनसुचकरै॥ सम्पकज्ञानवि
चार। आवनेदपूजोसदा॥ पुष्पं॥ नेवजविविधप्रकारे। बुध
हरेथिरताकरै॥ सम्पकज्ञानविचार। आवनेदपूजोसदा
२८॥ नेवेद्यं। दीपजोततमहार। घटपठपरकासैमहा। सम्प
कज्ञानप्रकास। आवनेदपूजोसदा। २९॥ दीपं। धूपध्यान।
सुषकार। रोगविघ्नजफताहै॥ सम्पकज्ञानविचार।
आवनेदपूजोसदा॥ ३०॥ श्रीधूपं। श्रीफलआदविचार
निहचेसुरसिवफलकरै। सम्पकगणानविचार। आवनेदपूजे
सदा। फलं। जलगांधाक्षतवार। दीपधूपफलफूलघरासम्प
कगणानविचार। आवनेदपूजोसदा। ३१॥ अर्थी। दोहा। आप
आपजानैनिपतग्रयपटनवोहार। ससैविभ्रममोहविभ्र
अहंअंगुनकार। ३२॥ जकरी॥ सम्पकापानरतनमतनो।
या। आगमतीजानैनवताया। अछरसुहअरथपहचनो
अछरअरथनैसंगजानो। जानोसुकालपटनिजितागमन
मगुरुनिधिपाईये। तपरीतगहिवज्मानदेकैविनैगुरुचित

लायये॥ एत्रावनेदकरमउछेदकपोनदरपनदेपनां॥ इस
 ग्पांनहीसोनरतसीकात्रौरसवपठपेपनां॥ ३५॥ अथवारत
 पूजा॥ दोहा॥ विषैरोगत्रौषदमहाद्वकषायजलधारती
 र्थकरजाकौंधरे॥ सम्पकचारतसार॥ ३६॥ सोरवा॥ नीरसुगंध
 अपार॥ त्रिषाहैमलछेकरे॥ सम्पकचारतधार॥ तैरेविध
 पूजोसदा॥ ३७॥ जलं॥ जलकेसारधूनसांरा॥ सापहैसीतल
 करे॥ सम्पचारितधार॥ तैरेविधिपूजोसदा॥ ३८॥ चंदनेअठ
 तअनूपनिहार॥ दालदनासैमुषकरे॥ सम्पकचारतधार॥ तैरे
 विधपूजोसदा॥ ३९॥ पुहपसुवासनदार॥ घेदहैमनशुचकरे
 सम्पकचारतधार॥ तैरेविधपूजोसदा॥ ४०॥ सुष्यं॥ लेवजविव
 धप्रकार॥ सुधाहैधिरताहै॥ सम्पकचारितधार॥ तैरे
 धपूजोसदा॥ ४१॥ नैवेद्यं॥ दीपजोततमहार॥ घटपठपरक
 सेमहा॥ सम्पकचारितधार॥ तैरेविधपूजोसदा॥ ४२॥ दीपं
 धूपघ्रातमुषकार॥ रोगविघनजडताहै॥ सम्पकचारित
 धारि॥ तैरेविधपूजोसदा॥ ४३॥ जधूपं॥ जलगंधाहतवप
 दीपधूपफलफलचक्र॥ सम्पकचारितधार॥ तैरेविधपूजोस
 दा॥ ४४॥ श्रीफलआदिविधार॥ निहचैसुसिवफलकरे॥
 सम्पकचारितधार॥ तैरेविधपूजोसदा॥ अर्थ॥ दोहा॥ ॥ ॥
 आप्त्रापथिरनियतनै॥ तपसंजमव्योहार॥ सुपरदपारो॥
 नै॥ लियैतैरेविद्युषहार॥ ४५॥ जकरी॥ सम्पकचारिततन
 संजालौ॥ पाचपापतजकैबुतपालौ॥ पंचसमतित्रैगुपत्तग
 हीजे॥ तरनौसफलकरेतनछीजे॥ छीजेसदातनकौजत
 नयहाकसंयमपालियौ॥ बडुरुल्योनरकनिमोदमांहिक
 षायविषयनिटालियै॥ सुनकरमजोगासुघाटआपापार
 होदिनजातहै॥ घानतधरमकीताववैवौसिवपुहीकुसला
 तहै॥ ४६॥ आरतीदोहा॥ सम्पकदर्शनदृताइनविनमुकति॥
 तहोय॥ अंधपंगअआरसी॥ जुदेजलैद्वलोय॥ ४७॥ छेदा
 चोपई॥ सापैग्यानसुधिरवनआवै॥ ताकौकरमबंधकटजा

जोसम्पकरतनत्रैध्यावै॥

रतन
४३

तासौसिखियप्रीतवटावै॥ जोसम्पकरसमतत्रैध्यावै॥ ४४ ॥ ता
 जातिकेडुषनाही॥ सोनपरैजोसागरमेही॥ जनमजराम
 तदोषमिटावै॥ जोसम्पकरतनत्रैध्यावै॥ ५० ॥ सोईदसलबुन
 साधै॥ सोसोलेकारनेआरथै॥ सोयगातमपदउपजावै
 करतनत्रैध्यावै॥ ५५ ॥ सोईसंक्रचकपदलेईती
 नलोककेसुषविलसेई॥ सोरागादिकजाववहावै॥ जोसम
 ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ एकसरूपप्रकासनिजवचन
 कह्योनहिजाय॥ तीनत्रेदवौंहरसव॥ ध्यानतकौसुषदा
 य॥ इतिश्रीरतनत्रैध्याजयमैलत्रारतीसंपूर्ण॥ ३ ॥ ॥

जैनसंकेत

॥ जैनसः ॥ अथ जैनशातककाकीचतनाघालिष्यते ॥ सैव्य
 ज्ञानजिहाजवेविगणपतिसे ॥ गुणपयोधिजिसनाहितिरहे ॥ अमर
 समूहश्चातित्रवनीसौघसिपसिग्रीशाप्रणामकरेहै ॥ किधौनालकु
 करमकरिषाइरिकरनकीबुद्धिधरेहै ॥ असेआदिनाथकेअहनिमि
 हाथजोरिहमयापरेहै ॥ १ ॥ कार्योतसर्गमुशधरिवनमैंगदेरूपन
 रिहितजिहीनी ॥ निअलअंगमेरुहैमानौदोकनुजाछोरिजिनदीनी
 फसेअनेतजंतुजगचहलेडखीदेखिकरनांचितलीनी ॥ काठनक
 जतिन्हैसमर्थप्रभुकिधोवाहुपुगदीरघकीनी ॥ २ ॥ करतौकंचुनक
 रनतैकारिजतातैपातप्रलंबकरेहै ॥ रस्योनकचुपायनितैपैवो
 ताहीतैपदनांहिदरेहै ॥ निरखिबुकेतैनतिसचयातैतैनतांशिक
 अनीधरेहै ॥ कानतकहासुनैयोकाननजोगलीनजिनराजरवरेहै ॥
 ३ ॥ छंदहैअथ ॥ जयोर्ननिभूपालवालसुकमालसुलक्षणजयै
 स्वर्गपातालपालगुणमालप्रतक्षण ॥ इगविसालवरजाललालन
 खचरनविरजिहि ॥ रूपरसालमरालचालसुंदरलखिलजहि ॥ रि
 भुजालकालरिसहेसुहमफसेजनमजंवालदह ॥ यातैनिकालवे
 हालअतिजोदयालदुखटालयहाध ॥ कवित ॥ छंद ॥ चितवतव
 दनअमलचंशोपमत्तजिविताचितहोयअकामी ॥ त्रिभुवनचंदपा
 यतपचंदननमतचरनचंचादिकनामी ॥ तिऊंजागुइंचंद्रिकाकी
 रतिविहनचंदचिततशिवांगी ॥ वंदोचतुरचक्रोरचंद्रमांचंदा
 वरणचंदप्रभुस्वामी ॥ ५ ॥ छंदसद्वैया ॥ शांतिजिनंशजयोजगतेश
 हरोअथतापनेशोधकीनाई ॥ सेवतआपसुरासुरायनमैधिर
 नायमहीतलतांशौमौलिलगोमणिनीलदिधैप्रभुकेचरनौफ
 लकेवहजाई ॥ संघनपायसरोजसुगंधकिधौंचलितंअलि
 पंकतिआई ॥ ६ ॥ छंदकवित ॥ सोमेनपयंगुअंगदेखेडरवहोतम
 गलाजतअनंगजैसैदीप्रनांननासतै ॥ बालबुहचारीअथसो
 नकीकुमारीजाइअथतैनिकरीजन्मकादोडखहासितैमी
 मजवकाननमैआनतसैहायं ॥ स्वामीअहोनेमिनामीतकि
 आयोतुमतासतै ॥ जैसैकपाकंदवनजीवनिकीवंदिहो ॥

श्री तोही दास कौ खलास कीजे जग फामितें ॥ ७ ॥ छंद छप्यै ॥ जनम
 जधिजलयं न जांनिन्न विहंसमांत सर ॥ सरवइंइमिलिअंतिअं
 नजसधरहिशीत्रापर ॥ परउपगारीवांनिवांतउस्यपयकुनयगन
 गनसरोजवननौनजांतिममोहतिमरघन ॥ धन चरनेदेहडुख
 दाघहरहरषितहेरमयूरमन ॥ मनमयमतंगहरिणाश्रुजिनजिन
 विसरहुविनजगतजन ॥ ८ ॥ छंद ॥ दोहा ॥ दृढकरमाचसदहनप
 वि ॥ नविसरोजरविराय ॥ कंचनछं विकस्जोरिकर ॥ नमौवीरजिन
 पाय ॥ ९ ॥ छंद कविता ॥ रहौ हरिअंतरकीमहिमांवाहिजगुणवस
 तत्रघकांपै ॥ एकहजारआवलक्षणतनतेजकोदिरविकिरण
 उथापै ॥ सुरपतिसहस्रंअंषिअंनुलीकरिरूपामृतपीवतनहि
 धापै ॥ तुमविनकौनसमरथवीरजिनजगसौंकाटिमोक्षमैथापै
 १० ॥ छंदसवैया ॥ अंनहुतासनमैंअरिईधनजोकिदिएरिपुरोगने
 वारी ॥ सोकहस्यौनविलोकनकौवरकेवलनांनमयूरवउधारि
 लोकअलोकविलोकनएजितजन्मजरामृतपंकपधारी ॥ सि
 धनथोकवसौंसिवलोकतिहूपगधोकत्रिकालहमारी ॥ ११ ॥ ती
 रथतांथप्रणामकारैतिनकेगुतवर्तनमैंबुद्धिहारी ॥ मोमगयो
 गलिमंसिमज्जरिह्योतह्योमतदाकृतधारी ॥ लोकाही
 रनदीपतिनीरगाएतिरनीरनएअविकारी ॥ सिद्धनथोकव
 सैंसिवलोकतिहूपगधोकत्रिकालहमारी ॥ १२ ॥ छंदकविता
 सीतरितुजोरैअंगसवहीसकौरैगिरिकौरैतपवैधरै ॥ घोरय
 नघोरैघटाचक्रुवोरफोरैज्योज्यौचलंतहिलोरैस्यौसौंकोरैव
 लाअरे ॥ देहनेहतेरैपरमारथसौंशीतिजोरै ॥ असेगुरुवोरै
 हमहाथअंजुलीकरै ॥ १३ ॥ छंदसवैया ॥ शंवीरहिमाचलतैनि
 कसीगुरुगोतमकेमुखकुंफटरीहै ॥ मोहमहाचलनेदिवली
 जाकीजफतापनिहरिकरीहै ॥ ग्यानपयोनिधिमाफिरली
 वहुनंगतरंगनिमौउछरीछै ॥ तासुधिसारदंगानदीपति
 मैअजुलीनिजसीसधरीहै ॥ १४ ॥ याजगमंदिरमैंअनिवार
 अणानअधेरछयोअतिभारी ॥ श्रीजिनकीधनिदीपसिषा

मुचिजोनविहो तप्रकासनहोरी॥ तोइसजातिपदारथपातिकहलह।
 तेरहतेअविचारी॥ यविधिसंतकहैधनिहैधनिहैजिनवैतवमेउपरु
 री॥ १५॥ छंदकवित॥ कैसैकरिकेतकीकनेरराककहेजाहिआ
 कइधगायइधअंतघनेरहे॥ पीरीहोतरीरीपैनरीसंकंचनकीक
 हाकाकवातीकहाकोयलकी॥ १६॥ टेरहे॥ कहजातेजेजनारोकहा
 आभियाविचारोपूमौकोउजारोकहामावसअघेरहेरहे॥ पत्त
 ठोरिपाखीनिहारोनेकनीकैकभिजेनवैजेत्रोरखैतइतनोह
 फेरहे॥ १६॥ कवइहवाससौउदासहोयवनेसेकवेकैतिजरु
 परोकुंगतिमनकरीकी॥ रहिहैअमोलएकआसनअचतअ
 गसहिहैपरीसासीतिघाममेघफरीकी॥ सारंगसमाजघाजक
 वधौपुजेहैआनिध्यानदलजोरिजीतोसेनामोहअरीकी॥ एकलवि
 हारीयथाजातलिंगधारीकवहंसुइछाचारीबलिहारीवाधरीकी
 १७॥ रागउदैजोगजावलागतसुहावेनेसेविनागरागत्रैसेलागेजेसे
 नागकरेहे॥ रागहीसौपारि॥ रहेजगमैसदीवजीवरागगएंआव
 तगिलातिहोतनपारेहे॥ रागहीसौजगतरीतिफूवीसवसांचजा
 नेरागमिदैवृफतअसारखेलसारेहे॥ रागीवीतरागीकेविचार
 मैवमोदीनेदजेसैनटापत्थिकाहूकाहूकौब्यारेहै॥ १८॥ छंद
 सदेया१३॥ तनितचाहतजोगनएतरप्रवपूमविनाकिमपैहैकर
 मसंजोगमिलैकहैजोगगहैतवरोगनजोगेकैहैजोदिनआरकै
 मोंतवमौ॥ कहुतौपरिउगीतिमैपछितैहै॥ याहीतैयारसलाह
 यहीहैगईकरिजाहनिवाहनकैहै॥ १९॥ मातपितारजवीरज।
 सौउपजीसवसातकुधातनरीहै॥ माघिनकीपरमाफिकवाहरि
 चामकेवेदनवेदिधरीहै॥ नाहितौआयलगेअवहीककवायस
 जीववहैनघरीहै॥ देहदसायहदीसतचातधिनातनहींकिनवु
 धिहरीहै॥ २०॥ छंदकवित॥ काहूधरपुत्रजायोकाहूकेवियोग।
 आयोकहरंगारंगकरुंगोहारोहपरीहै॥ जहांमानऊगातउडा
 हगीतगातदेघेसांफसमैताहीयांनहायहायपरीहै॥ अंसजिग
 रीतकोनदेघिनयनीतनहोयहाहानरमूढतेरीमतिकौनहरीहै

निस्तक
धर्ष

मानुषजनमपायसोवतविहायोजायषोवतकिरोरनिकीएकएक्यरी
॥२५॥ सोरवां करिकरिजिनगुनपात्र॥ जातंत्रंकारथरेजिया॥ आग॥
पह्यमैसांवघरीघनेरेमौलकी॥ २५ कांतीकौडीकाजकोरितकोलि
षदेतप्रतात्रैसेमूरषराज॥ जगदासीजियदेषिये॥ २३ देहा॥ कानी
कौडीविषयसुख नवदुखकरजंअपारविनदीयेनहीचूटिसीलसक
दांमनुधारा॥ २५॥ शिष्या॥ अंपयादिनदशविषेयदितेदेफेरिचक्रविंपते
परंपरा॥ असुचिगोहदुहदेहेतेहजांततत्रायजरासिंनचंधसनमंदत्रैए
प्रहजनेत्रंगी॥ अरेत्रंधसवधंधंजांनसारथकेसंगी॥ परहितत्रकाज
पनौनकरि॥ मूद्राजत्रवसंमफंउरं॥ तजिलोकलाजनिजकाजकौंअ
जदावहेकहतगुगुर्यासवैया॥ जौलौदेहतेरीकाहुरोगसौन्धेरीजौलौज
रानांहिनेरीजासौंपराधीनपरिहे॥ जौलौजमनामांवेरीदेइनदमांमंजौ
लौमानैकांतिरंमावुद्धिजायनकारिहे॥ तौलौमित्रमेरेनिजकारजसं
वरिलेरेपोरथकेगोफेरिपीछैकहाकरिहे॥ अहेआगिलागेजवक
परीजरनलौ॥ क्वाकेमुदायेतंवकौनकाजसरिहे॥ २६ सौवरषआ
युताकालेघाकरिदेष्वासव॥ आधीतौअकारथहीसोवतविहाये॥ आधी
मैअनेकरोगवालद्विदसामोगत्रोरुसंजोगकेतीत्रैसेवीतिजायेरेव
कीअवकहारहीतहित्वीचारसही कासजकीवातयहीनीकैमबलाये
धातरमैअवेतौषलासीकरिइतनेमैनावैफसिफंदवीचदीनांसमज
ये॥ २७॥ बालपनेवालरह्यौपीछेगृहजारवह्यौलोकलाजकाजवांभे
यापनिकौटेरहे॥ अपनौअकाजकीनौलोकनमैजसलीनौपरनौविस
रिदीनोविषेवसिजरहे॥ अैसेहीगईविहायअल्पसीरहीआपतरपर
जायइहअधिकीबटेहे॥ आयेखेतनेयाअवकालहेअवेयाअहे
अयारेसयानतेराओजोनीअंघेरहे॥ २८॥ सवैया॥ २९॥ बालपने
नसहारिसकोकबूजांततनांहिनताहितहीकौं॥ जोवनवेसव
सीवनिताकुंन॥ कौंनितलागिरह्यौलडुमीकौं॥ यौपनदेइविगोय
दूयेतरडारतकोतरकेनिजजीकौं॥ आयेहेखेतअजोसखेताई
सगईअवराधिस्हीकौं॥ सवैयात्र॥ सारनरदेहसवकारनकैंनौ
पएहपहतोविष्पातवातवेदनमैवचैहे॥ तीमैतरुणईधर्मसेवनको
ममैजाईसेयेतवविषेजैसैमांधीमधुरचैहे॥ मोहमदसोयेधनरंमांहितरौ

जरोथेयोहीदिनमोयेषायकोइंजिममचेहै॥ एरेसुनिवैरेत्रवन्नायेसीस
घोरैत्रजोसावधानेहोरनरनरकसौवचेहै॥ ३॥ सोवेयाश्चवायला
कवलायलगामिदमत्तनयोनरजूलतत्यौही॥ हृदयनयोनत्रजैंगव
नविधैविषघातत्रघातनकोही॥ सीसजयोवुगलासमस्वेतरहौ
उरअंतरसांमअज्यौही॥ मांनुषजोमुकताफलहागवारतागहि
ततौरतयोही॥ ३॥ अथसं॥ रीचि॥ वन॥ वेयाश्च॥ चाहतहैधनहे
यकिमीविधिप्रोसवकाजसरैजियराजी॥ गेहचिनायकरोगहने
कबुआहिमुतामुतवाटियेनांजी चिंततयोदिनजायवलेजम
आतिअचानकदंतदागाजीखिलतषेलखिलारगपेरहिजातरु
पीसतसंजकीवाजी॥ अथतेजनुगासुरंगनलेख्यमत्तमत्तंगुत्तं
गधरेही॥ दासअवासघवासअवाधनजोरिकरोरनकोसनेरेहै
असेनयेतोकहानयोएनरछोस्विलेगकिअतिछरेही॥ धामधरेहै
कांपपरहेदामडोरहैवामधरेही॥ ३॥ अकंचननंदारनरेमोतिनके
पुंजपरखनेलोकडुवारिषेमारगनिहारते॥ जानचटिडोलतहै
जीनेसुरवेल्लुहैकाहूकीवोरनैकनीकैननिहारतेकोलोधतष
गेकेकहैयोनजागैतेईफिरैपावनागेकोगोपदजारते॥ येतेपैअथा
गरवातेरहैविनोपाय॥ अिगहैममजिअेसीधर्मनसमहारते॥ अथ
देषोनरजोवतमेंपुत्रकौंवियोगनयोतेसैहीनिहारिनिजतारिक
लमगमै॥ जेतेपुंनिवांनजीवदीसतहैजिनहीपरंकनयेफिरैतई
पांनहीनपामै॥ येतेयेअनागधनजीवनसौरागधरेहोयनविग
जानैरुंगोअलगामै॥ अंधितविलोकिअंधसुमेकीअधेरीकरैअ
सेराजरोगकौंइलाजकहाजगमै॥ ३॥ दोह॥ जेनवचनअंजनव
दी॥ अंजैसुगुरुप्रवीन॥ एगतिमरतोउनमिटेवडोरोगलखिल
न॥ ३॥ निजअवस्थावर्तनासवेया॥ ३॥ जोईछिनकटैसोईअंन
मैअवसिघटैरूंदवृंदचित्तैसैअंजुलीकैजलहै॥ देहअतिजीमहे
तनेततेजहीनहोतजोवनमलीनहोतछीनहोतबलहै॥ अंकेज
रानेरीतकेअंकअहेरीआवेपरजोनजीकजातनरजोनिफल
है॥ मिहिकौमिलापिजनपूछतकुसलमेरीअेसीयादिसामैमिअ
हेकीकुसलहै॥ ३॥ अहिदिश॥ चर्ननं॥ लदेरया॥ दिघटैपलटी

तनकीचे विवकनई गतिलंकनई है॥ रुसिरही घरकी घरनी अतिरंकन
 कोपरिजंकलई है। कं पतिनारिव है मुखलाहामति संगति छारि
 गई है। अंग उपांग पुरानपेर तिसनां नुर और नवीन नई है। अहमवे
 यात्रं। रूपकोनघोजर होत रुज्जु तुसारद हो जयोपतं कर किधे
 रही मारसूनीसी॥ कूंबी नई है कटि इवरी नई है देह कवरी इतै क
 यसेरमाहिपूनीसी जोवनने ~~विदालीनी जने नुसार~~
~~विदालीनी जने नुसार~~ विदालीनी जने नुसार
 कीनी

ओहो इत अने अनाग उदेनां हिजांनी चीतरागवांनी सारदयारम
 नीनी ही जोवनके जेरे थिखं गम अने कजी क्जातै जे संतापे क्खु
 करुनां नकीनी हे। तेई अ वजी वराशि आये पुर लोक पासलोगे वै
 रदेगो उषज ईनां नवीनी हे। उनही के न्यको नरो सो जान कं पत है
 बाहुर मो कराने लासी हायलीनी है॥ ४०॥ जाकौं इंचा है अमिं इ
 से उ मां है। जास जीव मुक्त मा है जा इ जो मल वहा वै है। असे न ज
 न म पाय विषय विषया घोये जे सै का वसा टे मूढ मानिक गवा वै
 माया नदी बूडनी जा काया वल ते ज डी जा आया पतती जा अ व
 कहा वनि आ वै है। तातें निज सी सटो लेती चिनेन की यि फो लै क
 हा वटि वोलै छु छि वचन डरा वै है॥ ४१॥ देष ऊजो रजस मट को ज
 मही पतिके यह तौ आगवांनी॥ उज्जल के स निसां न थरे वरु रोग
 निकी सं गि फो ज पलांनी॥ काय पुरी तजि जा जि वल्यो जि हिं आ व
 त जोवन नू ए गुमांनी॥ लटिल ई नारी सगरी दिन दोय में घो ई है
 ता वनिसांनी॥ ४२॥ दोहा॥ सुमती हित जोवन समै॥ सेवो विषे वि
 राषलिसा टे न हि घो इये ज न म ज वाह सार॥ ४३॥ कर्त्त म अ द
 देव गुरु संचे मानिसां चो धर्म हिये आं निसां चो ही वषान सुं निसां
 चे पंथ आ वरे॥ जीवन की दया पालि जू व त जि चोरी ढाल देष निवे
 रानी बाल त्रिसना घटा वरे॥ अपनी चडाई पर निंदा मतिके रे जा
 ई इही चतुराई म द मास को वचा वरे॥ साधि घट कर्म साध संग
 तिमें वै वि वी र जो है धर्म साधन को तेरो चित चा वरे॥ ४४॥ साचे

देवसो ईजामें दोसको न लेसको ईहै गुरुजाके उरका हकी नवाह
 है सही धर्मवही जहां करुणा प्रधान कही ग्रंथ जहां आदिश्रंता
 कसो निवाह है। एईजगर न्यारियत कौं परधिया रसांचे लेऊ
 वेडारिनर जोको लाहै। मानुषविवेकविनां पशुकी समानि
 नां तांते यह वातवी कपारनी सलाह है॥४५॥ देवलक्षणमत
 विरोध निराकरण॥ छप्ये॥ जो जग वस्तु समस्त हस्तत लजे मनि
 हारै। माजनको संसार सिंधुके पार उतारै॥ आदिश्रंति अवि
 रुद्ध वचन सबको सुषदानि॥ गुंन अनंत जि समाहि दोषकी
 नां हितिसानी॥ माधोमहे सबुला किधौ वर्धमानके बुध ईहै ये
 हचित नजासति सके चरन नमो मुजि देववहै॥४६॥ यज्ञनिवे
 दास वया॥ प्रथक है पसुही नमु निजापके करेया मोहि हो मत
 ऊतासनमें कौं नसी वडाईहै। स्वर्ग सुषमे नचंडे ऊमु जेयो
 नकंडा सषायर शंभै रेही मनि नाईहै। जो तय हजातत है
 वेदयो वषां नत है जगपजपी जीवपावे। सुगो सुखदाईहै। उ
 रेको नवीरयामै अपने कटवही कुं मोहि जिनजाले जगदीम
 की उहाईहै॥४७॥ सातो वारकानां मा॥ छप्ये॥ अघत्रंधे रुद्रादि
 त्यसि प्रलाय करि जै सो मोपस संसारता पहरत पकरि जिजे
 जिन वरपूजा नियम करौ तिति मंगलदायक। बुध संजम आद
 रोंधरौ श्रीगुरुपापन्य निजवितसमां नत्रनिमांत विन सुकर
 सुप्रतह हो न करयो सुनि सुधर्म षट्कर्म नजिन रजवलाहा
 लेहन। यो सुनि सुधर्म षट्कर्म नजिन रजवलाहा लेहन रथ
 दोहा॥ एई छह विधिकर्म नजि सात विसनत जि वीरां सही पेय
 ऊंचिहै। क्रमक्रम नच जलती साधणी सात विसना दोहा॥ जु
 वापेलनमां समद्वेषां विसनसि काराचोरी परर मनीरम
 ना सातो यापनि वार॥४८॥ जुवा निषेदा। सकुल पाप संकेत आ
 पदा हेत कल छन। कल हषेतद रिदेत ही सत निज अछन। गुण
 समेत जस सेतके तर विरोकत जै सै अगुनतिकरतिकेतलेतल
 धिवुधज नत्रै सौ। जूबां समानि पूस लोकमें आत अनीति नपेधि।

नस्तकम्
५१

रा॥ इस विमन रायके धेलको कोतिकरुनहिदे धिए॥ पशमांसनिषे
छप्ये॥ जगमजियकोनां स होयतवमांसकहावे॥ सपरसत्राहि
तिनांमगंधउरघनउपजावैरकजोगनिरदृईषां हिनरतीची
अधरमी॥ नामलेततजिदेतअसनउत्तमकु लकरमी॥ इसति
ठनिघुअपवित्रअतिक्रमिकुलरासितिवासनिता॥ प्रापिषअ
दइसकेसदावरजोदोषदयालचित॥ पशमदनिषेधसवेया
कमिरासकुवांससरायदेहे सुधितासवडीवतजायसही॥
जिसपांनकीयेसुधिजातहियेजननींजनजाततरिय
ही॥ मतिरासमत्रौरनिषेधकहांयहजांनिजलेकुलमेंना
हीधे॥ गहैवनकोवहजिधजलो जि नमूहिनिकेमतलीनक
ही॥ पशुघेनपानिषेध॥ सवेया॥ १४॥ धनकारनपापनीप्रीतिक
रोमहितोरतनेहयथातनको॥ लवचाषतंनघिनकेमुंदकीसु
वितासवजायछियेजिनको॥ मदमांसवजारनघपसदअंध
लेविमतीनकरेधिनको॥ गनिकासगलेसवलीननयेधिगहै
धिगहैधिगहैतिनको॥ १५॥ अघिडनिषेध॥ सवेया॥ १६॥ कानन
मेंवसैत्रैसोआननगरीवजीवप्यातनसोप्यारघानपूजीजिस
येहैहैकायरसुजावधरेकाकोदीनघोहकरेसवहीसोइरेदं
तलियेतनरहैहै॥ काहंसौनरोधनिकारूपेनपोषवेहेकर
कोपोषपरदोषनांहीकहैहैनेकखादसारिखेकोंत्रैसीमृगीम
रिवेकोकुहाहारिकगोरनिकेसोकरवहैहै॥ वीरीनिषेध॥
चितातजैनचौररहतचौकायतघारे॥ पीठेधनीविलोकिलो
कनिरदेकरेमारो॥ प्रजापालकरिकोयतोपसोरोपुडावैम
रेमहडुषदेधिरतिनीचीगतिपावै॥ अतिविपतिमूलचौर
विसनशगठत्रासत्रावैनजरिपरिचितअदत्तअंगरागिन
तिपुनपरसैनकरि॥ १६॥ परस्त्रीनिषेध॥ कुगतिवहनगुंए
गहनदहनदावानलसीहै॥ पुनसुचंदघनछांहदेदरुसक
रनछइहैधनसरसोषनधूपधमदीनउमानीवियतिमुयंगामव
सवाईवेदवधानी॥ इहविधित्रनेकत्रोगुनजरीप्रांतहरनफास
प्रवल॥ परस्त्रीत्यागसवया॥ दिवदीपकलोयवनीचनिताज

इजीवपतंगतिहायते। इषयावतश्राणीमावतहै। वजेनरहै
 दृगसौजरते। इसजांतिविचछनत्रांषिनकेवसिहोयत्र
 नातिनहीकरते परतीलषिजेधरतीपरबंधनिहेधते
 हेधतिहेतरते। परदिदसीलसिसिरोममनकारिजेमें
 जगमेंजसत्रारजतेईलहैं। तिनकेजुगलौचनवोभिजहै
 ईसजांतित्रवारजश्रापकहैं। परकांमिनिकोंमुषचंद
 चितेंमुदिजांहिसदायहटेवगहैं। धनिजीवनहैतिनजीव
 नकोंधनिमायउतेंउरमांजिछहैं। पपी। कुशीलतिंघ
 संवेया। जेपरनारितिहांथिलज्जहसेंविकसेंबुधि।
 हीनवडेरेकुंविनकीजिमपातलिदेषिषुसीउरकंकर
 रहोतघनेरोहैजिनकीयहटेववहैं। तिनकोंईसनों
 अपकीरतिहैरोंकेपरलोकविषेविजुरीकरिहैंसत।
 षंडसुखाचलकरे। ईण। एकएकयसतसोनएन
 येतिनकेतोमा। छंदा। छप्ये। प्रथमपंडवानूपवेलिज
 वोसववोयों। मां। सघायवकरायपायविपदावज
 रोयो। वेनुंजांतेमदपांनजोभाजादोगतदको। चारु
 दतभुषसहेविसिवाविसतअरकेहतब्रह्मदतत्रा
 षेटसोछिजसिवन्रतिअदतरतिपररमनिरांचिरां
 णगयोंसातोसेवतकोंनगति। ई२। दोहा। पापतंमन
 नरपतिकरै। तरकतगरमेंराज। तिनियवयेपायक
 विसत। निजपुरवसतीकांज। ई३। जिनकेजिनकेव
 चनकी। वसीहियेपरतीतिविसनश्रितितेनरतजे
 तरकवांसनयनीत। ई३। कुंकवितिंदा। संवेया। अ
 रागउदेजगअधनयोसहजेसवलोगनलाजगमा
 री। सीषविनांनरसीषिरहेविसनोदिकसेवनकीमु
 घराई। तापरिरीफिरवेसवकाव्यवडेनिरदैंकुमति।
 कविनाई। औरअमुकतकीअषियोनमुवीनरिये
 हलितरेतअत्याई। ई४। कंचनकुंनतिकीउपमांक

हिंदे तजरो जनु कौ कवि वारे नु परिष्णाम बिलो कि नि के म
 णि नील क कीट क नी द कि छा रे धो स त वे न क हे त कुं प
 डित ये जु ग अं मि ष पिंड नु घारे सा ध न फार द शी मु व छा
 र न ये र हे हे त कि धो कुं च का रे ॥ ६५ ॥ ये नु धि न्नि लिन र्नु
 वे ते स म ज्यौ न क हां कि स त रि व तां शी दी न कु र ग ति के
 त न में ति न दं त धे रें क रूं तां कि नि आ शी क्यौ न करी ति
 न जी व न के जे का व् कौ रे पर कौं ड ष हां शी सा धु अ मु ग्र ह
 ड र ज न दं ड ड वे स ध ते वि स री च तु रा शी ६६ ॥ म न ह स्ती व
 र्त्त न ॥ ६७ ॥ णं न म हा च त्त फा रि सु म ति सां क ल ग हि र वें डे
 गुरु अं कु स न हिं गि नें ब्र ह्म ह त वि र ष वि हें डे क रि सि
 षां त सि र न्हां न के लि अ ध र ज सौ वा नें कर न च प ल
 ता धे रे कुं म ति क र णी र ति मा ने ॥ को ल त सुं छं द म ह म
 त अ ति गु ण प धि क न आ व न जे रें वे रा ग षं न वां धे
 रू स हि म न म तं ग वि च र त वु रे ॥ ६९ ॥ पु रु नु प का र व र्त्त न
 स वे या ॥ ६९ ॥ सी स रा य का य पं धी जि य व स्यौ आ य र त
 न त्र य ति धि जी में मो षि जा कौं ध र हें ॥ मि ष्ण नि सि का र
 ज हां मो ह अं ध का रि ना री का मां दि क त स्कर स म ह न
 को ध र हे ॥ सी वे जो अ वे त सो शी षो वे नि ज सं प टा कौ
 त हां ग रूं पा ह रू पु का रे द या क रि हें ॥ गां फि ल न रू जे प्रो
 त अं सी हें अं धे री रा ति जो गि रे व दो ही र हां चो र त कौ ड र
 हें ॥ ६९ ॥ क षा य जी त न नु पा य स वे या ॥ षे म नि वा स धि
 मां धु व नी ॥ वि नु क्रो ध पि सो च नु रे त ट रे गौ ॥ को म ल मा
 व नु पा व वि नो य ह मां न म हा म द को न हे रें ॥ आ र ष
 सा र कुं वार न ही छ ल वे लि त कं द न कौं त क रे गौ ॥ तौ
 ष सि रो म नि मंत्र प टो वि नुं ली न फ णा वि ष क्यो उ त रे
 गौ ॥ ६९ ॥ मि ष वां क णा स वे या ॥ २३ ॥ का हे कौं दो ल वु रे
 न र नां ह क क्यौं ज स ध र्म ग मां वें को म ल वे न च वे कि
 त अं त ल गौ क छू हे न स वे म त ना वें तालु छि दै र स नां

नभिदैनघटैकछूअंकदरिद्रनआवेजीवकहेजियहं
नतहिंनुकजीसवजीवनकोंसुषयावे॥१०॥धीरजदिद
वन।सवेया।आयोहेअघांतकनयांनकअसाताकर्म
ताकेहरिकरिवेकोंवहीकाहंहहिरैजेजेमनभाये
तेकुंमायेपुष्यायआपतेडीअवआयेतिजनुदेका
ललहिये।येरेमेरेवीरकहेहोतहेंअधीरयामेंकाहं
कोंनसीरतंअकेलोयेकसहिरै॥नयेदलगीरकछूपीर
नवितमिजाययाहीतेंसयानेंतंतमांसगीररहिये॥११॥
होनहारउतिवार॥कैसेकैसेवलीनपरिविष्यातनये
अरिकुलकोंपैनेकमोहकेविकारसों॥लंघेगिरसायर
दिवायकरसेदियेंजिनुंकायरकीयेहेंनटकोरनहका
रसों॥असैंमांहामांतीमोतीआयेहूंनहांरिमांतीक्योंहो
ननुतरेजेकमांनकेपहारसोंदेवसोंनहारेफुंतिदांनेसैं
नहारेअौरकाहूंसोनहारेपरिहारेहोनहारसों॥१२॥का
लसामर्थवर्ननं।लोहमडीकेईकोटनिकीबोटकरोक
गुरेनतौपरोपराधोपटनेरिकें॥इंचइवोकायतचोक
सकेचोकीदेऊंचावरंगचमुंचऊंवौररहोयेरिकें।तहो
येकजोहरावनायवीचिवेवोफुंतिवोलोमतिकोऊजो
बुलावेनांवटेरिकें॥असेपरपंचपांतिरचोकौंननांति
जांतिकेसैंहूंनछोरैकालदेव्योंहमहेरिकें॥१३॥ग्यांती
जीवउषीकथना।सवेयाईकतीसा०॥अंतकसोनछूदे
तिहचेपरिमरिषजीवतिरंतरथजेंआहतहैचितमेंने
तिहीसुषाहोयनलानमनोरथसुजें॥तोयनिमूदबंधें
नयअंसवथांवडवदवांनलनजें।छोडिविचबिनए
जडलबिनधीरजघरिसुषीकिनरुजें॥१४॥धीरजघ
रण।सवेया।बोधनलाननिलारलिष्योलघुदीरघसुं
कतकेअनुसारेंसोलहिहैकछूफेरनहीमरुदेसकेदेर
सुमेरसिधारेपघटनिवाधिकहीवहहोयकहोकरिआ

वतसोचाविधारे कृपकिधौभवसागरमेंतरगागरमांत
 मिलेजलसारे ७५॥ आसनदीव मोहसेमहांनउच्चय
 र्वतसोटरिआरिहंजगभूतलकोपायविसभरीहै
 विविधिमनोरथमेंनृजिलनरीवहे ॥ तिसनांतरगा
 तिसोंआकुलनांधरीहै ॥ परिभ्रमभोरजहांरागसोम
 करतहंचिंतातटतुंगहृषधर्मटाहिटरीहै ॥ त्रैसीष
 हाआसातांमनदीहैअगाधताकोधत्पसाधधीरज
 जिहांनचदितरीहै ॥ ७६ ॥ महामूढवर्तनासवेया ॥ २३ ॥
 जीवतिकितेकतामेंकहांवातीरहोतापेंअधकोन
 कोनकरेरिफेरीही ॥ आपकोचतुजातेओरनकोम
 दमानेंसारुंहोतआरीहैविचारतसवेरही ॥ चांमही
 केचषनसोंचितवेंसकलचालजुनुरसोतचौधेकरे
 राष्योहैंअंधरही ॥ वांहेवांनतातिकेअचानकहीत्रै
 सोजमदिसिहेंमसांनथातहोटतिकोंटेरही ॥ ७७ ॥ के
 तीवारस्वांजसंघसांवरसियालसांपसिधुरसारंग
 समांसरीजुदैरेपस्यो ॥ केतीवारचिरुचिमगादरबको
 रधिराचक्रवाकचातकचंडलतनजीधस्योकेतीवार
 कछमछमेंडकगिडोलामीतसंखसीपकोडीकेजल
 कांजलेभेतिस्यो ॥ कोऊकहेंजाहरेतिनांवरतौबुरोम
 तेयोतमूढजातेमेंअनेकवारकेमस्यो ॥ ७८ ॥ उहवण
 नाछप्ये ॥ करिगुणअंमत्पांतदोषविषविषमसम
 ये ॥ वंकचालनहितजेंजुगलजिक्तामुषयप्ये ॥ तप्ये
 तिरंतरहिउदेपरदीपनरुचे ॥ वितुकारनउखकरे
 वैर ॥ कोंकरेंकबऊंनमुचे वरमोंनमंत्रसोहीपवसिसं
 गतिकीयेहांतिहै ॥ वऊमिलवाततातेंसहीउरजनस
 रपसमांतहै ॥ ७९ ॥ विधस्ताकीसोवितकी ॥ सजनजो
 रचेतोसुधरससोकोनकाजउहजीवकीयेकालरुंद
 सोंकहेरहीदातातिरमाप्येफेरियापेक्योंकलपहृष

जाचिकविधारेलधुतिनहंतैहैसहीईएकेसंजोगसौता
 सीरोघनसारकछुजगतकौष्यालइंइजालसमहैवही।
 सेंदोयदायवातदीसैविधियेकसीहीकाहेकूंवनांइयरे
 धौधौमनहैंयही।
 चौतीसतीर्थंकरांकेचिहनांमागअ
 पुत्रगजराजवाजवांतरमनमोहैंकोककषलसांथि
 यासोमसफरीपसिसोहो।सुरतरुगोडामहिषसुरकुं
 तिसेहाजोनेवज्रहरिएजमीनकलसकछपनुरआ
 नो।सत्तयत्रसंखाअहिराजहरिरिषवदेवजिनआदि
 यो।श्रीवर्धमानलौजांतियेचहनचारुचौवीसये।
 आदिनांथजीकेभवांतरतांमा।आदिजयवरमांइजैम
 हावलभूत्पतीजैसुरगईशांनललितांगदेवथाये
 है।चौथैवज्रजंघणेहपांचमेंसुगलदेवसम्कलैइजै
 देवलोकफिरिगयोहैं।सातवैसुबुद्धिरामआववेंअ
 चुतइंइतोमेंनोनरेइवज्रनांतिनांप्रनयोहैं।दसैंअ
 हिमिंइजांतिग्यारहैंरिषननांतनांतिषंशभूधरकै।
 सीसजन्मलीयोहैं।
 चंडप्रनजीकेभवांतरतां।श्री।
 धर्मनूपतिपालिपकुंमीसुरगिपहलैंसुरयो।कुंति
 अजितसेनछषंडतायकइंइअचुतमेंथयो।वरपह
 मनांतिनरेसनिर्जरवैजयंतविमानमें।चंडानस्वाम
 सातवैनौनयेपुरषपुरांतमें।
 चंड३।शांतिनांथजीके
 भवांतर।श्रीषेनआरजकुंतिसुरगअमिततेजषेच
 रपदयाया।सुररचिचूलसुरगआंतमेंअपराजित
 वलिभइकहाया।अचुतइंइवज्रायुधचक्रीफिरिअ
 हिमिंइमेघरथराया।सरवारथसिद्धेसंतिजितयेप्र
 शुकीछादशपरजाया।
 दधि॥नेमनांथजीकेभवांतर।
 पहिलैंनववतनीलडतियअनिकेतसेवधरा।तीजै
 सुरसोधर्मचनुमचिंतागतिनभवचरा।पंचमचौथैसु

अदतगहैवनितांतचहेंलवलौतनजांनैमोंनिवहैय
 दिनेदलहैनहिंनेमजहैदृतरितिपिछांनैजौतिवहैवि
 तिग्यांतइहेंपरिमोषतहैजिनवीरवषांनै। ए० अनुभव
 प्रशंसासणेजीवतअलयआयवुधिवलहिनतामेंअ
 गमअगाधसिधुकोसैंताहिडोंकहें। घाटशांतमूलये
 कअनुतोअपुषकलाजनमदाघहारीघनसारकीस
 लाकहैयहेंकसीषलीजेयाहीकोअभ्यासकीजेयाकै
 रसपीजेअसौवीरजिनवाकहें। यतनोहीसारमहीआ
 तमकौहितकारह्योइलोमदारअोरआगेटुकटाकहें
 ए० श्रीमगवांतसंप्रथनां। आगमअभ्यासहोर्नुसेवा
 सरवज्ञकेरीसंगतिसदेवमिलेसाधरमीजनकीसंतने
 केगुनकोववयांतयहेंवांतिपरोमिटोदेवदेवपरअोगु
 नकथनकीसवहीसोंअेतसुषदेनमुषवेन। जाषोनाव
 नात्रिकालराषोआतमांकधनकीजौलोकर्मकारथे
 लोमोक्षकेकपाटतोलोयेतीवातहंजेप्रत्नपूजोंआसम
 नकी। ए० जिनमतप्रसंसा। दोहा। छयेअनादिअज्ञा
 तसोंजगजीवनकेनेता। सवमतमूंवीधूरिकी। अजन।
 मतहैजेता। ए० नलिनदीकेतीरकों। औरजननकछ
 हेन। सवमतघाटकुंघाटहैं। राजघाटहैजेता। ए० ध। ती
 ननवनमेंनरिरहे। थांवरजंगमजीवसमवमतनहै
 कदेषिये। रक्तकजैतसदीव। ए० य। यसअपासजगज
 लधिमें। नहिंनहिंअोरइलाजा। ग्राहनवाहनधर्मसर्व
 जिनवरधर्मजिहाज। ए० हीमिथ्यामतमदिराछकेसव
 मतवारेलोयसवमतवालेजांतिये। जिनमतमतनहो
 य। ए० मतगुमांतगिरवरटले। वडेनयेमनमांहिलघुदे
 धेंसवलोककैयोंकोहंनुतरतनाहि। ए० टीचांमहत्सोसव
 मतीचितवकरतीनवेराज्ञांतनेंसोजेतही। जौवनइत
 नोफिरए० जौवजाजटिगराधिकेपटपरधेंपरवीन

जेन०
५५

सौं तुम सौं मत की परष पावें पुरष श्री मीत शब्दे। दोय परस
जिन मत विधे। तयति हेचे व्यवहार तिति विनुं लहेस यह
सिच सरवर की पार। २ सी जैसे सी जैसे कि है। तीन लोक ति
ऊं काल ॥ जिन मत कौं उपगार सव जिन भ्रम करों दया ला ॥ ३ ॥
महि मां जिन वर वचन की ॥ नही वचन वल होय जुज वल सौं
सागर अगम ॥ तैरे न तारु कौ या ध ॥ अप नें अप नें पंथ कौ पी
षत सकल जिहो न ॥ तै सैं यह मत पोष नो ॥ मति सम जौं मति
वास ॥ ५ ॥ ईस सागर संसार में ॥ और न सरन सुपाया ॥ जन मन
न मरु जौ हमें ॥ जिन वर धर्म सहाया ॥ ६ ॥ अथ यौ ग्रंथ ऊवो ती
का व्योरोस ॥ आगरा में वाल बुधि नू परष डेलन वाल ककेषा
लसे कवित ककरि जां नहें ॥ अै सैं ही करत नयों जै स्पंघ सा
बाईस वाहा किम गुला वचं द आ यो ति हि थां नहें ॥ हरी स्पंघ
साहके सुबंध म्म रागी नरति नके कहै सैं जौ डकी नां एक वां
नहें ॥ फेरि फेरि धरे मेरे आलस कौं अंत आ यो जिन की सहाय
यह मेरे मन मां नहें ॥ ही दोहा ॥ सत्रह सैं ईक्या सियो ॥ यो समां सत
मलीन ॥ तिथि तेर सिर विवार कौं सकल सम श्रन की न ॥ ७ ॥
॥ अथ ॥ इति श्री जिन मत क संपूर्ण ॥ अथ पद लिखते ॥ ॥
मेरे मन मेरे यह आरी या तित चौर सुं भग जिन की मूरति परि
रहं लुभासी ॥ मन गे मर म सांति विदूष सुष ल विराग बुधि विन
साय न भन ॥ गुन सन सुष अर वि सुष दो उं परि ॥ सम ता दिष्टे
धरा ॥ तुम से तुम ही हो प्रसुता सुता ॥ आन यह ति धि पारी ने म
॥ अरु न करत कै चरन न चैरो ॥ आपन को जज मां ई ॥ लहं ०
जुदेति ज पद तन लोर हौं ॥ तुम गुण न क्तिस हारी ॥ मन गे अ
राग ई मनां ॥ अणी मैं ति सिद्धि ते घ्या वां एणी या दि तु सा डी रह
ही मत मै ॥ अणी ० ॥ तुज विन मनु और न हिंस दा ॥ चित रह दा
दर सण मै ॥ अणी ॥ १ ॥ तैनु विन वेष्पा मै डा सा डी ॥ अ मत कि
ह्यो न व वन मै ॥ अणी ० ॥ २ ॥ नु दे न पौं सुख कौं अब मे रौं प्र न
दी वा तै न न मै ॥ अणी ३ ॥ अथ संतो धि मं वा सि का लिख्य ते ॥ ॥

उँकारमकारपंचपरमगुरुसंतहैं। तीतभवतमेंसाएवंदोम।
 तवचकायसों। १॥ अक्षरज्ञानतमोहि। छंदनेदसमजोंनही। बु।
 धियोरीकिमहोया। भाषाअक्षरवावती। २॥ आतमकविनउपा।
 यापायोतरनवक्योंतजों। राईउदधिसमांतफिरिटूदीनहिया।
 ईयो। ३॥ ईविधिनरनवकोय। पायविषेसुषसोंरमें। सोसवअं
 मृतषोईहलाहलविषआचरोंध। ईस्वरभाषेएहनरनवम।
 तिषोवेहयाफिरिनमिलेईहदेहा। पिछतायोंवऊहोईगों। ५॥ उ
 तमनरअवधारण। पायोंउषकरजगतमेंईजियसोंचविचार।
 कछुतोतासासंगलीजियोई। ऊरेधगतिकोंवीजधरमीजों
 तरआचरों। मानुषजोनिलहंतकंपपरेंकरदीपलें। ७॥ रिस।
 तजिकैसुंतिवैन। सारमनुष्यसवजोनिमें। ज्योमुषर्जपरिमैत
 नानुदियेआकासमें। ८॥ टी। टाला। रीकेरीकेरेतरनवयायाऊ
 लजातिविमलतंआयो। जौजैनधरमतहिंधरा। सवला
 नविषेसंगहारा। ए। लषिवातहीयेगहिलीजे। जिनकथि
 तधरमनितिकजों। नवउषसागरकोंतरियो। सुषसोंनौका
 जौचरियो। ३॥ अरिलीनविषेकंकरिया। अममोहि। जमो
 हितकरिया। विधिनांजवदईधुमरिया। तवनरकअमितंपरे
 या। ३॥ एतरकरिधरमअगाऊं। जवलौधनजौवनचारुं। म
 जवलौंनहिरोगसतावै। तोहिकालअवानकपावेध। एनाते
 रेआसननेंता। जवलौंतेरीदिष्टिफिरेंता। जवलौंतेरीबुधिस
 वारी। करिधर्मअगाऊं। ५॥ पवौसजलज्योंजौवनजैहैं। करे
 धर्मजरापतौअहैं। ज्योवृद्धावेलथकैहैं। कछुकारिजकरिन
 सकैहैं। ६॥ अमिणसयोगवियोगा। षिणजीवषिणामृतरोगा
 षिणमैंधनजौवनजावै। किहिविधिजगमेंसुषपावै। ७॥ अं व
 रधनजीवतजैहां। गजकरणाचपलधनएहा। तनदर्पणछ
 याजांएणों। एवातसंचेनरआणों। ८॥ टालरागचंदकैवागचं
 योमोंरियो। जयजमिलेनितआरी। क्योनहीधरमसुणीजे
 जैनतिमरनितहीन। आसनजौवनछीजै। १॥ कमलाचलें

नपैड सुषटां कै पारा देह्य कैव होयो छि। क्योन लघे संसार
 शपिन नहिं छांडे काल जो याता लसि घरे वेसे नुदधि के वी
 च जो वहुं हरि पघरे। अगण सुर रोषे तो हि। रोषे नुदधि मथई
 या तो वन छांडे काल। दीप पर्वग परई या धा धर गौ सो तो।
 दां ना मां णि औषदिस वयो ही। मंत्र जंत्र करि तंत्रा काल मे
 टे नही क्योन ही। पातर कत एणं डष न्नी रोने तं जीय संम होरे।
 तनु वन रुखे आ हारा। अ व स व परिग ह डारे। ही चेत नगर न।
 मकारि। नर क अ धिक डष पायो। घाल पणं कौ बेला। स व जा
 ष गट ही गां यो। ७। छिन में धन कौ सो च। छिन में विरह सता
 वै। छिन में ईष्ट वियोग। तरुण कमल सुष पावे। ७। राग सोर
 वा। जु रो पे एणं डष जे स ह्या। मन भा ईरे। सो क्यो नू ल्यो तो हि चेत
 मन भा ईरे। ज्यो तूं विषया स्यो लग्यो मन भा ईरे। आत्म हित न
 हि होय चेति मन भा ईरे। शं कुं व या प करि नु प ज्यो मन भा ईरे
 गरु न व स्यो वसि पा प चेति मन भा ईरे। सात घस त ल हि पा पे ते
 मन भा ईरे। अज हो या पर वत आ प चेति मन भा ईरे। ७। नहिं
 जरा गद आ ई है। मन भा ईरे। ३। नहिं न कहां गयो जम्म जह
 चेति मन भा ईरे। जो न चिंत तूं के र ह्यो। मन भा ईरे। ये स व हे
 पर त ह्या। चेति मन भा ईरे। ३। डष सुष कौ न व दधि प स्यो म
 न भा ईरे। पाप ल हरि डख देई। चेति मन भा ईरे। पक स्या धर्म
 जिहां जजो। मन भा ईरे। सुष सो पार करे हि। चेति मन भा ई
 रे। ६। वी करे हें धन सा स तो मन भा ईरे। होई न रो गन काल
 चेति मन भा ईरे। ज व ल ग घर्म न छांडिये। मन भा ईरे। धर्म
 कथित जिन धरि। चेति मन भा ईरे। ६। डर प त जो पर लो।
 कौ तौ। चेति मन भा ईरे। चा ह त सि व सुष कारा। चेति मन भा ई
 रे। क्रोध लो न विषया तजो। चेति मन भा ईरे। कौ टि क है अ
 घ जाल चेति मन भा ईरे। ही दी ल न करि आ रं न त जो। मन
 भा ईरे। आ रं न में जीव धावा। चेति मन भा ईरे। जीव धा त में अ
 घ व दौ। मन भा ईरे। अघ सो नर क निपात चेति मन भा ईरे। ७।

नरक आदिति ऊँ लौ कर्मों मन भाई रोये पर न व ड घ रा सि चे
ति मन भाई रो सो सब पूरव पाप त्तों मन भाई जीव सहे व सित्रा
सो चेति मन भाई रो दी टाल वीर जिने दकी ते लूजग में सुर
आदि देव जी सो सुष ड ल भ सारा सुंदरता मन मोह नी जी सो
देघ मी विचारि रे भाई त्थ धर्म प्रव विचारि १७ थिर ता ज स सु
ष धर म सो जी पा वैर त्त न नं डार धर म विनां प्रांणी ल हे जी ड
ष ना ना पर कार रे भाई त्थ प्रव धर म विचार २० दां न धर
म ते सुर ल हे जी नर क ल हे करि पापा ई विधि जां एों क्यो प
डे जी नर क विषे त्थ प्राय रे भाई प्रव त्थ धर म विचारि २१ दं
न धर म ते सुर ल हे जी नर क ल हे करि पापा ई हि विधि जां
एों क्यो प डे जी नर क विषे त्थ प्राय रे भाई त्थ प्रव धर म वि
चारि २२ धर म के र त्त सो भाल हे जी हय ग य र थ स व सा ज प
शुक दां न घ ना व स्यो जी धरि आवें मुं विरा ज रे भाई त्थ प्र
व ध र्म विचारि २३ न व ल सु न ग म न मोह नी जी पूज नी क
र ज ग मां हि रूप म धुर व च ध र्म स्यो जी उष क्यो म्मायें नां हि
रे भाई त्थ प्रव ध र्म विचारि २४ पर मार थ ए वा त्त हे जी मुने
को स म दा रें रे भाई त्थ प्रव ध र्म विचारि २५ किरि मुं निक कं
एां धर म सो जी गुर क हिये निर ग्रं थ देव प्र वारा दो व विनां जी
ए स द्धा सि व पं ध रे भाई त्थ प्रव ध र्म विचारि २६ वि न ध न धर
मो ना न ही जी दां न वि नां उं ति जे हा जे से बिष या ता प सी जी
ध र्म द या वि न ते हे रे भाई त्थ प्रव ध र्म विचारि २७ दो हा दी मो ह
ध न हित कर प्र घ कर प्र घ सो ध त न हिं हो या धर म कर तं ध
न पा र्यो म न व च जां एों सो य २८ म ति जी व सो चै किं व त्त हो ए
हार सो हो य जे प्र क्षर वि धि नां लि ये ता हि न मे टै को या २९ ए
ह व ह वा ते व ऊ क रें पे वें सा ग र मां हि सि ष र व दे व सि लो ज के
अ धि को पा वे नां हि ३० रा ति दि व स चि ते चिं ता मां हि ज रे म ना
जी वा सो दी यो सो पा र्यो ३१ और न ल हे स दी वा ध लां गि ध र म
जि न पू जि यो सां च क हौ स व को री चि त्त च य नू च र ए व ल गा ई

दुधा त्रेषा हिमनुनत डंसम एकडषभारी ॥ तिराजरनतन अर
 तीक्षेद उपजावततारी ॥ चर्या आसनसेनड प्रदायक वधवंध
 ता जाचेंतही अलाभरोगतिन फरसनिबंधन ॥ मलजिनत
 मांतसतमांत वसिप्रग्या और अग्यांत कृश दरसणमलीन ॥
 वांशिससवसाध परीसहजांतिनशश दोहा ॥ सत्रपाव अमु
 सारणो ॥ कहे परीसहनां माईन कौडषजेमूनसहै ॥ तिन प्रति
 सदाप्रतांमश अथवरवीरतांम छंद ॥ पुध्या परीसहवरनने
 अनसननुनौ दरतपपोषं ॥ तपाषमांसदिन वीतिगयेहै ॥ जौ
 नहीवनें जोगविष्याविधिसंकि अंगसवसिथलनयेहै ॥ त
 वैतहैडसहभुषकीवेदनसहतसाधनहीनेकनयेहै ॥ तिन
 केचरनकबुलप्रतिप्रतिदिनहंथजौरहमसीसनयेहै ॥ त्रि
 षा परीसहापराधीनमूनिवरकीनिषापरघरलैहिकहैक
 छूनांही प्रकृतिविरोधपारनेंनुजतवबुतप्याराकीत्रास
 जहांही ॥ ग्रीषमकालपित अति ॥ कौपैलौचनदोयकिरेजव
 जांही नीरनचहैसहे तिसितेमुनिजेवंतेवरतेजगमांही ॥ २
 सीत परीसहा सीतकालसवहीजन कांपेंषडेंजोहांवनविषे
 रहैहै ॥ कांकांवायवहेंवरषारतिवरषसवांदलकुंमिरहेहै ॥
 तहांधीरतदनीतटचौसटतालवालयेकर्मदहेहै ॥ सहेसवा
 लसीतकीवाघातेमूलीतोरनतरनकहेहै ॥ ३ ॥ नसनपरीसह
 भुषायापीडेउरअहारप्रजरे अंतदेहसवदागें ॥ अगनीस
 रूपधुपसांषसकीतातीचालीकालसीलांग ॥ तयैपहारता
 पतनऊयजेकैपेंपितजुरजागें ॥ ईतादीमगरमीकीधायस
 हतसाघधीरजिनहीतागें ॥ धाडंसमंसपरीसहडंसमंसमा
 षीतनकांटे ॥ पीडेंवजपंछीवऊतेंरें ॥ डेंसैंव्यालविसपालवी ॥
 छल्लेगेषजुरेअनीघनेरे सिधस्यालसंडावलसतावैरोछ
 रोअडषदेहिवडेरौ ॥ असेकससहैसंप्रभाननितेमूनिराजहरो
 अघमेरों ॥ ४ ॥ जगनपरीसहातपस्वीषेवासनीवरतेंवां हिरलो
 कलाजभयभारीतातेंपरमदिगंवरमूझानघरिनहीसकैदीन

वा०ई
५६

संसायी। त्रैसीडघरनंगनपरीहजीतेसांघसीलविरभारी। तिर
विकारवालकवततिरमेंतिनकेपापनदोकहमारी। ही। त्रिशि
नपरीसहदेसकालकोंकारणलहिकैहोतअचेनअनेकप्र
कारोतवतेप्रिअहोहिजगवसीकलमलायधिरतापनछा
रो। त्रैसीअरितपरीसहउपजततहोधीरधीरजउरघोरअसे।
साधनकोनुरअंतरवसोतिरंतरनामहमारेअसत्रीपरीसह
तेप्रधिनकेहरिकोंपसरेपत्रगयाकरियावसौचयेतातिन
कोतनकदेवीनोहवाकीकोदोकसरदीनताजयेता। त्रैसे
पुरषपहाडजुडोंवनप्रलयपावनतीयवेदपयंपत। घृत्य
घमाससांघसांहेसीमेजसमेरतिनकोनहीकवत। दीचप्या
परीसहणअरिहोयपरवोनपरविषयचलतईईतउत
जहोतानै। कोमलपापकविनघरापरिघरतधीरवांधान
हीमानै। सांगलुरंगपालकीचटीतेतेसवादनुरयादिनघो
ली। थोमुंतिराजब्रह्मचयडिषतवदिदिकरमकुलाचलने।
नै। ए। असादपरीसह। फायुणमसांएसेलसिलकोटर
जिवंसतहोसुघनुंहेरै। परमितकालरहेनिश्चलतनवारवा
रअसतनहीफेर। मनुषदेवअवतजपसुं कितवैवैविपत
अनिजवधेरो। वीरनतजअजैधिरतापदतोपुरसदावैसो
नुरमेरोसैनपरीसह। जेमहोनसोनेकैमहलनिमुंदरसेजेते
वसुषजोवै। तिअवअचलअंगयेकासनकोमलकविन।
मुंमिपरिसौवै। त्रैसीपोहनकंडकवोरकोकरीगडत — —
सेनपरीसहजातततमुंतिकमकोलिमांधोवो। ११। उमुंवा
यकपरीसह। जगतजीवजावंतचराचरसवकैहितसव
कोसुषहोनी। ताहिदेविउरवचनकहैउरपाषंडदिगपह
अनिमांती। मारोचाहयेकरीपायीअेतपसीनेषवोरहै।
छोती। त्रैसेवचतषानकीपिरपांडिमांडुलिबोलेमुंनिपां
नी। १२। वधवंधनपरिसह। निरपराधनिरवेरमहांमुंनि
तिनकोउरलोकांमिलिमारोकेईषेविषेनसौवाधतकेई

पात्रकमेंपरजालो तहां कायन ही करे कदांचित्परवक मवि
पाकविद्यारो समरथ होयसहै वधबंधनतेगुरसदासहायह
मोरें १२३॥ जावनपरीसह घोरवीरनयकरमतपोधंननयोषी
नधूंकीगलवांही ॥ अस्तिज्ञांतत्रवमेषरहेतननसांजाल
फलकैतिसमांही ॥ त्रौषदीअसनयांन रूपादिक शानजो
ऊं पस्तिजांचततांही ॥ उघरअजाचीकहतघरे करेहिनमलि
नधर्मपरह्वांही ॥ १२४॥ अलानपरीसहा ऐकवारभोजनकी
विरथा तेमुंनिसाधवसतीमें आवें ॥ जोनहीवसेंजोगकीवे
रषाविधितोमहेतमनषेदनलावें ॥ त्रैसोमूमतवऊतदीन
वीते ॥ तघतपविरविभावतोभावे ॥ योंअलानकीपरमपरी
सासहेसाधसोहीसीवपावें ॥ १२५॥ योगपरीस्यालीषते ॥ वातपे
सकफत्रौणतव्यारोयेजववधेघटेतनमांही ॥ रोगसंजोगसो
गतनर्जपरिजेजगतजीवकायरहोईजाशी ॥ त्रैसीविधिवेद
नांदाहूनसहेतुर्जपवारनचाहो ॥ आतमलीनदेहसोविरा
कतजेनज्ञतीनिजनेमतिवाहो ॥ १२६॥ तिनसयपरीसह सुंके
तिनअरतीषेनकांटेकांविनमांसरीपायविद्यारोअजउडिआ
यपडेलोवनमें ॥ तनरूपासतनपीरविद्यारे तोयहघरिस
हायनहीवंछतअपनेकरसोकादिनडोरें ॥ योतीनपरामपरी
सावीतेगुरुजोभोतरनिहधरे ॥ १२७॥ मलपरीसह जावनि
वनिलतहांवलज्यो ॥ विननगनरूपवनयांनघरेहैं ॥ चलैपा
सेवधुपकीवरषांउडजधुलीसवअगपरेहैं ॥ मलिनदेहकै
दिषिमहांमुंनिमलिननावगुरतांहीकरेहैं ॥ योमलजनति
परीसहजांति तिनैहंयजोरिसीसघरेहैं ॥ १२८॥ ततकारपु
रसकारपरीसहा ॥ जेमहांनकिघ्यानिधिविजशीचिरतपसी
गुनअतुलघरेहैं ॥ तिनकीविनयवचनसोंअथवाउविष
णांमजननांहिमरेहैं ॥ तोमुंनि तहांषेदनहीमानगेंउरम
लीनताभावहरेहैं ॥ त्रैसैपरमसाधकेअहनिसिहांथजो
रिहमपायपरेहैं ॥ १२९॥ अज्ञानपरीसहतकपरीसालिषतेः

ति ६
५४

तर्कछंदयाकरणकलानिधिअगमत्रलकारयच्छिजातैजाकीसु
मतिदेषिपरवादीविलषेहोयलाजकरआंनेजैसैसुनतसमुष्के
हरिकोमलगयंदजागतअपमानैत्रैसैमाहाबुधिकेनाजन
थेमुनीसमुदरंचनवातै॥२०॥अज्ञानपरीसह॥सांमशानघर
तेनिसवांसरसंजमअरपरमवेरागी॥यालतगुंपतागयेहिं॥
नदीरघसकलसंघममतापरित्यागी॥अवधिज्ञानअथवा
मनपरजेकेवलकिरणअकनहीजागी॥योवीललयन॥
हीकरेतयोचनसौंअज्ञानविजायेवउभागी॥२१॥अदरसन
परीसहणे॥मेंवीरघोरघोरतपकीजो॥अजोरिधिअतिसा
यनहीजागै॥तपवलसिधिहोहिसवसुनियुतसोनोवांत
कंवसीलागै॥यो कदाचिमनमेंनहींचित्ततसमकतिसुघ
सांतरसयागै॥सोईसाधअदरसनविजरीताकेदरसन॥
सोअघजागै॥२२॥ईतीवाईसपरीसासंपूर्ण॥अथअथ॥
दोहा॥येहरीतीसैसारकी॥जीनेजांएोसबकोयातातधरमसं
नेहकरी॥ईममरतासंगीहोई॥२३॥धरमसारसंसारमेंधर
मकरतसबहोई॥धरमविनांचारुंगतीरूलै॥धरमकरों
सबकोईबढी॥ओरमिथ्यातसवहीपरिहरोथेनाडीरे॥श्री
॥अथसंमेदसिषरविलासनाषालिषतेनिर्वाणकांडलिं
श्रीजितवरकेपूजिपदसरस्वतिसीसनवायागणधरमुनिके
चरणतमिनाषाकरोंवनायाचोपरी॥श्रीसंमेदसिषरसुष
धंम॥तापरिवीसकूंटअनिरांमतिनेतैतीर्थकरमुनि
राज॥सुक्तिगयेवैधर्मजिहांज॥२४॥तिनकीसंघाकहोवना
या॥अरकूंटनकोनामसुनायाजिनकेदरसणकोफला
कहो॥याकेकहैमहासुखलहो॥२५॥अथमसिद्धवरकूंट
मितीस॥अजितनाथदेआदिसुनीस॥येकअडवअरु
असीकोडि॥चोवनलाषऊंकरजोडि॥येसवमीलग
येधरिध्याना॥तिनकोनमौंछोडिअनिमान॥कूंटतलो
दरसणफलयेहकोदिवतीसगुपवांफेहा॥५॥धवलसु

तजेरिषराजतीर्थंकरसंभवमाहाराजः। नौ कौडाकोडीगुण
मालां लक्षवहतरिसहस्रियाला। द्वि। पांचसैंशिवपुरकौंग
धितिनकौंध्यांनघरेसुषये। कुंटदरसफलघोषधजाणि। वी
यालीसलाषयेसांति। ७। अजिनं दत्तकौंआनंदकं॥

॥ अथ चरचास्तकद्यानतराञ्जीकृतिनाथाकेवतलिष्यते ॥
 जेसखगपत्रलोकलोकश्कंचडवतदेवेहसतांमलज्मूहाथलीक
 ज्यूसरवविसेषे ॥ छहौद्वैगुणपञ्जकालत्रयवर्तमानसमदृष्येण
 जेमप्रकासनासमलकर्ममहातयापरमेष्ठीयांचोविद्यनहरनमंग
 लकारीलोकमैमनवचनकायसिरलायचुक्त्राणंदसौदौधोकमै
 शंभंदेतेमजिनंदचंदसवकौसुषदाईवलनारयणवंदसुकव
 मणसौजापाईध्यांतरइंदवतीसनवनचालीसौत्रावैरविससे
 चक्रीसिंधसुरगचौवीसौध्यावैसवदेवनि केदेवजिनसुगुरुनि
 केगुरुगयहौ ॥ हूजैदयालममहालपैगुनत्रनंतसमुदायहै ॥
 अथअकृतमवैत्यालेप्रतिमासंख्यास्तति छप्ययावंदौत्रावके
 रोरलाषछप्यनसतानूं ॥ सहस्रचारसैंअसीएकजिनमंदिस्जा
 नूंनोसैपचीसकोरलाषत्रेप्यनसताईस ॥ वंदौप्रतिमासरवसह
 षनोसैअठतालीसव्यंतरज्यौतिकअगिनतसकलवैत्यालेप्रदे
 मांनमौ ॥ आनंदकारडषहारसंवफेरिनहीनवननमौ ॥ अ
 थसिद्धनमस्कार ॥ छप्यया ॥ लोकईसतनवातसीसजगदीसवि
 रजै ॥ एकरूपवसुरूपगुनत्रनंतातमछजै ॥ असवस्तुपरमेय
 अगारलधुदरवप्रदेसी ॥ चेतनअमूर्तीकत्रावगुनअमलसुदे
 सी नतकिष्टजघन्यअवगाह्यदमासनधरगासनलसै ॥ सवगपा
 यकलोकअलोकविधिनमौसिद्धनवजयनसै ॥ धाअथअ
 चार्यनुपाध्यायमुनितीनोसाधमैतनैसाधकौवंदनाछप्ययाअ
 चारुजवफायसाधनतीमनधाऊंएणछतीसपचीसवीस
 अरुअठमनाऊंतीनोकोपदसाधमुकतकौमारगसाधेनो
 तननौगविरागरागसिबध्यातअरथै ॥ गुनसागरअविचलमेर
 समधीखसौपरिसहै ॥ मेनमौपायजुगलायमनमेरोजीवंछि
 तलहै ॥ अथलोकअलोकसरूपछप्ययाअमलअनास्त्रि
 नंतअकृतअनमितअधंसन ॥ अचलअजीवअरूपपंचन
 द्वैअलोकतननिराकारअविकारअनंतप्रदेसविराजै ॥

नतवि
चर
६२

सुहसुरातत्रवगाहंसौदिसत्रंतनपांजे॥यामहलोकननतीनवि
धत्ररुतत्रामिटत्रईसरो॥त्रविचलितत्रनादित्रनंतसवनाष्ये
मित्रादीसरो धीलोकसक्यसनेयात्र १ पूर्वपछिमसातनर।
कतलैराजूसातत्रागैयद्या॥मध्यलोकराजूएकस्याहै।ऊवेव
टिगयात्रहलोकराजूपांचनयात्रागैयद्यात्रतएकएजूसरदह
है॥दहनउतरत्रादि॥मध्यत्रंतराजूसातजंवाचौदैराजूषट
दमनस्यालहै।त्रसंघातपरदेसमूरतीककियोत्रेसक्येय
रेक्येहैकोतस्वयंसिद्धकहहै॥७ पुनःतीनोलोकतीनोवात
वलेवेदेसवगौरवृक्षछत्रडजालतनचामदेषिये।त्रधो।
लोकवेशसनिमदिलोकयालीननिजरधमदंगगनित्रैसो
हीविशेषियेकरकटिधारियावकौपसारिनराकारमेदसु।
रजत्राकारत्रविनासीपेषियोघरमांहिचीकाजैसैलोकहैत्र
लोकवीचछकैकोत्रधारपहनिराधारलेषिये।७ पुनःती
नसैतितालराजूघनांकारसवलोकयनोदधियनतनवातके
त्रधारहै।तामैचौदैवोकूटात्रसनाडीत्रसथावरपरैतीनसैउ
नतीसथावरसदारहै॥दहनउतरमोरीवीयालीसराजूसव
पूर्वपछिमउभतालीकैविचारहै।राजूत्रंसवीसासोतैता
लीसत्रधिककहैलोकसीसमिद्धनिकोमेरोनमोकारहै॥७
पुनःकषलसैछैकवंसनाललोकत्रसनामिऊंचीचौदैवोर
एकराजूत्रसजरीहै॥यामैत्रसवहिरथावस्त्राववांधीकाह
मनसौत्रगाऊगयोत्रसवालकरीहै।दिकि...
...हैवाहै
रथावरकोपत्रसत्राववांधीहोयमनसमैकारमानत्रसरीतध
रीहै।केवलससुदघातत्रसरूपतहांजाततीनोनांतिउहांत्र
सजिनवानीषरीहै॥१०त्रयससुचयतीनसैतेतालीसराजू
घनांकारकलावउकथनाच्यय।पूर्वपछिमतलैसात
मध्याकवघांती॥यंचसुरागैपांचत्रंतमैएकप्रवातीच

ऊमिलापचञ्जं सतीनसाटापरवानौ॥ द्दछनउतरसातसाद्वे
 वीसवषानौ॥ ऊंचाचौदेराजगुनोअधिकतितालीसतीनसौ॥ यह
 घनाकारतिरुलोककौकेवलगापानविधेलसै॥ १२ अथअधोले
 करकसौछातवेराजू॥ छपया॥ पूरवपछमतलेसातमधिएकेगा
 शिउतयमिलेसौआठअरथकरिआरिवताई॥ द्दछनउतरसात
 गुनोअठईसराजू॥ ऊंचाराजूसातसतकछानवेनयाजूमहअ
 धोलोककासकहाघनाकारजिनधरममै॥ मतिपरौनरकमे
 पापकरिहोसुमारापरममै॥ १२ अथअरधलोककरकसौसैता
 लीसराजूकयत॥ छुप्ये मध्यलोकइकवृहस्पयांचडऊंमेलनईष
 टा॥ पूरवपछिमदिसाअईकरितीनराजूरद॥ द्दछनउतरसातगु
 नीइकईसवषांती॥ ऊंचासाटेतीनसाटतेहतरजांती॥ साटेसे।
 हतरिविधियेहीलोकअंतसौब्रह्मलगा॥ राजूइकसौसैतालस
 वधर्मकरेपावेसुमगा॥ १३ अथअतीनसैतेतालीसलोकमैजुहा
 जुहासैस॥ छुप्यया॥ छियालीसचालीसओखोतीसअवाईवा
 ईससोलेदसवनीससाटेवतलाईसाटेसैतिससाटसोलसाटेसो
 लेननि॥ आगौदोहोहानिअंतगपरैराजूगति॥ इमसातनरक
 आतौजुगलऊपरसोलेधानमै॥ राजूतेतालीसतीनसैघनाका
 रकहिग्यानमै॥ १४ अथतीनलोककोतीनवातवलेकाजुहाजु
 हाप्रमाणकथन॥ तलेवातवलेमोटेजोजनसहससाचअचेइ
 करजूलौसाठसहसधारने॥ आगोसातपांचचारतीनोसोलेजो
 नकेमधियांचवारतीनवारैकेचितारने॥ ब्रह्मलोकतीनोसोलेअ
 तमांहितीनोवारैसीसदोषकोसाएककोसकेविचारने॥ तनवा
 तथनुषयोनेसोलेसैताकोनागपंडेसैसिद्धएकनागमैनिहारने
 १५ तीनलोककेपटलएकसौवारैकोरा॥ एकतीनपनसात।
 औरनौगपारतेरजिया॥ इकतीससातसुचारदोषइकएकतीन
 तियतीनतीनअरतीनएकइकपटलवताए॥ इकसौवारस
 रववीसथानिककोगा॥ १६ सवसांतनरकआतौजुगलत्रय

पंचमि वि

६४

वक उपनसरे। अनघासनरकतेसवसुसाधन दोनो समकित नरे
 २६। छहो संघन ननरकस्वर्गसि कयन। छहो तीसरे जो हियं
 चतौथे पंचम लगचार संघन न छठे एक सात एं नरक मग छे हे
 आठमै सुरग पंच चार मसुखा वै। चारसो लमै लोकती ननोशी
 वक पावै। दोनो संघन ननतरे एक पंच पंचोतरे। इक चर मसरी
 शिव लहे वं दो जै न वच न घरे। २७। अथ छहो काल चौहे गुण
 यानक संघन नओरा कयन। छप्ये। प्रथम इति यत्र सत्रि नूय
 कालसे पहिला जानी वीथे घट संघन न पंचमै ती नवषांनो क
 रम नू मिति यती न एक छठे ते मां ही विकल चतु क मै एक ए
 क इंदी किं नां ही घट कहे सात गुण थां न लगती न इ शरै लो
 ल है इक षिप कसे न गु नतरे है धन जिन वां नो मै कहे २८। वी
 वीसो जिन अंतर कयन। संवे घा १। मचा सली सदस नो किरै
 रलाष मछे नो सहस कोर नो मै कोर न छे नो कोर है। सो सागर व
 षलाष छ्वास व सहस छ्वा घा टको सागर चो वर सती सज
 रं है। नव चारती न घाट पौ न पल्पत्र र्घ्या व घाट लाषो ला।
 षवर्ष लाषो लाष जोर है। वीच न छ पा व लाष सहस पौ नो चो
 एसी मा वै अंतर जितें सगा वै निस नो र है २९। अथ एक सौ अ
 वताली सप्रकति किस किस गुन थां न दिपी छप्यय। सात प्र
 ३ छति कौ घात ती क सास म गु न थां नो ती नत्रा व न हि होय न
 व म छती सो जानै। इस मै लो न विचार वार है सो ल मि टा वै।
 चो द है मै के अंतर व हतर ते रष पा वै। इम ती र कर्म अ व ता ल
 सो सुगत मां ह सुष करत है। प्रचु मोहि बु लावो आ पटि ग ह म
 हं पा प नि परत है। ३०। अथ मान घो तर मां न। कवित्त मां न घो व
 पर वत चौ राई नूप र एक सहस वाई स। मध्य सात सै ले ई स जो ज
 न उ पर चार सत क चौ वी स। सतरे सै इक ई स उ वाई ज उ चार सै
 पा वत्र रुती स रिजु विमां न किं ह नं ति मि ल्यो है जो ज न लाष।
 क हो ज ग दी सा ३१। अथ देव लोक नारी संजोग जे दा दो य सु

रगमें कायजोग है। दोयसु रगमें फरसनिहारा। चारिसु रगमें रूपनि
 होरे। चारिसु रगमें सबद्विचार। चारसु रगमें रूपनिहारे। चारिसु
 रगमें सबद्विचार। चारसु रगमें मनसू विकल्पतत्रागें सहजसा
 लनिरधार। अहिमिंदरसवमहासुषी है। अंदोसिद्धसुषी अवि
 कार। २२ अथ एकसौगुणहृत्तरपुरुषकथना। अथेयचौवासे
 जिनराययापवंदोसुषदायका। कामदेवचौवासईससुमरोसिव
 वायक। अरतत्रादिचक्रोस दोसवकुसुरनरस्वामी। नारिद्वयदम
 सुरस्त्रिओरप्रतिहृत्तरजगनामी। जिनतातमातकुलकरपुरुषसं
 करउत्तमजियधरो। कुच्छतदनवकुच्छत्रवधरजंगतिसुकृति
 रूपवंदनकरो। २३ अथकर्मप्रकृति। १४ धर्काओरा। अथे। ग्या
 नावरतीपंचदशसतावरतीनोविध। दोयवेदनीनांतमोहनीअ
 धवीसनिधिआवध्यारिप्रकारनांमकीप्रकृतितिरांतूतघार
 कसोतीनगोतदेनेद्वषांत। कहिअंतरायकापांचसवसो।
 अठतालीसजांनिये। १५ अथातकरमअत्रचतालिसोनिन्नरूप
 निजमांनिये। १६ संवेया ३२ वर्तदिकवीससंस्थांनसंघतन।
 वारैबंधनसंघातदेहअंगोपांगवारैहै। अगुरुलघुआताप
 अपघातपरघातनिर्मानपरतेकसाधारनसारैहै। अथिरउदे
 तीथिसुतअश्रुजवासठपुगालविपाकीनौविपाकीआतवं
 रैहै। अत्रकीवियाकीचारअनपूर्वीउत्तरवाकीजीवकीवि
 पाकीधारैअघटारैहै। १७ संवेया ३४ केवलदरसजांसत्रा
 वरतीताकीदोयमिथ्यातसमैमिथ्यातनिशपांचजांनिये। त
 नचौकरीकीवारैसर्वेयातइकईससंजलनचारनवनोकष
 यमांनिये। ग्यानावरतीकीचारदर्शनावरतीतअंतरायपां
 चसम्पकमिथ्याततानियेदेसायातिकीछवीसवाकीइक
 सौअघाततीनोघातकर्मघातअपसुद्धजानिये। १८ ईवनी
 दिकचारसोलैनांहिदेहअदिपंचदसनाहिमिथ्याएकदे
 यबंधनाहीहै। सोलैदशदोयविनाबंधएकसतर्वसमि।

तत ०
६५

प्याउदेती न दोयवदेउदेपांही है॥ उदेत्रै उदीरना है एक सतव
इसकी सतासौ त्रुव ताल विसेषतागं ही है॥ मिथ्या गुणसो छुए
लकारु सतसताइस पांचोति रंगासौ त्रु संगी त्रापमां ही है॥ २५
छुप्ये। वंध एकसौ वासुदेसो वाईस त्रावै। सतासौ त्रुव ताल प
पर्कीसौ कहिलावै। पुंन प्रकृति त्रुव सतन र्जीव विपाकी वास
वदेह विपाक वेतन वचन वाकी॥ इकरै ससरं वया ती प्रकृति देव
याति छु छीस है। वाकी त्रुया॥ इति इकरु अधिक सतनि न्नि सिइसे
वइस है॥ २५ त्रुया पाप प्रकृति नाम सवै या॥ ३१ श्यातसै ताली
सडषनी चनरका चपांच संसथान संघ नन वन रसमांनिये। नर
म सुगति त्रुं न पूरवी फरस त्रा ठगंध दोय इ जीवार वुरीवाल वानिये।
त्रु थिर त्रु पर्यायति सूक्ष्म त्रु साधारन त्रु यथा तथा वर त्रु सुनप
रवांनिये। उर्नाड स र्त्रु नाद र्त्रु जस र्त्रु पाप प्रकृति से जे द्
त्याग धर्म जांनिये। २५ त्रु य पुन्यकी॥ इति प्रकृति वर्णना सवै।
या ३१। सुरतरय सुत्रावसात्ता कंचन लीचालि सुरतरगति त्रुं।
न निरमांत स्वास है। वंधन सघान देह वर्नरस पंचन सतीन त्रुं।
सुजदोय गंध त्रा ठफास है। त्रु गुरु लक्ष प्रविंदी संसथान संघ
नन वाद र्प्रत्येक थिर पर्याज सरास है। त्रात पन दो त पर यात
सुसुर सुजग त्रा दर तीर्थ करको वंदो त्रु यनास है। ३२ त्रु यजे
नमत त्रु यांत वर्णन। छुप्ययाति हं काल षट्द्वय र्थ नो उ
मजाषे सात तत पंचास्त्रिका य षट्काय करावे। त्रा ठ कर्म युन
त्रा ठ नेद ले स्या षट्जांने॥ पंचर त्रु व समित चरित गति ज्ञान व
षांने सरथै प्रतीतरु चि मन घरे सुकति मूल समकित यही पद
न मो जो र्करि सा सघ र्धन सरख गय र्द विधि कही ३१ त्रु या ३२
३५ कुलकोडिका कथन सवै या ३१ प्रथवा काय वीस दो।
यज लसात तेजतीन वायु सात तरु वीस त्रा ठ परवांनिये। वे
ने चनु ईसा त्रु या ठ न वष गवा रे जल वरसा देवा रे चोपे दस जं
निये। सिरिस सपिन वना र्कि पंधी सन र्चो दे देवता छ वीस कु

ललाषकोरिमांनिये॥ दो इकोराकोरिमांहिआधलाषकोरिनाही
सवकौनिहारिकेदयालमावत्रानिये॥ २१॥ अथापारेनेद्वंका
नतीनामछप्यय ग्यारैत्रंकपदएकत्रंकदससवपदधानी॥ पूरव
चौदेत्रंकवीसत्रंछरजिनघांन॥ अनतिसत्रंकमनुष्यपछपैत
लीसत्रंछ॥ सरसोकुंडछियालनेदसैथितिअछरवर॥ इकती
सत्रंकपलकलपकेजंबुफलावटदसवरना सववातवलोपारेवर
तधंनिजेनससैहरना॥ अत्रेहमेंगुनस्थानकसातत्रिनंगीकथन॥
छंद॥ छप्ययासाजुनआसरद्वारबंधइकसाताकहिये॥ चौदेना
वप्रमाणपचासीसतालहिये॥ असाचौउरासीयइक्यासीत्रौरपद्य
सी॥ यहसताचौनेदविशेषजिनेश्रुलासी॥ इककमवालीसउदी॥
रणउदैवियालीसमांनिये॥ यहतेरहमेंगुनघांतमेंसातत्रिनंगी
जानिये॥ २४॥ अथबंधदसककथन॥ छप्ये॥ जीवकरममिलि
बंधदेइरसतासउदैनणि॥ उद्दीरणउपायरहेजवलौसतागुणे
उन्नकरषनधितिददैघटैत्रपकरषनकहियतसंकरमनपरो
रूपउद्दीरणविनुउपसमप्रत॥ संक्रमतउदीरनवितुनिधितघ
टवटउद्विनिसंक्रमन॥ वज्रविनानिकाचतबंधदसजिनत्रा॥
पपदजांनिसना॥ २५॥ अथतीनलोककेविषेअकरतमचैसा
लोकीसंख्याकथन॥ सवैया॥ २३॥ सातकिरोडवहतरलाष
पतालविषेजिनमंदिज्ञांनि॥ मध्यहिलोकमेंचारसैठावनव्यंत
रजोतककेअधिकाने॥ लाषचौरसीहजारसतानवैतैईसउरध
लोकवर्षाने॥ एककमेंप्रतिमासतआवनमेंतिऊजीगत्रिकाल
सयाने॥ २६॥ अथतीनघाटितवकोटिसुनिसंख्याउत्सवसवैया
२३॥ यांचकिरोडतिगनवैलाषहजारअवानवेदोसैछजानेज
वछडेगुनतैआघेसातमेंग्यारमेंछानवैद्यारविकानेआव
तवैदसवारहचौदहमेंउनतीसनवैपरवाने॥ तैरमेंआठहि
लाषहजारअवानवैदसवारहचौदहमेंउनतीसनवैपरव
ने॥ तैरमेंआठहिलाषहजारअवानवैपांवसैदोइवषांने॥ २७॥
अथअटईहीपज्योतिषीसंख्या॥ कवितछंद॥

नतवि
६६

सूर्यगामीयह्ना द्वाइसनयतवधाम/डासवसहसपचतरनवसे
कोडाकोडीतारेजाना/इकसोवतीसचंद्रइहीविद्यताईहीप्रमध्यप
रवान/सवधैत्यालेप्रतिमामंडितवंदनकरैजोरिजुगपांन ३४
अथत्रायुकर्मकेबंधकेनेदाए/कवित/त्राउत्रंसंपैसवसेइ
कसवइकर्मइससैसतासीजानसातसतकउनतीसदोइसैतेता
लीसइक्यासीमानसत्ताइसत्रोरनोतीनेएकत्रावमनेदवधान
नोमीअंतकालमेंवाधेअगलीगतिकीआउनिदानाएअथ
सतावनजीवसमासस/छप्यै/नूजलपावकवापनितईतरसाध
रणामूहसवाटरकरतहोतहादवाउचारनसुप्रतिष्ठप्रतिष्ठ
मिलतचौदैपरखानो/परजअपर्येअलष्टगुनतव्यालीसवधानेगु
नवेतेचौइहीत्रिविधसरवाकपंचासनीमनसहितरहिततिऊ
नेदसोसतावनधरदयामनाधवेअथअज्ञानवैजीवसमामससवै
या/३३इक्यावनथानजानथावरचिकलनेकेगर्जजदोतीन
सनमूरखनगाएहे/पांचौसैनीत्रोरअसैनीजलयसननचार
नोगनूमिभूतरषेचरदोदोप्राएहैं/दोदोनारकीसुदेवनोविध
मनुष्यनेवनोगनूकनोगनूमलेछनूवताएहै/दोइदोइदोय
तीनत्रारजमेंरजतहैअज्ञानवैदयाकरैसाधतेकहाएहै/४१
अथसाटेसैतीसहजारप्रमादनेदनेदसथना/छप्यै/विकथारु
पपचीसत्रोरपणवीसकषायनिगुनतैछसैसवापांचइहीमन
सोगुनियूनेअारहजारपंचनिज्ञासोगुनियै/सहसपांनउनईस
नेदअरुमोहसुसुनियैसाटेसैतीसहजारसवनैदप्रमादप्रमाद
धवांनिये/इहेगुनथानकलौकहेत्यागत्रापथिरवांनिये/४२
अथज्योतिकपटलकातलैंउपरिअंतरकथना/छप्यै/सातसत
कअरनवैतासपरतारेजै/ताऊपरिदसनांनुअसीपरिचंद्र
विराजै/चारनयतबुधआरतीतपरसुक्रवतायो/सानगुरूकु
जतीमपरिश्रुतिवहसयो/इमनवसेजोजननूमितैज्योतिषच
क्रवधानिये/इकसोदसजोजनगनमेंफैलिरह्योमोकथनई
पानामेंमीलतोअैआकइकतालीसकोसपरधानिये/४३अ

यगुनस्थानंकउपसमीकोकिहिमारागत्रावैजावैसोकथनाछपे
 मिथ्याभाषाचारतीनचउपांचमानजनि॥ इतिपाकमिथ्यात
 ततियचौषापहिलागनि॥ अत्रतमारगयांचतीनदोएकसातपा
 नपंचमयंचसुसातत्रारतिपदोशकमन॥ छठैषरश्कपंचमत्र
 धिकसातात्राठनवदससुनोतियत्रथऊरधचौथैमरनगपारवार
 वितुदोमुनो॥ ४४॥ अथचौवीसतीर्थकरवणीककथनाछपे॥
 पुहपदंतप्रभुवद्वंदसमसेतविरजे॥ पारसनाथसुपासहरि
 तपत्रामयछजे॥ वासुपूज्यअरुपदमरकतमाणिकउतिसो
 है॥ मुनिसुव्रतअरुनेमसुरनरमनमोहै॥ वाकीसोलेकंचनव
 स्नयहविषहारसरीरयुति॥ निहवैअरुपचेतनविमलहर
 सग्यानचरितजुता॥ ४५॥ अथश्रीगोप्रदसारकात्रादकानम
 स्कारअष्टकसूचका॥ छपे॥ बंदोनेमजिसांदनमोहोवीसजि
 नेश्वर॥ महवीरवंदामिवंदसचसिद्धमहेश्वर॥ सुहृजीवपण
 मामिपंचपदप्रणमु॥ सुप्रप्रतिगोप्रदसाधनमामिनेमिचंद्रा
 चासननिजिनसिद्धअकलंकवरगुनमनिभूषनिउदयधरे
 कहंचीसपरूपनजावसोयहमंगलसवविघनहर॥ ४६॥ अथ
 घटविधमंगलाछपे॥ नमज्जनामअरहंतयुनज्जनिचिवा
 कललहर॥ शिअत्रौदारिकदिव्यचिवजनिवाएअवनिपर
 कहेकल्यानककालनज्जकेवलगुनपायक॥ यहषटवि॥
 धतिहोपसहामंगलवरदायक॥ मंगलज्जनेदसवजाशालमंगसु
 षलहृजीयरा॥ यहआदमध्यपरजंतमैमंगलराषोहायरा॥ ४७॥
 अथपांचप्ररूपणाचौदहमादगाणामध्यगर्जिनहैसोकथ
 ना॥ सवैया॥ शुजीविसमासपरजायतिमनवचस्वासईडीक
 मांहिआवगतिमैवधानिये॥ कायवलजोगमांहिइडीपांच
 तांतमीहिआहारय॥ रिग्रहएलोभमैप्रवांनिये॥ क्रोधमां
 हिजयअरुवेदमांहिमैथुनहै॥ ग्यांनग्यांतमांहिदरीदगो
 मांहिजांनिये॥ पांचोपररूपनाएचौदहमैगर्जितहैग
 नमारगतादोयनेदमांनिये॥ ४८॥

षण्णाम् ॥ छप्ये ॥ वंदौ पारसनाथनमो वलरंमचंद्रवरं कामदेवहनुमं
 तप्रगटरावनमोतीनर ॥ दानेश्वरमेयं समीलते सीतानामी ॥ तपवा
 रुवलरावनावनरनेश्वरस्वामी ॥ जगमहादेवहेरुद्रपदकिष्किनांम
 हस्तिनांनिये ॥ शानतकुलकरमेनाज्ञिचपतीमवलीनुवमांनिये
 ॥ ५९ सर्वशीपसमुद्रोकेचंद्रमांकीगणातीकथनसवैया ॥ जंबूद्वी
 पदोऽलवनांबुधिमैच्यारचंद्रधातुषंमवारैकालोदधिवायाली
 सहे ॥ पुष्करकेनागदोऽईधरवहतरहे ॥ ऊर्ध्वैवारैमैचौसठमाषे
 जगदीसहे ॥ पुष्करजलधिसारदोसतापारैहजारआगेचा ॥ आगे
 चोगनेवषांनेनिसईसहे ॥ जेतेलाषतेतेवलेदनेअधिकेहैसवत्र
 संख्याचित्यालेवेदितसुनीसहे ॥ ५० ॥ अथोलोकचित्यालेकसंख्या
 कथनकविता ॥ छंदोसदिलाषत्रसुरजिनमंदिरलाषसुर
 सीनागकुमार ॥ हेमकुमारसुलाषवहतरछहविधलाषछहन
 रधार ॥ लाषवांनवेवातकुमारपताललोकजावनदससारसा
 तकोसवललाषवहतरचैत्यालेवंदौसुषकार ॥ ५१ ॥ मध्यलोक
 चैत्यालेसंख्या ॥ छप्येछंद ॥ पंचमेरकेअसीअसीवरकार्यविरा
 जे ॥ गजरंतनियेवीसतीसकुलपरवतछाजे ॥ सोसमरवैतारथा
 रकुरेभूमदसौतरा ॥ इअकारपहारचारचवमानषोत्रपरनेई
 सरवानरुचिकमैचास्वारकुंलसिधर ॥ इममध्यलोकसैवा
 वनवंदौवियनहर ॥ ५२ ॥ ऊरधलोकचैत्यालेसंख्याकथन
 सवैया ॥ प्रथमवतीमहजेअठईसतीजेवारैचौथेआव
 पांचेछडेच्यारलाषष्यातहे ॥ सातैआठमैपचासनोमैदस
 मैचालिसग्योरेवारैछहजारचारौसतस्यातहे ॥ अथोएक
 सतापारैमध्यकसतसातकरधक्क्यातूनवनवोतरेजा
 तहे ॥ पंचोतरेपाचचवरासीलाषसतानहजारतेईसचित्य
 लेवंदौअथघातहे ॥ ५३ ॥ अथसौधमिइइकेसेनासातप्रक
 रतिसकीगतती ॥ सवैया ॥ इइसेतसातहाथीयोरेरथप्या
 देवैलगंधरवनससातसातपरकारिहै ॥ आदिवोरसी
 हजारआगेषटहनेदनेएककोरछलाषत्रवसठहजार

है। एते गजते ते ते ते छद्मे दसवके ते सातकोर छयालीसला।
 अनिरधरि है। सहस्र छद्म स्त्री एक चक्रवत्तारयो गणुन कर्मि
 गजोगमोषको सिधारि है। ५४ अथ एकै ही अदिसे नी परजंत।
 षट्प्रेदजीवनि जइं ही विषे त्रसीमा कथन। छप्यो फरसचार।
 सेधनुषत्रैसे नी लोडगता गनि। रसनां चोषविधनुषधानमो ते
 इंडी प्रति। चषजी जनउ नती ससत कवी वत परवाने। कांनत्र
 वसेधनुषसु नोसे नी जोजाते। नवजो जनधान रसनि फरसक
 नडवाटसजी जना। चवसे ता लीस सहस्रडसे ते सव देषे जिन
 नना। ५५ दं कपाठ आठ समे तात जो पापाईये किस किस
 किस किस समे सो कथन। सवेया। यह लै समे मै करै दं आठमै सं
 वरे परदेस आठमं त्रौ दारिकषवां नियो। इसरे कपाठ होय सा
 तमै सं वरे सोय सं वरे प्रतर छ द्वे मित्रजोग जां नियो। ही सरे प्रतर चो
 यि पूरत सरवलोक पूरन सं वरे पाचै कारमान मानियो। आठस
 मै मां हिजात कैवल समुद्रघात निजिरात्र संध्यगुता देव सो वषा
 नियो। ५६ मिथ्या तीय्या ती सुकत न होय सम किती होय म
 हकथन सवेया। एक समे मां हि एक समे परव इ वंधे एक स।
 मै परव इ फरै है। वर्गना जघन्य मै अत्र व्यसो अत्र नंत गुनी उत
 किष्ट सिद्ध कौ अत्र नंत नाग धरे है। जैसे एक गासषाय सातधान
 होय जाय तैसे एक सात कर्म रूप अत्र नु सरे है। यौ न लहे मोषके
 इजाके उरपां न होय एक समे वज्रषोय सोई सित वरे है। ५७।
 आठ कर्म के आठ दिशां त्र सवेया। देव ये पस्वो है पटरूपको
 नपां न होय जे सें दरवां न नूप देख नो निवारै है। सहत लयेट
 अ सिधार सुष डषकारा मद्रा ज्यो जीवनि कौ मोहनी विधार
 है। काठमै देयो है पाव करै थित कौ मुजा वचित्र कारना नां
 मची तके समारै है। चक्रा जिवनी चघरे नूप दियो मने करै ए।
 इ आठ कर्म देरे सोई हमै तारै है। ५८। कविना पचप नमचा
 सनेता लीस छयालीसमै तिसचो विसजाना। वाइसचाइसमै

द्यानतः

६८

लैदसत्ररुनवनवसातत्रंतत्रंतनववांन। चौदैगुनथानकमे
 शहविथत्राम्रवधारकहेनगावांन। मूलवारउत्तरसतावउ
 नासकरोधरिसंतरग्यांन। ५५। इकसौसतरेएकएकसौचौह
 तरसतहतरमांन। सतसवतेसवउसववावुनवाइससतरेहस
 मेंथांन। ग्यारमवाअतेरससाताएकबंधनहित्रंतनिदांन। सव
 गुनथांनकवधेप्रकृतिश्मनिह्वैपायत्रबंधपिछन। देवेइक
 सौसतरेइकसौग्यारैसौअरुसौचौसतासाय। इक्यासीछेहतरव
 हतरछासकत्ररुसावउदीय। उनसवसतावन्नवियालिसव
 रैप्रकिनउदैहैजीय। चौदैगुनथांनककरिचनाउदैनिन्नतुव
 सिद्धसुकीया। ६१। इकसौसतरेइकसौग्यारैसौसौचौसतासा।
 जांन। इक्यासीतेहतरवुनहतरतेसवसतावनमांन। छपनचौ
 पनउनतालीसतेरमेंत्रंतनहीपरवांन। महउदीरनांचवदे।
 धांनककरैग्यांनवलसोतूग्यांन। ६२। महलेसोअवताल ६जेसै
 पैतालतीजेमांहि सौसैतालचौथैअवतालसौ। पांचेगुमसैताल
 छवैसातेअवैनैमैदसमैग्यारमैउपसमीहैछपालसौ। अठिनौ
 मैसौअठनीसहसमैइकसौ दोषधारमइकसौएकत्रागैयइटाव
 सौ। तैरेचौदैमैपिच्यासीसतानासत्रविनासानमौलोकषनऊ
 रधराजूसैतालसौ। ६३। नूनलपावकपौससाधारनपंचभेदस
 छमवादरदसपरतेकग्यारहै। छहजास्वारैवोरैजनसमरन
 थोरैवेतेचौइंडीअसासावचालीसधारहै। चौवीसपंचेडीसव
 वासवसहसतीनसैछतीससैसैतीसतेहतरसारहै। छती।
 ससैपिच्यासीस्वासत्रधिकतीजाअंसतमोनाथमोहिसव
 उयसौगधारिहै। ६४। धातियाकर्मकीप्रकृति। मतिअतत्रौथ
 मनयसैकेवलग्यांनपंचअचरनग्यानावरनीपंचभेदहै। च
 छत्रौअचछत्रौथकेवलदरसचारअचरनचारनिइनिइ
 निइभेदहै। प्रवलाप्रवलाप्रवलाथांनरधनौभेददरसना
 वनीमोहअठईसवेदहै। दानलाभनोगउयनोगवलअंत

रायपंचसवसेतालीसघातियानिषेदहै। ६५। मोहकर्मकीप्रकृ
 ति। २६। नाम। अनंतानबंध। औत्रप्रत्याख्यातीप्रत्याख्याना।
 संजलनचारेक्रीधमीतंमायालोअहै। हासरतित्ररतिसोकने
 जुगपसानारीतरषंनरापचीसीचारतकोछोअहै। मिष्यातसमेंमि
 ष्यातसमेंप्रकृतिमिष्याततीनोंदरसनमोहदरसनकोचोअहै
 अवाइसमोहनीयजीयनिकोमोहतहैनासैजयाष्यातसम
 कवायकसोअहै। ६६। अघातियाकीप्रकृति। २७। शनयात्रा
 तकर्मकीधितिउतकिइजघनजया। साताऔत्रसातादो
 यवेदतीनरकयसुनरसुरावद्यारजचनीवगोतहै। नाम
 कीतिरनांकसवएकएअघातत्रादित्तीनअंतरायधितिती
 सहीअहै। नामगोतवीसमोहनीसतरकोराकेरिदधिआवर
 कीसागरतेतीसउदोतहै। वेदनिचोवीसघरीसोलेनामगो।
 तपांचौअंतरमकरकविनासैग्यानजोअहै। ६७। नामकीधकृ
 ति। २८। नाम। तनबंधनसंघातवर्नरसजानपंचसंसंधानसय
 ननघटत्राठफासहै। गतित्रांतपूरतीहैचारदोविहायगंध।
 अंगतीनपैसठएत्रसथूलनासहै। पनीपतधिरसुनसुनगघ।
 त्येकजससुस्सुआदरदोदोनिरमानस्वासहै। अपघातपर
 घातअसुरसधकृतातापउदोततीर्थकरजीवदौअघनासहै
 ६८। जंबूद्वीपपूरुवपच्छिमयोएजंबूद्वीपएकलाषमेरदसही
 हजारअइसालदोवनसहस्रचवालीसको। वाकीद्वयातीस।
 आधौआधदोनौहीविदेहदेवावनउनतीससैवाइसकेती
 नोनदीपौनेचारसतआरौहीविष्यारदोहजारआठौंहावि।
 देहवचनइसके। सतरैसहससातसततीनजोजनकेनमौ।
 चारतीर्थकस्वामाजगदीसके। ६९। दक्षिनउत्तरयोरा। जं
 बूद्वीपदक्षनउतरलाषजोजनकोजागाएकसौनचैएकजर
 तजाइपै। द्योयहिमवनसैलचारहैमवतषेतमहाहिमवन
 आवसोलैहरगाइपै। अतीसनिषअतरेसठऊंरैसवचच

मैं विदेहनागवैभवताइये॥ नागपांचसैसुवीसकलाछहउ
 निसकीअवहतरचित्यालेसदासीसताइये॥ ७० अथोलो
 कसेनीवधविलेसंख्या॥ सातनकर्तूमिउतंचासपाथरेनिवास
 इंदकनीउतंचासवाचमांहिविलेहै॥ पहिलोसीमंतचारदिस
 सैनउतंचासचारविदसामेअवहालीअयनिलेहै॥ आवदिसमे
 नीवधतानसैअचासीअएअगैआवआवघटेअंतचारमि
 लेहै॥ सवदानवेसैचारजेजनअसंघधारदयाधरैधर्मकरेति
 नों॥ ७१ अर्द्धलोकसेनीवधविमानसंख्या॥ अरधत
 रिसवपटलकहेआगममेनेसवहीइंदकविमानवीचजानिये
 यहिलोअुगलतार्केपहलेकोरिअुनांमजाकीचारदिसामेनवा
 सवप्रवांनियोचारोदेसेअवतालीअगैघटेचारवारअंतर
 हेवारअंवेचारवीकवांनियोसेनीवधतरसेसोलेजोजन
 असंघसिद्धवारेजोजनपेध्यानमांहिअानियो॥ ७२ लोनोदधिके
 माहि॥ १००५ कलसजथा॥ लोनोदधिवीचचारदिसामांहिचा
 रकूपकहैहै॥ मृदंगजेमतिनकोप्रदानहै॥ पेटत्रौरअंवेए
 कएकलाषजो॥ जनकेनीचैत्रौमुषताकोदसहजारमानहै
 चारविदसामेचारपेटत्रौरअंवेदसहजाराकनीचैत्रौमुष
 कोवषांनहै॥ अंतरदिसाहजारपेटअंवेहैहजारनीचैत्रौर
 मुषसौकेधनजैनग्यांनहै॥ ७३ तिसठइंदकविमानकोमान
 पेतासीसलाषकोहैइंदकरिअुविमानसर्कारथसिद्धअंतर
 कलाषकाकहा॥ चवालीसघटेहैदेसठमेवासठवोरअंवे
 अंवेएकएककेताघटतीलहा॥ सतरहजारनेसैसतसठजे
 जनहै॥ तैईसअधिकनागइकतीसकागहा॥ तिसठइंदक
 नांमतेसठहीजिनथामवंदैअनवचकायतिनकीसोनामह
 ७४॥ आवप्रकृतिअपरकेगुंनथांतवधेनीचैउदैआवेसुर्व
 सप्रकृतिजहांवंधैतहांहीउदैआवेवाकीनीचैगुंनस्थाना॥
 वंधिकेअंवेउदैआवे॥ ताकोचौरा॥ सवैईया॥ देवगते॥

आव्यांनपूर्वीप्रकृततीतिवेकूपकत्रंगत्राहारकत्रंगचा
 रहै॥अजसात्रावोंकवेवंधैतीचेउदैहैहिसंजलनलेअवि
 नापंदैनिहारहै॥हासरतनेगिलातनखेदनरत्रांतसूक्ष्मत्र
 पर्यापतसाधारनधारहै॥आतपमिथ्यानाचुवीसंधउदै
 साथतीचेबंधकचैकदैछीयासीक्त्वारहै॥७५॥भावपरा
 वर्तनिअनंतनागभवकालनवपरावर्तनिअनंतनागकाल
 परावर्तनिअनंतनागषेतकहोषेतकोअनंतनागपुगाल
 विसालहै॥साकोआधनामत्रईपुगालपरावर्तनिफिरतोर
 होहैयाहियांनीग्यांननालहै॥नाहीसंमैसम्पकउपजवैको
 जोगतयोत्रोरकहासम्पकतातरकोंकारव्यालहै॥७६॥ना
 वपरावर्तनिअनंततैकरैहैजीवएकनावर्तैअनंतनोके
 परावर्तकर्तहै॥एकनोसतीअनंतकालपरवर्तकरेका
 लतैअनंतषेतपरवर्तकर्तहै॥एकषेततैअनंतपुगाल
 परावर्तपंचफेरीविषैआयमिथ्यावसपत्तहै॥सातकोवि
 नासजिकैसम्पकप्रकासतेईद्वषेतकालनवतावते
 निकर्तहै॥७७॥अथयांचलभूकथनाथावर्तैसेनीहोयप
 ह्मिउपसमहै॥दांतपूजाउद्धतविसोहीनुपयोगहैगुरुनुप
 देसततग्यांसोईदेसनाहै॥अंतकोराकोरीकर्मकीधिति
 प्रायेणहै॥जामेअनंतवाश्चारलक्ष्पाईइनिकानीलक्ष्वि
 नासमकितकोंनजोगहैअधोअप्रूरव॥अतिवृत्तकर्तनीन
 करैमिथ्यामांदिपांचेचोथासम्पकनियोगहै॥७८॥नंदीमर
 दीपजथा॥एकसोतरेसवकिरोस्त्रवरासीलाघ
 वीरादीपवावनपहारहै॥दिसाचारअंज
 हजारसोलेदेंधिमुषजोजनदसहजारहै॥रतिकरहैध
 तीसजोजनहजारएकलंदेचोरेऊंचेसवदोलकेअहार
 है॥सवपरजिननोनवावनविराजतहै॥वर्षतीनवार
 करैजेजेकारहै॥७९॥मेरजथा॥मे

नानूहजारचूलकावालीसवालत्रंतरविमानहे। नचिनप्र
 सालवनहिसाचारजिनमोनपांचसैपेनंदनचित्यालेचारवा
 नहे। सादेवाप्रवृत्तारसौमनसवनचारचित्यालेजवेसहस्र
 च्छतीसवषांनहे। तहंवनपंशुकचित्यालेवारसवसोलैम
 नचवकायसेतीवंदोपापहानहे॥५०॥ पुन मेरुगोलजमत
 लेदसहजारनचैकोनूसमैहृनारदसनंदनपेलहाहे। नो।
 हजारनवसैचौवनभागकहेहं। सौमनसवियालीसेवह
 तरहाहे। पंशुकहजारकवीचवारेचूलकाहैचौसैचौरावृ
 वनपंशुकसरदहाहे। सौमनसनंदनहेपांचसैकेनइसालवा
 रसहजारपूर्वपश्चिमकेहाहे। ५१चौदेगुनथांनकत्यग।
 उत्पति। छये॥ मिश्रक्षीणसंजोगतीनमैमरणनपावे। सातत्र
 वनचदसमप्यारमरचोथेआवे। अथमचहंगतिजा मडति।
 यदितनरकर्तानगतिचोथेपूरकत्रावच्यतेचऊंगतिपाय
 ति। पंचमतेगपारमसात्गुनमैरेसुरगमैत्रो। तरे। वंदोइकचौ
 दसथांनतजिअजरअमरसिवपदवैरे। ५२। नवमवराथा।
 नप्रकृतिहपा। ३। ईनांम। सवैयांशु। असारव्यानीवारओघ
 त्यास्यांनीवारभेदसंजलनतीननवनोकषायजानिये। ए।
 केडीविकलत्रैथावरआतपउदोतसूक्ष्मत्रौसाधारन।
 जीवनकीमातिये। निशनिशप्रचलाप्रचलात्ररुथीनगृध
 नीतीनोंमहायोतीकवहंनवाणियेनकंपमृगतिअनपू
 रवीप्रकृतचारनोमैगुनथांनकमैएछतीसनांनिये। ५३। अ
 थजिनवांनिकेयदौकीसंख्या कथन सौलेसैचौतीसकिरै।
 रलाषतेरासीठतरसयत्रहसा। अत्ररएलेषियेइक्यावन।
 कोआवलाषसहसचौरासीसूहसैसादेइकीसरएसिले॥
 कपेषिये। ताकोपदइकसौकिरैरतेरासीलाषसहसअठार
 वनदेषिये॥ पंचपदएतेसवद्वादसांरजिनवांनिकेयदौमनव
 यनेदगांनकोविसेषिये। ५४। चौदेगुनथांनकऊपरसाता

वनआप्रवहारकथनपहलेपांचौमिथ्यातइजैअनंतानं
 धीग्यारहअविरतप्रत्यारमानीपांचौगाह। विक्रयकप्रौत्र
 प्रत्यारमानीत्रसबंधचौथेआहारकचठेघटहास्पत्रावलै
 लहे। तीनवेदतीनसंजलननवैलीनदसैत्रसतनुजैवचन
 मनवारहैकहे। सतअनुनयवचनप्रौदारकतैरैमिश्रक
 मीनचारिगुनथानेसरहहे।।७५।। चैद्वैगुणथानविषेचारि
 आयुबंधतथाउदयविवरन। नरकआवपहलेबंधेउदे।
 चैथेहिलोपसुआवइजेबंधउदेपांचमैकहीनआवचौ
 थैलाबंधउदेचौदहलौसुरआवसातैबंधउदेचारिमैलह
 नरपसुजीवनकंपसुनरआवबंधचौथेतैआगौचढवेकै
 नसकताही।। चारौआवतीजेगुनथानकमैबंधेनांदिअ
 वनासजएसिधतिनकौबंधौसही।।७६।। आमुंथानक
 निगोदनही।। चारथानकसास्वादनजायतही। तीर्थकरस
 ताजहानपार्श्व। सूक्ष्मश्रौरकामीनसरीरंग। मनपर्यय
 परमाविधिसर्वाविधिमोक्षजाहि। सोकथन। असीनीरआ
 गियोनकेवलश्रौरआहारकनकसुर्गाआवमैनिगोदनां
 दिगाईये।। सूक्ष्मनरकतेजचायमैनसास्वादननौनत्रिक
 पशुमैनतीर्थकरपार्श्वे।। सबहीसूक्ष्मअंगकहेहैकपोतर
 गकारमानदेहकौसुपेदसंपनाइये।। विपुलमनपर्जेप्रौपर्मे
 श्रौधिसर्वश्रौधिगीकलहैमोक्षतातैइकैसीसनाईये।।७७।
 ।। सातनरकसोलैस्वर्गतथाअहमिंद्रउत्पतिकथनं।।
 सातैनिकसपसुछठेनरवृत्तनांदिपांचैमहावृत्तचौथेसे
 तीमोक्षसारहै।। तीजैइजेपहिलेतैआयजिनराजहोयजौन
 त्रिकसुरादेयाएकेडीधारेहै।। द्वादशमैसुर्गसेतीपचेंडीपसुहै
 यकपरकोआयौएकनरकोश्रौतारहै।। दधिइसुधर्मरानीलो
 कपाललोकांतकमिंरसमचारौनकमांहिलेधरे।। हललीक
 हाअथंजमेघसीगागाफीमलक्रोधमांनमायालोनिस्तंजमै
 परैस्यलीककावथंनगोमृतदेहतेलसेकषायनेरजीवमांनु
 ष्यनिमैश्रौते।। जलरेषवेतदंरुपुरपाहलदरंगद्यानतएच

१

७

सिधमोक्षलहैनमोकारहै७५सोलैकषायहृषंततथाफलापाहनकरिषाथंनपापरकौसाविनाकंध

रजावसुगोशिक्षकोकरो॥ ४८॥ चौतीसजावचौदैगुनस्यातक
 विषेकथन॥ पहिलेमिथ्याअनबइसरेविनांगतीनलेत्रप
 तीनअवृत्तनरकदेवचारमैपसुपांचेलेस्पादोयसातैलौ
 नदसैलगक्रोधमांतमायातीनवेदनौविचारमैसेततेरैत
 रजवजीवनअसिधचौदैपंचलजुगपानवञ्चअचञ्चवारमै
 चौतीसौजावकहेचौदैगुणयांनकमैवेकनीसवारहमैमै
 होअविकारमै॥ ५०॥ उनीसजाववारहगुणयांनकमै॥ उ
 पसमचौथैगपारैवेदकहेचौथैसाचांयकचौदैचौथैदेसहे
 तपाचमै॥ गपानतीनतीजिवारेमनपजैचुवेवारैचारितस
 रागञ्चवेदत्रोकह्योसंचमै॥ अधितीजिवारेउपसमचारित
 रेहीचायकचारितवारैचौदैकर्मवांचमैपंचलद्वचायक
 दूरसगपानतेरैचौदैनमौजावउनईसचूदोनर्कआंचमै॥ ५१॥
 चौदगुनयांनकमैत्रैपनजावविचारा॥ सवेया॥ चौतिसवतिस
 तेतीसञ्चितिसशकतिसशकतीसशकतीसमानअगईसअव
 ईसवाईसशकईसवीसवारमैयांन॥ चौदैतेरैअतमयांनकपंच
 जावसिधालेजांन॥ सम्पकगपानदरसवलजीवतनिहचैसो॥
 नूआपपिञ्चान॥ ५२॥ आरौंगतिमैआश्रवधारमौरा॥ वैक्रि
 यकदोयविनांनरपचमंतघरआहारकदोयविनांनरेपनत्रि
 जंचहै॥ औदारिकदोयदोयआहारकषेडवेदपांचविना
 देवतिकेवावनकौसचहै॥ आहारकदोयदोयऔदारकन
 रनारञ्चहौविनाइक्यावननर्कमैप्रपंचहै॥ चारौंगतिमांहि
 त्तैमैआश्रवसरूपजांतनमौसिधनावांतजहानांहिरंचहै
 ५३॥ आरौंगतिमैत्रैपनूजावमौरासास्वतौस्वजावपंचन
 वसिधवंदतहौतीनौगतिविनांनरकैपचासदीसहै॥ छमि
 केआवसमकितविनांनमनपजैचारितदौगपारैविनयसुग
 नतालीसहै॥ सुजलेत्रपातीननरनारवेददेसदृसएईचहै
 जावविनांनारकतेतीसहै॥ हीनतीनलेत्रपाषंवेदचारि
 जावनांहिसुजलेस्यानरनारसुरकैचौतीसहै॥ ५४॥ पठले
 स्पावालेमिथ्यातगुनयांनबंधमौरा॥ विकलत्रैसूक्ष्मसाधा
 रणअपजापतनर्कगतिआनपूरवीनरकआवहै॥ मिथ्या

माहिले स्यातीनवांधे इकसौ सतरे नवौ विनापी तके अबोतर
 सोजावहे ॥ इकिंदी थावर औ आत पइ नतीन विनापद म एक
 सोपांचबंध कौ नपावहे ॥ पमुगति आव आंन पूरवी वदोत चार
 विनासुक कलसो एकवांधै पुन्यचावहे ॥ ए॥ चौरासी लाषज
 बोरा ॥ सातलाषष्टधी काय ॥ सातलाष अपकाय ॥ सातलाष
 तेजकाय ॥ सातलाष वात है ॥ सातलाष नित्य औ इतर सातसा
 धार एतसलाष परते कएके डीगात है ॥ वेतेच वइं डी दो दो मानु
 षवोदहलाष नर्क सुर्ग पमुचार चारलाष जात है ॥ चवरासी
 लाष जात मोऊ परछिमां करोह मतै छुछिमा करी वैर कियो
 घात है ॥ ए॥ त्रैस विप्रकृतिनांम ॥ नरक पमुगति आंन पूरवी
 प्रकृतिचार पंचदिय विनां चर आत पव दोत है ॥ साधारण सूक्ष्म
 औ थावर प्रकृति तैरे नर आव विनां तीन मितसो लै होत है ॥ सै
 ताली सघातिया की त्रैस व प्रकृत सवना सनरा तीर्थ करणान
 मई जोत है ॥ देव निके देव अरिहं त है परम पूजति नही कौ मं व
 पूज होहि ऊंच गोत है ॥ ए॥ आगति विषे वंध प्रकृतिनांम औ
 दरिक दोय अहार क दोय नर्क देव गति आ व आंन पूरवी दो
 वषां नी है ॥ विकल त्रैसू छ म साधारन अपर्जा पत सो लै विन
 सत चार देवके प्रवां नी है ॥ एके डी थावर आत पतीन प्रकृति वि
 नां नर्क एक सत एक वंध जो गजां नी है ॥ तीर्थ कर आहार क विना
 पसुं सतरे नरके वीसासो सवना सै सिवयां नी है ॥ ए॥ मृदू म
 वारेष रूवा इ सजल सात चात तीन तत रुकाय की दस हजा
 र है ॥ पंषी की वदत रै सहसवीयाली ससाप आगदिन तीन
 दोरू डी वर सवार है ॥ ते इं डी दिन उन वास च व इं डी छ मास स
 रीर म्प पूरवां गन व आवधार है ॥ मछ कौर पूरव मनुष पमुती
 नपल्प सागते तीस देव नरकी की सार है ॥ ए॥ षठ पांचती
 न एक षठ तीन षट् चार दो दो पांच एक एक चौ षट तीनै ग
 है ॥ नव चौ चौ तीन तीन पांच एक सो पारह दोय दोय वती ॥
 सपांच तीन तारे ए लहे ॥ कल्पकाद वाई सके सवदौ सै शकता
 ली सुक् एकके पारह सौ पारसरदहे ॥ दोयलाष सव सवह

भारतवर्षे वाणसर्वमै विस्पाले प्रतिविं वंती मै कहें ॥ १०० ॥
 ज्योत्स्ना कालना ब्रह्मपतेर मुष्टे अस्तवरके च ॥ तुष्टे सेन
 मासत दरव है ॥ आपसे है परसेन एक समै ॥ अरतनाप
 जौ के लो न कहें जौ हि अस्तवतव है अस्तकह
 नासका अभाव अस्तवतवनासक है अस्तना हि
 नाहिनास अस्तव है ॥ एकवे कहें जौ हि अस्तनास अस्त
 तम स्याद्वादसेती सातना सधेसव है ॥ १ जीव है अनंत
 एक जीवके अनंत गुण एक गुण संघ परदे समा नियो एक
 परदे समै अनंत कर्म वर्गी है ॥ एक वर्गी अनंत पर
 मान् वां नियो अमुमै अनंत गुण एक गुणमै अनंत पर्याय
 एकके अनंत जेद जौ नियो ॥ तिन तै फुएये अनंत तातै हेय
 मे अनंत सब जाने समै माहि देव सो वधानियो ॥ २ छपे चर
 चा मुखसे नतै मुनै प्राणी नहि कानना के ई मुनि घर जौ हि
 नाहि न धे फिस्त्रानत ॥ तिनको लाधि उपागर सारय हस
 तक चनाई ॥ पढत सुनत है बुद्धि सुच्छ जिनवांती गाई ॥ इस
 मै अनेक सिद्धांतको मथन कथन ज्ञानत कहं ॥ सर्वमै हि

नाम है जीवना वह मसर दहा ॥ १०३ ॥ इति श्री चर
 तंतराय जीवत संपूर्ण ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ १
 संगुण ॥ अथ वारघडी सरत की लिखते ॥ दोह
 मनमौ अरिहंत कौ ॥ नमौ सिद्ध आचार उपाध्याय सबस
 कौ ॥ नमौ प्रचपरकार ॥ १ ॥ न जन करौ श्री आदिकै अनंत नामम
 हावीर पीर्य करवौ वीसकौ ॥ नमौ ध्यान धर सीस ॥ १ ॥ तिन धु
 प्रगटन ई संसार ॥ नमस्कार ता कौ करौ ॥ इक
 जावानी के मुनत ही ॥ न ठौ परम आन
 दा ॥ ऊही सरत कछु कहन ही ॥ वारघडी के छंद ॥ वारघडी के
 छंद वना ऊये मेरे मतुर्ग ई ॥ जैन पुरांत वधानी वानी सौमै मु
 निपार्शु गुरप्रसाद ज विद्यत की संगति यहुन पजीवतुरार्शु सरै
 त कहै बुद्धि है थोरी ॥ श्री जिनतामसा हाई ॥ कका करत सद
 फिस्वौ ॥ जामन मरण अनेका ॥ लषचौर सी जोतमै ॥ काजन सु
 रौए का ॥ काजन सुधरोय क दिवाना ॥ तै मुं न अशुन कुमाया

तेरी मूल तो हि दुषदाई ॥ वरुतेरा समजाया ॥ नटकित फि सौच
 कुगतिकै नी तरि ॥ कालत्रनादिगमाया ॥ सुरतसतगुरसीधन
 मांती तातै जाजरमाया ॥ धषषाशुवीमतलषै ॥ संसारी सुषजा
 नि ॥ यह सुष दुषकामूल है ॥ सतगुरु कही वषा नि ॥ सतगुरु कह
 वषा नि जांतय ह्दमति होय अयातां ॥ विना सीध सुष इत इं ई न
 को तै मीवी करे जानी ॥ इह सुष जांनि घानि है दुषकी ॥ स्क्पान
 मं नू लानां ॥ सुरतपछि पछिता वै गाजवही होय तरकजवथ
 ना ॥ पागंगा गुरु निरंयतै ॥ सत्पवांती मुषजाष ॥ और विकार स
 कलतजै ॥ इह थिरता मन्राष ॥ यह थिरता मन्राष ॥ चाधरसजै
 अपनो मुषचा है ॥ और सकल जंजाल इरि करि एवति अवा
 हा ॥ पचइं डी वसराष आपन कर्म मूल कौंदा है ॥ सुरतचेत अचे
 तहो ह्मति और सीरवी त्याजा है ॥ धषषाघाट सुघाटमै ॥ नावल
 गी है आपजै अवकै चैतै नही ॥ तौ गहरे गोतेषा ॥ गहरे गोते
 षाय ॥ जायवह कौंन निकासनहारा ॥ समै पाय मानुषा गति प
 ई ॥ अजहं ना हि संजारा वारवार समज ऊचेतना ॥ मानै कह
 हमार ॥ सुरतं कहै पुकार गुरोने यौ होवै निसतरौ ॥ ७ ॥ नतां ना
 ताजगतमै ॥ आपस्वारथ सब कौंश ॥ आनिगादजिस दिन परै
 को ई न संघाती होश को ई न संघाती होई न साथी जा दिन काल
 सरतावै ॥ सब परिवार आपने सुषका ॥ तैरै कां मन आवै ॥ आगे
 मदमै छुकि रह्यो है ॥ मैमैमै विरलावै ॥ सुरतसमफि होय मति
 बोला ॥ फिरिय है दावन आवै ॥ ८ ॥ चंचल विकल मत तिस म
 नकौं वस आना ॥ जव लगमत वसमै नही ॥ काजन होय निदान क
 जन होय निदान जानय ह्वसना ही मततेरा ॥ पांचौं ईं डी छगो
 वेर मतत ॥ इनका जयाचेरा ॥ रागा दोष नर मोह समीपी इनि
 आनि मिलि घेरा ॥ सुरतजिस दिन मन थिरहोवै तिस दिन है
 इनेवेरा ॥ ९ ॥ छछा छहै एसखादमै ॥ रह्यो छहं रति मानि ॥ छकि
 रह्यो छहै नही समजत नही आपान ॥ समजत नही अज्ञान
 ग्यान ध्यातय ॥ इतखादनमै राओ ॥ औरै चिता लागि रह्यो है मा
 न ध्यान मुकाचौ ॥ जैसै कर्म स्वावतयाकुं ॥ तैसी ही विधिनाचौ

सूरतरह्यौचङ्गतिमैजटकतमित्योनसतगुरसांचौ॥१०॥
 जाजागिसुजातनरयहजागनकीवार॥जौत्रवकेजागोन
 ही॥तौफेरनहोइसंभार॥फेरनहीहोइसभारसारयहजोत्र
 वकेनहीजागौ॥जौजागौनिरनयपदपावैजरामरननवन
 गौ॥नांतरफसैनवसागरहाथकुचुनहीलागौ॥सूरतहोयन
 लाजिवतेरासंसारीसूषत्यागौ॥११॥ऊजाऊरिपिछोरिकौ॥
 कहुंतौहिसमजाय॥जामैतैंवासाकीयासोतेरीनहीकाय
 सोतेरीनहीकायजायसंगतुजैत्रकेलाजानांतैनेंघरवहु
 तेरेकीनेंआवतजातमुलानां॥थावरपंचत्रसपंछीमनघ
 जयादेवेकहीदांन॥सूरतवहुतकालतैनुगतेआयानह
 पिछानां॥१२॥ननानरपदहैनलो॥त्रैसौत्रौरनकोशजेय
 संभारेतेतरे॥नवजलपारजसोइ॥नवजलपारजसोइ
 विज्जततिरेविचारे॥तीनकालतिनस॥हीपरीस्पाकर्मचूर
 करिफारै॥आवतजातजागतसौचुंठतलोकालोकनिह
 रे॥सूरतजैत्रैसासुखवाहैचेतौविगिसवारे॥१३॥टटाटाव
 तिनकीतेवूडेसंसारफिरेजटकतेजातमैतिनकौंवार
 नपारतिनकौंवारनपारकहीहैफिरैविचारे॥नरतिरंजुं
 नरकदेवांगतचारौंधमनिहारेजांमनमरनकीयेवहुतेरेसहेम
 हाडखनारे॥सूरतकौतगात्रापकमायेकिसंपैजाइचारे॥१४॥
 वगववकिरह्यौकहा॥चेगौकौनसंभार॥छोडिवाठसंसारकौ
 जौदूद्वैजगजाल॥ज्यौंदूद्वैजगजालहोलदेवूरिक्हीडुषपावै॥
 सतगुरकहीमानलैसिष्याफेरनजमैआवै॥छोडैसंगकुमतिषेद
 कौंसौनुमकुंवरहकावै॥सूरतसंगसुमतिकौलीजे॥सिवपुरजाइ
 दिषादेखावै॥डडाडिगमतिजायत॥अडिगहोइपदसाधिदिद
 भागहिपरमाभकी॥जोसुखलहैसमाधिजोसुखलहैसमाधि
 धितजिआषाषोज्योनाईसिद्धरूपतैरेघटअंतरकहादुदण
 जाई॥जडपुदालकूंनिन्नजांनित्मिदैकरमडुषदाई॥सूरतआ
 यमैआषासोधौयहसुतगुरुफुरमाई॥१५॥दढाढोरीछोरिदेदि
 गइनकीमतिजाइ॥कुगुरुकुदेवरूपानक॥नुमतिचित्तलगाय

तुमतिचित्तलगायनावातेजिनराकुदेवकुवासी॥येतोक्ं शृण
 तिदिषलवैसोडुषमूलनिसानी॥इनतैकाजाकनहीसुधरैकर्म
 रमकेदानी॥सूरततजिविपरीतेइन्हैकीमतपुरआपवषानी
 गणरणत्रैसोकरो॥संवरसस्त्रसंजरि॥कर्मरूपियात्ररिवडौ
 ताहिताकि कैमारिताहिताकि कैमारिवारकरकर्मरूपअरिसो
 शैहैअनादिकेएडुषदाईतेरीजातिविगोशैनारायणपतिहर
 अरक्रीयानैवभौतकौशैसूरतग्यानसुनंटतहांजागोतिनयाक
 जडघोशै॥१७॥ततातनतेरानही॥तामैरह्यौलुनाशतेडैनाता
 तनकमौ॥ताहिकह्यौपतिजाहि॥ताहिकह्यौपतिजाशपाइसु
 षकैरदौजागौवासीधिनमैमैरधिनकमैउपजेहोयजागतमै
 हासी॥वाकैसंगवटैवहुममतापरैममहाडुषफासी॥सूरतनिं
 नजातिइसतनकौयासैरहौनुदासी॥१८॥यथाधिरपदकौचि
 योधिरपदनहीहोश॥धिरतागहियरनांमकी॥धिरपदपरसैसोय
 होयसुषगतिआरोसूंछूटै॥प्यानध्यानकौकरैह्यौडौकर्मअधि
 जकौकूटै॥यहजाजालअनादिकालकौसौत्रैसीविधिछूटैसूरत
 धिरपदकैसंपरसैसिवपुरकासुषलूटै॥१९॥ददादरवडुंकहै
 शगटजागतकेमांहिऔरदरवसवषेलहै॥प्यानीमानतनांहि
 प्यानीमाततनांहिरववैसोधतनकेजाने॥मांटेभूमिसखलके
 जोधनजयमैप्रगटवषांनै॥पुदगालजीवधरमअधर्मकालअ
 कासप्रवांनै॥सूरतइनदरवानकीचरचापानीगिनैप्रजानै
 २०॥यथाध्यानजागतविषैप्रगटकहौहैव्यारि॥अरतिरुंधरम
 सुकलयेजितमतिकहेविचारि॥जितमतिकहेविचारिआरिये
 ध्यानजागतकेमांही॥अरतिरौइजगतकेकरतायातेसुजाते
 नांही॥धर्मध्यानकेसोतरधारकासुमसुषहोतसदाईसुरलशुभ
 लध्यानकेकरतातेसिवपुरकौंजाश॥२१॥ननातासैकरमजव
 नेहधरैतिजमांहि॥नटकीकलाजागतविषैनेहकरैछिनमां
 हिनेहकरैछिनमांहिते॥गआयानहीफीसावैज्योपानीमैरहे
 कमलनरजुनेदनहीपावे॥सुनअरअशुनएकसेदोकरीऊन
 हापिचतावै॥सूरतनिंनलषैत्रैसीविधिकरमकहांदिगाएवे

२३। एपाप्रजुअपनौ लमौ अरपरसंगतिद्योहोरापरसंगतिआ
 अरवधे। दिहकरम। ककजोर। देहकर्मककजोरवृजेअरवफिरि
 निकसननहिहोइ। आअरवबंधपडीहैवैडीलगोउपावनकोइ
 यातैशीतिधरोसंवरसोहितकरिकैदिलजोई। सूरतसंवर
 कौआदरयेकर्मनिर्जराहोई। २४। फफाफूल्पोहीफिरै।
 फोकटदेधिननूलफासीफंदअनादिके। करतोडनकासूल
 करतोडनकासूलनूलमतिदावनलौतैपायौ। अमतेनवसा
 गरसौमतिषागतिसोपायो। याहीगतिसौअंतरीथकरकेव
 लापानउपायौसूरतजानिबूकमतिवृकेयहसतगुरुसमज
 यो। २५। अवाविसनकुविसनहै। विसनवेगित्त्पागि। वस
 करिपांचौइंदरी। सुनकारेकौलागिसुत्रकाखिनकौलागिस
 गिकरविसनसीतयेनारी। जुबंधामिषसुरापांनमधुषेठस
 नांजुतथारी। परधनचोरीअरवेस्पकौत्यागकरैपरनारी।
 सूरतइसनवमैसुषपावे। परनवसुषअधिकारी। २६। अना
 नूलपोहीफिरै। अरम्पोमहामिथ्या। नेदनपावेग्यानकौ। थ्या
 तैआवतजातयातैआवतवातसुननेदगपांतनहीपायौ
 क्रोधमानलोनअरमायाइनसौनेहलगायौ। परमारथक
 रीतिनजांतीस्वारथदेधिनूलाना। सुरतनेदग्यानतिनजा
 नित्ताप्यौतिनमिथ्यातमिठायौ। २७। दोहा। ममामतितिनक
 सही। तिनमलकीनीहरु। मत्तबालेमलसुंनरे।
 २७। तिनकौंनहीसहरु। तिनकौंनहीसहरुहरुहै। कुमांतीकु
 मतिविचारै। तिनकैकुगान्तिनैसमजावैपकडैनवजनक
 र। सुंनपापकेनेदनजांनैजीवाअनाहकमारै। सूरततेनर
 परेकुसंगतिकिसविधिदोषनिवारै। २८। पायांयांनिपतौ। बुरे
 मांमैहोयअकाज। यहममतामैफसिरहो। याहिनआवैला
 जा। याहिनआवलाजवजनहि। कहौतेरोद्योकोहै। तातम
 तवाधवकामनिसुतिवइतकौसुषमाहै। आगेजांमप्रगनहै।
 इमनभैयहतुमकौंनहीसोहै। सूरततजिअस्यातस्यानपत
 तवसिवपुरसुषहोहै। २९। अरारमौअनादिके। रचिविधि

मनसौधी तिरसराचौं नही आतमा ॥ लघी नरसंकीरीत
 लघी नरसकीरिति ॥ मीततै विषयनसंग सुषमान्प ॥ आतमी
 कस्यै हेसि वदायक सोतै नदी पिछांनी ॥ जिनरसरीतिल
 धी आतमकी सोसिवपुरकारानां सरतवेन वमुकति जाहि
 गतिन आत्त ॥ हित आता ॥ ३॥ ललालपद्यौ दीर है ॥ लगे
 जतकैने षलष्येन आपसरूपको लहौ न सुधविवरुक्त्त हो
 न सुधविवेक एक तै पर अप्या न ही वृक्षा ॥ वस्तु विनासी
 नहा ॥ अप्रकासी कटार मतसंग फफा ॥ सरतवेन वपार जये
 हेति न कौं अत्मसूजा ॥ ३॥ वावावा संगति वुर ॥ तासौ है इ
 कूनावा ॥ सासयली संगति जलीता मै सहज सुजा वै ता मै
 सहज सुजा वै है सो सहली मोप्यारी तत्वद्वरकी चरवाति
 नको तजे कुचरचान्पारी ॥ नरमजावसौ डरिर है त है धरमध
 नकी तप्री ॥ सरतय हवंचा मेरे मनचन मित्रन सोपारी ॥ ३॥
 ससासो ई सुधर है ॥ सुन सुधरकी सीषा सदा रहि सुन ध्यात
 मै ॥ स ही जैनकी ठीका ॥ सहजैनकी ठीकति नूकै ॥ अकब्रु
 नही नावै ॥ आगम औरु अध्यात मवानी ॥ सुनै सुनै वै गावै
 कुकथा चारि विगार जगतकी तिन कौं नही सुहावै ॥ सर
 तसो सजन मोन वैते सिव पंथवतावै ॥ ३॥ षष्ठा पुढुकनि
 वारे कैषि माता वचित लाया ॥ पुलैक पाद अभासके ॥ धैरकर
 मउषदाय जाय ॥ धैरकर्म उः षजाय जाय वह धिमांता वचित
 चितलावै होय अभासता सजन न वकोपानी जय ॥ जगा
 सदा मगतता अप्रतै मन मैरीरी ऊ आय सुषयावै ॥ सरत
 न्यारनि न सवनि मै सो आत्त हित लावै ॥ ३॥ सो साधु
 जगतेह ॥ सो साधु जगतेह जो तै मै सै विचारे ॥ सोषवात है
 सेव संसारी ॥ तिन कौं नही निहार संकल्प विकल्प जगके
 जितने तिन उ समन कौटारे ॥ सरत सो साधु जन असे सोसिवपुर
 के पद्यौ ॥ ३॥ ललाल छमी सिव वरै ॥ नल छनकौ वैवा
 लषौ सुलष अपरषके ॥ तजे कुल छिन देव ॥ तजे कुल छिन दे
 व देवल धिसिध रूप कौंधो वै ॥ अरहंत आचारि ज उ वजायसा

संतोष

न ससासोप्यानां सदा सुधवचन लषलैह सदा रां है संतोषमै २७५

नसीसनमावै॥जिनमतदेघिसिधगुनआरौयहृदिदतामन
 लावै॥सूरतइहपरतीतथरैमनसोसम्पकपदपावै॥३६॥हाहा
 हूर्तहीरहै॥कैपरवसपुषपायकोनआपवसिद्धजियेहोय
 परमसुषदाय॥होयपरमसुषदायपायपदअनरूपीअविना
 सी॥केवलपांनदरसजहांकेवलसिधपुरीसुषरासी॥आवौक
 रमछिपावैजिनकेआवौगुनपरकीसी॥सूरतसिधमहासुष
 पावैकालअनंतघोसी॥३७॥ललालेकैपरमपद॥लघिलघि
 गएंनिरवान॥लोकसिधरऊपरचढे॥लयौसिधसिवथान॥
 लयोसिधसिवथानजिनोनैसोही॥सिधकहयि॥सूरतसिधक
 हैअसैंगुरजैनपुराननगाये॥३८॥दोह॥सम्पकपदकोजेल
 है॥करैवैनगुनघीति॥देवधरमगुरगपानको॥परवसहैनिज
 रीति॥३९॥वारषडीहितसोकही॥नहीगुनइनकीरीस॥दोह
 तोचालीसहै॥छंदकहेछतीस॥४०॥इतिश्रीसुरतजीकीवार
 षडीसंपूरणः॥अथहसरीककावतीसीलिष्यते॥ककाकेव
 लपदनिजजूलिमतिमेरेमनवाजाई॥केवलपदविनमेरेज
 वजगतनरमाई॥१॥षषाषलअलषषोजैनही॥मेरेमनवभ
 ई॥षलषअलषषोजैतोहेरेजीवअलषलगाई॥२॥गगागति
 गतिजठकतत्फिरौमेरेमनवाजाई॥वहरूप्याज्येमेरेजीवसाग
 वणाई॥अघघापस्यौघाटकुघाटमेमेरेमनवाजाई॥अवनही
 चेततौहेरेजीवगोत्पाषाई॥अननानावनगवनौकारकीमेरे
 चढेसमकतिमेरेजीवजारनराई॥५॥चतुराईसवछोडिदेरेमन
 वाजाई॥आत्मदरसनमेरेजीवसमकिचतुराई॥६॥छुछाछुल
 वलपरपंचछोडिदेमेरेमन॥छुलवलकरिसोहेरेजीवआत्म
 छुललाई॥७॥जोगसुगतिजानीनहीमेरेमन॥जोगसुगतिवि
 नहेरेजीवमुक्तिनथाई॥८॥ऊकाऊचपापकोमूलहैमेरेमनवा
 ऊकटतैबुड्योहेरेजीववसूरुपराई॥९॥याजायोहीतेरीकरि
 रह्योमेरेमन॥यांनहीतेरीहेरेजीवयुहीलपटाई॥१०॥दयामि
 य्यादहीनटेकतजिमेरेमनवाजाई॥टेकतिहारीहेरेजीवअनादि
 लगाई॥११॥पंवावाकर्मनकेवसिपस्यौहेरेमनवाजाई॥अवइमि

कुवगहेरे जीवन्नवसर आर्श ॥ १२ ॥ डडा डंड कचोई सुविषे हेरेमा ॥
 आवतजावत हेरे जीववो होविधिनाई ॥ १३ ॥ टेहाटो कदई अ
 मदेवनै हेरे मेरे मनवा नाई ॥ कवडूनटोके हेरे जीवजिनवर
 माई ॥ १४ ॥ रणरण कर मनको नित्यवधै मेरे मनवा नाई ॥ हो
 नवीतो हेरे मेरे जीवनीदलगाई ॥ १५ ॥ तूकतीं तही जोगता मे
 रे मनवा नाई ॥ तू नकसी को हेरे जीवतेरो नकहाई ॥ १६ ॥ थिर
 नेर है थिर नारही मेरे मनवा नाई ॥ थिर नैरै हसी है मेरे जीव अ
 थिर ज्यो छाई ॥ १७ ॥ दया धर्मको मूल है मेरे मनवा नाई ॥ करि
 करुण हेरे जीव समझिषटकाई ॥ १८ ॥ धया धर्म विनं भूका
 जीवरो मेरे मनवा नाई ॥ लछातरुणी हेरे जीवा वहु दुषदाई
 १९ ॥ नर नवरतन गुमाईयो मेरे मनवा नाई ॥ फिर पछितासी हेरे
 जीव ज्यो मूल गुमाई २० ॥ पापर पुडुल एजिन है मेरे मनवा
 नाई ॥ छुटति रजत हेरे जीवचेतन राई ॥ २१ ॥ फफा फिरि फं
 दा विषे परै मेरे मनवा नाई ॥ ज्यो दीयाग मे हेरे जीवपतंग जरा
 ई २२ ॥ बुद्ध विकल्पना डुरि हेरे मनवा नाई ॥ निर्मल निज गुण
 हेरे जीव सोधि सुषदाई २३ ॥ न जानमना वहीय मेधरो मेरे
 मनवा नाई ॥ भावनक्ति ते हेरे मेरे जीव नवउतराई २४ ॥ मम
 न मृग विषेय नवनविषे मेरे मनवा नाई ॥ दोरत इतउत हेरे जी
 वलल चिलल चाई २५ ॥ यो वन नदिया पुरि मे मेरे मनवा ना
 ई २६ ॥ पारन पायो हेरे जीव गार करहाई ॥ २७ ॥ रगरतन पडे परहा
 य मे मेरे मनवा नाई ॥ सब क्या करसि हेरे जीव उपावनथाई
 २८ ॥ लोनल हेरि सिरु परै मेरे मनवा नाई ॥ वही जात है
 मेरे जीव थागजनाही २९ ॥ वावा वडुष नूल्यो अवइहा मेरे म
 नवा नाई ॥ छेदन जेदन हेरे मेरे जीव फेरि फिर आई ३० ॥ ससा
 समता सरिता स्नान करि मेरे मनवा नाई ॥ पाप कर्म कज हेरे मेरे
 जीव क्यौ नथूपाई ३१ ॥ हा हां हसि हसि करता है मेरे जीव संकल
 आई ३२ ॥ घक्षा द्वायिक समकति कै विना मेरे मनणे मुक्ति न
 पासी हेरे मेरे जीव वडुष पाई ३३ ॥ नेमकी तिंकी वीनती
 मेरे मनवा नाई ॥ सुनिहिर है धरि मेरे जीव सदा सुषदाई ३४ ॥ इति
 हाय हाय अवको करे मेरे ३५ ॥

करि

अथती वारषडी बीजाकी ढालवा गोवीचंदकी ढालमें लिखते ॥:

७६

दोहा ॥ श्रीजितवरवृषकूनम् ॥ नमूजिनोतमवाणि वारषडीवप
देशमया रचुस्वपरहितजाणि ॥ ढालगोपीचंदकी ॥ ककाकाई
रेहेकरतौ फिरै तुआलतुंजाल सीवनमानरैगुराकी तोहि ग्या
नीजीव ॥ विषयजोगमैरे देलियं द्यौर है तुवां धै कर्म ॥ धर्मनज
गौर कयाहोयसर्म ॥ पानीजीव ॥ १ ॥ ॥ घः प्राखे द्यौरै षे द्यौ कर्म तौ ॥
तुनुम्यौ अतोदि ॥ घोटनदी सैरे इनुको तोहि ॥ पानीजीव ॥ घे म
स्तगपुररै जे नाषिकैको ई विगले जाय ॥ तुंवे मोहकिरै षडी म
टगपाती वशगो गारम्योरै गरम्यो तु फिरै या विषयामाहिने
दी लषे छैरे आत्मरूप पानीजी ॥ घीरना छैरे घारी लारताना
उः रवमैसयसायकरै गोरै आत्मरूप ॥ पानीजीव ॥ ३ ॥ घयाघर
तुरै मुल्यौ आपणो दुदपररूप ॥ जोघरुजाणपौरै सोतोनाहे
पानीजीव ॥ जातै थौरै रजयसंकहै सोदिसुषरूप जहल
षे सुषरै सौ दुषरूप ॥ पानीजीव ॥ ४ ॥ ननानानरनवरै इरु
नपायकैतै पकीनोना प ॥ पुत्रादिकमैरै रद्वौ तुजाय ॥ पा
नजी ॥ ये मुतलवकेतैरे नाय है तुकूं नरमाय ॥ विनमृतल
वतौरै हितु मुतिराय ॥ पानीजी ॥ ५ ॥ चचाचोरै रै तुगमै तुकरै
और कषाय अजहती चकर्मतुरै करै परतह ॥ पानीजीव
चहै सुषरु रे दुःख कुंनै चहै ॥ होवै कि मजाय ॥ वोषधतुरारै
अमकी पूजातीजी ॥ ६ ॥ छे छे छे देरहो नक्षफासी कु योत्र
वरपाय ॥ पलकपलकमैरै छी जै छे आप पानीजीव ॥ पावि
नती तुरै गतीमै नाय है ॥ एतनत्रय रापता यगहो नैरे करम
साय ॥ पानीजी ॥ ७ ॥ जजाजोवतैरे योदिन आरि कोंया ऊही
काय मलमुत्रादिकरै नसायामांघ ॥ पानीजीव ॥ ८ ॥ दगोदेय
कैरै तो कृनाषसी इरगति कै माई तयाकारणरै मतिपा
कमाय ॥ पानीजी ॥ ९ ॥ ऊकाऊगडोरै करमनितै यजो निर
नक्ति मथाय ॥ दुखदैवोरै तोहरकवनाय पानीजी ॥ नागत्रिनं
तोरै अक्षरको जितो येरहसी पानफेरिनमी लसैरै आत्मन
नाजानी ॥ १० ॥ ननानरगायैरै करी सीधात सुनी परसुडीय

यापरकृत्याप्येरेनिजलायज्ञानीजी० द्वावपडोडैरैथारिस्क
कैपीछेपिठितायफेरिनमीलसरिआराधनमायग्यानीवि
२०॥ द्वादालोरेहोमिथ्यातकुजिनवचनरधारिरागहोषम
दरेमोहकूमारिग्यानीजीः शिवनहिमीलसरिमुदमुदाय
उरजसप्रमाया॥ निजसुद्धिपामीपेरशिवलेजायः ग्यानीः
वंतावाकरेरेतुतिडुल्लोककोनुल्पोनिजरूपः॥ परवसिहो
यकैरेमूओनवकूपग्यानीजीदेवीध्याडैरिषेतरणालजोःशु
ज्यावक्ररूपःनाहिलीघोडैरैआत्मरूपग्यानीजीवः॥ १२॥ द्वा
डोरेश्रीगुरकीगहोमतिकिरोसुछंदसोहविटपयैरनापेगे
फंदग्यानी०॥ तूएकाकरितोरीसायजोकरसीकोजायः
फिरजिनवानरियामिलसीनाहिः॥ ग्यानी०॥ द्वाहदुदोरेयो
मलमुत्रकोअंगत्यागपैजायः॥ द्वाहोनिजप्रदरेसिवपदेदाय
ग्यानी॥ आतमथारोरेदुदोपानेहेडुज्योन्हीओरनोतविग
योरडुजीवोरग्यानी०॥ १३॥ एणाणायायैरैमंत्रणोकास्कोया
जाकैमाहि॥ अवतूकारैरैचविंछैजायः ग्यानीजीवः॥ याति
उघेरैरंककरसूकरेकानासुणि॥ आकतेनीध्यावोरेत्यागे
वाके॥ ग्यानी॥ १४॥ ततातोकरेतरणउपायछोसोदियोवता
य॥ जोकछुलागैरैतोकुंडुषदायग्यानीजीव॥ सोमतिवोले
रेपरकूमतिकहोयोधरेवीआगयातैमीलसरिसिवनी
रधार॥ ग्यानी०॥ १५॥ यथाथारोरेकजसुधारैलेयासंगति
यायः॥ परपुल्लमैरेकहारहौलूजायग्यानीजी॥ पाचौंड
डीरेवसिकरिजीतलेपचीसकषायः॥ जिनमतिमांहीरेपे
त्रवतायग्यानी॥ १६॥ द्वादेहीरैदेवलदेवछेःयोआत्म
रूपः॥ इमर्जाएपासुरैसौरजिनरूपग्यानीजी०॥ येजिनप्रति
मांरेजिनमंदिरकहै॥ तेहैअवहाणप्रतिछंदतैरैपावनीरु
राज्ञानी०॥ १७॥ ध्याधनवुरैपरजवलारहैसोअवक्रुमारः॥
जातैडुरातिहैसो॥ त्यागोनायः ग्यानी०॥ जोधनविनसैरैसे
किमओरकअविनात्रीदायाग्यानी०॥ १८॥ ननानोहीरे
जाणियदार्यतदसमोतहिजेयो॥ तिनमैनीअवैआत्मआ

आत्म आदेयः ॥ पानीजी ॥ याही पिछाणेर सोजाणे नाहि
 वोन चतैयहनां हि ॥ सम्पकडष्टीरे जाणोन वमा ॥ पाननी
 २७ पपा परणोरे मुक्ति वयू अरवतो हि कडू उपाय ॥ जास
 गजोगेरे सुष अघायः ॥ पानीजी ॥ चादरा वेधत पराहा
 णोप हरिल्यो वसतर बुत संवर ॥ सील स्वारी रेजा वना
 पाच ॥ पानीजी ॥ २१ ॥ फफा फेरौ रे जागमें तो हि कू वैरी
 यो कर्म सर्व विगाद्यो रे थारो नर्म ॥ पानीजी ॥ डुरगति
 मा हरि अोर ति गोदि मपट कै गो फेरि ॥ जातै सि वागति
 कै सो वे गो हे शि ॥ पानीजी वा ॥ २२ ॥ ववा वराणो रे में हि
 आपणो तु कौ न हि धा शिवे रवे रमै रे तो हि कडू पुका
 रि ॥ ज्ञानीजी ॥ जव जम आसरित वतू जावसी सरसी न्ही
 काज ॥ ना हि नरो सो रे कर ल्यो ति जकाज पानी ॥ २३ ॥
 नना नरमौ रे तु यामो हतै अरव मो हिनु पारि दोष सह
 ततुरे मुनि पद धारिः ॥ पानीजी ॥ मुत्पवत दी सै रे तो कुं
 कवि नसा आ वकवत धारिः नां हि मो हे अरवे ना सै गो म
 रि ॥ पानीजी ॥ २४ ॥ ममा म्हारी रि म्हारी कर तो र हो न हि
 हिये विवेकः थारी लार नरे कौ कजा सी एक ॥ पानी
 जी वा ॥ अजात न करि मै म करि र ह्यो न हि छोड न ही व्य
 ला तु न्ही चो डै रे घा सी कालः ॥ पानीजी ॥ २५ ॥ लल्ला
 लसे थारी ही र ही तू चिस न निवार सात् ल्ही है रे नरक
 को डु वर पानी धर्म मुता दि करे स ऊत्तै ल ही ने स व
 या या या ही रे न व मै देष ता हो जाय वियोग ॥ कौ करि स
 र है रे पर वस ता संयोग पानी जी व ॥ जो ये आता रे आते
 म लार वा ये जाता लारै तो न म रा धौ रे न हितं जि न र था रि
 नी जी व ॥ २६ ॥ ररा रा ग रि देषी होय कै वा धे व ऊ कर्म नां हि
 जाणै रे आत्म धर्म पानी जी वः श्री गुरु प्रा हि रे कर म की
 रिष पानी जी व ॥ २७ ॥ लल्ला ले लो रै ला न सु ध र्म को अ
 न्प ला न निज गु ण जातै रे प्र ग ट सो लान पानी जी व ॥ नि
 ज गु ण जातै रे फ प कर्म औ चो धै रे न वरु प सो म ति जा ए पो

रेलानसुषुषुपापानीजीवणवावावाहवारथारीहोरहीतुवी
 सननिवारसातुहीहरनरककेइवारगपानीजीवधर्मसुता
 ईकरयाऊतलहीहनीदापरमईनकेसागेरसोहवुतधर्म
 गपानी॥रुणससासारोरनवतषोदीयोनीजकाजनकीनश्र
 छोपायोरगुफुचनश्रवीनागपानजीव॥अचकूडुकिरकर्म
 रगसोधीलमलमतीकरीविलंबलोकगिजावणरमतीक
 रवंडागपानीजीवअषषाषटहीरदरववताईयाश्रीजिन
 वरतोहिइतिनमैआतमैहोनीजजोषगपानीजी॥परवासी
 तौरैछसमजन्हीउनकूकहे॥दोयदिनाकेसाहिस्तिरछे
 हीजोयांगपानीजीवअशशशश्रुनीरैपैडियोसुणिलियो
 नहीतजीकसायौइतिनकेअतनीरन
 वइषदायापानीजीव॥मांसंतुसनीनेरधोकततीरिगयेसीव
 मुतिषुतीसतजोकषायौरैविसवावीसगपानीजीव॥अहाह
 हाहोरअवतुमतिकरैयायोजिनधर्मपुण्यउदैसुरेकुलताति
 सूपमी॥अपानजीवणोसतसंगतिअरुरेनक्तिगुरांतणीजिन
 आगममर्माति॥जिवनधातैरैज्यूहेशिवधर्मज्ञानी॥अइदोहा
 वारसेनिष्णाणवैरतासुसमेतकेमायगपोसबुदि॥वमीन
 ली॥तादिनपाववनाय॥अथावारषडीकीजेनिपुनापदैसु
 नैकरिचित॥तिनकेमनवंचितफलहोवैचितयवित्राअण
 हीगनंदप्ररोधतयासस्वदासयाकीनवीबुधिशुद्धिकरि
 दीजीयेदोषसुगुणहीनाश्रतिवाररुडीवीजाकीचालमे॥
 संपूर्णः॥अथवाराजलजीकीवतीसीलीअते॥चालराज्याक
 सुनीराजमतीहेकाहसंधिनतैनेमकवारणतौहेरथमोरिअर
 गिरकुध्याया॥असुपीडातौहेकवरंजोलधिकरुणाकरी
 विरकतजावहेकीनेवडेउरफार्श॥अराजमतीतोहेसुनिके
 अंवासेजोबोलतीसुनिमातामेरीवातपरमसुषुदाश्रअभा
 नधरुछुहेअंवाजाडुपतिनाथको॥वावीनाअन्यसकजूनहेते
 धरमकेनाई॥असंजमधरसूहेअंवारऊसंगनाथदीसुनीहे
 नायतजिकेद्वारागिरकंध्याश्रथा

अंवाजोबोलतीकहाअजोगीदेराजुलतेवातवनाई

वरपरणास्पृहे तो कुंभैनेमकवारसोरुपगुणाको हेधारी कह
मनमै ल्यायी ॥ १७ ॥ संयमजारी हे वेदी न संजममाल है पावयमै
तो हे वेदी न तपवणि आर्श ॥ १८ ॥ तपकी तो वाता हे जोरी वना वो
ही महज है तपधर वो तो हे वेदीयो दुधर आर्श ॥ १९ ॥ ५ म सुनि
हे वेदी हे राजुल अंवा सै जो बोलती यामेरी देह नी तै ज न मी सि
मेरी नाही ॥ २० ॥ ये संनबंध हे अंवा जिते सब देह के मैया देह तै म
री अं व सुधि पाई ॥ २१ ॥ मातं पिता जो सुत परिवार धरि मघने ते
नके ने है तै तिज कज मी विसरई ॥ २२ ॥ अं व यो जो ग हे माता
मे पायो पुम तौ नाथ मी ले जो हे मो कुजा उपति राई ॥ २३ ॥ वी
षय जो ग अं व हे माता मो कुन ही चाय हे वीषय घणे में हे जो ग
सुरग के माही ॥ २४ ॥ तपधर वे कु हे न रज व सगे हे ई ज्जु सो यो जे
ग हे माता मित्यो स्ह जाई ॥ २५ ॥ अं व में तेरी हे अं व जो चा कु सी
ष डी ॥ मेरे ही त कु हे मेरे नाथ मी त व ना ही ॥ २६ ॥ मात पिता सुत
नाय जो व ज सक ल ही सी ष डी वा वो हे मो कूं धि मां कर वाई ॥
इतनी सुनि कै पीता उग्र से न जी बोलते ॥ वेदी रीत पतुं बाल
के सैं व नाया ॥ २७ ॥ अं ग तु मारो हे वेदी बडे सुक माल है तप
धर वो तो हे वेदी त मा सो ना ही ॥ २८ ॥ कैसे बोलै ते ला करै गी
वा वरी जो ज न वी सब व सी ना हि पर धर माई ॥ २९ ॥ हा सि क
रा सी ये वेदी तु नोरी ये वा वरी या वय मैं तो हे वेदी न तप व
णि आर्श ॥ ३० ॥ ५ म सुणिके जो हे राजुल वेष बाणी बोलती न व
ज व माय मई कला जो व ऊ ड ष पाई ॥ ३१ ॥ न र क न ए जो हे मे
रे ता तै क दु ष व क स ही ॥ ३२ ॥ ति न के ने दे हे मेरे ता तै कह त न व
नाई ॥ ३३ ॥ ति र ज च ग ति मै हे मेरे ता त मै न ट की ध र णी माता ही
हे न धि जाय को न न ह्यायी ॥ ३४ ॥ दि व म नु ष मै हे मेरे ता त त्रा स ना
व सि करी ॥ सु ष को ल हे मेरे ता त क वु न ल हायी ॥ ३५ ॥ ष त सं ज
म हि हे मेरे ता तै सु ष को रु प है ने म क व र नी हे त जि रा ज जो ग ध
राई ॥ ३६ ॥ जे सी री ति हे प करी ह मारे नाथ जी सो ही री ति ह मा
कूं जो ग प सो ना दा शी ॥ ३७ ॥ तप नी कर स्पृ हे मेरे ता त सं ज म धार
स्पृ धा व य कूं त म पर सा दि स फ ल कर शी ॥ ३८ ॥ ह म ह व जा नि हे य
शि वार सरा जु ल त ए ॥ ध नि ध नि ध रि स व क र ते जो न म न क राई ॥ ३९ ॥

नमः॥ अथ इमं संग्रहं जीकीनाया लिख्यते॥ मंगलाचरन
 अडिहन्ना॥ रिसभनाथ जगनाथ सुगुनमनघं महे देव इंद्र
 नरविंदवंदसुषदां नहौ मूलजीवनिरजीवदरषष्टविधक
 हावंदो सीसनवायसदाहमसरदहें॥ सत इंद्रभीम इंद्रवती
 सनवनचालीसहें॥ रविससिचक्रीसिंघसुरगचौवीसहें॥ स
 त इंद्रनकरिवंदनीक अरिहंतहें॥ वंदोचौवीसों जितराजम
 हंतहें॥ १॥ जीवनों अधिकारनामसवैया॥ २॥ जीवसदाउ
 पयोगमईनिरमूरतनावनि कौकरताहें॥ देहप्रवांतकहें
 सुगतानववासयसैंसि वकौंनरताहें॥ ऊरघचालसुभा
 वविराजततो अधिकारनि कौंधरताहें॥ सोसवनेदवषो
 नकरोसरधंनधरोंभ्रमकौंहरताहें॥ ३॥ जीवजया सवैया
 २१ इंद्रिपांचवलतीनस्वासआवदसथांनमूलचार इंद्रि
 वलस्वासआवमांनिये॥ पूरवजीवैया अरवजीवैश्रगेज
 वहगाईएईशानसेतीविवहारजीवजांनिये॥ सुषसता
 बोधश्रौरचेतननिहचैषांतसासतोसुजावतीनकालमें
 वषांतिये॥ विवहारनिहचैसरूपजांतसरधंनश्रैसेजी
 ववस्तलधेंसोसुषीपिछांतिये॥ ४॥ उपयोगजयाकवित
 ईकुपजोगनेददोताकेदरसनज्ञांतदरसनविधचा
 २॥ चछअचछश्रोधश्रुकेवलज्ञांतकह्योहें॥ आवष
 कार॥ कुंमतकुश्रुतकुंश्रोधसुमतसुतश्रोधश्रौरमन
 परनेंधारकेवलग्यांतसरवकोंनायकसोतुकमेंकि
 नआपनिहार॥ ५॥ सौरवा॥ मतिश्रुतपरोछदछ॥ मनपर
 जैश्रुश्रोध॥ सुंनएकदेसपरतछ॥ केवलसकलपर
 तछहें॥ शीचोपरी॥ दरसनचारआवविधग्यांनचेतन
 के लछनसामांन॥ नेव्योहारकरमकृतजोग॥ निहचैसुधे
 सुधुपजोग॥ ७॥ अमृतीजयाकवित॥ करनपंचरसपंच
 गंधहोफरसआवकीमूरतहीषा॥ निहचैजीवअमूर
 तीआनौवीसमांहिकौंएकनकोया॥ कर्मबंध्योव्यो॥ हार

१० भा० मूरती कालागोरा कहि वत लोय नै निहचै ब्योहार समक
 कै समता भै विच छन सोय ॥ करता यथा ॥ दरवती करमा
 यटपट आदिक कौंजी व ब्योहार वषांन ॥ जाव क्रोध आदि
 करागादिक नै असु छति हेचै परघांत ॥ निहचै सख बुद्धति
 जगुत में केवल ग्पांन सरूप सुजात ॥ स्यादवाद सो सवैतै
 साधे अनुजोति रविकल्प सुषषांत ॥ ए० देह प्रवांत जा
 था छप्ये ॥ ज्यो दीपक परकास एक साघट वटनां ही ॥ घटै
 षटकने मां हि षडै वटके के मां ही ॥ त्यों असंष परदे सवैत
 जिय निहचै जां नों ॥ समुदघात विनतन प्रवांत ब्योहार व
 षां त्यों ॥ लघ काय पाय संकोच के थूल देह लहि विषत
 रें ॥ सव प्रां नी अभ्यसमांन हैं दया करै सो वरतरें ॥ १० ॥ समु
 दघात सांतनां मसरूप जघा ॥ सवैया ॥ ११ ॥ मूल देह तैं छ
 टै नां हि वाहिर प्रदेस जां हिक ह्यो हैं समुदघात सो ई
 दसात हैं ॥ क्रोध से ती सत्रुति पैं वेदनां सों श्रौष दपैं सुभ
 सुभते जसको कृत ला विष्पात हैं ॥ मरनां जगत मां हि
 वै क्री व ऊजी व करै ॥ आहार कसाधनिकें संदेह विला
 त हैं ॥ केवल समुदघात समें मां हि चेत नही काय से ती
 वाहिर निकल आपजात हैं ॥ ११ ॥ दोहा ॥ लोक प्रवांन
 प्रदेस सों तन समांत ब्योहार ॥ लोक अ लोक संग्पांत
 तौ सुख आपस मसार ॥ १२ ॥ जुगता जथा कवित ॥ पुं न्यु
 देतैं षांन पांत व ऊपा व जे दै तप सीत अपार ॥ पुदग ल
 कर्म वंधतैं प्रां नी सुषडष जुगता में ब्योहार ॥ विषैं कषाय
 दया समता निज जाव नोगता निहचै धर ॥ सुख ज्ञान सु
 ष सिद्ध नोग वें धरौ ध्यांन नोगो सुषसार ॥ १३ ॥ संसार ज
 था चोपडी ॥ नूतल अगन पवन तरु काय ॥ था वर एके
 डी व ऊजाय ॥ लट वेटी मां षी नर देह ॥ दैतैं चोपन अस
 व ऊएहा ॥ १४ ॥ एके डी सूक्ष्म अरथूल ॥ विकल त्रै सव
 अमनें मूल ॥ सम छ अमन पंचे डी मां हि पृथज अपरजा

चतुरदसगं हि १५॥ वोदैमारगतां गुनयां त नैत्रसुधसं
 सारीजांता॥ सवजियसुधसुधनेमां हि ॥ आपसुधत्रनुजे
 जोतां हि ॥ १६॥ सिद्धस रूपघटमिथ्या बुधसतिरा करन स
 वेया ॥ १७॥ शकर्मनासन ए सिद्धसदासिवनां हि जीवत्र
 गुनमदी सिद्धतिगुनतवावरे ॥ अविनां सी सिद्धसमेंसा
 रेजीवैतां हि चलेजां हि तां हि लोकत्रंतवहरावरे देह
 सेती कछुही नचेतनघदेस सिद्धपरसेती नित्तमिले
 नां हि वाववावरे ॥ भावलहरहो जां हि सागरज्योधिर
 सिद्धसुनतासुजावतां हि तीके मनवावरे ॥ १९॥ उरघ
 चालतथा षट्दिसा चालजथा प्रकृतघदेसा ॥ दोयबंध
 जोगसेती होयथितत्रनुजागबंधकौं कषायकरैहैं ॥
 चारोबंधनांसें आगजेमचले उरघकों वाकी तजिको
 नघटदिसाकों तिकरैहैं ॥ वक्रचाल एकदोयतीनसमें
 अनाहारहाथलगर्भमृतजैसें विसतरैहैं ॥ स्रधाचा
 ल एकसमें वां नजेमआहारकमिथ्या वसजीवमरैसा
 मकसोतरैहैं ॥ २०॥ अजीवपंचनेदजथा ॥ अडिद्ध ॥ पुद
 गलधरमअधरमगगतजमजां नियो ॥ पंचअजीव
 दरवसवजडमें मां नियो ॥ पुगालमूरतबंधवीसगुन
 सहतिहैं ॥ चारअमूरतजां नजितागमसहतहैं ॥ २१॥ पु
 दगलजथा ॥ सवेया ॥ धूपछां हि चांदनी अधेरसवद
 अकारथूलतुछबंधे पुजे परजायजां नियो ॥ सूक्ष्मस
 सूक्ष्मअनुसूक्ष्महैं कारमां नसूक्ष्मताथूलचारडंडी
 विषेमां नियो ॥ थूलसूक्ष्महैं धूपछां हथूलजलधीवा
 थूलथूलपृथ्वीकावनेदएवषां नियो ॥ दसपरजाया
 छहोनेदसवपुगालकेनारोआपआपविषेआपही
 पिछानियो ॥ २२॥ धरमदरवजथा ॥ चोपडी ॥ मीनचलेने
 जजलकोपायजियपुदगलगतिधरमसिहायधिर

स्व० ना० न चला वैपेर क होय चलते कौं सहकारी सोय २३ अध
 रम इव जथा जिय पुदगल कौं थित सहकार अधरम
 दरव क हौ गन धरा पंथी वैवे छायामा हि चले निसे वै
 वावे नां हि २३ अधरम अधरम दोहा पुं त्पपाय हो न्योन
 ही है अविनां सी वस्त ती न लो क में न र रहे ऊपर त ले स
 मस्त २३ आका सदर्व यथा कविता सरव दरव को वो
 र देत है दरव आकास सुगुन अवकास ता के दो यने द
 नित जां नो लोका कास अलोका कास पुदगल धर
 म अधरम जीव जम पंच जहां सो लोका कास पंच दर
 व विन एक सुं न न सो अलोक ग्पां त में उकास २४
 काल दरव जथा एक काल अनू से ती रूजी काल अ
 नू जाय पुगाल की परमां नू तहां समां हो त हैं जल क २
 क दौरी घरी सूरज सो दिन होय मां सरित अे न वर्ष अ
 द दे उ हो त हैं नदी वस्त वो दी करै परावर्त चाल धरें
 सो दी विवहार काल विनां सी क गो त हैं अती त अना
 गत वरत मोत परजाय काला नू दरवल वै जा कै उ
 र जो त हैं २५ पुनः एक दर्व है अकास ता के अने तेष
 देस तां में लोका कास के असंघा त प्र देस हैं एक ए
 क देस मां हि एक एक काल अनू रे न रास जे से थिर
 न्यारी विन जे स हैं सर्व दर्व पर नति सहायति ह वै का
 ल असंघा त सता अविनां सी अक ले स हैं एक वौ
 र धस्यो म् रुचा क फिरे हैं अ षंड त्यो अलो क कौ स
 हाय काल ही असे स हैं २६ पंचास्त काया चो पदी जी
 व दरव र्क चेतन सारा दरव अजीव पंच परकार छ
 हों दरव नाषे सम जाय काल विनां पंचासत काय २
 ७ काल अकाप यथा सोरवा व ऊ प्र देस जिन मां हि
 अग्नि काय तेरी कहें या तें कायानां हि काल एक पर

इसको रणी कवित धरम अधरम एक चेतन के असंघा
 त परदेस सुजांन। योम अनंत प्रदेस विराजे लोक अलोक
 सरवगत वांन। पुद्गल संघ अ संघ अनंत प्रदेसी विछूरे
 मिले प्रवांन॥ काल एक प्रदेस अरूपी तातें काल अकाय
 वषांन। रणी परमांन वरु प्रदेसी जया कालानं है एक प्रदे
 सी मिलन सकत सो कवा ही नां हि। तातें काल अकाय व
 ता यो अ प्रदेस हैं छ दरव मां हि। परमांन हैं एक प्रदेसी मे
 ल वरु ने दषंध हो जां हि। तातें काय वंत वरु देसी नें उपचा
 रहोन की छां हि। ३७। आकास के अवकास गुन महात
 म जया। अविनांसी पुद्गल परमांन रो के जे तो वेत अक
 स। ता कौनांम प्रदेस वषांनो ता में पूरन पुंन अवकास
 धरम अधरम प्रदेस प्रमांन कालानं वरु वंधति वास
 जीव अनंत प्रदेस तौर देधन सरव गप कि यो छित ना स
 ३८। सवेया। ३९। अलवध स्खु मति गोदये की चक्रवा
 ल पहिले समे में लंवा चोर होय जात हैं। रजे समे मां हि चो
 राती जे समे मां हि गोल सोरी स वतें जघन्य को यात हैं।
 राघो नांम मछ सा देवारे को उजो जन को दो नो रो के लो
 क असंघात देस वात हैं। छोटा वडामध्य ने द के सोरी
 शरीर धरो एक परदेस एक जीवन समात हैं। ४०। नवत
 लया पनां जया। कविता चार दर्वनि तनिल विराजे पुद्ग
 ल जीव मिले जिह्वारा सात पदारथ तहां होत हैं दोय
 आप सो नों परकार आश्रव वंधन संवर निर्जर मोष पुंन।
 अरु पाप निहार। सो सव ने द वषांन करत हैं कछु सूर्य स
 म्य क गुन कार। ४१। जीवतता। छप्यें। एक चेतनां सार दोय
 निहचे यो हारी। रतन त्रे करिती न अनंत वतु ऐ धारी पंच
 परम पद रूप काय घटपालन हारो। सात मंगसों सधे आ
 व कर्म निते न्यारें नो लवध वंत दस धर्म धरिसो सरूप हे

रदेधरो ईमजीवतत्व सरयोतसोडतरनोसागरतरो॥पध
 अथजीवतत्वकविता॥पंचअजीवकथहेचारोजिनकेक
 नीविनावनहोय॥पुद्गलसुखअसुखविराजें॥सुखअनगु
 नपोचोजोय॥सीततापरूपेचिकमकेदोरसवरनगंधअ
 वलोपबंधअसुखवीसगुनपरगटदेवेंजानेंचेतनसो
 य॥३५॥आश्रवतत॥गीताछंद॥मिथ्यातपंचअविरतवा
 रेपंचवीसकषायहें॥परमोदपंडैजोगपंडैवहतरडषह
 यहें॥आतमांकेपरतांमएशीभावआश्रवतहिंजलाव
 सकरमहोनेंजोगआवेंदरवआश्रवपुद्गला॥३६॥व
 धतत॥जिपरगदोषविमोहअपनेंभावचिकनेपग
 लहें॥ईसभावबंधनिमतसेतीकरमरुजबलगतहेंचे
 तनप्रदेसपुरांतकरमनएकरममिलिदिदने॥पहद
 रवबंधजघाउदेंमदभाववज्रविधपरनये॥३७॥सिहा
 सबैया॥३८॥जीवजेसाभावकरेतैसाकर्मबंधपरेंतीव
 मंदमध्यनेदलीनेंविस्तारसो॥बंधजेसाउदेंआवेतै
 साभावउपजावैतैसाफिरवधेकिमछूतसंसार
 सो॥भावसारूबंधहोय॥बंधसारूउदेंजोयउदेंभाव
 चवनंगीसाधीचटसारसों॥तीहमंदउदेंतीहृषभाव
 मूढधारतहें॥तीहमंदउदेंमंदभावदोखिचारसों॥३९॥
 संवरतत॥छप्यें॥पंचपंचहृतसमतिगुपसतीनोथिर
 पालें॥चारेंभावतनापधर्महमनेदसमालें॥दसआलो
 चनांसुखपंचचारतवरुजागी॥जितपुधादिवाईसना
 वसंवरवैरागी॥तिसकेंनहिलगेंकरमरुजसोंसंवर
 दरवततहांपहभावदरवसंवरसमकजुदाजगतसो
 होरहें॥४०॥निर्जरातत॥तपतिरबंधेकभावनिरुज
 राभावतसोई॥बंधोकरमतवधिरेंनिरुजरादरवतहो
 ईउदेंदेयकरिधिरेवुरीसविपाकतिरजराउदेंदेयवि

विरैजली अविपाकसुषकरा॥सर्वके अकामनिर्जराजग॥
 त्यानासकामनिर्जरा॥अविपाकसकामकरीतिनहो जिन
 होग्यांतघटमेंधरा॥मोषतता॥सवैया॥धश राग दोषमोहनां
 हि सम्पकसरूपमां हि सोईभावमोषआपसुखभावमईहें
 प्रकृतिप्रदेशयिति अनुभोगबंधधारसर्वथा विनाभएद
 र्वमोषनईहें॥परजायनें विचारजीवमोषतयोसारदर्वत
 नेंसदासिवनशीतोहिनईहें॥दर्वमोषभावमोक्षसिद्धी
 दराजतहें॥सोमेंअवमेरीबुद्धिअसीपरनईहें॥धशपुंन
 ततपापततभावपुंनसुनभावपुजादानअपतफभाव
 पापपरतांमविषेअोकषायहें॥दर्वपुंनसाताअवसव
 नेदपुगालकेदर्वपापसौनेदपुगालवऊजागहें॥दर्वना
 वपुंनपापसुगनककोमिलापासवसौनिरालाआप
 यहीजीवरागहें॥एरीषट्दर्वतवततसरधमंनहें॥राग
 दोषमोहहरोमोषकौंगुपायहें॥धशरतनत्रे॥सोरवा॥स
 म्पकदरसनज्ञानाचारित्तसिवकारनकहेंनेव्योहार
 प्रवांत॥निहवैतिऊमेंआत्मा॥धश॥चोपरी॥सम्पकरंतन
 त्रेजियमांहि॥निजतनअौरदरवमेंतोहि॥तातेतीनोमें
 निहपाय॥सिवकारनचेतनयहआप॥ध५॥दोहा॥आप
 आपमेंआपकौंदेवैदरसनजोया॥जांतपतांसोग्यांनेथि
 रताचारतसोया॥ध५॥दरसनग्योनयथा॥कवित॥जी
 धादिकभावनिकीसरध॥सोसम्पकतिजरूपतिहार
 जाविनमिथ्याग्यांतहोतहें॥जाविनमिथ्याचारतधरड
 रनेंकोंपरवेसजहांतहिंसंसेविभ्रममोहनिवार॥सुपर
 सरूपअथारथजानें॥सम्पकग्यांतअनेकप्रकार॥ध६॥
 जोसांमांन्यहेविसेषविननिराकारदरसनपरवांन॥जो
 विशेषजांनेअर्थनिकोंसोआकारग्यांतपरधमंनसंसा
 शीछदमस्तजीवकौंएककालनहिंदरसनग्यांतएकस

मनेना
७२

मैमेंदुष्टैजातैकेवलरूपप्रनुपममाना॥६७॥चारतरूपजा
या॥दोहा॥असुननावनिरवारकैसुनपयोगविसतार॥गु
यतिसमतिवृत्तमेदसौंसोचारितव्योहार॥धर्षीचोपशीवांहे
रपरततिचंचलजोग॥अंतरनावसमस्तनुपयोगदोते
कियेवदेसंसार॥कोकैनिहवैचारतसार॥धर्षीध्यांतकारन
चारितनिहवैअरुव्योहार॥उनेमुक्तकारननिरधरणे
होहिंध्यांततेंदोतोंगंसा॥कीजेंध्यांतजततअभासा॥पणे
ध्यांतदसा॥सवेया॥३१॥ईष्ट्रौअनिष्टजेपदारथजगत
मांहितितेंदेवरागदोषमोहनाहिकीजिये॥विषैसेतीउव
तयसागदीजियेकषायचाहदाह्म्येयएकदसामोहिनी
जिये॥ततग्यांतकोसंभारसमतासरूपधरजीतकैपरी
सहआनंदसुधपीजिये॥मनकोसुवसआंततातांविघ
ध्यांतवांतआपनीसुवासआपमांहिआपलीजिये॥५१
सतजापअक्षरव्योहार॥अडिष्ट॥पैतिससोलेंषट्प
तचवजुगएकहै॥सातजापएअक्षरत्रोरअनेकहै
पंचपरमपदरूपसदा मनध्याईए॥रिषसिद्धहैकहांसु
कतपदपाईये॥५२॥जापअक्षररूप॥सवेया॥३१नमो
अरहंज्ञानंसातनमोसिदानं॥पंचनमोआईरियानंसा
तवरनभावरे॥ममोउवकायानंसातनमोलोएवारस
ब्रसाहृतं॥पंचैपैतिसलवलायरे॥अरिहंतसिद्धआच
रजउवकायसाधुसुभसोलैअरिहंतसिद्धषट्धावरे
असिआउसाएपंचअरिहंतचारसिद्धदोपुंएकसर
वअक्षरकोंरावरे॥५३॥पुनःपैतीसअक्षररूप॥कवित
सातनमोअरिज्ञानंअरुपांचनमोसिदानंध्यांतासातन
मोआईरियानंअरुनमोउवकायानंसातचारनमोलो
मजातों॥पंचसबसाहृतंज्ञांत॥पंचपरमपदपैतिस
क्षरसुषकारीध्यांऊंदिनराता॥६५॥अरिहंतचोपशी

धारयातिपाकर्मविनांसाग्यांनदरससुषवलपरकास
 परमोदारकतनगुनवेत्ता॥ध्यांऊंसुधसदांरिहेत्ता॥५५॥सि
 धकरमपापनांसेसवथो क॥दिवैजाने लोकत्रालोक लो
 कसिधरधिरपुरुषाकारा॥ध्यांऊंसिधसुषीत्रविकार५
 ही॥आचारजादरसनग्यांनप्रधंनविथारा॥वृत्ततपवीर
 जपंचाचाराधरेधरावे श्रीरतिपासा॥ध्यांऊंआचारसु
 षरासा॥५७॥उपाध्याय॥सम्पकरतनत्रैगुनलीनसदा
 धरमउपदेसपवीना॥साधतिमेंसुषकरुतोधरा॥ध्यांऊं
 उपाध्यायहितकार॥५८॥दरसनग्यांनसुगुनभेकार॥प
 रमदिगंवरमुद्राधरा॥साधेसिवमारागआचारध्यांऊं
 साधसुगुनदातार॥५९॥उत्तमध्यांनजथा॥तनवेषात
 जत्रासनमांन॥मोतधरिचित्तसवहंदिधिरकैम
 गनत्रापमेंत्रापयहनुतकिष्टध्यांननिहपापा॥६०॥जा
 वलौंसुकतचहैमुनराजा॥तवलोनिहपावेंसिवकाज
 सववितातजिएकसरूपा॥सोईनिहवैध्यांनअनूप॥६१
 दोहा॥घांनंचलनांसोवनांमिलनांवचनविलासज्यो
 ज्योपंचघटाईयेसोसोघ्यांनप्रकास॥६२॥सवेया॥त्राग
 मग्यांनसदावृत्तवोनतपैतपजांनसिंहगुनपूरा॥ध्यांन
 महारथधारनकारनहोयधुरंधरसोनरसूरा॥ध्यांन
 अन्पासलहैसिववासविनांनवपासपरेडुषमूरा॥का
 र्ममहादिदमेंलचटेवज्जघ्यांनसुवज्रकरैचकचूरा॥६३
 पूरनता॥सवेया॥निमचंदआचारजकहैमेंअलयशुत
 कीनोदर्वसंग्रहकौंसोधेमुंतिराजजी॥ह्वनरहितगुन
 नूपनसहिततुमसुतसवपूरनहौंचूरनअकाजजीघां
 नततनकबुधतापरवषांनकरीवालरीतधरीदकिली
 जोगुनसाजजी॥कुंकयाकेनांसनकौंबुधकेषकासने
 कौंताषा यहग्रंथभयोसम्पकसमांजजी॥६४॥इतिश्री॥

॥ ७७ ॥
५३

दुर्बलसंग्रहमात्रसंपूर्णः ॥ सगुणैरुक्तः ॥ प्राणीआत्म
रूपअनूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ प्राणी ७ ॥ यहसर्वक
र्मनुपाधहैं रगदोषत्रमजाल ॥ प्राणी आत्मरूपअनू
पहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ ८ ॥ काहंभयोकांइलगीआत्म
दर्पनमांहि ॥ प्राणी आत्मरूपअनूपहैं परतैं निन्नत्रिका
ल ॥ ९ ॥ परकीर्णपरहैं अंतरधेवीनांहि ॥ प्राणी आत्मरू
पहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ १० ॥ मूलिनेवरीअहिमुयोंवृत्
लष्मोतररूप ॥ प्राणी आत्मरूपहैं परतैं निन्नत्रिका
ल ॥ ११ ॥ त्योंतैं परतिजमांतियावहजन्तूंचिहूपा ॥ प्राणी
आत्मरूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ १२ ॥ जीवकतकतन
मिलकेनिन्ननिन्नपरदेस ॥ प्राणी आत्मरूपहैं परतैं
निन्नत्रिकाल ॥ १३ ॥ मांहेमांहेसंघहेमिलेंनहीलबले
स ॥ प्राणी आत्मरूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ १४ ॥ धनक
र्मनिआछादियोगांतभांनपरकास ॥ प्राणी आत्मरू
पहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ १५ ॥ हेज्योंकात्योंसास्वतारंच
कदोयनतांस ॥ प्राणी आत्मरूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल
१६ ॥ लालीकृत्वकेंफटकमेंफटकनलालीहोय ॥ प्राणी आ
त्मरूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ १७ ॥ परसंगतिपरभावहैं
सुखस्वरूपनकोय ॥ प्राणी आत्मरूपअनूपहैं परतैं नि
न्नत्रिकाल ॥ १८ ॥ असथावरनरनारकीदेवआदिवज
नेदा ॥ प्राणी आत्मरूपअनूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल १
९ ॥ गुणज्ञानादिअनंतहैं ॥ परजेंसकतअनंत ॥ प्राणी
आत्मरूपअनूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ २० ॥ निहवै
एकसरूपहैं ज्योपटसहजमुपेदा ॥ प्राणी आत्मरूप
अनूपहैं परतैं निन्नत्रिकाल ॥ २१ ॥ द्यांनतअनुभोंकी
जियेयाकोयहसिधांत ॥ प्राणी आत्मरूपअनुपहैं प
रतैं निन्नत्रिकाल ॥ २२ ॥ इतिप्रहसंपूर्णः ॥ ॥

अथ स्वयंभूनामालिख्यते ॥ चौपरी ॥ राजविषे जुगलितिसुषकि
 या ॥ राजत्याज्यनवसिवपददिया ॥ स्वयं बोध स्वयंभूनागवांनानां वंदौ
 आदिनाथगुणघांताशा इंद्रवीरसागरजललायामेरुंलायगा ॥
 यवजायभदनविनांसिक सुषकरता ॥ वंदौ अजित अजिता ॥
 पदकारा ॥ स कलघांन करिकरम विनांसा ॥ घात अघात स
 कल उषरास ॥ लह्यो मुक्त पद सुष अविकाया वंदौ संनवनव
 उषराय ॥ माता पृष्ठ मरे न संजाय ॥ सुपिने सोले देवे साय नृप
 छफल मुन हरयाया ॥ मंदौ अजिते दन मन लाया ॥ धा स व कुंवा
 दघादी सिरदाय जीते स्या दवा दधन धरा जिन धरम परक
 सक स्वांम ॥ सुमति देव पद करो पुतां मा ॥ ५ ॥ गरन अगा ऊं ध
 नपति आया ॥ करी नगर सोना अ धिकाया ॥ धर धरत न पंदरे
 मांसा नमों पदम प्रसु सुषकी रासि ॥ ६ ॥ इंद्र फुनिं इ न रिं द रि
 काला ॥ वां नी सुन सुन हौं हि सु स्या ला ॥ चारे सना ग पां न दा तार
 नमों सुपार सनाथ निहार ॥ ७ ॥ सुगन छिया की स है तुम मां
 हि ॥ दोष अ वारे कोरी नां हि ॥ मोह माहात मतां सक दीप न्मो
 चंद प्रसुराष समीया ॥ जी वारे विधत प करे म विनांसा ॥ तैरे ने
 दत्तारित परकासा ॥ तिज अ नि छन वि ई छ कदां ना ॥ वंदौ पु
 ह्य दंत मनि आं ना ॥ एी न वि सुष दाय सुगन तै आया दस रे
 धधर्म क ह्यो जिन राया ॥ आप समांन स वनि सुष देहा वंदौ सी
 तल धरम न नेहा ॥ १० ॥ समता सुधस कोप विषतांसा ॥ घा द शां
 गवां नी परकासा ॥ चार संष आ नंद दा तारा नमों श्री अंस जि ॥
 नेश्वर सारा ॥ ११ ॥ रत न त्रय सिर मु क ट वि साला ॥ सोने कं व सुगु
 न मन लाया ॥ मु क ट नार न रता न गवां ना ॥ वास पूज्य वंदो ध
 रघां ना ॥ १२ ॥ प दम समा धिस रूप जिने सा ॥ ग्यां नी ध्या नी हि
 त सुप देस ॥ करम न स न स्तान ग वं न ॥ वा स पूज्य वंदो म
 ध र्धमं न ॥ १३ ॥ मा स सिव सुष विल संता वंदौ विमल नां थ न
 ग वं त ॥ १४ ॥ अंतर वा हिर पर ग ह नो रा पर म दिगं वर हता को

नवमं
७५

धर सरवनां ससि वसुष विलसंता वंदौ विमलनाथ जगवंत
शुभ्रं चरवां हिरपरगहारा परमदिगं वरवृत्त कौंधर सरव
जीवहित राहदिषाया नमो अंत वचन मन काय १५ सातव
त्वपंचासत काया अनथन वों छुदर वज्रनाया लोक अलोकस
कलपरकासा वंदौ धर्मनाथ अघनांसा १५ पंचमचक्रवर्तिनि
घनोगा कांमदेव द्वादशममनोग सांत करन सौलमजिनरा
या सांतनाथ वंदौ हरया या १६ वज्रयुत करे हरषनहि हो ३
निदेंदोषगहें नहिं सोया सीलवांन परब्रह्मस रूपा वंदौ कुं
थनांथसि वभूपा १७ वारें गुन पूजें सुषदाया युत वंदनां करे
अधिकाया जा कीनिजयुत कवज नहीया वंदौ अरजिनव
रपददोया १८ परनौरतनत्रे अनुसारा ईसनों व्याहसमें वै
रागा वालवृक्ष पूरन वृत्तधरा वंदौ म छिनाथ जिनसारा १९
विनउपदेस स्वयं वैरागा सुतलोकांत करे पगलागा नमः
सिद्ध कहिस ववृत्तलेहि वंदौ मुनि सुवृत्त वृत्त देहि २० आ
वक विद्यावंत निहारा भगतना वसों दियो अ हारा वरवे
रतनरासितन काला वंदौ नमि प्रभु दीन दयाला २१ सव
जीवनि के वंदी छौरा राग दोष दो वंधन तोरा रजमत तजि
सिवतिय को मिले नेमनांथ वंदौ सुषमिले २२ दैतकि
यो उपसर्ग अ पारा ध्यां न देखि आ यों फनिधरा गयो कम
वसव सुष कर स्याम नमो मेर समया रस स्वांता २३ नौसा
गरतें जीव अ पारा धरमयोगमें धरे निहारा ग्वत का देद
या विचारा वरघमांन वज्र वंदौ वारा २४ दोहा चौदीसों
पदकमल जुग वंदौ मन वचकाया ध्यां नत पदें सुनें सदा
सो प्रभु क्यो न सुं हाय २५ इति स्वयं प्रभु त्रिनाथा संपूर्ण ॥ ७ ॥
अथ चार सैं छह जीव समासा दोहा वंदौ ने मिं जिनंद पदस
वजीवन सुषदाया वालब्रह्मचारी नयेप सुंगन वंध छुड़ाय १
जीव समांस अने कविधिभाषेगी महसारा नेम वंदगुर वंदिकें

करुणकप्रधिकार॥१॥चोपरी॥एष्यी कायउनेदवषांन की
 मलमांटीकविनवषांन॥पंती पाव कयोंनविचारनित्यई
 तरसाधारनधरात्रसांतोस्त्रुहमसातोंथूल॥ईन केचोदे
 नेदकचूल॥कहीप्रत्येककायदोजातापरतिष्ठतप्रतिष्ठ
 तज्ञांताधादीहा॥ह्रवबेलछोटाविरषवडावषत्ररुर्कदये
 चनेदपरतेककेलषततांहिमतमंद॥५॥जवईनिमांहिने
 गोदहैतवपरतिष्ठतजांति॥जवनिगोदनहिंपाईयेप्रपर
 तिष्ठतवमांहिदी॥जातदसौंपरतेककीवेचोदेहैचोवीसा
 परजप्रपरजप्रलवधसौंनेदवहतरदीसा॥७॥वितेचोई
 त्रिविधपरजप्रपरजप्रलषविकलत्रैकेनेदनवहिंसा
 करेनिषघा॥१०॥चोपरी॥कर्मभूमितिरजंचविष्पातागर्जज
 सनमूर्छनदोजातगरनजपरजप्रपरजप्रवीता॥प्रल
 वधिहसनमूर्छनतीनएसैनीपंचप्रसैनीपंचदसौंनेदज
 लचरतिरजंच॥दसौंनेदथलचरपशुकायादसौंव्योमचर
 उहेसुनारी॥१०॥करमभूमितिरजंचमकारातीसनेदभाषे
 निरधारा॥नोगभूमिप्रवसुंनोसुंजाता॥थलचरनचचर
 दोसरधसंता॥११॥परजप्रपर्यापतदोनेद॥चारनेदजांनो
 विनुषेद॥उतममध्यमजघन्यभूतने॥चारैनेदजिनांगम
 नते॥१२॥दीहा॥पंचेदीतिरजंचकेकहेवियालीसनेदते
 रेनेदमनुष्यकेसमकौंनरमउछेद॥१३॥चोपरी॥उतम॥
 नोगभूमिसुषषांति॥उतमयात्रदांतफलजांता॥मध्यमज॥
 घन्यनोगनुवदोया॥चोथैकुंनोगभूतरजोया॥१४॥पंचमम
 लेहषंडमकारा॥छवेत्राचारजगरनकारा॥परजप्रपर॥
 जडषादसजांति॥अलवधितरईनमेंनहिमांनार॥१५॥प्र॥
 डिध्र॥नारिज्योमथनतांनिकांषमेंपाईये॥नरनारीके॥
 मलमूतरमेंगाईये॥सुरदेमेंसंमूर्छनमेंनीजीघरा॥अल
 वधपरजायतेदयाधरहीपरा॥१६॥सौरवा नरकपटलनुन

वासापरजत्रपरजायतकहे। जीवसमांसप्रकासासातामें
 प्रतानवै॥२१॥चोपरी॥त्रिसवपटलसुरगकेपावाभुवनय
 तीदसद्यंतरत्रावा। जोतिकयाचछियासीनये॥परजत्र
 परजापतिगिनलये॥२१॥दोहा॥नरकमांहिअठवनेय
 मुर्कसौतेईस॥नरतेरेंसवदेसकेसतकवहसरदीसाश
 र्थअडिह्त्र॥परजापतएकसोंछियासीजांतियै॥अप्रज
 पतेईकसोंछ्यासीमांतिये॥अलवधपरजापतेजीवचो
 तीसहैं। चवसतघटपरकरनांकरैमुनीसहैं॥२१॥दोहा
 नियतयेकचेतनमरीभेदसरवव्योहार॥निहचैअरु
 व्योहारकाजांननहारासार॥२२॥सुदयासमताअप
 मेंयहपरदयाविचार॥द्यांनतसुपरदयाकरैतेविरले
 संसार॥२२॥ईतिचारसैंघटजीवसमांससंपूर्णः।अथ
 दशाथांनचोवीसीलिषतें॥रिषवदेवरिषदेववीरगंभी
 रधीरकति॥चारवीसजगदीसईसतेईससुगुनगुन
 सुरगवांमतिजनांममात्तपुरतंमघरनतना॥आय
 कायसुंभचित्रसुंकतआसनदसवरनना॥जसगाय
 पुंमनुपजायबुद्धिपापकरोमंगलअमरासिरनाय
 नमोंनुतजोरकरभोजिनंदनवतायहरारिषभदेवरि
 षननाथदृषनलछनतनसोहैं।नांनिरायकुलकमा
 लमातमरुदेव्यासोहैं।चोंरसीलषपुषत्रावसतपं
 चधनुषतन॥नगरअजोध्याजनमकनकवसुंवर॥
 नहरनमना॥सर्वार्थसिधतेंगमनपदमांसना॥केव
 ल्गपांनवरसिरसिरअजितअजितअजितरिपुअ
 जितहेमतनगजलछनभमापिताशयजितशनुअ॥
 अषरगासन॥आसन॥लषवहतरपुषत्रावपुरज।
 मअयोध्या॥धनुषआरसैंसाटगढवचवऊप्रतिवोभा
 ध्या॥सजिविजयथांनपरघांनपदवसेविजैसैनांउदर

सिरणे ॥ संभवनाथ ॥ संभवसेनवहरनपुरीसावत्रीजांतो
मातसुषेनांरूपभूपदिहराजप्रदानो ॥ षरगांसनसुषस्वाद
आयग्रेवेयकतैः प्राये ॥ विक्रतुरंगजुतंगरंगकंचनकंचन
भेगाणं ॥ धितसावलाषपूरवनुगतिधनुषध्यारसेंलषि
चतुरसिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर
ध ॥ अजिनंदन ॥ अजिनंदन ॥ अजिनंदकंदसुषभूपस्वयं
वय ॥ मातासिधारया कथासुंवरनतनमनहरतीनसक
तपंचासघनुषतननगरविनाता ॥ पुत्रलाषपंचासतास
कपिलछनमीता ॥ षरगासनविजयविमानतैकरमणे
तासपरकासकर ॥ सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनं
दभवतापहर ॥ ५ ॥ सुमतिनाथा ॥ सुमतिसुमतिदातार
सारवससवैजयंतमना ॥ भूपमेधरयतातमातमंगला
करनकतना ॥ पुत्रलाषचालीसईसतनधनुषतीनसें
चक्रवाकलषिवित्रपरगआसनमुषविलसें छह
सासअमांऊगर्भतैः नयोविततीसुरनगरसिरनाय
नमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर ॥ ६ ॥ पञ्चप्रभु
पदमपदमभविभवरपदमलछनसुषदाशी ॥ धर
नभूपगुनकूपसकूपसुसीमांगाशी ॥ अंतमयेवेय
कवासडसें पंचासचापतनषरगासना ॥ वज्रसकतर
कततनहरषकरममना ॥ धिततीसलाषपूरवपुरीको
संवीसवसनसुषरा ॥ सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनं
दभवतापहर ॥ ७ ॥ सुषारसा ॥ देतसुपाससुपासचवग्रीव
कतैः प्राणं ॥ सुप्रतिष्ठापालपृथ्वीषेनांमनभाणं नगर
वनाशसधंसस्वांमधरगामनराजै ॥ विक्रसाथियावी
सलाषपूरवधितिछाजैतनहरववरनदोसैधनुषसु
रदोरेचोसववमरा ॥ सिरनायनमौजुतजोरकरभोजि ॥
नंदभवतापहर ॥ ८ ॥ चंद्रप्रभु ॥ चंद्रप्रभुधनचंद्रचंद्रपुरा ॥
चंद्रदेविक्रगना ॥ महासेतविष्णुतमांतलछमनासेततना

विजयंततैः श्रायकायषरगांसनधरीः श्रावपुच्छदसलाष
 नयेसवकौमुषकारीः मेदसैधनषतननविकजनहंसयाप
 तुममांससरासिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवताप
 हरः ॥ सुवधिनाथः सुविधिसुविधिकरतारसारशानतके
 र्यानीः महानूपसुग्रीवजीवजयरामांरानीः लज्जलवरन
 सरीरधीरषरगांसनधरोः का। कं दीपुरसाषलाषदोहर
 वमांनौः ॥ तनधनुषएकसौभौरहतसहतविहंजलचरम
 करः सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर
 १० ॥ सीतलनाथः सीतलसीतलवचननयपुरश्रारनस
 वरवरदिदरथतातविष्यातसुनंदामाताश्रवतरनवेध
 नुषसरीरधीरकंचनमैंगायौः श्रावपुच्छकलाषषरगा
 श्रासतसुषपायौः श्रीबृहदिककेवलप्रगटनिन्ननिन्न
 नाष्योसुपराः सिरनाथनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवताप
 हरः ११ ॥ श्रेयांसनाथः नजश्रेयांसश्रेः शंसस्वर्गसौलनके
 वासीः विष्णुराजमहाराजमातनंदापरकासीः श्रसीवाप
 ततमाश्रयायगेमेकौलंछनाषरगांसनजगवांससिंधपु
 रकतकवरततनः शौरसीलाषवरसमुगतिऽषदावान
 लमेघकरः सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापह
 रः १२ ॥ वासपूज्यनाथः वासपूज्यसंवभूजनूपवसुविधि
 सोपूज्योः दसमलोकतैः श्रापकरतसुभकायतहजौः सतर
 चापसरीरधीरचंपापुरश्राणः लल्लतमहिषमतोगजोगय
 दसासनगायेः शितिलाषवहतखिवरसकीजयावतीमाता
 सुमराः सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर
 विमलनाथः विमलविमलश्रदलोकिलोकदादसवसा
 स्वांमीः कपिलपुरश्रायकायकंचनजगनांमीः कृतवम्सा
 नृपालवालजपस्यासामाताः सूकरूविहंसिसोनसावध
 मुवनश्रतिसाताः शितिसावलाषवरसतिसुषीषरगांस
 ततैजवरः सिरनायनमौजुगजोरकरभोजिनंदनवतापहर

थ्या॥ अतंतनांथ॥ सुगुन अतंत अतंत अतंत सुरसोलजि
 नेखरासिंधसेननपरायमायजपस्यामाकेधरा॥ कनकवरन
 परगासतासपंचासतापतना॥ आवलापहैंतीसईसकोसेही
 लछना॥ परगासनकोसलपुरजनमकुलतहां आवोपह
 रासिरनायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवतापहरा॥ श
 घर्तनाथधर्मसुंधर्मप्रकासताससरवारथसिधनुघनां
 नराज्जसष्यातमातमुप्रनादेवीऊये॥ परगासनविंडा
 पापचापचालीसपंचसना॥ आवलीषदसवरससरस
 कंचनतनहैमनां॥ लषिषरगचिह्नसुमरतनपुरपारम
 पावैंसुरतिकरा॥ सिरनायनमौं जुतजोरकरनोजिनंद
 नवतापहरा॥ र्ही॥ सांतिनाथसांतिजगतसवसांतिमो
 गसरवारथसिधरिध॥ कांमदेवतनकनकतनवोद
 हैंतचोतिधिविखसेननपतातमांतअपरागतत्वलं
 छना॥ हथनांपुरमेंआपकायचालीसधनसना॥ यिति
 लाषवरसआसनपदमनांमरठैअघजायतरा॥ सिर
 नायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवतापहरा॥ कुं
 यनाथ॥ कुंपुकुंथुरषवारसारसर्वरिथवसा॥ हस्तिनां
 गपुरआयचामीकरहरसससरिसेंननपजेनत्रैत्तश्री
 कांतासुनमना॥ पचातवैंहजारवरसपेतीसधनुषतन
 षरगांसनलछनगांससुनतारेजनवैराग्यधरसिर
 नायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवतापहरा॥ शपी॥ अर
 अरि करिहरिसिधजयंतविमांतजांतजना॥ नूपसुंदर
 सनसारमित्रसेनांमाताभनि॥ हस्तिनांगपुरआयचा
 पतनहीसविराजै॥ यितिचौरासीसहसवरसकंचनछ
 विछजै॥ परगासनलंछनमीनसुभवैनजलदसरस
 विकनरा॥ सिरनायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवताप
 हरा॥ शपी॥ महिनाथमहिकरमरिपुमहयानअपराजे
 तजांनौं॥ मिथलापुरअवतारसारघटचिह्नपिछांनौं॥ कुं

नराजमहाराजभरगत्रासनसरदहिये।धनुषपचीसस
 रीरसहसपधपनथितिलहिये।देवीप्रजावतीकनक
 तनत्रमलत्रचलत्रविकलत्रजरसिरनायनमो।
 जुगजोरकरभोजिनंदनवतापहर।२०।मुतिसुवतना
 थ।मुनिसुवतवृत्तवर्गस्वर्गप्रांतकेथांनी।नूपसुमे
 त्रपवित्रमित्रसुनसोमांरांती।राजगहीमेंत्रायकाय
 कज्जलचविछजै।वरससहसथितितीसवीसतन
 चापविरजै।लंछनकछ्वात्रासनभरगदीनदया
 लदयानजरसिरनायनमो।जुगजोरकरभोजिनंद
 नवतापहर।२१।नमनाथ।नमितमिसुरतराजर
 जसरवारथसिघकर।विजयराजमाहाराजविष्ण
 तारांती।नुरधरा।त्राववरसदससहपुरीमिथुलासु
 षदासी।पद्मेधनुषसरीरभरगत्रासनलौलासी।तन
 कनकवरनलंछनकमलग्पांतजांतहरिभ्रमतिमर
 सिरनायनमो।जुगजोरिकरिमोजिनंदनवतापहर।
 २२।नेमिनाथ।नेमिघरमरथनेमजयंतविमांतवास
 कियसमदविजैमहाराजसिवादेवीजांतोंजियनग
 रधारिकातांमस्यांमतनजनमनहारी।त्राववरसई
 कसहसचापदसरजमतहारी।भरगासनत्रासनमो
 षकौंसंषचिक्रहरिवंसतर।सिरनायनमो।जुगजोरि
 करभोजिनंदनवतापहर।२३।पारसनाथपासपाव
 त्रयतांसवासपानतकरिआएं।त्रस्वसेनत्रवद
 तमातब्रह्मीमननाएं।नगरवतारसथांतजांतफ
 नलछतनांमी।त्रावएकसौंवरसभरगत्रासनसे
 वगामी।तत्वहरितवरननकरधरनवज्रप्रगटसंक
 रसिषरासिरनायनमो।जुगजोरिकभोजिनंदनवता
 पहर।२४।वर्धमानवर्धमानजसवर्धमानत्रयुतविमां

नगति नगरकुं रुधैरधरसारसिधारथरूपरां नीधियका
 रनीवनीकंचनछविकाया॥आववहस्तरवरसजोगषरगा
 सनध्याया॥तनसातहाथमृगनाथपतितुमतेंश्रवलोंध
 रमजरसिरनायनमोजुगजरिकरजोजिनंदनवतापह
 र२५॥रिषभश्रजितसंनवश्रजिनंदनसुमतिपदमसम
 जिनसुपासप्रसुचंदसुंविधिसीतलश्रेयांसनम॥वास
 पूज्यजीविमलश्रनंतधरमपदरमां॥सातकुंशुश्ररिम
 ह्त्रसुमुनसोविरतवीसमां॥नमिनेमपासवीरेसपदश्र
 ष्टसिधनोतिधघरा॥सिरनायनमोजुगजोरिकरजोजिनं
 दनवतापहर२६॥पंचकुंमारनांमवांसपुंज्यसूरपूज्यम
 ह्त्रविधमह्त्रजयंकर॥नेमिदेहजमनेमियासजोपांसछ
 यंकर॥महावीरमहावीरधीरपरपीरनिवारन॥वडेपुस
 षसंसारसारसंपतसुषकारन॥एपंचकुमरपदशीसुम
 रकविनसीलवालकनुमर॥सिरनायनमोजुगजोरिक
 रजोजिनंदनवभयहरन॥२७॥कलपबद्धकलपतैचि
 ततैचिंतामनिमन॥पारसहं परसतैंकरतहितएकज
 नमजन॥नगतश्रलकलयश्रचिंतश्रसरसनिहारी
 नांमी॥जोजोसवसुषदेहिंकोंतनुपमांदेखां॥मी॥होनि
 पटसिथलताकेविषेचपलचितनिसदिनफिकरसि
 रनांयनमोजुगजोरिकरजोजिनंदनवभयहरन॥२८॥मह
 पुरांनप्रवांतजांतश्रावोविधुवरनन॥वासववांतवषां
 नजांतदोलछनश्रासन॥होपकोपसंदेहनेहकरितहो
 तिहारोसुहृच्छंदसोसुहृफेरिकोकवित्तसमारोहोश्रलप
 बुद्धिबुद्धिनविषेऐकवातलीनीपकरसिरनायनमोजुग
 जोरिकरिजोजिनंदनवभयहरन॥२९॥जैजैमलब्रह्म
 चरिजश्रदलवलसकलवनाया॥ऐकयेकजिनखांम
 नांमदसदसगुनगाणं॥सुनतसुनतचित्तचुनतधनत
 षसंततश्रांती॥ह्यांततरायनुपायगायजिनपापकहांवी

गदजनमजरामृतनहिंमगतनगतिएकउषदविगरसिरनाय
नमोजुगजरकरिनोजिनंदनोतापहरात्रणे। इतिदसधांनचौदीसी
सपूर्णः॥१॥ अथदसवोलपचीसीलिपत्त॥ छंदउपे॥ एकसस
पत्रनेददोयविधिविधितियेदमें। रत्ननत्रैकरितीतधारविध
वादिक्तमें। पंचमगतिमुंचितोश्चापषट्कारकरजें। साधोने
करिभिनत्रावगुनसहितविरजें। नवनोकषायदसबंध
हरितासरूपहिरदेधरो। पूजोघ्यार्जुंगार्जुं सदाजिहतिह
विधनवजलत्तरो। श। अथयेकवोलकेचौवीसनेदा। वंदो
धांनीएकएकघांनीअघनासक। येकदरवत्राकासए
ककेवलसवनासक। परमांनूयेकचलेंएककालानेए
रसैं। एकसमैतिरअंसएकतीर्थकरदरसैं। ईकिगुरुनिर
गधंजहांअसमएकदयामारगनला। ईकसमैजीवखि
गतिकैरेयेकअथअनुनौकला। श। पुनः। येकप्रानचोद
हैबंधईकतेरयजिनवर। एकमेरमरजादयेकमिथ्याव
घातकर। जघनदेहईकसमैराज्जोदैंअनुजावैं। धर्मअघ
मीविमानएकवससिवपदयावैं। सुतग्यांनकरमविनईक
समैजीवततनोपरनमें। ईकनमप्रदेशवऊदेसकौवैर
देतजिनवचनमें। श। अथदोयवोलकेचौवीसनेदान
मोंडविधजिनरायजीवनिस्जीववषांनैं। सिद्धत्रैरसं
सारनेदत्रसयावरजानैं। कहीप्रत्येकनिगोदनिस्पईत
रसाधारन। सुखमधूलवषांनपंचइंहीमनविनमित
आगमअघातमकथनसुनसुंपरनेदकौंपरनएथे
रकलपत्यागजिनकलपधरकेवलज्ञानदरसनरंध
पुनः। वंदोवंदसरूपसाधआवकसुषदायकनितअ
नितप्रवांनगुनीगुनसवकेग्यायक। पुंनपापपरकास
तासफलसुषडषभाषैं। रूपअरूपनिहारदोयपरिग
हनहिंराषैं। दोनेदृषांनवरनिकैरेदरवभावसंपूजि
ये। निहवैव्योहारसंभारमनदोयदयामेंहंजिये। ५। अथ

यतीनवोलकेचौवीसनेद॥तीनसाधआराधवचन
 मनकायलायकरि॥तीनपात्रसरधंसतीनविधआ
 तममनधर॥तीनलोककौंजांनकायतीनौअवधसे
 संषअसंषअनंतदरवगुनपरजविचारो॥संसेविमें
 हविअमरहितध्यानध्येयध्यातासुनौ॥करताकर्मकि
 रियासमकृपांतगेएग्यातासुनौ॥ही॥पुनः॥सामोयक
 तिऊंवारतीनसवसह्ननसाकं॥तीनोंदरसनमौहज
 नममृतजरामिटाऊं॥तजतीनोंअग्यांततीनसमकि
 तमतआंतौं॥तीनसमेंअनहारदेवगुरुधर्मप्रवां
 नौं॥लषभावपारगांमीत्रिविधतीनकरमसौंनेन
 हैं॥तजरादोषअरुमोहकौंतीनचेतनांचिनहै॥७॥
 अथआरवोलकेचौवीसनेद॥चतुरानतभगवांन
 दांनविधचारवतावै॥आरआराधनआरअर्थने
 कौंपावै॥चारसंघआधसख्यारविधवेदवषांनेंन
 मेंचारविधदेवचारनिछेप्येजांनौं॥चऊंघातिकरम
 गिरचूरकरिजरसंग्याचारोमडी॥चवध्यांनवषांनवे
 धंसंसोचारभावनांमनभडी॥हीपुनः॥सहितअनंत
 चतुष्टयचारचौकविनांसीआरकषायजलायचार
 विकथानहिंजासी॥प्रोतचारप्रकारचारदरसन
 परकासक॥पुंदगलकेगुनचारनांस्विऊंसीलवि
 नांसक॥सहिवारजातउपसर्गकौंआरनेदमनव
 सकिया॥तितबंधवारपरकारहस्विवगतिकौंपा
 नीदिया॥८॥अथपंचवोलकेचौवीसनेद॥नमों
 पंचपदसारपंचइंडीवसकीजै॥पंचलवधकौंपाय
 पंचस्वाध्यायपटीजै॥चारतपंचविचारपंचपरमाद
 विसारौं॥अंतरायविधपंचपंचमिथ्याततिवारोपां
 चौसरीरसमतजौंनीदपंचनहिंकीजिये॥धरपंचम

हा दृशना वसों पंचसमिति चित्तदीजिये ॥१०॥ पुनः ॥ सिद्धपंच
 हीनावपांचपेतालीजांनो ॥ पंचाचारविचारपंचसिक्का
 रनमांनो ॥ पंचजीतिकीदेवपंचगीलेसाधारनपदपं
 चासतकायमूलकेजावपंचगतनवपंचपरचरतन
 निकलपंचनरकडषसौंडरो ॥ षड्भेदपंचथावरसम
 कपंचकल्पानकपदधरो ॥१०॥ अथषट्बोलकेचौवी
 सनेद नमो छमतमेंसारदर्वषट्नेदप्रकासक वाह
 जतषट्नेदजावतपषट्दयनांसाकाषट्अनाय
 तनतजोहांनिषट्दधश्चुरलघा ॥ पुदगलकेषट्ने
 दक्रियाषट्गेहमोहश्च ॥ षट्नरकजायतारीकुमते
 षट्विधसमकितवरनया ॥ पूजादिकर्मषट्पोषहर
 षट्आवसकसोसुषनया ॥१२॥ पुनः ॥ षट्मंगलवै
 दामछहोंपरजायतिजांतो ॥ षट्सेनांचकेससंघना
 नषट्परवांतो ॥ संस्थांतषट्जांतछविधपरजेने
 धरों ॥ छहो कालपरनामकायषट्दयाविचारों
 जियमरनवेदषट्दिसिचलेषट्लेस्याजोधरिहैं ॥ ष
 ट्अविधपांतकेनेदषट्विधनिहचैव्योहारहैं ॥ अ
 अथसातबोलकेचौवीसनेद ॥ सातनरकनयका
 रव्यसनसातोतजजाशी ॥ सातषेतधनपरचप्रकृत
 सातोडषदाशी ॥ सक्रसातविधसेनरतनसवसात
 किप्रधरसातअचैतनरतन ॥ सातचेतनचक्रैस
 रलषसातधतमेंतन ॥ असुचिमोंनसातविधध
 रकेंदात्तागुनसातोसातविधअंतगयकौंठारिकें
 १४ ॥ पुनः ॥ सातनेंगसरधो नजांतन ॥ जोगसात
 हैं ॥ समुदघातहेसातसातसंजमविष्णुतहैं ॥ तीत्त
 जोगविधसातसाततनमेंलंघांने ॥ सातस्वरनके
 नेदसीलहतसातोजांतो ॥ निजनामस्वांदसातोउद

धिईहांसातहीषेतहैं।प्रभुतांमईतसातोदलैंसाततत
 सिवहेतहैं।१५॥अथआवबोलकेवौवीसनेदआवमू
 लगुनपालआवमदतजोंसयातैं।सम्पकआवौअंग
 ग्यांनकेआववषांने।आववौरनतिगोदआवगुनस
 रगतरोजैं।आवजुगलमेंदेवआठविधअंतरछांजे
 पूजियेंआवविधदेवजितआवौअंगनिवाइये।दिऊरे
 आवमंगलदरवआवपहरलोलाइये।१६।पुनः।आ
 वौप्रवचनधारजोगकेआवअंगहैं।आवरिचदातार
 फरसकेआवअंगहैं।आवसमेंहंमदिआवनपमांतव
 षांतैं।आवनेदसतआदआवलौकांतकजांतैं।अंग।
 लनुतमभुवरोमवसआवप्रातहास्जभलेसवआव
 ग्यांतयावकविषेंकावकरमआवौजलैं।१७॥अथन
 वबोलकेवौवीसनेद।तवौपदारथधारदरसतांवर
 नीतौविध।तौनेनगमआदचक्रधारीकैतौनिधि।तौ
 नारायतजांतमांततौहैंवलनहर।प्रतिनारायणतवै
 तवौंतारदहरिहितकरातौनेगुनपरजेंदरवकीआव
 वंधतौवारिहैं।तौगुनथांनककेनेदतौसमकिततौ
 परकारहैं।१८।पुनः।आयकगुनतौनमौसीलतौवार
 संतारौं।आयचित्ततौनेदसांतरसतौमेंधरौं।तौगैवेय
 कनुरधारतौतगतरेतरेबुध।जौननेदतौजांतयांच।
 मंगलतौपदसुध।तौगुनथांनकतौकौरमुंतिनौ।
 गुरअछरअंकसवतौदांततनीविधजांतकैतौधम
 गतिवितांगरम।१९।अथदसबोलकेवौवीसनेदने
 पूजोंदसअवतारजनमदसगुनजितसाहव।धात
 घसतदससुगुनदसौसमकितभाषेसव।ईअआदद
 सनेदभवतवासीदसजांतैं।पुदगलदसपरजायस
 दसनेदवषांतैं।दसदोषरहतिआलौचतां।कोमकुं

म०
१०

विष्टादसतजोः सुवन्नादिजीवकेनेददसवर्ष्यादृत्तदसवे
 धसजोः ॥ २० ॥ पुन्य ॥ दसौदिसामतरोकप्रानदसजिन्नेत
 नां ॥ दावतनेंदसनेदसंगदससाधलेतनां ॥ दसविधहेंदि
 गपालनिरजरादसविधजीती ॥ दसौविशेषसुभाक्त्रे
 कदससवपदवांती ॥ दसविधकूर्दांनफलनरकऽषद
 ससामानिकगुनदरव ॥ सुतसमोसरतमेंदसधुजाधर
 मध्यांनदसविधसरवा ॥ २१ ॥ अथषट्नवजथा ॥ असत
 कथनउपचारजीवकोंजनमनजांतो ॥ असतविनांउ
 पचारकायआतमकोंमांतो ॥ सांचकथनउपचारहंस
 कोरागविचारो ॥ सांचविनांउपचारपांतचेतनकोंध
 रो ॥ निहचैअसुदतिरनेदनेरागसरूपीआतमो ॥ आदे
 यदतिहचैसमकरपांतरूपपरमांतमां ॥ २२ ॥ अथदर
 वकरमनावकरमसुदनावकोंकरतापुदगलजीव
 व्योहारनिहचै ॥ यथा ॥ दरवकरमकोंकरोंजीवव्योहा
 रवतावै ॥ दरवकरमपुदगलसरूपनिहचैतैगावैना
 वकर्मकरतारधारव्योहारसुपुदगलभावकरमआ
 तमारूपनिहचैतैकोवल ॥ दोनोअसुदजियमोहमें
 पुदगलबंधलगावना ॥ अननवोंसुरूपुदगलअनु
 जीवपांतमेंनावना ॥ २३ ॥ अथसिंहारूपसरधेनजथा
 नरनेविषयनिमोहिकरोपरचौहनमेंनरा ॥ परचौदरव
 सुषेतसदाअरचौश्रीजितवराधरचौवारंवारअतरेवै
 मनसुषदायक ॥ पुदगलधरमअधरमव्योमजमजडज
 ग्पायक ॥ सवअकृतअतादिकअजरअमरगुनपर
 जायदरवमरी ॥ अतिनासैकेवलआरसीमोहिमोहेस
 रधानरी ॥ २४ ॥ अथकविलघुताअरुममतात्याग
 अथदृषनसेनगुनसेनगोतममरोतमगतधरासक
 लपापसिरनायपुंनउपजायुधुधवराकहेकवितहित

कारसाखहेहीनअधिकअति॥छुमावरोंसुद्धकरोंदोष
मतिधरोंविपलमतियहसवदहंनवारिधलहरगतन
पारकौंपायहै॥द्यांततज्ञांतीआतममगतयहपुदगल
परजायहै॥२५॥ईतिदसबोलप्रचीसीसंपूर्ण॥२५॥श्री॥
अथजिनगुणमालालिखमीसंपूर्ण॥असोकपुहपमंजरी॥
छंदसवेया॥३॥समोसरतशुतिमांतयंनदेवश्रीसरोव
रीमलीविशेषषातकागंभीरपेषपुःपवारराजहीरूप
कोटनाटसातवागदोयनेंविशालवेदकाधुजासताल
सालआदिछाजही॥हेमकोटकल्पसुखवागसोहनेंज
तसुखरत्नपुंजधंसंमआवलीमनोग्पगाजही॥वज्रकोट
चारपोलदारस्नेवसोलनीतवीचवेदकात्रिपीठसंजु
जीविराजही॥१॥दसगुनजनमतनथा॥वलतोअत्रु
लवीरश्रमकेनहोयनीरहितमितमीवीवांतीशोनी
कौंसुंहावती॥आदिसंसथानहेगंभीरसंघनतधीररूपकी
सोनाअनूपसवकोटियावती॥सहसआवलसुनसरी
रलोहहैषीरदेहकीसुगंधश्रीरगंधकौंलजावती॥मल
कौंतलेसलीयेनपजेंदसोजितेसमेरकरेंकौंसोसुरे
सनकनावती॥२॥घातकर्मतांससेतीदसगुनजथा
जोजनसोसोसुनिष्ठव्योमचलेंअंतरिष्ठचारोंमुखचारो
दिवसवविद्यापतिहैं॥जीवकौंतबंधहोयनुपसर्गनांहे
कोयकोलाहारलेतनांहिपांनसुधरतिहैंनिर्मलसरु
पमांहिसनकीनपेरेंछोहितयकेसबदेनांहिआषना
लगतेहैं॥घातियाकरमतांसदसोंगुनपरगासजिनकी
नगतिकियेपायनेंनगतहैं॥३॥चौदेंगुनदेवकृतजथा
अरधमांगधीनाषा॥द्वैरितफलफूलसिंहस्यालपीत
रीतआरसीआवतिहैं॥पोनउहारेमेंघजलकनसुगंध
फरेपापतलैकंजधरेआनंदसवतिहैं॥निर्मलगगनश्री

रदसोदिमानुज्जलहैफलेषेतसोनेभूमिधर्मचक्रमनि॥
 हैं॥आवोमंगलीकसारसुरकोऐजेकारचोदेंअतिसया॥
 तैरेदेवकृतघतिहैं॥६॥आवघातहारजजया॥फलसत
 मुषवरषतमांनोंचंदनिकोंदेवऊंडनीकेवाजेजाजेंया
 पजारजी॥सिंघासनतीनसेतीतीनलोकसांहिवहोंती
 नछत्रकहेरलत्रयदातारजी॥जांनोंअवरसुपेदचौस
 वचमरदरेऔरकहांसोकवृछहूंअसोकधरजी॥जा
 मंडलआरसीहैंवनीसुधधरसीहैनमोंआवघातहा
 रजकेसेरदाखी॥५॥अथअनेतचउष्टयजया॥लोक
 लोकद्वगुनपरजायतिहूंकालढोंकीज्योउकेराषे
 पानमेंप्रकासहैं॥चंदनोतअसंघाततेंअनेतगुनीजो
 तसोऊनांहिलगेऐसेदर्शनकीरासिहैंतिरावाधसा
 स्वतोअनाकुलअनेतसुरवअंसहंनलोकमांहिरी
 शीमुषजासहै॥सतइसेतीजोरवलकोंनहीहैंउरअ
 नेतचतुष्टेनाथवंदोंअघनांहैं॥६॥छियालीसगुनजय
 दसोंजनमतसारदसोंघातघातकारचोदेंसुरकृत्यया
 तहारजआवोगहैं॥अनेतचउष्टेकहिवतकोंछया
 लीसहैं॥गुनहैंअनेततैरेंगोनीनमेंलहैं॥तारनकों
 मोनमेघधरकोंप्रवांनऔरसंभूरमनिलहरतातें
 अधिककहै॥कोननांतिनाषेजोहिथिरताऔंबुधि
 नांहिद्यांतसेवकनैंत्यारेत्यारेसरदहैं७॥इतिश्रीजि
 नगुनमालसमीसमाप्ता॥अथपदलिषतेः॥रागवसेत
 मोहितारोहोदेवाधिदेवमेंमनवचतनकरिकरोंसेव॥मो
 हितारोहोदेवाधिदेव॥तुमदीनदयालअनाथनाथह
 मंहंकोराधोआपसाथा॥१॥मोहितारोहोदेवाधिदेवय
 हमारवारसंसारदेसा॥तुमचरनकलयतरुहरकलेस
 १॥मोहितारोहोदेवाधिदेव॥तुमनांमरसायनजीवपी

याद्यांततिअजगमरननवरतीयाधमोहतारोहोदेवाथे
 देवाईति॥ईति॥केदारोरेजियक्रोधकाहेकोरेदिषिकेअ
 विवेकश्रीती॥क्योविवेकनधरेशरिजियक्रोधकाहेको
 करे॥जिसेजेसीनुदेआवेसोक्रियाआचरेसहजतेअप
 नोविगारें॥जायडरगतपरें॥शरिजियक्रोधकाहेकोक
 रे॥होईसंगतिगुनसवतिकोंसवजगनुदरें॥तुमनलेक
 रनलीसवकों॥चुरेलखमतजरें॥अरेजियक्रोधकाहे
 कोकरे॥आवेदपरविषहरसकतनहिंआयजयको
 मरे॥वऊकषायतिगोदवासाछिमांद्यांनतनरेंरेजि
 यक्रोधकाहेकोंकरे॥ईध॥ईति॥असेमित्रसोंकरि
 प्यारी॥विषेंविलाससमकतहियाकों॥ग्योतध्यातअ
 धिकारी॥असेमित्रसोंकरिप्यारी॥शुपलचलावेसो
 कलपावेंआंवरीतगहिसारी॥दीनतहीअनिमांतीने
 हीमध्यदसाव्यवहारी॥असेमित्रसोंकरिप्यारी॥अ
 जादोतकरेंनहिंघाहेंसुरगतकीरतमारी॥जीवतद
 सामतकरतोतीएगदोषपरहारी॥असेमित्रसोंक
 रिप्यारी॥अ॥चंदनभूमतदीतररविससिवारदसेनुप
 गारी॥हेमराजतितहीपुरुषनिकरवसुंधातीरथध
 री॥असेमित्रसोंकरिप्यारी॥ईध॥ईति॥अरकोंवि
 सारपारनेमपेमसार॥रोगसोगकोंविजोगभोगहो
 अपार॥पारनेमपेमसारअरकोंविसार॥इयजा
 यमुघुपायध्यांतकोनिवारपारनेमपेमसारअर
 कोंविसार॥२॥पर्मशीतधर्मतीतसर्मरीतकार॥पार
 नेमपेमसारअरकोंविसार॥३॥मोदनांसकामआ
 सक्रोधलोतहार॥पारनेमपेमसारअरकोंविसार
 ॥५॥पायहांतआयग्यांनजायकोंकरार॥पारनेमपेम
 सारअरकोंविसार॥हीदीनतानहीनतातस्वर्गमोष

पद ०
६२

धारहेमराजजी॥ संचारधूमधामज्जार॥ धारनेमयेमसार॥
त्रोरकोविसार॥७॥ इति॥ ईदीचेतनसवहीमेंघाटवाटन
हिंशोर॥ दीपमांदमंदिरपरगांसेंथोंतनमेंसिरमोरचित
नसवहीमेंघाटवाटनहिंशोर॥ उतमनीचकरमसो
जगमेंनिन्नमुकतकीवीर॥ काहित्रराधोंकाहिविरा
धोयहमिष्याकीदीराचेतनसवहीमेंघाटवाटनहिंशोर
रा॥ गजकुंथवावरावजांनोंमांनोंसोनाथोरकोनपु
रुवकीनिंदाकीजेकाकीकजिगोर॥ चेतनसवहीमेंघ
टवाटनहिंशोर॥ केवलज्ञातमईसवरजेयहसर
धसिवत्रोरहेमराजआस्वादेजांनैत्रनुनोंत्रंमृतकै
रा॥ चेतनसवहीमेंघाटवाटनहिंशोर॥ इति॥ ई॥ फु
लीवसंतफुलीवसंत॥ जहत्रादीस्वरसिवपुरमए॥ भर
तभूपवहतरजिनग्रहकवकमईसवतिरमए॥ फुली
वसंतफुलीवसंत॥ तीनचोवीसरतनमेंप्रतिमांत्रं
गरंगजेजेनए॥ सिद्धसमानतीससमसवकेत्रदनुत
सोनापरनए॥ फुलीवसंतफुलीवसंत॥ वालआदे
आहंवकोरमुतिसवनिमुकतमुषत्रनुनए॥ तीनत्र
टाडीफागनिषगमिलगावेंगीतनएनए॥ फुलीवसंत
फुलीवसंत॥ त्र॥ वसुजोंजनचसुंपैडीगंगा॥ फिरीवज
तसुरआलए॥ द्यांततसोकैलासनमोहोगुंनकांयेंजे
वरनए॥ फुलीवसंतफुलीवसंत॥ ५॥ इति॥ ईदीतुंमग्यं
नविनों फुलीवसंत॥ पऊमनमधुकरमुषसौरमंता
तुंमग्यांनविषेनों फुलीवसंत॥ ७॥ दिनवडेनएवैरागा
जावा॥ मिष्यामतिरजतीकोंघटावा॥ तुंमग्यांनविषेफु
लीवसंत॥ १॥ वऊफुलीफेलीसुरुचिवेला॥ ग्याताज
नसमतासंगकेला॥ तुंमज्ञांतविनों फुलीवसंत ३
द्यांततवांनीपिंकमधररूपसुरनरपसुंआनंदप

नरूपसुंमज्ञानविज्ञो फुली वसंत धा ईति ॥ ६६ ॥ ग्पोनीजीवद
यानितपालें ॥ आरंभतें परघात होत है ॥ क्रोधघात निज टालें
हिंसा त्याग दया कहां वैजलें कषाय वदनमें ॥ बाहिर त्यागी ॥
अंतर दागी ॥ पञ्चैतरक सदनमें ॥ २१ ॥ ग्पोनीजीवदयानित
पालें ॥ करे दया पर आलस जावी ताको कहिये पापी ॥ सांत
सुनाव प्रमाद न जाकें ॥ सो परमारथ आपी ॥ ग्पोनीजीवदया
नितपालें ॥ ३॥ सिधलाचार निरुद्धि मरहनां सहनां वज्र
उषजाता ॥ द्यो नत वोलति मोलति जीमनि करे जतन सौ
ग्याता ॥ ग्पोनीजीवदयानितपालें ॥ ६॥ ईति ॥ ७० ॥ कारज एक
ब्रह्म ही सेती ॥ अंग संग न हिं व हिर भूत सव ॥ घन हार
साम ग्रीतिती ॥ कारज ब्रह्म एक ही सेती ॥ सो लह सुरग न
व ग्रे वेयक में उषी ॥ सुषते सात में तत कावेती ॥ जा सिव
कारन मुंतिगत ध्यावें ॥ सो तेरे घट आ नद सेती ॥ कारज
एक ब्रह्म ही सेती ॥ २॥ दाम सील जपत पढत पूजा अफ
ल ग्पोत वित किरिया केती ॥ पंच दरव तो तें तित्तपारे न
री रोग विधजेती ॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥ ३॥ अत्र अवनो
सी जग परगो सी ॥ द्यो नत ना सी सुकलावेती ॥ तजो ला
लज न के विकल पं सव ॥ अनु नों मग न सु विद्या एनी
कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥ ६॥ ईति ॥ ७१ ॥ होरी चेतन बो
ले होरी ॥ सताने मिळमा वसंत में ॥ समता प्रांन प्रिया सं
ग गोरी ॥ चेतन बेलें होरी मन कों मट पे म कों पांती ता
में करुनां के सर घोरी ॥ ग्पोत ध्यांन पिचकारी भरि न
रि आ पस में छौरे होरा होरी ॥ चेतन बेलें है ही ॥ २॥ गुरु
के वचन मृदंग वजत है ॥ नैदौ नों उफ टाल टकोरी सं
जम अतर विमल हत चूका नाव गुलाल नैरें नर को
री चेतन बेलें होरी ॥ ३॥ धरम मिटा डी तप वज्र मे वास
मर स आनंद अमल कटोरी ॥ द्यो नत सुंमत कहें सधि
पन सों चिर जीवों यह जुग जुग जोरी ॥ चेतन बेलें होरी ॥

इति ॥ १२ ॥ नौरनयोनं जज्ञी जितराजं सफलं होहि तेरे सब कें
 म ॥ धनसंपत्ति मनवंछित नोग ॥ सब विध आतवने संयोग
 नौरनयोनं जज्ञी जितराज ॥ शकल पद छता के घर रहें ॥
 कामधेनु नित सेवा वचें ॥ पारस चिंता मनि समुदाय हि
 तसों प्राय मिलें सुषदाय ॥ नौरनयोनं श्री जितराज ॥ १३ ॥ इल
 न तें सुलन कें जाय ॥ रोगसौगड घर पलाय ॥ सेवा देवा
 करें मन लाय ॥ विघन नुलट मंगल वहराय ॥ नौरनयोनं
 जज्ञी श्री जितराज ॥ अथ यत्न मृतपि सा चतवले ॥ राज
 चोर कों जोरन चले ॥ जस आदर सों नाग प्रकास ॥ ह्यो ॥
 नति स्वरागु कत पद वास ॥ नौरनयोनं जज्ञी श्री जित
 राज ॥ १४ ॥ इति ॥ १३ ॥ जिन कें हिरदै नग वां न वसें तिन आं
 न कों ध्यान किया न किया ॥ चक्री एक मिला पन एतें ॥
 और तरन मिलिया मिलया ॥ जिन कें हिरदै नग वां न
 वसें तिन आं न कों ध्यान किया न किया ॥ इक चिंत मन
 वंछित दायक और तग नग हिया ॥ पारस एक कनी कर
 आवें और धन न लहि फल हिया ॥ जिन कें हिरदै नग वां
 न वसें तिन आं न कों ध्यान किया न किया ॥ २ ॥ एक नो नद
 सदि सनु जियारा और ग्रहन नुदिया नुदिया ॥ एक का
 ल्यतरु सब सुषदाता ॥ और तरु नुगिया नुगिया जि
 न कें हिरदै नग वां न वसें तिन आं न कों ध्यान किया न
 किया ॥ एक अन्नै महा दान देयकें ॥ और सुंदान दिया
 न दिया ॥ दान तगपां न सुंधार सचाष्यो ॥ अमृत और पे
 या न पिया ॥ जिन कें हिरदै नग वां न वसें तिन आं न कों
 ध्यान किया न किया ॥ १४ ॥ इति ॥ १४ ॥ प्रायों सहज वसें
 तये लोख बहोरी होरी हो ॥ नुत बुध दया छमां बरुवाही
 इति जियरत न त्रे गुन जोरी ॥ होपां न ध्यान न फताल
 वनत है ॥ अनहित सब दहोत घन घौरा ॥ घर मसुरा
 गगुला लजुडत है समतारंग डऊ नै घोरा हों ॥ १५ ॥ परसन

सुतरनरेपिचकारीछौरतदौनोकरितोरा। इतनेकहैतार
तुमकाकीजनतैकहैकौनछौरा॥ आवकावअनुनौ।
पावकमैजलबुझसांतनडीसुंघुरे। द्योततसिवआ
नंदचंदछविदेषंसजननेतचकोरा। ध। इति॥ ७५॥ अजत
तांथसौमनलावौरे करसोंतालवचनमुषनाष्यो। मैचे
तलगावौरे। अजततांथसोंमनलावौरे। ग्यांनदरस
सुषवलगुनधारी। अतंतचतुष्टयध्यावौरे। अवगाह
नांअवाधमूरतअगुरुअलकवतलावौरे। श। अज
ततांथसोंमनलावौरे। करनांसागरगुनरतनांगर
जोतिनुजागरभावौरे। त्रिजवतनायकनवनयघाय
कआतंदहायकगावौरे। अजतताथसोंमनलावौरे
॥ परमतिरंजनयातकनंजतनविरंजनवहरावौरे
द्योततजैसासाहिवसेवौतैसीपदवीपावौरे। अजतने
थसोंमनलावौरे। ध। इति॥ ७६॥ रागआसावरी। अव।
हमअमरनएंनमरेगें। ततकारनमिथ्यातकीयोतज
कौकरिदेहधरेगें। अवहमअमरनएंनमरेगें। उय।
जेमरेकालतैंघांती। तातैंकालहरेगें। रागदोषजरा
बंधकरतहैं। इतकौंतांनकरेगें। अवहमअमरनएं
नमरेगें। देहविनांसीमैअविनांसीनेदग्यांतकरेगें
जासीजासीहमथिरवासीवोषैंहोनिषरेगें। अवह
मअमरनएंनमरेगें। मरेअतंतवारवितसमकैअ
वसवउषविसरेगें। द्योतततिपलनिकटअक्षरहैं
वितसुमरेसुमरेगें। अवहमअमरनएंनमरेगें। अ
वहमअमरनएंनमरेगें। ध७। इति। आसाउरी। ना
रीग्यांनीसोरीकहियेकरमउदैसुषउषनोगतैरगा।
विरोधतलहिये। भारीग्यांनीसोरीकहिये। कौंऊ
ग्यांनक्रियातैंकोऊसिवमारगवसलावें। तेनिह्वैवे
वहारसाधिकैदौनोंवितरिजावैगाभारीग्यांनीसोक

हिये ॥ १ ॥ कोरी कहै जीव छिनने गुर कोरी नित्य वषां नैं परजय
 दरवतनय परमानें ॥ दो नें समता आनें ॥ नारी ग्यां नी सौ कहि
 ये ॥ २ ॥ कोरी कहें नु देहे सोरी कोरी ॥ नहि मवो लैं घां न तस्य
 दसु तुला में दो नो वस्तें तो लैं ॥ नारी ग्यां नी सौ कहिये घ ॥ ३ ॥
 ति ॥ ७ ॥ नारी कौ न धरम हम चालें ॥ एक कहै जिह कुल
 में आएं वा कुर कौ कुल पावें ॥ नारी कौ न धरम हम चालें ॥
 सिवमत बोध सुं वेद नें पाय कामी मांसक अरु जेता ॥ आ
 य सरा हें आगम गा है का की सर धस अनेता ॥ नारी कौ न
 धरम हम चालें ॥ २ ॥ परमे सरयें आया हौं ता की वात्त सुं
 न जैं ॥ मूवे वज्र तन वोलें क वज्र वकी फिकर क्या की ज्ये
 नारी कौ न धरम हम चालें ॥ ३ ॥ जिन सवमत के न्याय सं
 च करि मारग एक वताया ॥ घां न तसौं गुर पूरा या या नाम
 हमार आया ॥ नारी कौ न धरम हम चालें ॥ ४ ॥ इति रा
 ग गौरी ॥ हमारो कारज कै सैं होय ॥ कारण पंचसुकत म
 रग के तिनमें कै हें दोय ॥ हमारो कारज कै सैं होय ॥ हीन
 संघन न लघ आर्गघा अलप मनीषा जोरी कचे भाव
 न सचे साथी सव जग देखो दोरी ॥ हमारो कारज कै सैं
 होय ॥ २ ॥ इंदी पंचसुं विषय नदौ रैं मां तै कह्यान कोरी सा
 धरन चिरकाल वस्यो में धरम विनो फिर सोय ॥ हमा
 रों कारज कै सैं होय ॥ ३ ॥ चिंता वडी न क छुवन आ वै अ
 व स व चिंता षोरी ॥ घां न त एक शुद्ध निज पद ल वि आ
 प में आपस मोरी ॥ हमारों कारज कै सैं होय ॥ ४ ॥ इति ०
 राग गौरी ॥ हमारों कारज कै सैं होरी ॥ आत्म आतम परप
 र्जां नैं ॥ ती नो सैं से घोया ॥ हमारों कारज कै सैं होरी अ
 तस माधि मरन करित न तजि हौं हि स क्र सु र लोरी ॥ वि
 वधि नोग न पनोग नोग वै धरमत नो फल सोरी हमा ॥
 रों कारज कै सैं होय ॥ २ ॥ श्री आ व वि देह नूप कै राज सं
 पदा नोरी ॥ कारण पंच ल हें ग है उ धर पंच महा वृत्त जोरी

॥ अथ स ह्यप्रनामजिनसेन कृतलिख्यते ॥ स्वयंभुवेन मस्तुम
 मुत्याद्यात्मानमात्मनि स्वात्मनैव तयोऽकृतवृत्तये चित्तस्पृष्टतये ॥ १ ॥
 नमस्ते जगतां एते लक्ष्मीर्नर्नै नमोस्तुते ॥ विदां वरनमस्तुभ्यं
 नमस्ते वदतां वर ॥ २ ॥ कामरात्रुहणं देवमामनंति मनीषिणः त्वा
 मानमस्तुरेण मौलिनामालाभार्चितक्रमं ॥ ३ ॥ ध्यानदुष्पणनिर्निन्न
 घनघातिमहातरुः ॥ अनंततनवसंतातजयादासीरं नंतजित् ॥ ४ ॥
 त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तुर्ह्यस्यमतिर्दुर्जयः ॥ मृत्फराजं विजित्पार्सी
 जिन्मृत्फंजयोजवान् ॥ ५ ॥ विधुताशेषसंसारबंधनोत्तमवां ॥
 धवः त्रिपुरारिस्वमीश्रीसि ॥ जन्ममृत्युजरांतकृत ॥ ६ ॥ त्रिका
 लविषयाशेषतत्त्वज्ञेदात्रिधोत्थितं ॥ केवलारम्भं दधच्चक्षुषि
 नेत्रोसित्वमीशितः ॥ ७ ॥ स्वामंधकंतकंपाङ्गमोहांधासुरमर्द
 नात् ॥ अर्धतेनारयोयस्मादर्धनारीश्वरोस्यतः ॥ ८ ॥ शिवः शिव
 पदाध्यासाद्दुरितारिहरो हरः ॥ शंकरः ॥ कृतशंलोके शंभव ॥
 स्वंभवन्मुखे ॥ ९ ॥ हृषिकेशिजागज्ज्येष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः
 नानेयो नानिसंज्ञतेरिच्छाकु कुलनंदनः ॥ १० ॥ त्वमेकः पुरु
 षस्कंधस्वंधेलोकस्यलोचने त्वेत्रिधाबुद्धसत्मागीस्त्रिज्ञः
 स्त्रिज्ञानधारकः ॥ ११ ॥ चतुःशरणमांगल्पमूर्तिस्वंचतुरस्रध
 पंचब्रह्मप्रयोदेवः पावनस्वंपुनीहिमां ॥ १२ ॥ स्वर्गावतरणेतु
 भ्यंसद्योजात्मानेनमः जन्मानिषेकचामायं वामदेवनमो
 स्तुते ॥ १३ ॥ सुनिःक्रांतावधोराय ॥ परंप्रशममीयुषे केवल
 ज्ञानसंनिधौ ॥ श्रीज्ञानाय नमोस्तुते ॥ १४ ॥ पुरुस्तत्पुरुषे
 न विमुक्तिपदज्ञगिने ॥ नमस्तत्पुरुषावस्थानाविनीते
 द्यविन्नते ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणनिर्हासान्तमस्तेनंतचक्षुषेदर्श
 नांवरणोच्छेदन्नमस्ते विश्वदृश्यने ॥ १६ ॥ नमोदर्शितमोहघ्ने
 द्वायिकामलदृष्टये नमश्चारिन्नमोहघ्ने ॥ विरागाय महोज
 से ॥ १७ ॥ नमस्तेनंतवीर्याय नमो नंतसुरवात्मने ॥ नमस्तेनंत
 लोकाय ॥ लोका लोकविलोकिने ॥ १८ ॥ नमस्तेनंतदानाय
 नमस्तेनंतलब्धये नमस्तेनंतजोगाय ॥ नमो नंतोपज्ञो गिने
 ॥ १९ ॥ नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयो नये ॥ नमः परमपूताय न

मस्ते परमर्षये ॥ २० ॥ नमः परमविद्याय नमः परमतच्छिदे नमः
 परमतत्त्वाय ॥ नमस्ते परमात्मनि ॥ २१ ॥ नमः परमरूपाय नमः पर
 मतेजसे ॥ नमः परममागार्गीय ॥ नमस्ते परमेष्ठिते ॥ २२ ॥ परमं
 जेजुषेधामपरमज्योतिषे नमः ॥ नमः परितमः शक्त्याम्नेप
 रतमात्मने ॥ २३ ॥ नमः क्षीणकलंकय ॥ क्षीणबंधनमोस्तुते
 नमस्ते क्षीणमोहाय ॥ क्षीणदोषाय ते नमः ॥ २४ ॥ नमः सुगत
 ये तुभं शोभतां गतिमीयुये ॥ नमस्ते तीक्ष्णज्ञानसुखायाने
 क्षियात्मने ॥ २५ ॥ कायबंधननिर्मेक्षादकाययनमोस्तुते न
 मस्तुभ्यमयोगाय योगिनामधियोगिने ॥ २६ ॥ अवेदाय न
 मस्तुभ्यमकषायाय ते नमः परमविज्ञानतमः परमसंयम
 नमः परमहृष्टपरमार्थाय तायिते ॥ २७ ॥ नमस्तुभ्यमलेत्रपाय
 शुचलेत्रपांशकसृष्टे ॥ नमो नव्येतरावस्थां अतीतापवि
 मोक्षिणे ॥ २८ ॥ संज्ञसंज्ञिष्यावस्थात्मतिरिक्तामत्माने
 नमस्ते वीतसंज्ञाय तमः क्षायिकहृष्टये ॥ २९ ॥ अनाहाराय
 सदाय तमः परमजाजुषे ॥ अतीतात्रोषदोषाय नवाब्धेः पा
 र्मीयुषे ॥ ३० ॥ अजराय नमस्तुभ्यं नमस्ते स्तादजन्मने ॥ अमृत
 विनमस्तुभ्यं ॥ मचलायाक्षरात्मने ॥ ३१ ॥ अलमास्तांगुणसो
 त्रमनेतास्तावकागुणाः ॥ त्वां नामस्मृतिमात्रेण पृथुयासि ॥
 त्रिषामहे ॥ ३२ ॥ प्रसिद्धाष्टमहश्रेष्ठलक्षणं त्वांगिरां पतिना
 म्नामष्टमहश्रेणतोष्टुमोनीष्टसिद्धये ॥ ३३ ॥ इतिस्तुतिः ॥
 श्रीमान् स्वयं नृर्षभः शंभवः शंभुरात्मनः स्वयं शंभुः प्रभुर्गो
 कविश्वभूरपुनर्भवः ॥ ३४ ॥ विश्वात्मा विश्वलोकेशो विश्वत
 त्तुरक्षरः ॥ विश्वविद्धि विश्वविद्येशो ॥ विश्वयोनिरतश्चरः ॥
 ३५ ॥ विश्वहृश्चाविमुर्धाता विश्वेशो विश्वलोचनः विश्वभाष
 विधुर्वेधाः शाश्वतो विश्वतो मुखः ॥ ३६ ॥ विश्वकर्मा जगन्ने
 ष्टो विश्वमूर्तिर्जिनेश्वरः विश्वहृश्च विश्वभूतेशो विश्वज्योति
 र्तीश्वरः ॥ ३७ ॥ जिनो जिहुरमेयात्मा विश्वरीशो जगत्पति
 अतंतजिदचित्तात्मानमबंधुरबंधनः ॥ ३८ ॥ युगादिपुठयो

ब्रह्मा पंचब्रह्ममयः शिवः परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठीसनातनः ४
 स्वयं ज्योतिरजो जन्मा ब्रह्म यो निरयो तिजः मोह हरि विजय जित
 धर्म चक्री दया ध्वजः ॥ ४१ ॥ प्रशांतारिरनेतात्मा योगी योगीशू
 रार्चितः ब्रह्म विब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्या विद्यतीश्वरः ॥ ४२ ॥ सिद्धो
 बुधः प्रबुधात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः सिद्धसिद्धात विद्येयः
 सिद्धसाधो जगद्वितः ॥ ४३ ॥ सहिष्णु रमुतो नंतः प्रनविष्णु
 र्नेवोद्भवः प्रनृष्णु रजरो यज्यो न्ना जिष्णुधीश्वरो मयः ॥ ४४ ॥ वि
 नावसुर संनृष्णुः स्वयं नृष्णुः पुरातनः परमात्मा परं ज्योतिः।
 सिजगात परमेश्वरः ॥ ४५ ॥ इति श्रीमच्छ्रुतं ॥ १ ॥ दिव्यनाथापति
 दिव्यः पूतवाक्पूतशासनः पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्वे
 दमीश्वरः ॥ ४६ ॥ श्रीपतिर्नेगवान्तर्हं नरजा विरजाः शुचिः १
 र्यकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोमलः ॥ ४७ ॥ अनंतदि
 सिर्ज्ञानात्मा स्वयं बुद्धं प्रजापतिः मुक्तः शक्तो निराबाधो नि
 कलो मुचनेश्वरः ॥ ४८ ॥ तिंज नोजग ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निराम
 यः अचलस्थिति रक्षो ज्यैः कूटस्थः स्याणुरक्षयः ॥ ४९ ॥ अग्रणी
 र्यामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृतः शास्ता धर्मपतिर्धर्मो
 धर्माधर्मतीर्यकृतः ॥ ५० ॥ दृषध्वजो दृषाधीशी दृषकेतुर्दृषायुधः
 दृषो दृषपतिर्नेता दृषनांको दृषोद्भवः ॥ ५१ ॥ हिण्यना निर्नृतत्मानृतनृ
 तनावनः प्रनवो विनवो नास्वानृनवो नावो नवांतकः ॥ ५२ ॥ हिरण्य
 गर्भः श्रीगर्भः प्रनृतविनवो नवः स्वयंप्रभुः प्रनृतात्मा नृतनाथो
 जगात्प्रभुः प्रसर्वादिः सर्वदृक्वर्षः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः सर्वोत्तम
 सर्वलोकेशः सर्ववित्सर्वलोकजितः ॥ ५३ ॥ सुगतिः सुश्रुतः सुश्रु
 तमुवाकनृ र्विर्षुंश्रुतः विश्रुतो विश्रुतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्र
 वाः ॥ ५४ ॥ सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ नृतभम
 नवज्ञगी ॥ विश्वविद्यामहेश्वरः ॥ ५५ ॥ इति दिव्यश्रुतं ॥ २ ॥ स्यवि
 ष्टः स्यविरो ज्येष्ठदृष्टः प्रेष्टो वरिष्ठधीः स्येष्टो गरिष्ठो वर्हिष्टः प्रेष्टो
 णिष्टो गरिष्ठगी ॥ ५६ ॥ विश्वमुद्दिश्वसुडु विश्वेडु विश्वेनु विश्वना
 यकः विश्वासी विश्वरूपात्म विश्वजिद्धिजितांतकः ॥ ५७ ॥ विनयो
 विनवो वीरो विशोको विजरो जरनृ चिरागो वितो संजो वि

महप्रनाम
६

वीतमत्सरः॥५॥ वितेयजनताबंधुर्विलीताशेषकल्मषः वियो
गोयोगविद्विदानविधातासुविधिःसुधीः॥६॥ शांतिनाकृष्ट्ये
वीमूर्तिःशांतिनाकलिलात्मकः वायुमूर्तिरसंगात्मावा
क्लिमूर्तिरधर्मधरु॥६॥ सुयज्वायजमानात्मासुन्वासत्रामपूजे
तःऋत्विगपज्ञपपतिर्यज्मोयज्ञांगममृतं हविः॥६२॥ सोममूर्ति
रमूर्तीत्मा॥ निर्लेपोनिर्मलोत्तलः॥ सोममूर्तिः
मूर्तिर्महाप्रजः॥६३॥ मंत्रविमंत्रकन्मंत्रामंत्रमूर्तिरनेतंगः स्व
तंत्रस्तंनकृत्स्वतः कृतांतंतः कृतांतकृत्॥६४॥ कृतीकृतार्थः स
कृत्यः कृतकृत्यः कृतकृतु
ऋचः॥६५॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्मब्रह्मात्माब्रह्मसंनवः महाब्रह्म
पतिर्वह्नेइमहाब्रह्मपदेश्वरः॥६
धर्मदमप्रभुः प्रशमात्माप्रशांतात्मापुराणपुरुषोत्तमः॥६७॥
॥ इति स्थविष्ठशतं ॥ शमहाशोकध्वजोशोकः कंस्रष्टाप्र
ष्टरः पद्मेराः यज्ञसंभूतिः पद्मनन्निरनुत्तरः॥६८॥ पद्मयोन्निजे
गद्येनिरिसः सुः सुतीश्वरः स्तवनाहोऋषीकेशोजितजेयः कृ
तक्रियः॥६९॥ गणाधियोगएज्यष्टेगुणः पुण्योगाणायणीः गु
णकरोगुणान्नेधिर्गुणज्ञेगुणनायकः॥७०॥ गुणादरीगुणो
च्छेदीनिर्युगः पुण्यगीर्गुणः शरणः पुण्यवाकृष्टोवरोणः पु
ण्यः युक्तः॥७१॥ अगणः पुण्यधीर्गणः
धर्मारामोगुणशामः पुण्यपुण्यनिरोधकः॥७२॥
पात्माविपाप्यावीतकल्मषः निर्द्वोनिर्मदः शांतोनिर्मोहो
निरुपश्रवः॥७३॥ निर्निमेषोतिराहारोनिःक्रियोनिरुपश्रव
निःकलंकोतिरस्तेनानिर्हृतागोनिराश्रवः॥७४॥ विशालेवि
पुलज्योतिरतुलोचित्पवैभवः सुसंघतः सुगुणात्मसुभ्रत्सुन
यतत्वजित्॥७५॥ एकविद्योमहाविद्योमुनिः परिष्टपतिः श्री
शोविद्यनिधिः साक्षी विनेताविहतांतकः॥७६॥ पिता
हः पाताः पवित्रः पावनो गतिः प्रातानिषाचरोवर्योवरदः परम
पुमान्॥७७॥ कविंपुराणपुरुषोर्विधीयानृपजः
बोहेतुर्भुवनैकक्षितोमहः॥७८॥ इति महाशतं ॥ ४ ॥ श्री वृक्षल

क्षणाःश्नक्षणाःलक्षणाःशुक्लक्षणाःनिरक्षःपुंक्षरीकाक्षःपुं
क्षरेक्षणाः॥११॥सिद्धिदःसिद्धसंकल्पःसिद्धात्मासिद्धसाधनं
बुद्धोद्भोमहांबोधिवर्द्धमानोमहर्षिकः॥१०॥विदांगोवेदवि
वेद्योजातरूपोविदांवरःवेदवेद्यःस्वसंवेद्यो॥विवेदोवदत्तं
वः॥११॥अनादिनिधनोमक्तोमक्तचाग्यक्तशासनःयु
गादिक्लृद्युगाधारोयुगादिर्जगदादिजः॥१२॥अतीशोतीशि
योधीशोमहेक्षोतीशियार्थदृक्अनिश्रियोहमिंशोमहेक्षम
हितोमहान्॥१३॥उक्तवःकारणंकर्त्तापारगोभवतारकश्च
मह्योगहनंगुह्यंपरमेश्वरः॥१४॥अनंतर्द्धिरमेयर्द्धि
समग्रधीःशायःशायहरोन्मयः॥प्रत्ययोगमोग्निमोयजः॥१५॥
महातपामहातेजामहोदक्कोमहोदयः॥महायशामहाधामा
महासत्वोमहाधृतिः॥१६॥महाधैर्योमहावीर्यो॥महासंपन्न
हावल्लः॥महाशक्तिर्महाज्योतिः॥महाचृतिर्महाद्युतिः॥१७॥
महाप्रतिर्महानीतिर्महाक्षान्तिर्महादयः॥महाप्रज्ञोम
हानंदो॥महाज्ञागोमहाकविः॥१८॥महामहामहाकीर्त्ति
र्महाकांतिर्महावपुः॥महादानोमहाज्ञानोमहायोगोम
हागुणः॥१९॥महामह्यतिःशक्तमहाकल्याणपंचकःम
हाप्रभुर्महाशक्तिहायोधीशोमहेश्वरः॥२०॥इतिश्रीब्रह्म
शतं॥महामुक्तिर्महाध्यानोमहामौनीमहादमःमहाहमे
महाश्रीलोमहायज्ञोमहामखः॥२१॥महाव्रतपतिर्मह्योमहा
कांतिधरोधिपः॥महामैत्रीमयोमेयोमहोपायोमहोमयः॥२२॥
महाकारुणिकोमंतामहामैत्रोमहायतिः॥महानादोमहाशो
षोमहेज्योमहासायतिः॥२३॥महाधुरंधरोधुर्यो॥महोदायो
महिष्ठवाक्॥महात्तामहासाधामा॥महर्षिर्महितोदयः॥२४॥
महाक्लेशाकुशसरो॥महाचूतपतिर्गुरुःमहापराक्र
मोतंतौ॥महाक्रोधरिपुर्वेत्री॥२५॥महान्वाधिसंतारी
महामोहाद्विद्वदनः॥महागुणाकरैहातोमहायोमीश
रःशमी॥२६॥महाभ्यानीतिर्धाममहाधर्मीमहाव्रतम

हाकर्मरिहात्मज्ञो महादेवोमहेशिता ॥ ८७ ॥ सर्वकेशापहः
 साधुः सर्वदोषदरोहरः असंख्येयो प्रमेयात्मा ॥ त्रामात्मा प्र
 माकरः ॥ ८८ ॥ सर्वयोगीश्वरो चित्तः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः श्र
 तात्मा दमतीर्थेशो ॥ योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥ ८९ ॥ प्रधानमा
 त्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमकृ
 क्षिमशासनः ॥ ९० ॥ प्राणवः प्राणयः प्राणः प्राणदः प्राणतेशु
 रः प्रमाणं प्राणिधिर्देहो दक्षिणो ध्वस्मुरध्वरः ॥ ९१ ॥ आनं
 दो नन्दनो नंदो वंद्यो नित्यो नितेन्दकः कामहा कामदः काम
 कामधेनुररिंजयः ॥ ९२ ॥ इति महा मुनिशतं ॥ असंस्कृतसु
 संस्कारो प्राकृतो वैकृतांतकृत् अंतकृत् कांतयुः कोति
 श्रितामणिरजीष्ठदात्र ॥ अजितोजित कामारि रमितो
 मितसासनः जितक्रोधो जिता मित्रो जितकेशो जितान्त
 कः ॥ ९३ ॥ जिनेन्द्रः परमानंदो मुनीन्द्रोऽन्दिस्वनः महीन्द्रवधे
 योगीन्द्रो यतीन्द्रो नां नितेन्दनः ॥ ९४ ॥ नानेयो नानिजो जा
 मसुवतो मनु रूत्तमः ॥ अनेधे नित्ययो नाश्वानधिकोधिगुरुः
 सुःगीः ॥ ९५ ॥ सुमेधा विक्रमी स्वामी उराधर्षो निरुत्सुकः वि
 शिष्टः शिष्टनुक्त्रिष्टः प्रत्ययः कामनेनद्वः ॥ ९६ ॥ क्षेमीक्षे
 मं करोक्ष्मपः ॥ क्षेमधर्मपतिः क्षमी ॥ अथाहो ज्ञाननिर्ण
 हो ध्यानगम्पो निरुत्तरः ॥ ९७ ॥ सुकृती धातुरिज्यार्हः सु
 नयश्चतुरातनः ॥ श्रीनिवासश्चतुर्वक्रश्चतुरास्यश्चतु
 मुखः ॥ ९८ ॥ सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक् सत्यशा
 सनः ॥ सत्यात्रीः सत्यसंधानः सत्यः ॥ सत्यरायणः ११
 स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्द्वीयान्द्वरद्वीतः अणु
 रणीयाननणुं गुराद्योगरीयसां ॥ ९९ ॥ सदायोगः स
 दानोगः सदात्मः सदाशिवः सदागतिः सदासौख्यः
 सदाविद्यः सदादयः ॥ १०० ॥ सुघोषः सुमुखः सौम्यः सु
 खदः सुहितसुकृतः सुसुप्तो युस्मिन्नृकोसा ॥ लोकाहृष्टो हे
 दमेश्वरः ॥ १०१ ॥ इति असंस्कृतशतसमूहहृद्स्पतिर्द्वामी

वाचस्पतिरुदारधीः मनीषी धिषणोधीमान् त्रिमुषीशोगिरापतिः
 ११४॥ नैकरूपो न योत्तुंगो नैकात्मानैकधर्मकृतः ॥ अत्र विज्ञेयो प्रत
 कर्मात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ ११५ ॥ ज्ञानगर्भो द्यागर्भो रत्नागर्भ
 प्रज्ञास्वरः ॥ पद्मगर्भो जिगर्भो हेमगर्भः सुदर्शनः ॥ ११६ ॥ हनन्मीरि
 स्त्रिदशाभ्यक्षो ॥ हृदीयानि नर्शिता ॥ मनो हरो मनो ज्ञागो धशि
 गंती श्रासनः ॥ ११७ ॥ धर्मयूपो द्यायागो ॥ धर्मनेमिर्मुनीश्वरं
 धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मधोषणाः ॥ ११८ ॥ अमोघवाग
 मोघाज्ञो निर्ममो मोघश्रासनः ॥ सुरूपः सुजगत्पागी समयज्ञं स
 माहितः ॥ ११९ ॥ सुस्थितः स्वास्थ्यनाकृस्वस्थो नीरजस्को निरुद्ध
 अलेयो निःकलंकात्मा वीतरागो गतस्थहः ॥ १२० ॥ वरेपेन्द्रियो वि
 मुक्तात्मानिः सपत्नोजितेन्द्रियः प्रज्ञातो न तथामर्षिर्मंगलं म
 लहानयः ॥ १२१ ॥ अनीहृद्युपमानूतो ॥ हृषिर्हैवमगोचरः अमृ
 तीमूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वहृक् ॥ १२२ ॥ अथ्यात्मगमे
 गम्पात्मा योगविद्योगिचंद्रितः ॥ सर्वत्रगः सदा ज्ञात्री त्रिका
 लविषयार्थहृक् ॥ १२३ ॥ मूंकरः ॥ त्रं वदेदं तो दमीक्षांति परं यण
 अधिपः परमानंदो परात्मज्ञः परात्मज्ञः परापरः ॥ १२४ ॥ त्रिजगद्
 ह्यनोऽप्यर्षिस्त्रिजगन्मंगलोदयः त्रिजगत्यतिपूज्या किस्त्रिलो
 काग्रशिखामणिः ॥ १२५ ॥ इति वृहच्छंता ८०० ॥ त्रिकालदर्शी लो
 के त्रोलोकधाता हृद्वृतः सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैक
 सारधिः ॥ १२६ ॥ पुराणः पुरुषः पूर्बः कृतपूर्वंगविस्तरः ॥ आदिदे
 वः पुराणाद्यः पुरुदेवो धिदेवता ॥ १२७ ॥ युगमुखो युगज्ज्येष्ठो यु
 गदिस्थितिदेवः कल्याणवर्णः कल्याणः कल्पः कल्याण
 लक्षणः ॥ १२८ ॥ कल्याणप्रकृतिर्हीनः कल्याणात्मा विकल्पः
 विकलंकः कलातीतः कलिलम्बः कलाधरः ॥ १२९ ॥ देवदेवो
 जगन्नाथो ॥ जगद्धुर्जगद्धिः जगद्विषी लोकाज्ञः सर्वगो ज
 गदग्रजः ॥ १३० ॥ चराचरगुरुगोप्यो ॥ गूढात्मा गूढगोचरः सद्योजा
 तः प्रकाशात्मा ज्वलन्ज्वलनसत्प्रजः ॥ १३१ ॥ आदित्यवर्णो नि
 र्मानिः सुप्रजः कनकप्रजः सुवर्णवर्णो रुक्मानः सूर्यकोटिसम

सहस्रनाव
एक

प्रजः॥१२२॥ तपनीयनिजस्तुंगोवालाक्कोनोतलप्रनः संभात्रुव
त्रुर्हेमानस्तं प्रचामीकरडविः॥१२३॥ तिष्ठप्रकनकचायः कनकां
चनसन्निजः हिरण्यवर्णः स्वर्णजः॥ शातकुंजनिजप्रनः॥१२४॥ यु
म्ना नो जातसूपा नो दी प्रजां वृ न दद्युतिः सुधौतकलयौतश्री प्रदीप्तो
ह्यटकद्युतिः॥१२५॥ त्रिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरंदमः शत्रु
घ्नो प्रतिघो मोघः प्रशास्ताशासितास्वनः॥१२६॥ शांतिनि। षो मुनि
ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः शांतिदः शांति कच्छांतिः कंतिवा
नूकामितप्रदः॥१२७॥ प्रियांति धिरधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः
सुस्थिरः स्यावरस्याणुः प्रदीयान्प्रथितः प्रथुः॥१२८॥ इति त्रिका
लशातम्॥ एदिवासावांतरसनो॥ निर्यये शो दिगं वरः निः किं
चनो निराशं सो ज्ञानचक्षुरमो मुहः॥१२९॥ एतेजोशशिरनंतौ जा
ज्ञानाब्धिः शीलसागरः॥ तेजोमयो मितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्त
मोपहः॥१३०॥ जगच्चूडामणिर्हीनः शंवान् विघ्नविनाशकः क
लिघ्नः कर्मत्रात्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः॥१३१॥ अनिशु
रतंचालुर्जागरूकः प्रमामयः लक्ष्मीपतिर्जगज्योतिर्धर्मरा
जः प्रः जंहितः॥१३२॥ मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञो जितो जितमन्मथः
प्रशांतरसत्रौ लूषो॥ जमपेटकनायकः॥१३३॥ मूलकर्ती खिल
ज्योतिर्मलघ्नो मूलकारणं श्राप्तो वागीश्वरः श्रेयान् श्रायसोक्तिर्ने
रु। क्तिवाक्॥१३४॥ प्रवक्ता वचसामीशो मारजिदिश्वजाववितसुत
वुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतडन्तयः॥१३५॥ श्रीशः श्रीश्रितपादाज्ञो
वीतनीरनयंकरः उच्छन्नदोषो निर्बिघ्नो निम्बलो लोकवत्सलः
१३६॥ लोकोत्तरो लोकपतिर्दुर्लोकचक्षुरपारधीः धीरधीर्बुद्धसन्मा
र्गः शुद्धः सृष्ट तपूतवाक्॥१३७॥ प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिनियः
यमितेंद्रियः॥ जदंतो जद्रकद्रदः कल्पहक्षो वरप्रदः॥१३८॥ समुन्म
लितकर्मरिः कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः कर्मण्यः कर्मवः प्रांशुर्हे
यादेयविचक्षणः॥१३९॥ अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रि
लोचनः॥ त्रिनेत्रस्त्रिवकस्त्रिदक्षः केवलज्ञानवीक्षणः॥१४०॥ समं
तत्रदः शांता रिधीर्माचाष्पीदयानिधिः सूक्ष्मदर्शी जितानंगः

कृपालुर्धर्मद्विशकः ॥१५५॥ इति दिवासासतं ॥ मुन्युः सुख
 साङ्गतः पुण्यपराशिर्निगमयः धर्मपालो जगत्पालो ॥ धर्मसा
 म्राज्यनायकः ॥१५६॥ इति अत्यंत कच्छतं ॥ १५७॥ धाम्नापते
 तवाम्निनामान्पागमकोविदैः समुच्चितामनुध्यायन् पुमान्
 श्रुतस्मृतिर्नवेत् ॥१५८॥ गोचरोपि गिरामात्रात्वमवागोचरो म
 तस्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वसोत्तीष्टं फलं न जेत् ॥१५९॥ त्वमतो
 सिजगत्बन्धुस्त्वमतो सिजगत्त्रिषु क्वत्वमतो सिजगत्प्रातात्वमा
 तो सिजगत्क्षितः ॥१६०॥ त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयो
 गजाक्त्वं त्रिरूपैकमुत्कृष्टं गं स्वोत्पानंत चतुष्टयः ॥१६१॥ त्वं
 पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्पाणामायकः ॥ षड्देवभावतत्त्वज्ञस्त
 सप्तनयसंग्रहः ॥१६२॥ दिमाष्टगुणामूर्तिस्त्वं तव केवलव्यिस्
 दभावतारनिर्दोषो ॥ मायाहिपरमेश्वर ॥१६३॥ पुष्पनामा व
 लीहृद्यविलसस्तोत्रमलया ॥ नवंतं वरिवस्वामः प्रसी
 दानुग्रहाणनः ॥१६४॥ इदंस्तोत्रमनुस्मृत्युत्तमवति
 नाक्तिकः सः संपादं पवत्येनं सस्थातं कल्पेण जाजने
 १६० ॥ ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पवतु पुण्यधीः पौरुह
 ती श्रियं प्राप्नुय परमाम्नि लायुकः ॥१६१॥ स्तुत्वेति म
 धवादेवं ॥ नृगचस्जगद्गुरुं ॥ ततस्तीर्थविहारस्य ॥ अथात्प्रस्तावनामि
 मां ॥१६२॥ नगावतनयसस्यानां पार्ष्वग्रहशोषिणं ॥ धर्मामृतप्रसेके
 नत्वमेधिशरणं विनो ॥१६३॥ नमसां र्थाधिपशोच ह्याध्वजविग
 जित ॥ धर्मचक्रमिदं सज्जं त्वज्जयोद्योगसाधनं ॥१६४॥ निर्द्वयमो
 हघृतनां मुक्तिमार्गो परोधिनी ॥ तवोपदेशं सन्मार्गं कालोयं
 मरुमुपस्थितः ॥१६५॥ इति प्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयं नर्तुर्जिगीषतः ॥
 पुनरुक्ततरावाचः ॥ षडराशन्शनक्रतोः ॥१६६॥ तं देवं त्रिद
 शाधियाचितपदं घातिक्षयानंतरं शोक्तानंतचतुष्टयं जिन
 मिमान्मात्रानां तद्विनां ॥ मानस्यं न विलोकिनां न तजग
 त्मानं त्रिलोकं यति ॥ शान्तं तं चतुष्टयं जिनमिमान्कृत्वा प्र
 वधं महे ॥१६७॥ इति श्रीजिनश्रेणामाचार्यविरचितं जिनाष्टोत्तर
 शतं शतनामस्तवं न समाप्तः ॥ ॐ श्रीशुभोत्तरसहस्रनामधारक श्री
 जिनेशोत्रं महार्घं निर्वशात् ॥

शत

जिनेशोत्रं महार्घं निर्वशात्

॥६०॥ उैनमः ॥ अथ सहस्रनाम आसाधरजी कृत लिख्यते
 ॥ श्री सारदाये नमः ॥ १ ॥ श्री नवांगनो गोपु निर्विणो डः खनी क
 कः ॥ एष विज्ञायामि त्वां शरणं करुणा र्णवं ॥ १ ॥ सुरवला लस
 यामो हा म्प न्वा हि रितस्ततः ॥ मुखे कहे तो न्ना मा पित् वन
 ज्ञात वा मुरा ॥ २ ॥ अथ मो ह्य हा वे शत्रो यि लो किंच ड न्म खः
 अ नंत गुण मा से मः ॥ फत्वां सु त्वा स्तो तु मु द्यत ॥ ३ ॥ अक्षय प्रोत्सा
 र्थ्य मा णो पि ड रं श क्त्वा ति रस्कृतः ॥ त्वा ना मा ष्ट म ह स्त्रे ण सु त
 त्मा नं पु ना म्प हं ॥ ४ ॥ जिने सर्व ज्ञ य ज्ञा र्हे ती र्थ कृ न्ना थ यो गी न
 नि र्वा ण वृ ह्म बु धां त कृ तां चा षो त्त रै श तैः ॥ ५ ॥ त द्य या ॥ जि नो
 जि ने जे जि न रा ट् जि न ष्ट ये जि नो ल मः ॥ जि ना धि यो जि ना धी
 शो जि न स्वामि जि ने श्वरः ॥ ६ ॥ जि त ना यो जि न पति जि न रा जो जि
 ना धि रा ट् जि न प्र र् जि न वि नु र् जि न न र्त्ता जि ना धि नृ णं ॥ ७ ॥ जि
 त ने ता जि ने शा तो जि ने नो जि न ना थ कः ॥ जि ने ट् जि न परि वृ ष्टे
 जि त दे वो जि ने शि ता ॥ ८ ॥ जि ना धि रा जो जि न यो जि ने शो जि न श
 सि ता ॥ जि त ना यो पि जि ना धि पति र् जि न या ल कः ॥ ९ ॥ जि त चं
 द्रो जि ना दि त्यो जि ना क्तो जि न कुं ज रः ॥ जि ने ड् जि न धो रे यो
 जि न धु र्प्य जि नो त र ॥ १० ॥ जि न व र्प्यो जि न व रो जि न सिं हो जि
 नो ष्ट हः ॥ जि न र्घ नो जि न वृ षो जि न र त्रं जि नो र संः ॥ ११ ॥ जि ने श
 वि क श्च जि न ग्रा म णी र् जि न सु त मः ॥ जि न श्व र्हेः पर म जि नो जि न
 पुरे ग मः ॥ १२ ॥ जि न श्रे षो जि न ज्ये षो जि न र वो जि ना ग्रे मः श्री जि
 न श्रो त्त म जि नो जि न वृं दार को र जे त् ॥ १३ ॥ नि र् वि ष्नो वि र जाः सु
 शो नि स्त म र्को नि रं जे नः ॥ धा ति क र्मां त कः ॥ क र्म म र्मा वि त्क
 र्म ह न घः ॥ १४ ॥ वी त रा गो सु द दे षो नि र्मा हो नि र्म दो ग दः वे
 वृ ष्टो नि र्म मो सं गो नि र्ने यो वी क्त्वि स्म यः ॥ १५ ॥ अ स्व षे षे
 अ मो ज न्मा ति स्व दे ति र्जो म रः ॥ अ र त्य ती तो नि श्चिं तो नि र् वि
 षा द श्चि ष षि य त् ॥ १६ ॥ ७ ॥ इ ति श्री जि न श्रां त ॥ १ ॥ ७ ॥
 सर्व हिः सर्व वि श्र व्द शी सर्वा व लो क नः ॥ अ नंत वि क्र मो
 नंत त्रि ष्ये नि तं सुर वा ल कः ॥ ११ ॥ अ नंत सौ रं चो वि श्व ज्ञो वि श्व
 ह श्वा विला र्थ ह क् ॥ न्य द्द द्द ए वि श्व त श्रु त् शु र् वि श्व च च्चु र शो षा

वित्॥१॥ आनंदः परमानंदः सदानंदः सिद्धौदयः नित्यानंदो म
 हानंदः परानंदः परोदयः ॥३॥ परमोजः परतेजः परंशामपरम
 हः ॥ इत्याज्योतिः परंज्योतिः परं ब्रह्म परं महः ॥४॥ प्रत्यग्पात्मा प्र
 बुधात्मा महात्मात्ममहोदयः ॥ परमात्मा प्राज्ञात्मा परात्मात्म
 निकेतनः ॥५॥ परमेष्ठी महिष्ठात्मा श्रेष्ठात्मा स्वात्मनिष्ठतः ॥
 ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो निरुदात्मा हृदात्महृक् ॥ ६ ॥ एकविद्यो
 महाविद्यो महाब्रह्मपदेश्वरः ॥ पंचब्रह्ममनः सार्धैः ॥ सर्वविद्येश्व
 रः स्वप्नः ॥७॥ अनंतधीरनंतात्मानंतशक्तिरनंतहृक् ॥ अनंता
 नंतधीशक्तिरनंतचिदनंतमुत् ॥८॥ सदाप्रकाशः सार्धैः सा
 द्वात्कारीममशुधी ॥ कर्मसाक्षी जगच्चतुरलक्ष्यात्मा चलस्थि
 तिः ॥ ९ ॥ निरावाधो प्रतर्द्धात्मा धर्मचक्री विदां वरा ॥ नृतात्मा
 हज्ज्योतिर्विश्वज्योतिरतिंश्रियः ॥१०॥ केवली केवलालोको
 लोका लोका विलोकनः ॥ विविक्तः केवलो व्यक्तः शरणेषु चित्त
 वेनवः ॥ विश्वनृद्धिश्चरूपात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः ॥ विश्वा
 प्रापी स्वयंज्योतिरचित्पात्मा मितप्रतः ॥११॥ महोदायो महो
 धिर्महो लानो महोदयः ॥ महोपयोगः सुगतिर्महानोगो महा
 नोगो महावलः ॥ १२ ॥ इति श्रीसर्वज्ञशतांशः ॥ यज्ञार्हेर्निर्गोवान
 र्हेर्महार्हेर्मधवाचितः ॥ नृतार्थयज्ञपुरषो नृतार्थः क्रतुषो
 रुषः ॥१॥ पूज्यो नद्वारकस्तत्र नवानत्र नवान्माहान् महाम
 हाहेस्तत्रायुस्ततो दीर्घो पुरर्धवाक् ॥२॥ आराध्यः परमार
 ध्यः पंचकल्याणपूजितः ॥ हविश्वर्धेगुणोदयो वसुधारा चै
 तास्पदः ॥ सु स्वप्नदर्शी हिमोजाः शचीसेवितमातृकः स्या
 दनतगर्भः ॥ श्रीपूतगर्भो गर्भोत्सवो हितः ॥३॥ दिव्यो पचा
 रो पचिनः पद्मनूर्निक्कलः स्वजः ॥ सर्वो यजन्मापुण्यागोना
 स्वानदभूतदैवतः ॥४॥ विश्वविज्ञतसंनृतिर्विश्वदेवागमाभू
 तः ॥ शचीसृष्टप्रतिष्ठेदः सहस्राक्षहृगुभवः ॥ ५ ॥ नृत्यदैराव
 तासीनः सर्वशक्रनमस्कृतः हर्षाकुलामरस्वगश्चरणार्धि
 मतोभवः ॥६॥ ओमविद्युपदाशुधीस्नानपीठायतादिगत्

विस्नातां बुस्नातवासवः ॥ ७ ॥ गंधावुपूतत्रैतो
शुचीशुचिश्रवा ॥ कृतार्थितशुचीहस्तः ॥ शक्रो

ष्टनामकः ॥ १ ॥ शक्रारुद्रानंदनृत्यः ॥ शुचीविस्मापितां विक
चतुस्रंतपित्कोरैदपूरुमनोरथः ॥ २० ॥ प्राज्ञार्थी ॥ कृतसेवोदे
वधीषु ॥ शुबोधमः ॥ दीक्षाक्षणक्षमजगतुर्भुवः ॥ स्वः ॥ यताडि
तः ॥ २१ ॥ कुवेरनिर्मितास्थानः ॥ श्रीयुग्योगीश्वरार्चितः ॥ ब्रह्म
ज्ञो ब्रह्मविद्येद्योयाज्जोयतिः क्रतुः ॥ २२ ॥ यज्ञांगममृतं यज्ञो
हविः ॥ स्तुत्यः स्तुतीश्वरः ॥ नावोमहामहयतिर्महायज्ञोऽप्या
जकः ॥ २३ ॥ द्यायोगोजगत्सृज्यः ॥ पूजार्हो जगदर्थितः ॥ देवाधिदेव
शक्राद्यो दिवदेवो जगत्सृजा ॥ २४ ॥ संसृतदेवः ॥ संध्यार्चोपद्म
यानो जयश्रुजि ॥ जमंडलीचतुः ॥ षष्टिचामरो देव उडुजि ॥ २५ ॥
गस्थष्टासनश्रुत्रयराट्पुष्पवृष्टिनाक ॥ दिमाशोकोमान
मदीसंगीताहेष्टिमंगलः ॥ २६ ॥ ॥ इति श्रीयज्ञार्हशतं ॥ ३ ॥ ॥
तीर्थकृतीर्थसृतीर्थकरस्तीर्थकरः सुदृक् ॥ तीर्थकृतीर्थकृती
तीर्थिसस्तीर्थनायकः ॥ २ ॥ धर्मतीर्थकरस्तीर्थः ॥ एतातीर्थक
रकः ॥ तीर्थप्रवृत्तेकस्तीर्थसिंधुसैथितारकः ॥ सत्वावाक्याधिप
सत्यः ॥ असिनो प्रतिनासनः ॥ ३ ॥ स्वावादी दिव्या ॥ हिमध्वजि ॥
२ ॥ आहृतार्थवाक् ॥ पुण्यवागर्थः ॥ वागर्हमागधीयोक्तिरिदवाक्
४ ॥ अनेकांतदिगेकांतध्वांतनिहुर्नयांत कृत ॥ सार्थवाग
प्रयत्नोक्तिप्रतितीर्थमदधवाक् ॥ ५ ॥ स्यात्कारध्वजवागी
हायेतवाकचलौषवाक् ॥ अपौरुषेयवाक् ॥ शास्त्रारुधवा
कससंनंगिवाक् ॥ ६ ॥ अवरुणी ॥ सर्वनाथामयगीर्भक्त
वर्षगी ॥ अमोघवागक्रमवागवाचानंतनागसंनंगि
वाक् ॥ ७ ॥ अद्वैतगी ॥ सृष्टगी ॥ सत्यानुजयगी ॥ सुगी ॥
योजनवायिगी ॥ क्षीरोगरीस्तीर्थकृत्वागी ॥ ८ ॥ जमैका
स्रमयुः सहुश्रुत्रयुः प्रमार्थयुः प्रज्ञांतयुः ॥ ९ ॥ शश्रुयुः शु
गुर्नियतकालगुः ॥ १० ॥ सुश्रुतिः सुश्रुतो जपश्रुतिः सु
श्रुत्तमहाश्रुतिः ॥ धर्मश्रुतिः श्रुतिपतिः श्रुत्सुहृत् ॥ श्रुव
श्रुतिः ॥ २० ॥ निर्वाणमार्गदिग्मार्गदेशकः ॥ सर्वमार्गदे

दिक्॥ सारस्वतपथस्तीर्थः परमोत्तमतीर्थकृत॥ ११॥ देष्टवामीश्व
 रोधर्मशात्रकोधर्मदेशकः॥ वागीश्वरस्वयीमायस्त्रिजंगीशो
 गिरांपतिः॥ १२॥ सिद्धाज्ञः सिद्धवागाज्ञासिद्धः सिद्धैकशासनः ज
 गत्सिद्धसिद्धांतः॥ सिद्धमंत्रः सुसिद्धवाक्॥ १३॥ शुचिश्मवानि
 रुक्तोक्तिस्तंत्रकृतन्यायशास्त्रकृत॥ महिष्ठवागमहानादः क
 वीज्ञोडंडनिखानः॥ १४॥ इति श्रीतीर्थकृतं॥ ५॥ नाथः पतिः
 परिचटस्वामिजर्ताविभुः प्रभुः॥ ईश्वरोधीश्वरोधीशोधीशातो
 धीशितेशिता॥ १५॥ ईशोधिपतिरीशानइतइंशोधिपोधिभू
 महेश्वरोमहेशानोमहेशः परमेशिता॥ १६॥ अधिदेवोमहादे
 वोदेवस्त्रिभुवनेश्वरः॥ विश्वेशोविश्वभूतेशोविश्वेष्टविश्वेष्ट
 रोधिराट्॥ १७॥ लोकेश्वरोलोकपतिलोकनाथोजगत्पतिः
 त्रेलोकपनाथोलोकेशोजगन्नाथोजगत्पुः॥ १८॥ पिताप
 रः परतरोजेताजिहुरनीश्वरः॥ कर्ताप्रभुश्चुर्जीजिह्नुः प्र
 नविंशुः॥ स्वयंप्रभुः॥ १९॥ लोकजिह्विश्वजिह्विश्वविजेतवि
 श्वजित्वरः॥ जगज्जिताजगज्जेत्रैजगज्जिह्नुः॥ जगज्जयी॥ २०॥
 अण्णीयमिणीनेतानृत्वेवः॥ स्वरोधीश्वरः॥ धर्मनायकरूढी
 शोभूतनाथश्चनृतनृत॥ २१॥ गतिः पातां हृषोवर्ष्यमंत्रकृतु
 मुनलक्षणाः॥ लोकाधक्षेत्राधधोभमबंधुर्निरुक्तकः॥ २२॥
 धीरोजाधितोजपस्त्रिजगत्परमेश्वरः॥ विश्वाशीः शिर्वलोके
 शोविजवोभुवतेश्वरः॥ २३॥ त्रिजगद्भ्रनस्तुंगस्त्रिजगन्मगले
 दयः॥ धर्मचक्रायुधः॥ सद्योजातस्त्रैलोक्यमंगलः॥ २४॥ वरदोष
 तिद्योछेदोददीयातनयंकरः॥ महानोगोनिरोपमोधर्मसा
 म्राज्यनायकः॥ २५॥ इति श्रीनाथशांतं॥ ५॥ योगीश्वरकृतिर्वेद
 : साम्पारोहणातत्परः॥ सामायिकीसामायकेनि॥ प्रमादोप्रतिक्र
 मः॥ २६॥ यमध्याननियमः॥ स्वप्तिस्तपरमाज्ञानः॥ प्राणायामवर्ण
 सिद्धप्रसाहारोजितेन्द्रियः॥ २७॥ करणाधीश्वरोधर्मध्याननिष्ठः॥
 समाधिराट्॥ स्फुरत्समरत्रीभावः॥ एकीकरणनायकः॥ २८॥
 निर्ग्रथनाथोयोगीश्वरांबिःसाधुर्योतिमुनिः॥ महर्षिः साधुधै
 र्योपतिनाथोमुनिश्वरः॥ २९॥ महामुनिर्महामौनामहाभ्यामीम

त्मा

हावृती॥ महात्मो महाशीलो महाशान्तिमहात्मः॥ ५॥ निर्वृत्तयो
 निर्वृत्तमस्वांतो धर्माध्वजो दयाध्वजः ब्रह्मयोनिः स्वयंबुद्धो ब्रह्म
 ज्ञो ब्रह्म तत्त्ववित्॥ ६॥ पूतात्मा स्वातकोदांतो नदंतो वीतममः
 धर्मवृक्षा युधो ह्योमः शुक्लामृतो रुचः॥ ७॥ मंत्रमूर्तिः स्वसौम
 स्वतंत्री ब्रह्मसंभवः॥ सुप्रसन्नो गुणां नोधि पुण्यापुण्यनिरोधक
 ८॥ सुसंवृतसुगुप्तात्मा सिधात्मा निरुपश्रवः महोदको महोपायोज
 गदेकपितामहः॥ ९॥ महाकारुणिको गुणो महाकेशां कुशः शुचि
 अरिंजयः सदायोगः॥ सदाभोगसदाधृतिः॥ १०॥ परमोदासितानास
 नसत्प्राणीः शान्तिनायकाः॥ अपूर्वद्वैद्यो योगज्ञो धर्ममूर्तिरधर्मध
 क्कारथब्रह्मेण महाब्रह्मपतिः कृतकृत्यः॥ कृतकृतुः॥ गुणाकरेणुणे
 चेदीनिर्निर्मेषो निराश्रयः॥ ११॥ स्वरिः सुनयतत्वज्ञो महामैत्रीप्र
 यः॥ रामी॥ प्रह्लाणवधो निर्द्वेषः॥ परमर्षिरनेतराः॥ १२॥ इति श्री
 योगशातं॥॥ निर्वाणः सागरः साज्ञैः महासाधुरुद्राकृतः वि
 मलानो यशुधानः॥ श्रीधरो दत्त इत्यपि॥ १३॥ अमलानो युधरोधि
 संयमश्च त्रिवस्तथा॥ पुष्पांजलिः शिवगणः॥ उक्ता हो ज्ञानसंर
 कः॥ १४॥ परमेश्वर इत्युक्तो विमलेशो यशोधरः॥ कृष्णज्ञानमतिः
 सुधमतिः॥ श्रीनक्षत्राति युक्॥ १५॥ दृष्यस्तद्वदजितः संभवश्चा
 जिनंदनः॥ मुनिभिः सुमतिः पद्मप्रजः प्रोक्तः सुपार्श्वकः॥ १६॥ चंद्रप्रजः
 पुष्पदंतः शीतलश्रेयसाक्षयः॥ वासुः पूज्यश्च विमलोनंतजिह्वर्मा
 इत्यपि॥ १७॥ शान्तिः कृपुुरो मद्धिः सुवृत्तोनमिरप्यतः नेमिः पा
 र्श्वो वर्धमानो महावीरः सवीरकः॥ १८॥ सन्मतिश्चाकथिमहिति
 महावीर इत्यथो॥ महापद्मः स्वरदेवः सुप्रजश्च स्वयंप्रजः॥ १९॥ स
 र्वायुधोजयदेवो नवे नवे उदयदेवकः॥ प्रजादेव उदंकश्च प्रश्न
 कीर्तिर्जयनिधः॥ २०॥ पूर्णबुद्धिर्निःकषायो विज्ञेयो विमलश्च
 वहलो निर्मलश्चित्रगुप्तः॥ समाधिगुप्तकः॥ एष स्वयंभूश्चापि क
 दप्येजियना य इतीरतः॥ श्रीविमलो दिमवादेनंतवीरोपुदी
 रितः॥ २१॥ पुरुदेवो य सुविधिः प्रज्ञापारमितो वयः॥ पुराणपु
 रुषो धर्मसारथिः॥ शिवकीर्तनः॥ २२॥ विश्वकर्माक्षरो उदमा
 विश्वभूर्विश्वनाथकः॥ दिगंबरो निरातंको निरारेषो नवांतरुः॥ २३

दृष्टवतो नयतुंगोतिः कलंको कलाधरः ॥ सर्वज्ञो शापहो द्योमः क्षांतश्र
 वत्तलक्षणः ॥ १२ ॥ इति श्रीनिर्वाणशतं ॥ ॥ इत्याचतुर्मुखेधाता
 विधाता कमलासनः ॥ अत्रमूरात्मनृष्टष्टासुरज्येष्ठः प्रजापतिः ॥ १३ ॥
 हिरण्यगर्भो वेदज्ञो वेदांगो वेदपारगः ॥ अजो मनुः ॥ शतानंदो हंसय
 नस्त्रयीमयः ॥ विष्णुस्त्रिविक्रमशौरिः ॥ श्रीपतिः पुरुषोत्तमः वै
 कंठः ॥ पुंडरीकाक्षो कृष्णकेशो हरिः ॥ स्वभूः ॥ विश्वंजरो सुरभं
 श्रीमर्धवो वलिवंधनः ॥ अधोखंजो मधुक्षेपी केशवो विष्टरभ्रं
 ॥ श्रीवसलांछनश्रीमान्मृतो नरकांतकः ॥ विक्रसेनश्रुकां
 णिः पद्मनाभो जनार्दनः ॥ ५ ॥ श्रीकंठशंकरः शंभुः कपालीष्टके
 तनः ॥ मृत्युंजयो विरुपाक्षो वामदेवः ॥ खिलोचनः ॥ ६ ॥ उमाप
 तिः ॥ पशुपतिः ॥ स्मरारिस्त्रिपुरांतकः ॥ अर्धनारीशूरो रुद्रो
 नवो जर्गः सदासिवः ॥ ७ ॥ जगत्कर्तृधकारतिरौदोदिनि
 धनो हरिः ॥ महासेनस्तारकजिह्वा नाथो विनायकः ॥ ८ ॥ वि
 रोचने विपद्मं दशताम्रविभावसुः ॥ द्विजाराधो बृहज्जमु
 श्चित्रमानुस्तनूतयातः ॥ ९ ॥ द्विजराजः सुधसशोचिरोषधी
 शः ॥ कलातिथिः ॥ नक्षत्रनाथः ॥ शुभ्रांशुः ॥ सोमः ॥ कुमरद्वं
 धवः ॥ १० ॥ लेखर्वजो निलः ॥ पुण्यजनः ॥ पुण्यजनेश्वरः ॥ धर्म
 राजो नो गिराजः ॥ प्रचेतान्मिनंदनः ॥ ११ ॥ सिंहकांतनयश्या
 यानंदनो बृहतांपतिः ॥ पूर्वदेवोपदेष्टा च द्विजराजसमुद्भवः
 ॥ १२ ॥ इति श्रीब्रह्मशतं ॥ ॥ कुबोदशवलशाक्यः ॥ षडजिज्ञस्य
 गता समंतज्जः सुगतः ॥ श्रीघ्नो नूतकोटदिकु ॥ ५ ॥ सिधार्यो मा
 रजिठास्ताक्षणकैकसुलक्षणः ॥ बोधिसत्वो निर्विकल्पहरिणो
 धयवाघपि ॥ २ ॥ महाकृपालुर्नैरात्मवादी संतानशासकः ॥ सामा
 न्यलक्षणचणः ॥ पंचस्कंधदमयात्महृक् ॥ ३ ॥ नूतार्थनाभना ॥
 सिद्धश्रुत्तुर्नैकसात्रानः ॥ चतुर्गण्यसत्त्वक्तनिराश्रयविद
 न्वयः ॥ ४ ॥ योगो वैशेषिकतुनुनाचनित्पट्टपदार्थदिकु नैयाय
 कः षोडशार्थवादी पंचार्थवर्त्मकः ॥ ५ ॥ ज्ञानांतराभ्रवोधः
 समवायवसार्थनित् ॥ नूतैकसाधवर्णो तोतिर्विशेषगु
 णामृतः ॥ ६ ॥ सारम्भः समीक्ष्यकपिलः ॥ पंचविंशतिवत्तवित्

मत्तामकज्ञविज्ञानाज्ञातचेतननेदद्वक् ॥७॥ अस्यसंविदिता
ज्ञानः वादीसतकार्यवादसात् ॥ त्रिप्रमाणेक्षप्रमाणः सादाह
कारिकाहदिक ॥६॥ क्षेत्रज्ञआत्मापुरुषोनरोनाचेतनपुमान्
अकर्तो निर्गुणो मूर्तेनोक्तासर्वगतोक्तिः ॥१५॥ इष्टातटस्यः
रूटसोज्ञातानिर्बेधेनोभवः ॥ वहिर्विकारोनिर्मोहिः ॥ प्रधानं बहुधा
नकं ॥१०॥ प्रकृतिः स्वातरा रूटप्रकृतिः प्रकृतिप्रियः ॥ प्रधानज्ञो
ज्योप्रकृतिर्धिरम्यो विकृतिः कृती ॥११॥ मीमांसकोस्तसर्वज्ञः ॥
श्रुतिपूतः शिवोऽभवः ॥ परोक्षज्ञानवादीषुपावकः सिद्धकर्मकं
१२॥ चाघोको ज्ञेयिकज्ञानो मूलनिमक्तचेतनः ॥ प्रत्यक्षेकप्रमा
णोस्तपरलोको गुरुश्रुति ॥१३॥ पुरेद्वरविष्कसो विदाती संवि
तदयी ॥ शृष्टाद्वैतीसो रवादीया षड्भोनयोसमुक्ता ॥१४॥ इति
श्रीबुधवातां ॥ अंतकृत्परकृती रज्ञासाः पारतमः स्थितः त्रि
दंडीदंडितारतिज्ञानिकर्मसमुच्चयी ॥१५॥ संकृतध्वनिरुत्तिल
योगः सुप्तार्थबोधमः योगस्नेहापहोयोगकिहिर्नित्तेपनेषु
त ॥२॥ श्रितस्यूलवपुर्योगीर्मनेयोगकार्यकः ॥ सूक्ष्मका
यक्रियास्थायीसूक्ष्मवाकृचित्तयोगाह ॥ एकदंडीचपरमहंसः
परमसंवरः ॥३॥ तैः कर्मसिद्धः परमनिर्जरः ॥ प्रज्ञलसूत्रमोघ
कर्मत्रुटकमपात्रा ॥ शौलेत्रपलंकरतः ॥५॥ एकाकारसास्वद्दे
विश्वाकारसाकुलः ॥ अजीवन्मतेजागरदसुप्तः ॥ श्रुत्ताम
ध्वेषेयानयोगीचतुरशीतलक्षगुणो गुणः ॥ निधीतानेतपर्यायो
विद्याशंस्कारनायकं ॥७॥ बुधेनिर्बुधनीयो गुणणीयान्तगुण
यः प्रेषः ॥ स्थियान्स्थिरोनिष्ठः श्रेष्ठेज्येष्ठः ॥ सुनिष्ठतः ॥ गनूता
र्थशूरो नूतार्थहरः ॥ परमनिर्गुणः ॥ आवहारसुषुप्तोतिनगत
कोतिसुस्थितः ॥९॥ उदितोदितमहात्मो निरुपाधिरकृत्रिमः
अमेयमहिमासंतशुद्धः ॥ सिद्धस्वयंवरः ॥१०॥ सिद्धबुजः ॥ सिद्धि
पुरीपांथः सिद्धिगुणातिथिः ॥ सिद्धिसंगोमुखः ॥ सिद्धलिंग
सिद्धोपगृहकः ॥११॥ पुष्टोष्टादत्रासहस्रशीलास्त्रः पुण्यसंबलः ॥
वृताग्रयुगपः ॥ परमशुक्ललेत्रपोपचारकृतः ॥१२॥ द्येपिष्टोत्तक्ष
णंसंखांवलवक्षरस्थितिः ॥ द्वासप्तप्रकृतिप्रासीत्रयोदशक
लिप्रणुत् ॥१३॥ आविष्टोयजकोयज्योयज्योयज्ञपरिग्रहः ॥ अग्निहो

श्रीचपरमनिष्ठहोसंतनिर्देषः ॥ १४ ॥ अशिक्षोशासकोदीक्षेदीक्षको
 दीक्षितोक्षयः अगमोगमकोरम्योरम्यकोज्ञातनिर्मेरः ॥ १५ ॥ इति ॥
 श्रीश्रंतकृत्यतं ॥ १० ॥ महायोगीश्वरोऽमसिधेदेहोपुनर्भवः ॥ ज्ञाने
 कश्चिज्जीवयंतः ॥ सिधोलेकाग्रामुकः ॥ १२ ॥ इति श्रीश्रंत्या
 षकं ॥ ११ ॥ इदमष्टोत्तरं नाम्नां सहश्रंनक्तितोर्हतां ॥ योनंतानामधी
 तेशौमुत्तं तमुक्ति मश्रुते ॥ इदं लोकोत्तमं पुसंमिदं शरण
 मुत्वाणं इदं मंगलमग्रीयमिदं परमयावतं ॥ २० ॥ इदमेव परं तीर्थ
 मिदमेवाष्टसाधनं इदमेवाखिलकेशसकेशक्षयकारणं ॥ ३० ॥ ए
 तेषामेकमप्यैर्हन्नाम्नामुद्यमवलधैः ॥ मुञ्चते किंपुनः सर्वा
 एपर्यज्ञस्तु जिनायदो ॥ इति श्रीश्राशाधरसूरिविरचिते जि
 नसहस्रनाममनोहरस्तवने संपूर्णं ॥ ॥ श्री ॥ श्री ॥
 ॥ अथ अकलंकाष्टकलिष्यते ॥ काव्यं ॥ त्रैलोक्यं सकलं त्रिका
 लविषयं सलोकमालोकितं साक्षाद्येन यथा स्वयं करतले रेखात्र
 यं सागुलिं शोभा देष्यन्त्या मयांतकजरालोलवृलोमादयो ॥ नालं य
 त्पदलंघनाय समहादेवो मया वंद्यते ॥ दग्धयेन पुरत्रयं शरं नुवा
 ती श्रुद्धिषा वक्रिता ॥ यो वानृत्यति मत्तव त्पिठवने यस्यात्मजो वा गु
 हः ॥ सोयं किममशं करो न यद्वपरोऽप्रातिमो हस्तयं ॥ कवायः सत्रुसर्व
 वित्तनुहतांक्षेमकरः शंकरः ॥ यत्राद्येन विदारितं कररुहैर्दैत्यै
 वक्षस्वलां ॥ शारथ्येन धनं जयस्य मरेयो मारये कौरवान् ॥ नासौ वि
 श्वुरनेककालविषयं पदज्ञातममाहतं विश्वं र्वाप्यकिं जित्तिसनु
 महाविश्वुः विमिष्टामस ॥ ३ ॥ उर्वस्यामुदेयादिगावडुलं चेतो य
 दीयं पुनः ॥ पात्रीदंडकमंडुपुत्रतयोर्यसा कृतार्थस्थितिं ॥
 अविर्जावयितुं नवंति स कथं वृहानवेर्माहं ॥ ४ ॥ लुत्तुश्राप्रम
 रागरोपरहितो ज्ञानाकृष्टं तापैस्तु न ॥ ५ ॥ येन ॥ ६ ॥ गधुपिस्ति
 समस्य कवलजीवपशूमेतदूनकर्मा कर्मफलं ननु कश्चित्ति यो व
 क्तास बुधः कथं ॥ यज्ञानं दणवर्तिवस्तु सकलं ज्ञातुं नत्राकासदा
 योर्जनतयुगापज्ञात्रयमिदं साक्षात्सबुद्धो मम ॥ ५ ॥ ईश किं हि न्तलि
 गोयदिविगततयः श्रुत्वापिणिः कथं सान्नाथ ॥ किं नैतचारीय
 विरि तिसकथं सांगनः सात्मजः ॥ ६ ॥ अज्ञः किं वृत्तान्मासकलवि

दितिकिंवेत्तितात्मांतरायंसंक्षेपात्सम्पुक्तं पशुपतिमयसुःको
त्रधीमानुपास्ते॥६॥ बुद्ध्या चर्माद्दसूत्री सुरयुवतिरमावेशविजांतवे
ताशंभुः षड्गंधारी गिरिपतितनया पांगली लानुविद्य विष्णुशुक्र
धिपः सन्डह्तिरमगमत्गोपनायस्य मोहादर्दं न विधुस्तगगोजि
तसकलजयः कोयमेघासनाय॥७॥ एको रसतिविप्रसार्यककु
नांचक्रे सहस्रं जुजामेकः शेषतु जंगमो गत्रायने आदाय निजाय
ते॥ दृष्टु चाकृतिलोत्तमां मुखमगादेकश्चतुर्वक्त्रतामेते मुक्तिप
यं वदंति विडुषामि सैतदस्य ज्ञते॥८॥ यो विश्वं वेद्यते यं जननजल
निधेर्ने गिनः पारदृश्या पूर्वापर्या विरुद्धं च न मनुष्यमंति कलंकं
दीयंतं वंदे साधु वंद्यं सकलगुणनिधिं ध्रुवस्तदोषं द्विषंतं बुद्धं च न
र्मानं शतदल निलयं केशवं वाशिष्ठं वा॥९॥ माया नास्ति जटा
कपालमुकुटं च ज्ञानमुर्ध्ववली षड्गानं च वासुकिर्न च धनुः शू
लेन चोगं मुखं कामोयस्यने कामिनी न च वृषो गीतं न वृत्सपुनः
सोयपानुति रंजनोजिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः॥१०॥ नो बुद्ध्यां
कितमृतलं न वहरेः शंभोर्न मुञ्जं कितं नो चं शर्कं करं कितं
सुरपतेर्वज्रं कितं नैव च॥ षट् वक्रं कितं बोधदेव उत तु क्यचे
ह्यौन्ती कितं न गंतं पश्य समंततो जगदिदं नैनेऽमुञ्जं कितं॥११॥ मौजिदं
डकमंडलुघ्नं तयो नोलां छनं बुद्ध्याणो रुद्रस्यापि जटाकपालमु
कटं कौपीनं षड्गाना विष्णोश्चक्रगदादिशंघमनुलंबौधस्परकं
वरं न गंतं पश्यतवादि नो जगदिदं जैनेऽमुञ्जं कितं॥१२॥ नाहकार
वशीकृतेन मनसानक्षेपिणाकेवलं नैरात्म्यं प्रतिपद्यतश्चपति
नेकारुण्यबुद्ध्या मया राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि शयो विद
धात्मनां वैशौघान् सकलान् विजित्य सुगतः पादेन चिस्मिति
ता॥१३॥ षड्गानैव हस्ते न शिर रचितालं वितानैव माला न स्मागने
वशूलन च गिरिडुहितानैव हस्ते कपालं च शर्धनैव मूर्द्धिनं च वृषग
नं नैव कंठे फणीशं वदस्य कटोषं न वज्रवयमर्थं न ईश्वरं देवं देवं
किबोधो जगत्पानमेव महिमा दिवो कलंकः कलौ काले योजनता सुध्या
निहितो देवो कलंको जिनः यस्य स्फुरदिवेकमुद्गलहरी जाले प्रमेया कु
लानिर्मगाना तनुते न रां न गवती तारा शिरः कपना॥१५॥ सातभाषु बुद्धवता न
गवती मनोपित्त्यामहेष एमासावधिजाप्रशोखन गवान नृदा कलंकश्चो
वाक्छ्रौ लपरराजिरं मत्ते नृने जमो मज्जनमापारं महते स्य विस्मितम
तिः संताडिते तस्ततः॥१६॥ इति अकलंका एकसंश्लेषः॥

॥ अथ मंगल पांचुसो लिखते ॥ ॥ पण विविपंच परम गुरु गुरु
 जिन सासणो ॥ सकल इमि हिदा तारति विघन विना सणो ॥ सा
 रद अरु गुरो तम सुमति प्रकासणो ॥ मंगल करुंचु संघ हया
 पण सणो ॥ पाप पण सण गुण ह गुरु वा दोष अष्टादश र ह्यौ
 धरे ध्यान कर्म ॥ विना शिकेवल ज्ञान अविचल जिन ल ह्यौ ॥ शुभ
 पंच कल्याणक विराजित सकल सुर नर धार्इये ॥ त्रैलोक्य ना
 थ सुदेव जिन वरजा तमंगल गाइयो ॥ १ ॥ जाके गर्भक ल्याणक
 धनपति आइयो ॥ अवधि ज्ञान परिमाण सुइं इप चाइयो रवि
 न ववार हजो जन नयर सुहावनी ॥ कनकर यण मणि मंडित मं
 दिर अतिवणी ॥ अतिवशी पोरि पगार पविषा सुवन उपवन सो
 हण ॥ नर नारि सुंदर चतुर वेष सुदेवि जन मन मोहिये ॥ महाजव
 क प्रहृष्ट ह मास प्रथम हिरत न धारा वरषियो ॥ फुनिरुचि किवा
 सिनि जतति सेवा करहि सव विधि हरषियो ॥ २ ॥ सुरकुंजर स
 मकुंजर धवल सुरंधरो ॥ केसरिकेसरि सो जित नष सिषि सुंदरो
 कमला कमल नयन दोयदा म सुहावनी ॥ रविशशि मंडल म
 धुरमी नजुग पावनी ॥ पावनी कनक घट जुग मपुर न कमला
 कलित सरोवरो ॥ कल्लोल माला कुलित सींगर सिंही ठमनो
 हरो ॥ रमणी कन्धर विमान फुनि पति सुवन न विच्छ विद्या जण
 रुचिर त्वरा शिदिपंति दहन सुते जपुज विराजण ॥ ३ ॥ एस पिमो
 लह सुपना सुती सैन ही ॥ देषि माया मनो हर पछि मरै न ही ॥ उ
 विपरजाति पिण्य पुच्छियो अवधि प्रकाशियो ॥ त्रिनुवन पति सु
 तहो सीयो फलति हजा सियो ॥ जासियो फलतहा चितदं पति
 परम आने दित न ए ॥ छह मास परि नव मास फुनिल हारण
 ति दिन सुख संगण ॥ गर्जावतार महंत महि मां सुनत सव सु
 षपा वण ॥ त्रैलोक्य नाथ सुदेव जिन वरजा तमंगल गाइ
 ये ॥ ४ ॥ इति प्रथम मंगल संपूर्ण ॥ १ ॥ अथ द्वितीय मंगल लिखते
 मतिशुत अवधि विराजित जिन जवजत मिया ॥ ति ऊं लो

नयोत्तोनितसुरगानजरमियो॥कलयवासिधर्यंठश्रनाहरवजि।
 या॥ज्योतिकधरिहरिनादसहजगलगजिया॥जियासह।
 नहिसंखनावननवनशशुहावने॥मंतरनिलयपदुयद।
 हवाजे॥कदतमहिमांकोवने॥कंपितसुरासनत्रवधिवलने
 नजनमनिश्रैजानियो॥धनराजतवाजरजमायामईतिरमिप
 आनियो॥५॥योजनलहागयंदवदनसोनिरमये॥वदनवदन।
 वसुदंतदंतसरसंवण॥सरसरसोपणवीसकमलनीछाजणं।
 कमलिनिकमलिनिकमलयवीसविगजणं॥राजयतिक।
 कमकमलत्रगोतरसोमनोहरदलवने॥दलदलअपचुर।
 नटहिनाटकहावजावसुहावने॥तहांकनककिंकिणि
 वरविचित्रमुअमरमंडितसोहर॥धनघंठचमरधुजापताका।
 देषिचिनुवनमोहर॥क्षतिहरिहरिचदिआइयोसुरएद्वि
 वारियो॥पुरहिप्टद्विणदेनहजिनजयकारियो॥गुपका
 यजिनजननीहसुखनिशरची॥मायामईशिसुराधितु।
 जिनअन्योशची॥आमोशचीजिनरूपदेपतनयनतया
 तिनपूजये॥तवपरमहरधितदयहरिणासहसलोचनह
 जये॥पुनिकरिष्णामसुप्रथमईइउछंगाधरिप्रभुलीनहो॥इशा
 नइइसुचंइछविकरिछत्रप्रभुशिरदीनहो॥७॥सनतकुमारम
 रमहोइचमरयुगादारणं॥शेषशक्रजयजीवशहउधारण॥७।
 छवसहितचतुरविधसुरहरधितनये॥योजनसहसनमाए
 वेगगानवलंधिगाण॥लधिगाणसुरगिरिजहांपांहुकवनविरे
 त्रविराजिण॥पंहुकशिलाताहांअर्धचंद्रसमातमणिछवि
 छाजेणं॥योजनपवासविशालडुगुणीआयामवसुर्जवीग
 णी॥वरअष्टमंगलकमलकलमितसिंहपीवसुहावणी॥८
 रचिमणिमंडपशोजितमअसिंहसणो॥थाप्पोपूरवमुख
 तहांप्रभुकमलासणो॥वाजहितालमदंगवीणवीनाधुनी
 डंडनिप्रमुखमधुरधुनिअवरजुवाजनी॥वाजनीवाजेसर्वा
 सबमिलिधवलमंगलगावही॥अतिकरहिहृतससुरांगना

सवदेवकौतुकआवही॥नरिषीरसागरजलजुहायहिहायसुरमि
 रिलावही॥सौधर्मअरुईसांनइंसुकलशलैप्रमुन्हावही॥एण
 वदनउदरअवागाहकलसगतजानिये॥एकआरिवसुजोजन
 मानप्रमानिये॥सहसअवोत्तरकलसप्रनूकैसिरदरै॥फुनिशिं
 गारप्रसुरवेआचारसवैकरै॥करिप्रगटप्रमुमहिमामहोत्सव
 आनिफुनिमातैदयौ॥धनपतिहैसेवाराधिसुरपति॥आपसुर
 लोकहगयो॥जन्माजिषेकमहंतमहिमासुनतसवसुषपा॥
 इयो॥त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरजगत्तमंगलगाईए॥१०इति॥
 ६ श्रीमंगलं॥अथतृतीयाश्रमजलरहितसरीरसदासवमलरा
 लौ॥धीरवराणवररुधिरप्रथमआकृतिसल्लो॥प्रथमसारसंहा
 ननस्वरूपविराजए॥सहजसुगंधसुलघनमंदितछाजए॥आ
 जैअतुलैवलपरमप्रियहितमधुरवचनसुहावने॥दशाशुहज
 अतिसयसुजगमूर्तिवालसीलकहावने॥आवालकालत्रि
 लोकपतिमनिरुचितउचितजुनिततये॥अमरोपुनीतपुनी
 तअनुपरमसकलभोगतिभोगएं॥११॥भवतनुभोगविस्तक
 दाचितचितये॥धनजोवनपियपुत्रकलितअनितये॥कोइत
 सरनमरनुदिनडषचक्रगतिभस्यो॥डषसुषएकहीभुगतेजी
 वविधितसिपस्यो॥पस्येविधिवसिआनचेतनआनजडजुक
 लेवरो॥तनअसुचिपरतैहोइआअवपरपरहेसंवरो॥निस
 रातपवलहोइसमकितविनुसदात्रिभुवनभम्यो॥इहनेनवि
 वेकवितांनकवरूपरमधर्मविषेरम्यो॥१२॥एप्रनुवारहयाव
 ननावननाश्या॥लोकांतिकंवरदेवनियोगैआईया॥कुसुमं
 जलेदेचरनकमलसिरनाइयौ॥स्वयंबुधप्रमुपुतिकरितिन
 समुक्ताइयो॥समुकायप्रमुकींगएनिजपदफुनिमहोछोहर
 क्रियो॥रचिरुचिरचित्रविचित्रसिविकाकरिसुनंदनवनलि
 यो॥तर्हपंचमूर्तीलोचकीनोंप्रथमसिद्धनुतिकरी॥मंदि
 यमहावृतपंचडर्हरसकलपरिग्रहपरिहरे॥१३॥मणिमयजा
 जनकेशपरिधिपसुरपती॥धीरसमुदजलधिपिकरिगयोअम

रावती॥ तपसंजमवलप्रभु कैमन परजैत्रयो॥ मोनसहिततपकर
तकालकच्छतहांगयो॥ गयोतहंकच्छकालतपवलरिदिवसुवे
द्विमिद्विया॥ जिमुधर्मध्यानवलेनषयमयसप्रकृतिप्रसिद्धे
या॥ षिपिसातवैगुणजतनविनुतहां॥ तीनप्रकृतिजुबुधव्ये
करिकरणतीनप्रथमसुकलवलक्षपकश्रेणीप्रभुचदो १
४॥ प्रकृतिछतीसतवैगुणयांनविनासिए॥ दसमैस्रषिम्लो
नप्रकृतितिहिनासिये॥ सुकलध्यानपदहृजोफुतिप्रभुप्र
रियो॥ वारहमैगुणसोरहप्रकृतिजुचूरियो॥ चूरियोत्रिसविप्र
कृतिहृविधिघातियाकर्मताणी॥ तपकियोध्यानपर्यंतवा
रहविधित्रिलोकसिरोमनी॥ निःक्रमनकल्याणकसुमहे
मांसुनतसबसुषपाईये॥ त्रैलोक्यनाथसुदवजिनवरजग
तमंगलगाइये॥ १५॥ शतितृतिवमंगल॥ ३॥ तेरहमैगुणया
नसजोगिजिनैश्वरो॥ अनंतचतुष्टयमंदितनयोपरमेश्व
रो॥ समोसरणतवधनपतिवहुविधिनिरमियो॥ आगम
जुगतिप्रमाणगंगनतलिपरिवयो॥ परिवयोचित्रविचित्रघ
णिमयसजामंफसोहएं॥ तहांमध्यवारहवनेकोवेवनक
सुरनैरमोहएं॥ मुनिकल्पवासिनिअर्जिकातहांजोतिनौम
नवनतिया॥ फुनिनूमनौमसुकल्पसुरनरपसुतिकोचनिचे
विया॥ १६॥ मध्यप्रदेशतीनमणिपीतहांवने॥ गंधकूटीसि
घासनकमलसुहावने॥ तीनछत्रसिरसोन्नितत्रिभुवनमो
हएं॥ अंतरीषकमलासनप्रभुतनसोहएं॥ सोहएचोसविष्म
रदुरतहांअसोकतरुतलिछाजए॥ फुनिदिमध्यनिप्रतिश
भूजनतहदेवडुंडुनिवाजएं॥ सुरभुष्यवृष्टिसुप्रनामंडलकोदे
रविछविछाजएं॥ इमअष्टअनुपमप्रातिहार्यसुवरविमृति
विराजए॥ १७॥ जोजनसहइकमानसुरनिक्षचकुदिसिगग
नगमनअरुप्रानीवधतअहोनिशि॥ निरुपसर्गोनिराहा
रसदाजगदीसएं॥ आनतआरिचकुदिससोन्नितदीसएंदी
सेहअसेसविज्ञोषविद्याविजववरईश्वरपते॥ छायाविव

वर्जितशुद्धफटिकसमानतनप्रभुकोवत्सो॥नहिनयनपलक
यतनकदाचितकेसनघमञ्जाएइहधातियाषयजनितअति
सयदसविचित्रविराजं॥१७॥सकलअरथमागधियाजायाजा
नियो॥सकलजीवातिमैत्रीजाववधानियो॥सवरतिकेफल
फूलवनस्पतिमनहै॥दर्पणसमतहअवनिपवनगतिअ
नुसै॥अनुसैरेपरमांतंदसवकौ॥नारिनरजेसेघता॥जेज
नप्रमाणधरातिउज्जलमारजहिमारुतदेवता॥फुनिक
रहिमेघकुमारगंधोदकमुष्टिमुहावनी॥पदकमलत
लिसुरधिपहिकमलमुधरनिससिसोनावनी॥१८॥अम
लागानतलिअरुदिसितहअनुसारही॥चतुरतिकाइदेव
तिसुरहिक्कारही॥धर्मचक्रचलैआगौरविजिहिलाजही॥फु
निभंगारप्रमुषवसुमंगलराजही॥राजहितिचोदहचारु
तिसयदेवरचितमुहावने॥जिनराजकेवलज्ञानमहिमा
औरकहतकहावने॥तहांइअयकियोमहोडोसजा
सेनितअतिवनी॥धर्मोपदेशकियोतहांउचुलियाती
जिनतनी॥१९॥दुधातषाअरुगादेषअसुहावने॥जन्मज
राअरुमरात्रिदोषजयावने॥रोगसोगनयविस्मयअरुनिशघनी॥
खेदषेदमदमोहअरुद्विषागनी॥गनिएअठारहदोषतिनिकरि
रहितदेवनिरंजने॥नवपरमकेवललब्धिमंदितासिवरमनि
मनरेजने॥श्रीज्ञानकल्याणकसुमहिमासुनतसवसुषयाश्ये
त्रैलोकनाथसुदेवजिनवरजगतमंगलगाश्ये॥इतिचौथोमं
गलसंपूर्ण॥२०॥केवलदृष्टिवाराचरदेषोजारिसो॥नविनि
शतिउपदेशपोजिनवरत्तारिसो॥नवनयनीतनविकजमसर
निजुआश्या॥रत्नत्रयलक्षनमिवपंथलगाश्या॥लाश्यांप्र
जुनमफुनिप्रभुत्रितियसुकलजुष्टुरियो॥तजितेरहैगुनया
नप्रभुतहप्रकृतिवहतर्चुरियो॥फुनिचोदहैगुणप्रकृति
तेरहतुरियसुकलवलेहती॥इमघातिवसुविधि कर्मपञ्चकेस
मयमैपंचमगती॥२१॥लोकमिषरतनुवातवलेमहिसंठियो

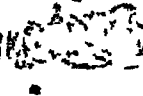
मंगलजीजा
१०६

यो धर्मद्वयविभुगमननजिहित्रागौकियो॥मदनरहितमूर्खोह्य॥
अंवरजारिसो॥किमपिहीनजितनुतैतयोअनुतारिसो तारे॥
सिजुपर्ययनित्यत्रविचल॥अर्थपर्ययधिनुषई॥नियतदृष्टि
अनंतगुणव्यवहारनयवसुगुणमङ्गु॥वस्तुस्वभावविनाव
विरहितसुखपरिणतिपरिनयो॥चिद्रूपपरमानंदमंदिरसुखपर
मातमनयो॥२३॥तनुपरिमाणदामिनिपरिसवधिरिगाए रहेसे
षनषकेसरूपजेपरिनयो॥तवहरिप्रसुषचतुरविधिसुरगतसे
नसचोभायामईनखकेससहितजिते तनुरचोपरचित्रगा
रचंदनप्रमुषपरिमलज्वमजिनजैकारियो॥पदपसितंआनि
कुमारमुकुटानलसुविधिसंस्कारियो॥निर्घीणकल्याणकसु
महिमांसुततसवसुषपाईयो॥त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरज
गतमंगलगाइये॥इतिश्रीपंचमंगलरूपचंद्रकृतसंपूर्ण॥५॥
मैमतिहीनजगतिवसुनावनजाइया॥मंगलगीतप्रबंधसुजि
नगुतगाईया॥जोइसुसुनइवधानइसुरधरिगावइमनवेडे
तफलसोनरनिश्चैपावण॥पावइसुअष्टौसिद्धिनवनिधिमन
प्रीतिहुमाने॥अमनावइद्वैसकलमंनकेजिनस्वरूपसु
जाने॥फुनिहरिहियातिकटरहिविघनसुहोयमंगलनित
नयो॥ननिरूपचंद्रत्रिलोकप्रभुजिनदेववौसंघहजयो॥२५॥ इ
तिश्रीपंचमकल्याणकमंगलसमासमत्स्वाध्यायसंपूर्णः॥॥
अथविषापहाडनाशालीष्यते॥धौपई॥श्रीरिषननाथविमला
गुणईस॥वईमानवंदौचौवीस॥गणधरगौतमसारदमायावरदीजे
मुहिवुद्धिसहाय॥१॥सिद्धसाधसतगुरअवधार॥करुंकवितत्रात
मउपगार॥विषापहरसंतवनउच्चर॥सर्वश्रौषधीईमृतधार॥२॥मैरे
मंत्रतुम्हारेनाम॥तुमहीगारुडगरुडसमांत॥तुंमसमवैद्यनकोशं
सार॥तुंमस्यांनेतिहुलोकमकार॥३॥तुमविषहरणकरणजगसंत
नमौनमौनितिदेवअनंत॥तुमगुणमहिमांअगमअपार॥सुरगुरसे
सलहैनहीपार॥४॥तुंमपरमातमापरमानंद॥कलपवृक्षसवसुष
केचंद्रा मुदितमेरमहिमंडलधीर॥विद्यासागरगहरगंजीर॥५॥तुम
दधिमथनमहावलवीरसंकटविकटनयजंजननीर॥तुमजगतार

तुमजगदीश। वेदउच्चारणविस्वावीस॥ धरतनविंतामणितुंमगुण
 रास॥ चित्रावेलिचितहरनवितास॥ उपसर्गहरणतुंमनामसत्त्व
 मो। मंत्रतंत्रतुमहीमनमूला॥ ७॥ जैसैवजुपरवतपरिहार। ज्यौतुमने
 मविषापहार॥ नागदमनितुंमनामकहाहि॥ विसहरविषमदमे
 छिनमांहि॥ ८॥ तुमसुमरणचित्तैमनमोहि॥ विषयिवतईमृतकैज
 हि॥ नांमसुधारसवरषेजहां॥ पापमूलरहैनाहीतहां॥ ९॥ ज्यौपार
 सैकोपरसैलोह॥ निजगुणतजिकंचनसमहोह॥ स्यौतुंमसुमरण
 साधेनंचनीचजपावैपदईकंच॥ १०॥ जेतुमनाममंत्रमनकूलामह
 मंत्रसखीवनमूला। मूरिषमंरमनजानैनेवा। करमकलंकदहनतु
 मदेवा॥ ११॥ जेतुमनामगरुडकागहै॥ कालजुजंगमकैसैरहै। तुम
 धनेतरजहाजिनराय। मरननपावेकोतिहिंवाय॥ १२॥ तुम्हारोजस
 उदयोघटजास॥ सांसोसीतनआपैतास॥ जीवैदादरवरषेतो
 य। सुनिवांतीसरजीवनहोय॥ १३॥ तुंमविनकौनकरैमुहिसारतु
 मविनकौनउतारैपारा॥ दयावंततुमदीनदयाल। तुमकरताहरत
 करपाल॥ १४॥ सरगैंआयौश्रीजिनराय॥ श्रवमुहिकाजसुधारे
 आय। मैरैयदपूजीधनपूत। साहकहैराघोघरसूर॥ १५॥ ककं
 वीनतीवारंवाश। तुंमविनकौनकरैउपगार॥ तुमपैगंवरतुम
 हीपीरा। तुमविनकोकाटेपरपीर॥ १६॥ विग्रहग्रहडुषविषतिवि
 योग। शोलाघोलजलंधररोग। चरणकमलरजतनकौलाय॥ १७
 ष्टमाधियुरगंधमिठाय॥ १८॥ मैअनाथतुमत्रिभुवननाथ। मात
 पितातुमसजनसेगाता। तुमसमदाताकौंउनदांन। औरकहाजा
 चोजगनांन॥ १९॥ प्रभुतुमपतितउधारनआहि॥ वाहगहेंकीला
 जनिवाहि। जहांदेखौतहांतुमहीआय। घटघटजोतिरहीवह
 राय॥ २०॥ वाढघाटविषमनयजह॥ तुमवितकौनसहाईतहां
 विकटविथाअंतरजलवाय। नांमलेतछिनमोहिविलाय॥ २१॥
 आचरिजमानतुगअवसांन। संकटसुमसौंनामनिधानन
 कांमरतुमजक्तिसह॥ पणराघोप्रगटेतिहिंवाय॥ २२॥

॥ वादरजन्तपदेषनगयो॥ एकीजावकिये ७

संदेह॥ ऋषगयो कंचनसमदेह॥ २३॥ कल्याण मंदिरकमदचंद्रवयो
राजा विक्रमविसैनयो सेवकजां नितुम करी सहाय पार्श्वनाय
गटेति हिं गाय॥ २३॥ नसमवाधिसुमंतनद्रनरी संनूस्ततिजि
नस्तुतिवरी॥ गर्भमाधिविमलमतिनरी॥ तहांपनिसहायतुम्
हीवरी॥ २४॥ नवसदंतंश्रीपालनरेस॥ सांससंकटजलमूलेस
तहांपनितुंमहीनयेसहाय॥ आनंदसौधरिपुंजेजाय॥ २५॥ स
नाडसासनपकस्योचीर॥ ज्योतिपनराष्ठीकरिधीरसीतांल
ष्ठिमनदीनोसांच॥ रावणजीतिननीषणराज॥ २६॥ सेवसुदर
राणसहायकीयो॥ सुलीसिंघासणतुंमहीदीयो॥ आषाढभृ
तधस्योतुंमध्माना॥ नाटिकनाचैकेवलपांता॥ २७॥ सिंहसपी
टिकजीवप्रतेका॥ तुमसुमरंतराषीटेका॥ त्रैसीकैइंइकजन
कीसाधि॥ साहकहैसरणगतगधि॥ २८॥ यहत्रोसजीवैयोव
ला॥ मेरोसंदेहमितैततकालावंदीबोडविडदमहाराज॥ अपनोव
दुदनिवाहोलाजा॥ २९॥ औरआलंवनमैरेनाहि॥ मैनिहचोक
नोमनमांहि॥ ३०॥ चरणकमलछांडौंनहीसेवा॥ मैरैतौतुंमसद
गुरदेव॥ ३१॥ तुंमहीसूरिजतुंमहीचंद॥ मिथ्यामोहनिकंदन
कंद॥ धरमचक्रतुमघारनधीरा॥ विसहचक्रविदारनवीरा॥ ३२॥
चोरअगनिजलमृतपिशाच॥ जलजंगलअटवीजदास॥ डरइ
ग्रामनराजावसिहीया॥ तुमप्रसादगंजैनहिकोय॥ ३३॥ हयोगयेर
यसवलसावंता॥ सिंघसाईलमहामयवंता॥ दिठबंधनविग्रह
विकराला॥ तुमसुमरनबूटैततकाला॥ ३४॥ पयपन्नगहीनकने
नाजा॥ ताकोतुमवकसोगजराजा॥ एकउथाप्रिययोफिरिगज
तुंमप्रभुवडेगरीवनवाजा॥ ३५॥ पानीसोपयदासकरोनस्या
रतुंमरीताकरो॥ तुमकरताहरताकरताया॥ कीरीऊंजरकरत
नवारा॥ ३६॥ गुनअनंतअलयमोहिगपाना॥ कहांलगप्रभुके
करुंवषांनि॥ अगमपंथसकैनहीमोहि॥ तुम्हारोचरीत्रवनि
आवैतौहि॥ ३७॥ नयोसपरससाहंसकीयो॥ दयावंतआयदर
राणदीयो॥ साहपूतसचेतननयो॥ हस्तहस्तसोघरकंगयो॥ ३८॥
धनिदराणदेसोन्नगवंता॥ आजिधनिमुपनैनयवितप्रभुके

केचरणकमलहूनयो॥जनममुकारयमेरोनयो॥त्रणकरपंकज॥
 करनाऊंसीस॥मुक्तिअपरघक्षमोजगदीस॥संवत्सतरासैशुन
 थाना॥नारबोलतथिचौदसिजांन॥३५॥पटैसुणैतहांपरमाने
 कल्पवृक्षसवमुषकेदंडं॥अष्टसिद्धिनवनिधिनतिलहे॥अचल
 कीर्तिआचारजकहे॥४०॥दोह॥जयजंजनरंजिनजगतविष
 पहारगनाम॥सांसोतजिसुमरोसद॥सतिसाहिवकानामध
 इतिश्रीविष्णुपहारनामासंपूर्ण॥ श्री ॥अथपरमजोतिलि
 ष्यते॥दोह॥ परमजोतिपरमातम॥परमजांनपरवी
 नावंदौपरमांनंदम॥घटघटअंतरलीन॥चौघईनिरनेक
 णपरमपरधान॥नवशामूइजलतारणजांन॥शिवमंदिरअ
 घहरणअतंद॥वंदौणसचरणअरिविंद॥शकमवमांनजंज
 नवरवीर॥गरमासागरगुणहंगांजीर॥सुरगुरपारलहैनहिज
 समैअजातजपूजमतास॥३॥अनुसरूपअतिअगमअथा
 हकौहमसंपैहोयनिवाहे॥अंदिनअंधउलकोपूत॥क
 हनसकेरविकिरणउद्योत॥४॥मोहहीनजांणेमनमाहित
 उनतुंमगुणवरणेजांहि॥प्रलयपयोधकरेजलवोन॥प्रादे
 रतनगिनैवैकोना॥५॥तुंमअसंखंखनिरमलयणसांनिमैम
 तिहीनकहूनिजवांनज्यौवा॥लैकनिजवांहपसारिसागर
 रमितकहेविचारि॥६॥जेजोगीइकरैतपषेदा॥तोऊनजांणै
 तुमगुणनेदा॥जगतिजावमुक्तिमनअनिलाष॥ज्योपंषीबोले
 निजनाष॥७॥तुमजसमहिमांअगमिअपार॥नामएकत्रि
 मुवैनेआधार॥आवैपवनपदमसिरहोयग्रीषमतपतिनि
 वारैसोय॥८॥तुमआवतेनविजनघटमांहि॥करमनिचं
 धसिथसैजांहि॥ज्यौचंदनतरुबोलेमोर॥डरेनुयंगलगैब
 ऊंवोर॥९॥तुंमनिरषतजिनदीनदृष्यासंकटतैह
 काल॥ज्यौपशुघेरिलीएनिसिचोर॥तेतजिजागैदे
 रा॥१०॥तुमजविजनतारककिमहोय॥तेचित्तधारितिरै
 तोहि॥यहत्रैसोकरिजांणिसुजावतिरैमसकज्योगरनित

वाव ॥११॥ जिन सब देव किये वसिवां मते छिन मै जीते सकु का
 म ज्यो जल करे आग निकल हान वडवान लपी विसो पान ॥१२॥
 तुम अनंत गरवा गुण लिये ॥ कौ करि न कि धरौ निज हियो ॥ कै
 ल घुरु पतिरे संसार ॥ यह प्रभु महिमां आ म अ पार ॥१३॥ क्रोधने
 वारि कियो मन सांति ॥ कर म सु भट जीते कहि जांति ॥ यह पटंत
 र देषो संसार ॥ नील वृक्ष ज्यो दहे नुषार ॥१४॥ मुनि जन हिये
 कमल निज टोय ॥ सिंघ रूप सम धा वै तोय ॥ कमल करण का
 वन न हे और कमल बीज नुप जन की गोर ॥१५॥ ज व डु म ध्यां
 न धरे मुनि कोय ॥ तव विदेह परमात्म हौय ॥ जैसे धा तु सिला
 त नु ल्पाग ॥ कनक सरूप ध वै ज व आग ॥१६॥ जाके मन तुं म
 करे निवास विन सिजाय सब विग्रह तासा ॥१७॥ करै विबुध जे
 त म ध्यां न ॥ तुम प्रजावतै होय निदांन ॥ जैसे नीर सुधा अनु म
 न ॥ पीवत विषय विकार की हां न ॥१८॥ तुं मन गवंत विमल गु
 ण लीन ॥ समल रूप मानै मति हीन ॥ ज्यो ती लियारोग शगा
 है ॥ धर्ण विवर्ण संघ सौ कहै ॥१९॥ दोह ॥ निकट रहित नुप दे
 श मुनि ॥ तर वर नये अ सोक ॥ ओर विक्रगत जीव सब प्रा
 ट होत नवलोक ॥२०॥ सुमन वृष्टि जो सुर करै ॥ हेट वीट मुखे
 य ॥ त्यो तुम सेवत सुमन जन ॥ बंध अधो मुख होय ॥२१॥ नुप जीतु
 महिय नुद धितै ॥ वांणी सुधा समान ॥ जहां पीवत न विजन लहे
 अजर अमर पद थान ॥२२॥ करै इ सार तिलोक को ए सुर चाम
 दोय जाव सहित जो जन न मै त सुगति उर ध ज होय ॥२३॥ सिंघ
 सन गिर मै रु सम प्र नु घन गर जित धोर ॥ स्पाम सुत न धन रूप ल
 षि ॥ नाचत घ विजन मोर ॥२४॥ छु विहित होय अ सोक दल
 तुम प्रामंडल देखि ॥ वीतरंग के निकरतै ॥ रहत तराग विशेष
 ष ॥२५॥ सीष कहै ति कुं लोक कुं ॥ ए सुर डंडु निनादा सिव प
 सार य वाह जिना ॥ न जोत जो परमाद ॥२६॥ तीन छत्र त्रिभुव
 न उदित मुक्तागन छु विदेत ॥ त्रिविधिरूप धरि मन कुत्रा सि
 सेवत न षत समेत ॥२७॥ पथ डी छुद ॥ ॥ प्रभु तुम शरीर तिर

रत्नजेषु परतापपुंजेषु सुखहेमा ॥ अंतिधवलसुजसरूपासमौन ॥
 तिनकेगहृतीनविराजमाना ॥ २१ ॥ सेवैसुरिंदकरिनिमतनालति
 नसीसमुकदतजिदेवमाला ॥ तुमचरणलागतलहलहैप्रीतिना
 हीरमैत्रवरजिनसुमंतरीति ॥ २२ ॥ प्रभुभोगविमुषतनकर्मदाह
 जिनपारकरतन्नवजलनिवाह ॥ ज्योमाटीकलसमुपकृद्दोया ॥
 लेनारअधोमुखतिरहिंसोया ॥ तुममहाराजनिरधननिरास
 तजिविनोविनोसवजगविकास ॥ अक्षरसुनावसौलिषनको
 या ॥ महिमाअनंतनगवंतसोया ॥ २३ ॥ कोपियोकमठनिजवेरदे
 रदेधि ॥ तिनकरीधूलिवरषोविशेष ॥ प्रभुभुमवायानयोहीनसे
 नयोपापलंपदमलीन ॥ २४ ॥ गरजंतघोरघतअंधकार ॥ चमकं
 तवीज्जलमुशालधार ॥ वरषंतकमवधरध्यानरूद्र ॥ उत्तरकर
 तैनिजनवशामृच्छ ॥ २५ ॥ वस्तुछंदः ॥ मेघमालीमेघमालीआपव
 लफेरिजेजेतुरतपिसाच ॥ गणनाथपासउपसर्गकारण ॥ आ
 निजालमूकतमुषधुनिकरतजिममतवारुण ॥ कालरूपवि
 करालतनरुंडमालतिनकंवा ॥ वहेनिसंकएहरंकतिजकरे
 करमदिहांगति ॥ २६ ॥ चौपई ॥ जेतुमचरणकमलतिडुकाल ॥
 सेवेतजिमायाजंजाल ॥ नावजगतिमनहरषिअपार ॥ धत्पधत
 जगतअवतार ॥ २७ ॥ नवसागरमैफिरतअजांन ॥ मैतुमसुजस
 सुजससुमौनहिकान ॥ जेप्रभुनाममंत्रमनिधरो ॥ तामुविपति
 नुयंगमडुरै ॥ २८ ॥ मनवंछितफलजिनपदमांहि ॥ मैपूरवन्नव
 जेनांहि ॥ मायामगनफिसोअगपान ॥ करैरंकजनमुफअपम
 न ॥ २९ ॥ मोहतिमरचायेदिगमोहि ॥ जनमांतरदेखेनहितोहि
 ज्योडुरजनमुफिसंगतिगहै ॥ मरमछेदकेकुवचनकहै ॥ ३० ॥
 सुन्यौकानजसपूजेपाय ॥ नैनंनदेषेरूपअघाय ॥ नक्तिहे
 तनयोचितचाव ॥ दुषदायककरियावितनवाव ॥ ३१ ॥ महारा
 जसराणागतिपाल ॥ पतितउधारणदीनदयाल ॥ सुमरणक
 रूनिवायंनिजसीस ॥ मुफदुषहरिकरोजगदीस ॥ धोकरम
 निकंदतमहिमासार ॥ असराणसरणसुजसविसतारनहि

नजोति सेयेप्रनुनुमसेयाय॥ तोमुफजनमत्र कारथजाय॥ ५१॥ सुरगण
 १०९ वंदितदयानिधान॥ जगतारणजगपतिजाजानि॥ दुषसागर
 तिमोहितिकामि॥ तिरजैथानदेहुसुषरासि॥ ५२॥ मैतुमचरण॥
 कमलगुणगाय॥ वहुविधिजगतिकरीमनलाय॥ जनमजनम
 प्रनुपाकतौहि॥ एहसेवाफलदीजेमोहि॥ ५३॥ छुष्ययुंद॥ इ
 हविधिश्रीनगचंतसुजसयेजविजननासहि॥ तेनिजपुन्यनं
 नारसंचिचिरपापपणसहि॥ रोमरायहुलसंतत्रंगत्रंगप्रमु
 केगुनमहि॥ सुर्गसंपदाहुंजिवेगिपंचमगतिपावहि॥ इहकल
 णमंदिरकियो॥ क्रमुदचंदकीबुधि॥ जायाकहतवणारसी॥ कर
 णसमकितशुभ॥ ५४॥ इतिश्रीकल्याणमिदिरकीनाथासं
 पूर्ण॥ ११॥ अथकल्याणमंभुसंस्थातलिख्यते॥ श्री॥ श्री॥ ५
 ॥ अथतिर्वाणकांडगायलिख्यते॥ अगवयमिउसहो॥ चंपाएवांस
 पुजजिएणाहो॥ उजंतेणेमिजिणे॥ पावाएणिबुदेमहावीरो॥ १॥ वीसं
 तुजिएवरिंदा॥ अमरसुरवंदिदधुदकिलेशा॥ समेदेगिरसिहरेणि
 वाणगयाणमोतेसि॥ २॥ वरदत्तोयवरंगो॥ सायरदयतावररणये॥
 आरुवकोडिसहिया॥ एिवाणगयाणमोतेसि॥ ३॥ एमिसामिष्णु
 णो॥ संबुकुमारोतहेवत्रणिकुहो॥ वाहत्तरिकोडीउ॥ उजंतेसत्तसया
 सिरसा॥ ४॥ रामसुयाविणजणा॥ लाडणारिंदाणपंचकोडीउ॥ पावा
 एगिरिसहिरो॥ एिवाणगयाणमोतेसि॥ ५॥ पंडुसयातिणजणा॥ दिविडण
 रिंदाणत्रवकोडीउ॥ सेतुंजयगिरिसिहरे॥ एिवाणगयाणमोतेसि॥ ६॥
 संतेजेवलनदा॥ जडवणरिंदाणत्रवकोडीउ॥ गजपंथेगिरिसिहरेणि
 वाणगयाणमोतेसि॥ ७॥ रामहणुसुगीउ॥ गवगवारकेवणीलमहाण
 लो॥ एवणवदीकोमीउ॥ तुंगियगिरिणिबुदेवंदे॥ ८॥ एंगणंगकु
 मारा॥ कोडापंचधुणिवरेसहिया॥ सवणगिरिवरसिहरे॥ एिवा
 णगयाणमोतेसि॥ ९॥ दहसुहरायसुसुआठकोमीपंचधुणिव
 रिसहिया॥ रेवाणइतमंगो॥ एिवाणगयाणमोतेसि॥ १०॥ रेवाणइत
 रिपक्षिमनायमिसिखवरकूडे॥ दोचकीदहकप्ये॥ आकडयको
 णिबुदेवंदे॥ ११॥ अरुवाणीवरणयरो॥ दक्षिणनायमिचूलगिरि

लपूः कृत्स्नं जगत्प्रमिदं प्रकटीकरोषि। मस्यो न जातु मरुतांच
 लिता चलानां दीपो परस्वमसिनाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ ना
 स्तं कदाचिदुपयासितं राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युग
 पज्जगति ॥ नां नो धरोदर निरुद्ध महाप्रभावः सूर्यातिशायि
 महिमासि मुनींश्च लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांध
 कारं ॥ गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विभ्रजते तव मुखा
 ब्रम तत्प्रकांतिविद्योतय जगाद पूर्वशशांकविंवां ॥ १८ ॥ किंश
 च्चेरीषु शशिना क्लिविश्रुता वायुं प्रन्मुखे डलितेषु तम
 स्मुनाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके कार्ये कि
 यज्जलधरैर्जलभारतमैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विजाति
 तावकत्रानैवं तथा हरिहरदिषु नायकेषु ॥ तेजो मा हृमणि
 षु याति यथा महत्त्वं नैवं तु काचत्रकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥
 ममेव हरिहरद्वय एव दृष्ट्वा ॥ दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयितोषमे
 ति ॥ किं वीक्षते न भवतां भुविये न नात्पः ॥ कश्चिन्मनो हरति
 नाथ नवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रा
 न्नात्मा सुतं ब्रह्मपमं जननी प्रसुता ॥ सर्वादिशोद्धतिभानि
 सहस्ररस्मिंश्चैव दिग्जनयति स्फुरदं शुजालं ॥ २२ ॥ त्वामो
 मनंति मुनयः परमं प ॥ २३ ॥ मादित्यवर्णममलंतमसः पुरस्ता
 त् ॥ त्वामेव सम्पुपलम्पजयंति मृकंताम् ॥ शिवः शिवपदस
 मुनींश्च यथा ॥ २४ ॥ त्वामवयं विभुमचित्तमसं रम्यमद्यं ॥ ब्रह्मा
 णामीश्वरमतं तमनंगकेतुं ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
 ज्ञानं स्वरूपममलं प्रवदंति संत ॥ २५ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधाश्चि
 तबुद्धिवोधा ॥ स्वशं करोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ ध्यातासि
 धीरसिवमार्गविधेर्विधानात् ॥ अकंक्षमेव जगत्तपुस्वी
 त्तमोसि ॥ २६ ॥ तुभ्यं नमंस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ॥ तुभ्यं नमः
 क्षितितलामलनृषणाय ॥ तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय
 तुभ्यं नमोजितज्ञबोदधिसोषणाय ॥ २७ ॥ कोविस्मयोत्रयदि
 नामगुणैरशौचैस्त्वं संश्रितो निरवकासतया मुनीशो दोषै
 रुपात्तविबुधाश्च यजातगर्भैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपि क्षितोसि

६

वीत्र

स्तोत्रेकिसाहस्रपितं प्रथमं जिनेंद्रं ॥ १ ॥ युगं ॥ बुध्याविनापिविबुधा
 र्चितपादपीठं ॥ स्तोत्रं समुद्यतिमतिविगतत्रयोदशं ॥ बालं विहाय जला
 संस्थितमिडुविं व मनः कश्चिज्जितनः सहसाग्रहीतुं ॥ ३ ॥ वक्रं गुणा
 नगुणसमुद्राशांककांतान् ॥ कस्तेहमः सुरगुरुप्रतिमोपिवुध्वा ॥
 कल्यांतकालपवनोदतनक्रवक्रं ॥ कोवातरीतुमलमंबुनिधिं नुजा
 ष्यां ॥ ४ ॥ सोहंतथापित्वनक्तिवशात्सुनीश ॥ कर्तुं स्तवं विगतत्राक्ति
 रपिप्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्यमृगोमृगेंद्रं ॥ नाभ्येति किंतिज
 शिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतापरिहासधाम त्व
 ङ्गः क्तिरेवमुखरीकुरुते वलान्मां ॥ यत्कोकिलः किलमधोमधुरं
 विरौति ॥ तच्चारुचक्षुकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वसंस्तवेतनवसं
 ततिसंनिवृत्तं ॥ पापं द्वाणं ह्यमुपैति शरीरज्ञाजं ॥ आक्रांतलो
 कमलिनीलमसेषमाशु ॥ सूर्याशुचिन्नमिवशास्त्रं मंधकरं ॥
 मत्वेतिनाथतवस्तंस्तवं नमयेद ॥ मारुततेतनुधियाभिर्वधनावा
 व ॥ चेतोहरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु ॥ मुक्ताफलकृतिमुपैति नृ
 दविंड ॥ ७ ॥ आस्तांतवस्तवतमस्तसमस्तदोषं ॥ त्वत्संकयापिजग
 तांडरितानिहंति ॥ हरेसहस्रकिरणः कुरुते प्रजेव ॥ पद्माकरेषु ज
 लजानिविकारांजां जि ॥ ८ ॥ नात्पशुतं भुवननृषणभूतनाथभूते
 र्गुणैर्भुविभवंतमनिष्टुवंतः ॥ त्रुत्यानवंति नवंतो ननु तैर्न किंच नृसा
 श्रितं यद्गृह्णात्प्रसमं करोति ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा नवंतमनिमेषविलोकनी
 यं नात्प्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वापयः शशिकरकृतिड
 ग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधेरसितुं कश्चेत् ॥ १० ॥ येः शांतरागरुचि
 निः परमाणुनिस्त्वं ॥ निर्मापिस्त्रिभुवनैकललामभूत् ॥ तावंतां व
 खलुतेष्वणवः पृथिव्यां यत्ते समातमपरं नहिरूपमस्ति ॥ ११ ॥ वक्रं
 कृते सुरतरोरानेत्रहारिनिःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं वि
 वंकलं कमलिनं कृतिशाकरस्य यद्दासरेजवतिपांशुपलाशाक
 ल्यां ॥ १२ ॥ संपूर्णमंडलशाशांककलाकलापश्रुतागुणास्त्रिभुवनं
 तवलंधयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवा
 रयति संवरतोयथेषु ॥ १३ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगानिर्नी
 तं मनागपि मतो न विकारमार्गं ॥ कल्यांतकालमरुताचलिताचले
 नाकिमंदरादिशि धिरंचलितं कदाचित् ॥ १४ ॥ निर्धूमवर्तिरप्यवर्जितते

लघुः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि। मम्यो न जातु मरुतांच
लिताचलानां दीपो परस्वमसिनाथजगत्सकाशाः ॥१६॥ ना
स्तं कदाचिदुपयासिन राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युग
पज्जगंति ॥ नां नो धरोदर निरुद्ध महाप्रभावः सूर्योतिशायि
महिमासि मुनीं इलोके ॥१७॥ नित्योदयं दलितमोहमहांध
कारं ॥ गम्यं न राहुवदनस्य नवारिदानां ॥ विश्राजते तव मुखा
ब्जमनस्य कांतिविद्योतयज्जागदपूर्वशशांकविंवां ॥ १८ ॥ किंश
र्वरीषु शशिनाक्लि विवश्वतावायुष्मन्मुखे डलितेषु तम
सुनाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके कार्ये कि
यज्जलधरैर्जलभारतमैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विनातिह
तावकशां नैवं तथा हरिहरदिषु नायकेषु ॥ तेजो माह मणि
षु याति यथा महत्वं नैवं तु काचशकले किरणकुलेपि ॥ २० ॥
ममेव हरिहरद्वय एव दृष्ट्वा ॥ दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयितोषमे
ति ॥ किं वीक्षते न भवतां नु विये न नात्यः ॥ कश्चिन्मनो हरति
नाथ नवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रा
न्नाम्यासुतं बडुपमं जननी प्रसुता ॥ सच्चीदिशो दधति नानि
सहस्ररस्मिंशच्चेव दिग्जनयति स्फुरदं शुजालं ॥ २२ ॥ त्वामा
मनंति मुनयः परमं प ॥ मादित्यवर्णममलंतमसः पुरस्ता
त् ॥ त्वामेव सम्पुपलम्पजयेति मृकंतास्यः शिवः शिवपदस्य
मुनीं प्रपंथाः ॥ २३ ॥ वामव्यये विभुमचित्तमसंख्यमद्यं ॥ ब्रह्मा
णमीश्वरमतं तमतंगकेतुं ॥ योगीश्वरं विदितयोगमतेकमेकं
ज्ञानं स्वरूपममलंप्रवदंति स ॥ २४ ॥ बुद्धस्वमेव विबुधाश्चि
तबुद्धिवोधा ॥ त्वं शं करोसि नुवनत्रयशं करत्वात् ॥ धातासि
धीरसिवमार्गविधेर्विधाना ॥ अक्तं त्वमेव जगवत्पुरुषो
त्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमंस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ॥ तुभ्यं नमः
क्षितितलामलनृषणाय ॥ तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमोजितज्ञबोदधिसोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्रयदि
नामगुणैश्चौषैस्त्वं संश्रितो निरवकासतया मुनीनां दोषै
रुपात्तविबुधाश्प्रयजातगर्भैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीदितोसि ॥ २७ ॥

६

वीत्र

उच्चैश्चोक्तक संश्रितमुत्तमयुष्मानातिरूपममलंनवतोनितांते
 स्पष्टोच्चसक्किरणमस्ततमोवितानं॥विंवरवेरिवपयोधरपार्श्वव
 ति॥२०॥सिंहासनेमणिमयूषशिषाविचित्रेविश्राजतेतववपुःक
 नकावदातं॥विंववियद्विलसदंशुलतावितानं॥उंगोदयादिशिर
 सीवसदस्यधुमे॥२१॥कुंदावदातचलचामरचारुशोभंविश्राजते
 तववपुःकलयोतकांतं॥उच्चछत्रांकशुचिनिर्भरवारिधारमुच्चै
 स्तटंशुगिरेरिवशातकोनं॥२२॥छत्रत्रयंतवविनातिश्रांकांकं
 तमुच्चैस्थितंस्वगितनानुकरप्रतापं॥मुक्ताफलप्रकरजालवि
 द्दुहसोभं॥प्रहापया॥त्रिजातःपरमेश्वरत्वं॥२३॥गंभीरतारवपु
 रितद्विग्विनागस्रैलोक्यलोकशुभसंगमभृतिदक्षः॥सहस्र
 राज्यजयघोषणघोषकसन॥खेडंडनिर्धनतितेयशसःप्रवादी
 २३॥मंदारसुंदरनमेरुसुपरिजातसंतानंकादिक्कसमोकरदृशि
 रुद्धा॥गंधोदविंडुशुभमंदमरुत्पातादिः॥आदिवःपततितेव
 यसांततिर्वा॥२४॥शुभतप्रजावलयनृशिविजाविज्ञोस्ते॥लोक
 त्रयेक्षतिमतांक्षतिमाक्षिपंती॥शोद्धृद्वाकरनिरंतरनृसंभ
 दीप्याजयत्पिनिशामपिसौमसौम्या॥२५॥स्वर्गायवर्गगममा
 र्ग्विमा॥गणेषुःसहस्रतत्वकथतेकपटुस्त्रिलोकादिमधुनि
 र्भवति तेविशंदाथतर्वाजायास्वजावपरिणामगुणप्रयोऽप्यः॥२६
 उन्निहहेमनवपंकजपुंजकांतीपर्युद्धसन्नरवमपूषशिरवा
 निरामौ॥पादौपदानितवयत्रजिनेऽधत्तः॥पद्मानितत्रविबुधा
 परिकल्पयंतिः॥२७॥इच्छेयथातवविनृत्तिरंनृर्जितेऽः॥धर्मो
 पदेत्रातविधौततयापरस्य॥२८॥यादृगप्रजादिनरुतःप्रहतांध
 कारा॥तादृगुक्तोप्रहगणस्यविकारोपि॥२९॥श्र्योतन्मदाक्लि
 विलोककपोलमूल॥मत्तत्रमम्रनादविद्वहकोयं ऐरावतान
 मित्रमुद्यतमापतंतं॥दृष्टानयंनवतितो नवदाश्रितानां॥३०॥त्रि
 जनेत्रकुंजगलडद्वलशोणितारुमुक्ताफलप्रकरनृषितनृमि
 नागः॥अहंक्रमःक्रमगतांहरिणाधिपोपि॥नाक्रामतिक्रमयुगा
 चलसंश्रितंते॥३१॥कल्यांतकालपवनोः॥हतवृत्तिकल्पं॥दाव
 नलंहालितमुहलमुत्फुलिगं॥विश्वजिषेत्सुमिबन्मुखमापतंतं
 त्वन्नामकीर्तनजलंशमयत्सरोषं॥ध०॥रकेक्षणांसमदकोकिलक
 वनीलां॥क्रोधोदतंफणितमुत्फणमापतंतं॥आक्रामतिक्रमयुगे
 ननिरस्तशंका॥स्त्रंन्नामनादसतीहृदियस्यपुंसः॥ध०॥वलाउर
 गगजगर्जितनीमनाद॥माजौवलंवलवतामपिनृपतीनां॥उच्चदि

वाकरमयूषत्रिषापविहं। त्वकीर्तनात्तमश्वाश्रुतिदामुपैति॥४२
 कंताग्रत्तिन्नगजशोणितवरिवाह॥ वेगावतारतरणसुरयोध
 मे॥ युद्धेजयंविजितडुर्जयजेययक्षाःश्रुत्यादयंकजवनाश्रयिणे
 लजंते॥४३॥ अंतोनिधौलुमितनीषणतक्रचक्रो॥ यावीनपीठ
 नषदोत्वणवाडवानौ॥ रंगतरंगशिषिरस्थितयानपात्रांश्रु
 संविहायजवतःस्मरणाच्छ्रुंति॥ ४४॥ उरूतनीषणजलोद्भ्र
 रभुग्ताःशोभांदशामुपगताश्रुतजीविताशाः॥ वत्सादपंक
 जरजोमृतादिग्धदेहामर्त्याजवंतिमकरधूजतुल्यरूपाः॥४५॥
 पादकंठमुरुश्रंखलवेष्टितांगा॥ गाढं वृहन्निगडकोटिनिघृष्ट
 जंघा॥ त्वंताममंत्रमन्त्रिमनुजाःस्मरंतः॥ सद्यस्वयंविगत
 बंधनयानवंति॥४६॥ मत्तद्विप्रेन्द्रमृगरजदवानलाहि॥ संग्रामवारि
 धिमहोदरबंधनोत्तं॥ तस्माश्रुताश्रामुपयातिनयंनियेवयस्तावकं
 स्तवमिमंमतिमानधीति॥४७॥ स्तोत्रस्त्रजंतवजिनेश्रुणौनिबंधं
 तक्तमयारुचिरवर्णविचित्रपुष्पं॥ धत्तेजतोयश्हकंवगताम
 जस्रं॥ तंमानतुंगमवशासमुपैतिलक्ष्मी॥४८॥ इतिश्रीमानतुंग
 आचार्यविरचितेश्रीनक्तामस्तोत्रसंपूर्णं॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
 ॥६०॥ श्रीसखत्येतमः॥ अथदशस्त्रलिख्यते॥ अथस्वाध्यायः॥
 त्रैकाल्यं प्रमथं न च पद सहितं जीवषट्काय लेत्रयाः पंचान्पेर्वस्ति
 काया व्रतसमिति गतिज्ञानचारित्र्येदाः॥ इत्येतन्मोक्षमूलं त्रि
 वतमहितैः प्रोक्तमर्हन्निशैः प्रत्येतिश्रद्धातिस्मृतिचमतिम
 न्यः सर्वशुद्धदृष्टिः॥ १॥ सिद्धेजयप्पसिद्धेचतुद्विहत्राराहणाफलं
 यत्तेवंदितात्प्ररहंतेवोच्छंत्राराहणाकमसौ॥ २॥ उज्जोवणमु
 ज्जवणंणिवाहणंसाहंणिंणंदंसणणएवचित्तंतवाणमाय
 हणानणिया॥३॥ इतिस्वाध्यायः॥ मोक्षमार्गस्यनेतांस्तेतारं
 कर्मनृत्तांज्ञातारंवेश्वतत्वातां॥ वंदेततुणालजुये॥ ४॥ सम
 ग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गा॥ ५॥ तत्त्वार्थप्रधानंसा
 म्यग्दर्शनं॥ ६॥ तन्निर्गोदधिगमाद्य॥ ७॥ जीवाजीवप्रववं
 धसंवरनिर्जगामोक्षस्ति त्वं॥ ८॥ नामस्थापनाद्व्यन्यावतस्त

ए-च

॥ १॥ ॥ प्रमाणं नैरधिगमः ॥ १॥ ॥ निर्देहास्वामित्वसाधिताधिकरण
 स्थितविधानतः ॥ १॥ ॥ सत्संस्कारादत्र स्पृशं न कालान्तरत्वात्सर्व
 क्रतुत्वैश्चाप्यमतिस्तुतावधिमतः पर्य्ययकेवलानज्ञानं ॥ १॥ त
 त्प्रमाणो ॥ १॥ ॥ आधेपरोक्षे ॥ १॥ ॥ प्रत्यक्षमन्यतः ॥ १॥ ॥ मतिस्मृतिस्
 ज्ञाचिंताज्ञनिबोधइत्यनर्थांतरं ॥ १॥ ॥ तद्विंद्रियानिंद्रियतिमि
 तं ॥ १॥ ॥ अथग्रहेहावायधारणा ॥ १॥ ॥ वक्रवक्रविध्वंसिप्र
 निस्रतानुक्तधवाणंसेतराणां ॥ १॥ ॥ अर्थस्य ॥ १॥ ॥ मंजनस्यवग्रहः
 १॥ ॥ नचक्षुरनिंद्रियाभ्यां ॥ १॥ ॥ श्रुतंमतिपूर्वघनेकवादशनेदं
 २॥ ॥ नवप्रत्ययोवधिदेवनारकाणां ॥ १॥ ॥ क्षयोपप्रामतिमितः
 द्विकल्पः श्लेषाणां ॥ १॥ ॥ कृजुविपुलमतीमनंपयः ॥ १॥ ॥ विशुद्धिः
 तिपातान्यांतद्विशेषः ॥ १॥ ॥ विशुद्धिद्वेत्रस्वामिषयेत्योवधिमतः
 पर्याययोः ॥ १॥ ॥ मतिश्रुतयोर्निर्विधोच्चमेषसर्वपर्यायेषु ॥ १॥ ॥
 रूपिष्ववधेः ॥ १॥ ॥ तदनंतरनागमनः पर्य्ययस्य ॥ १॥ ॥ सर्वेद्रु
 पयायेषुकेवलस्य ॥ १॥ ॥ एकादीनिताज्यानि युगापदे कस्मिन्नाह
 तुर्न्यः ॥ १॥ ॥ मतिश्रुतावधयोविपर्य्ययश्च ॥ १॥ ॥ सदसतोर्विशेष
 चहृद्योपलब्धयेरुन्मत्तवत् ॥ १॥ ॥ नैगमसंग्रहमवहारकृज्ज
 त्रसप्तसमनिरुद्धैवभूतानयाः ॥ १॥ ॥ ज्ञानदर्शनयोस्तद्वेनय
 नं चैव लक्षणं ॥ १॥ ॥ ज्ञानस्य च प्रमाणमध्यायेस्मिन्निरूपितं ॥ १॥
 ॥ इति तत्त्वार्थधिगमे मोक्षश्रीस्त्रेत्रयमोक्षार ॥ १॥ ॥ कृष्णामि
 दापिकौंभौमिभ्यां ॥ १॥ ॥ जीवस्य स्वतत्त्वमोदकपरिणामिके
 च ॥ १॥ ॥ हिनवाष्टदशैकचित्रातित्रिभिदायथाक्रमं ॥ १॥ ॥ समस्त
 रित्रोऽज्ञानदर्शनदानेनलान्नैगोपन्नोऽवीर्यमिच्छा ॥ १॥ ॥ ज
 नाज्ञानदर्शनलब्धये श्रुत्स्त्रिपंचनेदांसम्पत्तचरित्रसं
 यमासंयमाश्च ॥ १॥ ॥ गतिकषायलिगमित्यादर्शनाज्ञानासंयत
 सिद्धलेखाश्चतुश्चतुश्च ॥ १॥ ॥ कैकैकैकैकषड्वेदा ॥ १॥ ॥ जीवनव्याम
 वत्वानिच ॥ १॥ ॥ उपयोगेन क्षणं ॥ १॥ ॥ सधिविधोष्टचतुर्नेदार्थ
 संसारिणोमुक्ताश्च ॥ १॥ ॥ समनस्कामनस्का ॥ १॥ ॥ संसारिणस्
 ससुखे वराः ॥ १॥ ॥ षष्ठ्येवनेजोवायुवतस्पतपः स्यावराः ॥ १॥ ॥
 दीन्द्रियार्यस्वराः ॥ १॥ ॥ पंचैन्द्रियाणि विद्यमानि ॥ १॥ ॥ निर्देसु

पकरणेष्टवेदियं॥१७॥ लब्धुपयोगोनावेदियं॥१८॥ स्पर्शरसनघ्राण
 चक्षुःश्रोत्राणि॥१९॥ स्पर्शरसांधवर्णश्रवस्तदर्थः॥२०॥ श्रुतमनि
 द्रियस्या॥२१॥ वनस्पतंतानामेकं॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्रममनुम
 दीनामेकैकवृध्यानि॥२३॥ संज्ञितः समनस्काः॥२४॥ विग्रहगतौ
 कर्मयोगः॥२५॥ अनुश्रौणगतिः॥२६॥ अविग्रहाजीवस्या॥२७॥
 विग्रहवतीचसंसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः॥२८॥ एकसमयाविग्रहा॥२९॥
 एकंक्षेत्रीनवानाहारका॥३०॥ समूर्ध्वतंगनेपपादाजनमः॥३१॥
 सचित्तशीतसंवृतांसेतरामिश्राश्चैकत्रास्तद्योनया॥३२॥ जगपु
 जंडजपोतानांगर्तः॥३३॥ हेवनारकाणामुपपादः॥३४॥ शेषा
 णासमुर्ध्वतं॥३५॥ ऊदारिकवैक्रियिकहारकतैजसकाम्मेण
 निशरीराणि॥३६॥ परंपरंस्वह्मं॥३७॥ पुदेस्तोसंभेयगुणं प्राक्तै
 जसात्॥३८॥ अनंतगुणोपरेशर्षा॥ अतीयाते॥३९॥ अनादि
 संवर्धेच॥४०॥ सर्वस्याधशतदादीनानात्पानियुगपदेक ^{स्त्रिंशत्} चतु
 र्भ्यः॥४१॥ तिरुपजोग मत्पं॥४२॥ गर्तसमूर्ध्वतजमाद्यं॥४३॥ उप
 पादिकं वैक्रियकं॥४४॥ लब्धिप्रत्ययेच॥४५॥ तेजसमयि॥४६॥ शु
 नेविश्रुधर्ममाघातिचाहारकंप्रमत्तसंयतस्यैव॥४७॥ नारक
 समूर्ध्वेनोनपुंसकानि॥४८॥ नदेवाः॥४९॥ श्रोत्रस्त्रिवेदाः॥५०॥ अ
 पपादिकचरमोत्तमदेहासंखेयवर्षायुषोनयवर्षायुषः॥५१॥
 त्र॥ इतितत्वार्थे॥ शिगमेमोक्षशास्त्रेद्वितीयोध्याय॥२॥ रत्नत्र
 क्कंवालुकायंकभूमतमोमहातमप्रमात्रमयोधनांबुवाताकात्र
 प्रतिष्ठासप्तधोध॥३॥ तासुत्रिंशत्संच विंशतपंचदशदशत्रि
 पंचोत्तेकतरकशतसहस्राणिपंचचैवयथाक्रमे॥३॥ नारकानि
 त्याश्रुमतस्त्रेयाः परिणामदेहवेदनाविक्रया॥३॥ परस्परोदीरत
 डःखाः॥४॥ संक्षिप्तसुरोदीरितडःखाश्चप्राक्चतुर्भ्यः॥५॥ तेष्ट
 कत्रिसप्तदशसप्तदशवाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सामशेषमाः सत्वा
 नांपरास्थितिः॥६॥ जंबूद्वीपलवाणोदादयः श्रुतनामानोदीपस
 मुद्राः॥७॥ विधिर्विक्रंजाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवर्तयाकृतयः॥८॥
 तन्मध्येमेरुनामिर्हृतोयोजतशतसहस्रविक्रंजो जंबूद्वीपगर्षा
 नरतहैमवतहरिविदेहरमाकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि

१०॥ तदिनाजनःपूर्वापरायताहिमवन्महाहिमवन्निषधनीवक
 शिखरिणोवर्षधरपर्वताः॥११॥ हेमार्जुनतपनीप्रबैद्युर्ज
 तहेममयाः॥१२॥ मणिविचित्रपाश्र्वाःऊपरिमूलेचतुस्रविस्त
 राः॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्जकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकाक
 दास्तेषामुपरि॥१४॥ प्रथमोयोजनसहस्रायामःस्तद्विंशति
 नोऽरुदः॥१५॥ द्वायोजनवगाहः॥१६॥ तन्मध्येयोजनंपुष्करं
 तद्विगुणं द्विगुणाकृदाःपुष्कराणिच॥१७॥ तन्निवासिनोदे
 व्यःश्रीक्रीडतिकीर्तिकुशलक्ष्मःपत्न्योपमस्थितपःससाम
 निकपरिषत्काः॥१८॥ गंगासिंधुरोहित्रोहितास्याहरिहरि
 कांताश्रीतीर्थतीर्थद्वारीनरकांतसुवर्णरूपकूलारकारको
 दासरितस्तनमध्यगाः॥१९॥ योर्धयोःपूर्वोपूर्वगाः॥२०॥ शो
 भास्वपरगाः॥२१॥ चतुर्द्वानदीसहस्रपरिवृतागंगासिंधाद
 योनद्यः॥२२॥ नरतपस्वित्रातिपंचयोजनत्रातविस्तारःषड्भुजै
 नविंशतिनागायोजनस्य॥२३॥ तद्विगुणं द्विगुणविस्तारावर्षध
 रवर्षाविदेहांताः॥२४॥ उत्तरादक्षिणातुष्मा॥२५॥ नरतैरावत
 योर्ध्विज्ञासौषट्समायास्यामुत्सर्पिणीवसर्पिणीत्यां॥२६॥
 तास्यामपराश्र्मयोवस्थिताः॥२७॥ एकद्वित्रिपत्न्योपमस्थित
 योहेमचतकहरिवर्षकदेवऊरुवकाः॥२८॥ तथोत्तराः॥२९॥
 विदेहेषुसंखेयकालाः॥३०॥ नरतस्यविंशतिजंघ्नीपसनवति
 त्रानागाः॥३१॥ द्वितीयांखंडे॥३२॥ पुष्करार्धच॥३३॥ प्राग्मा
 तुषोत्तरान्मुमुष्माः॥३४॥ आर्षस्त्रिंशश्च॥३५॥ नरतैरावतवि
 देहाःकर्मभूमयोत्पन्नदेवऊरुत्तरंभूःवस्थितीपरावरेत्रिप
 त्न्योपमांतर्माहूर्त्ते॥३६॥ तिर्यग्योनिजातांच॥३७॥ श्रितेन
 त्वार्यद्विगमेमोक्षशास्त्रे॥३८॥ तृतीयोध्याय॥३९॥ देवाश्चुसि
 कायाः॥४०॥ अदितस्त्रिभुपीतांतलेश्याः॥४१॥ द्वाष्टपंचदशदशविक
 ल्याःकल्पोपपन्नपर्यताः॥४२॥ इन्द्रसामां नित्रायस्त्रिंशःपारिष
 दात्परहलोकपालातीकप्रकीर्णकानियोगपकित्विषिकायै
 कत्राः॥४३॥ त्रायस्त्रिंशद्वौकपालवज्जामंतरज्योतिष्काः॥४४॥ पूर्व
 योर्धीजाः॥४५॥ कायप्रवीचाराश्चाएशातात॥४६॥ शौघाःसर्पिरूप

राष्ट्रमतः प्रवीचाराः ॥ ७ ॥ परे प्रवीचाराः ॥ ८ ॥ जवनवासिनो सुरताग
 विकल्पुर्णाग्निवातस्तनितोदधिदीपदेकुमाराः ॥ १० ॥ अंतराः कि
 नरकिंपुरुषमहोरगांधर्वयक्षराक्षसजतपिशाचाः ॥ ११ ॥ ज्योतिष्का
 सखीचंद्रमसौगहनक्षत्रशकीर्षकतारकाश्च ॥ १२ ॥ मेरुप्रदक्षिणा
 नित्यगतयो नृलोकोः ॥ १३ ॥ तत्कृतः कालविजागा ॥ १४ ॥ वहिरवस्थि
 ताः ॥ १५ ॥ वैमानिकाः ॥ १६ ॥ कल्पोपपन्नाः कल्यातीताश्च ॥ १७ ॥ उ
 प्युपरि ॥ १८ ॥ सौधर्मैशानर्शनकुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांत
 वकापिष्टशुक्रमहाशुक्रत्रातारसंहश्रारेष्वानतप्राणतयोरार
 णामृतयोर्नवसुरैवेपकेषुविजयवैजयंतजयंतापराजितेषु
 वीर्यसिद्धौच ॥ १९ ॥ स्थितिश्चावसुखकृतिलेखाविशुद्धिदियाः
 वधिविषयतोधिकाः ॥ २० ॥ प्रतिशरीरपरिश्रान्तिमानतोहीन
 रथापीतपक्षशुक्लेत्रपाहिनिशेषेषु ॥ २१ ॥ अग्निदेवकेसुः क
 ल्याः ॥ २२ ॥ ब्रह्मलोकलयलौकांतिका ॥ २३ ॥ सारस्वतादिस्तु
 त्त्वरुणागर्दतोयतुषितामावाधिरिष्टाश्च ॥ २४ ॥ विजयादिषु
 चरमाः ॥ २५ ॥ पपादिकमनुष्येभ्यः श्रेष्ठस्तिर्यग्योतयः ॥ २६ ॥ स्थि
 तिरसुरतासुं पृथ्वीपशोषाणां सागरोत्रिपल्पोपमार्द्धहीनम
 ताः ॥ २७ ॥ सौधर्मैशानयोसागरो यमेधिके ॥ २८ ॥ सनकुमारमा
 हेन्द्रयोसप्तः ॥ २९ ॥ त्रिसप्ततवैकादशत्रयोदशपंचदशत्रिरधि
 कानितु ॥ ३० ॥ अरणाचुताश्चर्मकेकेतनवसुरैवेपकेषुविज
 यादिषुसर्वीर्यसिद्धौच ॥ ३१ ॥ अपरापल्पोपमधिकं ॥ ३२ ॥ पर
 तः परतः पूर्वापूर्वांतराः ॥ ३३ ॥ नारकाणांचद्वितीयादिषु
 दशवर्षसहस्राणिप्रथमायां ॥ ३४ ॥ जवनेषुच ॥ ३५ ॥ अंतराणांच
 ३६ ॥ परापल्पोपमधिकं ॥ ३७ ॥ ज्योतिष्काणांच ॥ ३८ ॥ तदष्टम
 गोपरा ॥ ३९ ॥ लौकांतिकानाम् ॥ ४० ॥ सागरोपमाणिसर्षेषां ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥ तत्त्वार्थाधिगामे मोक्षशास्त्रे चतुर्थाध्याये ॥ ४३ ॥ अजी
 वकायाधर्माधर्माकाशपुङ्गवाः ॥ ४४ ॥ अग्निः ॥ ४५ ॥ जीवाश्चाशनि
 त्यावस्थितामरुपाणि ॥ ४६ ॥ कृपाणिपुङ्गवाः ॥ ४७ ॥ आकाशादेक
 द्रव्याणि ॥ ४८ ॥ निःक्रियाणि च ॥ ४९ ॥ असंख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मैक
 वानां ॥ ५० ॥ आकाशत्रयानंता ॥ ५१ ॥ संख्येयासंख्येयाश्चपुङ्गवानां ॥ ५२ ॥

नाणोः॥१॥लोककासेवगाहः॥१२॥धर्मधर्मयोःकृत्वाएक
 प्रदेशादिषुभोज्यःपुद्गलानां॥१३॥असंख्येयजागदिषुजीवा
 नां॥१४॥प्रदेशसंहारविसर्पीज्यांशदीपवत्तारुणतिस्थित्युप
 होधर्माधर्मयोरुपकारः॥१५॥आकाशास्वावगाहं॥१६॥शरीर
 वाङ्मनःश्राणापानापुद्गलानां॥१७॥सुखदुःखजीवित्तिमर
 णोपग्रहाश्च॥१८॥परसरोपग्रहोजीवानां॥१९॥वर्तनापरिण
 मक्रियापरत्वापरत्वेचकालस्य॥२०॥स्पर्शरसगंधवर्णवंतपु
 ङलाः॥२१॥त्राष्टबंधसौदम्पस्थोत्पसंस्थानजेदतमश्नुयात्
 योद्योतवंतश्च॥२२॥अणवःस्कंधाश्च॥२३॥जेदसंघातेन्यःउत्पद्यते
 जेदादणुः॥२४॥जेदसंघाताभ्यांचाक्षुषः॥२५॥सद्बलक्षणं॥२६॥उ
 त्पादमयद्यौमयुक्तंमत्तत्रणेतज्ञावात्मयंतिसं॥२७॥अर्पितान
 र्पितासिधेः॥२८॥स्निग्धसूक्ष्मत्वाबंधः॥२९॥नजघन्यगुणानां॥३०॥
 गुणसामेसदृशास्तं॥३१॥अदिकादिगुणानां॥३२॥बंधेधिकौ
 परिणामिकौच॥३३॥गुणपर्यवद्भवं॥३४॥कालश्च॥३५॥सोने
 तसमयः॥३६॥इत्याश्रयानिर्गुणगुणाः॥३७॥तज्ञावपरिणाम
 ३८॥इतित्वार्थीधिगमेमोक्षशास्त्रेयंमोक्षध्याये॥३९॥॥॥
 कायवाङ्मनकर्मयोगः॥४०॥सत्राश्रवः॥४१॥शुभपुण्यपसाशुभप
 पस्यः॥४२॥सकषायाकषाययोःसांप्रायकेर्षापययो॥४३॥इन्द्रिय
 कषायावृत्तक्रियाःपंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याःपूर्वस्मृतेदा
 ४४॥तीव्रमंदजाताज्ञातज्ञावाधिकरणावीर्यविशेषेस्तद्विश्रो
 ४५॥अधिकरणंजीवाजीवाः॥४६॥आद्यंसंरंजसमारंजारंजये
 गकृतकारितानुमतकषायविशेषेस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकत्रा
 ४७॥निवर्तनानिदोषसंयोगानिसर्गद्वैचतुर्द्विजिनेदा॥४८॥॥॥त
 स्रदोषनिष्कवमात्स

णयोगः॥४९॥दुस्वशोकतापाकंदन
 यस्थानान्यसद्वैद्यस्य॥५०॥नूतवर्तिनुकंषादानसरागसंय
 द्योगाहंतिशोचमितिसद्वैद्यस्य॥५१॥केव
 देवावर्णवादेदर्शनमोहस्य॥५२॥
 चारित्रमोहस्य॥५३॥वकारंजपरिग्रहत्वंतारकसायुष

मायातेर्योगयोनस्य ॥१६॥ अत्पारंजपरिग्रहत्वंमानुषस्य ॥१७॥ स्वभाव
 मर्हत्वंच ॥१८॥ निःश्रीलवृत्तत्वंचसर्वेषां ॥१९॥ सरागसंयमासंयमा
 कामनिर्जरा ॥ बालतपांसिदेवस्य ॥२०॥ सम्पत्कंच ॥२१॥ योगवक्रंत
 विसंवादानंच ॥२२॥ शुभस्यनाम्नः ॥ तद्विपरीतंशुभस्य ॥२३॥ दर्शन
 विशुद्धिर्विनयसंपन्नताश्रीलवृत्तेषुनतीचारोनीक्षणज्ञानोपये
 गसंवेगोशक्तिस्त्यागशक्तिस्तपसाधुममाधिर्वैयावृत्त्यकरणम
 हेदाचार्यवक्रुश्रुतनक्तिप्रवचननक्तिरावरपकापरिहाणिमार्ग
 प्रभावानाप्रवचनवत्सलत्वमितितीर्थकरत्वस्य ॥२४॥ परात्मनि
 दाप्रसंसेसदसंजुणोच्छादनोसदभावनेचनचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विप
 र्ययौर्नीचैर्वैस्नुत्सेकौचौत्तरस्य ॥२६॥ विघ्नकरणमंतरायस्य ॥२७
 शतितत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेषुधोध्यायः ॥६॥ हिंसावृत्तस्ते
 यावृत्तपरिग्रहेभ्योविरतिर्वृतं ॥ देशसर्वतोणुमहती ॥२८॥ तत्सै
 र्यीर्थेनावनापंचपंच ॥ ३॥ वाङ्मनोणुमीर्यादाननिक्षेपणसमे
 त्यालोकितपानिज्ञेजनातिपंच ॥ ४॥ क्रोधलोभनीरुत्वहास्यप्र
 त्पारखानान्पुवीचीनापणंचपंच ॥ ५॥ शून्यागारनिमोक्षिताव
 सपरोपरोधारकरणजैद्वशुद्धिसधर्माविसंवादाःपंच ॥ ६॥ स्त्री
 रागकथाश्रवणतन्मनोहरंगतिरीक्षणपूर्वरतानुसमरण
 वृषेष्टरसस्वशरीरसंस्कारस्यागापंच ॥ ७॥ मनोज्ञामनोज्ञैश्चि
 विषयरागद्वेषवर्जितानिपंच ॥ ८॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायाव
 द्यदर्शनं ॥ ९॥ दुःखमेवा ॥ १०॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्यानि
 चसत्वगुणाधिकक्तिरूपमानाविनयेषु ॥ ११॥ जगत्कायस्वभावे
 वासंवेगवैराग्यार्थं ॥ १२॥ प्रमत्तयोगात्याणव्यपरोपणं हिंसा ॥ १३
 असदनिधानमनृतं ॥ १४॥ अदत्तादातंस्तेषु ॥ १५॥ मैयुनमवृत्त
 १६॥ मूर्च्छापरिग्रह ॥ १७॥ निःशल्पोवृत्ती ॥ १८॥ अर्ग्येनगास्थ ॥
 १९॥ अणुवृत्तोगारी ॥ २०॥ दिदेशानर्थदेडविरतिसामाधि
 कशोषधोपवासोपनोगपरिमाणातिथिसंविनागवृत्तसंय
 न्म ॥ २१॥ मारणातिकीसह्येषणजोषिता ॥ २२॥ शंकाकादा
 विचिकित्सान्पहृष्टिप्रशासासंस्तवाः ॥ सम्पादष्टेरतीचारा २३
 वृत्तश्रीलिषुपंचपंचयथाक्रमं ॥ २४॥ बंधवधघेदातिनारोप

एतन्नपाननिरोधाः ॥ २५ ॥ मिथ्योपदेशरहोमाख्यानरुदले
 खक्रियान्पासापहारसाकारमंत्रनेदाः ॥ २६ ॥ स्तेनप्रयोगतद
 कृतादानविदुहराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूप
 कम्बवहाराः ॥ २७ ॥ परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताभ्र
 पगृहीतागमनानंकीडाकामतीव्रान्निवृत्तिनिवेशाः ॥ २८ ॥ दे
 त्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकृप्यप्रमाणातिक्र
 माः ॥ २९ ॥ उर्ध्वस्तिर्योग्यतिक्रमक्षेत्रदृष्टिसूत्रराधात्या
 निः ॥ ३० ॥ आनयनशेषप्रयोगशुद्धरूपानुयाजुलक्षेयाः ॥ ३१ ॥ कं
 दर्पकौतुकमौख्यसमीक्ष्याधिकरणोपज्ञोगपरिज्ञोगन्य
 क्वानि ॥ ३२ ॥ योगः ॥ प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३३ ॥
 अस्यवेदिताप्रमाज्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमाणानादर
 स्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३४ ॥ सचित्तसंबंधसन्निश्रान्तिषवडः
 पक्काहारः ॥ ३५ ॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरमपदेशकरण
 मात्सर्पकालातिक्रमाः ॥ ३६ ॥ जीधितमरणसंज्ञामित्रानुय
 गमुखानुबंधनिदानानि ॥ ३७ ॥ अनुग्रहार्थस्वस्पातिसर्गेव
 नं ॥ ३८ ॥ विधिद्वयदाहपात्रविशेषातद्विशेषा ॥ ३९ ॥ शति
 तंत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेसप्तमोऽध्याये ॥ ४० ॥ मिथ्याद
 र्शनाविरतिप्रमादकषायोगाबंधहेतवः ॥ ४१ ॥ सकषायत्वान्जी
 वः कर्मणोयोगपानंपुरुलानादत्तेसंबंधा ॥ ४२ ॥ प्रकृतिस्थित्यनु
 ज्ञागप्रदेशास्तद्विधयः ॥ ४३ ॥ आद्योज्ञानदर्शनावरणवेदनी
 यमोहनीयायन्त्रामगोत्रांतरायाः ॥ ४४ ॥ पंचनवद्वष्टाविंशति
 चतुर्विंशत्वारिंशद्विपंचनेदाययाक्रमं ॥ ४५ ॥ मतिष्कृतावधि
 मनःपर्ययकेवलानां ॥ ४६ ॥ चतुरचतुरवधिकेवलानां ॥ ४७ ॥
 ज्ञानिज्ञानिज्ञाप्रचलाप्रचलाप्रचलास्मानगृह्यश्रु ॥ ४८ ॥
 दसचेद्य ॥ ४९ ॥ दर्शनावरिन्मोहनीयाकषायकषयोवेद
 नीयाख्यास्त्रिद्वितवषोडशनेदाः ॥ अंतंतानुवंसम्पत्कमि
 थ्यात्वतडज्ञयासकषायकषायोहास्परतिरतिशोकनयनुय
 सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः ॥ अनंतानुबंधप्रत्याख्यातप्रत्याख्यान
 संज्वलनविकल्पाश्रैकराः क्रोधमानमायातोना ॥ ५० ॥ नारक

तेर्ष्योनिमानुषदैवाति॥१७॥पतिजातिशरीरंगोपांगनिर्माण
 बंधणसंघातसंस्थानसंहतनस्पर्शगंधवर्णानुपूर्वाग्रुलघूप
 घातपरघातातपोद्योतोच्छासविहायोगतयः॥प्रत्येकशरीरत्रा
 सश्रुतगसुस्वरश्रुतसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययत्रास्कीर्तिसेता
 णितीर्थकरत्वंच॥१८॥उच्चैर्नीचैश्च॥१९॥दातलाननोगोपने
 वीर्याणां॥२०॥आदितस्तिस्वृणामंतरायस्पत्रिसत्सागरोप
 मकोटीकोद्युःपरस्थितिः॥२१॥सप्ततिर्मेहनीयस्य॥२२॥विंश
 तितामगोत्रयोः॥२३॥त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाएपायुषः॥२४॥
 अपराघादत्रामरुतीवेदनीयस्य॥२५॥नामगोत्रयोरद्वौ॥२६॥
 त्रौषाणामंतर्मुकुर्ती॥२७॥विपाकोनुनवः॥२८॥सयथानामः
 २९॥ततश्चनिर्जरा॥३०॥नामप्रत्ययाःसर्वतोयोगविशेषात्स
 द्दमेकक्षेत्रावगाहस्थिताः॥३१॥सर्वात्मप्रदेशेषुनंतानंतप्रदे
 शाः॥३२॥सदेद्युःशुभायुनामगोत्राणिपुण्यां॥३३॥अतोमत्त
 पायां॥३४॥इतितत्त्वार्थधिगमेमोक्षशास्त्रेषुमोक्षायः
 ॥३५॥आश्रवनिरोधःसंवरः॥३६॥सगुणिसमितिधर्मनुप्रेक्षापरीषह
 जयचारित्र्यै॥३७॥तपसानिर्जराच॥३८॥सम्पयोगतिग्रहोभुक्तिं
 ध॥इर्यानाषेषणादाननिक्षेपोत्सर्गःसमितयः॥३९॥उत्तमक्षम
 माईवाज्जिवसत्पशौचसंवरनिर्जरालोकवोधिदुर्द्वेजधर्मस
 र्व्यातत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षा॥४०॥मार्गामवतनिर्जरार्थपरि
 षोटमाःपरीषाहाः॥४१॥ह्युत्पियासात्रीतोष्ट्रंदंशमसकनाम्
 अरतिस्त्रीचर्यानिषद्याश्याक्रोशवधयात्रालानरोगवृ
 णस्पत्रीमलसत्कारपुरस्काराश्रजाज्ञानादर्शनानि॥४२॥सू
 क्ष्मसांपरायणद्वयस्थवीतरायोश्चतुर्दश॥४३॥एकादशजिने
 १४॥वाहरसांपरायसर्वे॥१५॥ज्ञानावरणोश्रजाज्ञाने॥१६॥दर्श
 नमोहांतरायरिदर्शनालाभौ॥१७॥चारित्र्यमोहेनाप्यारतिश्च
 निषद्याक्रोशयात्रासत्कारपुरस्काराः॥१८॥वेदनीशेषाः
 १९॥एकादयोत्राज्यानियुगपदेकस्मिन्नेकोविंशति॥२०॥सा
 मायिकचेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपरायण

त्रयमश्रुतिप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलिङ्गोपपादस्थानविकल्पतः साध्याः

आत्ममतिचारित्रं ॥ १८ ॥ अनसनावमोदर्येष्टिपरिसंस्मार
 सपरित्यागविविक्तशवासनकायकेत्रावाह्यंतपः ॥ १९ ॥
 शयश्चित्तविनयवैषाहस्पस्वाध्यायशुत्सर्गध्यानासुखं ॥ २० ॥
 नचचतुर्दशपंचोदितेदायथाक्रमंजाग्भानात् ॥ २१ ॥ आलो
 चनाप्रतिक्रमणतडुन्नयविवेकशुत्सर्गितपश्छेदपरिहारे
 स्थापनाः ॥ २२ ॥ ज्ञानदर्शनचरित्रोपचाराः ॥ २३ ॥ आचार्योपा
 ध्यायतपस्विस्वैह्यालानागाणकुलसंघसाधमनोज्ञानां ॥ २
 ४ ॥ वाचनाप्रवृत्तानुप्रेक्षाभ्यायधर्मोपदेशाः ॥ २५ ॥ वाह्यान
 तरोपधोः ॥ २६ ॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचित्तनियोधोधांन
 मांतर्मुहूर्त्तात् ॥ २७ ॥ आर्त्तरोद्धर्म्मशुक्लानिः ॥ २८ ॥ परेमोह
 हेतुः ॥ २९ ॥ आर्त्तममनोज्ञस्यसंप्रयोगे तद्विप्रयोगायस्मृति स
 मन्वाहाराः ॥ ३० ॥ विपरीतमनोज्ञस्य ॥ ३१ ॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥
 निदानंच ॥ ३३ ॥ तद्विरतदेशविरतप्रमतसंयतानां ॥ ३४ ॥ हे
 सानृतस्तेयविषयसंक्षणे न्योरौद्धमविरतिदेशविरतयोः ॥ ३५ ॥
 आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयायधर्म्माः ॥ ३६ ॥ शुक्लेश्चैष
 र्वेविदः ॥ ३७ ॥ परेकेवलिनः ॥ ३८ ॥ एतत्कैकत्ववितर्कविचार
 सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिमुरतक्रियानिबृत्तीनी ॥ ३९ ॥ एकयोग
 काययोगयोगानां ॥ ४० ॥ एकाश्रये सर्वैर्त्तर्कविचारेषु ॥ ४१ ॥ अर्वा
 चार्यं द्वितीयं वितर्कश्रुतं ॥ ४२ ॥ विचारोर्थमंजनयोगसंक्र
 तिः ॥ ४३ ॥ सम्प्राहृष्टिश्चावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहहा
 पकोपशांतमोहहापकहीणमोहजिनाः क्रमसोसंख्येयुण
 तिर्जरा ॥ ४४ ॥ पुलाकवकुसैकुसीलनिर्ग्रयस्तातकानिर्ग्रय
 थुः ॥ इतितत्त्वार्थाधिगमेमोहशास्त्रे नवमोध्यायः ॥ १ ॥ मोह
 यादज्ञानदर्शनावरणानंतरायक्षयाच्चकेवलं ॥ २ ॥ वंधहेतुना वने
 र्जराभ्यांकुत्सकर्मविप्रमोहोमोहः ॥ ३ ॥ उपशमिकादिन
 वतानांच ॥ ४ ॥ अन्यत्रकेवलसम्पत्कज्ञानदर्शनमिद्वेले
 मः ॥ ५ ॥ तदंतरमूर्ध्निगच्छत्यालोकांतात्पूर्वप्रयोगादसंगत्वा
 दंधंछेदातथागतिपरिणामच्च ॥ ६ ॥ आविष्कृतलालचक्रव
 प्रपगतलेपालाववदेरंडबीजवदग्निशिरवावच्च ॥ ७ ॥ धर्म्मोस्तिका

मात्रावातः ॥ इत्रकालगतिलिगतीर्थचारित्रप्रसेकवृष्टवोधितत्रानावगदहातरप्रमाः ॥ ५ ॥

॥॥ अथ नवग्रह पूजन लिखिते ॥ श्लोक ॥ प्रणमाद्यंत
 तीर्थसधर्मतीर्थप्रवर्तकानव्यविद्योपशंस्यर्थग्रहाचार
 एतेमया ॥ शमार्तंडेडकुञ्जः सोम्यः स्वरि सुक्रकतांतक
 : रज्जुकेतसंयुक्त ॥ ग्रहगोतिकरातवः ॥ दोहा ॥ आदे
 अंतजिनवरतमं ॥ धर्मप्रकाशतहायनव्यविद्युपशं
 तिकौ ॥ ग्रहपूजाचितधार ॥ कालदोषपरभावसो ॥ वे
 कल्पच्छेतां हि ॥ जिनपूजामें ग्रहनकी ॥ पूजामिथ्यातो
 हि ॥ धाईसहीजंबूदीपमें ॥ सधिरविमिथुनप्रमांन ॥ ग्रहन
 च्चत्रतारासहित ॥ जोतिकचक्रप्रमांन ॥ पातितहीकेअनु
 सारसैं ॥ कर्मचक्रकीचाल ॥ सुषडषजानैं जीवकौ ॥ जिन
 वचनेत्रविशाल ॥ हीप्याताप्रह्वव्याकरणमें ॥ प्रह्वअंगहैं
 आता ॥ नचवाऊंमुखजतितजौ ॥ सुनंतकीयोमुखपाव
 ण ॥ अत्रधिधारमुनिराजजो कहैं पूर्वकृतकर्मजुतही
 वचअनुसारसैं ॥ हरिहृदयकाभमीपी ॥ सोरवा ॥ पूज्यौप
 द्यजितिंद ॥ गोचरलगतविषेयदा ॥ सूर्यकरैंडषडंड ॥ सु
 खहोवेंसवजीवकौ ॥ एअडिह्ना ॥ पंचकल्पानकसहि
 तगपांनपंचमल्हसैं ॥ समौसरणसुखसाधिमुक्तिमांही
 वसैं ॥ आकातनकरितिष्टेसंनिधीकीजिये ॥ सूर्यग्रहै
 कैस्थांतिजगतसुखलीजिये ॥ शोर्जेज्यौश्रीसूर्यमांलि
 क्काल्मनिग्रहगोतिनिमतये ॥ अतरावतरावतरसं
 वौषट्ठ ॥ अत्रतिष्टष्टः ठःठः संनिथापनं ॥ अत्रमम
 संतिहितोभवन्नववषट्ठसंनिधायपनं ॥ छंदत्रिभंगीने
 सोनेकीरुगारीसवसुखकारीदीरोदधिजलसरिल
 जे ॥ नवतापमिटाशीत्रवातसाशीधराजिनचरनन
 दीजे ॥ पद्मप्रभुस्वामीसिवमगगामीनविकमोरसूने
 गूंजतहैं ॥ दिनकरडषजाशी ॥ पापनसांशीसवसुषदर्श
 पूजतहैं ॥ जेज्यौसूर्यारिष्टनिवारकाययदमप्रभूजिनै
 प्राय ॥ जल ॥ शमलयागिरचंदनदाहतिकंदनजिनपद

नवग्रह
११७

वंदनसुषदाशी॥कुंकुमजुतलीजेचरननकीजेतापहरी
जेडषदाशी॥पद्मप्रणेदिनकरणे॥१॥ॐ॥वेदनाथ॥तंडल
गुनमंडितसोरजिअषंडितपूजितपंडितहितकारी॥
अक्षयपदपावेअक्षितचदावेगावेगुनसिवसुखकार
पद्मप्रनुस्वामीसिवसुखगामीनविकमोरसुंतिहुंजत
हैं॥दिनकरडषजांशी॥पापनसांशीसवसुषदाशीपूजतहैं
ॐ॥सू०॥अक्षतं॥शुभककुंदमगावोकमलचदांके
वकुलवेलिईगचित्तहारी॥मंदारलेआवंमदतनसांजे
सिवसुषपांजेहितकारी॥पद्म०दिनकरणे॥१॥ॐ॥पुष्प
ध॥गोघृतलेधरियेवाजेकरियेजरियेहाटकमयधारी
वजनवज्जलीजेपूजाकीजेदोषपुष्टादिकअघहारी
पद्मप्रनुस्वामीसिवमगगामीनविकमोरसुंतिहुंज
तहैं॥दिनकरडखजांशीपापनसांशीसवसुषदाशीपू
जतहैं॥ॐ॥सूर्य०॥नैवेद्यं॥५॥मणिदीपकलीजेधीव
नरिजेकीजेघनसारकीवाती॥जगजोतिजगाममल
गमगजगममोहतिमरकौहैंघातीपद्म०दिन०॥ॐ॥
ॐ॥सूर्य०॥दीपं॥६॥कालागुरुधूपंअधिकअनूप्ये
निर्मलरूपंघनसारं॥वेवोप्रक्षत्रागेंपातिकनारेंजा
गेंधुनडखसवहारं॥पद्मप्रनुस्वामीसिवमगगामी
नविकमोरसुंतिहुंजतहैं॥दिनकरडषजांशियापन
सांशीसवसुषदाशीपूजतहैं॥ॐ॥सू०॥धूपं॥७॥श्री॥
फललेआवोसेवचदाकेअंवअमृतफलआदिवरं
वाछितफलपांजेनिगुनगांजेडषदांशीसवकर्महरं
पद्मप्रणे॥दिन०॥ॐ॥सू०॥फलां॥१॥जलचंदनत्या
यासुमनसुहायातंडलमुक्तासमकहिये॥वरुदीपकल
जेधूपषेवीजेफललेवसुंक्रमनैंदहिये॥पद्मप्रनु०दि
नकरणे॥ॐ॥सू०॥अर्घ्यं॥१॥अडिलासलिलगंधलेरू
लसुगंधितलीजियेतंडललेवरुदीपकधूपषेवीजिये॥

फलले अर्घवनो यपदमप्रनु पूजिये। कमलमोहको।
 दोषतुरतहीधुजिये। पूर्णाधीशे। अथजयमालालिखते।
 जेहें सुषकारीसवउषहारीमारीरोगादिकहरने। इंद्रदे
 कश्रावे। प्रचुगुतगावेंमंदिरगिरमंजनकरने। न्यत्या।
 दिकसाजेंडं दनीवाजेंतीनलोकसेवतचरणे॥ पदम
 प्रनु पूजतपातिकधूजतनवनवनविमांगतसरणे
 ११॥ पछडीछं॥ जयपदमप्रनु पूजाकराय॥ सूरजा
 ग्रहउषनतुरतजाय। नोजेजनसमोसरणविषातणे
 घंटाकालरिसौनेविज्ञान। १॥ सतइंजनमतजिसचर।
 नश्राय। दससप्तगणधरसौंभाघराय। वांतीघनयो
 रघटाजुघोर। घनसवदसुनततनविनचहंमौर। १॥ ना
 मंडलसौंजालषतनूर। इंद्रादिककोटिकलजतसूर
 तहांबृहन्नसोकमहानुतंगसवजीवनसोकहरेन्न
 नंग। १॥ सुमनादिकसुरवर्षाकराय। वेदोगचमरचोस
 विदराय। सिंघासनतीनत्रिलोकईस। त्रयछत्रफिरे
 तगजडितसीस। १॥ मणिमरीचवतिमुकुरंदसार। त्र
 यधुलिसालसुंदरप्रपार। कलाणकपांचूंमुषनिधे
 न। पंचमगतिदाताहैसुंजान। १॥ सादेवारहकोडीजुस
 रावाजाविनषेदवजैअपार। धरनेंइनरेंइसुरेइईसत्र।
 यलोकनमतकरघारसीस। १॥ सुनमुकरमावरनस
 सक्ताशेदेनेहाथजोरकरवारवार। जाकेपदनमत।
 आनंदहोत। इतिअगेंदिनकरछिपतजोति। १॥ मन।
 शुद्धसमुद्धदयविचार। सुषदातासवतनकौंअपार
 मनवचतनचितपूजानिहार। कजेंसुषदायकजगता
 सारा। १॥ घता॥ सवजनहितकारीसुषन्नतिमारीमारी
 रोगादिकहरणे। पापादिकदोरेंग्रहतिवारेंनकिजीवसु
 वसुषकरणे। ईसासीवाह। अथचंजरिनिवारकचं।
 १॥ प्रसुपूजालिख्यते॥ सोरवानिसपतिपीडवांतिगोच

रलगनविषेजवैवसुंविधिवउरसुंजांन॥चंद्रप्रभूजाक
 रो॥श॥अडिह्य॥चंद्रपरीकेवीचिचंद्रप्रभूअवतरे॥ललितसो
 हेंचंद्रसवतकोमनहरे॥नविजीवसुषकारदर्विसेधरस
 हों॥सोमदोषकेहेतथापनांकरतहों॥जैश्रीचंद्रारिष्ट
 निवारणाय॥अत्रावतरावतरणश॥कंचनफारीजटिता
 जडाउंहीरोदकनरहितहिचदानो॥जगतगुरुहों॥जै
 नाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभूजोंमनलाया॥सोमदोष
 तातैमिठजाया॥जगतगुरु॥जैश्रीचंद्रारिष्टनिव
 रकचंद्रप्रभूजिनैदया॥जलं॥मलयगिरकेसरघनस
 रचरचितजिनभवतापतिवार॥जगतगुरुहों॥जैजैना
 थ॥चंद्रनं॥कमलकुंदकेतकीअनंग॥कल्पतरु
 जसवहरेअनंग॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथ॥पुष्प॥श
 खंडरहितसअक्षतससिरुपा॥जुंजचदायहोयशिवा
 रूप॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभू
 पूजोंमनलाया॥सोमदोषतातैमिठजाया॥जगतगुरु
 हों॥ध॥अक्षतंघेवरवावरमोदकलेऊं॥दोषक्षयहर
 यालनरेऊं॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥ध
 नैवेद्यं॥मणिमयदीपकचतुनरेऊं॥वातीवरतसु
 तिमरहरेऊं॥जगतगुरुहों॥दीपं॥कालागुरुकी
 कणीषीषाय॥वसुंविधिकर्मजुंवरतनशाय॥जगत
 गुरुहों॥धूपं॥श्रीफलअंवसदाफलसेउंचोचमो
 चअंमृतफललेऊं॥जगतगुरुहों॥पीफले॥जलगंध
 पुष्पसालिनैवेद्यं॥दीपधूपफलअर्घअनिंद्या॥जग
 तगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभूजोंमन
 लाया॥सोमदोषतातैमिठजाया॥जगतगुरुहों॥अ
 र्घ॥ध॥जलचंद्रनवकफूलजुतेडललीजियो॥डग्ध
 सर्करासहितसुंबंजनकीजियो॥दीपधूपफलअर्घ
 वमायधरीजियो॥जडडषपूजों॥सोमजिनैदहरीजियो

शृणुयार्थे ॥ अथ जयमाला ॥ चंद्रप्रभुचरनं सवसुषुभरनं क
 रनं आत्महितत्रतुलं ॥ इषं इजहरने नवजलतरनं मन
 हं मरंसुत्तकरविपुलं ॥ शंभुमनःकृत्यमिथ्या ततम
 नोशक ॥ केवलज्ञानसूर्यप्रतिभासकं ॥ चंद्रप्रभुचरनं
 हरनसवसुषुकरं ॥ शांकिनीभूतग्रहसोमडषसवहरं ॥ शं
 वर्धनं चंद्रमांधर्मजलनिधि महाजगतसुषुकारसिखमा
 र्गप्रभुनग्रह्या ॥ चंद्रप्रभुचरनं मनहरनसवणोत्पापान्तो
 श्रीरतिधीरवरवीरहो ॥ तीनहं लोकसवजगतकेनी
 रहो ॥ चंद्रप्रभु ॥ ध ॥ विकटकंदर्पकोंदर्पछितमेंहरक
 र्मवसुं पापसवत्रापहीतैकल्या ॥ चंद्रप्रभु ॥ ध ॥ सोमपुर
 नगरमेंजतमप्रभुतैलह्या ॥ क्रोधञ्जललोचमदमानमा
 यादह ॥ चंद्रप्रभुचरनं मनहरनसवसुषुकरं ॥ शांकिनी
 भूतग्रहसोमडषसवहरं ॥ पादेहजितराजकीसर्वशोना
 धरो ॥ स्फटकमणिक्रांतितिहिदेविलज्याकरे ॥ चंद्र ॥ अ
 तत्रौराकहजारलच्छतमहादाहिनै ॥ चरनकोनिसायते
 गहरह्या ॥ चंद्रप्रभु ॥ कहतमनसुषुजलधिचंद्रप्रभु
 जिये ॥ सोमडषतासिकैजगतनयधुजिये ॥ चंद्रप्रभु ॥ देव
 शा ॥ पापतापकै ॥ हरनकोंधर्मभितरसपूर ॥ चंद्रप्रभुजि
 नप्रजिये ॥ होयजत्रातंदर्रा ॥ ईति चंद्रप्रभु पूजा ॥ अ
 यन्नोमारिष्टनिवारकवासुं पूज्यपूजा ॥ दोहा ॥ वासपू
 ज्यपूजतचरनं ॥ नृसुतदोषफनाया ॥ तातैजविपूजाक
 रो ॥ मनमेंअतिहरषाय ॥ शं ॥ अडिछत्रवासवजाकेजतम
 समयहरषाईये ॥ आयोगजलैसाजिमहासुषुपाईये
 खेमंदिरगिरजायसुहृद्वरणकराईकै ॥ सोप्योमातागे
 हनुंतां वधरायकै ॥ नैकीनोमारिष्टनिवारकवासुं
 जिजितैजय ॥ अत्रावतराणे अत्रतिष्ठ ॥ अत्रमम ॥ अ
 स्थापते गीताछंद ॥ कतककारीअधिकगुतिमरतन
 अदितसुंलीजियो ॥ परमइहकोजलसंगंधितधारचरन

नवग्र०
११७

नदीजिये। घृतनयऽषहरितांसेहरषहिरदैंधारिकें। वास
पूजिजितेंद्रपूजोंसकलआरतदारिकें। जैकीनोमारिष्टति
वारकवासपूज्जितेंद्राय। जलंशश्रीखंडमलयजुमहा
सीतलसुरनिचंद्रकघसिधरो। जितचरनचरचौंनविक
हितसौंपापतापसवैंहरो। नूतनयणेवासणेजैकीचंदन
श। अवखंडषडितसुरनिमंडितथालनरिकरमेंगहो
अद्वितपुंजदिवायजितपदअषयपदसहजैलहो
नूतनयणे। वासणे। अहोतंणेकमलकुंदगुलावव
पापारजातिकअतिघनेंपुष्पपूजितचरनप्रभुकेकुसु
मसरतवहीहनेंनूतनयहृषहरितासेंहरषहिरदैंधा
रिहकें। वासुंपूज्जितेंद्रपूजोंसकलआरितदारिकेंघ
पुष्पं। गोसर्पेसद्यमगायनविजनडग्धामिश्रितशर्करा
चरुचारुलेकरिजजोंजितपदक्षयावेदनसवहरान
नूतनयणे। प। नैवेद्यं। मणिजडितचंदनदीपसुंदरसद्य
घृततामेंनरोंजद्योतकरिजितचरनआगेंहृदयमिष्या
तमहरो। नूतनयणे। दीदीपं। कालाअगरघृतसारमिश्र
तदेवदेवसरुफूलसुंहावनेंवेवतधूममेंस्वर्गमोदित
करतवसुंकर्मनिहते। नूतनयणे। धूपं। ७। श्रीफलअ
नाख्युंआंवनीबुंचोचमोचसदाफलं। जितचरनचर
चतफलनसेतीमोक्षफलदातारलं। नूतनयनणे। फी
फलं। जलगंधअक्षतसंफूलव्यंजनदीपधूपफलो
तमं। जितराजअर्घचदायनविजनलेजंसुक्तिसुररो
तमंनूतनयनणे। अर्घं। अडिह्वा। सुरजितजलश्रीखंड
कुसुमतंडलनले। व्यंजनदीपकधूपसदाफलसोरनिवा
सपूज्जितचरनअरघ्युमदीजियो। मंगलग्रहऽषदारे
सुंमंगललीजिये। १०। शृणुधिं। अथजयमानालिषते।
मंगलग्रहहरतंमंगलकरतंसुषकरसिवयनीवरनं
आत्महितकरनंनवजलतिरनंवासपूज्जसेवतचरनं१

इंद्रनरेंद्रघणेंद्रुदेवं आपकरैजितवरकीसेवं वासपूज्य
 जितपूजकरो मंगलदोषसहजपरिहरो २ विजयाजननीम
 नहरषायेजनकजुवसुंपूज्यहिसुषदाये वासपूज्य मंगल
 शुभललितकरिललितकाय चंपापुरजनमेजिनराय
 वासपूज्य मंगल महिषांश्रंकचरनमेंपस्थो देवतसव
 कोसंसयहरो वासपूज्य मंगल ५ फागुनअसितजु
 चोदसिजाताकैवैराग्यसुंधरियोंधानां वास मंगल
 घातिघातियाकेवलपाया जेतधर्मजगमेंप्रगटाय वा
 सपूज्यजितपूजाकरो मंगलदोषसवेपरिहरो ६ षट्
 सतएकमुनिसरथयो गिरमंदारसिवालेगयो वास
 मंगल ६ मंगलहेतजजौजितराय मंगलग्रहक्षनमि
 टजाय वास मंगल ७ पूजनघनेकीजेदोषहरीजे
 छीजैपातिकजनमजरा सुषकेअधिकारीग्रहउषहा
 रीनारीभवदधिनीरतरा १० ईत्यात्रीवादि॥ अथबुधग्र
 हारिष्टतिवारकअष्टजितपूजालिषते॥ दोहा॥ बुधग्रह
 पीडाकरैपूजौआवजिनेस आवीगुनजितमेंलहसैताव
 तसीससुरेस १ सुषय विमलनाथजिनतमौंजुअनेत
 नाथजिन धर्मनाथजिनवंदिवंदिहोसांतिसांतिकरि
 कुंथुअर्हजिनसुमरिसुमरितमिवर्षमांतजिन इतिअं
 वो जितजजौंजौसुषकरनचरनतित बुधमहाग्रह
 शुभताधरतकरतजोरुजव आकातकरतिष्टिसंनि
 धीकरिऊंतवे २ उंझैबुधग्रहारिष्टतिवारकअष्टजि
 नाथ अतं अत्रतिं अत्रमं स्यापनं गीताछंदं
 हिमकारीजडिसमतिजलनरोदीरोदकतनां धरदे
 जिनचरनआगैंपायतापहुंतासनां विमलनाथअने
 तनाथसुंधर्मनाथजेसातये उंथुअर्हजुनमियजिन
 महावीरआवजितंजये उंझैसोम्यग्रहारिष्टतिवारक
 अष्टजिनाये जलं १ सुरभिसुरभितलेऊंचंदनघसौंऊं

कमसंगही जिनघरनचरचितमिटेग्रीषममोहतापनुनेग
 हीविमलने कुंथुनेचंदने। अक्षतअखंडितनुनयकोधिसमो
 नयुअनुअतिघने। लेकनकथालभरायनविजव पूंजहे
 वसुंहावने। विमलनाथअनंततायसुंधर्मनाथनुसंते
 ये॥ कुंथुअरहनुनमियेजिनमहावीरअष्टजिनजयेउ
 ङ्गी॥ अक्षतं। मंदारमल्लीमालतीमचकूंदमरधामोते
 या॥ कमलकुंदकसुंनकरतांकांमवांएजुंघातिया विम
 लने। कुंथुनेउंङ्गी। पुष्पं। ध॥ श्रुतसद्यमिश्रतसकरामृतक
 रकुंजतनावसं। एहसौम्यसांतिजुहोतजिनकेचरनचर
 चोंनावसो। विमल कुंथुनेउंङ्गीनेवेद्यं। ५ मनिजडितही
 टकदीपसंदरवर्तिकाघनसारहै। सर्पिसहितसिषाप्रका
 सितआरतीतमहारहै। विमल कुंथुनेउंङ्गी। दीपं। लोवांत
 अगरकपूरचंदनलोगचूरनलीजिये। अगनिधंमविव
 जितजिनचरनआगेवेइये। विमल कुंथुनेउंङ्गी। श्रुपं। ७। क
 लपपादपजनितश्रीफलफलसमूहवदाइये। नतिलाव
 वदायकरिकैसरसश्रीफलपाइये। विमल कुंथुनेउंङ्गी।
 फलं। ८। सुनसलिलचंदनअक्षतसुंमनजुंछ्याहरचव
 कलीजिये। मणिदीपधूपफलसहितवसुंशिविअर्थइने
 विधिदीजिये। विमलने कुंथुनेउंङ्गी। अर्थ। ९। दोहा॥ जल
 चंदनआदिकदर्वपूजोवसुंजिनराय॥ सौम्यतमूंक्षनमे
 टे पूंअर्थवदाय १०। पूर्णांर्थ। छप्यय। विमलनाथजि
 तनमोंतमोंतनुअनंततायजिन। धर्मनाथकूंतितमोंत
 मोंसोतिकरताजिन। कुंथुनाथपदवंदिवंदिहो। अरह
 जिन। नमिप्रणमिजिनपायपायतमिवर्धमांतनमिए
 आतौंजिनराजकुंहांथजोरिसिरधरतहोसौम्यनयउव
 हरनकोमंगलअरतिकरतहो। शंखंदपदडी। जयविम
 लविमलआत्मप्रकास। षट्क्षयचराचरलोकनास। जय
 जयअनंततयुंतेहैअनंता। सुरनरजसगावैलहैअनंततर

जयधर्मधुराधरधर्मनाथजगजीवनधारनमुक्तिसायण
जयसांतिनाथजगशांतिकरना॥नविजीवनकेडखडरिता
हरता॥जयकुंभुंजिनकुंभुंवादिजीव॥प्रतिपालनकरिसु
षदेअतीव॥जयअरहजितेस्वरअष्टकमेंरिपुनासिली
योसमरमतिसमीध॥जयनमितमियेसुरनरषगोसईजादि
चंड्युतिकरतसेसा॥जयवर्द्धमानजयवर्द्धमान नुपदे५सदे
यलहिमुक्तिघांता॥५॥जयवसुंजिनपूजितमनलगायस
सिसुनअरिष्टसवहरिजाय॥मनवचतनकरिसुगजोर
होया॥घता एआवजितेस्वरनमतसुरेसरनव्यजीवमं
गलकरतं॥मनवंचितपूरैपोतिकघूरै॥जनममरनसा
गरतिरतं॥७॥आसीरवादा॥अथगुरुअरिष्टतिवारकअ
ष्टजितपूजनादौह॥मनवचकायासुद्धकरि॥पूजेआव
जितेस॥गुरुअरिष्टसवतासके॥नुपजेसोथअसेस॥छ
प्यय रिषननाथजितराजअजितसंचवस्वामी॥अनि
तंदनजितसुमतिसुपारसशीतलतामी॥प्रीश्रेयोसजे
तदेवसेवसवकरतसुरासुर॥मनवंचितदातारसारजे
ततीतलौकगुरुं॥संनवषटावःवःतिष्टसंलिधीऊंजी
ये॥गुरुअरिष्टकेतांसकौंआवजितेस्वरपूजिये॥ऊं
सुरगुरुअरिष्टतिवारकअष्टजिताय॥अत्रणोअत्रति
अत्रमम॥स्थापते॥त्रिनेगीछंद॥जलजललीजे
मनसुचिकीजेहाटकमयत्रंगारनरं॥जितधरदिवाइ
त्रिषांतसाडीभवजलतिधितेपारपरं रिषनअजितसं
नवअनितंदनसुमतिसुपारसनाथवरं सीतलनाथ
श्रेयोसजितेस्वरपूजतसुरगुरदोषवरं॥ऊंजीसुरगुरु
अरिष्टतिवारकअष्टजिताय॥जलं॥श॥मलयगिरा
चंदनदाहनिकंदनकुंभुंमसुनलेघनसारं॥चर्वोजि
तकरनेनवतपहरतंमनवंचितसवसौष्यकरं॥रिष
नोसीतल॥ऊंजी॥चंदनं॥सरलसालिककिसनजीर

०५० कवांसमतीयजुमतहरेणुनयकोटिकश्रुश्रुषंडितश्रु
 २२१ षयगुनसिवपदधरंरिषभणेसीतलणेनैवेद्ये। श्रुतंश्रुचंप
 कचवेलीकरकेतकीमालतीमरवौवौलसरं कमलकुं
 मुदगलां वरुं दजुसुनमुहीसेव तीयपरं रिषणे। शीतानै
 पुष्पं। ध। घेवरहि सुंवावरपुपपुरियमोदक फेनीपीयवरे
 सुरहीघृतययसरकरापुतविवधिवरुसुतक्षयकरे
 रिषणे। शीतनेनैवेद्ये। पामनिकेजडितसुवनयाल
 लेकदलीसुतघृतमांहितरं। दीपकउद्योतंनमस्य।
 ह्योतनिजगुंनत्वभिनाभारनरंश्रिषणे। शीतनेनैवेद्ये।
 यं। ह्येदंनश्रुगरलोगसुतगरंविवधिविलेसुरनि
 तरं। येवतजितश्रुगैपातिकनागैध्वामिसिवसुं कर्म
 जरे। कृषणेनैवेद्ये। ७। वादांसुपारीश्रीफलनारी। चोव
 मोचकमरुषसुवरं। लेकेफलनानाजिनपदप्रजितसे
 वसुषयानां देतत्वरो। कृणेनैवेद्ये। फले। फेजलचंदनफल
 तंडलउलंचरुदीपकलेफपफले। वसुंविधिसैश्रर
 चैवसुंविधिविचैकीजेश्रविचलमुक्तिघरं। कृषणे
 शीतनेनैवेद्ये। १०। श्रुडिह्यमनवचकायाशुद्धपवि
 तरंजिये। लेकरिश्रावौदर्विश्रावजिनप्रजिये। मंग
 लीकवजं वस्तु प्रणसवलीजिये। पूरणश्ररघचलाय
 श्रारतीकीजिये। १२। पूरणे। छंद। सुरुगुरुडयनांस।
 नकल्पश्रासववसुंजिनवसुंविधिपुंजकरं। नवनक
 प्रघहरणंसवसुषकरणंनमजीवशिवधामधरं। १५। ज
 यषनदेवव्रषनांकसार। जयधर्मधुरंधरधीरधारणे
 जयश्रजितकर्मश्ररिप्रकलजोनि। जयजीतिलीयै॥
 वसुंगुंननिधसंत। १७। जयसंनवसंनवदंनछेद। जयसु
 क्तिरमालहियैश्रषेद। जयजगजनसुषकरताश्रप
 राश्र। जयसुमतिदेवदेवाधिदेवजयसुंभमतिजुतकरहे
 सेव। जयजयहिसंपारसस्वपरमानं। जयसौलोकश्र

लोकप्रकाशनां॥ जयशीतलजिनजगसांतिकर्तजा
यजतमजरामसुदहनहर्ता॥ जयश्रेयकरतश्रेयांसनाथ
जयश्रेयसुंपेयदेसुक्तिसया॥ जयजयगुनगिरमाजगपु
धंत॥ जयसुरतरसेसकरेवषांत॥ जयमनसुषसागरन
मतसीस॥ जयसुरगुरुहृषनमेदिईसा॥ होघता॥ आवजिते
स्वरपूजता॥ आवकर्मडमजाय॥ आवसिधिनवतिधिल
हा॥ सुरगुरुहोयसहाय॥ आसीरवा॥ ७॥ अथसुक्राश्रे
एतिवारकपुष्पदंतजिनपूजते दोहा॥ पुष्पदंतजिनरा
जकौनविपूजोमतलाय॥ मनवचकायासुधसो कवि॥
अरिष्टमिडिजाय॥ अडिहरगोचरमैंग्रहसुक्रआयज
वडमकरे॥ पुष्पदंतजिननाममंत्रमनमैधरे॥ आकातन
करतिष्टसंनिधीरुजिये॥ शूर्जेस्त्रीसुक्रग्रहायअरिष्ट
निवारकपुष्पदंतजिनायअत्राणे॥ सोरवा॥ नीरमलस
तसुनाय॥ गंगाजलकारीनरो॥ कविअरिष्टमोडिजायपु
ष्पदंतपूजाकरो॥ शूर्जेस्त्रीसुक्रग्रहायअरिष्टनिवारकपुष्प
दंतजिनैश्याय॥ जले॥ कुंकुममलयघसाया॥ कनककटो
रीमैधरो॥ कवि०२॥ चंद्रनं॥ तंडुलअक्षतलाय॥ नवस
हिततुसपरिहरौ॥ कवि३॥ अक्षतं॥ कमलबंवेलीजा
य॥ जुदीकुंदसुकेवडौकवि०४॥ पुष्पं॥ अंजनविविधि
वणाय॥ मधुरखादसुतआचरोकविअ०५॥ तैवेद्यं॥
कंचनदीपकराय॥ कदलीसुतवातीकरो॥ कविअ०
पुष्पदंतपूजाकरो॥ हीदीपं॥ अगारकपुरमिडिजाय०
लौंगधूपवजं विसरो॥ कवि॥ दीफलं॥ नीरादिकलेआ
य॥ अर्घदेतपातिकटैशे॥ कवि०६॥ अर्घ्यं॥ अडिहर॥ जल
चंद्रनं॥ अक्षतं॥ औरफलघने॥ चरुदीपकवजं धूप
फलअतिसौहने॥ गीतनृत्ययुतगायअनर्घ्यपूरनक
रो॥ पुष्पदंतजिनपूजिसुक्रडमनहरो॥ शूर्णं॥ अथ
जयमालविष्णुसे॥ मनवचतनधावोपापनसावो॥ स

वसुषपावौ अघहरणं॥ यह उषन जाई हरष च दाय पुष्प
 दंत पूजत चरणं॥ १॥ जय पुष्प दंत जिन राज देव॥ सुर अ सुर
 सकल मिलि करहि सेवा॥ जय पागुन वदिनो मी वषा न
 सुर पति सुरगर्भ कल्पो नवाना॥ २॥ जय मार्ग सी र्ष स सिनु द
 य पक्ष॥ नो मिति थि जग में नये प्र तक्ष जय जन्म म हो छ व
 इन्द्र आय॥ सुर गिर लेत वन कीयो सुं नये श॥ जय वज्र हृ प
 न नारा च देह॥ दस सत व सु लक्षण सु गु न गे ह॥ जय रा
 जनी त कर राज की म॥ म ग सिर सित परि वा सु त प ली
 न॥ ३॥ जय घात घातिया कर्म धी र॥ निज आ त म शक्ति
 प्र का स वी र॥ जय का तिक सु दि इ तिया महं त॥ ल हि के
 व ल ज्ञां न उ द्यो त मां त॥ ४॥ जय न व्य जी व नु प दे स दे ऊं
 म ग जा त धि नु तार ए सु ज स ले शी॥ जय सा दै सु दि श्रो वे
 प्र सिद्ध॥ ह नि श्रे ष कर्म प्र नु ग ये सिद्ध॥ ५॥ जय जय जग दी
 श्वर न रं दे व न गु त न य घे ष हर कर त सेवा॥ जय मन वं
 छित तु म कर त ई स य त सु ध ज ल धि तु म न म त सी स
 ई॥ ६॥ घ ता॥ स व गु न अ धि कारी॥ हृ ष न हारी नारी रोगा दि
 क हर नं न गु सु त उ ष जा शी पा प मि टा ई पु ष्य दंत पू ज त
 च र नं॥ ७॥ ई त्या शी वा द॥ अ थ शानि अ रि ष नि वार क मु
 नि सु व त ना य पू जा॥ दो हा ज न म ल ग न गो च र स मे रं दे
 सु त पी ड दे य॥ त व मुं नि सु व त पू जि ये॥ पा ति क नां स क
 रे या॥ ८॥ अ डि ह्य॥ मुं नि सु व त जि न रा ज का ज नि ज क
 र त कं॥ सूर्य पु त्र गृ ह क र अ रि ष मुं ह र न कौं आ का न
 न क र ति षं ति श्र वः वः करौं॥ स न्नि धि जि न रा ज न व्य
 जा करौं॥ ९॥ उं जै शानि अ रि ष नि वार क मुं नि सु व त
 ना था य॥ अ त रा॥ अ ० अ न म म ० स्या प नं॥ प्र णी गो
 गा दि क ले सी य रो मि र म ल प्रा सु क ती र हो प्रो णी जा
 शी च्छ रि त्र य ध र दे॥ जा सैं क र्म क ले क मि टि जा या॥ हो
 प्रो णी मुं नि सु व त जि न पू जि ये ए जी र चि सु त उ म् मि टि

जाय ॥ हो प्रोणी मुंति सुवृत्त जिने ॐ क्लीं जलने ॥ प्रोणी चंद
 नघसिमलिया गिरी ॥ और कुंकुमतामें कारि हो प्रोणी जितं
 पदधरचौनावसों ॥ जासौ जन्म जरा ज्वर जाय हो प्रोणी मुं
 ति सुवृत्त रवि सुत उपमिदि जाय हो प्रोणी ॐ क्लीं चंदनं ॥ २
 प्रोणी उज्जल ससिसमली जिये ॥ तंडल को रिसमांत हो
 प्रोणी पांच पूंज दे जावसों ॥ अथ य पद सुषपाय हो प्रोणी
 मुंति सुवृत्त रविने ॐ नमः ॥ अक्षतं ॥ प्रोणी वेलिचमेल २
 के वरो ॥ करुनां कुमदगुलाव हो प्रोणी के तकी कंदल
 ले पूजिये ॥ तव काम अस्ति मिदि जाय हो य प्रोणी मुंते
 सुवृत्त रवि सुतने ॐ क्लीं ॥ पुष्पं ॥ प्रोणी व्यंजन नाना जाते
 के ॥ षट् रस कर संजुत हो प्रोणी ॥ जित पद पूजों भावसों
 तव जाय पुद्यादिकरी गहो प्रोणी मुंति रविने ॐ नमो
 वेद्यं ॥ ५ ॥ प्रोणी रतन जो तितमना सनी ॥ दीपक कंचन
 थारहों प्रोणी जित प्रागें आरती करों ॥ नव आरति त
 म जाय हो प्रोणी मुंति रविने ॐ नदी पं दी ॥ प्रोणी चंदन
 अग्रक परले सब धेवों पावक मोहि हो प्रोणी ॥ अष्ट
 कर मजरि अरकै ॥ जित पूजन सब सुष हो य हो प्रोणी
 मुंति रविने ॐ ॥ धूपं ॥ ७ ॥ प्रोणी अवन्नार पिष्प फल
 मोचवीच विदांम हो प्रोणी फल सैं जित पद पूजिये पा
 वि सिव फल सार हो प्रोणी मुंति रविने ॐ न फलं ॥ ८ ॥ प्रो
 णी तीरादिक वसुं द विले ॥ मन वच काय लगाय हो प्रोणी २
 अष्ट कर मको ता सके ॥ अष्ट महा गुंन पाय हो प्रोणी मुंते
 रविने ॐ अर्घ्यं ॥ ९ ॥ प्रोणी अडिल ॥ जल चंदन लेकूल और
 अक्षत घने ॥ चरु दीपक वज्र धूप महा फल सोहने ॥ पूर्ण
 अरघ वणा य जिताये ऊजिये ॥ मुंति सुवृत्त जित राय नाव
 सों पूजिये ॥ पूर्णार्घ्यं ॥ १० ॥ जयमाल लिषते ॥ दोहा ॥ मुंति
 सुवृत्त सुवृत्त धरन ॥ त्याग करन जगजाल ॥ सनिग्रह पीडा
 हरन को ॥ पदो हर मजयमाला ॥ ११ ॥ छंद पदवी ॥ जय जय मुंते

५०
३
मुहूर्तत्रिजगतराय॥सतईइआपकेनमतपाय॥जयजय
पञ्चावतीगर्भत्राय॥आवणवंदिडतियाहर्षसाया॥जयज
यसुंमित्रग्रहजन्मलीना॥वैसाषक्रणदसमीप्रदीना॥जय
जयदसप्रतिसयलसच्चकायत्रयग्यांनसहितहितमि
तकहांया॥जयजयतनलछिनसैहसुंआवा॥नदीजी॥
वनमेंयुतिकरेपाठा॥जयजयसोद्यर्मसुरेसआय॥जम्
कल्याणककरेसुंनाया॥४॥जयजयतपलेवैसाषमांस
सुंदिदसमीकर्मकलकनांस॥जयजयवैसाषजुअसे
तपत्त॥नौमीकेवललहिजगप्रतत्ता॥५॥जयजयरधि॥
योंतवसमोसनी॥सुरतरषगुमुनिसवचितहर्न॥जयज
यच्छालीसगुनसहितदेव॥सतईइआयतहांकरत॥
सेव॥६॥जयजयफागएवदिदादसीष॥सिवथांनव॥
सिगुनसिछलीय॥जयजयशानिपीडाहरनहेता॥मनसु
षसागरकरसुषतिकेत॥७॥घत्ता॥सुंतिसुंभतस्वामीसव
जगतांमीनविजीववजसुषकरतं॥मनवंछितपूरैपाते
कचूरैविसुतग्रहपीडाहरनं॥८॥आसीवादि॥अथराजं
अरिष्टतिवारकतेमनांथपूजते॥अडिघ्र॥गौचरमेंज
कआयराजंपीडाधरें॥निमनांथजितरायजवेंपूजाक
रें॥आवदरविलेशुद्धनावहियआंतिकें॥स्यांमपुस्या
मनलायभक्तिकोंवांतिकें॥१॥पूजोनेमजितेसनव्यम
नलायकें॥राजंदेयडषरासिमेरवजंआयकें॥आर्क
तनकरितिष्टतिष्टवःवःनुचरेंहीयसंनिधीभक्तिसले
पूजाकरें॥२॥नेंझीराजंअरिष्टतिवारकायेनेमनांथ
जितेंद्रायत्राणे॥गीताचंद॥कनककारीमणिजडित
लीसीतनुदकनरायकें॥प्रभुनेमजिनकेचरनआगेंध
रदेमनलायकें॥जवरजंगौचररांसिमडषदेशीडषसुं
नावसौतवनेमिजितकेंनावसेतीचरणपूजोंचावसों
१॥नेंझीराजंअरिणेल्लं॥श्रीखंडमलयमिलायकें॥

सरकदलीसुततामेंघसौ जिनचरणचरचितनाव
धरिकेंपापतापतवेतसौ॥जवणेचंदने॥अक्षतत्रु
पमसालिसंभवकनकभाजनलेरीकें॥जिनत्रय
पूजचदायनाविजतएकमनचितदेईकें॥जवणे॥३॥
अक्षतं॥कमलकुंदगुलावकुंजाकेतकीकरुनीन
ने॥सुमनलेकेसुमनसेती॥एजितेंजिनत्रयटलेज
वराङ्गगोचररासितेंडषडईडष्टसुभावसौ॥तवकेमज
नके॥नावसेतीचरनपूजोनावसौ॥ध॥पुष्प॥विविधियं
जनरसाजिनतमनहरक्षधाडषतकोहरे॥जरियाल
कंचतनावसेतीनेमजिनत्रागोधरे॥जवणेनिवेद्यं
मणिमयदीपकत्पनरिकेंचंद्रज्योतिसुंजगमगेते
जहातलेप्रभुआरतीकरेमोहतमतवहीजगे॥तिज
हांतलेप्रभुपआरतीकरेमोहतमतवहीजगे॥जव
राङ्गो॥दीपं॥कृष्णाअगरलोवांतलोगत्रोरड्य
सुगंधमें॥तिजचरनत्रागेअग्निधरेधूपधूपसुरने
वमें॥जवराङ्गो॥७॥धूपं॥अंवाविजोरानारियरश्री॥
फलसुपारीसेवकी॥फललेमतोहरसरसमीवेष
जिलेजिनदेवके॥जवराङ्गो॥८॥फलं॥जलगंधअ
क्षतपुष्पसुरनितचरुमतोहरलीजिये॥दीपधूपक
लोघसुंदरअर्घजिनपददीजिये॥जवराङ्गोचररासे
मेंडषदेईडष्टसुभावसौ॥तवनेमजिनकेनावसेती
चरनपूजोनावसौ॥अर्थे॥अडिह्र॥आवदरवलेसार
नेमप्रभुपूजियेराङ्गहोरी॥ग्रहशांतिपापसवधुजिये
मनबंधितफलपायहोयवडनागसौ॥जोपूजेजिन
देववडेअनुरागसौपूर्णार्थे॥अथजयमाला॥श्रीनेम
जिनेस्वरजगपरमेस्वरजीवदयाधुरधारधरोमेंसर
णआयोसीसनवायोसिंहासनसुतदृषहरहरे॥शुजय
जयजिननेमसुंतेमधारकरुणांकरजगजनजलधित

राजैकैकालिकसुदिच्छविप्रधानसिवदेवीनुरत्रवतरेश्रो
 ता॥१॥जैजैश्रावनसुदिच्छविदेव इंद्रादिहृदयविधिकरिये
 सेवाजैजैजडकुलमंडनदिनेसा॥सुरनरषगत्रस्तुतिकरत
 सेसा॥१॥जैजैशुचिसुक्रनुदासहोय॥छतिकौतयकरिनित
 आलजोया॥जैजैनिर्मलतनतिर्विकार नामंडलछवि
 सोनात्रपारा॥जैजैअस्वतिशुदिग्यांतनीता॥तिथप्रथम
 पहस्रजगसुषतिघांता॥जैजैनविजननुषदेशदेशीसुंते
 पंचमिगतिसाधनकरेई॥५॥जैजैछविसावनसुकप
 क्षसवलोकालोककीयोप्रतक्ष॥जैजैवसुंविधिविधे
 सकलनांसा॥लहिषुषअनंतसिवलोकवीसा॥५॥जैजै
 अजरामरपदप्रधान॥क्षेत्रिभुवनपतिलोकाग्रथांत
 जैजैछायासुतपीरहती॥मनसुद्धसमुद्रजुगहियसर्नई
 घता॥नविजनसुषदाई॥सेवसुहार्दमतवचकायागां
 वतहो॥सवहृषनजाईपापनसांईनेमिसहार्दधावत
 हो॥१॥इत्याशोर्वादा॥अष्टकेत्रअटिष्टनिवारकमनि
 पाश्र्वजितपूजनांदोहाकेउअयागोचरविषोकरेअरि
 ष्टकीहांणि॥मह्विपाश्र्वजितपूजियेमतबंधितसुदानि
 श॥अडिह्वामह्विपाश्र्वजितदवेसेवक्कंकीजियेभक्ति
 नावसुंइव्यसुंधकरलीजियेआफाननकरतिष्टति
 ष्टवःवःकरो॥ममसंनिधीकरघजिहरषहियमैंधरो
 श॥जैजैकेउअरिष्टनिवारकायमह्विपाश्र्वजिनैंदाया
 अत्रावतरा०००तमगंगाजलत्यायमणिमयनरिफ
 शी॥जिनचरनधरदेसारजन्मजराहारी॥मैंपूजोमह्वि
 जितेशपाससुषकारी॥ग्रहकेउअरिष्टनिवारकमन
 सुषहितकारी॥१॥जैजैकेउअरिष्टनिवारिकमह्विपा
 श्र्वजिनैंदा०००जले॥श्रीखंडमलयतरुल्यायेकदलीसुतज
 रीघसिकेशरिचरननल्यायेनवअघतपहारी॥मैंपूजोम
 लजितेशपारससुषकारी॥ग्रहकेउअरिष्टनिवारमनसुष

हितकारी शंखं दनं तंडुलं अक्षतं अविचारमुक्तासम
 मोहैः॥ जरिलें हो कमें धार सुरतर मन मोहैः॥ में पूजो महिजे
 नेश पारस सुषकारी॥ ग्रह के उत्र रिष्ट निवार कमन सुष
 हितकारी॥ २॥ अक्षतं॥ ले फल सुगंध तसार अलि गुंजा
 करै॥ पदपंकज जि तहि वदाय कां म विद्या जुहरै॥ में पूजै
 ०॥ पुष्पं॥ व्यंजन वज्र विधि परकार षट् सखा दम र्धक
 जित चरन चदाय कंचन धार लई में पूजौं नाते वेद्यं मणि॥
 दीपक तूपन राय चंद्रक की वाती जव जोति जहो लहा
 काय मोहति मरघाती॥ में पूजो महिजे नेश पारस सुष
 कारी॥ ग्रह के उत्र रिष्ट निवार कमन सुष हितकारी॥ ही
 दीपं॥ कृष्णा गरु चंदन व्याये धूप दहन वेश मोदित सुरण
 न कै जाय रुचि से ती ले शी में पूजो॥ ७॥ धूपं॥ वज्र चोच मोच
 वादां मश्री फल फल दाशी॥ अमृत फल वज्र सुष धाम
 लीजे मन लाशी में पूजौं ० फलं॥ जल चंदन सुले र्त्तंडुल
 अघ हारी॥ चरु दीप धूप फल दे र्ध करौं भारी॥ में पूजै
 ० ॥ १॥ अर्घ्यं॥ अडि ह्य॥ ले वसुं ज्य विशेष सुमंगल गाशी
 कै गीत नृत्य करवा यजु तुरव जाई कै॥ मन में हरष वदा
 य अर्घ्य पूरण करौं॥ के उ दोष कूं मे टि पाप सव परिहरौं श
 पूणार्थी॥ जय माहिजे नेश्वर सेव करौं॥ सुरपाश्र्वां यजे
 न चरण ममो मन वचन ला र्श्रि रभुत गाशी करौं आर
 ती पाप वसौं॥ १॥ जै जै त्रिभुवन पति देव देव र्जादिक
 सुरनर कर र्सेवा जै जै ति जगु न ग्याय कम हंत गुन व
 रनन करत न लऊं अंतरा॥ १॥ जै जै परमां सगुन गरिष्ट
 न वप दति नां सन परम र्ष्टि॥ जै जै अष्टा द्वा दोष नां स
 करे स सम लोका लोक नासा॥ २॥ जै जै वसुं कर्म कलंक
 छीत सम्पत्क आदि वसुं गुन न लीन॥ जै जै वसुं प्रतिहार
 ज अन्न पवसुं शिशु न भूमि को न एं नृप॥ ३॥ जै जै अदेह
 तुं मदेह धार वरणा दिरहित हैं रूप सार जै जै अजर मर

पदप्राण। गुणग्यां नत्र लौका लोका मांता जे जे सुषसता।
 बोधदशी। निजगुन जुत्त परगुन नाहि परसे जे जे चित सुषस
 मुझसार कर जोरन मत है वारवार। घसा। मन वंछित दा
 र्क। सेव सहारु। जो मनि निज मन ध्यां न धरे। ग्रह उष।
 मिदि जा री। सौष्य ल हारु। जिन वी वी स पूज करे है। रीति न
 द्विप्र ह पूजा स पूर्ण। ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥
 अथ वाराजा वनी लिष्यते ॥ दोहा ॥ राजाराणं छत्रपति
 हं यिन के अ स वारा। मरनां स व कं र क दिना। अ प नी अ प
 नी वारा श द ल व ल दे री दे व ता। मा त पि ता परि वारा म र ती
 वे लां जी व कं। को र न रा घ न हा रा। हां म वि नां नि र ध न।
 उषी। त्रि ष्ठा व सि ध न वां न। क ही न सु षी सं सार में स व ज
 ग दे ष्यां हां न। अ। अ य अ के लो अ्रो च रें। मे रे अ के लो हो य
 पुं न्य ध र्मी वि नां या जी व कौ। सा थी स गौ न को या धा। ज हो
 दे ह अ प नी न ही। श्री र न अ प नं को री। घर सं प ति पर।
 ग ट य ह। परि हे य रि य ए लो प न पा। दि पै चां म र्चां द र म टी
 हां ट पी ज रा दे हा। भी त र या स व ज ग त मों। श्री र न ही धि
 न गी ह। ही। सो र वा। मो ह नी द कें जो र ज ग वा सी घूं में स द
 कर म चो र च ऊं वोर सर व स ल है सु धि न ही। ७। स त ग र दे
 ह ज गाय। मो ह नी द ज व न प स में। त व क च्च व नै उ पा व क
 र म चो र अ वा त रू के। जो ज्ञां न ही प त प तेल न रि घ र।
 सो धे अं म ह्योर या वि धि वि न ति क से न ही। वि वे पू र व चो
 र। ८। चो द ह रा जं उ सं ग न मः लो क पु रु ष सं वां न। या में
 जी व अ त्ता दि कों। न र म त है वि न ज्ञां न। १०। जा चें सु र त
 रु दे व सु ष चिं ता म णि चि त रे ति वि न जो चे वि न चि त यों।
 ध र्म सु क ल सु ष दे न। ११। ध न क न कं व न रा ज सु ष सु॥
 त्व म है कर जां न। उ ल न है सं सार में। एक जि थार थ गं
 न ०॥ १२॥ रीति ० वाराजा वनी संपूर्ण। राग सीर उ वि।
 ला व ल। कर म ग ति का हूं सो न र रे टि क वि क ल प ला ष

कोटिकरतेरहों॥कांमनयेकसरे।करमणे॥अंतरायनयो
रिषनजितेसुयचक्रीमांनगरे।सादिसहससुऊसगरभ
पकेयो॥

एदयमसौरवा॥जीयारेयादेहविरां
णीमतिअपणावें।दिक॥सासधसतमयअरमलमूत्रः
नांवलीयांघनिआवें।जीयाणेश्यासैंडीतिकरेमति
नाई।डरगतिमांहिफलावें।आयोजांतिनजोतिजसां
हिव॥ज्योसिवपुरदरसावें।जियारेयादेहविरांणीमते
अपणावें॥रागकापी॥सुंजांतीडारेमारिगअपणों
जोयादिक॥आयकायथिरनांरहैगी॥जांनतहैसव।
कोया।कंवीकीसांचीकरिमांनता।कमबधेनित्यतीय
सुजाणेश्याआपापरकौंनेदलष्येविना।नरमतहैपद
षोया॥तंनिश्रेकरिदेषिसयाने।जनममरणडषहोष
सुजाणेश्या।नरनवकुलश्रावककौंपायों।सौविरथा
मतिषोया॥श्रीसरवीतिगयेपिछतेहैं।कहेदेसहंतेहे
सुजाणेश्या॥येहमुतिछांडिलागिसुनमारग।रागादिक
मलधसेया।जिनवांणीधारेतेसाहिवमुक्तिवध्वरहो
य।सुजांती॥घ॥पदराग॥प्रभूतेरेसांकडेथा।कौयारण
प्रभूदिक।लविजगतिकीनीरधीरजा।तुरतसुंनतपु
कारा।प्रभूणेश्या।जांनकीकूंदिव्यदीतीरवीरांमविचरे
अगनिकुंडप्रचंडसासननयोजलविसतारा।प्रभूते
२।चंडवालासतीकूंजवभयोंसंकटभार।महावीरजि
नवरआपआये॥हूंवोंजेजेकारा।प्रभूमेरोसांकडेकौं
याराश्या।ईतिसंपूर्णी॥रेषता।जगतयेहरैनिकासुयतां।
समकिदिलदेषिकेंअपतां।कविनयामोहकीधरा
नयासवजांतसंसारणेश्या॥घडाज्योनीरकाफूटा।पा।
तजैसैंडालकाट्टा।श्रीसीनरजांतिजिनगांती॥अ
जोकिनचेतअनिमांती॥प्रभूलौमतिदेषितनगोरा।

जगतमें जीवनां थोरा ॥ तजों मघलो न चउ यरी ॥ रहों नै
 निसंक जगमां ही ॥ ३ ॥ सजन परवार सुत दारा सवें नसरो
 जहें नपारा ॥ निकसि जव प्राण जावे गा ॥ को री नहिं कां मि
 आवे गा ॥ ४ ॥ सदा भक्ति जाणिया देहा ॥ लगावों नां वसुं
 नेहां ॥ कहें जम काल काधे रा ॥ कहें सिव चंद जन ते रा ॥
 जगत ये ऐति का सपनां ॥ सम कि दिल देखि के अपनां
 ॥ १ ॥ रीति संप्रणी ॥ ऊषडी ॥ अवन न मेरा वे सुं निसुं निसी
 षसयानी ॥ जिन वर चरनां वे करि करि श्रीति सुं ज्ञानी
 करि श्रीत सुं ज्ञानी सिव सुषदां नी धनि जीत वहे पंच
 दिनां ॥ कौटिव रसजीवों किस लेषें ॥ जिन चरणां भुजा
 नक्ति विनां ॥ नर परजाय पाय अति नुति मग्रह वसि
 यह लाहो लैरे ॥ समजे सम कि बोले गुरज्ञानी सीष
 सयानी मत मेरा ॥ २ ॥ तू सति तर से वै संपति देखि परा
 रीवोया लुं नियावे यह निज पूर्व कुं मारी ॥ पूर्व कुं मारी
 संपति पारी ॥ देखि देखि मत करि मरेवो यव मूल सलत
 रुचूं हूँ को आमत की आस करै ॥ अव कछु सम कि वा
 धित रचों साज्यो फिर परभव सुषदा रसें करि निज धं
 तदांत तप संजम देखि विनो परि मति तर से ॥ ३ ॥ जो जग
 दी से वे सुंदर अर सुषदा री सो सब फले पावें धरम कल
 पड मजारी ॥ सो सब फलिया धर्म कलपडु सरघ पा
 यक वक्रुं रिधि सही ॥ तेज उरंग तुंग गज न व विधिके
 चो दहर तत छबंड मरी ॥ रति उणियार रूप की सीमा
 सहं सच्चा एवै तारि वरै ॥ सो सब जो निधरम फलना
 री जो जग सुंदर दिष्टि परै ॥ ४ ॥ लगे अ सुंदर वे कंटक व
 न घने रे ॥ तिवर न गये गुन पलटें ॥ अवन हिं देखे नावे
 धमोटा मही कांति करि अजलं ॥ करि अपनां सलजे उ
 अंति आगि में रंधन होय गा ॥ अ धर सम कि समेराणे च
 रण वाचलतां नां हि वै ॥ चरघा भयापुरां नां ॥ ॥ श्री

पदराग॥ कालसकलजगजीतावेकोईकालजीता॥ अ
 कसमाचरिमप्रातिदवोचैजेसैमृगकूंजीता॥ वेकोईका
 लनजीता॥ शवलयरिपरिमहानडजोघातिनसवव
 सिकरिलीता॥ ताकोडरराषतनहिंकवहंयहदेधी॥
 विपरीता॥ कालने॥ ३॥ कूंवीमायासोजलुनाया॥ मंनि
 राषीप्रपनीता॥ देघपेटग्रहछांडिवलावत हाथणुं
 लावतरीता॥ वेकोईकालने॥ यासेलीजीताहेतेही
 नयाहेंसुक्तिकामीता॥ वारूंवारजोडिकरितिनकूंन
 वलनमोसतकीनी॥ कालसकलजगजीतावेको
 ईकालनजीता २॥ इतीसं०॥ ४॥ इरागकूंजोटी॥ जने
 नांमजपित्तूंजीवडा॥ नरजन्मडलनपाईया॥ देक॥ लष
 जोनिचौरासीतणोंडषमूदत्तविसराईया॥ शलषिन्न
 मततीनूंलोकमेंयो कालअनंताछाईया॥ कोईनुदें
 अवनगिकेंतूनीवतीराअईया॥ सवजांनिस्वार
 थकेसगेतिनहेतमूरिषधाईया॥ जिन०॥ २॥ जेहैसे
 रोमणिधनितेअरहंतकेगुणगाईया॥ संपत्तिचहो
 अविचलसदापरनेहतजिनजिसाईया॥ जिननां
 मजपित्तूंजीवडानरजन्मडलनपाईया॥ ४॥ संपूर्ण
 ॥ अथप्रमातिबोलबाकापदलिषते॥ जिनदेवयेक
 हीजपनां॥ इसराक्याकरनांक्याकरनां॥ अतदेवतै
 काजतसरनांक्योमिथ्यामेंपडनां॥ इसराक्याकरनां
 २॥ देक॥ नहोमेंभ्रमणकरणकाकारणछांडिछांडिप
 रिसरणां॥ वीतरागसरवज्ञपायकेविधिसेंपारुत
 णां॥ इसराक्याकरनां॥ २॥ जबलौनेदनावनहीजो
 ण्योः॥ मतिगतिमेंडषनरणां॥ सिधिसरूपमितेमो
 हिसाहिव॥ फेरिनजगमेंफिरणां॥ इसराक्याकर
 नां॥ अथपदसंपूर्ण॥ अथरागनेरुमेंलिषते॥ सुर
 तिक्वैसीराजेतिरषतमन२तीर्थकरकरधांनधरत

द०
२७

हैं परमात्मपरकाजें निरघमन सांसांश्रागें दिष्ट कुंधा
 रि सुषुंलकतमांनुलाजें ॥ अननवरसकिलकतमां
 नुंश्रैसें आसनसुधविराजें निरघमन ॥ अथनुतरूप
 अनुपममैहैमांतीनलोकमैंछाजें ॥ जाकीछविदेवता
 इंद्रादिकचंद्रसूर्यमंलाजें ॥ निरघमन ॥ धरिअनुया
 गविलोकतजाकुंअसुभकरमतजिनागें ॥ ज्यो जगा
 रांमवनें सुमरणतें अनहृदवाजावाजें ॥ निरघमनसु
 रति केसीराजें ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ पदप्रभातिलिषते ॥ चंदजे
 नराजकेचरनचिंतवनकरतरोगडषसोकअघ
 हरिभाजें ॥ हेक ॥ जवैंपरैंभीरतवध्यानहियमैंधरुंअ
 सुनसवजायसुनकजसाजें ॥ चंदजिनराजकेचर
 यापसवहीगयेपुंन्यपरगठनयेभक्तिकेजोगतैंरा
 जराजें ॥ कामअरनांतुनासिचरनछविनिरघिकरै
 तिदितएकसीदेखलाजें ॥ चंद्रजिनराजचमरतरु
 सोकसुरपुष्यवर्षाकरै ॥ तीनसिरचत्रआसनसुंछ
 जें ॥ देहकीकांतिफुंनिडंडनिवजतहै ॥ निजसुषसरूप
 लिषिणांतगपाजें ॥ चंदजिनराजकेचरनचिंतवनक
 रतरोगडषसोकअघहरिभाजें ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ पदलीरवह
 जुरिमौलिषते ॥ मनवातुप्रनुजीसुंध्यानलगाया ॥ आं
 नश्रौरआंसहीडरासश्रौरडरमति ॥ हारैंश्रांणीकुंवा
 धिर्कांमहठाय ॥ मनवातु ॥ श ॥ भाईश्रौरवंदसवकटं
 वकवीलौतैरे ॥ हारैंश्रांणीकुंवंधेर्कांमहठाय ॥ मन
 वातु ॥ ३ ॥ हाथजोडिबीनतीकरैछप्रनुतुमहीसुं ॥ हा
 रैंवंदेसुधरआवैंसोजोय ॥ मनवासुप्रनुजीसुंध्या
 नलगाया ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ रिषतालिषते ॥ धरिधनिआ
 जिकीयेही ॥ सरैसवहोकाजमोमनके ॥ गयेअघ ॥
 हरिसवनजिकें ॥ लप्याप्रमुषआदिजिनवरका
 विपतिनांसिसकलमेशी ॥ जरेतंडारसेपतिका ॥ ३ ॥

सुधाके मेघजंवरसें लष्यावे ॥ २ ॥ नदी परतीत ए मेरे सा
 ही हो देव देवन कां ॥ ट्टी मिथ्यात की मोरीः लष्यावे
 रदत्रैसा शुभ्यां मैतोः ॥ जगत के पार परनें का ॥ नवल
 आनें दूजं पायाः ॥ लष्यावे ॥ संपूर्णः ॥ कीये आरोधनो
 तिरी ॥ हीये आनें द व्यापत हैं ॥ तिहारें दरस कूं देवै ॥ स
 कल ही पापनासत हैं ॥ श ॥ नली विधि पूजिऊं की नी
 व हो रि सुं न दान दी ना हैं ॥ करो जिन भक्ति हित तैं ही
 ज मारा सुध की ना हैं ॥ श ॥ थ क्यो मैं ट्टि कै सगरे लषे
 में सुर विशेषा हैं ॥ न ही कोरी तुम तुल देवा जगत स
 व हे रि देष्या हैं ॥ श ॥ स ही हो जगत पति तुम ही ॥ न धार
 क विरद नारा हैं ॥ कहां लो की जिये महिमां ॥ करत
 ज स ई इ हा स्या हैं ॥ घा ॥ हरो उष मो त एां अ व ही ॥ लगे
 जो संग सार हैं ॥ प्रभु जी या अरज चित धरिये ॥ न व
 ल चेरा तिहा रा हैं ॥ इति हं र्णी ॥ विषे त्याग शुभ कारे
 ज लागे ॥ प्रभु सु मर न दी वार वे ॥ जगना एक जग वे
 द न करिये ॥ ये ही जगत में सार वे ॥ विषे त्यागि जा श दी
 न ड पित स व ही के रि छ क ॥ निर धरा आ धर वे ॥ म
 म छो डि ग ह्त्र और कट्क स व ये वां छा म न धर वे
 ल ग पार हो जिन चर न न से ती ॥ ज्यो सुष ही य अ पार
 वे ॥ विषे त्यागि ॥ १ ॥ नवल कह्य ह्त्र रज की जि
 यो न व द धि पार उ तार वे ॥ विषे त्याग ॥ २ ॥ पद संपूर्ण
 पद ने रु की चाल में लिखते ॥ प्रभु चरणार हं द नो निने
 द के रा ॥ टिक ॥ को टि नां तुं मे द ति हो न धन का व जे रा ॥
 ती न लो क व्या पित हैं प्रताप है घने रा ॥ पूजे चरणार वि
 द ॥ १ ॥ म्भ्रति के देषे पाप आ वत न ही ते रा ॥ से व त चर
 णार हं द कर म ही त जे रा ॥ पूजे चरणार वि द ॥ १ ॥ जो
 धा परि म हरि की ज्यो ला वों म ति वे रा ॥ स्वामी अर दं
 सिये ही दी जे मो च डे रा ॥ पूजे चरणार ॥ हं द ॥ १ ॥ संपूर्णः

रागविलाजलमै॥ षोयोरैगवारतैसारोदितयोहिषोयो०
 टेक॥ सामांयकपुजानहिंकीनी॥ ऐतिभईडगछायालेने
 ज्ञानरिसौयो॥ षोयोरैगवारतैसारोदितयोहिषोयो॥ १
 वालयनकछुपांनकीयोनही॥ जोवनवणित्तालार
 तैसुभवीजनवोयो॥ षोयो० २॥ वृद्धिपणेंतसनांअतिप
 रणी॥ सवघरकौंडषनारतैतिजिहात्तमदोयो॥ षोयो०
 ३॥ सुगुरुवचनदरियावमैरे॥ आयोआपसमहारि०
 तैविषदासनधोयो॥ षोयोरैगवार० ४॥ संपूर्ण॥ अ
 पदलावणीमैलिषते॥ अरजहमारीसुणोंदीनपते
 कौंननोतितिरनां॥ हमधूषीफिरतसंसारचत्तरगा
 तिसोसुंमसुंतिरणं॥ टेक॥ घोराघोरतरककैनीतरे
 नानांडषनरणं॥ साडनमारणछेदएनेदण॥ और
 देहघरणं॥ अरजहमारी १॥ कवकं कतिरजं वजोने
 पायकै॥ गलैयासिधरणं॥ बुधातिरथाअरसीतहं
 सतताः॥ मारिमोरिकरणं॥ अरजहमारिश॥ मिन
 षजनमपायकैविसस्योः॥ विषेनोगरणं॥ रंवरं
 कछिनमोहिदीषत॥ कहुंनोहीसरणं॥ अरजहमा
 रि॥ ३॥ देवविजृतिपायकैसुंदरअदिकदेषिकरणः॥
 तवमालामुरकाणेंलागी॥ सोवकीयोमरणं० अर
 जहमारि॥ ४॥ अरैअनेतवारमैनदक्यो॥ कहुंनोहि
 सरणं॥ साहिवमोंसरणंगतिरावो॥ जनममरणह
 रणं॥ अरजहमारीसुणोंदीनपतिकौंननोतितिरणं
 ५॥ संपूर्ण॥ पदशमसहरटीमैलिषते॥ चतुरनरमनकुं
 समकांणं॥ विघटघाटपायंडजगसिखरपारउतर
 जांणं॥ टेक॥ मधुबुधधरनमिष्याजलजंडा॥ इंदकउ
 नमानां॥ यावधरैतौपकरिडवोवैकुणुरसुगुरदानां॥
 चतुरनरमनकुंसमकांणं॥ शनकटजायसौंजलपी
 विसौंहीयहैरणं॥ जलघारोअतिरोगवडावे॥ रागदोष

माता॥ चतुरतरमनकंसमकाणां॥ कुंधरमनुजाडेगोला
 हेमोहप्रमछाता॥ कोमलोमदेनेचोरलुटेरा करेवहोतज
 ता॥ चतुरतर॥ ३॥ कुवदियोनतावफकफोलेत्रलाजक
 र्त्राणां॥ घरचीलारविमलनावतीलीजेसुनमाना॥ चतु
 रनरध॥ सुनदपोनसत्तगुरधेवदया॥ अनकेसंगत्राणां
 देवकहेसिवपुरजोचाले॥ सावधानस्याणां॥ चतुरतरम
 नकंसमकाणां॥ ५॥ संपूर्ण॥ पददुश्रीलिखते॥ आयक
 यथिरनहीरहगीजाएतहेसवकोय॥ कंठीकेसांचीक
 रमांनः॥ करमवंदैनतेतोय॥ सुरनरग्यांतीडारेमारगत्र
 पणोजोय॥ आयापुरकाजेदलष्यावननरमतहेपद
 गोया॥ तुनश्रकरिदेधिसयातांजन्ममरणउषदेईसुर
 ग्यांतीडारें॥ १॥ उत्तमकुलसरावगकौपायो॥ सोअवर
 यामतिषोवो॥ अवसरवीत्यापरपछितावैकहदेतह
 तोयहें॥ सुरग्यांतीडारें॥ २॥ परमतिछंडिलागिसुधमा
 रग॥ रागादिकमलधेय॥ जिणवाणीधारीतिसाहिव
 मुक्तिचंडवरहोय॥ सुरग्यांतीडारें॥ ३॥ संपूर्ण॥ चालनध
 लामेंलिखते॥ कोरिनहीमंतातेराजुमैदिक॥ समकसोचकरे
 देषसयातांतुतो फरतत्रकेला॥ जुगमेंकोरिनहीमंताते
 रा॥ ४॥ सुयनेंदासेसाररघ्याहेंहटवाडेदामेला॥ विनसिज
 यत्रंजुलिकाजलजुतुतोगरभमहेला॥ जुगमेंकोरी
 रसिदामाताकुमतिकुमातामोहलोभकरिष्येला॥ येते
 रेसवहेंउषदाशीनुलिरहोर्नजिगेला॥ जुगम॥ ४॥ पातै
 सोचसमांलग्यांतकरिफेरिंमिलेब्रहिंबेलाः॥ जनिवा
 णीसाहिवउरधरोपावेमोषिमहेला॥ जुगमेंकोरीन
 हीमेंतातेरा॥ ५॥ संपूर्ण॥ वीतगईसारीरनिशांणीलारे
 टेक॥ दोयघडीकौंतडकौरहो॥ छंडिदेहसवफेमःशं
 णीलारेवीता॥ उत्तमनरनवसंगतित्रात्म॥ मतिमे
 लयोसवजैन॥ शांणीलारे॥ २॥ जोकसुकरणीहोसोही

ने

करि सुणसतगुरकेवैन॥३॥ इतिसंपूर्ण

॥ अथेनेमिनाथजीकादसनबलिबलि॥ महेधावालाहे
प्रभुनावस्योजी॥ महेधावालानेमकवार॥ वादीराजलवि
तवेजी॥ अरुजकराछावारंवार॥ येतौप्रभुदष्पालहीजी॥
जायचद्राछोगदगिरनांशि॥ महेनीसंजमहौप्रभुलेय
स्याजी॥ संजमलेस्यायाकीसाथ॥ वाराभासांहोंप्रभुना
वनांजी॥ नानाविधितेजीतयसार॥ नवसमुद्रहैप्रभुकं
डियाजी॥ गह्रोहमारोजीतुंमहोय॥ अत्रमोहिस्यारोंप्र
भुजीतुंमघणीजी॥ २॥ नवनवकीमेंथांकीचरयांजी॥ २
श्रुवैभवभीरायोसाथि॥ पहलैभवतोंप्रभुजीनीलछो
जी॥ मेंनीलाणीथाकीसांथि॥ सुंनिवरकुंतोमारणताव
याजी॥ हवकरिराषामेहजिणवार॥ सुंनिवरकुंतोयेवंद
नांकरिजी॥ सुजगतिवांधीयेजीवार॥ अत्रमोहेत्यारो॥ ३
उजैनवतोंऊवासेवहीजी॥ नांमधरायोतपदनकेतऊं
देवाणीथाकीसंगरहीजी॥ तपमिलिकीयोदोन्यासांथ
अत्रमोहेत्यारों॥ ४॥ तीजैनवतोंसुरपहलासुगमेंजी॥ ४
रीअपहारायेप्रभुमोही॥ नानांविधितेजीसुषभोगयाजी
वेविविमाहाहमतुमदोयदेव॥ तीर्थकरहेप्रभुवंदिया
जी॥ क्षेत्रविदेहाहेप्रभुजाय॥ पहलानवसुंवांध्योंतौकडे
जी॥ पायोसरमजेहअपार॥ अत्रमोहे०५॥ चौथेनवतो
होप्रभुआशीयाजी॥ धीघाघरकाहेकुलमांहि॥ चिंतागत
वीनांमधरायेजी॥ विजयारघगिरहिरमांहि॥ वंडावंस
मेंहोप्रभुपयांजी॥ जदवीमेंछीथाकीलार॥ अत्रमोहे
त्यारो०६॥ पंचमनवतोचौथासुगमेंजी॥ मोटादेवजई
जहोया॥ श्रीरदेवतोसवसेवाकरेजी॥ सीसतवावैसवही
तोय॥ अत्र०७॥ छठेनवतोअपराजितऊवाजी॥ राजाऊव
जीकोईसार॥ वरतजपाल्योहेसुरावगतलोंजी॥ पुंभु

पजायो दोसासारमे नषादेही को लाहो लहो जी ॥ धर्म जने सु
 रहे को शी पाया ॥ अब मो हे सारो ॥ ७ ॥ अच्युत इंद्र कुवा न वसाते वे
 जी ॥ स्वर्ग सी लवे नुप न्या जाय ॥ तिथ सागर तो हिवां शी सकी जी
 ती नह सतकी को र्झाया ॥ वाका सुष को जी को शी अंत नही ॥
 जी ॥ कह्यो किनी से हे को र्झाया ॥ अब मो हि सारो ॥ ८ ॥ स्वरप
 ति असे कन व अवे जी ॥ राजु ल कुल मे मे हे अब तारा ॥ राणी
 परणी प्रभु अति घणी जी ॥ मे पट राणी छी जि ह वारा साध मुं
 ती श्वर हो प्रभु योषिया जी ॥ दां न द ज दीयो चार घर कारा ॥
 रत्न जया ल्या हे श्राव गत एों जी ॥ धर्म जने सुर हो प्रभु योषि
 यो जी ॥ तीर्थ कर प्रभु जी त व वं घ्या जी ॥ जो तुं मजा एों स व नि
 रधार ॥ अब मो हे सारो ॥ ९ ॥ अह मिंदर को नी पद पा शी पोई
 जी ॥ नवनव की कुंजिय छें वात वाका सुष को जी को र्झाया अंत न
 ही जी ॥ कह्यो किनी से हे को र्झाया ॥ अब मो य ॥ दस मां न व ते
 हे प्रभु आ शी या जी ॥ जो ड कुल मे हे अब तार सेवा देवी मा
 ता न रघु र्जा जी ॥ नगर ड्वारिका कही को र्झाया ॥ १० ॥ सम द
 विजे जी रा हे ला डी ला जी ॥ कुल मे वं द ज वं दस मां ना मा त
 पिता तों हे हरष त भया जी ॥ तीर्थ कर सु त हे को शी जां एा ज
 नम स मे तों सुं शी ति आ र्झा जी ॥ मे र गिरा परि हे ले ज्या य ०
 जल ल्या य के जी सह स्त्र अ वी तर कल स द ला यें ॥ ११ ॥ ज
 नम स मे को वर न न कर स के जी ॥ स्वरप ति क हे त नै या व पा
 रा ॥ वाजा वा ज्या प्रभु जी अति घणी जी ॥ इध विस व द अ पा
 रा जनम म हो छ व देवा सो धि के जी ॥ ता त मा ते ने सो प्यो आ
 य ॥ जनम सुं फल सुं र अ प नों जां ति के जी ॥ सिद्ध स्यां न का
 यो ह व्या जाय ० ॥ अब मो हे ॥ १२ ॥ नि सि दी य जि की प्रभु जी च
 दि र ही जी क्रीडा करि हे आ ग एा मां हि ॥ वाल परो सो प्रभु जी
 र म त हे जी ॥ ई स वि धि दि व ज र एा गुं मां य ॥ एक दिन तो वे १
 डा मा हा राज हे जी सुं न क्रीडा की कर वा जाय ॥ रति व सं त तो
 हे आ र्झि ली जी जल क्रीडा नी स व ही कर य ॥ अब मो हे ॥ १३ ॥

कैरूपयाडं वहलधरजादवाजी॥मतोमतोछेंहेजीहवारसा
 रामेहीवलकुंणामेंघणैजीजीकोत्रवहीकरोवीचाराकोई
 वतावेयाडवमहावलीजी॥कोईवतावेकेसिवरायासारा
 हीकोहेवलतोलियोजी॥षडासनामेंसवहीआयानिम
 नाथकीसरजरकोंनहीजी॥वदनरहेसवहीविलघाय
 त्रवणे॥१८॥केसिवकेंमनसंसोंउपनीजी॥निमतजग्योनी
 पुंछणजाया॥वांहकरावौनेमकुंवारकीजी॥मनमेंवेराग्य
 हेउपजाया॥उग्रसेणकोंटीकोनेजियोजी॥राजलदोनोथी
 उमगाया॥समदविजेजीराहेतनंदनजी॥उग्रसेनवीमनह
 रवाया॥वडीवघाईसवघरवारमेंजी॥सजेनगरवाहेंकोशी
 पाया॥त्रवणे॥१९॥लगनलिषायोसुनदिनसोधिक्केजीदी
 नोवषजललगनपढायासमदविजेजीकलससोपियो
 जी॥पोहजकहजधीदायाजांतदिगंवरषभुकीहदवनीजी
 छपनकोडिसवहीसिरदारजादववंसीसारासंगलीया
 जी॥चदयाव्याहजनेमकुमार॥त्रवणे॥२०॥जुन्यांगदनी
 डरलनआर्याजी॥सोरनचटियानेमकुंमार॥पसुंवन
 कोनीहिवाडोनस्येजी॥ज्यांजीवांकरिपुकारासुणीपुका
 रजीवांतणीजीमनवेराग्यहेउपजायतोरणसेतीरथके
 रियोजीजायचट्टाहेंगटगिरनारा॥पाचखापुत्रुमेसुणल
 हीजी॥तोडगेणोनोसरहारत्रवणे॥२१॥तातमातनीयोसम
 जाईयाजीमेहनीआरीथांकीलाराअरजकरूषुप्रभुयेचित
 धरोजी॥येकवातकीवातहजारानवसमुज्जलप्रभुजीउ
 रहेजी॥तुमहीउतारोजलसेपारासेवकुवाडोहेप्रभुवीम
 वेजी॥नविजीवनकोहोआधरवे॥२२॥राजलतवहीहे
 अरजकानरुंजी॥उर्ध्वतपहतहेकोईधरसुगसौलवे
 सुरललतांगनयोजी॥अस्त्रीलिंगछेधिक्कोईसारनिम
 नांथजीकोमुक्तगयाजी॥सीहिसथांनकपहोयाजायगे
 सीसुणसीपदसीनावसोजी॥सोपंचमगतिहेकोईपाय
 त्रवणे॥२३॥इतिदसनवनेमनाथजीकासंश्लोः॥

अथनेमनायजीकोवाशमासोलीयते॥सहलोहेआयोछेसा
 वणमासंघेलाणचालोतीजडीजा॥सहलोहेराजलंकीपोछेसी।
 गारनेममनावणकारणजीसहलोहेनेमजीसीपोछेवरागफी
 रीयाछोचोयवीजी॥१॥सहलोहेनाडडनंरायातलावमहीक्व
 लवीगासीयाजीसहलोहेनेमजीनकहजोजायकेलघकरे
 तोवाहडोजीसेहलोहेमाहनंनहीलगारी॥येहेनीसजमले
 पस्याजी॥२॥सहलोहेआसोजीअर्थीकारडसराहोथेयरीकंरो।
 जी॥सहलोहेनेमजीकीयकडाफटेहाथजोडावीनतीकरने
 सहलोहेनेमनमानवाताराजलमनवीलीषोगयेजी॥३॥सहले
 हेकातीमंकोणवीचारनेमनदीषवीसतोजी॥सहलोहेघरीयर
 दीवलाजोपऊदीवलावीनकारेहोजी॥सहलोहेकामणकी
 पोछेसीगारुनेमवोहणोमोरहाजी॥४॥सहलोहेमागाअमंर
 जाद॥ऊनेमनोणोकोरहजी॥सहलोहेवामणअप्रडगवार॥
 कुडौलगनंलाव्यायोजी॥सहलोहेमाहामकारेचुकवीणअ
 वगणऊकोप्ररीहरीजी॥सहलोहेयोसमपुरीअसीसं॥ऊजीनरा
 सीकोरेहंजी॥सहलोहेचालोसषीदससाथी॥पहरीपटमंरसव
 टोजी॥सहलोहेनेमजीनकहजोजायेराजलअवअरजनजी
 ॥सहलोहेमाहामासकीरतीऊनेमनोणोकोरेहजीसहलो
 हेनेहनतोऊजायअणवतकीआरतडीजी॥सहलोहेवा
 मणनकारेदोसकरमलाषोपोयेयोजी॥७॥सहलोहेआयो
 छेफागणमासहोलापुजणआलायजी॥सहलोहेषेलसषीव
 संतं॥षेलवामणवाएआजी॥सहलोहेषेलसाहुपोणऊवीएषे
 लीकोरहजी॥८॥सहलोहेआपोछेचैतमास॥ममताताजीमंनं
 एजी॥सहलोहेसनामसमकाय॥ओरअंलावरआणीस्याज
 सहलोहेनेमवीनाओरकोनहीपातावरावराजाणीस्याजी॥९॥स
 हलोहेवसाषावतमाहीदषतलनुमीरहाजी॥सहलोहेराजलतो
 ल्यौवोलकडवामीघसहकीहोजी॥सहलोहेदेषीचीतवीचार

पेही गोत
१२५

सासोनागोमनतगोजी॥१०॥सहलोहेत्रायोछैजेठमासएजल
मनगाछोकीपोजी॥सहलोहेतोयोछैतोसरहारंमंसंतोषो
त्रायंपुजीसंहलोहेनेमजीसुकहजोनाय्यामेहानासडामले
मीलाजी॥११॥सहलोहेत्रसाछात्रयाकारगीरनासाचछीवा
लीस्याजी॥सहलोहेराजलनेमकवारदोन्यामीलीकरतपली
पोजी॥सहलोहेयोह्याछैमोषाडवाराजनमसुयारोत्रायपणोजी
१२॥सहलोहेजवाछैजनकारपुजणत्राप्रादेवताज॥सह
लोहेराजलनेमकवारजीहीकीतूहरगायस्याजी॥सहलोहे
पासीसुषत्रपारयासीसपतीत्रतीयनीजी॥सहलोहेदेषसवंस
मारसुजाणावाणीगावमनतणीज॥सहलोहेगावसवनरीता
रीतरीत्रापसुदरागायस्याजीसपुरण॥दसकतलीदुमीराम
गोधाम॥१॥त्रबैतेरार्यथ्यानवोर्यत्रतेरार्यथकोचलायोतामैएती
वस्तुडरिक्काणवहराईतीकोकागदकामाकासाहिमीनापानस
यानेरिकागोदीकांलिषिचलायोताकोउवाजुवाबत्रायोतीकी
नकलकागदकरारमितीफागणसुदि॥धसंबत१७॥धणकीसा
गानेरिकामहाजनानेकानावतजलासरहंसिधिस्रासागनिसि
जसथानेकत्रनेकवोपमाजोगनाइजीश्रीमुर्कददासजीजाइ
जीश्रीदयाचदजीजाइजीश्रीमहास्येयजीजाइजीश्रीछाजुसा
इजीवाकील्याणदासजीत्रासुदरदासजीवाबाहारीलालजीस्म
ससाहिमाजोगपलियतकामथिहरकीसतदासचितामणिदेवी
दासतंदलालजगनाथकेमश्रीसबदबसात्रवाकासमाच
रेनलाछैथाकासदानलाचाहिजेत्रर्षचिकागदथाकोत्र
योसमाचारजाणमात्रागैइहबिधिहोयछीतामइतनाहा
लमेटीमातजलपाचीछीत्रजबरामगोदीकाकाडेरांमै
छीनासुतकसछौ॥

॥१॥श्रीप्रतिमाजीआगस्राजरणहोतीत्रवैनीरात्रणहोय
॥२॥छै॥श्रीजगवानजीकीपुजाबविकरतात्रवैतनाहोयक
त्रारछै॥श्रीदेकराजीमर्नडाररहेछैसोत्रवैर्नमारडरिक्

कर्मोच्चागासेतीर्त्तारराषिवानैपावेनिरमायलवहरायो॥

४॥ आनीजलीटपरिपधएयकलसटालतसोअवेमाजीकाप्रति॥

मातोवेदीउपरिवारजेजेवाकीनेठैहरहेअमुटाअगेअलाह॥

दाकलसटालेअसेतोयाविधिअच्चेआगासेताउमेदमारखाजोपा॥

नीरतिनहोयः

५॥ अरसोतिकविधिषेत्रपालनोवग्रहकीपुजाहोयचीसोमनेकरा

द्विअस्त्रादेकराजामैजुवाषेततासोमने॥॥

१७ देऊराजीमैबीरणावगेसेतीबहालिलेतासोमनेः॥

६॥ आजीकीपुजाकरताअरस्यामपइसायालतासोमने॥

एदेहराजमिमाललेतासोमनेः॥

१० देहराजीमैजोजिगजातासोअवेदरवाजावारैरहमाहिपसि

वानेपवेः॥

११ देहराजीमजुत्याकोजोफोलेजातासोअवेमनेकरोदरवा

जावारैरहे॥

१२ लोंगवगेकोअवोत्रीपुपियोचाराभैशालिचहोमतासोमने

+॥ राचुपहलीभोजिगमाजतासोमनकमा॥

१३॥ अवेमहाजनहाराछमाजछेपाणापुजनेमहाजनहिल्येदे

१४ नाहवएभोजिगघरघरसेतील्यावतासोअवेम॥

नेकगोअरएकसरावगीहाएकघरसेतील्यावेः॥

१५॥ कुलीवगेनिरमायलकोअंगीकारकरेतीनमानानहा

१६ तालजालरिजीजागकसावदवजावतासोमनेः॥

१७॥ रांधोनाजचटावतासोमने॥

१८॥ थालोमीचहतीसोमनेः॥

१९॥ देहराजीमैआपसमेकोइकहीनैउविउमोनहोयएक

जगवानजीकीवदगीमैरहे॥

२०॥ नादवासदि१५केदिनलुगाइआजीकीवेदीचोगिरदा

फेरआपसमैकटकालेरसोमनेः॥

ही॥६॥ छठे विक्रमसौ संबत् ३॥ मोत्र अहंकारा ॥ बंससोमकू
 लचक्रंवांण ॥ उततत्र अहंकारा ॥ राजिश्वा अने रामंजी कूलदे
 व्याचक्रेश्वरी ॥ सामसकेला ॥ सातवौ विक्रमसौ संबत् ४ ॥
 गोत्रतरपतिहेलावंससोमकूलचक्रवाण ॥ उतततरयमे
 राजिश्वा नरोतम गिरकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ षे विक्रमसुसं
 वत् ५ ॥ विसाषगोत्रपावडे फिथस्या ॥ बंससोमकूलचक्रं
 वांण उततकीथस्यो राजिश्वा काजरांमकूलदेव्याचक्रे
 स्वरी ॥ ए ॥ नवमो विक्रमसौ संबत् ६ ॥ मासजेष्टगोत्रजल
 वाण बंससोमकूलचक्रंवांण उततजलवाण ॥ राजिश्वा
 जसोमयकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ १० ॥ दसमो विक्रमसौ सं
 वत् ७ ॥ मासत्रसादगोत्रत्रुलरा बंससोमकूलचक्रंवां
 ण उततत्रुलाण ॥ राजिश्वा धुधरमलकूलदेव्याचक्रे
 श्वरी ॥ ११ ॥ ग्यारवो विक्रमसौ संबत् ८ ॥ मासकातीगोत्र
 दरुयोघा बंससोमकूलचक्रंवांण ॥ उततपनड २ डोयो रा
 जादमतारिकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ १२ ॥ बारहो विक्रम
 सौ संबत् ९ ॥ मासफागुणगोत्रराजनर ॥ बंससोमकूल
 चक्रंवांण ॥ उततपतराजनरारांमस्यंयकूलदेव्या
 चक्रेश्वरी ॥ १३ ॥ तेहरमो विक्रमसौ संबत् १० ॥ मासजेष्टगो
 त्रउकड्रा बंससोमकूलचक्रंवांण ॥ उततपनडकडरो रा
 जाडजनस्यंषजीकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ १४ ॥ चौदवो गोत्रवि
 क्रमसौ संबत् ॥

रीवप्रसांभीया सप्तसहजार १७०००० सोकोडीधनमुवात्पाके
 पांसीदेवीनरहो तबनागनगरसौनटरकत्रपसजितजीपसके
 तनममनसोत्रज्ञजिनसेनजीवेलोनेचिदाकीधोकहीजवडेने
 धूपेपाय... तर्दमासमागिधिरगोत्रसाहबडावंससोमकूलर
 कं... बाण उमनसाहबडोरजासाहिमलजी। कूलदेव्याचक्रेश्वरी
 आठेदोदसिवाकीफेरिजेनहा। १५गोत्रविक्रमसोसंबत्। एमास
 बेसाधगोत्रपाटणावंससोमकूलवृवरउतनपारणिराजाप्रम
 रंमजीकूलदेव्याआमणिबाहणबलधलादेनोक्षीहोयगा।
 पूर्ववेतोक्षीहोयाइहत्रहजिनसेनजीपनिजेनीकीया। आत्र
 थंगउतपति। जसोत्रदीजीकेवारेसबएकचासोभ्रजमोम
 द्जीजैनधर्मकोबिद्यमानंजालिकरिसरबसिष्यजताजना।
 मेकहीजुषडेलेउतपातऊवोसोत्रवकोईजावी। तबसगत
 कलोजयाहनेश्रीगुरुआपत्रापाकरैसोजावेसोआगुरुआ
 ग्यानोत्रारहीनेकरीछात्ररजिनसेनजीउतमतथकोहो
 प्रकरिकहीषंडेलेऊजासु। तदिसबलपत्राग्याविनांहा।
 गमनकीयो। तदिसिष्यछात्यांविचारीजोषोतोउतमतहो।
 यत्ररगयोसोजिनसेनजीषंडेलेजायत्ररषंडेलेवालमहा।
 जतछात्रेष्टात्यांमैत्रायवाकीरष्याकरैरष्याकरैत्रर।
 जाषंडेलगिरकागोलीमेटासोषंडेलेगिरआदिनारी१५। चौदातौ
 जेनीकीपानैठयछैजिनसेनजीकालवसिऊबातेठयछैगोतन
 बांधोषंडेलगिरआदिचौदाजार्तौजेनीकीयागोतबांधोयछै
 बाकीगोतत्रोरत्रोरंआचाप्यप्रतिबोध्यागोत्र। ५५। चौरासीपर
 जंतषंडेलाकागावांपुआवकन दारकांआयणकीयाजसोत्रइ
 जीपछैजिनसेनषुहागावमैरहा। जतीसोमहाजतानैप्रतिबो
 धिआगांवमैजिनसेनजीरहा। जसोत्रइजीताईतोबनवासी
 छायाछैत्रइबाऊजीपाटिबैष्टासगलाजत्यांआणमोना।
 अरुआयनम्यापणिजिनसेनजीआग्यातोमांनयणिरु
 रिनगयातेठस्युगछुविरुइहोतागया। पणिरुइबाऊजी
 ताईजीवनवासारहा। अरुसोतांबरनीयणदिनताईवनमै

तेजायत्रहारकीयो। जेठपाछेअठ्ठवाकजाडरसीसदीजबुगुरूले
 पीछेघारीबांछांसिद्धिमतिहोह तेठामुआदिसुसुएजीतीकीये
 आस्त्रोरखुराणपुरानपञ्चा। जितसेनजीकालचसिजवा। अर
 जेठहीसुंयाकापंध्याकेमागधीनाषाछुटतीगरियाठवरति।
 औरपकडीतेठपाछेग छुआपत्रापणावाध्या। समोधिकरे
 आपणजदारकआवककीयाआवगाकेप्रग्रहकीयो। यह
 कासोषंडेलवालभावकाकावसकीया। जातिगोतवोरसात
 कोतपसीलछे। १ प्रथमगोत्रसाहबंससोमकूलचोहराउतन।
 षडेली। राजाषंडेलगिरकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसोसंब
 त२कौ। २ गोत्रनवसोवंससोमकूलचोहरा। इतननावसो।
 राजानावस्यकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसोसंबत३। ३ गो
 त्रपहाडाउवससोमकूलचक्रवाणउतनपहाडोराराजापूर।
 एचंद्रकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसोसंबत३। ४ गोत्रपापडी
 बालवंससोमकूलचक्रवाणउतनपापडिराजापोमस्यकूल
 देव्याचक्रेश्वरी। इकसूर्यमांताविक्रमसुसंबत३। ५ गोत्रअ
 रडकावंससोमकूलचक्रवाणउतनअरडकोराजाअजब।
 स्यकूलदेव्याचक्रेश्वरी। आठेचौरसियासेनहीचाकीकोअ
 पमानकरेनहा। ६ गोत्रअहंकास्पावंससोमकूलचक्रवाण
 उतनअहंकास्योराजाअनेरामकूलदेव्याचक्रेश्वरीसोसके
 लीविक्रमसोसंबत। ७ गोत्रनरपत्यावंससोमकूलचक्रवाण
 उतननरपत्यागजामरौतमगिरकूलदेव्याचक्रेश्वरीवि
 क्रमसुसंबत। ८ गोत्रपाडेजिथसावंससोमकूलचक्रवाण
 इतनकीथम्योराजाकाकारंमजीकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्र
 मसोसंबत। ९ मासबैसाषा। १० गोत्रजलवाणंवंससोमकूल
 चक्रवाणउतनजलवाणो। राजाजसोपपकूलदेव्याचक्रेश्व
 रीविक्रमसुसंबत। ११ मासजैश। १२ गोत्रतुलणंवंससोमकू
 लचक्रवाण। उतनतुलाणोराजातुधरमलकूलदेव्याच
 क्रेश्वरी। विक्रमसुसंबत। १३ मासअसाद। १४ गोत्रदरजेद

वंससोमकूलचक्रवांणउत्तनदरजेद्योराजादमतारिकूलदेव्या
 चक्रेश्वरी॥विक्रमसुसंबत्॥५॥मासकाती॥११॥गोत्रराजनध्वंससो
 मकूलचक्रवांणउत्तनराजनईराजामस्यंधकूलदेव्याचक्रे
 श्वरीविक्रमसौसंबत्ईमासफासुरा॥१२॥गोत्रहकडावंससो
 मकूलचौहाणउत्तनहकडो॥राजाहरजनस्यंधकूलदेव्याच
 क्रेश्वरी॥विक्रमसौसंबत्ईमासजेष्ट॥१४॥गोत्रसाहबडावंस
 सोमकूलचक्रवांणउत्तनसाहबडे॥राजासाहिमलजीकू
 लजीकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसौसंबत्ईमासत्रसाटात्रा
 ठेचौदसीचाकीफेरिजेनहा॥सौत्राठकैदानचाकीफेरतब
 हाथसोहाथलागायेनिवालागाकहीजेप्रहारेहादि
 नपुजिनीकसोयांमुनेफेरिअबजदिछे॥५॥जेऊजोसाहब
 डोमाहारावंसकौ॥त्रौरकूलदेव्यायुजेतदिसौत्रौरलपुजे
 लागासंबत्॥१४॥४॥कासौचक्रेश्वरीवजनककहरीइहत्र
 हषडेलगिशवगेरहजई॥१५॥जतिचोहराछासोजिनसे
 तजीनैजेनीकीयाचक्रेश्वराषंडेलगिरिकीगोलिमिटासा
 सुपादेवाकूलदेव्याठाहराजिनसेनजीपछै॥त्रौरत्रौरत्रा
 चार्यगोबापुयोतबायोत्याकोतयसासा॥११॥गोत्रपाटणा
 र्यससोमकूलचक्रवांणउत्तनपाटणा॥राजापरसरामजी
 कूलदेव्याप्रमणिवाहाणबलधलादेतोहषाहोय गायबे
 चेतोहषाहोयविक्रमसौसंबत्॥एमीतीबैसाषसुदि॥५॥पा
 छैसंबत्॥१२॥५॥श्वारेधरमचंद्रसिधांतीकेबछराजवासर
 जपाटणाऊवासुकातीत्रालमैएकनाईबोलिमैएकनाई
 सांभरिकूमावैवासीबोलिमैसुकातीकादांमपऊंतांनहांत
 दित्ररजसूरतिलिषिहरमपातिसाहासुंत्ररजपऊंवायबु
 डायेबिठोकरीराष्योमुमसलमांनहवोफेरिहाकिमकेसांभ
 रियायोत्रोनाईसंरासुसलमांनकसं॥सोधिजायनायानैपका
 डा॥जोथेमुसलमांनहोहत्तदिवासरजवैसागनाईमसल
 तिकरीत्रापसमैजोफलोधिप्रीपार्थनाथजीकीजातकोन

लेसायत्रहरकीयो जेअपत्तैमद्वजाऊनीउरसासदीजनुगुस्तं
 लोपाक्षेपारीबोछंमिदिमनिहोह तैमसुत्रादिसुसुसुअते
 कीयोअरत्रोरपुराणपुराणपडा जिनसेनजीकालवचिऊक
 अत्रैअहीसुयाकापंअंकेमामधीनामात्रुत्तीमरियाठवर
 तिनोरपकडा तैमपत्तैमद्वजापत्रापसुवाअं समेक्षि
 स्थि वलेरछटासोजोकहामेहयान्मनाथजीकीजातबोली
 छानोम्हांकोनारिवछराजनैआंअदिषांतदिजात्रात्रोवोसो।
 अबमेहथांस्योमिल्यामनोरथसिधिऊवोसोसुसलमानजा।
 त्राकरिआवांतदिहला। अबसुसलमानहांतोजात्रालामे
 नहीतीसुजात्राकरिआवांछातदिवछराजकहोमैतीचालु
 गा। सोयेसाणफलोधीनैचालतागैलामैमसलतिकारासा।
 जोबछराजनैदिनारिदेमादिजे। सोगैलामैदिनारिदेमाप्रोसो।
 सोपीरऊवोसोसारोआयानैदवलदेवालाग्या। तदिसारक
 हिजोअबऊंसीहोप्राइअबयेसहइकरोतदियीरकहि
 जोतदियांनैहोउमाहासुदि। २। नैकुंडामैषायसोवासापा
 टणीकायाकापीरतैमानैजायपीराणकुंडामैषापसंबत
 २३। वासाकोसोटोयंडसी। २४। गोत्रराणउमनरावेवंसया
 मेचाकूलदेव्यात्रोरल। २५। गोत्रराणउतनराठकोषंसं
 मेचाकूलदेव्यात्रोरल। २६। गोत्रमोदाठतनमीहोवंसयांमै
 चाकूलदेव्यात्रोरल। २७। गोत्रमोघ्राउतनमोघ्रावेसयाम्ये
 चाकूलदेव्यात्रोरल। २८। गोत्रमेअरावतंततरावत्योवं
 सपामेचाकूलदेव्यात्रोरल। २९। गोत्रबिलालाउतनविलासे
 वंसयांमेचाकूलदिव्योत्रोरल। ३०। गोत्रजगराजउतनजरा
 जबंसतादेचाकूलदेव्यासोनल। ३१। गोत्रछाहडाउतनछाह
 डोवंसनादेचाकूलदेव्यासोनल। ३२। गोत्रश्रीमूलराजतन
 मूलराजवंसमोहिलकूलदेव्याश्रीदेवी। ३३। गोत्रलटावाल
 टावालउतनलटावालवंसमोहिलकूलदेव्याश्रीदेवी। ३४।
 गोत्रगोनवंसउतनगोनवंसवंसवंसदेवडाकूलदेव्याहंम।
 ३५। गोत्रकूलजाणउतनकूलजाणोवंसदेवडाकूलदेव्यादे

चौरसा
१३५

मा १८ गोत्रबोरषं उत न बोरषं शोबेसंगे हे लौतकूलदेव्या।
श्री १२ गोत्रमोहनी उत न सोहना वंस सोलषी कूलदेव्या आम
णि २० उत न सोरई जीगां वकै नाई सीरई गीत छै सो नाना षा छै
कूलदेव्या आमणि ॥ अरसागर सोना पातिष्ठा २४ सासा अरि
कराई सीव त्वा ए ए ए वैसा ष सुदिग वारे माघ र्द के अर ष ड
गुमो जीषं जे लामे स तुकार वरस १२ ताई दायो संबत १२१२
का सालमें ३१ गोत्रयाव डो उत न माव डो वंस सो लषी कूल
देव्या आमणि ३१ गोत्रवृज्ज हथा उत न षे डे लो वंस सुं दार हा
थमे हथो डो षो ज दि सुं वज्ज हथा कहां या वज्ज जा षा छै कू
लदेव्या आमणि ३३ गोत्रश्याप त्या उत न श्याप त्यो वंस सो
लषी कूलदेव्या आमणि ३४ गोत्रगधा या उत न थ यो वंस
सोलषी कूलदेव्या आमणि ३५ गोत्र लोहपां उत न लोहो
ग्यो वंस सो लषी कूलदेव्या आमणि ३६ गोत्रयाप त्या उत
न याप त्या वंस सो लषी कूलदेव्या आमणि ३७ गोत्रने छुं उ
त न तु छे वंस सो लषी कूलदेव्या आमणि ३८ गोत्रवा उवा
उत न वा उवा उ वे स च दे ले कूलदेव्या मा तणि ३९ गोत्र
मोल स स्या उत न मोल स स्या च स च दे ल कूलदेव्या मा तणि
४० गोत्रनंग ध्या उत न नंग ध्यां षो कूलदेव्या ना हणि ४१ गोत्र
त्र गोत्रनंग ध्या उत न नंग ध्यो वंस गो ड कूलदेव्या ना हणि सो या
दिहा डी रूपा की छी सो ग ला य १ मिथा स ए घ डो अर दि हा
डी सो नां की घ ण ई अर रा ति ज ग ला गा सो गो धा मे सा ह नं द गो
धो मि र द र च्छा ती ह ष रि उ हार त्रि पे डो प डो सा ह नं द को मा
यो का द्वि दि हा डो स मे त ले ग या त दि सो गो धा हा थो दि र पू
ज बा ला ग्या म र ती व रो ती क ऊ र हा थो पू ज ना व नां द णि को
लि तो ह ष पा वै उ दिन सू र टि प डि ग ई जो म्हा कै ती सा ति ना थ र
जा दि हा डी छे सो सां ति ना थ जी तो ति र्थ कर छै सो ये क हे छे सो
ने लि सुं क हे छै संबत १२४३ ई ह न ह पू जे ला गा नां द णि गो
धा के म मे छै वंस गो धा मे वै क ठे ल्या ती स स्या संबत १२०६ क
साल में त्या को व्यो रो स र दे व को वै रो जि रा दे व म णि दे व सो

जिणदेवकातो गोधाही कहावे अरु मणि देवकाठी ल्या कहावे से
संवत् १२३० कासुं काल पड्यो सवत् १२४२ तां ईबरस १२तां ईसे
सतुकारदीयो ठी लरासंवत् १२४३ देऊरो कारयो वौरन टारक सुज
कीतां कै। ४२ गोत्र अजमेरा उतन अजमेरा उतन अजमेरी वंस
गोडकूल देव्या नादणी। ४३ गोत्र चो धरी वन चौ धस्यो वंस गोहिल
कूल देव्या पद्मावती। ४४ गोत्र सेठी उतन सेठी वंस गोहिल कू
ल देव्या पद्मावती। ४५ गोत्र पाटो धी उतन पाटो धी वंस गोहिल
कूल देव्या पद्मावती। ४६ दूतिक सेठी गोत्र उतन उ सेठी वंस
मेरठा कूल देव्या लोहसली। ४७ गोत्र लुहाड्या उतणि। ४८ गो
त्र नरपाला उतन नरपाला वंस धया कूल देव्या नादणि। ४९ गोत्र
सरबाड्या उतन सरबाड्यो वंस धया कूल देव्या नादणि। ५० गोत्र
दोसी उतन दोस्यो वंस पडियार कूल देव्या चावड्या। ५१ गोत्र
कडवागिर उतन कडवागिर वंस पडियार कूल देव्या चारवा
ड्या। ५२ गोत्र वंदायका उतन वंदायको वंस सोलोत कूल देव्या
चौधिवि दायक प्रतमादो मूपूजे। ५३ गोत्र मोल्या उतन मोल्ये
वंस पडियार कूल देव्या नादणि। ५४ गोत्र बडसालि उतन ब
डसाल्यो वंस पडियार कूल देव्या नादणि। ५५ गोत्र पाड्या उ
तन पांड्यो वंस निरबाण कूल देव्या सरसल। ५६ गोत्र हतिक प
ड्या आमपा उतन पा वड्यो कूल देव्या आमणि आठौ चो द
सिमाय देहिजे व ही बलध वैचे नही। ५७ गोत्र वजमो हाप
उतन वंडेलो वजर हथो सुदार कूल देव्या मोहिणि। ॥ ॥
इत्र है चौरासी जातिक वंस गाव उतन कूल देव्या सुधालि
व्या है ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मन्मथ न धरदा सकत जषडी लषते ।
मनमो हिलो रेसीष सुगुरकी मानिले वै टेक प्रासं सारखारसा ।
गरबिचिकाल अन्नंत गुमायो । नरुजवना मरतन चिन्ता मणि ।
नागि उदे करि मायो । मन व १५ ऊचै कुल अरसंग तिन्ना छी । सम
कि देषि मनमां ही । सब विधि नली बण विना ई मोल बणोता

माही॥मन०॥२॥इसत्रोसरमेधरमनसेया॥विषयतसूरतिमां
 ए॥इसविधिघाटसुहेलाजांन्या॥क्यासमक्यात्वेशांणि॥मन०॥
 कंचननाजनगंगाजलविधि॥षलरंथीक्याकीया॥नस्तवपा
 यविषयुषसेया॥फिदितुसाटाजीया॥मन०॥७॥त्रैसांत्रोसर
 यापत्रजाग्या॥सुषदाबीजनबोया॥विषेविषादतुवारिजसटे
 जनसजोह्वाखुषोयांमन०॥५॥अठपहरमैकहरकरीतै॥सा
 शोयडीगुमाईकोडांमर्याहाथिनआवे॥पावडीचतरांई
 मन०॥३॥पापधहुरावीयननौड॥मानिकसातूमेराफलचन
 दीबारहोयजवरोवैगाबहोतेरा॥मन०॥७॥त्रोसुंसमफिसमफि
 सिहलूकरिलैकचूनलाई॥अजिजगवंतनगईसगईत्रवर
 षिरीकौनाईमन०॥५॥त्रैसैकहकरिगुससमफवे॥जोउरमै
 तननहिधारे॥यासूत्रधिककहाकौरिका॥लाठीलेकरिमारे
 मन०॥२॥उरदीआषिउयाडनवालाबेदनमिलियाकोईभू
 धरबलिवलिसतगुरकी॥दिलदीविदनघोरी॥मन०॥

अबमनमैरैवेसुनिसुनिषसुपानी॥जितवस्वरनांचेकरि
 करिप्रीतिसुपानी॥करिप्रीतिसुपानी॥शिवसुषदानधनजा
 तवहैपंचदिना॥कोडिवररषजीवमौकिसलेवैजितचरणवुज
 जकिवना॥तरपरजायापत्रतिउतिमगर्जसफललाहोलह
 रे॥समफिसमफिप्राणीउरग्यांतीषीषसयांतीमनमेकथनूस
 तितरसेवेसंपतिदेविपराईबोयालूनीयावेजोनिजपूर्वकु
 माई॥पूर्वकुमाईसंपतिपाईदेविदेविमतिफूरिमेंरे॥वोपबं
 वीहसूरलतकनो॥इक्यांआवनकीआ॥सकौरे॥अवनर
 समफिबाधिकचूसोदाज्योपस्त्रिवसुषदरसो॥करिजितधर्मद
 नतपसंजमदेविबिन्नोपरमतितरसो॥२॥जोजगदीसेवेसुंदर
 हेसुषदाईसोसुबनफलिपावेधर्मकल्याडुमभाईसो
 सबधर्मकेलपडुमफलियारतियायकप्रवरिडिसहीते
 जतुरांतुरंगगजनोनिधिदोदहरतनचषंडमई॥रतउनि

पाररूपकीधर्मफलनाईजैजगसुंदरदिष्टवेरे॥३॥ लगेत्रसुंदर
 वेकंटकवानधतेरे। तेरसवेरसवेपापकनकतरकोरे। तेसबम
 पकनकतरकोरैरोगसोगउधतिन्ननए। कचुनसराखीरनहा
 तनपरघरघरफिरतफकीरनए। नूषण्पासपीडाउरुंंतरहो।
 तन्ननादरपगपगमैएसबजातियायफलनाई॥ लगेत्रसुंदर
 जेजगमै॥ ४॥ इसननवतमैबिणदोऊंतुरेतेजानी॥ अबजोना।
 वेवैसोईसाषसयानी। साषसयानीजोमनमानो। बेरबेरअब।
 कौनकहै। सूकरतामूहीफलसुगता। ॥ ५॥ ॥ अपनासुषड।
 षअपसहै। धन्मधन्यजिनमारिग। सुंदरसेवषन। जोगतिऊप
 नमै यातेसमकिपरीसबनूदसदासरनईसनबबनमै। ५॥ इति।
 पूर्ण। अथवीतीलघने। परममाहाउतकष्टादिसुणावीनती
 बरधमानजिनयासिहमारीवीनती। जिणचौबोसुपापनमोसि
 नायको। अरुजकरिोप्रनूसेवगत्रोसरपापको॥ ६॥ अगतवम
 तसारचतुरगतिदुषसह्या। षिनिसमफ्रामिथ्यातनदसुष।
 नालह्या। मन्नजाणमुतिहीएजेदनहीपाईपीकुकनगन।
 न। होयसुजसचुमगाईयो॥ ७॥ गुह्यगारकोगून्होमाफअब।
 कीजिये। तुमहोदीतदयालदयाचितदीजीये। यकचारको
 वारहजारजुगानीये। लीजेमोहिनुबारिजअपनो। जानीयेरमु
 रबभुतिउदप्रनुमेरोअईयो॥ मिथ्यातमरगयोतुमद
 ईयो। जनमसफलनैयोअजिअजिप्रनुमे। दृष्टि। ॥ जन्मज
 न्मकेयायअजिसबमेटिया॥ ८॥ जन्मक्रनरिथअजिनुंअ
 पनो। जानिये। नामकलंकरहितपदअपतुमानिये।
 वरदतुम्हारेअबमोहितारिये॥ भवसमुदतप्रनुजा
 रिये। ५॥ तुमसमत्रोरनकोमदेवन्हीदक्षिया॥ ६॥ हरसुष
 कारीनमहीमया। इधनरंइधनेउसबतुमथावही। तुम
 दननाथपरमदन्तावही। इगुपाधरसुनीवरनेष
 दिही। सबहीकोप्रनुतुमसवपथलगाईया॥ तात्तअरुदेमदां

न प्रभुमेव्यं न कौ। तुम प्रसाद न हरिष न यो निज ध्यान कौ॥७॥
 तु परमा तम दे प्रिनु पदं अ प नौ लिष्ये॥ अत म अ न मो र स अ
 पू र्व गू ण च ष्ये॥ सां सो स ब मे टि ग यो म्हा अ नं द य यो ब्र ल॥
 अ भि ड त नि ज प द नी ज ध ट म ल यो॥ य न मो न मो प्र नु दे ष
 ह रि ष उ रि अ नि कै॥ म ग न न यो नु म नि र ष त जि न प्र नू ज्ञा न्ते
 कौ॥ यो ह न क्ति ग ति त र नारा जौ म नि थ रि ग व ही॥ अ न रा ज क
 ह सु या मु क ति सु ष या व ही॥ ए ॥ १ ॥ इ ति वी न ती संपूर्ण ॥
 अ थ अ जि त ना थ जी की बी न ती टा ल गी त ना थ डी की म
 दे व ध र म गू र ब द के जी॥ सार व ला मु या ई॥ अ जि त ज रा ज
 जी मो हि प्पा रा ला गा जी॥ था रा तो ला गो वा लि हा र्ब ॥ अ ध र
 ती ये मे ह॥ अ जि स थ बि ज या रे॥ रा णी त रा प्र नू कं षि ली यो
 अ व ता रा अ जि त ३॥ न ग र ३॥ अ जो ध्या के वि षे॥ रा जा जि
 त स ठ उ क दार अ जि त २॥ इ च म हो च्च व अ र्था ॥ की यो
 ज न्म त रा र उ च्छा हे॥ अ डि त ४॥ इ इ इ र णा बी न वा प्र नु
 तु म त्रि न व न क रा य॥ अ जि त ५॥ हे म ब र ण का या दि षे॥ प्र
 नू को टि सूर्य च्छ पि जा य॥ अ जि त ६॥ स डि ण स ह स अ ठो
 त रा प्र नू दे ष त अ ध म टि जा ई॥ अ जि त ७॥ सु ष ना ना बि धे
 नो ग या प्र नू क ह त न अ व पा प र॥ अ जि त ८॥ त व म न मे यो
 चि त यो॥ प्र नू लो डि य रि गृ ह नार॥ अ जि त ९॥ त प ध रि क
 रि न जि का ज कौ प्र नू घा त्रा या क र्म प्र जा रि॥ अ डि त १०॥
 त व सु र प नि म लि अ र्था प्र नू स तू ति की री म न ला यो॥ अ
 जि त ११॥ के व ल ज्ञा न नु या प के॥ प्र नू सि द्ध स रू प स म्हा री
 अ डि त १२॥ जे न बि ज न स र णो ली यो रू यो अ नु रू त्र म र य
 द सा र॥ अ जि त १३॥ स्या रा त र ण डि हा ज हो प्र नू न व स मू
 र्कौ या र॥ अ जि त १४॥ ते न र नारा मा य रा प्र नू सु णि सी म न
 र वि च्छा रि॥ अ जि त १५॥ च द क र ण वी न ती प्र नू रा षो
 आ या रा॥ अ जि त १६॥ संपूर्ण ॥ ॥ श्री ॥ ॥ ११॥

नगरतहां देवपूजा आदिआवककेषट्कर्मनिमेंसाध
धतअरदायिकसम्पत्करूपसूर्यकेप्रकासकरिसमूल
तिनष्टकीयोंहैमिथ्यातवअनंतानुबंधीकषायरूपयो
मोहंधकारजानेंत्रैसोंविमलवाहननामां वैश्यअरता
केरतिका रूपकेनुनंहारहेरूपजाकेअरहंतदेवकीपर
मभक्ति कीधरणहारीलक्ष्मीमतीनांमांस्त्रीसोपंचेद्रि
यसंबंधीमतोंहरजोगनीनोगतेंजेदोर्जसेवाणीतिने
केवेतेरेदोर्जनाशितिकेजीवअरिजंजयअमितंजय
तांमांपुत्रनये॥ वज्ररिपितानेंसप्तवर्षकेंअनंतरजेनो
पाध्यायकेसमीपहमदोर्जनिकृप्यासंअनुयोगके
समस्तशास्त्रपढाये॥ वज्ररिपितानेंविद्याध्ययनकी
येपीछेंहमदोर्जनिकोविवाहकरनांविद्यास्यासोह
मनेंगहवासमेंकैदहीनेकाकारणाजोविवाहसोंना
हीकीया॥ वज्रिकुमारकालविषेहीआकाशतलमें
जलकरिअरेजेमेघतिकेपटलतिनकाविलयकहे
एतत्कालविनाशदेधिसंयमधरिगुरुकेंसमीपह
मसमस्तवाह्यअभंतरपरिग्रहकौत्यागकरिजामें
कार्जप्रकारहीश्रवणकहिंघारिप्रकारकेसस्त्रक
रिअंगकाआछादनतांही॥ त्रैसीनिरावरणीभगवत
दीक्षाअंगीकारकरी॥ वज्रिनंदीस्वरहृतअंगीकारक
रिअरचतुरपुरुषतिकेचितरुंरुंमत्तकारकेकरने
वालेत्रैसेंमहाननुग्रतपश्चरणातिकेप्रभावकरिहम
चारिएरिषिनये॥ जोसार्वभोमषट्षंडकीसमस्तधा
राकाईछकछत्रनायकहमारैरुपरिस्नेहकाकारणा
अपनेंपूर्वनवकासंबंधजांणिभावाथी॥ हमदोर्जपूर्व
भवमेंतेरेलघुनाशिये॥ तातेंतेराहमारैर्जपरिअसंत
स्नेहभयाहै॥ वज्रिचक्रवर्तिकेहैहै॥ होतपोधनमोहिके
र्जअद्वितीयसत्पार्थनुपदेशदेर्जमुनिकेहैहै॥ जोराजन

अवेनीतं दीस्वरसूतकी विधिसहितसिद्धचक्रकौपरि
 चक्रवर्तिकही जो आपफुरमाडी कितं नंदीस्वरसूत-
 कार करिसो तो मेरे उं परि आपका वडा प्रसाद भया ॥ परंतु जो
 यती ईसो सूत किएसी विधि करिं सो विधि क्रपा करिक
 हो ॥ तव सुनि कहै हे नौराज नई सजं वृक्षीय तैं आव मो नंदी
 स्वरनामां की यहें ॥ भावार्थ ॥ प्रथम जं वृक्षीय हो ॥ १ ॥ द्वितीय
 यध्यत की खंड है ॥ २ ॥ तृतीय दीप पुष्कर वर है ॥ ३ ॥ चतुर्थी
 दीप वरुण वर है ॥ ४ ॥ पंचम दीप हीर वर है ॥ ५ ॥ षष्ठम दीप
 सुत वर है ॥ ६ ॥ सप्तम दीप ईश्वर वर है ॥ ७ ॥ अष्टम दीप नं
 दीस्वर वर है ॥ ८ ॥ तिस नंदीस्वर दीप विषें अर्हंत देव कै चै-
 त्यालय हे तिन कों स्वरूप कहूं हूं सो तूं सुणि ॥ तिस नंदी
 स्वर दीप कै मध्य पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशा विषें ई
 नहीनांमके धार कते रहते रह्य वत है सब मिलि चारुं दे
 शाके वां वन ॥ ५२ ॥ पर्वत है ॥ तिन पर्वत निकै शिखर परे
 एक एक चै त्यालय है ॥ ते चै त्यालय शो शो योजन के लो
 लां वे है ॥ अरपचास पंचास योजन के चौडे है ॥ अरपि चै
 तरिपि चै तरि योजन शो भायमान है ॥ अरपंचवणमणि
 निकै समूह करे जडित सुवर्ण मरीजिन कै पी व है पुरस
 ह ॥ तिन चै त्यालय तिनमें श्रीमंडपमें गंधकुटी कै मध्य ए
 कसो आवरतन निकै सिंहासन है ॥ तिन एक एक सिंहास
 न उं परि अष्टप्रातिहार्यो निकै रिशो भायमान पंचसैंधु
 षकी उत्तम उंची अर अयनी प्रचूर प्रभा करि जीती है ॥ स्
 र्थचंद्रमांति की क्रांति जिनूतै ॥ औसी अरहंत देव की वज्र
 मणी मयी एक एक प्रतिमां विराजै है ॥ ते प्रतिमां भी एक
 चै त्यालय में एक सों आव है ॥ अरती सही नंदीस्वर दीपक
 चारुं दिशा तिनमें लाष योजन की चौडी लां बीस मचौको ॥
 रहजार योजन की ऊंडी अर वन उपवन निकै रिमंडित ॥
 चारि चारि वावडी है ॥ तहां असाटक कर्तिग फागु एर नती

मांसशुक्लपक्षके अंतके अष्टमीतैलेपपूर्णमांसीलौआ।
 षड्दिनपर्यंतनिरंतरचोसवीप्रहरचेत्यालयनिमेंईजादिका
 देवजिनप्रतिमांति कौ पूजनकरेहैं। तहांसोधर्मस्वर्गकोई
 इहैप्रधानअग्नेस्वरजिनमेंत्रैसेचतुर्णिकायकेदेवदशप्रकार
 रजवनवासीदेवअरआवप्रकारकेचंद्रदेवपांचप्रकार
 केज्योतिषीदेवसोलास्वर्गसंबंधीसोलाप्रकारकेकल्पव
 सीदेवगजतुरंगसिंहशाईलवहलजेसेंकंकडेआदिअ
 पनेंअपनेवांहनर्जेपरिचटे। अरमृदंगढोलवंसरीवीणा
 कुंडलीआदिअनेकप्रकारकेवादित्रनिकानादकरिया
 सकीयाहैदिशानिकामध्यभागजिनमें॥ अरअपनीदे
 वांगनांआदिपरिवारकरिवेशितचतुर्णिकायकेदेवते
 नकरिजितमंदिरनिमेंआयकरिवजूरिएकसोंआवसुष
 णकेकलसनिमेंपंचमांसीरसमुद्रकोजलत्यायसिति
 प्रतिमांति कौंअभिषेककरतेजये॥ वजूरिजलचंद्रनअ
 क्षतपुष्पतेवेददीपधूपफलईनअष्टद्वयतिनें पूजना
 करिअर्घ्यदायवजूरिजितेइदेवकेगुणांनुवादकरिग
 नितस्तोत्रपाठपदिकरिवतीसईजिनकरिसहितचतु
 र्णिकायकेदेवअपनेंस्थानकजायहैं॥ न्योसर्वभोग्यो
 विधिदेवनिनेंआचरनकरीसोविधितुंजीकरिसोविधे
 जैसेहैंतैसेंतोहिकरुंसीतुंरुंणि॥ असाठमेंकातीमेंफा
 गुणमेंईनतीनमांसकीशुक्लपक्षविषेअष्टदिनपर्यंत
 यहव्रतकरिएहैसोकेसेंकरिएहैसोंतुंरुंणि॥ सप्तमीके
 दितस्नानकरिअष्टद्वयनिनेंजिनैइदेवकों पूजनकरिए
 कवारभोजनकरे॥ वजूरिपवित्रहोयदेवशास्त्रगुरुनि
 कौ पूजनकरिपीछेसंध्यासमयकीसामायिककरिव
 जूरिगुरुनिकेंसमीपअष्टदिनलोब्रह्मचर्यव्रतअरुं
 मिपरिश्रयनअरपत्रशाकादिकतिकात्यागअंगीका
 रकरिअरअष्टमीकोंनुपवाशाग्रहणकरिधर्मध्यानेतैस

समीकीरात्रिद्यतीतकरे। वज्ररिअष्टमीकेदिनप्रभातत
 जिनेंइदेवकेमंदिरमेंमंडपरचनाकरे। अरमंडपके
 रूनादिपांचमेरनिकास्थापनाकरे। अरतिनपंचमे
 नतिकीकटनीतिपरिजिनविंवतिकुंस्थापनकरे।
 ताकेअनंतरस्तांनकरिअष्टविधिपूजानकीप्राशुकसा
 सहितचेल्पालयमेंजाय॥ अरजिनेंइदेवकेप्रतिविंवनि
 कोअभिषेककरिपीछेजलचंदनअक्षतपुष्पनेवेद्यदी
 पधूपफलईनअष्टइव्यनितैजिनेंइदेवकोंपूजनकरिम
 अरमहार्घसहिततीनप्रक्षणांदेयकरिजिनेंइदेवनिके
 चरणतिकेअयनागमेंमहाअर्घ्यचढ़ायपीछेयहचोईस
 तीर्थकरदेवतिकीजयमालाकोंपावपदिये। सोसंस्कृत
 कथाकारकहेहैं॥ यहयावहमायेरुतिकरिविरचितहैं
 ॥ अथजयमालालिष्यते॥ ईकती॥ सा॥ ३३॥ नमस्किहे॥
 कामकोकविनद्यासकारुंयेनसहेजात ताकूमूलतै
 विघातिनरेपोभूममनको। जिनकेनांसमरणातैअने
 कभवकेसंचितपापआपदविनशासवनके। रजनी
 कहौआधरछायोअतिउनिवारजंगतदिवसकारन
 रेजेनहैनकों॥ पछडीछंद। हृषभदेवकुंचनछविछो
 जो॥ धनुषपांचसेतुंगविराजै। हृषभचिक्रपादनि तलसे
 हेवंशइहाकजिनगमनसोहैं॥ १॥ अजितजिनेंशकनत
 नराजैसदाचारिसैंधनुषविराजै। गजलक्षनमनआ
 नंदकारी॥ वंशइहाककियोअविकारी॥ २॥ संभवजिन
 तनहेमसमांत॥ धनुषचारिसैंतुंगप्रमांत॥ तुरंगचिक्र
 सबकोंसुखदाता॥ वंशइहाककियोजंगरघ्याता॥ ३॥ शं
 तकृंभतनजितअभनंदन। सादातीनसैंईसुअधर्मज॥
 न। बोदरलक्षएमदत्तलराजै। वंशइहाकतिलकश्रीव।
 ताजै॥ ४॥ सुमतिजिनेंशहेमतनभासै। धनुषतीनसैंतुंग।
 प्रकासैकोंकचिक्रसबजनसुखदाशी॥ वंशइहाकस्त्रि

॥ अथ आरती दसक लिख्यते ॥ इह विधमंगल आरती कीजे ॥ पंचपरा
 पद जनसुखीजे इह विधमंगल आरती कीजे ॥ अथ अरती श्रीजि
 नराजा ॥ नवजलपारगतारजिहाजा ॥ इह विधमंगल आरती कीजे ॥ यज्ञी
 आरती सिधनकेरी ॥ सुमिरनकरतमिदैनवफेरी ॥ इह विधमंगल आरती
 कीजे ॥ तीजी आरती सरि मुक्तिदा ॥ जनमजनमपुषइरि करिंदा ॥ इह वि
 धिमंगल आरती कीजे ॥ ३ ॥ चौथी आरती श्रीउवजाया ॥ दरसनदेघतपा
 पपलाया ॥ इह विधमंगल आरती कीजे ॥ पांचमी आरती साधतुमारी कु
 मतिविनासनसिक्त्रधिकारी ॥ इह विधमंगल आरती कीजे ॥ छठी ग्या
 रे प्रतिमांधारी ॥ आरती श्रीजिनवाणी ॥ द्यांनतसुरगमुकतसुषदांनी ॥ इह वि
 धिमंगल आरती कीजे ॥ १ ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ कर्मदलनसं
 ततिहितकारी ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ सुरनरअसुरकरततुम
 सेवा ॥ तुमहिदेवेदेवतिकेदेवा आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ अंबमहा
 वृतदुधरधारे रागदोषघरनांमविनारे ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥
 नवजयनीतसराणजे आयेते परमारथपंथलगाये ॥ आरती श्रीजि
 नराजतुम्हारी ॥ जोतुमनामजपैमनमाही ॥ जनममरननयजाकौंन
 ही ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ समोसराणसंपूर्णसोनाजीतेको
 धमांतबललोना ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ तुमगुणहमकैसैक
 रियावै ॥ गांधरकहतिपारनहिपावै ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी
 क्युणासागरकरुणाकीजे ॥ द्यांनतसेवककौसुषदीजे ॥ आरती श्री
 जिनराजतुम्हारी ॥ २ ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ अधमनुधार
 एअतमकाजाकी ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ जालछीकेसवअ
 निलाषी ॥ सोसाधनकर्हमवतनाही ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥
 सवजगजीतिलियोजिननारी ॥ सोसाधननागनिवतछारी ॥ आरती
 कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ विषयनसवजियवोरेकीजे ॥ तेसाधनविषव
 ततजदीजे ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ नूकोराजचहतसवप्राणी
 जीरनिति एवत्पागतधमनी ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ शत्रुमित्रुड
 षसुषसमानै ॥ लानअलानवरावरजानै ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥
 होकाययीहरवृत्तधारे ॥ सवकौआपसमातनिहारे ॥ आरती कीजे श्री

मुतिराजकी॥ इह आरती पढ़ै जोगावै॥ ध्यानतमनवंचितफलपावै॥
 किहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ आत्मत्रकथजसबुधनमेरी॥ किह
 विध आरती करौ प्रभुतेरी॥ समुद्रविजै सुतरजमतबारी॥ यौ कहियु
 तिनहि होयतुमारी॥ किहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ कोटिघंजवेदी
 छविसारी॥ समोसरणथुततुमतेन्यारी॥ किहविध आरती करौ प्रभु
 तेरी॥ आरज्ञानजुततिनकेखामी॥ सेवकके प्रभु॥ इहवचषामी॥ कि
 हविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ मुनिके वचननविकसिजजाही॥ सोपुदा
 गलमैतुमगुणनाही॥ किहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ आतमजोतसमा
 नवतानुं॥ रविससिदीपकमूढकर्क॥ किहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥
 नमतत्रिजापतिसोजाउनकी॥ तुमसोजातुममैतिजगुनकी॥ किहविध
 आरती करौ प्रभुतेरी॥ आनसिंघमहारजागावै॥ तुममहिमांतुमहीवा
 वनिआवै॥ किहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ अथनिश्चयआरे इहवि
 धआरती करौ प्रभुतेरी॥ अमलअवाधिततिजगुणकेरी॥ इहविध
 आरती करौ प्रभुतेरी॥ ज्ञानदरससुषवलगुणधारी॥ परिमातमअवे
 कलअविकारी॥ इहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ क्रोधआदिरागदि
 नतेरी॥ जनमजरामृतकर्मननैरे॥ इहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ अवपु
 अबंधकरणसुषनाही॥ अनपअनाकुलसिवपदवासी॥ इहविध
 रती करौ प्रभुतेरी॥ रूपनरेषननेषनकोइ॥ चितमूरतिमूरतिनहिहोइ
 इहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ अलअप्रनादिअनंतअरोगी॥ सिधवि
 सुधसुआतमजोगी॥ गुनअनतकिमवचनवतावै॥ दीपचंदनविजा
 वनजावै॥ इहविध आरती करौ प्रभुतेरी॥ ५॥ आगै आत्माकी आरती
 करौ आरती आत्मदेवा॥ गुणपरजापअनंतअनेवा॥ करुआरती आ
 त्मदेवा॥ जामैसवजगवहजगामहि॥ वसतजगतमैजगसमनाही॥ क
 इआरती आत्मदेवा॥ ब्रह्मा विष्णुमहेश्वरधपावै॥ साथसकलजिहकेगुण
 गावै॥ करुआरती आत्मदेवा॥ विनजानैजियचिरनवडीले॥ जिहजानै
 नसिवपदषोलै॥ शिष्यजुनैवचनकिरि कहिये॥ वचनातीतदसातिस
 लहिये॥ करुआरती आत्मदेवा॥ सुपरजेदकोषेदुछेदा॥ आप्त
 पमैआपनिवेदा॥ करुआरती आत्मदेवा॥ सोपरमातमपदसुष
 ३॥ करुआरती आत्मदेवा॥ इतीअवीधिविधमोहारी॥ सोतिरुकालकरमसुखार

ताहोहिविहारीदासविष्णुता॥ करौआरतीआत्मदेवावा॥६॥ गोरीए
 गआरती॥ कहलैपूजाजागतवढावैजोगवस्तकहंतैलेआवै
 कहलैपूजाजागतवढावै॥हीखदधिजलमेरडलावैसोगिरिनी
 रकहांहमपवै॥२॥ कहलैपूजाजागतवढावैसमोसरएविधसर्वव
 नावैसोनवतैमुषकादिषलवै॥३॥ कहलैपूजाजागतवढावैजलफ
 सुरगलेकतैलावै॥सोहमेतहिकहचढावै॥कहलैपूजाजागतवढ
 वै॥नचैगावैवीनवजावै॥सोनसकतिकिमपुन्यउपावै॥४॥ कहलैपू
 जाजागतवढावै॥शदशांगश्रुतजोपुतगावै॥सोहमबुद्धिनकहावता
 वै॥आरध्यांतधरानधरध्यावै॥सोथिरतानहिसयलकहावै॥घांतत
 सीतसहितसिरनवै॥जनमनतमयहृत्तककमावै॥५॥ शतिपरागगोरी॥
 करौआरतीवर्धमानकी॥पावापुरनिखानथानकी॥ करौआरतीवि
 र्धमानकी॥राविनांसवजगजनतारे॥दोषविनांसवकर्मविदारेक
 रोआरतीवर्धमानकी॥२॥सीलधरंधरसिवतियजोगी॥मनवचका
 यनकहियेजोगी॥३॥ करौआरतीवर्धमानकी॥रतनत्रयनिधिपर
 थदहारी॥पानसुनैजनव्रतधारी॥४॥ करौआरतीवर्धमानकी॥लोक
 आलोक्याप्रतिजमांही॥सुषमैइंडीसुषडघनांही॥५॥ करौआरती
 वर्धमानकी॥पंचकल्याणकपूजविगामी॥विमलदिगंबरअंतरसा
 गी॥६॥ करौआरतीवर्धमानकीगुनमनिनृषननृषनस्वामी॥जागत
 उदासजांतखंभी॥७॥ करौआरतीवर्धमानकी॥कहैकहांलौतु
 मसवजातै॥घांततकीअनलाघप्रमाने॥८॥ करौआरतीवर्धमान
 की॥शतिश्रीमहावीरजीकीआरतीसंपूर्ण॥कहलैआरतीजागत
 करैजी॥सुमलायकनहिहाथपैरैजी॥कहलैआरतीजागतकरैजी॥
 धीखलधिकोनीरचढायै॥कहलैदेवैमेंहीजललायै॥कहलैआ
 रतीजागतकरैजी॥सुजलमुक्ताफलसूं पूजे॥हमपैतंडलऔरनइ
 कहलैआरतीजागतकरैजी॥कल्पवृक्षफलफूलतुहारैसिवकक
 लेनगातविथौषतसुंदनआगरनलागे॥कौणसुगंधधैरुमआगे॥
 कहलैआरतीजागतकरैजी॥नषसमकोदिचंदरवितांही॥दीपका
 जोतिकहौ॥किहमांही॥पानसुधानैजनव्रतधारी॥नेवजकहाकौ
 संसारी॥कहलैआरतीजागतकरैजी॥घानैसकलसमानचढा

क्रियातिहारितिसुषपावैकहा लैआरतीनगतकरैजी॥ इति संपूर्ण॥ आरती
मंगलआरती आतमरांम॥ तनमंदिरमनउत्तमवाम॥ समरसज
लचंदनआनंद॥ तंडलतत्वस्वरूपमंदा॥ यसमैसारफूलनिकीमाल
अननौमुप्रनेवजजरियाला॥ मंगलआरती आतमरांम दीपक
ग्यानध्यांतकीधूप॥ तिरमलनावमहाफलरूप॥ मंगलआरती आत
मरांम सुगुनजविकजनइकरालीन॥ तिहचैनौध्यांनगतपूर्वीनी॥ मंग
लआरती आतमरांम॥ धततउत्तसाहसुहनहदगांन॥ परमसमाधिनि
रतपरधान॥ मंगलआरती आतमरांम॥ घाहजआतमजावचवस
अंतरकैपरमात्मधावा॥ मंगलआरती आतमरांम॥ साहवसेवकनेदमि
नाय॥ घ्यांनताकमेकहेजाय॥ मंगलआरती आतमरांम॥ इति आर
ती संपूर्ण॥ अथपार्श्वनाथजीकीस्तवनमुयंगप्रयाताछंद॥ १॥
करिदंफुनिदंसुरिदंअधीसं॥ सतइस्वपूजेनजेनायसीसं॥ मुतिदंगतिदं
नैजेरहाथं॥ नमोदिवदेवंसदापार्श्वनाथ॥ जिदंमृगिदंगसोतूधु
डावै॥ महाआगतेंनागतेंतूववै॥ महानीरतैजुधतैतूवचोवै॥ म
हारोगतैबंधतैतूषुलवै॥ दुषीउपहस्तासुषीमुप्रकरता॥ सेवसे
वताकौमहानंदनती॥ हुरैजहराक्षसमृतपिसाचं॥ विषमाकती
विघ्ननवैनेअवाचं॥ शदलिडीतिकोदर्वकेदांनदीने॥ अपूत्रीतिको
तैनेलेपुत्रकीनेमहासंकर्तौतैनिकालैविद्यातासवैसंपदामर्वकौ
दिहदाता॥ महाचौरकेवजुकोनैनिवागेमहापौनकेपुंजमैतूजवारे॥
महाक्रोधकीआगकौमैप्रधारा॥ महालेनसैलेसहीवजुजागा॥ ५॥
महामोहअंधेरकौं ग्यातनातं॥ महाकर्मकंतारकौदोषप्रधानं कि
थेनागना॥ श्रीअधोलोकस्वामी॥ हस्योमानतैदैतकैकैअकामी॥ व
तुहीकल्पद्वंदुहीकामधेना॥ तुहीदिअचिंतामनंतासएनांमसुन
ककेउप्रसेतीबुडावै॥ महास्वर्गमैमोक्षमैतूवसावै॥ ७॥ करैलोहके
हेमपांघाननामी॥ रतेनांमसोकोनहोयमोक्षगामी॥ करैसेवता
कीकरैदेवसेवा॥ सुतेवेनसेईलहैज्ञाननेवा॥ ८॥ जपेजापताकौ
कहापायलागै॥ ९॥ धरध्यांनताकेसवेदोषनागे॥ विनांतोहिजानै
धरेनोतोयनेरोतिहारेकपातैसरेकाजमेरो॥ १०॥ दोहाः ॥ गणध
इधनकरसकौ॥ तुमवीनतीनमवांता॥ घ्यानतप्रीतिनिहारकौंकीजि॥
आपसमानं॥ ११॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्तवनसंपूर्ण॥ छंदः हि०॥

ॐ नमः सिद्धान्तमस्कारः अथ श्रीजिनमगवानदेवाधिदेवकौपूजन

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ श्रीजिनपूजाविधिः

कात्रर्थमूलसंयुक्तकरिणहैवालीषणहै	परमात्मादेवजोगवानक्षोनमस्कार
----------------------------------	------------------------------

न अथोच्छ्वेलिषते ॥ परमात्मानमः श्लो

नेजिनतुमजयवंताहोहु जयवंताहोहु जयवंताहोहु नेसेतीनवारकहासर्वोक्त <small>रणनिमि</small>	नेजिनतुमकौ नमस्कारहोहु श्रैसेतीनवार	कह्योअतिनक्ति नावेनिकेप्राट	नेनिमतेनमस्कार
---	---	--------------------------------	----------------

नेजयजयजयनमोस्त नमोस्त नमोस्त

नमस्कारहोहुअरिहंतनिके	नमस्कारहोहु सिद्धनि रुं	नमस्कारहोहुआच र्यनिके
-----------------------	----------------------------	--------------------------

नमोअरहंताणं ॥ एमोसिद्धाणं ॥ एमोआय

नमस्कारहोहुउपाध्यायनिके	नमस्कारहोहुलोकविधैसम
-------------------------	----------------------

शियाणं ॥ एमोउवशायाणं ॥ एमोलोएसवा

ससाधुनिके	आरिपदार्थहैमंगलरूपहै	अरिहंतमंगलकारीहै
-----------	----------------------	------------------

साहुणं ॥ चतारिमंगलं ॥ अरहंतमंगलं ॥

सिद्धमंगलरूपहै	सर्वमुनिराजमंगलक रुहै	केवलासर्वस्कारकरिक साहै
----------------	--------------------------	----------------------------

सिद्धमंगलं ॥ साहुमंगलं ॥ १ ॥ केवलपणं

धर्ममालकारा

गोहितकृष्टउत्तमहै

अरहतलोकविषेउत्त
महै

श्वर
२५

मोमंगलं॥५॥ चत्तारलोगुत्तमा॥ अरहतलोगु

सिखलोकविषेउत्तमहै

मुनिलोकविषेउत्तमहै

सर्वज्ञ

तमा॥ सिखलोगुत्तमा॥ साङ्गलोगुत्तमाकेव

करिकला

धर्मलोकविषेउत्तमहै

चारिपदार्यनिहीकैसर

लेपमतो॥ धर्मो लो गुत्तमा॥२॥ चत्तारिसरणं

एभैप्रापतिहोतहे

अरहतनिके सरणप्राप्तहोऊ

सिखनिके

पञ्चजामि॥ अरहतसरणंपञ्चजामि॥ सिख

सरणप्राप्तहोऊ

साधुमुनिके सरणप्राप्तहोऊ

केवल

सरणंपञ्चजामि॥ साङ्गसरणंपञ्चजामिकेव

लीकरिजावित धर्म कैसरणप्राप्तहोहो

३

अरिहं

लिपणिलो॥ धर्मो सरणंपञ्चजामि॥ ३॥ उं न

तको नमस्कारहोहो

वासना रीरकरिपवित्रहोऊ अथवा
अपवित्रहोहुअथवाअधिरहोऊ

औरएक
तत्रायन

मोहतेस्वाहा॥ अपवित्रपवित्रोवा॥ स्वस्थिते ।

करिधिरहोऽथवात्र
धिरहोऽ

जोकोईपुरुषपंचमसकार मंत्रध्यावैहै

सोसर्वपाप

इस्थितोपिवा॥ ध्यायेत्पंचमसकारान्॥ सर्वपा

निकरिधुटतहैकेर
रुकहैहै

४

जलादिकवाशक्तिकेअनावतेअ
पवित्रहोऊचापवित्रहोऊ

औरसमस्तो

पैःप्रमुच्यते॥४॥ अपवित्रः पवित्रोवा॥ सर्वा

गादिअरस्याकोंशासहोऊ

जोजीवपरमात्माकेवलीअरहंतनका
सुमरणकरैहै

सोबौरअमं

स्यांगतोपिवा॥ यः स्मरेत्परमात्मानं॥ सर्वा

हीवितहीहैसवपवितातिस
ऊमई

५

किसीअन्यकरिषेअनजाययहै
औसामसकारमंत्र

समस्तसुख

अंतरोश्रुचिः॥ ५॥ अपराजितमंत्रोयं॥ सर्वेचि

केविघनकरणकरिकर
एनिकादिनासकहै

औरसमस्तसुखदायकपाप
कानासकमंगलकार्यविषै

अथममुख्यमंगलय
हीकस्रोहै

घनविनाशने॥ मंगलेषुचसर्वेषु॥ प्रथममंगल

६

पंचपरमेष्ठीकानमस्काररूपमं
त्र

समस्तपापनिकाशाकर
णहारहै

मतः॥ ६॥ एसोपंचणमोयारो॥ सबपापपणा॥

औरसमस्तमंगलकार्यजिदि
धै

अथममुख्ययहीमंगलहै

स एणो॥ मंगलाणंचसर्वेसि॥ पढमहोऽमंगलं ७

अद्वैतसिद्धिप्रकाशसंस्कृत
संस्कृत

आहुतकेवलीका अर्थका
अद्वैत

सिद्धिप्रकाश
उक्तप्रकारे

ज्ञाद्वय

अद्वैतमित्यन्तरं बुद्धिः ॥ वाचिकं परमेष्ठीनः ॥ सिद्धिचक्र

१५५

अपनामममोर्तमिबद्धो
अपनामममोर्तमिबद्धो
वदोऽह

सोऽनदेभ्यश्चतुष्टयसंयुक्त
निकोत्रियोगकरिभेनममकार
करोऽह

ज्ञानावरणत्रा

स्यसद्दी। जं॥ सर्वतः प्राणामांमहं। ए॥ कर्माष्टक

द्विअष्टकमेतिका
रिसर्वेयारहितन
एह

कर्मरहित्वात्मस्वप्नमोक्षति
कीज्ञानादिलक्ष्मीसोदीहेचिक्त
जाके

सम्पत्त्याद्विअष्ट

विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीतिकेतनं सम्पत्कादि

गुणनरुमिसंयुक्तहै

असेविष्टसमूहनिर्कोमनम
सकारकरोहो

वाच्यासंतरलक्षी
युक्तजेतीर्थकर

गुणोपेतं। सिद्धचक्रं नमामहं। ए॥ श्रीमज्जितैश्चम

तिनकोत्रियोगकरिनमस्कार
करिकेसेदेतीर्थकरत्रिलोक
कास्वामीहै

अनेकात्मतकाना
यकस्वामीहै

अनंतज्ञानदिचतुष्ट
यकरिपूज्यहै

निबंधजात्रयेरीत्पाहादनायकमनेतचउष्ट

उक्तप्रमुलसंघसंबंधीयेसम्पत्कहैतीनकोत्रियुणउप
जावणकेकारणहै

तिनकोम

यार्है। श्रीमूक्तसंघसुदृशासुकृतेकहै। जैने

मस्कारकरितीर्थकरनिकीपूजाकारिधा
नयप्रसन्नमोक्षरिकीजिएहै

कल्याण
होऊ

तीनलोककोशिष्वा
दायकवडेगुरुत्रैसे

यज्ञविधिरिप्रमयन्मध्य १५। स्वस्तित्रिकगुरुवे

जुगलधरादिपूजार्थकर

कल्याण होऊ

आपणाजुचैतमनिज स्वरूप कीजुअहुत महिमाका प्रादनातिसविधेनलाधिररूपम यातिननिमते

जितपुंगवाय॥ स्वस्तिस्वनाचमहिमोदयसुस्थिताय

कल्याण होऊ	केवलज्ञानप्रकासकेनिजस्वरूपवत्प्रौखत कष्टकेवलदर्शनस्वरूपहेतिनिनिमति	कल्याणहोऊआनं दरसपूर्ण
------------	--	-----------------------

स्वस्तिप्रकाससहजोर्तितदमप्राय स्वस्तिप्रसन्न

मनोहरआश्रुयकारीकेवलज्ञान वासमवसरणविचिनवयुक्तहे	११	कल्याण करऊ	अपनेप्रदेशनिमोउगत काममलरहितकेवल
--	----	------------	---------------------------------

ललिताहुतवैतयाय॥ ११॥ स्वस्तिबुलहिमलवो

ज्ञानतिसप्रश्रुतकाश्रा वीचंडमासमानहेतिन निमति	कल्याण करऊ	अपनानि जस्वरूप	परद्वयकास्वरूप तिसकेप्रतिज्ञया नकरि	प्रकास कोकरे हे
---	------------	----------------	-------------------------------------	-----------------

धसुधान्नवाय स्वस्तिस्वनाचपरमवविनासक

कल्याण करऊ	तीनलोकविधैकैल्याहेचैतमज्ञानभावका उपजनाजिनके	कल्याणकरऊ
------------	---	-----------

य॥ स्वस्तित्रिलोकविततैकचिडुजमाय॥ स्वस्तित्रि

तीनकालसंबंधीसकलजावनिविधैज्ञान करिविस्तारपायौहे	१२	वासद्वयक्रियाकी शुधताकोश्रांकार
--	----	---------------------------------

कालसकलायतविस्तृताय॥ १२॥ इमस्यशुधे

करिकैसीहेजैसीजिनदेवसैकहीहे	अंतरंगपरणमनकीशु धताको
----------------------------	-----------------------

मधि... मयथातरूपं॥ नावस्यशुधेमधे

वहुतशुधताकोश्राघहोने काहेअनिलाषनामेंश्रेषा जानता	सोवाससाप्रथीउपकारणाश्रा लेवनतिके	नानाप्रकारे न कोअलेवन करि
--	----------------------------------	---------------------------

कामधिगुडकाम॥ आलेवनमेविविधान्यवलं

हेपुराणपुरुषानमेपवित्रउत्तम

जोबसुतिनको
निश्चैकरि

समस्तनिके
यहमेएकही

पुराणयु

निघस्तनिनूतमखेलामय

	यहप्रत्यक्षप्रकासरूपनिर्मलकेवलज्ञानरूपअग्नि विधे	पवि त्रज्ञे
--	---	----------------

मेकएवाअस्मिन्ज्वलदिमलकेवलवोधवज्ञो॥पु

होइसौ	समस्तह्रएकमनहोयकरिहोमकरे ॐ	१५	विधिपूर्वकपूजनकी
-------	-------------------------------	----	------------------

एणसमग्रमहमेकमनाजहोमि॥१५५॥विधिपद्म

प्रतिशानिमित्त	जिनविबन्धो	फूलनिकीअंजुलीक्षेपणी सोनायु कलश ३५	धरम
----------------	------------	--	-----

तिज्ञानयजिनप्रतिमायेपरिपुष्पाजलिच्छिषेत॥श्री

करिषोमा यमानति निस्वामी	कल्याण करे	कामक्रोधादिकरिजी तेन्नाएत्रैसेसामी	मुखकारीहेउतपतिजि नकैसैकल्याणकरऊ	सर्व गपए
-------------------------------	---------------	---------------------------------------	------------------------------------	-------------

इषमस्वस्तिस्वस्तिअजितः॥श्रीसंभवस्वस्तिस्वस्ति

करेआनेदकारी	उत्तकृष्टचेतनपरिलि नकेजतरि	कमलनिकीसीकांति हेजिनकी
-------------	-------------------------------	---------------------------

श्रीअजितेदतः॥श्रीसुमतिस्वस्ति॥स्वस्तिश्रीपद्मशुः

नलाहेनिकटजिनका त्रैसेसामी	चंद्रमाकीसीकांतिहेजिन कीउज्जल	फूलबनहेसुगंधउ ज्जलदंतजिनके
------------------------------	----------------------------------	-------------------------------

श्रीसुयाशुःस्वस्ति॥स्वस्तिश्रीचंद्रशुः॥श्रीपुष्पदंतः॥

दानुसारी॥ चतुर्विधं बुधेवल्लं धाता॥ स्वस्ति ॥ १ ॥ संस्पृशेत् ॥

संप्रवाणं च इरा॥ ह्यस्वादेनाघ्राणविलोकनानि दिव्यान्मत्सि
नवलाहदंतः स्वस्ति ॥ २ ॥ प्रज्ञाश्यानाश्रवणासमृद्धा॥ प्रत्येकबुध
दशासर्वपूर्वैः पूर्वादिनोष्टौ गतिः मन्त्रविज्ञा स्वस्तिकियापथः ॥ ३ ॥

निमिदहाः कुशला महिम्नि॥ लघिम्नि सक्ताः कृतिनो गरीमि

मनोवपूर्वांगुले लिनश्रुतितं स्वस्तिक्रिया ॥ ४ ॥ सकामरूपित्वा
वशित्वमेव प्रकाममंतर्विमश्रुतिमात्रा जंघावलिश्रेणि फ
लाबुतनु॥ प्रसुतबीजां क्रुरुचारुणां नौगणिसैरविहारिण

श्रु स्वस्ति ॥ १ ॥ गद्गी सच तस च मुहा लपो ॥ गुा घोरंत पो धोरया
क्रमशः ॥ ३ ॥ हरिपरघोरया एण श्वरः त ॥ स्वस्ति ॥ १ ॥ ३ ॥ आमरा

सर्वोपधयस्तयात्र ॥ विषं विषाट्टि विषं विषाश्र स्वस्ति निवि
ज ह्वेम ल्लैषधिश्च ॥ स्वस्तिक्रियासु परमं प्रयोत ॥ एहीरिश्च
वलोत्रप्रतं प्रवंतो मघुश्च प्रवंतो पमृतं प्रवंतः ॥ अहीण संवास

महानसाम् ॥ स्वस्ति ॥ १ ॥ २ ॥ इति स्वस्ति मंगल विधानं ॥ अथ दे
अवदेवसां स्त्रगुरुजाका शारं करिषि समस्तयुणपर्पायुक्तै समचकेज

वसास्त्रगुरुपूजा प्रारंभ्यते ॥ सारच्चः सरवज्ञनाथ ॥ सकलसु

नूतुहारे असे ॥ सा ॥ श्रीरसमस्तप्राणी ॥ निकापपकशिपु ॥ केहरण हुरे हे ॥ तीनलोकविषे कैलाहे ॥ यशजिनका

पुनरता ॥ पापसतापहत्ता ॥ त्रैलोक्याक्रांतिकीर्तिः क्ष

नाशकीय है काम रूपवैरी जिनका	घातीया कर्मकानाश कीय है जिन	लक्ष्मी करिषु कहे	मोहकीजुसंपदा सोही नईव लक्ष्मी तिसके हस्तकरिउपशदेकं व
--------------------------------	--------------------------------	-------------------------	--

तमदनरिपुघाते कर्मश्रणासः ॥ श्रीमान्निर्वाणसंपहर

जिनका	श्रीरजले है कं जिनके	श्रीसेने इहादि क	तिनकरिवंदनी कहे चरणि नका	श्रीवेजिन जेयवतहो इगणधर दिकतिक
-------	----------------------	------------------------	--------------------------------	---

युवाते करालीठकव सुकवै ॥ देवैर्धृपादे जयति

स्वामी है	याई है पंचकल्याणनिवि धै पूजा जिनके श्रीसे है	जयवतहो ३	जो सो जायमान आत्माकी वतरा रीरकी कानिके स्वामी है
-----------	---	----------	---

जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूज्यः ॥ जयजयजय श्रीसत्कांति

ध्याजलिहिपेताश्रुतपुज

२५३

गुरुनिकेचरणकमलका कैसेहेगुरु तप
जुगलं गुरुनिका

नेगंभीरहे

ज्यस्य॥पादपद्मयुगंगुरोगतपःश्राप्तप्रतिष्ठस्यारिष्ठ

उक्तष्टहैस्वरूपजिन कैसाकहिकरिगुरुचरणश्रांगेफूलझैपै
का

२

हात्मतः॥इत्सुचार्यगुरुचरणेषपरिशुष्मा

गुरुचरणपुजवेकीप्रतिज्ञाकरि

ईहे धरणेइ

क्षपता॥गुरुचरणपुजनप्रतिज्ञाय॥देवेइ

एजातिनिकरिवंदनीक है उक्तष्टहैच एकमलपद्म वीजिनकी सोजायमानउक्तष्ट श्राकृतिप्रदरकुल जिनकातिनको

नरइवद्यान्शुभसदान्मोहितशारवर्णान्॥इघ्रादि

एजि श्रैसंजलस मरुनकीर देवशास्त्र तीर्थकर गुरु पूजतहोमै

दिगुणैर्जलोधै॥जिनैइसिधांतयतीनयजे ॥३

श्रीपमानपंमब्रह्मअनेतानंतज्ञानशक्तिकेधारकतिनकोनमस्कारकरोहै

हैश्रीपर श्रीश्रीशुभब्रह्मणेनतानंतज्ञानशक्तयेनमःज

सुकुनाशनिमति अहंतनिकोंजलचढावोहै शक्तिमंत्रः

मत्क नाशनायाअहंशुजलंनिघ्रापामीतिस्वाहा

श्रीजग
तकाना
य

हेजिनतुम
हीहोना

नाथहोस्वामी
हो

संसारसमुद्रमेंडुवताप्र
एनिके

जजोजातापते। जयजय नवीनेस्वामीनयानसिमज्जतां।

मोरा मोहत्रंघकारमेठनिनिमतिप्रजातकारी १
जा

हेजिननाथतुमकं

जयजयमहामोहघातप्रजातकतेर्वन। जयजयजिनेशरत्

होस्वामीप्रधमैकरोहो

श्रैसैपदकरिदेवचरआगैफूलनि

नाथप्रसीदकरोमंहरा। श्रुचरिजेजिनचरणगृहप

कीअंजलिदोषणी

देवचरणपूजतेकीप्रतिज्ञाकरी

रिघुष्याजलिदियेल। जिनचरणपूजनप्रतिज्ञा।।

हेदेव हेसोनायमान
सरस्वतीदेवी

हेजावती
आवानक
रिउपजा

तुमारेचरणसोईकम
लनएतितकाजुगल
विषे

श्राप्त
होऊ

देविश्रीश्रुतदेवतनगावंतित्वत्पादपंकेरुह। इंदेयां

सोअमणपणाकौंपास
होऊ

श्रीकह
तहो

जकेक
रि

मैयहंप्रार्थना
करोहो

हेमातामैरुद
यविषे

मि। सि। ली। मुखत्वमपरंनक्त्यामयाप्रार्थते। मातश्रेतसि

तुमवास
करोमै

जिनमुखकरिउपजे
होश्रैसेतुमनिरतर

रक्षाकरोमुफ
को

समकके
दनेकरि

मुऊवि ३स
धे

तिष्ठमेजिनमुखोऽहूतेसदात्रायहिमां। दृग्दातेनमयिप्रसि

नहोऊयांनैपूजनहो

अव

१

श्रैसैकहिकरिपुस्तकसास्त्र
मेंरूलयेपण

धनवति। सपूज्यामोथना। य। इ। सुवार्थेषुस्तकाग्रहपरिपु

दानुसारी॥ चतुर्विधं बुधैव लंघना॥ स्वस्ति०॥ संस्पर्शनं॥

सश्रवणं च दृश॥ हास्वादनं घ्राणविलोकनानि दिव्यान्मतिः
नवलाघदंतः॥ स्वस्ति०॥ प्रज्ञाप्रधानाश्रवणासमृद्धा॥ प्रत्येकबुद्धिः
दशसर्वपूर्वैः॥ पूर्वोदिनोद्योगनिर्मत्तविज्ञास्वस्तिक्रियापथाश्च

निम्निदक्षाः कुरुना महिम्नि॥ लघिम्निसक्ताः कृतिनो गरीमि

मनोवपूर्वागूदेलिनश्रुतितं॥ स्वस्तिक्रिया॥ एकमसूः पितृ
वशित्वमेव प्रकाम्यमंतर्दिमश्रुतिमात्रा॥ जंघावलिश्रेणिफ
लां बुतनु॥ प्रसुनवीजं कुरुचारुणाकोननौगाणिसैरविहारि

श्रुस्वीस्त०॥ ७॥ दीप्तवत्तप्तमुहात्पयो॥ गु० घोरंतपोधोरया
कमश्च॥ ब्रह्मप० रघोरगुणश्चर० त॥॥ स्वस्ति०॥ ३॥ आमत्रा

सर्वोपधयस्तयाश्च॥ विषं विषादृष्टिद्विषं विषाश्च स्वस्विलिवि
ज० ह्वेमल्लौषधिश्च॥ स्वस्तिक्रियासु परमं प्रयोत० प० हीरंश्च
वनेत्रप्रतंश्च वंतेमद्युश्च वंतेपमृतंश्च वंतः॥ अहीणसंवास

महानसाश्च॥ स्वस्ति०॥ १२॥ इति स्वस्तिमंगलविधानं॥ अथ दे
श्रवदेवतास्य गुरुजाकाशरंजकधि समस्तयणपर्यायपुनरुदे

वसास्त्रगुप्तपूजाप्रारंभ्यते॥ सारवः सरवज्ञनाथ॥ सकलसु
नूतुहारि श्रेसेत्तसा॥ श्रीरसमस्तप्राणी॥ किरणहुरिहे॥ तीनलोकविषैकेत्याहे
निकापापकसिप॥ ज्ञानुः प्रातापति॥ यज्ञजिनका

पुत्ररता॥ पापसतापहृता॥ त्रैलोक्याक्रांतिकीर्तिः द

नाशकीयाहेकाम रूपवैरीजिनका	घातीयाकर्मकनारा कीयाहेजिन	लक्ष्मी करिषु कहे	मोहकानुसंपदासोहा नईवकष्टस्तीतिसके हस्तकरिउपशदेकंव
------------------------------	------------------------------	-------------------------	---

तमदनरिपुघातं कर्मप्रणासः॥ श्रीमान्निवोणसंपहर

जिनका	श्रीरत्नलेहकंठजिनके	श्रीसेने इति के	तिनकरिवंदनी कहेचरणजि नका	श्रीसेजिन जेपवंतहो रुगणधे दिकुतिका
-------	---------------------	-----------------------	--------------------------------	---

युवातेकरालीढकवः सुकठे॥ देवैर्दुर्घपादेजयति

स्वामीहै	पाईहैपंचकल्याणनिवि धेपूजाजिनकेश्रीसेहै	जयवंतहोऊ३	श्रीसोनायमान आत्माकीवारा रीकीकातिके स्वामीहै
----------	---	-----------	---

जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूज्यः॥ जयजयजयश्रीसकांति

सिद्धनिकों	आचार्यनिकों	उपाध्यायनिकों	सर्वसाधुनिकों
------------	-------------	---------------	---------------

सिद्धम् ॥ आचार्यम् ॥ उपाध्यायम् ॥ सर्वसाधुम्

प्रथमानुयोगायनिकों	करणनुयोगांकों	चरणानु
--------------------	---------------	--------

म् ॥ प्रथमानुयोगाय ॥ करणनुयोगाय ॥ चरणानु

योगकों	इमानुयोगकों एधव रक्षतीकेगुण	सम्पगदर्शनकों	सम्पग
--------	-----------------------------	---------------	-------

नुयोगाय ॥ इमानुयोगाय ॥ सम्पगदर्शनाय ॥ सम्पग

ज्ञानकों	सम्पक्चारित्रकों तीनगुरुके गुण	इनिकों जलचढा वौहौ त्रैकै
----------	--------------------------------	--------------------------

ज्ञानाय ॥ सम्पक्चारित्राय ॥ जलनिविद्यामीतिस्

इतिमंत्र जलं	तडफडा वते	त्रैसातीनलोककाउदरमें भरहते	समस्तजीवति निकाअहितइ
--------------	-----------	----------------------------	----------------------

दा ॥ जल ॥ ताम्पत्रिलोकेदरमध्ववर्ति ॥ सम्पस

रिकरणहोहे वचनजिनकारितिकों	वावनाचंदन करि	कैसाहैरासम्प कालोनीऊचा
---------------------------	---------------	------------------------

सत्वाहितहारिवाक्यान् ॥ श्रीचंदनैगंधिविलुब्ध

हेभ्रमजहां	तिसकरिहे रगुरुकाह कोश्रुजोदो	संसारआतापहरिकरणनिमत्त	चंदनं और
------------	------------------------------	-----------------------	----------

नृगै ॥ जिनेइणउंई श्रीसंसारतापविनाशाय

सर्वहिंकीनाईपदण नाईहैपारजिनका त्रैसासंसार	सोईमहावडासमुद्र	तिसकेपारगता रणोंकोंवडे
---	-----------------	------------------------

चंदनं ॥ २ ॥ अपारसंसारमहासमुद्र ॥ शोतारणो

नलीनक्ति
करि

लावाअपंडित
हैअंगजिनका

असैउजलचावलनिक
शिमृहतिनकरिदेवगुरु

ज्ञादे०

१५५

ज्यतरीनुनक्त्या॥ दीर्घाक्षतां लाक्षतोद्ये

निकों
पूजोहो

असंडितमोक्षपदप्राप्तिनिमित्तिस्रक्षतचटाऊहं

३

जिने५०॥ अषंडितपदप्राप्तये॥ अक्षतां॥ निर्वी

विनययुक्तनयेलेनमजीवतेईयेकमलतिनिकेवि
कासनेकोसूप्यसमानहै

उक्तमलजिनैदीक्षाके
६

विनीतनमाज्वविबोधसूर्यान्॥ वर्णासुचर्णा

कहनेकाएकधो
रीतिनको

ऊंदेकमलआ
दि

फुलनिकरिदेवगुरुशा

कथनेकधूर्यान्॥ ऊंदरविदप्रमुखैः प्रसूनै॥ जिने

पूजोहो

कामरूपीवांएकानाशनिमित्तिहूलचटावौहो
पुष्पं

घोटाहोगर्व
जाके

५०॥ कुसमवांएविधुंसगाय॥ पुष्पं॥ ध॥ कुदप्य

असा
काम

सोईह
वाफैला

सबंदसर्प

तिसकोंसावधानहोइकरि
नशनेकोंकुंडस

मानतिनिको

कंदर्पविसर्पसर्प॥ प्रसयनिर्नाशनवैनतेयान

उक्तषुसारचस्तुनक
विउपजे

असैनेवेदानकरिकै
सोहेरसपूर्णहै

तिनिकरिदेव
गुरुशास्त्रपूजे
है

सुधादिक
वेदकेरोग

प्राज्याज्यसारेश्रुनीरसाद्ये॥ जिने५॥ कंधावेद

हरिकारेणनिमति

नेवेद्यचटावो

हरिकीयाहै
उद्यमजिसमै

नीरोगविनाशाय॥ पा॥ नेवेद्य॥ घस्तोद्यमाधीकृत॥

फलवदावौ हौ	४	अलङ्कारचंदनअक्षतपुष्पानिके ससूत्रनिकरि			
फलंनि०फलं॥ ४॥ सधारीगंधाक्षतपुष्पजाते॥					
नैवेद्यदीपनिर्मलधूपकीध्वानिकरि	नानाप्रकारकेफलनिकरि निवड				
नैवेद्यदीपामलधूपधूमै॥ फलैविचित्रैर्घनपुन्य					
पुन्यउपजावलेकौ जोग्य	देवगुरुशा स्त्रकोपूजो	अर्घचढारो ए	जेजीव पूजन	तीर्थैक र	सास्त्र
योग्यान॥ जितेंद्र०॥ अर्घ्य॥ ५॥ येपूजाजिननाथ					
मुनितिनकी भक्ति करि	नित्यकरैहै	तावकाल विधे	नानाप्रका		
शास्त्रयमिनामत्तपासदाकुरुते॥ त्रैसंध्यासुविचे					
रकाव्याहेरचनाकेविधे	षट्तासंतामुनि	तेपुन्यपूर्णमुनिराजसे			
त्रकामरचनामुच्चारयंतोनराः॥ पुन्याद्यामुनिरा					
बंधीयसकरिसंयुक्तहोइ	कैसेहैतपजिनकेगहणाहै	ऐसेवेनमजीव			
जकीर्तिसहितानूत्वातपोनृषणा॥ स्तेनमसक					
केवलज्ञानकरिमनो र	मुक्तिकोंपावेहैउत्कृष्ट को	१	शूलनिकीर्ति जुलीक्षेपणी		
लावबोधरूचिरांसिद्धिलंततेपरा॥ ५॥ पुष्पांजलि					

श्रेयसाश्रयकी एहैसमस्तजीवश्रेयसैसमस्तमोहश्रेय देदीप्य
करताशनेकोदीपकसमानतिनकेकैसैहैः

विश्वविश्व॥ मोहाधकारप्रतियातिदीपान्॥ दीपैः

मानसुवर्णकेपात्रनिधस्वा हेतिनकरि	देवगुरुसा स्वप्नों है	मोहाधकारविनासमाय निमत्ते
-------------------------------------	-----------------------------	-----------------------------

नकाचनपात्रसंस्थे॥ जिनै ३०॥ मोहाधकारविना

दीपकंचटा वैहै ६	धनविमकापुष्टसमृद्धिहेतिनके बल नेविधै धूपकरि
-----------------------	---

शाय॥ दी॥ दीपि॥ दुष्टाष्टकर्मधनपुष्टज्वालासंधूप

देदीप्य मान	धूपनिकरि कैसा है हरि कीये है और व स्तकी सुगंधअपनी वासना करि	देवगु रुशा
----------------	--	---------------

नेनाश्वरधूमकेतै॥ धूपैर्विधूतान्पसुगंधगंधै॥ जिनै

सूक्ष्म जो	अष्टकर्मदहननिमतिधूपचटावैहै	द्वौनरूपन्याश तिरूपनया
---------------	----------------------------	---------------------------

३०॥ अष्टकर्मदहनाय॥ धूपं॥ १॥ कनकलु

म्पनाहीतिनकीअत्यमतीनिकेवादनिसैनाहीसखलितहैप्रजावनि
नकातिनकौं

मनसामगाम्पान्॥ कृवादेवा दरवलित्प्रजावान्॥ फले

फलेनिकरिअत्यर्थपणैकरिकैसैहै मोक्षफलकेदाताहै तिनकरि	देवगुरुसा स्वरूप जो	मोक्षफलशक्तिनि
---	---------------------------	----------------

ला रलंमोक्षफलिसारे॥ जिनै ३०॥ मोक्षफलशसाये

रुषभ अजितहेनामजिनका

सन्नव

वडुरिअनिनेदन

सुमतिनाथ

रिषभोजितनाथाश्च॥ सन्नवश्चा निनेदनः॥ सुमतिःप

पद्मपन्न

वडुरि

सुपार्श्वः

जिननिमैउरुष्ट

१

चंद्रपन्न

पुष्पदत्त

अनासश्च॥ सुपाश्र्वो जिनसत्तम॥ १॥ चंद्रानःपुष्प

वडुरीतल ज्ञानादिकानेकरियु
ल कस्वरूपकेज्ञाता

श्रेयोनाथ

वासु
ज

दत्तस्य॥ शीतलोत्तगावानमुनिः॥ श्रेयांसोवांसु

वडुरि

विमलकैसैहै निर्मलहैक्रातिजिनकी

अनंतहेमहिआजिन
की

पुज्यश्च॥ विमलोविमलडुति॥ अनंतोधर्मन

धर्मकाधोरी

शांतिकाकरणहाएजिनोत्त

असैअरहनायस्वामीनाम

थाश्च॥ शांतिकुचुर्जिनोत्तमः॥ अरहश्चमहन्न

ह्यनाथमेयवंता
रहै

हरिवंसविष्णुपजे

नाथाच्च॥ सुव्रतोनमितीर्थकृत्॥ हरिवंशमुचु

असैअरिष्टनेमिजिनवर

हरिकीयाहैकर्ममलैजिन

कर्मव्दैसवैरी

तौ॥ रिष्टनेमिर्जिनेश्वरः॥ ध्रुस्तोपसागदैत्यारी॥ प

श्रेयसाश्वनाथधर्णेंद्रक
रिपूजनीक

४

कर्मनाशानं
हारे

महावीरतीर्थकर

सिधार्थ

श्रेयसाश्वनाथधर्णेंद्रकः कर्मनाशानं महावीरः सिधार्थ

५६

जाकेकलमवत्तपनित्रए एतेतीर्थकरहेवअ
सुरात्रिकेसमूहाकरि

पूजनीकहैनिर्मलहैआकति
जिनकी

कलसंनैवः एतेसुरासुरोयेण॥ पूजिताविमलत्वियः

पूजनीकहैभरतादिक

एजानिकरिक्सेहैप्रचू
विभूतियुक्तहै

तेतीर्थकर

५॥ पूजिताभरताद्यैश्च॥ नृपेक्षैर्नृतिभूरितिः चतुर्विध

आरिप्रकारकेसंघ
को

शांतिकैकरकुकसीहैशा
तिसांभ्यतीहै

६

तीर्थकरविषै
क्ति

ससंघस्य॥ शांतिः कुकुशाश्वती॥ ६॥ जिनेनक्तिजि

फेरिदोष
वाशीति

प्राटने
निमत्त
कहा

निरंतर

होऊमैरे

एहीसम्पत्तग
एहै

संसारका
नासकहै

नेनक्ति॥ जिनेनक्तिः॥ सदास्तमे॥ सम्पत्तमेवसंसारै

अमोक्षकाकारणहै

७

सास्त्रविषैनक्तिदोषवार फेरिकहना

वारणमोक्षकारण॥ ७॥ श्रुतेनक्तिः श्रुतेनक्तिः श्रु

शीतिप्रग
टनेनिमत्ते

निरंतरहोऊ
मैरे

एहीसम्पत्तज्ञानहैसंसार

कानाशकअमो
क्षकाकारण

तेनक्तिः सदास्तमे॥ सम्पत्तमेवसंसार वारणमोक्षका

विषै
गुरुनक्ति

फेरिदोषवाशीतिप्राटनेनिमत्ते

निरंतरहोऊमैरे

रणं गुरो नक्ति गुरो नक्तिः गुरो नक्तिः सदास्तमे॥ चा

एहीवास्त्रिहैसंसार
का नासक

मोक्षकाकारणहै

८

अवेजयमालकदि
एहै

रिन्नमेवसंसार वारणमोक्षकारण॥ ८॥ अथजेयमाज

॥ नैमिसिद्धेयः ॥ गाथा ॥

गति ॥ धर्मेण ॥ इन्द्रियजातिने ५		कायनेदातिकेभा ॥ ६	
१	एकेन्द्रजाति	नरकाति १	पृथ्वीकाय १
२	द्वेन्द्रजाति	तिर्यचाति २	अपकाय २
३	तेन्द्रजाति	मनुष्याति ३	तेजसकाय ३
४	चोद्रेन्द्रजा	देवगति ४	वायुकाय ४
५	पंचेन्द्रजा	वेद तेकौन	वनस्पतीकाय ५
१५	जोगपञ्चाश	स्त्रीवेद १	त्रसकाय ६
४	मनकातो	पुरुषवेद २	संकलनकीचौकडीध
१	सत्यमनजो	नपुंसकवेद ३	संकलनक्रोथजलरेष
२	असत्यमन	अनंतानुबंधी.चे	संकलनमानवैतस्यन
३	उन्नयमन.	अनंतानुबंधी.के.पाष	संकलनमायाचचरवत
४	अनुन्नयमवे	अनंतानुबंधीमानपाषान	संकलनलोजहृग्शरं
५	वचनकेध	अनंतानुबंधीमायाबंध	हास्यादिकनौकषायल
१	सत्यवचन	अनंतानुबंधीलोन्नय	हास्य १ सोग १ स्त्रीवे १
२	असत्यवच	अप्रत्याख्यानकीचौ	रति २ जय १ पुरुष २
३	उन्नयवचजे	प्रत्याख्यानक्रोथहृलदे	अरति ३ पुगप ३ नपुंस ३
४	अनुन्नयवच	प्रत्याख्यानमानअसिख्य	ज्ञानसुज्ञा. ऊज्ञान
७	कायकेजोग	अप्रत्याख्यानमायाप्रा	मतिगपान १ ऊमतिज्ञ ६
१	कदारिकहि	अप्रत्याख्यानलोन्नय	शुतज्ञान २ कुशुति ७
२	कुदारिकमिश्र	प्रत्याख्यानकीचौ	अवधिज्ञा ३ ऊत्रावधि ८
३	वैक्रियरुकाय	प्रत्याख्यातकीचौ	मनपर्जय ४ एवंपान
४	वैक्रियरुमिश्र	प्रत्याख्यातक्रोथधूलो	केवलज्ञा ५ ८ ८
५	आहारककाय	प्रत्या. मा. काष्टस्यंन	
६	आहारकमिश्र	प्रत्या. मायागोमूत्रव	
७	काययोग	प्रत्याख्यातलो. क मुन	
८	काष्टमानेयो	रासा	

७	संयमनेदः ॥ तैकोनः १	जीविसमासनेदः १० तैकोन
१	सामायकसंयम	गाथाः ॥ अडविहधाते लिचेयविम
२	द्वेदोपस्थापनसंयम	ल असलिसलीं सुपयदियअ
३	परिहारविमुद्धि संयम	पयदियतिङ्गुणियाजीवसगवण
४	सूक्ष्मसापरायसंयमः	अस्याअर्थः ॥ तिगुने ॥ ५७ ॥
५	जयाष्यातसंयम	१० जीसैमास ॥ प्रजासेः ॥ अप्रजासे अत
६	संजसासंयतासंजम	विप्रजापते ॥ ५७ ॥
७	असंजतासंयमः एवं संजम	२ उष्णीकायसूक्ष्मवादः ॥
४	दशो ननेद तैकोन ॥ ४ ॥	२ अप्रकायसूक्ष्मवादः ॥
	चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अनक्षुदर्शन २	२ तेजकायसूक्ष्मवादः
	अवधिदर्श ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ४	२ वायुकायसूक्ष्मवादः ॥
	अमनेद २ तैकोन ॥	२ नित्यतिगोदसूक्ष्मवादः ॥
	नमः ॥ १ ॥ अमः ॥ २ ॥ एष २	२ इतरतिगोदसूक्ष्मवादः ॥
	सम्पत्कनेदः ॥ ६ ॥ तैकोन	२ वंशस्पतीकायमुप्रतिष्ठितअशुपति श्रुति ॥
	मिथ्यातसम्प १ ॥ उपसम ४	२ पंचेदीसेनी १ ॥ असेनी २ ॥ एवं ॥
	समयमिथ्यात २ ॥ वेदक ५	३ वेइं १ ॥ तें २ ॥ चउइं ३ ॥ य ३ ॥
	समयप्रकृति ३ ॥ दाइक ६	३ प्रजापतेनेद तैकोन ॥
	संयमीनेदः ॥ २ ॥ तैकोन	गाथा ॥ आदा २ ॥ सरीरिदिया ॥ एजरी
	संज्ञी ॥ १ ॥ असंज्ञी ॥ एवं ॥ २ ॥	आणपाणनासमणे ॥ चतारिपंचद
	आहारकनेदः ॥ २ ॥ तैकोन	पियेइंदियवियलाअसलिसली ॥ १० ॥
	आहारक ॥ २ ॥ अनाहारक एव	१ आहारपरजाधि शरीरपर्जीसि ॥ ५ ॥
	गुणस्थान १ ४ तैकोन ॥ गाथा ॥	२ इंदियपर्योसि ॥ स्वासगुत्वा सपर्जीसि ॥ ५ ॥
	गुनजीवायजनेपसाससंयम	३ नामपर्योसि ॥ मनपर्योसा एवं ॥ ६ ॥
	गानार्त्वाउरगोठियकमसो	२० ज्ञाननेद १० तैकोन
	वीसेतु परूपतानलिया १ ॥	गाथा पंचविइंदिययाणा ॥ माणवप
१	मिथ्याते ॥ ८ ॥ अपूर्वकरण ॥	कायएणतिलिवलयाणा ॥ अणुपा
२	सासादन ॥ ९ ॥ अनिदृत्तिक ॥	णायाणा ॥ आउगायाणेणहेतिदह ॥ ५ ॥
३	मिप्र ॥ १० ॥ सूक्ष्मसापराय ॥	स्परसथरसन ॥ गंयत्र वर्ण ॥ प्रोत्र
४	अदत्त ॥ ११ ॥ उपसातकषा ॥	५ एवं ॥ मनवचन ॥ कायत्र स्वां ॥
५	दक्षविरत ॥ १२ ॥ दीनमोद ॥	३ उस्वासप्रान ॥ आसुप्रान ॥ १ ॥
६	प्रमत्त ॥ १३ ॥ संजोगकेरल ॥	४ संज्ञातैकोन ४
७	अप्रमत्त ॥ १४ ॥ अयोगकेरल ॥	५ अहारसग्पा ३ मेथुनसंज्ञा
		३ अयसंज्ञा ४ परियहसंज्ञा
		११ उपयोगदर्शना ५ ॥ पानोपयो ॥ ५ ॥
		१२ ज्ञानावियपद्मवियजाइयकुलके
		१३ डिसंयुपासचेमाहाति एहिअणिय ॥
		१४ कमेणचोवीसगणाणि ॥ अर्थ ॥
		१५ ध्यानकनेदसौलातैकोन ॥ तैकोनसेसौकहि एहे ॥ १६ ॥ ॥

२२	शुद्धी कायके ॥२५॥ विकलत्रयकके ॥ पंचेडीके एकत्रऊडी ॥२५६॥
७	अपकायके ॥७॥ वैडीके ॥२५॥ नरकगतिके
३	तेजकायके ॥६॥ तैडीयके ॥२६॥ देवागतिके
७	वाक्कायके ॥६॥ चौडीयके ॥२३॥ तिर्यंगागतिके
२६	वनस्पतिकायके ॥२॥ मनुष्यागतिके

इति संपूर्णा ॥२३॥ ॥ एव २५७ ॥ कुलकोटिजाननी

अथ सोला सुपना चंद्रगुणतिराजनैः प्राया सो लिख्यते ॥

२० ॥ इति अकालजसूरज आश्रियो ॥ तीको फलराय जो वैजी ॥ जायाजी
 पंचमकालका ॥ केवलज्ञानी नही हो सीजी ॥ चंद्रगुण २ ॥ लज्जिनिधिं
 चंद्रमाचालती ॥ तीको फलराजा देखौजी ॥ जिनमत्तघ मीजिने स्वरो न
 में पा घंडी घणाले खैजी चंद्रगुण ४ ॥ प्यारीजी नारी समाचारी ॥ अर्षो देव
 मंचलाजी ॥ सीघरीयाजी कुंभमानसी ॥ गुरुका जो ही हो सीजी ॥ चंद्रगुण
 ५ ॥ चौथो सुपनैजी वाराफणो ॥ ना देवो चिकरालेजी ॥ केतायक वरस
 कौं आत्तरोजी ॥ पडसी वारा वरसको कालेजी ॥ चंद्र ६ ॥ देवविमाने
 पाछो फिसौजी ॥ सुपनो पंचमहेवौजी ॥ देवविद्या धरनै आसीजी हो
 सी लब्धविठेटीजी ॥ चंद्र ७ ॥ छठे सुपनैजी रोडीपरे ॥ कमलविकस
 तौ देखौजी ॥ वरणजी आसं मायला ॥ वाण्यकै जिनधर्मलेखौजी
 चंद्र ८ ॥ नूतनूत एपा देघाना चता ॥ सुपनो सातवो जो सीजी ॥ मिथ
 ती धर्मकी मानता ॥ अधिकी अधिकी हो सी ॥ चंद्र ९ ॥ सुपनो देखेज
 राजा आगवौ ॥ आजा कौ विमकारोजी ॥ उद्योत हो सीजी नधर्मके
 विचविचमां चै अंधेरोजी ॥ चंद्र १० ॥ तलावसुको जीती नो दिसा
 दिषण दिसार्थ ॥ ती नो दिसा जी धर्मना हो सी ॥ दिक्षिण
 देसा धर्मजो डौसी ॥ चंद्र ११ ॥ सोनाकाथा ॥ लमे कुकरा ॥ देखौ छैषी
 रघाडघतो जी ॥ दसमो सुपना मैराजा सब ॥ होजा सी अनमतम
 तो जी ॥ चंद्र १२ ॥ हाथीजी वपरिवंदरो सुपनो ग्यारघोरसीज
 मले छरा जानचा हो सी ॥ हिंडु एकलोपासीजी ॥ चंद्र १३ ॥ नीच
 तने लक्ष्मीवासा हो सी ॥ उतणा घरकरसीजी ॥ बढसीजी चुगलीचो
 रटा ॥ सउकार मनमै डरसीजी ॥ १४ ॥ चंद्र १४ ॥ छोडसी कारसमुद्धते ॥ सुपने
 तेरमो कूडोजी ॥ क्षत्रीजी वचनलोपसी ॥ ताकौ वीसवासयो डोर
 हसीजी ॥ १५ ॥ चंद्र १५ ॥ वछडा जुपमाजी ॥ रघुवपरे ॥ सुपनो चौदवो देखौ
 जी ॥ तरुनपुखधर्मपलिसी ॥ वृक्षिसयलधरमघौसीजी ॥ चंद्र १६ ॥ राज
 कवचदोउटो ॥ सुपनो पंचवोरचासीजी ॥ राजाजी समकितलेनही मि

मथ्यातमेयडतासी॥ चंद्र० १७ ॥ विनामहावतहाथीलडे सुयनोष
लवोदेष्मोजी॥ केतायकवरसाके आतरे॥ मागपामेहेनही मिल
सीजी॥ चंद्र० १८ ॥ विपाकसुत्रकीचूलिका॥ मुनिजश्वारुकि
योनीचोडोजी॥ वीनतीअणसारेप्रमाणतै॥ जेमालकीनीछैजे
डोजी॥ १५ ॥ इति सोलेख्येन

अथ दूलीपत्ने ॥१॥ अथ समाधि मस्त लिख्यते ॥ जोगी रास
 कीवाल गौतम स्वामी वंद्यो नामी मरुत समाधि मला है ॥ मेक व
 पोऊनि सिदिन ध्यांऊंगा ऊंचन कला है ॥ देव धरम गुरु श्री नि
 महां दिट सात विस नत हिजा नो ॥ स्या गि वार्सो अ निष संजमी
 वो खत नित वाने ॥ अच क्री उषरी चूल्ह बुहारी यानी त्रसत वि
 राथे ॥ वनज कोरे परद्व हरे न हि कर्म छ हो इम साथे ॥ पूजा साख
 गुरु की सेवा संजमत पच ऊंटांनी ॥ पर उपगारी अल पत्र हारी
 सामो प्रक वि ध्यां नी ॥ १ ॥ जाप जपै ति ऊं जोग धरे धिर न की म
 म मत्ता टो रे ॥ अंत समें वै राग संतारे ध्यां न समाधि विचारै ॥ आ ग
 लगे अरु ना व बुवै त व धर्म विध न ज व अवे ॥ च्यारि प्रकार अ
 हा रत्या गि के मंत्र सुप्र न मे ध्या वै ॥ २ ॥ रोग असा ध ज रा व ऊ दे धे
 कारा व ऊ दे धे कार नि श्री र ति हा रे ॥ वात व ती है जो व न अवे न प्रा
 न व न कौं करै ॥ जो त व नै तो धर मे र हि के स व सों हो य नि रा ला मा न पि
 ता सु त ति य कौं सौं ये नि ज य रि ग ह अ हि काल ॥ ३ ॥ कु छ वै त्या ले
 कु छ अ व क ज न कु छ ड भि या ध न दे री ॥ छि मां छि मां स व सों क
 रि अ छै म न को स ल्य ह ने री ॥ सु बु नि सों मि लि नि ज क र जे रै मे व ऊ
 करी बु रा ई तु म से पी त म कौं ड म ही ने ते स व व क सों ज री ॥ ४ ॥ ध न
 ध र ती जो मु ष ते मां गे सो स व दे सं तो धै ॥ छ हों का य के धां नी ऊ प
 र क र ना जा व न रो धै ॥ ना चै ध र वै वे इ क जा गे कु छ नो ज न कु छ
 पे ले ॥ रू धा धारी क्र म क्र म त जि के वा छी अ हा र प है ले ॥ ५ ॥ छ छि ॥
 स्या गि के पां नी रा धै पा नी त जि सं धा र नूं मि मां हि धि र अा स न मां
 ने सा ध र मी टि ग व्या र ण ज वं तु म जा नो य ह न जं पे है त व जि न वां नी ॥
 कहि यो ॥ प्रो कहि मो न लियो स न्या सी यं च पर म म न ग हियो ॥ ६ ॥ च्या
 चो अा रा ध न म न ध्या वै वारे भा व न जा वै ॥ द स ल छ न सु न ध र्म वि च
 रि र न त त्र य म न ल्य वै ॥ ये ति स सों ले ष ट य न च्यारै दो य क व र न वि च
 धि ॥ का यो ते र ड ष की टै री पां न म ई तूं सो रै ॥ ७ ॥ अ ज र अ म र नि ज गु
 न पू रै प र मा नं द सु जा वै ॥ आ नं द कं द चि दानं द सा हि व ती न ज ग
 य ति ध्या वै ॥ छु धा नृ ष दि क हों हि य री सै स है ना व स म रा धै
 चार पां चों स व त्या गे पां न सु धा र चा धै ॥ ८ ॥ हा न चां म र हि सू क जा

शान्तवि
२६७

यसवथर्मलीनजनन्यागो॥ अदनुतपुंन्यनयायसुरगमैसेजउवेजे
जागो॥ नहांसोंआवेसिवपटपावैविलसेसुषन्नतंता शान्तनयह
गतिहोहिहमारजेनधरमजेवंता॥२७॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥ प्रथमनमो अरिहंतांतडतिपनमोसिहांतंजी त्रि
तयतमौआरियातांनमोउवह्यामानंजी॥ पंचमनमोलोएसव
सारुनंगुनागाऊंजी॥ चारैमंगलअरिहंतसिद्धसाधुधर्मध्याऊंजी॥
चारोउतमलोकमैजितसिधसाधसुधर्मजी चारोसुरनगहो जिनवर
सिधसाधर्मपर्यंजी॥ सुषन्नचंद्रप्रभुसांतजिनवर्द्धमानमनवदो जीऊ
ईहोहिगीचोवीसीसवनमपायनिकंदो जी॥ २॥ श्रीजिनक्वचनसुहा
वनेस्पादवादअविरुद्धजी॥ तीनतवतमेदीपकावदोत्रिकरासु
द्धंजी॥ प्रतिमाश्रीनगवंतकीखगमत्यपातालंजी॥ इत्यत्रकृत्य
उनेदसोंवदंकरौत्रिकालंजी॥ ३॥ पूरवपायजुमैकीयोक्त्तकारन
अनमोदंजी॥ मनवचकायत्रिनेदसोंसोसवमिथ्याहोदंजी॥ आगो
पायजुहोयगोउतचासविधिनासोजी॥ वर्तमानअयकेकरौतुम
आगोपरकासोजी॥ धसर्वजीवसोंमित्रतागुनीदेवहृषाऊंजीदी
नद्यासगसोंसमताचारोनावनजाऊंजी॥ प्रभूपूजो जुगनेदसोंसुर
पदपंकजसेऊंजी॥ आगमअन्यासोंसदारतनअयनितवेऊंजी
५॥ अह्रमात्रअरयअनमिलनूलिकहोसुषमाऊंजी॥ शान
दोयहरसांऊकोंअर्थरात्रमैनाऊंजी॥ शान नदीनदयारमौनो
नोतगतसुदीजेजा॥ अंतसमाधिमरम करौरागविरोधहराजे
जी॥ ६॥ इति संपूर्ण ॥ अथ ॥

वदोश्रीजिनराजपट्रिहसिद्धदतारविघ्नहरतमंगलकर
नदारिददलिनअपार॥ चोपई॥ मिथ्यातावकरमबंधनयोउ
रिनितारनवनवनवडषदयो॥ सोंसवतासनगतितेहोइ राहे
नप्रभुडषकारतकोपा॥ ज्ञानजोतअधनमसुयकाराअयट
प्रकासकहैगाराधामोमननवनवसेतुवनास॥ तहोनमर
मरकोकामप्रसूजागदमनक्वकाया॥ करौहर्षजलवद
ऊवाशविषयआलचिरकालअपारा॥ जाजेतजतनवंत
द्वाराधप्रथमकनकमैभूसवकस्यो॥ नविकाआगसुरते

अवनत्यौ॥ वितग्रह्यां नहरतुमत्राय॥ करोहेमतनचित्रनकाय॥ ५॥ वि
 नुस्वारथसवजगमुषदाय॥ जांत्यौसर्वेइत्यपरजाय॥ भगतिरचीचि
 तमज्यामोहि॥ तुमवसऽषगनकैसैहौहि॥ ६॥ नम्यो जगनवनमैचि
 रकाल॥ नपज्योषिदऽगनिविकराल॥ तुमनयसुधासीतवावरासु
 व्युदैलहिसवतपहरी॥ ७॥ गमनप्रजावकामलकैदेव॥ परमल
 श्रीसुतकनकअनेव॥ मोमनपरसेतुमसवकाय॥ क्योममिलैसु
 कसवसुषत्राय॥ ८॥ विधवनतजिसिवसुषयरकियो॥ मदनमा
 नछिनमैहरलियो॥ पीतपात्रवचसुधापिवंत॥ विषैरेगरियुत्रा
 सहनंत॥ ९॥ तुमदिगमांतसथंनदुरहै॥ रतनरासिवऊसोभाल
 है॥ देषतमांनरोगस्यहोय॥ जद्यपिहैयाहनमयसोय॥ १०॥ तुममू
 रतिगिरसपरसवाय॥ लगेकर्मरजपुंजपलाय॥ ध्यांततोहिनर
 कमलमकार॥ होइपरमपदजगतिस्वार॥ ११॥ नवनवपायोऽष
 अषार॥ यादकरतलागतअसधार॥ तुमसवजांनअधानक्रि
 याल॥ करीजातअवहोहियाल॥ १२॥ यापीस्वांनअंतकीवा
 र॥ लहोसुगीसुषसुननोकार॥ जयोंअमलमनतुमनगवांन
 अचरिजकहावरोसिवधांत॥ १३॥ तुमप्रनुसुहृग्यांतजिगवंत
 तालीनगतिविनांजोसंतमोहजरेदितमोषकिवार॥ षोलस
 केनलहैसुषसार॥ १४॥ सुकतपंथअयंतमवऊनस्यौ॥ गटे॥
 कलेसविषमसिसतस्यौ॥ सुषसौसिवपदपुहवैकोय॥ जोतुम
 वचननदीपतहोय॥ १५॥ कर्मधराअतमनिधिनीरिदवीक
 वीयहिवैनहिकूर॥ नगतकुदालमोदलेसंतविलसैपरमाने
 दतुरंत॥ १६॥ स्यादवादहिमगिरिसौचली॥ तुमपदपरसवदधे
 शिवरली॥ नगतगंगमैमोमनह्याय॥ क्यो नयापमलकलुषि
 तजाश॥ १७॥ परमातमपिरपदसुषमई॥ मैसदोषतुमसवबुधुय
 ई॥ पद्यपिअसतयहृध्यांनतुम्हार॥ तादपिसुवांकुतफलदात
 र॥ १८॥ वचननुदधिसवजगविसस्योस्यादलहरिमिथ्यामलह
 स्यौ॥ थिरमनहादशां गमनधरे॥ ग्यांतसुषापाजमजैहरे॥ १९॥
 नूषणवसंतकुसमअसिगहै॥ सोजारचकदेवनलहै॥ तुमनि
 परिगहृथजैमनोग॥ कौंतकाज नूषणअसिजोग॥ २०॥ तुमसे

गान्तवि
१६९

नानहि इंद्रजुनयै॥ एका अत्रतारी सो नयै॥ लोकनाथ नो वारि
धियोत॥ सुकतकं तद्दविथ्युत होत॥ २१ रायुत वचन सुपुद
गलरूप॥ नहि व्यापै तुमगुन विद्वप॥ तदपिनगतदिदसुयाजुग
हे॥ मतवंचितफलसुरतरुलहे॥ २२ रागदोषविनपरमतदा
स॥ वाहरहति अरुसवजगदास सुवनतिलकतुमटिगरियु
तसे॥ यहप्रनुताकहि आननलसे॥ २३ जसगावे सुरतारिअया
रागांतरूपपायकसंसार॥ द्वादशांगपरिमोहनरहे॥ युतिक
रसुगमपंथसिवलहे॥ २४ अनेतचतुष्टयरूपनिहाल॥ ध्यावे
मतरुचिसहितत्रिकालपुंन्यवांनसुप्रमाराहो॥ तीर्थकरय
द्विलसेसो॥ २५ इंद्रसेवकरियारनलहे॥ गणधरादिसवगु
णनहिकहे॥ हममतेतनककियोकुछुएजाअगतनिसिवसु
रतरुसमदेजा॥ २६ दोहा॥ सबदकाव्यहिततर्कमैवादराजसे
रताज॥ एकीनचपरगटकियोद्यांनतनगतजिहाज॥ २७ इति
अथ अष्टाश्लोकाः॥

राजविषैजुगलि

निसुषकियाएजत्याजतवसिवपददिया॥ स्वयं बोधस्वभू
नगवांन॥ वंदोअदिनाथगुणवांन॥ १ इंद्रवीरसागरजलत
यमेरकुलाएगायवजाय॥ मदनविनासिकसुषकरताथवं
दोअजितपदकार॥ २ सकलधांनकरिकरमरागवसंत॥ मो
हतारोहोदेवाधिदेवमैमनवचननकरिकरौसेव॥ मोहितारो
होदेवाधिदेव॥ तुमदीनदयालअनाथनाथ॥ हमरुकोरामों
आपसाथ॥ ३ मोहतारोहोदेवाधिदेवयहमारवारसंसारदे
स॥ तुमचरनकलयतसहरकलेस॥ मोहतारोहोदेवाधिदे
व॥ तुमतामरसायनजीययायद्यांनतिअजरामरनप्रवृती
य॥ ४ मोहतारोहोदेवाधिदेव॥ इति॥ केदारोरेजियक्रोध
काहेकोरे॥ देषिकैअविवेकघांन॥ कौविवेकनधेरेरेजि
पक्रोधकाहेकोंकोरे॥ जिसेजेसीउदैआवै॥ सोक्रियाआचरे
सहजतुंअपतोंविगारे॥ जायउरगतपरे॥ ५ रेजियक्रोधक
हेकोंकोरेहोइसंगतिगुनसवनिकोंसवजगउचरे॥ तुम
नलेकरनलेसवको॥ बुरेलयमनजरे॥ ६ रेजियक्रोधक

हेकोंकरे॥ श्रवैदपरविषहरसकततहिआपनयकोमरे॥ वऊक
 वायनिगोदवासाछिमांघानतनरेरेजियक्रीधकाहेकोंकरे॥
 ५॥६॥ तिअसेमित्रसौकरिय्यारी॥ विषेविलाससमजनहियाए
 को॥ अपानध्यानअधिकारी॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ १७७॥ पल
 चलवैसोफलयवैआवरीतगहिसारी॥ दीननहीअनिमां
 नीनांहीमध्यदसाव्यवहार॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ पूजा
 दांनकरेतहिचाहैसुखातकीरतजारी॥ जीवतदसामनकर
 जानीरगदोषकरहारी॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ चंदनजूम
 नदीतरुविससिवारदसेउपगारी॥ हेमराजतिनहीपुख
 निकरवकधानीरथधारी॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ ६५॥६॥
 औरकोंविसारपारनेमपेमसार॥ रोगसोगकोविजोगजोगहै
 अपार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥ ७७॥ जायसुषुयापध
 नकोंनिवारपारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥ यर्मघातधर्म
 तीतसर्मरीतकार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥ नीदना
 सकामत्रासक्रीधलीजहार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥
 रधपायहांनआपपानजायकोकरार॥ पारनेमपेमसार॥
 औरकोंविसार॥ दीनतातहीनतातस्वर्गमोषहारहेमरा
 जजीसंनारधूमधसंनार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार
 ७॥६॥ तिदिचेतनसवहमैघाटवाटनहिऔर॥ दीपमांठ
 मंदिपरगासैसौतनमैसिरमोर॥ चेतनसवहमैघाटवाटन
 हिऔर॥ १७७॥ उत्तमनीचकरमसौजमैमित्रसुकतकीठोर॥ काहे
 आणधोकाहिविणधोकाहिविरोधोयहमिथ्याकीटोर॥ चे
 तनसवहीमैघाटवाटनहि॥ और॥ १७७॥ गजकुंभवावरवस्त्र
 नोंमानोंसोभाषोर॥ कौनपुरुषकीनिंदकीजैकाकीकीजै
 गोर॥ चेतनसवहीमैघाटवाटनहिऔर॥ १७७॥ केवलगंगानम
 ईसवरजैयहसरधासिवयो॥ हेमराजआस्वाहैजानैअनुने
 अमृतकोर॥ चेतनसवहमैघाटवाटनहिऔर॥ १७७॥ ७॥
 लीवसंतजह्नादासरसिवपुरगण॥ नरतनूपवहतर्जित॥
 मूहकमईसवनिरमण॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥ १७७॥ तीनचौ॥

वीसरत्ननमैप्रतिमोत्रंगरंगजेजेनए॥सिद्धसमांतसीससमा
 सबकेत्रदनुतसोभापरनए॥फूलीवसंतफूलीवसंत॥वाल
 आदिआरुंवकोरमुनिसवनिमुकतसुषत्रनुनए तीनत्रण
 रूफागनिषगमिलगावेगीतनएनए॥फूलीवसंतफूलीवसंत
 ३।वसुजोजनवसुपैडीगंगाफिरावृक्तसुरत्रालए॥घानत
 सोकौलासनमोहैंगुनकायैजांवरनए॥फूलीवसंतफूलीव
 संत॥ध॥इति॥ईषीतुमग्यांतविज्ञौफूलीवसंत॥यजमनुमंफ
 करसुचसौरमंत॥तुमग्यांतविज्ञौफूलीवसंत॥दिनवमे
 नएवेरागजाव॥मिथ्यामतिरजनीकौयटाव॥तुमज्ञानविषे
 फूलीवसंत॥वृक्तफूलीफैलीसुरुचिवेला॥ग्याताजतसमत
 संगकेला॥तुमज्ञानविज्ञौफूलीवसंत॥घानतवांतीपिकम
 धररूप॥सुरत्ररयसुत्रानंदयनरूप॥तुमज्ञानविज्ञौफूलीव
 संत॥ध॥इति॥ईषाग्यांतीजीवदयानितयाले॥आरंभतेपर
 यातहोतहै॥क्रोधघातविजटालेहिसात्यागदयाकहावेज
 लेकषायवदतमें॥बाहिरत्यागीअंतरदागी॥यजचेतरकस
 दनमें॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥करैदषायरत्रालसजावा
 ताकौकहियैयाप॥सांतसुजावप्रमादनजाके॥सोपरमारघ
 आपी॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥॥मिथ्यालाचारनिरुहि
 मरहनांसहनांवृक्तडषघाता॥घानतवोलविमोलनिजीम
 निकरेजततसौग्याता॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥॥॥॥
 ७वेकाअएकत्रसहीसेती॥अंगसंगनदिवहिरभूनसव
 धनहारसामग्रातेती॥कारजएकत्रसहीसेती॥सोलहसुरग
 नवकमैडष॥सुषतरसातमैतनकावेती॥जासिवकारनमु
 निगनध्यावे॥सोतेरेयतअंनंदसेती॥कारजएकत्रसहीसे
 ती॥॥घानसीलजयतपत्रतपूजाअफलग्यांवचितकिरिया
 केती॥पंचदरवतीतैनितन्यारे॥न्यारीरोगविधजेती॥कारज
 एकत्रसहीसेती॥मूंअवनामीअगपरगासीघानतभा
 सीसुकलावेती॥तजौलालउनकेविकल्पसव॥अनुमोमग
 नसुविद्याएती॥कारजएकत्रसहीसेती॥॥॥इति॥१॥होरीवेत

तबेलेहोरी। सत्ता नू मि छ मा व सं त मे। सम ता शं न थि या संग गो री चे
त त बे ले हो री मन को म ट पे म को पां नी ता मे करु ना के सर घो री। अं
न थां न पि च का री न रि श्रा प स मे छो रे हो री। चेत न बे ले हो री। अं गु
रु के व च न मृ दं ग व ज त है। निं द्यो नौं ड फ टा ल ट को री सं ज म अ
न र वि म ल त्र त चू का ज्ञा व गुं ला ल न रे नं र को री चेत न बे ले हो
री। अं ध र म मि वा ई त य व रु मे वा स म र स अ नं द अ म ल क टो री
द्यां न त मु म त क है स वि य न सों चि र्नी वी य ह जु ग जु ग जो री चे
त न बे ले हो री। ध। ३१। श्री र न यो न ज श्रा जि न रा ज। स फ
ल हो हि ते रे स व का ज ध त सं य ति म न वं छि त नो ग। स व वि ध
आ न व नै सं जोग। श्री र न यो न ज श्रा जि न रा ज। श क ल प च
छ ता को ष र है कां म धे नु नि त से वा च है। पा र स चिं ता म नि स।
मु द्य य हि त सों श्रा य मि लै सुं ष टा य। श्री र न यो न ज श्रा जि न स ज
शु र्ल न तै सु र्ल न कै जा य। रो ग सो ग ड ष ह र य ला य से वा दे व को रे
म न ला य। वि ध त उ ल ट मं ग ल च ह रा य। श्री र न यो न वि श्रा जि न
ए न। अं मा य त नू त पि सा च त व ली। ए ज चो र को जो र न च लीं ज
स आ द र सों जा ग प्र का स। द्यां न ति स र ग मु क त प द वा स श्री र न
यो न जि श्रा जि न रा ज। ध। ३२। ३३। जित के हि रे दे न ग वां न व
सें ति त। आं न कों ध्यां न कि या न कि या च क्री ए क मि ला प न
ए तैं श्री र त र न मि लिय मि ल या। जित के हि रे दे न ग वां न व से।
ति न आं न को ध्यां न कि या त की या। श क चिं त म न वं छि त।
दा य क श्री र त ग न ग हिया। पा र स ए क क नी कर आ वि श्रो र।
ध त न ल हिया ल हिया। जित के हि रे दे न ग वां न व से ति न।
आं न को ध्यां न की या न की या। ३४। एक ज्ञां न द स दि स उ जि य
ए श्री र य ह न उ दिया उ दिया। एक क ल्प त रु स व सु ष टा त
श्री र त रु न उ गि या उ गि या। जित के हि रे दे न ग वां न व से नि
त आं न को ध्यां न कि या न कि या। ३५। एक अ नै म हा द्यां न दे य
के। श्री र सु दं त दियान दिया। द्यां न त ग्पां न सु धार स चा यो
अ मृत श्री र पि या न यिया। जित के हि रे दे न ग वां न व से ति न
आं न को ध्यां न की या। ध। ३६। ३७। आ यो स ह ज व सं त बे ले

सब होरा होरी होउत बुध दया छ माव ऊचा दी इति जिपरत न ।
 त्रे गुन जोरी हो ग्यां न ध्यां न फता ल व न हे अ न हित सब द ।
 होत यत घोरा धर म सुरा ग गु लाल उ ड त हे सम तारंग ड ज नो ।
 घोरा हे ॥ २ परसन उत्तर न रे पि च कारी छोर त दो नो करि नो ।
 रा इत तै क हे नार तु म का की उ त तै क हे को न छोरा ॥ ३ अत्रा
 उ का क अ त्र नो पा व क मे ज ल बु क सां ल न ई सु व उ रा ॥ ४ न
 त सि व आ नं द चं द छ वि दे ये स ज न नै त च को रा ॥ ५ ॥ इति ७५
 अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ कर सौं ता ल व च न मु ष ना ध्ये मे
 चित्त लगा वो रे ॥ अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ ग्यां न द र स सु
 ष ल गु न धा रा ॥ अ नं त च तु ष्ट प ध्या वो रे ॥ अ व गा ह ना अ वा
 ध मूर त अ गु रु अ ल क व त ला वो रे ॥ २ अ ज त ना थ सौ म न
 ला वो रे ॥ कर ना सा ग र गु त र न ना ग र जो ति उ ज भा र ना वो
 रे ॥ त्रि न व न ना य क न व न य धा य क आ नं द दाय क गा वो रे
 अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ अ पर म नि रं ज न पा त क नं ज न न ।
 वि रं ज न व ह्ना वो रे ॥ द्या न त जै सा ॥ स हि ष से वी तै सी प द्वी या
 वो रे ॥ अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ ६ ॥ इति ६ ॥ रा ग आ सा व ।
 रा ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रे गे ॥ व न का र न मि थ्या त द यो न
 न कौं करि दे ह् ध रे गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रे गे ॥ उ प जे मी
 काल तै श नो ॥ तां ते काल ह रे गे ॥ रा ग दो ष ज ग वं ध कर त हे
 इत को ना म करे गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रे गे ॥ दे ह वि ना सा
 मे अ वि ना सी ॥ ने द ग्यां न करे गे ॥ जा सी जा सी ह म धि र वा सी चो
 षे दो नि ष रे गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रे गे ॥ मे रें अ नं त वा र वि
 न स म र्जे अ व स व ड ष चि से रे गे ॥ ७ ॥ द्यां न त नि प ट नि क ट अ
 च्च र दे ॥ चित्त सु म रे सु म रे गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रे गे ॥ अ
 व ह म अ म र न ए न म रे गे ॥ ७ ॥ इति आ सा उ रा ॥ ना ई ग्यां ना
 सो ई क हि ये क र म न दे सु ष ड ष नो ग तै रा ग वि रो ध न ल हि ये ना
 ई ग्यां ना सो ई क हि ये ॥ को क ग्यां न क्रि या तै को क सि व मा र ग व
 त ला वै ॥ नि नि ह वै वि व हा र सा धि के दो नो चित्त रि का वै गा न
 ई ग्यां ना सो क हि ये ॥ २ को ई क हे जी व च्छि न नं गु र को ई निस

वषांते॥ परजयदरवतनयपरमाने॥ दोनूसमतात्राने॥ नाई
ग्यानीसोकहिये॥ ३॥ केईकहेउदेहेसोईकोईउहिमबोले॥ द्यांन
तस्यादसुतुलामेंदोनोवसैतोले॥ नाईपानीसोकहिये॥ ४॥ शि
ई॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ एककहेजिहकूलमेंआएवाकु
रकोकुलगावे॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ २॥ सिवमतबोधसुचे
दनेयायकमीमांसकच्छरुजेनां॥ आघसराहेंआंगमगाहें
काकीसरधात्रेनां॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ २॥ परसेसरये
आयाहोताकीवानसुनीजे॥ मूवेवऊतनबोलेवऊवमीफिकर
क्याकीजे॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ ३॥ जिनसंभमतकेन्यायसं
चकरिमारगएकवताया॥ द्याततसोगुरुपूरायायाआगहमार
आया॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ ४॥ १॥ रागीरी॥ हमारोकारज
केसेहोय॥ कारणपंचमुक्तमारगकेतिनमेंकेहैदोय॥ हमा
रोकारजकेसेहोय॥ हीनसंयननलक्ष्मिआऊषाअलयमनी
षाजीशकडेनावनसचेसाथीसवजादेष्टोदोश॥ हमारोका
रजकेसेहोय॥ २॥ इंद्रापंचसुविषयनदोरैमानैकह्यानकोइ
साधारतविरकालवस्योमैधरमविनाफिरसोअहमारोका
रजकेसेहोय॥ ३॥ चिंतावमीनकुछवनअवैअवसवचिंता
षो॥ ४॥ द्यांततएकसुदृष्टिजयदलविआपमैआयसमो॥
५॥ हमारोकारजकेसेहोय॥ ६॥ १॥ रागगोरा॥ हमारोकारजत्रे
सेहोश॥ आतमआतमपरपरजाने॥ तानोससेषोय॥ २॥ हमारो
कारजत्रेसेहोइ॥ अंतसमाधिमरनकरितनतजिहोहिसक्र
सुरलोइ॥ विवधिनीगउपनोगनीगवैधरमतनाफलसोइ॥ ह
मारोकारजत्रेसेहोय॥ ३॥ पूरीआवविदेहनूपकैराजसंपदा
नीअकारणपंचलहैगहैइइरपंचमहाव्रतजोइ॥ हमारोका
रजत्रेसेहोय॥ ४॥ नीनजोगधिरसहेपरीसहआवकरमसल
धोय॥ द्यांततसुषत्रनंतसिवदितसैजनमेंमरेनकोइ॥ हमा
रोकारजत्रेसेहोइ॥ ५॥ ६॥ देषोनाईआजिनराजविराजेक
चतमणिमयसिंहपाठपरिअंतराछुप्रनुछाजे॥ देषोनाईआ
जिनराजविराजे॥ २॥ हीनछत्रनिमुवनजस॥ जंपैचोसवचमरस

मानै॥ शान्तीजीजतयोरमोरसुनिह्रत्रहियातगजाजै देषोभाई
 श्रीजिनराजविराजै॥ १॥ सादेवारहकोमंडुमीआदिकवाजैव
 जै॥ वृक्षत्रशोकदिपतिनामंरुलकोमिसूरससिलाजै॥ दिषोभ
 र्श्रीजिनराजविराजै॥ २॥ पुह्यवृष्टिजलकनकमंद्यवनइंद्र
 सेवनितसाजै॥ प्रभुनचुलावेशानतत्रावेसुरनरयसुनिजकाजै
 देषोभाईश्रीजिनराजविराजै॥ ३॥ ॥ दिषोभाईश्रीतमराम
 विराजै॥ छहोदरवनवतत्वगेयहैआपसुग्यायछाजै देषोभा
 र्श्रीतमरामविराजै॥ ४॥ अरिहंतसिद्धसूरिगुरुमुनिवरयांचो
 पदजिहमांही॥ दरसनपांतचरनतयजिहमेंपट्टरकोऊनां
 ही॥ देषोभाईश्रीतमरामविराजै॥ ५॥ पांनचेतनां कहियै
 जाकीवाकीपुद्गलकेरी केवलग्यांनविभूतिजासकेआ
 नविनीभ्रमचेरी॥ देषोभाईश्रीतमरामविराजै॥ ६॥ एकेशपंचें
 दीपुद्गलजीवत्रतिहीग्यांता॥ शान्तताहीसुद्धरवको
 जानपनोसुषदाता॥ देषोभाईश्रीतमरामविराजै॥ ७॥ गोरपेश
 अत्रमोहतारलेऊमहावीरा॥ सिद्धरथमंदनजगवंदनयापा
 निकंदतथी॥ अत्रवहमतारलेऊमहावीरा॥ श्यांनीघ्यांनीहं
 तीजांती॥ वांतीराहरांतीरा॥ मोयकेकारुदोयनिवारतरोगवे॥
 दारतदीर॥ १॥ अत्रवमोहितारलेऊमहावीरा॥ आनंदपूरतसा
 मतासूरतचूरतआपदीरा॥ बालजतीदृढव्रतीसमकतीडा
 षदावातलनीरा॥ अत्रवमोहितारलेऊमहावीरा॥ गुनत्रने
 ततगवांतत्रंतनहीरा॥ शिकपूरहिमधीरा॥ शान्तएका
 ऊगुनहमपावेंहरकरेजवनीरा॥ अत्रवमोहतारलेऊमहा
 वीरा॥ १॥ गोर॥ ८॥ धाजैजेनेमताथपरमेश्वरा॥ उत्तमयुसुषने
 कोंअतिडध्रुनवालशीलधरनेश्वरा॥ जैजेनेमताथ
 परमेश्वरा॥ तारापवैऊनूपसेयकरिजेअथतिमरदिनेश्वर
 १॥ तुमजसमहिमांहमकहाजातेनाषनसकतसुरेश्वर॥
 रइ॥ सचैमिलपूर्वेजेअमननरेश्वरा॥ गुनत्रनेतहमअंतन
 पावेवरनसकतगनेश्वरा॥ जैजेनेमताथपरमेश्वरा॥ गु
 राधरसकलकरेयुतवाटेजेनूबजलपोतेश्वर॥ शान्तह

मच्छदमस्त्रुक्कहाकैहेकहनसकतसरवैश्वर। जैजैनेमनाथपर।
भेच्छरा। ध। गीरी। ७५। अदिनाथतारनतरन। नातिरायमददेव्या।
नंदा। जनमन्त्रजोध्यात्रहाहरनं। अदिनाथतारनतरन। शकल
मवृच्छगाणुगलडवितनरा। करमभूमिविधिसुषकरनं। अय।
छरनुसमतलषवेते। भगतनभोगजोगधरनं। अदिनाथतार।
न। कायोसर्गिष्ठसासधस्योदितवतषगमगपूजतचरन। धी
रजधारीवरषत्रहारीसहस्रवरसतपत्राचरनं। अदिनाथतार।
नतरन। करमतासिपरकासगांनकोसुरपतिकिमौसमौसर।
नं सवजनसुषदेसिवपुरपुहचे। द्योन्नतत्रवितुमपदसरनेअ
दिनाथतारनतरन। ध। गीरी। ७६। अदिदेवपदंसेलीजैवती
यहहूजो। सिवमारागकौराहचनावेत्रौरनकोईहूजो। सेली।
जेसेलीजैवतीयहहूजो। देवधरमगुरसांवेजांनैकहूजोमार।
गत्याग्यौ। सेलीकेपरसादरुमारो जिनचरनमचितलाप्यो से
लीजैवतीयहहूजो। इषचिरकालसह्योअतिभारीसोअवस।
हजविलाप्यो। इरितहरनमुषकरनमनोहरधरमपदारथ
पाप्यो। सेलीजैवतीयहहूजो। अद्योन्नतिकहेसकलसंतनि।
कोंनितप्रतिप्रनुगुनगाधो। जैतधरमपरधांतधांनसौसव।
हीसिवसुषपाधो सेजजैवतीयहहूजो। ७७। गगसोरवां दे
ष्योनेकफूललेनिकस्योविनुपूजाफलपाप्यो। हरषतभाव।
मख्योगजपगतलसुरगतअमरकहाप्यो। देष्योनेकफूल।
लेनिकस्योविनुपूजाफूलपाप्यो। शमालनिसुतादेहलीपू
जीअपचरइंइरिकाप्यो। हलीचरुसौदितवतषास्योदारि
दतुरततसाप्यो। दिष्योनेकफूललेनिकस्योविनुपूजाफल।
पाप्यो। पूजारहलकरजिनपुरुषनिजिनसुरजवनवन
यो। चक्रनिखनयो जिनवरकोअवधिगांननुपजाप्यो। देष्योने
कफूललेनिकस्योविनुपूजाफलपाप्यो। अ। अरदरवलेषु
नुपूजोनापूजनसुरपतत्राप्यो। द्योन्नतत्रापसमानंकरतहे
स्रधासौसिरनाप्यो। देष्योनेकफूललेनिकस्योविनुपूजाफ
लपाप्यो। ध। इतिपद्येरागसारगा। नाईअपनपापाकमार

तनकीचे विवकनई गतिलंकनई है॥ रुसिरही घरकी घरनी अतिरंकन
 कोपरिजंकलई है। कं पतिनारिव है मुखलाहामति संगति छारि
 गई है॥ अंग उपांग पुरानपेर तिसनां नुर और नवीन नई है। अहमवे
 यात्रं॥ रूपकोनघोजर होत रुज्जु तुसारद हो जयोपतं कर किधे
 रही मारसूनीसी॥ कूंबी नई है कटि इवरी नई है देह कवरी इतै क
 यसेरमाहि पूनीसी जोवनने ~~विदांतीनी जने नुसार~~
~~विदांतीनी जने नुसार~~ विदांतीनी जने नुसार
 कीनी

ओहो इत अने अनाग उदेनां हिजांनी चीतरागवांनी सारदयारम
 नीनी ही जोवनके जेरे थिखं गम अने कजी क्जातै जे संतापे क्खु
 करुनां नकीनी हे। तेई अ वजी वराशि आये पुर लोक पासलोगे वै
 रदेगे उषज ईनां नवीनी हे। उनही के न्यको नरो सो जान कं पत है
 बाहुर मो कराने लासी हाथलीनी है॥ ४०॥ जाकौं इंचा है अमिं इ
 से उ मां है। जास जीव मुक्त मा है जा इ जो मल वहा वै है। असे न ज
 न म पाय विषय विषया घोये जे सै का वसा टे मूढ मानिक गवा वै
 माया नदी बूडनी जा काया वल ते ज डी जा आया पतती जा अ व
 कहा वनि आ वै है। तातें निज सी सटो लेती चिनेन की यो लै क
 हा वटि वोलै छु छि वचन डरा वै है॥ ४१॥ देष ऊजो रजस मट को ज
 मही पतिके यह तौ आगवांनी॥ उज्जल के स निसां न थरे वरु रोग
 निकी सं गि फोज पलांनी॥ काय पुरी तजि जा जि वल्यो जि हिं आ व
 त जोवन नू ए गुमांनी॥ लटिल ई नारी सगरी दिन दोय में घो ई है
 ता वनिसांनी॥ ४२॥ दोहा॥ सुमती हित जोवन समै॥ सेवो विषे वि
 राषलिसा टे न हि घो इये ज न म ज वाह सार॥ ४३॥ कर्त्त म अ द
 देव गुरु संचे मानिसां चो धर्म हिये आं निसां चो ही वषान सुं निसां
 चे पंथ आ वरे॥ जीवन की दयापालि जू व तजि चोरी ठाल देष निवे
 रानी बाल तिसना घटा वरे॥ अपनी चडाई पर निंदा मतिके रे जा
 ई इही चतुराई म द मास को वचा वरे॥ साधि घट कर्म साध संग
 तिमें वै वि वी र जो है धर्म साधन को तेरो चित चा वरे॥ ४४॥ साचे

दिवसो ईजामें दोसको न लेसको ईहै गुरुजाके उरका हकी नवाह
 हेसही धर्मवही जहां करुणा प्रधान कही ग्रंथ जहां आदिश्रंता
 कसो निवाह है। एईजगर न्यारियत कौं परधिया रसांचे लेऊ
 वेडारिनर जोको लाहै। मानुषविवेकविनां प्रसुकी समानि
 नांता तै यह वातवी कपारनी मलाहै। ॥४५॥ देवलक्षणा मत
 विरोध निराकरण। ॥४६॥ जो जग वस्तु समस्त हस्त लजे मनि
 हारे। माजनको संसार सिंधुके पार उतारे। आदिश्रंति अवि
 रुद्ध वचन सबको सुषदानि। गुंन अनंत जि समहि देषकी
 नां हितिसानी। माधोमहे सबुला किधो वर्धमानके बुध ईहै ये
 हचित नजासति सके चरन नमो मृजि देववहै। ॥४७॥ यज्ञनिदे
 दास वया। ॥४८॥ कहे परस्ती न सुनिजापके करेया मोहि हो मत
 ऊतासनमें कौन सी वडा ईहै। स्वर्ग सुषमे न चंडे ऊमु फेयो
 न कंडा सषायर शंभै रेही मनि नाईहै। जो तय हजानत है
 वेदयो वषां नत है जगपजपी जीव पावे। सुर्गे सुखदा ईहै। उ
 रेको न वीरयामै अपने कट वही कुं मोहि जिन जाले जगदी म
 की उहा ईहै। ॥४९॥ सातो वार कानां म। ॥५०॥ अघ अंधे म्रादि
 त्य सिधलाय करि जै सो मोपस संसार ताप हरत पकरि जिजे
 जिन वर पूजा नियम करौ तिति मंगलदायक। बुध संजम आद
 रोंधरो श्री गुरु पाप न्य निज वितसमान अनिमांत विन सुकर
 सुप्रतह हो न करयो सुनि सुधर्म षट् कर्म न जिन रज वलाहा
 लेहन। यो सुनि सुधर्म षट् कर्म न जिन रज वलाहा लेहन। ॥
 दोहा॥ एई छह विधि कर्म न जि सात विसनत जि वीरां सही पेय
 ऊंचिहै। क्रमक्रम न च जलती साधणी सात विसना दोहा॥ जु
 वापेलन मां समद वेरपा विसन सिकारा चोरी पर र मनी र म
 ना सातो याप निवार। ॥५१॥ जुवा निषेदा। सकुल पाप संकेत आ
 पदा हेत कुल छेना। कलह षे तद रिदेत दी सत निज अछन। गुण
 समेत जस सेत के तर विरोकत जै सै अ गुन निकर निकेत लेत ल
 धि बुध ज न सै। जूबां समानि पूस लोकमें आत अनी तिन पेधि।

नस्तकम्
५१

रा॥ इस विमन रायके धेलको कोतिकरुनहिदे धिए॥ पशमांसनिषे
छप्ये॥ जगमजियकोनां स होयतवमांसकहावे॥ सपरसत्राहि
तिनांमगंधउरधनउपजावैरकजोगनिरदृईषां हिनरतीची
अधरमी॥ नामलेततजिदेतअसनउत्तमकु लकरमी॥ इसति
ठनिघ्नअपवित्रअतिक्रमिकुलरासितिवासनिता॥ प्रापिषअ
दइसकेसदावरजोदोषदयालचित॥ पशमदनिषेधसवेया
कमिरासकुवांससरायदेहेसुधितासवडीवतजायसही॥
जिसपांनकीयेसुधिजातहियेजननींजनजाततरिय
ही॥ मतिरासमत्रौरनिषेधकहांयहजांनिजलेकुलमेंना
हीधे॥ गहैवनकोवहजिधजलो जि नमूहिनिकेमतलीनक
ही॥ पशधेनपांनिषेध॥ सवेया॥ पशधनकारनपापनीप्रीतिक
रोमहितोरतनेहयथातनको॥ लवचाषतंनघिनकेमुंदकीसु
वितासवजायछियेजिनको॥ मदमांसवजारनघपसदअंध
लेविमतीनकरेधिनको॥ गनिकासगुनेसवलीननयेधिगहै
धिगहैधिगहैतिनको॥ पश॥ अघिडनिषेध॥ सवेया॥ पशकानम
मेंवसैत्रैसोआनतगरीवजीवप्यातनसोप्यारप्रांनपूजीजिस
येहैहैकायरसुजावधरेकाकोदीनघोहकरेसवहीसोइरेदं
तलियेततरहैहै॥ काहंसौनरोधनिकारूपेनपोषवेहेकह
कोपोषपरदोषनांहीकहैहैनेकखादसारिखेकोंत्रैसीमृगीम
रिवेकोकुहाहारिकगोरनिकेसोकरवहैहै॥ वौरीनिषेधछ
चितातजैनवौररहतचौकायतघारे॥ पीठेधनीविलोकिलो
कनिरदेकरेमारो॥ प्रजापालकरिकोयतोपसोरोपगुडावैम
रेमहडुषदेधिन्रतिनीचीगतिपावै॥ अतिविपतिमूलचौर
विसनशगठत्रासत्रावैनजरिपरिचितअदत्तअंगरागिन
तिपुनपरसैनकरि॥ पशपरस्त्रीनिषेध॥ कुगातिवहनगुंए
गहनदहनदावानलसीहै॥ पुजसचंदघनछांहदेदरुसक
रनछइहैधतसरसोषनधूपधमदीनऊमांनीवियतिमुयंगामव
सवाईवेदवधानी॥ इहविधिअनेकत्रोगुनजरीप्रांतहरनफास
प्रवल॥ परस्त्रीत्यागसवया॥ दिवदीपकलोयवनीचनिताज

इजीवपतंगतिहायरेते॥ इषयावतप्राणीमावतहै॥ वजेनरहै
दृगसौजरते॥ इसजांतिविचछनत्रांषिनकेवसिहोयत्र
नातिनहीकरते परतीलषिजेधरतीपरधेधनिहेधते
हेधनिहेतरते॥ परदिदसीलसिसिरोममनकारिजेमै
जगमैजसत्रारजतेईलहैं॥ तिनकेजुगलौचनवोभिजहै
ईसनातित्रवारजत्रापकहैं॥ परकोमिनिकोंमुषचंद
चित्तैमुदिजांहिसदायहटेवगहैं॥ धनिजीवतहैतिनजीव
नकोंधनिमायउतेंउरमांजिछहैं॥ ५॥ कुरीलतिंघ
सवेया॥ जेपरनारितिहांरितिलज्जहसैंविकसैंबुधि
हीनबडेरेकुंविनकीजिमपातलिदेषिषुसीउरकंकर
रहोतघनेरोहैजिनकीयहटेववहैं॥ तिनकोंईसनों
अपकीरतिहैं॥ केपरलोकविषेविजुरीकरिहैंसत
षंडसुखाचलकरे॥ ६॥ एकएकयसतसोनएन
येतिनकेतोमा॥ छंदा॥ छप्ये॥ प्रथमपंडवानूपवेलिज
वोसबवोयों॥ मांसघायवकरायपायविपदावज
रोयो॥ वेनुंजांतेमदपांतजोभाजादोगतदकौ॥ चारु
दतभुषसहेविसिवाविसतअरकेहतब्रह्मदतत्रा
षेटसौछिजसिवन्रतिअदतरतिपररमनिरांचिरां
एगयोंसातोसेवतकोंनगति॥ ६॥ दोहा॥ पापतंमन
नरपतिकरै॥ नरकनगरमेंराजातिनिपवयेपायक
विसत॥ निजपुरवसतीकांज॥ ६॥ जिनकेजिनकेव
चनकी॥ वसीहियेपरतीतिविसनश्रितितेनरतजे
नरकवांसनयनीत॥ ६॥ कुंकवितिंदा॥ सवेया॥ २॥
रागउदेजगअधनयोसहजेसवलोगनलाजगमा
री॥ सीषविनांनरसीषिरहेविसनादिकसेवनकीमु
घराई॥ तापरिरीफिरवेसवकाव्यवडेनिरदैंकुमति
कविनाई॥ त्रौरअमुकनकीअषियो॥ नमुवीनरिये
हलितरेतअत्याई॥ ६॥ कंचनकुंनतिकीउपमांक

हिंदे तजरो जनु कौ कवि वारे नु परिष्णाम बिलो कि नि के म
 णि नील क कीट क नी द कि छा रे धो स त वे न क हे त कुं प
 डित ये जु ग अं मि ष पिंड नु घारे सा ध न फार द शी मु व छा
 र न ये र हे हे त कि धो कुं च का रे ६५ ये नु धि न्नि लिन र्नु
 वे ते स म ज्यौ न क हां कि स त रि व तां शी दी न कु र ग ति के
 त न मे ति न दं त धे रे क रू तां कि नि आ शी क्यौ न करी ति
 न जी व न के जे का व् क रे पर कौं ड ष हां शी सा धु अ सु ग्र ह
 ड र ज न दं ड ड वे स ध ते वि स री च तु रा शी ६६ म न ह स्ती व
 र्त्त न ॥ ६७ ॥ णं न म हा च त्त फा रि सु म ति सां क ल ग हि र व डे
 गुरु अं कु स न हिं गि ने त्र ह्य ह त वि र ष वि ह डे क रि सि
 षां त सि र न्हां न के लि अ ध र ज सौ वा ने कर न च प ल
 ता धे रे कुं म ति क र णी र ति मा ने को ल त सुं छं द म ह म
 त अ ति गु ण य धि क न आ व न जे रे वे रा ग षं न वां धे
 रू स हि म न म तं ग वि च र त वु रे ६७ ॥ पु रु नु प का र व र्त्त न
 स वे या ॥ ६८ ॥ सी स रा य का य पं धी जि य व स्यौ आ य र त
 न त्र य ति धि जी मे मो षि जा कौं ध र हे ॥ मि ष्या नि सि का र
 ज हां मो ह अं ध का रि ना री का मां दि क त स्कर स म ह न
 को ध र हे ॥ सी वे जो अ वे त सो शी षो वे ति ज सं प टा कौ
 त हां ग रू पा ह रू पु का रे द या क रि हे ॥ गां फि ल न रू जे प्र
 त अे सी हे अं धे री रा ति जो गि रे व दो ही र हां चो र त कौ ड र
 हे ॥ ६९ ॥ क षा य जी त न नु पा य स वे या ॥ षे म ति वा स धि
 मां धु व नी ॥ वि नु क्रो ध पि सो च नु रे त ट रे गो ॥ को म ल मा
 व नु पा व वि नो य ह मां न म हा म द को न हे रौ ॥ आ र ष
 सा र कुं वा र न ही छ ल वे लि त कं द न कौं त क रे गो ॥ तौ
 ष सि रो म नि मं त्र प टो वि नुं ली न फ णा वि ष क्ये उ त रे
 गो ॥ ७० ॥ मि ष वां क णा स वे या ॥ ७१ ॥ का हे कौं दो ल वु रे
 न र नां ह क क्ये ज स ध र्म ग मां वे को म ल वे न च वे कि
 त अे त ल गो क छू हे न स वे म त नां वे तालु छि दे र स नां

नभिदैनघटैकछूअंकदरिद्रनआवेजीवकहेजियहं
नतहिंनुकजीसवजीवनकोंसुषयावै॥१०॥धीरजदिद
वन।सवेया।आयोहेअघांतकनयांनकअसाताकर्म
ताकेहरिकरिवेकोंवहीकाहंहहिरैजेजेमनभाये
तेकुंमायेपुष्यपापआपतेडीअवआयेतिजनुदेका
ललहिये।येरेमेरेवीरकहेहोतहेंअधीरयामेंकाहं
कोंनसीरतंअकेलोयेकसहिरै॥नयेदलगीरकछूपीर
नवितमिजाययाहीतेंसयानेंतंतमांसगीररहिये॥११॥
होनहारउतिवार॥कैसेकैसेवलीनपरिविष्यातनये
अरिकुलकोंपैनेकमौहकेविकारसों॥लंघेगिरसापर
दिवायकरसेदियेंजिनुंकायरकीयेहेंनटकोरनहका
रसों॥असैंमांहामांतीमोतीआयेहंनहांरिमांतीक्योंहो
ननुतरेजेकमांनकेपहारसोंदेवसोंनहारेफुंतिदांनेसैं
नहारेअौरकाहंसो नहारेपरिहारेहोनहारसों॥१२॥का
लसामर्थवर्तनं।लोहमडीकेईकोटनिकीबोटकरोक
गुरेनतौपरोपराधोपटनेरिकें॥इंचइवोकायतचोक
सकेचोकीदेऊंचावरंगचमुंचऊंवौररहोयेरिकें।तहो
येकजोहरावनायवीचिवेवोफुंतिवोलोमतिकोऊजो
बुलावेतांवटेरिकें॥असेपरपंचपांतिरचोकौंननांति
जांतिकेसैंहंतछोरैकालदेव्योंहमहेरिकें॥१३॥ग्यांती
जीवउषीकथना।सवेयाईकतीसा०अंतकसोनछूदे
तिहचेपरिमरिषजीवतिरंतरथजेंआहतहैचितमेंने
तिहीसुषाहोयनलानमनोरथसुजें॥तोयनिमूदबंधें
नयअंसवथांवडवदवांनलनजें।छोडिविचबिनए
जडलबिनधीरजघरिसुषीकिनरुजें॥१४॥धीरजघ
रण।सवेया।बोधनलाननिलारलिष्योलघुदीरघसुं
कतकेअनुसारेंसोलहिहैकछूफेरनहीमरुदेसकेदेर
सुमेरसिधारेपघटनिवाधिकहीवहहोयकहोकरिआ

वतसोचाविधारे कृपकिधौभवसागरमेंतरगागरमांत
 मिलेजलसारे ७५॥ आसनदीव मोहसेमहांनउच्चय
 र्वतसोटरिआरिहंजगभूतलकोपायविसभरीहै
 विविधिमनोरथमेंनृजिलनरीवहे ॥ तिसनांतरगा
 तिसोंआकुलनांधरीहै ॥ परिभ्रमभोरजहांरागसोम
 करतहंचिंतातटतुंगहृषधर्मटाहिटरीहै ॥ त्रैसीष
 हाआसातांमनदीहैअगाधताकोधत्यसाधधीरज
 जिहांनचदितरीहै ॥ ७६ ॥ महामूढवर्तनासवेया ॥ २३ ॥
 जीवतिकितेकतामेंकहांवातीरहोतापेंअधकोन
 कोनकरेरिफेरीही ॥ आपकोचतुजातेओरनकोम
 दमानेंसाहंहोतआरीहैविचारतसवेरही ॥ चांमही
 केचषनसोंचितवेंसकलचालजुनुरसोतचौधेकरे
 राष्योहैंअंधरही ॥ वांहेवांनतातिकेअचानकहीत्रै
 सोजमदिसिहेंमसांनथातहोदतिकोंटेरही ॥ ७७ ॥ के
 तीवारस्वांजसंघसांवरसियालसांपसिधुरसारंग
 समांसरीजुदैरेंपस्यो ॥ केतीवारचिरुचिमगादरबको
 रधिराचक्रवाकचातकचंडलतनजीधस्योकेतीवार
 कछमछमेंडकगिडोलामीतसंखसीपकोडीकेजल
 कांजलेभेतिस्यो ॥ कोऊकहेंजाहरेतिनांवरतौबुरोम
 तेयोतमूढजातेमेंअनेकवारकेमस्यो ॥ ७८ ॥ उहवण
 नाछप्ये ॥ करिगुणअंमत्पांतदोषविषविषमसम
 ये ॥ वंकचालनहितजेंजुगलजिक्तामुषयप्ये ॥ तप्ये
 तिरंतरहिउदेपरदीपनरुचे ॥ वितुकारनउखकरे
 वैर ॥ कोंकरेंकबऊंनमुचेवरमोंनमंत्रसोहीपवसिसं
 गतिकीयेहांतिहै ॥ वऊमिलवाततातेंसहीउरजनस
 रपसमांतहै ॥ ७९ ॥ विधस्ताकीसोवितकी ॥ सजनजो
 रचेतोसुधरससोकोनकाजउहजीवकीयेकालरुंद
 सोंकहेरहीदातातिरमाप्येफेरियापेक्योंकलपहृष

जाचिकविद्यारेलघुतिनहंतैहैसहीईएकेसंजोगसौना
 सीरोघनसारकछुजगतकोंष्यालइंइजालसमहैवहीअ
 मेंदोयदायवातदीसैविधियेकसीहीकाहेकूंवनोईये
 धौषोंमनहैंयही॥६॥चौतीसतीर्थंकरांकेचिह्नतांमागअ
 पुत्रगजराजवाजवांतरमनमोहोंकोककषलसांथि
 यासोमसफरीपसिसोहो।सुरतरुगोडामहिषसुरकुं
 तिसेहाजोनेवज्रहरिणजमीनकलसकछपनुरआ
 नो।सतयत्रसंखाअहिराजहरिरिषवदेवजिनआदि
 यो।श्रीवर्धमानलेंजांतियेचहनचारुचौवीसये॥६॥
 आदिनांथजीकेनवांतरतांमाआदिजयवरमोहजेंम
 हावलभूत्पतीजेंसुरगईशांनललितांगदेवथायो
 है।चौथैंवज्रजंघणेहपांचमेंसुगलदेवसम्कलेंहजें
 देवलोकफिरिगयोहैं।सातवैसुबुद्धिरामआववेंअ
 चुतइंइतोमेंनोनरेइवज्रनांतिनांप्रनयोहैं।दसैंअ
 हिमिंइजांतिग्यारहैंरिषननांतनांतिषंशभूधरकैं
 सीसजन्मलीयोहैं।६॥चंडप्रनजीकेनवांतरतां।श्री।
 धर्मनृपतिपालिपकुंमीसुरगिपहलेंसुरयों।कुंति
 अजितसेनछषंडतायकइंइअचुतमेंथयो।वरपह
 मनांतिनरेसतिज्जरेवैजयंतविमानमेंचंडानस्वाम २
 सातवैनौनयेपुरषपुरांतमें॥६॥शांतिनांथजीके
 नवांतर।श्रीषेनआरजकुंतिसुरगअमिततेजषेच
 रपदयाया।सुररचिचूलसुरगआंतमेंअपराजित
 बलिभइकहाया।अचुतइंइवज्रायुधचक्रीफिरिअ
 हिमिंइमेघरथराया।सरवारथसिद्धेसंतिजितयेप्र
 युकीछादशपरजाया॥६॥नेमनांथजीकेनवांतर।
 पहिलेंनववतनीलडतियअनिकेतसेवघरातीजें
 सुरसोधर्मचनुमचिंतागतिनभवचरा॥पंचमचौथेसु

अदतगहैवनितांतचहेंलवलौतनजांनैमोंनिवहैय
 दिनेदलहैनहिंनेमजहैदृतरितिपिछांनैजौतिवहैवि
 तिग्यांतइहेंपरिमोषतहैजिनवीरवषांनै। ए० अनुभव
 प्रशंसासणेजीवतअलयआयवुधिवलहिनतामेंअ
 गमअगाधसिधुकोसैंताहिडोंकहें। घाटशांतमूलये
 कअनुतोअपुषकलाजनमदाघहारीघनसारकीस
 लाकहैयहेंकसीषलीजेयाहीकोअभ्यासकीजेयाकै
 रसपीजेअसौवीरजिनवाकहें। यतनोहीसारमहीआ
 तमकौहितकारह्योइलोमदारअोरआगेंदूकटाकहें
 ए० श्रीमगवांतसंप्रथनां। आगमअभ्यासहोर्नुसेवा
 सरवज्ञकेरीसंगतिसदेवमिलेसाधरमीजनकीसंतने
 केगुनकोववयांतयहेंवांतिपरोमिदोदेवदेवपरअैगु
 नकथनकीसवहीसोंअैतसुषदेनमुषवेन। जाषोनाव
 नात्रिकालराषोआतमांकधनकीजौलोकर्मकारथे
 लोमोक्षकेकपाटतोलोयेतीवातहंजेप्रत्नपूजोंआसम
 नकी। ए० ३॥ जिनमतप्रसंसा। दोहा। छयेअनादिअज्ञा
 तसोंजगजीवनकेनेता। सवमतमूंवीधूरिकी। अजन।
 मतहैजेता। ए० ३॥ नलिनदीकेतीरकों। औरजननकछ
 हेन। सवमतघाटकुंघाटहै। राजघाटहैजेता। ए० ४। ती
 ननवनमेंनरिरहे। थांवरजंगमजीवसमवमतनहै
 कदेषिये। रक्तकजैतसदीव। ए० ५। यसअपासजगज
 लधिमें। नहिंनहिंअोरइलाजा। ग्राहनवाहनधर्मसर्व
 जिनवरधर्मजिहाज। ए० ६। मिथ्यामतमदिराछकेसव
 मतवारेलोयसवमतवालेजांतिये। जिनमतमतनहो
 य। ए० ७। मतगुंमांतगिरवरटले। वडेनयेमनमांहिलघुदे
 षेंसवलोककैयोंकोहंनुतरतनाहि। ए० ८। चांमहत्सोसव
 मतीचितवकरतीनवेराज्ञांतनेंसोजेतही। जौवनइत
 नोकिरए० ९। जौवजाजटिगराधिकेपटपरषेंपरवीन

जेन०
५५

सौं तुम सौं मत की परष पावें पुरष श्री मीत शब्दे। दोय परस
जिन मत विधे। तयति हेचे व्यवहार तिति विनुं लहेस यह
सिच सरवर की पार। २ सी जैसे सी जैसे कि है। तीन लोक ति
ऊं काल ॥ जिन मत कौं उपगार सव जिन भ्रम करौं दया ला ॥ ३ ॥
महि मां जिन वर वचन की ॥ नही वचन बल होय जुज बल सौं
सागर अगम ॥ तैरे न तारु को या ध ॥ अप नै अप नै पंथ कौं पौ
षत सकल जिहो न ॥ तै सैं यह मत पौ षनो ॥ मति सम जौं मति
वास ॥ ५ ॥ ईस सागर संसार में ॥ और न सरन सुपाया ॥ जन मन
न मरु जौ हमें ॥ जिन वर धर्म सहाया ॥ ६ ॥ अथ यौ ग्रंथ ऊवो ती
का व्योरोस ॥ आगरा में बाल बुद्धि नू परष डेलन बाल ककेषा
लसे कवित ककरि जां नहें ॥ अै सैं ही करत नयों जै स्पंघ सा
बाईस बाहा किम गुला वचं द आ यो ति हि थां नहें ॥ हरी स्पंघ
साहके सुबंध म्म रागी नरति नके कहै सैं जौ डकी नां एक वां
नहें ॥ फेरि फेरि धरे मेरे आलस कौं अंत आयो जिन की सहाय
यह मेरे मन मां नहें ॥ ही दोहा ॥ सत्रह सैं ईक्या सियो ॥ यो समां सत
मलीन ॥ तिथि तेर सिर विवार कौं सकल सम श्रन की न ॥ ७ ॥
॥ अथ ॥ इति श्री जिन मत क संपूर्ण ॥ अथ पद लिखते ॥ ॥
मेरे मन मेरे यह आरी या तित चौर सुं भग जिन की मूरति परि
रहं लुभासी ॥ मन गे मर म सांति विदूष सुष लषि ॥ राग बुद्धि विन
साय न मन ॥ गुन सन सुष अर वि सुष दो उ परि ॥ सम ता दिष्टे
धरा ॥ तुम से तुम ही हो प्रसुता सुता ॥ आन यह ति धि पा री ने म
॥ अरु न करत कै चरन न चैरौ ॥ आपन को जज मां ई ॥ लहं ०
जुदैति ज पद तन लोर हौं ॥ तुम गुण न कति सहा री ॥ मन गे अ
राग ई मनां ॥ अणी मै ति सिद्धि ते घ्या वां एणी या दि तु सा डी रह
ही मत मै ॥ अणी ० ॥ तुज विन मनु और न हिंस दा ॥ चित रह द
दर सण मै ॥ अणी ॥ १ ॥ तैनु विन वेषा मै डा सा री ॥ अ मत कि
ह्यो न व वन मै ॥ अणी ० ॥ २ ॥ नुदै न पौं सुख कौं अब मे रौं प्र न
दी वा तै न न मै ॥ अणी ३ ॥ अथ संतो धि मं वा सि का लिख्य ते ॥ ॥

उँकारमकारपंचपरमगुरुसंतहैं। तीतभवतमेंसाएवंदोम।
 तवचकायसों। १॥ अक्षरज्ञानतमोहि। छंदनेदसमजोंनही। बु।
 धियोरीकिमहोया। भाषाअक्षरवावती। २॥ आतमकविनउपा।
 यापायोतरनवक्योंतजों। राईउदधिसमांतफिरिटूदीनहिया।
 ईयो। ३॥ ईविधिनरनवकोय। पायविषेसुषसोंरमें। सोसवअं
 मृतषोईहलाहलविषआचरोंध। ईस्वरभाषेएहनरनवम।
 तिषोवेहयाफिरिनमिलेईहदेहा। पिछतायोंवऊहोईगों। ५॥ उ
 तमनरअवधारण। पायोंउषकरजगतमेंईजियसोंचविचार।
 कछुतोतासासंगलीजियोई। ऊरेधगतिकोंवीजधरमीजों
 तरआचरों। मानुषजोनिलहंतकंपपरेंकरदीपलें। ७॥ रिस।
 तजिकैसुतिवैन। सारमनुष्यसवजोनमें। ज्योमुषर्जपरिमेत
 नानुदियेआकासमें। ८॥ टी। टाल। शिकेरीकेरेतरनवयायाऊ
 लजातिविमलतंआयो। जौजेतधरमतहिंधरा। सवला
 नविषेसंगहारा। ए। लषिवातहीयेगहिलीजे। जिनकथि
 तधरमनितिकजों। नवउषसागरकोंतरियो। सुषसोंनौका
 जौचरियो। ३॥ अरिलीनविषेकंकरिया। अममोहि। जमो
 हितकरिया। विधितांजवदईधुमरिया। तवनरकअमितंपरे
 या। ३॥ एतरकरिधरमअगाऊं। जवलौधनजौवनचार्क। म
 जवलौंनहिरोगसतावै। तोहिकालअवानकपावेध। एनाते
 रेआसननेंता। जवलौंतेरीदिष्टिफिरेंता। जवलौंतेरीबुधिस
 वारी। करिधर्मअगाऊंनारी। ५॥ वौसजलज्योंजौवनजैहैं। करे
 धर्मजरापनोअहैं। ज्योवृद्धावेलथकैहैं। कछुकारिजकरिन
 सकैहैं। ६॥ अमिणसयोगवियोगा। षिणजीवषिणामृतरोगा
 षिणमैंधनजौवनजावै। किहिविधिजगमेंसुषपावै। ७॥ अं व
 रधनजीवतजैहां। गजकरणाचपलधनएहा। तनदर्पणछ
 याजांएणों। एवातसंचेनरआणों। ८॥ टालरागचंदकैवागचं
 योमोंरियो। जयजमिलेनितआरी। क्योनहीधरमसुणीजे
 जैतमरनितहीन। आसनजौवनछीजै। १॥ कमलाचलें

नपैड सुषटां कै पारा देह्य कैव होयो छि। क्योन लघे संसार
 शपिन नहिं छांडे काल जो याता लसि घरे वेसे नुदधि के वी
 च जो वहुं हरि पघरे। अगण सुर रोषे तो हि। रोषे नुदधि मथई
 या। तो व न छांडे काल। ही प पर्वग परई या धा धर गौ सो तो।
 दां ना मां णि औषदिस वयो ही। मंत्र जंत्र करि तंत्रा काल मे
 टे नही क्योन ही। पा। नर कत एणं डष न्नी शिने तं जीय संम होरे।
 तनु वन रूखे आ हारा। अ व स व परिग ह डारे। ही चेत नगर न।
 मकारि। नर क अ धिक डष पायो। घाल प एणं कौ बेला। स व जा
 ष गट ही गां यो। ७। छिन में ध न कौ सो च। छिन में विरह स ता
 वै। छिन में ईष्ट वियोग। तरूण कमल सुष पा वै। ७। राग सोर
 वा। जु रो पे एणं डष जे स ह्या। मन भा ईरे। सो क्यो नू ल्यो तो हि चेत
 मन भा ईरे। ज्यो तूं विषया स्यो लग्यो मन भा ईरे। आत्म हित न
 हि होय चेति मन भा ईरे। श। कुं व या प करि नु प ज्यो मन भा ईरे
 गरु न व स्यो वसि पा प चेति मन भा ईरे। सा त घ स त ल हि पा पे ते
 मन भा ईरे। अज हो या पर व त आ प चेति मन भा ईरे। ७। नहिं
 ज रा ग द आ ई है। मन भा ईरे। ३। नहिं न कहां ग यो ज म्म ज ह
 चेति मन भा ईरे। जो न चिंत तूं के र ह्यो। मन भा ईरे। ये स व हे
 पर त ह्या। चेति मन भा ईरे। ३। डष सुष कौ न व द धि प स्यो म
 न भा ईरे। पा प ल हरि ड र व दे ई। चेति मन भा ईरे। प क त्या ध र्म
 जि हां ज ज्यो। मन भा ईरे। सुष सो पार करे हि। चेति मन भा ई
 रे। ६। वी करे है ध न सा स तो मन भा ई रे। हो ई न रो ग न काल
 चेति मन भा ई रे। ज व ल ग घ र्म न छां डिये। मन भा ई रे। ध र्म
 क थि त जि न ध र्म रि। चेति मन भा ई रे। ६। ड र प त जो प र लो।
 क तौ। चेति मन भा ई रे। चा ह त सि व सुष कारा। चेति मन भा ई
 रे। क्रौ ध लो न विष या त ज्यो। चेत मन भा ई रे। कौ टि क है अ
 घ जाल चेति मन भा ई रे। ही। दी ल न करि आ रं न त जो। मन
 भा ई रे। आ रं न में जी व धा वा। चेति मन भा ई रे। जी व धा त में अ
 घ व दौ। मन भा ई रे। अ घ सो न र क नि पा त चेति मन भा ई रे। ७।

नरक आदिति ऊँ लौ कर्मो मन भा री नो ये पर न व ड घ रा सि चे
ति मन भा री सो स व पू र व पा प त्तो मन भा री जी व स हे व सि त्रा
स न चे ति मन भा री टी टाल वी र जि नं द की ते लू ज ग में सुर
आ दि दे व जी सो सु ष ड ल भ सा रा सुं द र ता म न मो ह नी जी सो
दे ध मी वि चारि रे भा री त्थ ध र्म अ व वि चारि श थि र ता ज स सु
ष ध र म सो जी पा वै र त्त न नं ड ग ध र म वि नां अं ए ल हे जी ड
ष ना ना पर क्ता रे भा री त्थ अ व ध र म वि चार श दां न ध र
म ते सुर ल हे जी न र क ल हे क रि पा पा ई वि धि जां एों क्यो प
डे जी न र क वि षे त्थ आ य रे भा री अ व त्थ ध र म वि चारि श दां
न ध र म ते सुर ल हे जी न र क ल हे क रि पा पा ई हि वि धि जां
एों क्यो प डे जी न र क वि षे त्थ आ य रे भा री त्थ अ व ध र म वि
चारि श धा ध र म के र त सो भाल हे जी ह य ग य र थ स व सा ज प
शु क दां न ध र ता व स्यो जी ध रि आ वै मुं ति ग ज रे भा री त्थ अ
व ध र्म वि चारि पा न व ल सु न ग म न मो ह नी जी पू ज नी क
र ज ग मां हि रू प म धु र व च ध र्म स्यो जी उ ष क्यो म्मा यें नां हि
रे भा री त्थ अ व ध र्म वि चारि श पर मा र थ ए वा त हे जी मु ने
को स म दा रै रे भा री त्थ अ व ध र्म वि चारि श कि रि मुं ति क कं
एां ध र म सो जी गुर क हि ये नि र ग्रं थ दे व अ वा रा दो व वि नां जी
ए स द्धा सि व पं ध रे भा री त्थ अ व ध र्म वि चारि श वि न ध न ध र
सो ना न ही जी दां न वि नां उं ति जे हा जे से वि ष या ता प सी जी न
ध र्म द या वि न ते हे रे भा री त्थ अ व ध र्म वि चारि श दो हा टी मो ह
ध न हि त कर अ ध क र अ ध सो ध न न हिं हो या ध र म कर त ध
न पा र्यो म न व च जां एों सो य श म ति जी व सो चे किं व त्थ हो ए
ह र सो हो य जे अ न र वि धि नां लि ये ता हि न मे टे को या श ए
ह व ह वा ते व ऊ क रें पे ठें सा ग र मां हि सि ष र च दे व सि लो ज के
अ धि को पा वे नां हि श रा ति दि व स चि ते चिं ता मां हि जे रे म ना
जी वा सो दी यो सो पा र्यो और न ल हे स दी वा धा लां गि ध र म
जि न पू जि यो सां च क हौ स व को री चि त्त त्त य नू च र ए व ल गा री

दुध त्रेषा हिमनुनत डंसम एकडषभारी॥ निराभरततन अर
 तीक्ष्णदण्डजावततारी॥ चर्या आसनसेनडप्रदायकवधबंध
 ताजाचेंनही अलाभरोगतिनफरसनिबंधन। मलजिनत
 मोतसतमानवसिप्रग्पात्रौरुप्रग्पांतक्य। दरसणामलीन।
 वोरेससवसाध्रपरीसहजांतिनशश दोहासत्रपावअनु
 सारलो॥ कहेपरीसहनांमाईनकेडषजेमूनसहैंतिनप्रति
 सदाप्रतांमशअथवरवीरतांमछंद। पुध्यापरीसहवरननं
 अनसननुनौदरतपपोषं। तपाषमांसदिनवीतिगयेहैंजो
 नहीवनेंजोगविष्णुविधिसंकिअंगसवसिथलनयेहैं। त
 वैतहैंडसहभुषकीवेदनसहतसाधनहीनेकनयेहैं। तिन
 केचरनकबुलप्रतिप्रतिदिनहंथजौरहमसीसनयेहैं। त्रि
 षापरीसहापराधीनमूनिवरकीनिषापरघरलैहिकहैंका
 छूनांही प्रकृतिविरोधपारनेंनुजतवबुतप्याराकीआस
 जहांही। ग्रीषमकालपितअति। कोपेलौचनदोयकिरेजव
 जांहीनीरनचहेसहेतिसितेमुनिजेवंतेवरतेजगमांही॥ २
 सीतपरीसहासीतकालसवहीजनकांपैषडेजांहीवनविषे
 रहैंहैं कांकांवायवहेंवरषारतिवरषसवांदलकुंमिरहेहैं०
 तहांधीरतटनीतटचौसटतालवालयेकर्मदहेहैं। सहेसचा
 लसीतकीवाघातेमूलीतोरनतरनकहेहैं। ३॥ नसनपरीसह
 सुषाणसपीडेउरअहारप्रजरेआंतदेहसवदागै। अगनीस
 रूपधुपसांषसकीतातीचालीकालसीलांग। तपैपहारता।
 पतनऊयजेकैपैपितजुरजागै। ईतादीमगरमीकीधयास
 हतसाघधीरजिनहीतागै। धाडंसमंसपरीसहडंसमंसमा
 षीतनकांटे। पीडेंवजपंछीवजुतेरौं डंसैंव्यालविसपालवी॥
 छल्लगोषजुरेआनीघनेरे सिधस्यालसंडावलसतावैरोछ।
 रोजडषदेहिवडेरौ। त्रैसेकससहैंसंपभानतितेमूनिराजहरो
 अघमेरौं। ४॥ जगनपरीसहातपस्वीषेवासनीवरतेंवांहिरलो
 कलाजभयभारी। तातेंपरमदिगंवरमूडानघरिनहीसकेदीन

वा०ई
५६

संसायी। त्रैसीडघरनंगनपरीहजीतेसांघसीलविरभारी। तिर
विकारवालकवततिरमेंतिनकेपापनदोकहमारी। ही। त्रिशि
नपरीसहदेसकालकोंकारणलहिकैहोतअचेनअनेकप्र
कारोतवतेप्रिअहोहिजगवसीकलमलायधिरतापनछा
रो। त्रैसीअरितपरीसहउपजततहोधीरधीरजउरघोरअसे।
साधनकोनुरअंतरवसोतिरंतरनामहमारेअसत्रीपरीसह
तेप्रधिनकेहरिकोंपसरेपत्रगयाकरियावसौचयेतातिन
कोतनकदेवीनोहवाकीकोदोकसरदीनताजयेता। त्रैसे
पुरषपहाडजुडोंवनप्रलयपावनतीयवेदपयंपत। घृत्य
घमाससांघसांहेसीमेजसनेरतिनकोनहीकवत। दीचप्या
परीसहण। चारिहोंयपरवोनपरषियथचलतईईतजंत
जहोतानै। कोमलपापकविनघरापरिघरतधीरवांधान
हीमानै। सांगलुरंगपालकीचटीतेतेसवादनुरयादिनघो
ली। थोमुंतिराजब्रह्मचयडिषतवदिदिकरमकुलाचलने।
नै। ए। असादपरीसह। फायुणमसांएसेलसिलकोटर
जिवंसतहोसुघनुंहेरै। परमितकालरहेनिश्चलतनवारवा
रअसतनहीफेर। मनुषदेवअवतजपसुं कितवैवैविपत
अनिजवधेरो। वीरनतजअजैधिरतापदतोपुरसदावैसो
नुरमेरोसैनपरीसह। जेमहोनसोनेकैमहलनिमुंदरसेजेते
वसुषजोवै। तिअवअचलअंगयेकासनकोमलकविन।
मुंमिपरिसौवै। त्रैसीपोहनकंडकवोरकोकरीगडत — —
सेनपरीसहजातततमुंतिकमकोलिमांधोवो। ११। उमुंवा
यकपरीसह। जगतजीवजावंतचराचरसवकैहितसव
कोसुषहोनी। ताहिदेषिउरवचनकहैउरपाषंडदिगपह
अनिमांती। मारोचाहयेकरीपायीअेतपसीनेषवोरहै।
छोती। त्रैसेवचतषानकीपिरपांडिमांडुलिबोलेमुंनिपां
नी। १२। वधवंधनपरिसह। निरपराधनिरवेरमहांमुंनि
तिनकोउरलोका मिलिमारोकेईषेविषेनसौवाधतकेई

पात्रकमेंपरजालो तहां कायन ही करे कदांचित्परवक मवि
पाकविद्यारो समरथ होयसहै वधबंधनतेगुरसदासहायह
मोरें १२३॥ जावनपरीसह घोरवीरनयकरमतपोधंननयोषी
नधंकीगलवांही ॥ अस्तिज्ञांतत्रवमेषरहेतननसांजाल
फलकैतिसमांही ॥ त्रौषदीअसनयांन रूपादिक शानजो
ऊं पस्तिजांचततांही ॥ उघरअजाचीकहतघरे करेहिनमलि
नधर्मपरह्वांही ॥ १२४॥ अलाजपरीसहा ऐकवारभोजनकी
विरथा तेमुंनिसाधवसतीमें आवें ॥ जोनहीवसेंजोगकीवे
रषाविधितोमहेतमनषेदनलावें ॥ त्रैसोमूमतवऊतदीन
वीते ॥ तघतपविरविभावतोभावे ॥ योंअलाजकीपरमपरी
सासहेसाधसोहीसीवपावें ॥ १२५॥ योगपरीस्यालीषते ॥ वातपे
सकफत्रौणतव्यारोयेजववधेघटेतनमांही ॥ रोगसंजोगसो
गतनर्जपरिजेजगतजीवकायरहोईजाशी ॥ त्रैसीविधिवेद
नांदाहूनसहेतुर्जपवारनचाहो ॥ आतमलीनदेहसोविरा
कतजेनज्ञतीनिजनेमतिवाहो ॥ १२६॥ तिनसयपरीसह सुंके
तिनअरतीषेनकांटेकांविनमांसरीपायविद्यारो रजउडिआ
यपडेलोवनमें ॥ तनरूपासतनपीरविद्यारे तोयहघरिस
हायनही वंछतअपनेकरसौकादिनडोरें ॥ योतीनपरामपरी
सावीतेगुरुजोभोतरनिहधरें ॥ १२७॥ मलपरीसह जावनि
वनिलतहांवलज्यो ॥ विननगनरूपवनयांनघरेहैं ॥ चलैपा
सेवधुपकीवरषांउडजधुलीसवअगपरेहैं ॥ मलिनदेहकै
दिषिमहांमुंनिमलिननावगुरतांहीकरेहैं ॥ योमलजनति
परीसहजांति तिनैहंयजोरिसीसघरेहैं ॥ १२८॥ ततकारपु
रसकारपरीसह ॥ जेमहांनकिघ्यानिधिविजशीचिरतपसी
गुनअतुलघरेहैं ॥ तिनकीविनयवचनसोंअथवाउविष
णांमजननां हिमरेहैं ॥ तोमुंनि तहांषेदनहीमानगेंउरम
लीनताभावहरेहैं ॥ त्रैसैपरमसाधकेअहनि सिहांयजो
रिहमपायपरेहैं ॥ १२९॥ अज्ञानपरीसहतकपरीसालिषतेः

ति ६
५४

तर्कछंदव्याकरणकलानिधिअगमत्रलकारयच्छिजातैजाकीसु
मतिदेधिपरवादीविलषेहोयलाजकरआंनेजैसैसुनतसमुष्के
हरिकोमलगयंदजागतअपमानैत्रैसैमाहाबुधिकेनाजन
थेमुनीसमुदरंचनवातै॥२०॥अज्ञानपरीसह॥सांमशानघर
तेनिसवांसरसंजमअरपरमवेरागी॥यालतगुंपतागयेहिं॥
नदीरघसकलसंघममतापरित्यागी॥अवधिज्ञानअथवा
मनपरजेकेवलकिरणअकनहीजागी॥योवीललयन॥
हीकरेतयोचनसौंअज्ञानविजायेवउभागी॥२१॥अदरसन
परीसहणे॥मेंवीरघोरघोरतपकीजो॥अजोरिधिअतिसा
यनहीजागै॥तपवलसिधिहोहिसवसुनियुतसोनोवांत
कंवसीलागै॥यो कदाचिमनमेंनहीचिंततसमकतिसुघ
सांतरसयागै॥सोईसाधअदरसनविजरीताकेदरसन॥
सोअघजागै॥२२॥ईतीवाईसपरीसासंपूर्ण॥अघवद॥
दोहा॥येहरीतीसैसारकी॥जीनेजांएोसबकोयातातघरमसं
नेहकरी॥ईममरतासंगीहोई॥२३॥घरमसारसंसारमेंघर
मकरतसबहोई॥घरमविनांचारुंगतीरूलै॥घरमकरों
सबकोईबढी॥ओरमिथ्यातसवहीपरिहरोथेनाडीरे॥श्री
॥अथसंमेदसिषरविलासनाषालिषतेनिर्वाणकांडलिं
श्रीजितवरकेपूजिपदसरस्वतिसीसनवायागणधरमुनिके
चरणतमिनाषाकरोंवनायाचोपरी॥श्रीसंमेदसिषरसुष
धंम॥तापरिवीसकूंटअनिरांमतिनेतैतीर्थकरमुनि
राज॥सुक्तिगयेवैधर्मजिहांज॥२४॥तिनकीसंघाकहोवना
या॥अरकूंटनकोनामसुनायाजिनकेदरसणकोफला
कहोयाकेकहैमहासुखलहो॥२५॥अथमसिद्धवरकूंट
गितीस॥अजितनाथदेआदिसुनीस॥येकअडवअरु
असीकोडि॥चोवनलाषऊंकरजोडि॥येसवमीलग
येधरिध्याना॥तिनकोनमौंछोडिअनिमान॥कूंटतलो
दरसणफलयेहकोटिवतीसगुपवांफेहा॥५॥धवलसु

तजेरिषराजतीर्थंकरसंभवमाहाराजः। नौ कौडाकोडीगुण
मालां लक्षवहतरिसहस्रियाला। द्वि। पांचसैंशिवपुरकौंग
धितिनकौंध्यांनघरेसुषये। कुंटदरसफलघोषधजाणि। वी
यालीसलाषयेसांति। ७। अजिनं दत्तकौंआनंदकं॥

॥ अथ चरचास्तकद्यानतराञ्जीकृतिनाषाकेवतलिष्यते ॥
 जेसखगपत्रलोकलोकश्कचंडवतदेवेहसतांमलज्मूहाथलीक
 ज्यूसरवविसेषे ॥ छहौद्वैगुणपञ्जकालत्रयवर्तमानसम ॥ दर्पण
 जेमप्रकासनासमलकर्ममहातयापरमेष्ठीयांचोविद्यनहरनमंग
 लकारीलोकमैमनवचनकायसिरलायचुक्त्राणंदसौदौधोकमै
 शंभंदेतेमजिनंदचंदसवकौसुषदाई ॥ बलनारयणवंदसुकव
 मणसोनापाई ॥ ध्यांतरइंदवतीसनवनचालीसौत्रावै ॥ रविससे
 चक्रीसिंधसुरगचौवीसौध्यावै ॥ सवदेवनि केदेवजिनसुगुरुनि
 केगुरुगयहौ ॥ हूजैदयालममहालयैगुनत्रनंतसमुदायहै ॥
 अथअकृतमवैत्यालेप्रतिमासंख्यास्तति छप्ययावंदौत्रावके
 रोरलाषछप्यनसतानूं ॥ सहस्रचारसैंअसीएकजिनमंदिखा
 नूं ॥ नौसैंपचीसकोरलाषत्रेप्यनसताईस ॥ वंदौप्रतिमासरवसह
 षनौसैंअठतालीसव्यंतरज्यौतिकअगिनतसकलवैत्यालेप्र
 मानमौ ॥ आनंदकारडषहारसंवफेरिनहीनवननमौ ॥ अ
 थसिद्धनमस्कार ॥ छप्यया ॥ लोकईसतनवातसीसजगदीसवि
 रजै ॥ एकरूपवसुरूपगुनत्रनंतातमछजै ॥ असवस्तुपरमेय
 अगारलधुंदरवप्रदेसी ॥ चेतनअमूर्तीकत्रावगुनअमलसुदे
 सी ॥ नतकिषुजघन्यअवगाहयदमासनधरगासनलसै ॥ सवगपा
 यकलोकअलोकविधिनमौसिद्धनवजयनसै ॥ ध्याअथआ
 चार्यनुपाध्यायमुनितीनौसाधमैतनैसाधकौवंदनाछप्ययाअ
 चारुजवफायसाधननौमनधाऊं ॥ एणछतीसपचीसवीस
 अरुअठमनाऊं ॥ तीनौकोपदसाधसुकतकौमारासाधेनौ
 तननौगविरागरागसिबधातअरथै ॥ गुनसागरअविचलमेर
 समधीखसौपरिसहै ॥ मेनमौपायजुगलायमनमेरोजीवंछि
 तलहै ॥ अथलोकअलोकसरूपछप्ययाअमलअनास्त्र
 नंतअकृतअनमितअधंसन ॥ अचलअजीवअरूपपंचन
 द्वैअलोकतननिराकारअविकारअनंतप्रदेसविराजै ॥

नतवि
चर
६२

सुहसुरातत्रवगाहंसौदिसत्रंतनपांजे॥यामहलोकननतीनवि
धत्ररुतत्रामिटत्रईसरो॥त्रविचलितत्रनादित्रनंतसवनाष्ये
मित्रादीसरो धीलोकसक्यसनेयात्र १ पूर्वपछिमसातनरा
कतलैराजसातत्रागैयद्या॥मध्यलोकराजूएकस्याहै॥ऊवेव
टिगयात्रहलोकराजूपांचनयात्रागैयद्यात्रतएकएजूसरदह
है॥दहनउतरत्रादि॥मध्यत्रंतराजूसातजंवाचोदैराजूषट
दमनस्यालहै॥त्रसंघातपरदेसमूरतीककियोत्रेसक्येय
रेक्येहैकोतस्वयंसिद्धकहहै॥७ पुनःतीतीलोकतीतीवात
वलेवेदेसवगौरवृक्षछत्रडजालतनचामदेषिये॥त्रघो
लोकवेशसनिमदिलोकथालीननिजरधमदंगगनित्रैसो
हीविशेषियेकरकटिधारियावकोपसारिनराकारमेदसु
रजत्राकारत्रविनासीपेषियोघरमांहिचीकाजैसैलोकहैत्र
लोकवीचछकैकोत्रधारपहनिराधारलेषिये॥८ पुनःती
नसैतितालराजूघनांकारसवलोकयनोदधियनतनवातके
त्रधारहै॥तामेंचौदैवोकूटात्रसनाडीत्रसथावरपरैतीनसैउ
नतीसथावरसदारहै॥दहनउतरमोरीवीयालीसराजूसव
पूर्वपछिमउभतालीकैविचारहै॥राजूत्रसवीसासोतेता
लीसत्रधिककहेलोकसीसमिद्धनिकोमैरोनमोकारहै॥९
पुनःकषलमेंछेकवंसनाललोकत्रसनामिऊंचीचौदैवोर
राकराजूत्रसजरीहै॥यामैत्रसवहिरथावस्त्राववांधीकाह
मनसोत्रगाऊगयोत्रसवालकरीहै॥१० पुनःतीतीलोकतीतीवात
रथावरकोपत्रसत्राववांधीहोयमनसमैकारमानत्रसरीतध
रीहै॥केवलससुदघातत्रसक्यतहांजाततीतीनांतिउहांत्र
सजिनवानीषरीहै॥१० पुनःत्रयससुचयतीनसैतेतालीसराजू
घनांकारकलावउकथनाच्ययया॥पूर्वपछिमतलेसात
मध्याकवघांती॥यंचसुरामेपांचत्रैतमेंएकप्रवातीच

ऊमिलापचञ्जं सतीनसाटापरवानौ॥ द्दछनउतरसातसाद्वे
 वीसवषानौ॥ ऊंचादौदेराजुगुनौअधिकतितालीसतीनसै॥ यह
 घनाकारतिरुलोककौकेवलगापानविधेलसै॥ १२ अथअधोले
 करकसौछातवेराजू॥ छपया॥ पूरवपछमतलेसातमधिएकेगा
 शिउतयमिलेसौआठअरथकरिआरिवताई॥ द्दछनउतरसात
 गुनौअठईसराजू॥ ऊंचाराजूसातसतकछानवेनयाजूमहअ
 धोलोककासकहाघनाकारजिनधरममै॥ मतिपरौनरकमे
 पापकरिहोसुमारापरममै॥ १२ अथअरथलोककरकसौसैता
 लीसराजूकयत॥ छुप्ये मध्यलोकइकवृहस्पयांचडऊंमेलनईष
 टा॥ पूरवपछिमदिसाअईकरितीनराजूरद॥ द्दछनउतरसातगु
 नीइकईसवषांती॥ ऊंचासाटेतीनसाटतेहतरजांती॥ साटेसे।
 हतरिविधियेहीलोकअंतसौब्रह्मलगा॥ राजूइकसौसैतालस
 वधर्मकरेपावैसुमगा॥ १३ अथअतीनसैतेतालीसलोकमैजुहा
 जुहासैस॥ छुप्यया॥ छियालीसचालीसओखोतीसअवाईवा
 ईससोलेदसवनीससाटेवतलाईसाटेसैतिससाटसोलसाटेसो
 लेननि॥ आणीदोहोहानिअंतगपरैराजूगति॥ इमसातनरक
 आठौजुगलऊपरसोलेधानमै॥ राजूतेतालीसतीनसैघनाका
 रकहिग्यानमै॥ १४ अथतीनलोककोतीनवातवलेकाजुहाजु
 हाप्रमाणकथन॥ तलेवातवलेमोटेजोजनसहससाठअचैइ
 करजूलौसाठसहसधारने॥ आगेसातपांचचारतीनोसोलेजो
 नकेमधियांचवारतीनवारैकेचितारने॥ ब्रह्मलोकतीनोसोलेअ
 तमांहितीनोवारैसीसदोषकोसाएककोसकेविचारने॥ तनवा
 तथनुषपेनैसोलेसैताकोनागपंडैसैसिद्धएकनागमैनिहारने
 १५ तीनलोककेपटलएकसौवारैकोरा॥ एकतीनपनसात।
 औरनौगपारतेरजिया॥ इकतीससातसुचारदोषइकएकतीन
 तियतीनतीनअरतीनएकइकपटलवताए॥ इकसौवारस
 रववीसथानिककोगा॥ १६ सवसांतनरकआठौजुगलत्रय

पंचमि वि

६४

चक उपउत्तरे। अनघासनरकतेसवसुसमधम दोमौ समकित नरे
 २६। छहौ संघन ननरक स्वर्ग उसनि कयन। छहौ तीसरे जो द्विप
 चचौथै पंचम लगचार संघन न छठे एक सात एं नरक मग छे हे
 आठमै सुरग पंचवार मसु रजावै। आरसो लमै लोकती ननोशी
 वक पावै। दीनो संघन नउत्तरे एक पंच पंचोत्तरे। इक चर मसरी
 थिसि वल है वं दो जैत वचन घरे। २७। अथ छहौ काल चौ द्वे गुण
 थानक संघन नओ राकयन। छप्ये। प्रथम इति यत्र सत्रि नूय
 काल सै पहिला जानी वीथे घट संघन न पंचमै ती नवषां नो क
 रम नू मिति पती न एक छठे तीमां ही विकल चतु कमें एक ए
 क इंद्री किं नां ही घट कहे सात गुण थान लगती न इ जारे लो
 ल है इक षिप कसे मगु नतेर है धन जिन वानी में कहे २८। वी
 वीसौं जिन अंतर कयन। संवे या १। मचा सली सदस नो किरो
 रलाष मछे नो सहस कोर नो सै कोर न छे नो कोर है। सो सागर व
 षलाष छ्वास व सहस छ्वा घाट को रसागर चौ वरती सज
 रहे। नव चारती न घाट पौ न पल्प अर्ध्या व घाट लाषौ ला।
 षवर्ष लाषौ लाष जोर है। वीच न छ पा व लाष सहस पौ नै चो
 एसी मा वै अंतर जिनै सगा वै निस नोर है २९। अथ एक सौ अ
 वताली सप्रकति किस किस गुन थान क्षिपी छप्यय। सात ३
 ३ कृति कौ घात ती कसाष मगु न थाने। ती नत्रा व नदि होय न
 वम छती सो जानै। दस मै लोन विचार वार है सो लमि टा चै।
 चौ द है मै के अंत व हतर तेरष पावै। इम ती रकर्म अठ ताल
 सो सुगत मां ह सुप्र करत है। प्रभु मो हिवु लावो आ पटि गह म
 हं पाप नि परत है। ३०। अथ मानषो तर मां न। कवित मां नषोत्र
 परवत चौ राई नूपर एक सहस वाईस। मध्य सात सै ले ईस जो ज
 नउ पर चार सत क चौ वीस। सतरै सै इक ईस उचा ईज ड चार सै
 पावन्न रुती सस्त्रि विमान किं ह मंति मिल्यो है जो अन लाष।
 क हौ जग दीसा ३१। अथ देव लोक नारी संजोग जे दा दो य सु

रगमें कायजोग है। दोयसु रगमें फरसनिहारा। चारिसु रगमें रूपनि
 होरे। चारिसु रगमें सबदविचार। चारसु रगमें रूपनिहारे। चारिसु
 रगमें सबदविचार। चारसु रगमें मनसू विकल्पतत्रागें सहजसा
 लनिरधार। अहिमिंदरसवमहासुषी है। अंदोसिद्धसुषी अवि
 कार। २२ अथ एकसो गुणहृत्तरपुरुषकथना। अथेयचौ वसि
 जिनराययापवं दो सुषदायका। कामदेवचौ वासईससुमरोसिव
 वायका। अरतत्रादिचक्रोस दोसवकुसुरनरस्वामी। नारिदपदम
 सुरास्त्रिओरप्रतिहृत्तरजगनामी। जिनतातमातकुलकरपुरुषसं
 करउत्तमजियधरो। कुच्छतदनवकुच्छत्रवधरजंगतिसुकति
 रूपवदनकरो। २३ अथ कर्मप्रकृति। १४ धर्कायोरा। अथे। ग्या
 नावरतीपंचदरसतावरनीनोविध। दोयवेदनीनांतमोहनीअ
 षधीसनिधिआवध्यारिप्रकारनांमकीप्रकृतिनिगंतूतघाए
 कसोतीनगोतदेनेद्वषान्। कहिअंतरायकापांचसवसो।
 अठतालीसजांनिये। १५ अथातकरमअत्रचतालिसोनिन्नरूप
 निजमांनिये। १६ संवेया ३२ वर्तदिकवीससंस्थांनसंघतन।
 वारेबंधनसंघातदेहअंगोपांगवारैहै। अगुरुलघुआताप
 अपघातपरघातनिर्मानपरतेकसाधारनसारैहै। अथिरउदो
 तीथिसुतअश्रुजवासठपुगालविपाकीजोविपाकीआतव
 रैहै। अत्रकीवियाकीचारअनपूर्वीउत्तरवाकीजीवकीवि
 पाकीधारैअघटारैहै। १७ संवेया ३४ केवलदरसजांसत्रा
 वरनीताकीदोयमिथ्यातसमैमिथ्यातनिशपांचजांनिये। त
 नचौकरीकीवारैसर्वेयातइकईससंजलनचारनवनोकष
 यमांनिये। ग्यानावरतीकीचारदर्शनावरनीतअंतरायपां
 चसम्पकमिथ्याततानियेदेसायातिकीछवीसवाकीइक
 सोअघाततीनोंघातकर्मघातत्रापसुद्धजानिये। १८ ईवनी
 दिकचारसोलैनांहिदेहअदिपंचदरसनाहिमिथ्याएकदे
 यबंधनाहीहै। सोलैदृशदोयविनाबंधएकसतवसिमि।

तत ०
६५

प्याउदेती न दोयवदेउदेपांही है॥ उदेत्रै उदीरना है एक सतव
इसकी सतासौ त्रुव ताल विसेषतागं ही है॥ मिथ्या गुणसो छुए
लकारु सतसताइस पांचोति रंगासौ त्रु संगी त्रापमां ही है॥ २५
छुप्ये। वंध एकसौ वासुदेसो वाईस त्रावै। सतासौ त्रुव तालप
पर्कीसौ कहिलावै। पुंन प्रकृति त्रुव सतन र्जीव विपाकी वास
वदेह विपाक वेतन वचन वाकी॥ इकरै ससरं वयाती प्रकृति देव
याति छु छीस है। वाकी त्रुया॥ इति इकरु अधिक सतनि न्नि सिइसे
वइस है॥ २५ त्रुया पाप प्रकृति नाम सवै या॥ ३१ श्यातसै ताली
सडषनी चनरका चपांच संसथान संघ नन वन रसमां नियो। नर
म सुगति त्रुान पूरवी फरस त्राठ गंध दोय इ जीवार वुरीवाल वानिये।
त्रुथिर त्रुपर्यापति सूक्ष्म त्रुसाधारन त्रुयथा तथा वर त्रुसुनप
रवां नियो। उर्नाड स र्त्रुनाद र्त्रुजस र्त्रुपाप प्रकृति से जे द्द
त्याग धर्म जां नियो॥ २६ त्रुय पुन्यकी॥ इति प्रकृति वर्णना सवै।
या॥ ३१ सुखरय सुत्रावसात्ता कंचन लीचालि सुखरगति त्रुां।
न निरमांत स्वास है। वंधन सघान देह वर्नरस पंचन सतीन त्रुां
सुजदोय गंध त्राठ फास है। त्रुगुरु लक्ष प्रविंदी संसथान संघ
नन वाद र्प्रत्येक थिर पर्याज सरास है। त्रातप नदो तपर यात
सुसुर सुजग त्राद र्तीर्थ करको वंदो त्रुयनास है। ३२ त्रुयजे
नमत त्रुयांत वर्णना। छुप्यया। ति हं काल षट्द्वैप र्थ नो उ
मजाषे सात तत पंचास्त्रिका य षट्काय करावे। त्राठ कर्म युन
त्राठ नेदले स्या षट्जां नै॥ पंचर त्रुव समित चरित गति ज्ञान व
षां ने सरथै प्रतीतरु चि मन घरे सुकति मूल समकित यही पद
न मो जो र्करि सा सघ र्धन सरख गय र्द विधि कही॥ ३१ त्रुया॥ २
३५ कुलकोडिका कथन सवै या॥ ३१ प्रथवा काय वीस द्ये।
यजल सात तेजतीन वायु सात तरु वीस त्राठ परवां नियो। वे
ने चनु ईसा त्रुयाठ न वषग वारे जल वरसा देवारे चोये दस जं
नियो। सिरिस सपिन वना र्कि पंधी सन र्चोदै देवता छु वीस कु

ललाषकोरिमांनिये॥ दो इकोराकोरिमांहिआधलाषकोरिनाही
सवकौनिहारिकेदयालमावत्रानिये॥ २१॥ अथापारेनेद्वंका
नतीनांमछप्यय ग्यारैत्रंकपदएकत्रंकदससवपदधानी॥ पूरव
चौदेत्रंकवीसत्रंछरजिनधानी॥ अनतिसत्रंकमनुष्यपछपैत
लीसत्रंछर॥ सरसोकुंडलियालनेदसैथितिअछरवर॥ इकती
सत्रंकपलकलपकेजंबुफलावटदसवरना सववातवलोपारेवर
तधंनिजेनससैहरना॥ अत्रेहमेंगुनस्थानकसातत्रिनंगीकथन॥
छंद॥ छप्ययासाजुनआसरद्वारबंधइकसाताकहिये॥ चौदेना
वप्रमाणपचासीसतालहिये॥ असाचौउरासीयइक्यासीत्रौरपद्य
सी॥ यहसताचौनेदविशेषजिनेश्रुलासी॥ इककमवालीसउदी॥
रणउदैवियालीसमांनिये॥ यहतेरहमेंगुनधानमेंसातत्रिनंगी
जानिये॥ २४॥ अथबंधदसककथन॥ छप्ये॥ जीवकरममिलि
बंधदेइरसतासउदैनणि॥ उद्दीरणउपायरहेजवलौसतागुणे
उन्नकरषनधितिददैघदैत्रपकरषनकहियतसंकरमनपरो
रूपउद्दीरणविनुउपसमप्रत॥ संक्रमतउदीरनवितुनिधितघ
टवटउद्विनिसंक्रमन॥ वज्रविनानिकाचतबंधदसजिनत्रा॥
पपदजांनिसना॥ २५॥ अथतीनलोककेविषेअकरतमचैसा
लोकीसंख्याकथन॥ सवैया॥ २३॥ सातकिरोडवहतरलाष
पतालविषेजिनमंदिज्ञानि॥ मध्यहिलोकमेंचारसैठावनव्यंत
रजोतककेअधिकाने॥ लाषचौरसीहजारसतानवैतैईसउरध
लोकवधाने॥ एककमेंप्रतिमासतआवनमेंतिऊजीगत्रिकाल
सयाने॥ २६॥ अथतीनयादितवकोटिसुनिसंख्याउरुससवैया
२३॥ यांचकिरोडतिगनवैलाषहजारअवानवेदोसैछजानेज
वछडेगुनतैआधेसातमेंग्यारमेंछानवैध्यारविकानेआव
तवेदसवारहचौदहमेंउनतीसनवैपरवाने॥ तिरमेंआठहि
लाषहजारअवानवेदसवारहचौदहमेंउनतीसनवैपरव
ने॥ तिरमेंआठहिलाषहजारअवानवैपांचसैदोइवधाने॥ २७॥
अथअटईहीपज्योतिषीसंख्या॥ कवितछंद॥

नतवि
६६

सूर्यगामीयह्ना द्वाइसनयतवधाम/डासवसहसपचतरनवसे
कोडाकोडीतारेजाना/इकसोवतीसचंद्रइहीविद्यताईहीप्रमध्यप
रवान/सवचैत्यालेप्रतिमामंडितवंदनकरैजोरिजुगपांन ३४
अथत्रायुकर्मकेबंधकेनेदाएकवित्त/त्राउत्रंसंपैसवसेइ
कसवइकर्मइससैसतासीजानसातसतकउनतीसदोइसैतेता
लीसइक्यासीमानसत्ताइसत्रौरनोतीनेएकत्रावमनेदवधान
नोमीत्रंतकालमेंवाधेअगलीगतिकीआउनिदानत्रएअथ
सतावनजीवसमासस/छप्यै/नूजलपावकवापनितईतरसाध
रणामूह्मवाटरकरतहै/तहादवाउचारनसुप्रतिष्ठप्रतिष्ठ
मिलतचौदैपरखानो/परजत्रपर्यत्रलष्टगुनतव्यालीसवधानेगु
नवेतेचौइहीत्रिविधसरवाकपंचासनीमनसहितरहिततिऊ
नेदसोसतावनधरदयामनाधवेअथअज्ञानवैजीवसमामससवै
या/३५इक्यावनयानजानथावरचिकलनेकेगर्जजदोतीन
सनमूरखनगाएहे/पांचौसैनीत्रौरत्रसैनीजलयसननचार
नोगनूमिभूत्ररषेचरदोदोप्राएहैं/दोदोनारकीसुदेवनोविध
मनुष्यनेवनोगनूकनोगनूमलेछनूवताएहै/दोइदोइदोय
तीनत्रारजमेंउजतहैअज्ञानवैदयार्करैसाधतेकहाएहे/४१
अथसाटेसैतीसहजारप्रमादनेदनेदसथना/छप्यै/विकथारू
पपचीसत्रौरपणवीसकषायनिगुनतैछसैसवापांचइहीमन
सोगुनियूनेअारहजारपंचनिडासोगुनियै/सहसपांनउनरस
नेदअरूमोहसुसुनियैसाटेसैतीसहजारसवननेदप्रमादप्रमाद
धवांनिये/इहेगुनथानकलौकहेत्यागत्रापथिरवांनिये/४२
अथज्योतिकपरलकातलैंउपरिअंतरकथना/छप्यैसातसत
कअरनवैतासपरतारेजै/ताऊपरिदसजांनुअसीपरिचंद्र
विराजै/चारनयतबुधआरतीतपरसुक्रवतायो/सानगुरूकु
जतीमपरिश्रितिवहसयो/इमनवसेजोजननूमितैज्योतिषच
क्रवधानिये/इकसोदसजोजनगनमेंफैलिरह्योमोकथनई
पानामेंमीलतोत्रैआकइकतालीसकोसपरधानिये/४३अ

यगुनस्थानंकउपसमीकोकिहिमारागत्रावैजावैसोकथनाछपे
 मिथ्याभाषाचारतीनचउपांचमानजनि॥ इतिपाकमिथ्यात
 ततियचौषापहिलागनि॥ अत्रतमारगयांचतीनदोएकसातपा
 नपंचमयंचसुसातत्रारतिपदोशकमन॥ छठैषरश्कपंचमत्र
 धिकसातात्राठनवदससुनोतियत्रथऊरधचौथैमरनगपारवार
 वितुदोमुनो॥ ४४॥ अथचौवीसतीर्थकरवणीककथनाछपे॥
 पुहपदंतप्रभुवद्वंदसमसेतविरजे॥ पारसनाथसुपासहरि
 तपत्रामयछजे॥ वासुपूज्यअरुपदमरकतमाणिकउतिसो
 है॥ मुनिसुव्रतअरुनेमसुरनरमनमोहै॥ वाकीसोलेकंचनव
 स्नयहविषहारसरीरयुति॥ निहैवैअरुपचेतनविमलहर
 सग्यानचरितजुता॥ ४५॥ अथश्रीगोप्रदसारकात्रादकानम
 स्कारअष्टकसूचका॥ छपे॥ बंदोनेमजिसांदनमोहोवीसजि
 नेश्वर॥ महवीरवंदाभिवंदसचसिद्धमहेश्वर॥ सुहृजीवपण
 मामिपंचपदप्रणमु॥ सुप्रप्रतिगोप्रदसाधनमामिनेभिवंदत्रा
 चासननिजिनसिद्धअकलंकवरगुनमनिभूषनिउदयधरे
 कहंचीसपरूपनजावसोयहमंगलसवविघनहर॥ ४६॥ अथ
 घटविधमंगलाछपे॥ नमज्जनामअरहंतयुनज्जनिचिवा
 कललहर॥ शिअत्रौदारिकदिव्यचिवजनिवाएअवनिपर
 कहेकल्यानककालनज्जकेवलगुनपायक॥ यहषटवि
 धतिहोपसहामंगलवरदायक॥ मंगलज्जनेदसवजाशालमंगसु
 षलहृजीयरा॥ यहआदमध्यपरजंतमैमंगलराषोहायरा॥ ४७॥
 अथपांचप्ररूपणाचौदहमादगाणामध्यगर्जिनहैसोकथ
 ना॥ सवैया॥ शुश्रुजीविसमासपरजायतिमनवचस्वासईडीक
 मांदिआवगतिमैवयानिये॥ कायवलजोगमांदिइडीपांच
 तांतमीहिआहारय॥ रिग्रहएलोभमैप्रवांनिये॥ क्रोधमां
 हिजयअरुवेदमांदिमैथुनहै॥ ग्यांनग्यांतमांदिदरीदगो
 मांदिजांनिये॥ पांचौपररूपनाएचौदहमैगर्जितहैग
 नमारगतादोयनेदमांनिये॥ ४८॥

ज्ञानत २
६७

प्रताम ॥ छप्ये ॥ वंदौ पारसनाथनमो वलरंमचंद्रवरं कामदेवहनुमं
तप्रगटरावनमांती नर ॥ दानेश्वरम्रेयं समीलते सीतानां सी ॥ तपवा
रुवलरावनावनरनेश्वरस्वामी जगमहादेव हैरुद्रपदकिष्किनांम
हस्तिनांनिये ॥ शानतकुलकरमेंनाशिनृपतीमवलीनुवमांनिये
४९ सर्वशीपसमुद्रोकेचंद्रमांकीगणातीकथन सवैया ॥ जंबूद्वी
पदोइलवनांबुधिमैच्यारचंद्रधातुषंमवारैकालोदधिवायाली
सहै ॥ पुष्करकेजागदोइईधरवहतरहै ॥ ऊधैवारैमैचौसठमाषे
जगदीसहै ॥ पुष्करजलधिसारदोसतापारैहजारआगेचा ॥ आगे
चौगनेवषांनेनिसईसहै ॥ जेतेलाषतेतेवलेइनेअधिकेहैसवत्र
संख्याचित्यालेवेदिसुनीसहै ॥ ५० ॥ अथोलोकचित्यालेकसंख्या
कथनकविता ॥ छंद ॥ चौसदिलाषत्रसुरजिनमंदिरलाषसुर
सीनांगकुमार ॥ हेमकुमारसुलाषवहतरछहविधलाषछहन
रधार ॥ लाषवांनवेवातकुमारपताललोकजावनदससारसा
तकोसवललाषवहतरचैत्यालेवंदौसुषकार ॥ ५१ ॥ मध्यलोक
चैत्यालेसंख्या ॥ छप्येछंद ॥ पंचमेरकेअसीअसीवरकार्यविरा ॥
जे ॥ गजरंतनियेवीसतीसकुलपरवतछाजे ॥ सोसमरवैतारथा
रकुरनुमदसौतरा ॥ इअकारपहारचारचवमांनषोत्रपरनेई
सरवानरुचिकमेंचास्वारकुंलसिधर ॥ इममध्यलोकसैवा
वनवंदौवियनहर ॥ ५२ ॥ ऊरधलोकचैत्यालेसंख्याकथन
सवैया ॥ प्रथमवतीमइजेअठईसतीजेवारैचौथेआव
पांचेछडेच्यारलाषष्यातहै ॥ सातैआठमेंपचासनोंमेंदस
मैचालिसग्यारेवारैछहजारचारोंसतस्यातहै ॥ अथोएक
सतग्यारैमध्यकसतसातकरधक्क्यातूनवनवोतरेजा
तहै ॥ पंचोतरेपाचचवरासीलाषसतानहजारतेईसचित्य
लेवंदौअथघातहै ॥ ५३ ॥ अथसौधमिइइकेसेनासातप्रक
रतिसकीगतती ॥ सवैया ॥ इइसेतसातहाथीघोरेरथप्या
देवैलगंधरवनससातसातपरकारिहै ॥ आदिवोरसी ॥
हजारआगेषटहनेइनेएककोरछलाषत्रवसठहजार

है। एते गजते ते ते ते छद्मे दसवके ते सातकोर छयालीसला।
 अनिरधरि है। सहस्र छद्म स्त्री एक चक्रवत्तार न्योग पुन कर्म नै
 ग नोग मोष कौ सिधारि है। ५४ अथ एकै ही अदिसे नी पर जंत्र।
 षट्त्रे दजी वनि जइं ही विषे त्र सीमा कथन। छपौ फर सचार।
 से धनुष त्रै से नी लोड गता गनि। रसनां चोष विधनुष शान मो ते
 इंडी अनि। चष जो जन उन ती सस तक वी वत परवाने। कां नत्र
 वसे धनुष सु नो से नी जो जाते। नव जो जन शान रसनि फर सु क
 नडवा दस जो जना। चवसे ता ली सस सहस्र डसे ते सव देषे जिन
 नना। ५५ दं कपा वत्रा वस मे ता त जो पा पाई ये किस किस
 किस किस स मे सो कथन। सवेया। यह लै स मे मे करै दं कपा व मे सं
 वरे पर दे सत्रा त मत्रो दारिक घवां नियो। इस रे कपा व होय सा
 त मे सं वरे सोय सं वरे प्र तर छ द्वे मित्र जो ग जां नियो। ही सरे प्र तर चो
 यि पूर त सर व लोक पूर न सं वरे पा चै कार मान मां नियो। ध्या व स
 मे मां हि जा त कैवल स मु द्या त ति जिरा न्न सं ध्य गु ता दे व सो वषा
 नियो। ५६ मिथ्या ती य्या ती मु कत न होय सम कि ती होय म
 ह कथन सवेया। एक स मे मां हि एक स मे पर व द वं धे एक स।
 मे पर व द वं धे। वर्ग ना ज घ न्य मे अत्र व सौ न्न नंत गु नी उत
 कि छ सि द्ध कौ अ नंत ना ग धे रे है। जैसे एक गा सषाय सा त धान
 होय जाय ते सै एक सात कर्म रूप त्र नु सरे है। यौ न ल हे मोष के
 श जा के उ र पां न होय एक स मे व जषो य सो ई सि व वरे है। ५७।
 अत्र कर्म के अत्र दिष्टां त सवेया। दिव्यै पस्वौ दै पटरूप को
 नपां न होय जे सै दरवां न नू प देष नो नि वारै है। सहस्र लये र
 अ सि धार सु ष डष कारा म दरा ज्यो जी वनि कौ मो हनी वि धार
 है। का व मे द्यो है पा व करै थित कौ मु ना व चित्र कार ना नां
 म ची त कौ स मारै है। चक्रा जं व नी च घ रे नू प दि यो म नै करै ए।
 इ अत्र कर्म दे रे सो ई ह मे ता रै है। ५८। कवि ना प च प न म च
 स नै ता ली स छ या ली स मे ति स चो विस जां न। वा इ स चा इ स मे

द्यानतः

६८

लैदसत्ररुनवनवसातत्रंतत्रंतनववांन। चौदैगुनथानकमे
 शहविथत्राम्रवधारकहेनगावांन। मूलवारउत्तरसतावउ
 नासकरोधरिसंतरग्यांन। ५५। इकसौसतरेएकएकसौचौह
 तरसतहतरमांन। सतसठतेसठउसठवाठनवाइससतरेहस
 मेंथांन। ग्यारमवाअतेरससाताएकबंधनहित्रंतनिदांन। सव
 गुनथांनकवधेप्रकृतिश्मनिह्वैपायत्रबंधपिछन। देवेइक
 सौसतरेइकसौग्यारैसौअरुसौचौसतासाय। इक्यासीछेहतरव
 हतरछासकत्ररुसावउदीय। उनसठसतावन्नवियालिसव
 रैप्रकिनउदैहैजीय। चौदैगुनथांनककरिचनाउदैनिन्नतुव
 सिद्धसुकीया। ६१। इकसौसतरेइकसौग्यारैसौसौचौसतासा।
 जांन। इक्यासीतेहतरवुनहतरतेसठसतावनमांन। छपनचौ
 पनउनतालीसतेरमेंत्रंतनहीपरवांन। महउदीरनांत्रवेदे।
 धांनककरैग्यांनवलसोतूग्यांन। ६२। महलेसोअवताल ६जेसै
 पैतालतीजेमांहि सौसैतालचौथैअवतालसौ। पांचेगुमसैसैताल
 छवैसातेत्रावैनौमैदसमैग्यारमैउपसमीहैछपालसौ। अठिनौ
 मैसौअठनीसहसमैइकसौ दोषधारमइकसौएकत्रागैयइटाव
 सौ। तैरेचौदमैपिच्यासीसतानासत्रविनासानमौलोकषनऊ
 रधराजूसैतालसौ। ६३। अजलपावकपौससाधारनपंचभेदस
 छमवादरदसपरतेकग्यारहै। छहजास्वारैवोरैजनसमरन
 थोरैवेतेचौइंडीअसासावचालीसधारहै। चौवीसपंचेडीसव
 वासठसहसतीनसैछतीससैसैतीसतेहतरसारहै। छती।
 ससैपिच्यासीस्वासत्रधिकतीजाअंसतमोनाथमोहिसव
 उयसौगधारिहै। ६४। धातियाकर्मकीप्रकृति। मतिअतत्रौथ
 मनयसैकेवलग्यांनपंचत्रावरनग्यानावरनीपंचभेदहै। च
 छत्रौअचछत्रौथकेवलदरसवारअावरनवारनिइनिइ
 निइभेदहै। प्रवलाप्रवलाप्रवलाथांनरधनौभेददरसना
 वनीमोहत्रवाइसवेदहै। दांनलाभनोगउयनोगवलत्रंत

रायपंचसवसेतालीसघातियानिषेदहै। ६५। मोहकर्मकीप्रकृ
 ति। २६। नाम। अनंतानबंध। औत्रप्रत्याख्यातीप्रत्याख्याना।
 संजलनचारेक्रीधमीतंमायालोअहै। हासरतित्ररतिसोकने
 जुगपसानारीतरषंनरापचीसीचारतकोछेअहै। मिष्यातसमेंमि
 ष्यातसमेंप्रकृतिमिष्याततीनोंदरसनमोहदरसनकोचोअहै
 अवाइसिमोहनीयजीयनिकोमोहतहैनासैजयाष्यातसम
 कवायकसोअहै। ६६। अघातियाकीप्रकृति। २७। अघात
 तकर्मकीधितिउतकिइजघनजया। साताऔत्रसातादो
 यवेदतीनरकयसुनरसुरावद्यारजचनीवगोतहै। नाम
 कीतिरनांकसवएकएअघातआदितिनअंतरायधितिती
 सहीअहै। नामगोतवीसमोहनीसतरकोराकेरिदधिआवर
 कीसागरतेतीसउदोतहै। वेदनिचोवीसघरीसोलेनामगो।
 तपांचौअंतरमकरकविनासैग्यानजोअहै। ६७। नामकीधकृ
 ति। २८। नाम। तनबंधनसंघातवर्नरसजानपंचसंसंधानसय
 ननघटआठफासहै। गतिआनपूरतीहैचारदोविहायगंध।
 अंगतीनपैसठएत्रसथूलनासहै। पनीपतधिरसुनसुनगघ।
 त्येकजससुस्सुआदरदोदोनिरमानस्वासहै। अपघातपर
 घातअसुरसधकृतातापउदोततीर्थकरजीवदौअघनासहै
 ६८। जंबूदीपपूरुपच्छिम्योएजंबूदीपएकलाषमेरदसही
 हजारअइसालदोवनसहस्रचवालीसको। वाकीछयातीस।
 आधौआधदोनोहीविदेहदेवावनउनतीससेवाइसकेती
 नोनदीपौनेचारसतआरोहीविष्यारदोहजारआठौंहावि।
 देहवचनइसके। सतरैसहससातसततीनजोजनकेनमो।
 चारतीर्थकस्वामाजगदीसको। ६९। दक्षिनउत्तरयोरा। जं
 बूदीपदखनउतरलाषजोजनकोजागाएकसौनघैएकजर
 तजाइपै। दोयहिमवनसैलचारहैमवतषेतमहाहिमवन
 आवसोलेहरगाइपै। अतीसनिषअतरेसठऊंरैसवचच

मैं विदेहनागवैभवताइये॥ नागपांचसैसुवीसकलाछहउ
 निसकीअवहतरचित्यालेसदासीसताइये॥ ७० अथोलो
 कसेनीवधविलेसंख्या॥ सातनकर्तूमिउतंचासपाथरेनिवास
 इंदकनीउतंचासवाचमांहिविलेहै॥ पहिलोसीमंतचारदिस
 सैनउतंचासचारविदसामेअवहालीअयनिलेहै॥ आवदिसमे
 नीवधतानसैअचासीअएअगैआवआवघटेअंतचारमि
 लेहै॥ सवदानवेसैचारजेजनअसंघधारदयाधरैधर्मकरेति
 नों॥ ७१ अर्द्धलोकसेनीवधविमांतसंख्या॥ अरधत
 रिसवपटलकहेआगममेनेसवहीइंदकविमांतवीचजानिये
 यहिलोअुगलतार्केपहलेकोरिअुनांमजाकीचारदिसामेनवा
 सवप्रवांनियेचारैदेसेअवतालीअगैघटेचारवारअंतर
 हेवारअंवेचारवीकवांनिये॥ सेनीवधतरसेसोलेजोजन॥
 असंघसिद्धवारेजोजनपेध्यानमांहिअानिये॥ ७२ लोनोदधिके
 माहि॥ १००५ कलसजथा॥ लोनोदधिवीचचारदिसामांहिचा
 रकूपकहैहै॥ मृदंगजेमतिनकोप्रदानहै॥ पेटत्रौरअंवेए
 कएकलाषजो॥ जनकेनीचैत्रौमुषताकोदसहजारमानहै
 चारविदसामेचारपेटत्रौरअंवेदसहजाराकनीचैत्रौमुष
 कोवषांनहै॥ अंतरदिसाहजारपेटअंवेहैहजारनीचैत्रौर
 मुषसौकेधनजैनग्यांनहै॥ ७३ तिसठइंदकविमांतकोमांत
 पेतासीसलाषकोहैइंदकरिअुविमांतसर्कारथसिद्धअंतर
 कलाषकाकहा॥ चवालीसघटेहैदेसठमेवासठवोरअंवे
 अंवेएकएककेताघटतीलहा॥ सतरहजारनेसैसतसठजे
 जनहै॥ तैईसअधिकनागइकतीसकागहा॥ तिसठइंदक
 नांमतेसठहीजिनथामवंदैअनवचकायतिनकीसोनामह
 ७४॥ आवप्रकृतिअपरकेगुंनथांतवधेनीचैउदैआवेसुर्व
 सप्रकृतिजहांवंधैतहांहीउदैआवेवाकीनीचैगुंनस्थान॥
 वंधिकेअंवेउदैआवे॥ ताकोचौरा॥ सवैईया॥ देवगते॥

आव्यांनपूर्वाप्रकृततीतिवेकूपकत्रंगत्राहारकत्रंगचा
 रहै॥अजसात्रावोंकवेवंधैतीचेउदैहैहिसंजलनलेअवि
 नापंदैरिहारहै॥हासरतनेगिलातनखेदनरत्रांतसूक्ष्मत्र
 प्रयीपतसाधारनधारहै॥आतपमिथ्यानाचुवीसंधउदै
 साथतीचेबंधकचैकदैछीयासीक्त्वारहै॥७५॥भावपरा
 वर्तनिअनंतनागभवकालनवपरावर्तनिअनंतनागकाल
 परावर्तनिअनंतनागषेतकहोषेतकोअनंतनागपुगाल
 विसालहै॥साकोआधनामत्रईपुगालपरावर्तनिफिरतोर
 होहैयाहियांनीग्यांननालहै॥नाहीसंमैसम्पकउपजवैको
 जोगतयोत्रोरकहासम्पकतातरकोंकारव्यालहै॥७६॥ना
 वपरावर्तनिअनंततैकरैहैजीवएकनावर्तैअनंतनोके
 परावर्तकर्तहै॥एकनोसतीअनंतकालपरवर्तकरेका
 लतैअनंतषेतपरवर्तकर्तहै॥एकषेततैअनंतपुगाल
 परावर्तपंचफेरीविषैआयमिथ्यावसपत्तहै॥सातकोवि
 नासजिकैसम्पकप्रकासतेईद्वषेतकालनवतावते
 निकर्तहै॥७७॥अथयांचलभूकथनाथावर्तैसेनीहोयप
 ह्मिउपसमहै॥दांतपूजाउद्धतविसोहीनुपयोगहैगुरुनुप
 देसततग्यांसोईदेसनाहै॥अंतकोराकोरीकर्मकीधिति
 प्रायेणहै॥जामेअनंतवाश्चारलक्ष्पाईइनिकानीलक्ष्वि
 नासमकितकोंनजोगहैअधोअप्रूरव॥अतिवृत्तकर्तनीन
 करैमिथ्यामांदिपांचेचोथासम्पकनियोगहै॥७८॥नंदीमर
 दीपजया॥एकसोतरेसवकिरोस्त्रवरासीलाघ
 वीरादीपवावनपहारहै॥दिसाचारअंज
 हजारसोलेदधिमुषजोजनदसहजारहै॥रतिकरहैध
 तीसजोजनहजारएकलंदेचोरेऊंचेसवदोलकेअहार
 है॥सवप्रजिननोनवावनविराजतहै॥वर्षतीनवार
 करैजेजेकारहै॥७९॥मेरजया॥मे

नानूहजारचूलकावालीसवालत्रंतरविमानहे। नचिनप्र
 सालवनहिसाचारजिनमोनपांचसैपेनंदनचित्यालेचारवा
 नहे। सादेवाप्रवृत्तजारसौमनसवनचारचित्यालेजवेसहस्र
 च्छतीसवषांनहे। तहंवनपंधुकचित्यालेवारसवसोलैम
 नचवकायसेतीवंदोपापहांनहे। प० पुन मेरुगोलजमत
 लेदसहजारनचैकोनूसमैहजारदसनंदनपेलहाहे। नो।
 हजारनवसैचौवनभागकहेवहांसौमनसवियालीसेवह
 तरहाहे। पंधकहजारकवीचवारेचूलकाहैचौसैचौरावृ
 वनपंधकसरदहाहे। सोमनसनंदनहेपांचसैकेनइसालवा
 र्सहजारपूर्वपश्चिमकेहाहे। प१ चोदेगुनथांनकत्यग।
 उत्पति। छये। मिश्रक्षीणसंजोगतीनमैमरणनपावे। सातत्र
 वनचदसमप्यारमरचोथेआवे। अथमचहंगतिजा मडति।
 यदितनरकर्तीनगतिचोथेपूरकआवच्यतेचऊंगतिपाय
 ति। पंचमतेंपारमसात्गुनमैरेसुरगमैत्रो। तरे। वंदोइकचो
 दसथांनतजिअजरअमरसिवपदवैरे। ६२ नवमवुणथा।
 नप्रकृतिहपा। ३ ईनांम। सवैयां ११ प्रसारव्यानीवारओघ
 त्यास्यांनीवारभेदसंजलनतीननवनोकषायजानिये। ए।
 केडीविकलत्रैथावरआतपउदोतसूक्ष्मत्रौसाधारन।
 जीवनकीमातिये। निशनिशप्रचलाप्रचलाअरुथीनगृध
 नीतीनोंमहायोतीकवहूनवाणियेनकंपमृगतिअनपू
 रवीप्रकृतचारनोमैगुनथांनकमैएछतीसनांनिये। ६३ अ
 थजिनवांनिकेयदोकीसंख्या कथन सौलेसैचोतीसकिरै।
 रलाषतेरासीठतरसयअहासी। अत्ररएलेषियेइक्यावन।
 कोआवलाषसहसचौरासीसूहसैसादेइकीसरएसिले।
 कपेषिये। ताकोपदइकसौकिरैतेरासीलाषसहसअहा
 वनदेषिये। पंचपदएतेसवहादसांरजिनवांनिकेमनव
 यनेदगांनकोविसेषिये। ६४ चोदेगुनथांनकऊपरसाता

बनआप्रवहारकथनपहलेपांचौमिथ्यातइजैअनंतानं
धीगारहअविरतप्रत्यारमानीपांचौगाह। विक्रयकप्रौत्र
प्रत्यारमानीत्रसबंधवैथैआहारकचठेघटहास्पत्रावलै
लहे। तीनवेदतीनसंजलननवैलीनदसैत्रसतनुजैवचन
मनवारहैकहे। सतअनुनयवचनप्रौदारकतैरैमिश्रक
मीनचारिगुनथानेसरहहे।।७५।। वैदैगुणथानविषैचारि
आयुबंधतथाउदयविवरन। नरकआवपहलेबंधेउदे।
वैथैहिलोपसुआवइजेबंधउदेपांचमैकहीनआवचौ
थैलाबंधउदेचौदहलौसुरआवसातैबंधउदेचारिमैलह
नरपसुजीवनकंपसुनरआवबंधवैथैतैआगौचढवेकै
नसकताही।। चारौआवतीजेगुनथानकमैबंधेनांदिअ
वनासजएसिधतिनकौबंधौसही।।७६।।। आमुंथानक
निगोदनहीं।। चारथानकसास्वादनजायतही। तीर्थकरस
ताजहानपार्श्व। सूक्ष्मश्रौरकामीनसरीरंग। मनपर्यय
परमाविधिसर्वाविधिमोक्षजाहि। सोकथन। असीनीरआ
गियोनकेवलश्रौरआहारकनकसुर्गाआवमैनिगोदनां
दिगाईये।। सूक्ष्मनरकतेजचायमैनसास्वादननौनत्रिक
पशुमैनतीर्थकरपार्श्वे।। सबहीसूक्ष्मअंगकहेहैकपोतर
गकारमानदेहकौसुपेदसंपनाइये।। विपुलमनपर्जेप्रौपर्म
श्रौधिसर्वश्रौधिगीकलहैमोक्षतातैइकैसीसनाईये।।७७।।
।। सातनरकसोलैस्वर्गतथाअहमिंद्रउत्पतिकथनं।।
सातैनिकसपसुछठेनरवृत्तनांदिपांचैमहावृत्तवैथैसे
तीमोक्षसारहै।। तीजैइजैपहिलैतैआयजिनराजहोयजौन
त्रिकसुरादेयाएकेडीघोस्हे।। द्वादशमैसुर्गसेतीपचेंडीपसुहे
यकपरकौआयौएकनरकौश्रौतारहै।। दधिइसुधर्मरानीलो
कपाललोकांतकमिंसमचारौनकमांहिलेधरे।। हललीक
हाअथंजमेघसीगागाफीमलक्रोधमांनमायालोनिस्तंजमै
परैस्यलीककावथंनगौमृतदेहतेलसेकषायनेरजीवमांनु
ष्पनिमैश्रौते।। जलरेषवेतदंरुपुरपाहलदरंगद्यानतएच

विषमोक्षलहैनमोकारहै७५सोलैकषायहृषंततथाफलापाहनकरिषाथंनपापरकौ।।सविनाकंध

रजावसुगोशिक्षकोकरो ॥ ४८ ॥ चौतीसजावचौदैगुनस्यातक
 विषेकथन ॥ पहिले मिथ्याअनबइसरेविनांगतीनलेत्रप
 तीनअवृत्तनरकदेवचारमैपसुपांचेलेस्पादोयसातैलौ
 नदसैलगक्रोधमांतमायातीनवेदनौविचारमैसेततेरैत
 रजवजीवनअसिधचौदैपंचलजुगपानवञ्चअचञ्चवारमै
 चौतीसोजावकहेचौदैगुणयांनकमैवेकनीसवारहमैमै
 होअविकारमै ॥ ५० ॥ उनीसजाववारहगुणयांनकमै ॥ उ
 पसमचौथैगपारैवेदकहेचौथैसाचांयकचौदैचौथैदेसहे
 तपाचमै ॥ गपानतीनतीजेवारेमनपजेचुवेवारैचारितस
 रागञ्चवेदत्रोकह्योसंचमै ॥ अधितीजेवारेउपसमचारित
 रेहीचायकचारितवारैचौदैकर्मवांचमैपंचलद्वचायक
 दूरसगपानतेरैचौदैनमौजावउनईसचूदोनर्कआंचमै ॥ ५१ ॥
 चौदगुनयांनकमैत्रैपनजावविचारा ॥ सवेया ॥ चौतिसवतिस
 तेतीसञ्चितिसशकतिसशकतीसशकतीसमानअगईसअव
 ईसवाईसशकईसवीसवारमैयांन ॥ चौदैतेरैअतमयांनकपंच
 जावसिधालेजांन ॥ सम्पकगपानदूरसवलजीवतनिहचैसो ॥
 नूआपपिछांन ॥ ५२ ॥ आरौंगतिमैआश्रवधारमौरा ॥ वैकि
 यकदोयविनांनरपचमंतघरआहारकदोयविनांनरेपनत्रि
 जंचहे ॥ औदारिकदोयदोयआहारकषेडवेदपांचविना
 देवतिकेवावनकौसचहे ॥ आहारकदोयदोयऔदारकन
 रनारञ्चहोविनाइक्यावननर्कमैप्रपंचहे ॥ चारौंगतिमांहि
 त्तैमैआश्रवसरूपजांतनमौसिधनावांतजहनांहिरंचहे
 ५३ ॥ आरौंगतिमैत्रैपनूजावमौरासास्वतौस्वजावपंचन
 वसिधवंदतहौतीनौगतिविनांनरकैपचासदीसहे ॥ छमि
 केआवसमकितविनांनमनपजेचारितदोपारैविनयसुग
 नतालीसहे ॥ सुजलेत्रपातीननरनारवेददेसदृसएईछहे
 जावविनांनारकतेतीसहे ॥ हीनतीनलेत्रपाषंवेदचारि
 जावनांहिसुजलेस्यानरनारसुरकैचौतीसहे ॥ ५४ ॥ पठले
 स्पावालेमिथ्यातगुनयांनबंधमौरा ॥ विकलत्रैसूक्ष्मसाधा
 रणअपजापतनर्कगतिआनपूरवीनरकआवहे ॥ मिथ्या

माहिले स्यातीनवांधे इकसौ सतरे नवौ विनापी तके अबोतर
 सोजावहे ॥ इकिंदी थावर औ आत पइ नतीन विनापद मएक
 सोपांचबंध कौ नपावहे ॥ पमुगति आक आंन पूरवी वदोत चार
 विनासुक कलसो एकवांधै पुन्यचावहे ॥ ए॥ चौरासी लाषज
 बोरा ॥ सातलाषष्टधी काय ॥ सातलाष अपकाय ॥ सातलाष
 तेजकाय ॥ सातलाष वात है ॥ सातलाष नित्य औ इतर सातसा
 धार एदसलाष परते कएके डीगात है ॥ वेतेच वइं डी दो दो मानु
 षवोदहलाष नर्क सुर्ग पमुचार चारलाष जात है ॥ चवरासी
 लाष जात मोऊ परछिमां करोह मतै छुछिमा करीवर कियो
 घात है ॥ ए॥ त्रैस विप्रकृतिनांम ॥ नरक पमुगति आंन पूरवी
 प्रकृतिचार पंचदिय विनां चर आत पव दोत है ॥ साधारण सूक्ष्म
 औ थावर प्रकृति तैरे नर आव विनां तीन मितसो लै होत है ॥ सै
 ताली सघातिया की त्रैस व प्रकृत सवना सनरा तीर्थ करणान
 मई जोत है ॥ देव निके देव अरिहं त है परम पूजति नही कौ मं व
 पूज होहि ऊंच गोत है ॥ ए॥ आगति विषे वंध प्रकृतिनांम औ
 दरिक दोय अहार क दोय नर्क देव गति आ व आंन पूरवी दो
 वषां नी है ॥ विकल त्रैसू छ म साधारन अपर्जा पत सो लै विन
 सत चार देवके प्रवां नी है ॥ एके डी थावर आत पतीन प्रकृति वि
 नां नर्क एक सत एक वंध जो गजां नी है ॥ तीर्थ कर आहार क विना
 पसुं सतरे नरके वीसासो सवना सै सिवयां नी है ॥ ए॥ मृदू म
 वारैष रूवा इ सजल सात चात तीन तत रुकाय की दस हजा
 र है ॥ पंषी की वदत रै सहस वीयाली ससां प आगदिन तीन
 दोरू डी वर सवार है ॥ ते इं डी दिन उन वा सच व इं डी छ मास स
 रीर म्प पूरवां गन व आवधार है ॥ मछ कौर पूरव मनुष पमुती
 नपल्प सागर ते तीस देव नरकी की सार है ॥ ए॥ षठ पांचती
 न एक षठ तीन षट् चार दो दो पांच एक एक चौ षट तीनै ग
 है ॥ नव चौ चौ तीन तीन पांच एक सो पारह दोय दोय वती ॥
 सपांच तीन तारे ए लहे ॥ कल्पकाद वाई सके सवदौ सै शकता
 ली सुक् एकके पारह सौ पार सरदहे ॥ दोयलाष सव सवह

भारतवर्षे वाणसर्वमै विस्पाले प्रतिविं वंती मै कहें ॥ १०० ॥
 ज्योत्स्ना कालना ब्रह्मपतेर मुष्टे अस्तवरके च ॥ तुष्टे सेन
 मासत दरव है ॥ आपसे है परसेन एक समे ॥ अरतनाप
 जौ के लो न कहें जौ हि अस्तवतव है अस्तकह
 नासका अभाव अस्तवतवनासक है अस्तना हि
 नाहिनास अस्तव है ॥ एक ठे कहें जौ हि अस्तनास अस्त
 तम स्याद्वादसेती सातना सधेसव है ॥ १ जीव है अनंत
 एक जीवके अनंत गुण एक गुण संघ परदे समा नियो एक
 परदेसमें अनंत कर्म वर्गीया है ॥ एक वर्गीया अनंत पर
 मान् वां नियो अमुमें अनंत गुण एक गुणमें अनंत पर्याय
 एकके अनंत जेद जौ नियो ॥ तिन तै फुएये अनंत तातै हेय
 मे अनंत सब जाने समै माहि देव सो वधानियो ॥ २ छपे चर
 चा मुखसे नतै मुने प्राणी नहि कानना के ई मुनि घर जौ हि
 नाहि जषे फिस्त्रानत ॥ तिनको लाधि उपागर सारय हस
 त कचनार्श ॥ पढत सुनत है बुधि सुच जिन वंती गार्श ॥ इस
 मै अनेक सिद्धांतको मथन कथन ज्ञानत कहं ॥ सर्वमै हि

नाम है जीवना वह मसर दहा ॥ १०३ ॥ इति श्री चर
 तंतराय जीवत संपूर्ण ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ १
 संगुण ॥ अथ वारघडी सरत की लिखते ॥ दोह
 मनमौं अरिहंत कौं ॥ नमौं सिद्ध आचार उपाध्याय सबस
 कौं ॥ नमौं प्रच परकार ॥ १ ॥ न जन करौ श्री आदिकै अंत नामम
 श्वादी श्वादी कर्चौ वीस कौं ॥ नमौ ध्यान धर सीसा ॥ तिन धु
 प्रगटन ई संसार ॥ नमस्कार ता कौं करौ ॥ इक
 जावानी के सुनत ही ॥ न ठौ परम आन
 दा ॥ ऊही सुरत कछु कहन ही ॥ वारघडी के छंद ॥ वारघडी के
 छंद वना ऊये मेरे मतुर्ग ई ॥ जैन पुरांत वधानी वानी सौ मै सु
 निपार्श ॥ गुर प्रसाद ज विद्यत की संगति यहु पजीवतुरार्श सरै
 त कहै बुद्धि है थोरी ॥ श्री जिनतामसा हार्श ॥ कका करत सद
 फिस्यौ ॥ जा मन मरण अनेका ॥ लषचौर सी जोत मै ॥ का जन सु
 रौ एका ॥ का जन सुधरोय क दिवाना ॥ तै सुं न अशुन कुमाया

तेरी मूल तो हि दुषदाई ॥ वरुतेरा समजाया ॥ नटकित फि सौच
 कुगतिकै नी तरि ॥ कालत्रनादिगमाया ॥ सुरतसतगुरसीधन
 मांतीतातैजाजरमाया ॥ धषषाशुवीमतलषौ ॥ संसारी सुषजा
 नि ॥ यह सुष दुषकामूल है ॥ सतगुरु कही वषा नि ॥ सतगुरु कह
 वषा निजांतय ह्दमति होय अयातां ॥ विना सीध सुष इत इं ई न
 को तै मीवी करे जानी ॥ इह सुष जांनि घानि है दुषकी ॥ स्क्पान
 म नू लानां ॥ सुरतपछि पछिता वैगाजवही होय तरकजवथ
 ना ॥ पागंगागुरु निरंयतै ॥ सत्पवांती मुषजाष ॥ और विकार स
 कलतजौ ॥ इह थिरता मतराष ॥ यह थिरता मतराष ॥ चाधरसज
 अपनो मुषचा है ॥ और सकल जंजाल इरि करि एवति अवा
 हा ॥ पचइं डी वसराष आपन कर्म मूल कौंदा है ॥ सुरतचेत अचे
 तहो ह्मति और सीरवी त्याजा है ॥ धषषाघाट सुषाटमै ॥ नावल
 गी है आपजै अवकै चैतै नही ॥ तौ गहरे गोतेषा ॥ गहरे गोते
 षाय ॥ जायवह कौंन निकासनहारा ॥ समै पाय मानुषा गति प
 ई ॥ अजहं ना हि संजारा वारवार समज ऊचेतना ॥ मानै कह
 हमार ॥ सुरतं कहै पुकार गुरोने यौ होवै निसतरौ ॥ ७ ॥ नतां ना
 ताजगतमै ॥ आपस्वारथ सब कौंश ॥ आनिगादजिस दिन परै
 को ई न संघाती होइ ॥ को ई न संघाती होइ न साथी जा दिन काल
 सरतावै ॥ सब परिवार आपने सुषका ॥ तैरै कां मन आवै ॥ आगे
 मदमै छुकि रह्यो है ॥ मैमैमै विरलावै ॥ सुरतसम कि होय मति
 वोला ॥ फिरिय है दावन आवै ॥ ८ ॥ चंचल विकल मत तिस म
 न कौं वस आना ॥ जव लगमत वसमै नही ॥ काजन होय निदान क
 जन होय निदान जानय ह्दसना ही मततेरा ॥ पांचौं इंडी छगो
 वेर मतत ॥ इनका जयाचेरा ॥ रागादोष नर मोह समीपी इनि
 आनि मिलि घेरा ॥ सुरतजिस दिन मन थिरहोवै तिस दिन है
 इनेवेरा ॥ ९ ॥ छछा छहै एसखादमै ॥ रह्यो छहं रतिमानि ॥ छकि
 रह्यो छहै नही समजत नही आपान ॥ समजत नही अज्ञान
 ग्यान ध्यातय ॥ इतखादनमै राओ ॥ औरै चिता लागि रह्यो है मा
 न ध्यान मुकाचौ ॥ जैसै कर्म स्वावतयाकुं ॥ तैसी ही विधिनाचौ

सूरतरह्यौचङ्गतिमैजटकतमित्योनसतगुरसांचौ॥१०॥
 जाजागिसुजातनरयहजागनकीवार॥जौत्रवकेजागोन
 ही॥तौफेरनहोइसंभार॥फेरनहीहोइसभारसारयहजोत्र
 वकेनहीजागौ॥जौजागौनिरनयपदपावैजरामरननवन
 गौ॥नांतरफसैनवसागरहाथकुचुनहीलागौ॥सूरतहोयन
 लाजिवतेरासंसारीसूषत्यागौ॥११॥रुजाफरिपिछोरिकौ॥
 कहुंतौहिसमजाय॥जामैतैवासाकीयासोतेरीनहीकाय
 सोतेरीनहीकायजायसंगतुजेत्रकेलाजानांतैनेंघरवहु
 तेरेकीनेंआवतजातमुलानां॥थावरपंचसपंछीमनघ
 जयादेवेकहीदांन॥सूरतवहुतकालतैनुगतेआयानह
 पिछानां॥१२॥ननानरपदहेनलो॥त्रैसौत्रौरनकोशजेय
 संभारेतेतरे॥नवजलपारजसोइ॥नवजलपारजसोइ
 विज्जततिरेविचारे॥तीनकालतिनस॥हीपरीस्पाकर्मचूर
 करिफारै॥आवतजातजागतसौचुंरतलोकालोकनिह
 रे॥सूरतजैत्रैसासुषवाहैचेतौविगिसवारे॥१३॥टटाटाव
 तिनकीतेवूडेसंसारफिरेजटकतेजातमैतिनकौंवार
 नपारतिनकौंवारनपारकहीहैफिरैविचारे॥नरतिरंजुं
 नरकदेवांगतचारौंधमनिहारेजांमनमरनकीयेवहुतेरेसहेम
 हाडवजारै॥सूरतकौतगात्रापकमायेकिसंपैजाइचारे॥१४॥
 वगववकिरह्यौकहा॥चेगौकौनसंभार॥छोडिवावसंसारकौ
 जौदूदेजगजाल॥ज्यौंदूदेजगजालहोलदेवुकरिक्हीडुषपावै॥
 सतगुरकहीमानलैसिष्याफेरनजमैआवै॥छोडैसंगकुमतिषेद
 कौंसौनुमकुंवरहकावै॥सूरतसंगसुमतिकौलीजे॥सिवपुरजाइ
 दिषादेखावै॥डडाडिगमतिजायत॥अडिगहोइपदसाधिदिद
 भागहिपरमाभकी॥जोसुषलहैसमाधिजोसुषलहैसमाधि
 धितजिआषाषोज्योनाईसिद्धरूपतैरेघटअंतरकहादुदण
 जाई॥जडपुदालकुंनिन्नजांनित्मिदैकरमडुषदाई॥सूरतआ
 यमैआषासोधौयहसुतगुरुफुरमाई॥१५॥दढाढोरीछोरिदेदि
 गइनकीमतिजाइ॥कुगुरुकुदेवरूपानक॥नुमतिचित्तलाय

तुमतिचित्तलगायनावातेजिनराकुदेवकुवासी॥येतोक्ं शृण
 तिदिषलवैसोडुषमूलनिसानी॥इतैकाजाकनहीसुधरैकर्म
 रमकेदानी॥सूरततजिविपरीतेइन्हैकीमतपुरआपवषानी
 गणरणत्रैसोकरो॥संवरसस्त्रसंजरि॥कर्मरूपियात्रिवडौ
 ताहिताकि कैमारिताहिताकि कैमारिवारकरकर्मरूपअरिसो
 शैहैअनादिकेएडुषदाईते॥रीजातिविगोशैनारायणपतिहर
 अरक्रीयानैवभौतकौशैसूरतग्यानसुनंटतहांजागोतिनयाक
 जडघोशै॥१७॥ततातनतेरानही॥तामैरह्यौलुनाशतेडैनाता
 तनकमौ॥ताहिकह्यौपतिजाहि॥ताहिकह्यौपतिजाशपाइसु
 षकैरदौजागौवासीधिनमैमैरधिनकमैउपजेहोयजागतमै
 हासी॥वाकैसंगवटैवहुममतापरैममहाडुषफासी॥सूरतनिं
 नजातिइसतनकौयासैरहौनुदासी॥१८॥यथाधिरपदकौचि
 योधिरपदनहीहोश॥धिरतागहियरनांमकी॥धिरपदपरसैसोय
 होयसुषगतिआरोसूंछूटै॥प्यानध्यानकौकरैह्यौडौकर्मअधि
 जकौकूटै॥यहजाजालअनादिकालकौसौत्रैसीविधिछूटैसूरत
 धिरपदकैसंपरसैसिवपुरकासुषलूटै॥१९॥ददादरवडुंकहै
 शगटजागतकेमांहिअौरदरवसवषेलहै॥प्यानीमानतनांहि
 प्यानीमाततनांहिरववैसोधतनकेजाने॥मांटेभूमिसखलके
 जोधनजयमैप्रगटवषांनै॥पुदगालजीवधरमअधर्मकालअ
 कासप्रवांनै॥सूरतइनदरवानकीचरचापानीगिनैप्रजानै
 २०॥यथाध्यानजागतविषैप्रगटकहौहैव्यारि॥अरतिरुंधरम
 सुकलयेजितमतिकहेविचारि॥जितमतिकहेविचारिआरिये
 ध्यानजागतकेमांही॥अरतिरौइजगतकेकरतायातेसुजाते
 नांही॥धर्मध्यानकेसोतरधारकासुमसुषहोतसदाशैसुरलशुभ
 लध्यानकेकरतातेसिवपुरकौंजाश॥२१॥ननातासैकरमजव
 नेहधरैतिजमांहि॥नटकीकलाजागतविषैनेहकरैछिनमां
 हिनेहकरैछिनमांहिते॥गआयानहीफीसावैज्योपानीमैरहे
 कमलनरजुनेदनहीपावे॥सुनअरअशुनएकसेदोकरीऊन
 हापिचतावै॥सूरतनिंनलषैत्रैसीविधिकरमकहांदिगआवे

बारमडीस
७४

२३। एपाप्रजुअपनौ लमौ अरपरसंगतिद्योहोरापरसंगतिआ
अववधैदिहकरम ॥ कककोरादेहकर्मकककोरवृजेअवफिरि
निकसननहिहोइ। आअवबंधपडीहैवैडीलगोउपावनकोइ
यातैशीतिधरोसंवरसोहितकरिकैदिलजोई। सूरतसंवर
कौआदारयेकर्मनिर्जराहोई। २४। फफाफूल्पोहीफिरै।
फोकटदेधिननूलफासीफंदअनादिके। करतोडनकासूल
करतोडनकासूलनूलमतिदावनलौतैपायौ। २५। मतेनवसा
गरसौमतिषागतिसोपायो। याहीगतिसौजरांतीर्थकरकेव
लापानउपायौसूरतजानिवृक्रमतिवृकेयहसतगुरुसमज
यो। २५। धवाविसनकुविसनहै। विसनवेगित्त्पागि। वस
करिपांचौइंदरी। सुनकारेकौलागिसुत्रकाखिनकौलागिस
गिकरविसनसीतयेनारी। जुबंधामिषसुरापांनमधुषेठस
नांजुतथारी। परधनचोरीअरवेस्पकौत्यागकरैपरनारी।
सूरतइसनवमैसुषपावे। परनवसुषअधिकारी। २६। नत्रा
नूलपोहीफिरै। नरम्पोमहामिथ्या। नेदनपावेग्यानकौभ्या
तैआवतजातयातैआवतवातसुननेदगपांतनहीपायौ
क्रोधमानलोनअरमायाइनसौनेहलगायौ। परमारथक
रीतिनजांतीस्वारथदेधिनूलाना। सुरतनेदग्यानतिनजा
निताप्यौतिनमिथ्यातमिठायौ। २७। दोहा। ममामतितिनक
सही। तिनमलकीनीहरु। मत्तबालेमलसुंनरे।
२७। तिनकौनहीसहरु। तिनकौनहीसहरुहरुहै। कुमांतीकु
मतिविचारै। तिनकैकुगानितैसमजावैपकडैनवजनक
र। सुंनपापकेनेदनजांनैजीवाअनाहकमारै। सूरततेनर
परेकुसंगतिकिसविधिदोषनिवारै। २८। पायांयांनिपतौ। बुरे
मांमैहोयअकाज। यहममतामैफसिरहो। याहिनआवैला
जा। याहिनआवलाजवजनहि। कहौतेरोद्योकोहै। तातम
तवाधवकामनिसुतिवइतकौसुषमाहै। आगेजांमप्रगनहै।
इमनभैयहतुमकौनहीसोहै। सूरततजिअस्यातस्यानपत
तवसिवपुरसुषहोहै। २९। राररमौअनादिके। रचिविधि

मनसौधी तिरसराचौं नही आतमा ॥ लघी नरसंकीरीत
 लघी नरसकीरिति ॥ मीततै विषयनसंग सुषमान्प ॥ आतमी
 कस्यै हेसि वदायक सोतै नदी पिछां नी ॥ जिनरसरीतिल
 धी आतमकी सोसिवपुरकारानां सरतवेन वमुकति जाहि
 गतिन आत्त ॥ हित आता ॥ ३॥ ललालपद्यौ दीर है ॥ लगे
 जतकैने षलष्येन आपसरूपको लहौ न सुधविवरुक्त्त हो
 न सुधविवेक एक तै पर अप्यान ही वृक्षा ॥ वस्तु विनासी
 नहा ॥ अप्रकासी कटार मतसंग फफा ॥ सरतवेन वपार जये
 हेति न कौं अत्मसूजा ॥ ३॥ वावावा संगति वुर ॥ तासौ है इ
 कूनावा ॥ सासयली संगति जलीता मै सहज सुजा वै ता मै
 सहज सुजा वै है सो सहली मोप्यारी तत्वद्वरकी चरवाति
 नको तजे कुचरचान्पारी ॥ नरमजावसौ डरिर है त है धरमध
 नकी तप्री ॥ सरतय हवंचा मेरे मनचन मित्रन सोपारी ॥ ३॥
 ससासो ई सुधर है ॥ सुन सुधरकी सीषा सदा रहि सुन ध्यान
 मै ॥ स ही जैनकी ठीक ॥ सहजैनकी ठीकति नूकै ॥ अकब्रु
 नही ना वै ॥ आगम औरु अध्यात मवानी ॥ सुनै सुनै वै गा वै
 कुकथा चारि विगार जगतकी तिन कौं नही सुहा वै ॥ सर
 तसो सजन मोन वै ते सिव पंथवता वै ॥ ३॥ षष्ठा पुढुकनि
 वारे कै षिमाता वचित लाया ॥ पुलैक पाद अभासके ॥ धैरकर
 मउषदाय जाय ॥ धैरकर्म उः षजाय जाय वह धिमांता वचित
 चितला वै होय अभासता सजन न वको पानी जय ॥ जग
 सदा मगतता अप्रतै मन मैरीरी ऊ आय सुषया वै ॥ सरत
 न्यारनि न सवनि मै सो आत्त हित ला वै ॥ ३॥ सो साधु
 जगते है ॥ सो साधु जगते है जो तै मै सै विचारे ॥ सो षवात है
 सेव संसारी ॥ तिन कौं नही निहार संकल्प विकल्प जगके
 जितने तिन उ समन कौ टारे ॥ सरत सो साधु जन अे सो ॥ सिवपुर
 वेणु धारै ॥ ३॥ ललाल छमी सिव वरै ॥ नल छनकौ वै वा
 लषौ सुलष अपरषके ॥ तजे कुल छिन देव ॥ तजे कुल छिन दे
 व देवल षि सिध रूप कौं धो वै ॥ अरहंत आचारि ज उ व जाय सा

संतोष

न ससासोप्यानां सदा सुधवचन लषलै हसदा रं है संतोष मै २७५

नसीसनमावै॥जिनमतदेघिसिधगुनआरौयहृदिदतामन
 लावै॥सूरतइहपरतीतथरैमनसोसम्पकपदपावै॥३६॥हाहा
 हूर्तहीरहै॥कैपरवसपुषपायकोनआपवसिद्धजियेहोय
 परमसुषदाय॥होयपरमसुषदायपायपदअनरूपीअविना
 सी॥केवलापांनदरसजहांकेवलसिधपुरीसुषरासी॥आवौक
 रमछिपावैजिनकेआवौगुनपरकीसी॥सूरतसिधमहासुष
 पावैकालअनंतघोसी॥३७॥ललालेकैपरमपदलघिलघि
 गएंनिरवान॥लोकसिधरऊपरचढे॥लयौसिधसिवथान॥
 लयोसिधसिवथानजिनोनैसोहीसिधकह्यो॥सूरतसिधक
 हैअसैंगुरजैनपुराननगाये॥३८॥दोह॥सम्पकपदकोजेल
 है॥करैवैनगुनप्रीतिदेवधरमगुरगपानको॥परवसहैनिज
 रीति॥३९॥वारषडीहितसोकही॥नहीगुनइनकीरीस॥दोह
 तोचालीसहै॥छंदकहेछतीस॥४०॥इतिप्रीसुरतजीकीवार
 षडीसंपूरणः॥अथरूसरीककावतीसीलिष्यते॥ककाकेव
 लपदनिजमूलिमतिमेरेमनवाजाई॥केवलपदविनमेरेज
 वजगतनरमाई॥१॥षषाषलअलषषोजैनही॥मेरेमनवभ
 ई॥षलषअलषषोजैतोहेरेजीवअलषलगाई॥२॥गगागति
 गतिजठकतत्फिरोमेरेमनवाजाई॥वहरूप्याज्येमेरेजीवसाग
 वणाई॥अघघापस्यौघाटकुघाटमेमेरेमनवाजाई॥अवनही
 चेततौहेरेजीवगोत्पाषाई॥अननानावनगवनौकारकीमेरे
 चदेसमकतिमेरेजीवजारनराई॥५॥चतुराईसवछोडिदेरेमन
 वाजाई॥आत्मदरसनमेरेजीवसमकिचतुराई॥६॥छुछाछुल
 वलपरपंचछोडिदेमेरेमन॥छुलवलकरिसोहेरेजीवआत्म
 छुललाई॥७॥जोगसुगतिजानीनहीमेरेमन॥जोगसुगतिवि
 नहेरेजीवमुक्तिनथाई॥८॥ऊकाऊचपापकोमूलहैमेरेमनवा
 ऊकटतैबुड्योहेरेजीववसूरपराई॥९॥याजायोहीतेरीकरि
 रह्योमेरेमन॥यांनहीतेरीहेरेजीवयुहीलपटाई॥१०॥दयामि
 य्यादरौनटेकतजिमेरेमनवाजाई॥टेकतिहारीहेरेजीवअनादि
 लागाई॥११॥पंवावाकर्मनकेवसिपस्यौहेरेमनवाजाईअवइमि

कुवगहेरे जीवन्नवसर आर्श ॥ १२ ॥ डडा डंड कचोई सुविषे हेरेमा ॥
 आवतजावत हेरे जीववो होविधिनाई ॥ १३ ॥ टेहाटो कदई अ
 मदेवनै हेरे मेरे मनवा नाई ॥ कवडूनटोके हेरे जीवजिनवर
 माई ॥ १४ ॥ रणरण कर मनको नित्यवधै मेरे मनवा नाई होइ
 नवीतो हेरे मेरे जीवनीदलगाई ॥ १५ ॥ तूकतीं तही जोगता मे
 रे मनवा नाई तूनकसीको हेरे जीवतेरोन कहाई ॥ १६ ॥ थिर
 नेर है थिर नारही मेरे मनवा नाई ॥ थिरनैरै हसी है मेरे जीव अ
 थिरज्यो छाई ॥ १७ ॥ दयाधर्मको मूल है मेरे मनवा नाई करि
 करुण हेरे जीवसमक्षिष्ट काई ॥ १८ ॥ धयाधर्मविनं भूका
 जीवरो मेरे मनवा नाई ॥ लज्जातरुणी हेरे जीवा वहु दुषदाई
 १९ ॥ नरनवरतन गुमाईयो मेरे मनवा नाई ॥ फिरपछितासी हेरे
 जीवज्यो मूल गुमाई २० ॥ पपा परपुडल एजिन है मेरे मनवा
 नाई २१ ॥ निरंजन हेरे जीवचेतन राई ॥ २२ ॥ फफा फिरिफं
 दा विषे परै मेरे मनवा नाई २३ ॥ ज्यो दीपगमै हेरे जीवपंतगजरा
 ई २४ ॥ बुद्धविकल्पनाडुरि हेरे मनवा नाई ॥ निर्मलनिजगुण
 हेरे जीवसोधि सुषदाई २५ ॥ जनाजमनावहीय मेधरो मेरे
 मनवा नाई २६ ॥ भावनक्ति है हेरे मेरे जीव नवउतराई २७ ॥ मम
 न २८ ॥ गविषेयनवनविषे मेरे मनवा नाई २९ ॥ दोरतइतउत हेरे जी
 वललचिललचाई ३० ॥ यौवननदियापुरि मेरे मनवा ना
 ई ३१ ॥ पारनपायो हेरे जीवगरकरहाई ३२ ॥ रगरतनपडेपरहा
 यमे मेरे मनवा नाई ३३ ॥ सबक्या करसि हेरे जीवउपावनथाई
 ३४ ॥ लोनलहेरिसिरुपरै मेरे मनवा नाई ॥ वहीजात है
 मेरे जीवथागजनाही ३५ ॥ वावावडुषमूल्यो अवइहा मेरे म
 नवा नाई ३६ ॥ छेदनजेदन हेरे मेरे जीवफेरि फिर आर्श ३७ ॥ ससा
 समता सरितास्नान करि मेरे मनवा नाई ३८ ॥ पापकर्मकज हेरे मेरे
 जीवक्योनथूपाई ३९ ॥ हाहां हसिहसि करता है मेरे जीवसंकन
 आर्श ४० ॥ षड्हा द्वायिकसमकतिकै विना मेरे मनणे मुक्तिन
 पासी हेरे मेरे जीववडुषपाई ४१ ॥ नेमकीति कीवीनती
 मेरे मनवा नाई ४२ ॥ सुनिहिर है धरि मेरे जीवसदा सुषदाई ४३ ॥ इति
 हायहाय अवको करे मेरे ४४ ॥

करि

अथती

७६

वारषडी वीजाकी ढालवा गोवीचंदकी ढालमें लिखते ॥
 दोहा ॥ श्रीजिनवरवृषकुंनम् ॥ नमूजिनोतमवाणि ॥ वारषडीवप
 देशमया रचुस्वपरहितजाणि ॥ ढालगोपीचंदकी ॥ ककाकाई
 रेहेकरतौ फिरैतुआलतुंजालसीवनमानीरैगुराकीतोहिंमा
 नीजीव ॥ विषयजोगामैरे देलियंघोरहेतुवांधैकर्म ॥ धर्मनज
 गोरकयहोयसर्म ॥ पानीजीव ॥ १ ॥ ॥ घः घाघे घोरैघेघौकर्मतणै
 तुनुमौअनोदि ॥ घोटनदीसैरेइनुकोतोहि ॥ पानीजीवघेम
 स्तगपुररैजेनाषिकैकोईविगलेजाय ॥ सुंवेमोहकिरैषडीमू
 टगपादीवशमोगारमोरैगरम्योतुफिरैयाविषयामाहिने
 दीलषेछैरेआत्मरूपपानीजी ॥ घीरनाछैरेघारीलारताना
 उःरवमैसयसायकरैगोरैआत्मरूप ॥ पानीजीव ॥ ३ ॥ घघाघर
 तुरैनुलौआपणौदुदपररूप ॥ जोघरजाएपेरैसोतोनाहे
 पानीजीव ॥ जातैयोरैरनयसंकहैसोदिसुषरूपजहल
 षेसुषरैसौडुषरूप ॥ पानीजीव ॥ ४ ॥ ननानानरनवरैइस
 नपायकैतैपकीनोना ॥ पुत्रादिकमैरैरह्यौतुजाय ॥ पा
 नजी ॥ येमुतलवकेतैरेनायहेतुकुंनरमाय ॥ विनमूलल
 वतोरैहितुमुनिराय ॥ पानीजी ॥ ५ ॥ चचाचोरैरैगुगमैतुकै
 औरकषायअनहतीचकर्मतुरैकरैपरतह ॥ पानीजीव
 चहैसुषरुरेडुःखकुंनचहै ॥ होवैकिमजाय ॥ वोषधतुरारे
 आमकीपुंजानीजी ॥ ६ ॥ छछाछेदोरहोनक्षफासीकुयोत्र
 वरपाय ॥ पलकपलकमैरैछीजैछैआपपानीजीव ॥ पावि
 नतीतुरैगतीमैनायहै ॥ एतनत्रयरापतायगहोमैरैकरमस
 साय ॥ पानीजी ॥ ७ ॥ जजाजोवनरैयोदिनआरिक्कायाफूवी
 कायमलमुत्रादिकरैनसायामांघ ॥ पानीजीव ॥ ८ ॥ गोदेय
 कैरैतोकुनाषसीडरगतिकैमाईतुयाकारणरैमनिय
 कमाय ॥ पानीजी ॥ ९ ॥ ककाकगडोरैकरमनितैयजोविर
 नकिमथाय ॥ दुखदैवोरैतेहरकवनायपानीजी ॥ नागत्रनं
 तौरैअक्षरकोजितोयेरहसीपानफेरिनमीलसैरैआत्मन
 नाजानी ॥ १० ॥ ननानरायैरकरीसीधातसुनीपरसुधीय

यापरकृत्याप्येरेनिजलायज्ञानीजी० द्वावपडोडैरैथारिस्क
कैपीछेपिठितायफेरिनमीलसरिआराधनमायग्यानीवि
२०॥ द्वादालोरेहोमिथ्यातकुजिनवचनरधारिरागहोषम
दरेमोहकूमारिग्यानीजीः शिवनहिमीलसरिमुदंमुदाय
उरजसप्रमाया॥ निजसुद्धिपामीपेरशिवलेजायः ग्यानीः
वंतावाकुरेरेतुतिडुल्लोककोनुल्पोनिजरूपः॥ परवसिहो
यकैरेमूओनवकूपग्यानीजीदेवीध्याडैरिषेतरणालजोःशु
ज्यावक्ररूपःनाहिलीघोडैरैआत्मरूपग्यानीजीवः॥ १२॥ द्वा
डोरेश्रीगुरकीगहोमतिकिरोसुछंदसोहविटपयैरनापेणे
फंदग्यानी०॥ तूएकाकरितोरीसायजोकरसीकोजायः
फिरजिनवानरियामिलसीजाहिः॥ ग्यानी०॥ द्वाहदुदोरेयो
मलमुत्रकोअंगत्यागपैजायः॥ द्वाहोनिजप्रदरेसिवपदेदाय
ग्यानी॥ आतमथारोरेदुदोपानेहेडुज्योन्हीओरनोतविग
योरडुजीवोरग्यानी०॥ १३॥ एणाणायायैरैमंत्रणोकास्कोया
जाकैमाहि॥ अवतूकारैरैचविंछैजायः ग्यानीजीवः॥ याति
उघेरैरंककरसूकरेकानासुणि॥ आकतेनीध्यावोरेत्यागो
वाके॥ ग्यानी॥ १४॥ ततातोकरेतरणउपायछोसोदियोवता
य॥ जोकछुलागैरैतोकुंडुषदायग्यानीजीव॥ सोमतिवोले
रेपरकूमतिकहोयोधरेवीआगयातैमीलसरिसिवनी
रधार॥ ग्यानी०॥ १५॥ यथाथारोरेकजसुधारैलेयासांति
यायः॥ परपुडुल्लमैरेकहारहौलूजायग्यानीजी॥ पाचोडं
डीरेवसिकरिजीतलेपचीसकषायः॥ जिनमतिमांहीरेपे
त्रत्रवतायग्यानी॥ १६॥ द्वादेहीरैदेवलदेवछेःयोआत्म
रूपः॥ इमर्जाएपासुरैसौरजिनरूपग्यानीजी०॥ येजिनप्रति
मांरेजिनमंदिरकहै॥ तेहैअवहाणप्रतिछंदतैरैपावनीरु
राज्ञानी०॥ १७॥ ध्याधनवुरैपरजवल्लारहैसोअवक्रुमारः॥
जातैडुरातिहैसो॥ त्यागोनायः ग्यानी०॥ जोधनविनसैरैसे
किमओरकअविनात्रीदायाग्यानी०॥ १८॥ ननानोहीरे
जाणियदार्यतदसमोतहिजेयो॥ तिनमैनीअवैरआत्मआ

आत्म आदेयः ॥ पानीजी ॥ याही पिछाणेर सोजाणे नाहि
 वोन चतैयहनां हि ॥ सम्पकहृष्टीरे जाणोन वमा ॥ पाननी
 २७ पपा परणोरे मुक्ति वयू अततो हि क हू उपाय ॥ जास
 गजोगेरे सुष अघायः ॥ पानीजी ॥ चादरा वेधत पराहा
 णोप हरिल्यो वसतर बुत संवर ॥ सील स्वारी रेजा वना
 पाच ॥ पानीजी ॥ २१ ॥ फफा फेरौ रे जागमें तो हि कू वैरी
 यो कर्म सर्व विगाद्यो रे थारो नर्म ॥ पानीजी ॥ डुरगति
 मा हरि अोर ति गोदि मपटकै गो फेरि ॥ जातै सि वा गति
 कै सो वे गो हे शि ॥ पानीजी वा ॥ २२ ॥ ववा वराणो रे में हि त
 आपणो तु कौ न हि धा शिवे रवे रमै रे तो हि क हू पुका
 रि ॥ ज्ञानीजी ॥ जव जम आसरित वतू जावसी सरसी न्ही
 काज ॥ ना हि नरो सो रे कर ल्यो ति जकाज पानी ॥ २३ ॥
 नना नरमौ रे तु यामो हतै अवमो हि तु पारि दोष सह
 ततुरे मुनि पद धारिः ॥ पानीजी ॥ मुत्पवत दी सै रे तो कुं
 कवि नसा आ वक वत धारिः नां हि मो ह अ वरे ना सै गो म
 रि ॥ पानीजी ॥ २४ ॥ ममा म्हारी रि म्हारी कर तो र हो न हि
 हिये विवेकः थारी लार नरे कौ ऊजा सी एक ॥ पानी
 जी वा ॥ अजात न करि मै म करि र ह्यो न हि छो ड न ही व्य ॥ २
 ला तु न्ही चो डै रे घा सी कालः ॥ पानीजी ॥ २५ ॥ ल ल्या
 लसे थारी ही र ही तू चिस न निवार सा लू ही है रे नर क
 को डु वर पानी धर्म मुता दि करे ख ऊत्तै ल ही ने स व
 या या या ही रे न व मै देष ता हो जाय वियोग ॥ कौ करि स
 र है रे पर वस ता संयोग ॥ पानीजी वा ॥ जो ये आ ता रे आ ते
 म लार वा ये जा ता लारै तो न म रा धौ रे न हि तं जि न र थारि न
 नी जी वा ॥ २६ ॥ र रा रा रि दे षी हो य कै वा धे व ऊ कर्म नां हि
 जाणै रे आत्म धर्म पानी जी वा ॥ श्री गुरु प्रा हि रे कर म की
 रि ष पानी जी वा ॥ २७ ॥ ल लाले लो रै ला न सु ध र्म को अ
 न्य ला न निज गु ण जा तै रे प्र ग ट सो लान पानी जी वा ॥ नि
 ज गु ण जा तै रे फ प कर्म औ चो धै रे न व रु प सो म ति जा ए पो

रेलानसुषुषुपापानीजीवणवावावाहवारथारीहोरहीतुवी
 सननिवारसातुहीहरनरककेइवारपानीजीवधर्मसुता
 ईकरयाऊतलहीहनीदापरमईनकेसागेरसोहवुतधर्म
 गपानी॥रुणससासारोरनवतषोदीयोनीजकाजनकीनश्र
 छोपायोरगुफुचनप्रवीनागपानजीव॥अचकूडुकिरकर्म
 रगसोधीलमलमतीकरीविलंबलोकगिजावणरमतीक
 रवंडागपानीजीवअषषाषटहीरदरववताईयाश्रीजिन
 वरतोहि॥तिनमैआतमैहोनीजजोषगपानीजी॥परवासी
 तौरैछसमजन्हीउनकूकहे॥दोयदिनाकेसाहिसिरछे
 हीजोयांगपानीजीवअशशशश्रुनीरैपैडियोसुणिलियो
 नहीतजीकसायौ॥तिनकेअतनीरन
 वइषदायापानीजीव॥मांसंतुसनीनेरधोकततीरिगयेसीव
 मुतिषुतीसतजोकषायौरैविसवावीसगपानीजीव॥अहाह
 हाहोरअवतुमतिकरैयायोजिनधर्मपुण्यदेसुरेकुलताति
 सूपमी॥अपानीजीवणोसतसंगतिअरुरेनक्तिगुरांतणीजिन
 आगममर्मति॥जिवनधातैरेज्यूहेशिवधर्मज्ञानी॥अइदोहा
 वारसेनिष्णाणवैरतासुसमेतकेमायगपोसबुदि॥वमीन
 ली॥तादिनपाववनाय॥अथावारषडीकीजेनिपुनापदैसु
 नैकरिचित॥तिनकेमनवंचितफलहोवैचितयवित्राअण
 हीगनंदप्ररोधतयासस्वदासयाकीनवीबुधिशुद्धिकरि
 दीजीयेदोषसुगुणहीनाश्रतिवाररुडीवीजाकीचालमे॥
 संपूर्णः॥अथवाराजलजीकीवतीसीलीअते॥चालराज्याक
 सुनीराजमतीहेकाहसंघिनतैनेमकवारणतौहेरथमोरिअर
 गिरकुध्याया॥असुपीडातोहेकवरंजोलधिकरुणाकरी
 विरकतजावहेकीनेवडेउरफार्श॥अराजमतीतोहेसुनिके
 अंवासेजोबोलतीसुनिमातामेरीवातपरमसुषुदाश्रअभा
 नधरुछुहेअंवाजाडुपतिनाथको॥वावीनाअन्यसकजूनहेते
 धरमकेनाई॥असंजमधरसूहेअंवारऊसंगनाथदीसुनीहे
 नायतजिकेद्वारागिरकंध्याश्रिथ॥

अंवाजोबोलतीकहाअजोगीदेराजुलतेवातवनाई

वरपरणास्पृहे तो कुंभैनेमकवारसोरुपगुणाको हेधारी कह
मनमै ल्यायी ॥ १७ ॥ संयमजारी हे वेदी न संजमब्याल है पावयमै
तो हे वेदी न तपवणि आर्श ॥ १८ ॥ तपकी तो वाता हे जोरी वना वो
ही महज है तपधर वो तो हे वेदीयो दुधर आर्श ॥ १९ ॥ ५ म सुनि
हे वेदी हे राजुल अंवा सै जो बोलती यामेरी देह नी तै ज न मी सि
मेरी नाही ॥ २० ॥ ये संनबंध हे अंवा जिते सब देह के मैया देह तै म
री अं व सुधि पाई ॥ २१ ॥ मातं पिता जो सुत परिवार धरि मघने ते
नके ने है तै तिज कज मी विसराई ॥ २२ ॥ अं व यो जो ग हे माता
मे पायो पुम तौ नाथ मी ले जो हे मो कुजा उपति राई ॥ २३ ॥ वी
षय जो ग अं व हे माता मो कुन ही चाय हे वीषय घणे में हे जो ग
सुरग के माही ॥ २४ ॥ तपधर वे कु हे न रज व सगे हे ई ज्जु सो यो जे
ग हे माता मित्यो स्ह जाई ॥ २५ ॥ अं व में तेरी हे अं व जो चा कु सी
ष डी ॥ मेरे ही त कु हे मेरे नाथ मी त व नाही ॥ २६ ॥ मात पिता सुत
नाथ जो व ज सक ल ही सी ष डी वा वो हे मो कूं धि मां कर वाई ॥
इतनी सुनि कै पीता उग्र से न जी बोलते ॥ वेदी रीत पतुवाल
के सैं व नाया ॥ २७ ॥ अं ग तु मारो हे वेदी बडे सुकमाल है तप
धर वो तो हे वेदी त मा सो नाही ॥ २८ ॥ कैसे बोलै ते ला करै गी
वा वरी जो ज न वी सब व सी ना हि पर धर माई ॥ २९ ॥ हा सि क
रा सी ये वेदी तु नोरी ये वा वरी या वयमै तो हे वेदी न तपव
णि आर्श ॥ ३० ॥ ५ म सुणिके जो हे राजुल वेष बाणी बोलती न व
ज व माय मई कला जो व डु ड ष पाई ॥ ३१ ॥ न र क न ए जो हे मे
रे ता तै क दु ष व क स ही ॥ ३२ ॥ ति न के ने दे हे मेरे ता तै कह त न व
नाई ॥ ३३ ॥ ति र ज च ग ति मै हे मेरे ता त मै न ट की ध र णी माता ही
हे न धि जाय को न न ह्यायी ॥ ३४ ॥ दि व म नु ष मै हे मेरे ता त त्रा स ना
व सि करी ॥ सु ष को ल हे मेरे ता त क वु ष ल हायी ॥ ३५ ॥ षु त सं ज
म हि हे मेरे ता तै सु ष को रु प है ने म क व र नी हे त जि रा ज जो ग ध
राई ॥ ३६ ॥ जे सी री ति हे प करी हमारे नाथ जी सो ही री ति हे मा
कूं जो ग प सो ना दा शी ॥ ३७ ॥ तपनी कर स्पृ हे मेरे ता त सं ज म धार
स्पृ धा व य कूं त म पर सा दि स फ ल कराई ॥ ३८ ॥ ह म ह व जा नि हे य
शि वार सरा जु ल त ए ॥ ध नि ध नि ध रि स व क र ते जो न म न कराई ॥ ३९ ॥

राजमती नी हे ना विधा जो ५ व स्था आ चरी ॥ १७ ॥ स पृ णो ॥ ११ ॥

नमः॥ अथ इमं संग्रहं जीकीनाया लिख्यते॥ मंगलाचरन
 अडिहन्ना॥ रिसभनाथ जगनाथ सुगुनमनघं महे देव इंद्र
 नरविंदवंदसुषदां नहौ मूलजीवनिरजीवदरषष्टविधक
 हावंदो सीसनवायसदाहमसरदहें॥ सत इंद्रभीम इंद्रवती
 सनवनचालीसहें॥ रविससिचक्रीसिंघसुरगचौवीसहें॥ स
 त इंद्रनकरिवंदनीक अरिहंतहें॥ वंदोचौवीसों जितराजम
 हंतहें॥ १॥ जीवनों अधिकारनामसवैया॥ २॥ जीवसदाउ
 पयोगमईनिरमूरतनावनि कौकरताहें॥ देहप्रवांतकहें
 सुगतानववासयसैंसि वकौंनरताहें॥ ऊरघचालसुभा
 वविराजततो अधिकारनि कौंधरताहें॥ सोसवनेदवषो
 नकरोसरधंनधरोंभ्रमकौंहरताहें॥ ३॥ जीवजया सवैया
 २१ इंद्रिपांचवलतीनस्वासआवदसथांनमूलचार इंद्रि
 वलस्वासआवमांनिये॥ पूरवजीवैया अरवजीवैश्रगेज
 वहगाईएईशानसेतीविवहारजीवजांनिये॥ सुषसता
 बोधश्रौरचेतननिहचैषांतसासतोसुजावतीनकालमें
 वषांतिये॥ विवहारनिहचैसरूपजांतसरधंनश्रैसेजी
 ववस्तलधेंसोसुषीपिछांतिये॥ ४॥ उपयोगजयाकवित
 ईकुपजोगनेददोताकेदरसनज्ञांतदरसनविधचा
 २॥ चछअचछश्रोधश्रुकेवलज्ञांतकह्योहें॥ आवष
 कार॥ कुंमतकुश्रुतकुंश्रोधसुमतसुतश्रोधश्रौरमन
 परनेंधारकेवलग्यांतसरवकोंनायकसोतुकमेंकि
 नआपनिहार॥ ५॥ सौरवा॥ मतिश्रुतपरोछदछ॥ मनपर
 जैश्रुश्रोध॥ सुंनएकदेसपरतछ॥ केवलसकलपर
 तछहें॥ शीचोपरी॥ दरसनचारआवविधग्यांनचेतन
 के लछनसामांन॥ नेव्योहारकरमकृतजोग॥ निहचैसुधे
 सुधुपजोग॥ ७॥ अमृतीजयाकवित॥ करनपंचरसपंच
 गंधहोफरसआवकीमूरतहीषा॥ निहचैजीवअमूर
 तीआनौवीसमांहिकौंएकनकोया॥ कर्मबंध्योव्यो॥ हार

१० भा० मूरती कालागोरा कहि वत लोय नै निहचै ब्योहार समक
 के समता भै विच छन सोय ॥ करता यथा ॥ दरवती करमा
 यटपट आदिक कौं जीव ब्योहार वषांन ॥ जाव क्रोध आदि
 करागादिक नै असु छति हेचै परघांत ॥ निहचै सख बुद्धति
 जगुत में केवल ग्पांन सरूप सुजात ॥ स्यादवाद सो सवैतै
 साधे अनुजोति रविकल्प सुषषांत ॥ ए० देह प्रवांत जा
 था छप्ये ॥ ज्यो दीपक परकास एक साघट वटनां ही ॥ घटै
 षटकने मां हि षडै वटके के मां ही ॥ त्यों असंष परदे सवैत
 जिय निहचै जां नों ॥ समुदघात विनतन प्रवांत ब्योहार व
 षां नों ॥ लघ काय पाय संकोच के थूल देह लहि विषत
 रें ॥ सव प्रां नी अभ्यसमांन हैं दया करै सो वरतरें ॥ १० ॥ समु
 दघात सांतनां मसरूप जघा ॥ सवैया ॥ ११ ॥ मूल देह तें छ
 टै नां हि वाहिर प्रदे सजां हिक ह्यो हैं समुदघात सो ई
 दसात हैं ॥ क्रोध से ती सत्रुति पै वेदनां सों श्रौष दपें सुन
 सुनते जसको कृत ला विष्पात हैं ॥ मरनां जगत मां हि
 वै क्रीव ऊजीव करै ॥ आहार कसाधनिकें संदेह विला
 त हैं ॥ केवल समुदघात समें मां हि चेत नही काय से ती
 वाहिर निकल आपजात हैं ॥ ११ ॥ दोहा ॥ लोक प्रवांन
 प्रदे ससों तन समांत ब्योहार ॥ लोक अ लो क संग्पांत
 तौ सुद्ध आपस मसार ॥ १२ ॥ जुगता जथा कवित ॥ पुं न्यु
 देतें षांन पांन वरुपा पज दै तप सीत अपार ॥ पुदगला
 कर्म वंधतें प्रां नी सुषडष जुगता में ब्योहार ॥ विषै कषाय
 दया समता निज जाव नोगता निहचै धर ॥ सुद्ध ज्ञान सु
 ष सिद्ध नोग वें धरौ ध्यांन नोगो सुष सार ॥ १३ ॥ संसार ज
 था चोपडी ॥ नूतल अगन पवन तरु काय ॥ था वर एके
 डी वरुजाय ॥ लट वेटी मां षी नर देह ॥ दैतें चोपन अस
 वरु एहा ॥ १४ ॥ एकें डी सूक्ष्म अरथूल ॥ विकल त्रै सव
 अमनें मूल ॥ सम छ अमन पंचे डी मां हि पख अ पख ॥

चतुरदसगं हि १५॥ वोदैमारगं तां गुनयां त नैः सुधसं
 सारीजां तां ॥ सवजिय सुध सुध नैमां हि ॥ आप सुध अनुमो
 मोतां हि ॥ १६ ॥ सिद्धस रूप घट मिथ्या बुधसति रा करन स
 वेया ॥ १७ ॥ शकर्म नासन ए सिद्धसदासिव नां हि जीव अष्ट
 गुन मदी सिद्धति गुन त वा वरे ॥ अविनां सी सिद्ध समैसा
 रे जीवै नां हि वले जां हि नां हि लोक अंत वहरा वरे देह
 सेती कछु ही नचे त न घटे स सिद्ध परसे ती निंत्न मिले
 नां हि वा व वा वरे ॥ भावल हर हो जां हि सागर ज्यो धिर
 सिद्ध सुनता सुजा वतां हि ती के मन वा वरे ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥
 चाल तथा षट् दिसा चाल जथा प्रकृत प्र देसा ॥ दोय वंध
 जोग से ती हो यथित अनुनाग वंध कौं कषाय करै हैं ॥
 चारो वंध नां सैं आग जेम चले २३ ॥ रघ कौं वा की तजि कौं
 न घट दिसा कौं ति करै हैं ॥ वक्र चाल एक दोय ती न समै
 अनाहार हाथ लगठ मृत जै सैं विस तरे हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥
 ल एक समै नां त जेम आहार क मिथ्या वस जीव मरे सा
 म्य क सो तरे हैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ अजीव पंचने द जथा ॥ अडि द्र ॥ पुद
 गल धर म अ धर म ग ग ग त्त ज म जां नियो ॥ पंच अजीव
 दर व स व ज ड में मां नियो ॥ पुगाल मूरत वंध वी स गुन
 सहति हैं ॥ चार अ मूरत जां त जिना ग म सहत हैं ॥ २८ ॥ पु
 द ग ल ज था ॥ स वे या ॥ धूप छां हि चां द नी अ धे र स व द
 अ कार थूल तु छ वंधे पु जै पर जा य जां नियो ॥ २९ ॥ स छ म स
 छ म अनु स छ म है कार मो न स छ म ता थूल चार इं डी ॥
 विषे मां नियो ॥ थूल स छ म है धूप छां ह थूल ज ल धी व ॥
 थूल थूल पृथ्वी का वने द ए वषां नियो ॥ द स पर जा या
 छ ही ने द स व पु गाल के न्यारो आप आप विषे आप ही
 पिछा नियो ॥ ३० ॥ धर म दर व ज था ॥ चो प डी ॥ मी न च ले ने
 ज ज ल को पा य जिय पु द ग ल ग ति धर म सि हा य धिर

॥ २० ॥ न च छा वै पेर क होय चलते कौं सहकारी सोय ॥ २१ ॥ अध
 र म इ व्यजथा ॥ जिय पुदग ल कौं थित सहकार ॥ अधर म
 दरव क हौ ग न ध स र ॥ पंथी वै वे छा या मा हि च लै नि से वै
 वा वै नां हि ॥ २२ ॥ अधर म अधर म ॥ दो हा ॥ पुं त्प पा य हो न्यो न
 ही है अ वि नां सी व स्त ॥ ती न लो क में न र र हे ऊं पर त ले स
 म स्त ॥ २३ ॥ आ का स द र्व य था ॥ क वि ता ॥ सर व दर व को वो
 र दे त है ॥ दर व आ का स सु गु न अ व का स ॥ ता के दो य ने द
 नि त जां नो लो का का स अ लो का का स ॥ पु द ग ल ध र
 म अधर म जी व ज म पंच ज हां सो लो का का स ॥ पंच दर
 व वि न एक सुं न न सो अ लो क ग्पां त में उ का स ॥ २४
 का ल दर व ज था एक का ल अ नू से ती रू जी का ल अ
 नू जा य ॥ पु ग ल की पर मां नू त हां स मां हो त है ॥ ज ल क २
 क दो री ध री सूर ज सो दि न हो य मां स रि त अे न व र्ष अ
 द दे उ हो त है ॥ न री व स्त वो दी करै परा व र्त चाल ध रें ॥
 सो री वि व हार का ल वि नां सी क गो त है ॥ अ ती त अ ना
 ग त व र त मो न पर जा य का ला नू दर व ल वें जा कै उ ॥
 र जो त है ॥ २५ ॥ पु नः एक द र्व है अ का स ता के अ नं तेष
 दे स तां में लो का का स के अ सं घ्या त प्र दे स है ॥ एक ए
 क दे स मां हि एक एक का ल अ नू रै न रा स जे से थि र ॥
 न्पारी वि न जे स है ॥ सर व द र्व पर न ति स हा य ति ह वै का
 ल अ सं घ्या त स ता अ वि नां सी अ क ले स है ॥ एक वौ
 र ध स्तो म् रु चा क फि रें ॥ अ षंड त्यो अ लो क कौ स ॥
 हा य का ल ही अ से स है ॥ २६ ॥ पंचा स्त का या चो प री जी
 व दर व र्क क वे त न सा र ॥ दर व अ जी व पंच पर कार ॥ छ ॥
 हौं दर व ना षे स म जा य ॥ का ल वि नां पंचा स त का य ॥ २
 ७ ॥ का ल अ का प य था ॥ सो र वा ॥ व ऊ प्र दे स जि न मां हि
 अ ग्नि का य ते री क है या तें का या नां हि का ल एक पर

इसको रणी कवित धरम अधरम एक चेतन के असंघा
 त परदेस सुजांन। योम अनंत प्रदेस विराजे लोक प्रलोक
 सरवगत वांन। पुद्गल संघ संघ अनंत प्रदेसी विछूरे
 मिले प्रवांन॥ काल एक प्रदेस अरूपी तातें काल अकाय
 वषांन। रणी परमांन वरु प्रदेसी जया कालान् है एक प्रदे
 सी मिलन सकत सो कवा ही नां हि। तातें काल अकाय व
 ता यो अ प्रदेस हैं छ दरव मां हि। परमांन हैं एक प्रदेसी मे
 ल वरु ने दषंध हो जां हि। तातें काय वंत वरु देसी नें उपचा
 रहोन की छां हि। ३७। आकास के अवकास गुन महात
 म जया। अविनांसी पुद्गल परमांन रो के जे तो वेत अक
 स। ता कौनांम प्रदेस वषांनो ता में पूरन पुंन अवकास
 धरम अधरम प्रदेस प्रमांन कालान् वरु वंधति वास
 जीव अनंत प्रदेस तौर देधन सरव गप कि यो छित ना स
 ३८। सवेया। ३९। अलवध स्सु मति गोदये की चक्रवा
 ल पहिले समे में लंवा चोर होय जात हैं। रजे समे मां हि चो
 रती जे समे मां हि गोल सो शी स वतें जघन्य को घात हैं।
 राघो नांम मछ सा देवारे को उजो जन को दो नो रो के लो
 क असंघात देस वात हैं। छोटा वडामध्य ने द के सो शी
 शरीर धरो एक परदेस एक जीवन समात हैं। ४०। नवत
 त्वया पनां जया। कविता चार दर्वनि तनिल विराजे पुद्ग
 ल जीव मिले जिह चार। सात पदारथ तहां होत हैं दोय
 आप सो नों परकार आश्रव वंधन संवर निर्जर मोष पुंन।
 अरु पाप निहार। सो सव ने द वषांन करत हैं कछु सूर्य स
 म्य क गुन कार। ४१। जीवतता। छप्यें। एक चेतनां सार दोय
 निह चै यो हारी। रतन त्रे करिती न अनंत वतु ऐ धारी पंच
 परम पद रूप काय घटपालन हारो। सात मंगसों सधे आ
 व कर्म निते न्यारों नो लवध वंत दस धर्म धरिसो सरूप हे

रदेधरो ईमजीवतत्व सरयोतसोडतरनोसागरतरो॥पध
 अथजीवतत्वकविता॥पंचअजीवकथहेचारोजिनकेक
 नीविनावनहोय॥पुद्गलसुखअसुखविराजें॥सुखअनगु
 नपोचोजोय॥सीततापरूपेचिकमकेदोरसवरनगंधअ
 वलोपबंधअसुखवीसगुनपरगटदेवेंजानेंचेतनसो
 य॥३५॥आश्रवतत॥गीताछंद॥मिथ्यातपंचअविरतवा
 रेपंचवीसकषायहें॥परमोदपंडैजोगपंडैवहतरडषह
 यहें॥आतमांकेपरतांमएशीनावआश्रवतहिंजलाव
 सकरमहोनेंजोगआवेंदरवआश्रवपुद्गला॥३६॥व
 धतत॥जिपरगदोषविमोहअपनेंनावचिकनेपग
 लहें॥ईसनावबंधनिमतसेतीकरमरुजबलगतहेंचे
 तनप्रदेसपुरांतकरमनएकरममिलिदिदने॥पहद
 रवबंधजघाउदेंमदनाववऊविधपरनये॥३७॥सिहा
 सबैया॥३८॥जीवजेसानावकरेतैसाकर्मबंधपरेंतीव
 मंदमध्यनेदलीनेंविस्तारसो॥बंधजेसाउदेंआवेतै
 सानावउपजावैतैसाफिरवधेकिमछूतसंसार
 सो॥नावसारूबंधहोय॥बंधसारूउदेंजोयउदेंनाव
 चवनंगीसाधीचटसारसों॥तीहमंदउदेंतीहृषनाव
 मूढधारतहें॥तीहमंदउदेंमंदनावदोखिचारसों॥३९॥
 संवरतत॥छप्यें॥पंचपंचहृतसमतिगुपसतीनोथिर
 पालें॥चारेंनावतनापधर्महमनेदसमालें॥दसआलो
 चनांसुखपंचचारतवरुजागी॥जितपुधादिवाईसना
 वसंवरवैरागी॥तिसकेंनहिलगेंकरमरुजसोंसंवर
 दरवततहांपहनावदरवसंवरसमऊजुदाजगतसो
 होरहें॥४०॥निर्जरतत॥तपतिरबंधेकनावनिरुज
 रानावतसोई॥बंधोकरमतवधिरेंनिरुजरादरवतहो
 ईउदेंदेयकरिधिरेवुरीसविपाकतिरजराउदेंदेयवि

विरैजली अविपाकसुषकरा॥सर्वके अकामनिर्जराजग॥
 त्यानासकामनिर्जरा॥अविपाकसकामकरीतिनहो जिन
 होग्यांतघटमैधरा॥मोषतता॥सवैया॥धश राग दोषमोहनां
 हि सम्पकसरूपमां हि सोईभावमोषआपसुखभावमईहें
 प्रकृतिप्रदेशयिति अनुभोगबंधधारसर्वथा विनाभएद
 र्वमोषनईहें॥परजायनें विचारजीवमोषतयोसारदर्वत
 नेंसदासिवनशीतोहिनईहें॥दर्वमोषभावमोक्षसिद्धी
 दराजतहें॥सोमैअवमेरी बुद्धि त्रैसीपरनईहें॥धश पुंन
 ततपापततभावपुंनसुनभावपुजादानअपतफभाव
 पापपरतांमविषे श्लोकवायहें॥दर्वपुंनसाताअवसव
 नेदपुगालकेदर्वपापसौनेदपुगालवज्रभागहें॥दर्वना
 वपुंनपापसुगनककोमिलापासवसौनिरालाआप
 यहीजीवरागहें॥एरीषट्दर्वतवततसरधमंनहें॥राग
 दोषमोहहरोमोषकौंगुपायहें॥धशरतनत्रै॥सोरवा॥स
 म्पकदरसनज्ञानाचारित्तसिवकारनकहेंनेव्योहार
 प्रवांता॥निहवैतिज्जमेंआत्मा॥धश॥चौपरी॥सम्पकरंतन
 त्रैजियमांहि॥निजतनत्रौरदरवमेंतोहि॥तातेतीनोमें
 निहपाय॥सिवकारनचेतनयहआप॥ध५॥दोहा॥आप
 आपमेंआपकौंदेवैदरसनजोया॥जांतपतांसो ग्यांनेथि
 रताचारतसोया॥ध५॥दरसनग्योनयथा॥कवित॥जी
 धादिकभावनिकीसरधा॥सोसम्पकतिजरूपतिहार
 जाविनमिथ्याग्यांतहोतहें॥जाविनमिथ्याचारतधरड
 रनेंकोंपरवेसजहांतहिंसेविभ्रममोहनिवार॥सुपर
 सरूपअथारथजानें॥सम्पकग्यांतअनेकप्रकार॥ध६॥
 जोसांमांन्यहेविसेषविननिराकारदरसनपरवांन॥जो
 विशेषजांनेअर्थनिकोंसोआकारग्यांतपरधमंनसेसा
 शी छद्मस्तजीवकौंएककालनहिंदरसनग्यांतएकस

मनेना
७२

मैमेंदुष्टैजातैकेवलरूपप्रनुपममाना॥६७॥चारतरूपजा
या॥दोहा॥असुननावनिरवारकैसुनपयोगविसतार॥गु
यतिसमतिवृत्तमेदसौंसोचारितव्योहार॥धर्षीचोपशीवांहे
रपरततिचंचलजोग॥अंतरनावसमस्तनुपयोगदोते
कियेवदेसंसार॥कोकैनिहवैचारतसार॥धर्षीध्यांतकारन
चारितनिहवैअरुव्योहार॥उभैमुक्तकारननिरधरणे
होहिंध्यांततेंदोतोंगंसा॥कीजेंध्यांतजततअभासा॥पणे
ध्यांतदसा॥सवेया॥३१॥ईष्ट्रौअनिष्टजेपदारथजगत
मांहितितेंदेवरागदोषमोहनाहिकीजिये॥विषैसेतीउव
तयसागदीजियेकषायचाहदाह्म्येयएकदसामोहिनी
जिये॥ततग्यांतकोसंभारसमतासरूपधरजीतकैपरी
सहआनंदसुधपीजिये॥मनकोसुवसआंततातांविघ
ध्यांतवांतआपनीसुवासआपमांहिआपलीजिये॥५१
सतजापअक्षरव्योहार॥अडिष्ट॥पैतिससोलेंषट्प
तचवजुगएकहै॥सातजापएअक्षरत्रोरअनेकहै
पंचपरमपदरूपसदा मनध्याईए॥रिषसिद्धहैकहांसु
कतपदपाईये॥५२॥जापअक्षररूप॥सवेया॥३१नमो
अरहंज्ञानंसातनमोसिदानं॥पंचनमोआईरियानंसा
तवरनभावरे॥ममोउवकायानंसातनमोलोएवारस
ब्रसाहृतं॥पंचैपैतिसलवलायरे॥अरिहंतसिद्धआच
रजउवकायसाधुसुभसोलैअरिहंतसिद्धषट्धावरे
असिआउसाएपंचअरिहंतचारसिद्धदोपुंएकसर
वअक्षरकोंरावरे॥५३॥पुनःपैतीसअक्षररूप॥कवित
सातनमोअरिज्ञानंअरुपांचनमोसिदानंध्यांतासातन
मोआईरियानंअरुनमोउवकायानंसातचारनमोलो
मजातों॥पंचसबसाहृतंज्ञांत॥पंचपरमपदपैतिस
क्षरसुषकारीध्यांऊंदिनराता॥६५॥अरिहंतचोपशी

धारयातिया कर्मविनांसाग्यांन दरससुषवलपरकास
 परमोदारकतनगुनवेत्त॥ध्यांऊंसुघसदांअरिहेत्ता॥५५सि
 धकरमपापनांसेसवथौक॥देषेजानेनलोकअलोकलो
 कसिषरथिरपुरुषाकारा॥ध्यांऊंसिधसुषीअविकारप
 ही॥आचारजा॥दरसनग्यांनप्रध्मंनविद्याण॥हृत्तपवीर
 जपंचाचारा॥धरेधरावेँश्रीरतियासा॥ध्यांऊंआचारसु
 षरासा॥५७॥उपाध्याय॥सम्पकरतनेगुनलीनसदा
 धरमनुपदेसपवीना॥साधनिमेंसुषकरुतोधरा॥ध्यांऊं
 उपाध्यायहितकार॥५८॥दरसनग्यांनसुगुनभेमार॥प
 रमदिगंवरमुद्राधरा॥साधेसिवमारगआचारध्यांऊं
 साधसुगुनदातार॥५९॥उत्तमध्यांनजया॥तनचेष्टात
 जआसनमोहा॥मोतधरिचित्तसवह्मांडिथिरकैम
 गनआपमेंआपयहनतकिष्टध्यांननिहपाप॥हिनेजा
 वलौसुकतचहैमुनराजा॥तवलौनिहपावेँसिवकाज
 सवचित्ततजिएकसरूपा॥सोईनिहवेँध्यांनअनूप॥ईश
 दोहा॥पांनोचलनांसोवनांमिलनांवचनविलासजो
 ज्योपंचघटाईयेसोसोँध्यांनप्रकास॥ईश॥सवेया॥आग
 मग्यांनसदावृत्तवोनतपैतपजांनतिहंगुनपूरा॥ध्यांन
 महारथधारनकारनहोपधुरंधरसोनरसूरा॥ध्यांन
 अन्पासलहेसिववासविनांनवपासपरैडषमूरा॥का
 र्ममहादिदमेंलचढेवऊध्यांनसुकप्रकरैवकचूरा॥ईर
 पूरनता॥सवेया॥नेमचंदआचारजकहैमेंअलयशुत
 कीनोदर्वसंग्रहकौंसोधेमुंतिराजजी॥ह्खनरहितमुन
 नूषनसहिततुमखुतसवपूरनहौंचूरनअकाजजीघां
 तततनकबुधतापरवषांनकरीवालरीतधरीढकिली
 जोगुनसाजजी॥कुंकयाकेनांसनकौंबुधकेप्रकासने
 कौंजाषा यहग्रेथभयोसम्पकसमांजजी॥ईध॥ईतिश्री॥

१० भा०
५३

दुर्बसंश्रुतमात्रसंपूर्णः॥ सगमो रत्नः॥ प्राणी आत्म
रूप अनूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ प्राणी ११॥ यह सर्वक
र्मनुपाध है रग दोष भ्रम जाल॥ प्राणी आत्मरूप अनू
प है परतें निन्नत्रिकाल॥ १२॥ का हां भयो कां रत्नगी आत्म
दर्पन मां हि॥ प्राणी आत्मरूप अनूप है परतें निन्नत्रिका
ल॥ १३॥ परकीर्ण पर है अंतर धेवी नां हि॥ प्राणी आत्मरू
प है परतें निन्नत्रिकाल॥ १४॥ मूलिने वरी अहि सुयो वृत्
लम्बो नररूप॥ प्राणी आत्मरूप है परतें निन्नत्रिका
ल॥ १५॥ त्यों तें परतिज मां निया वह जन्तुं चिद्रूप प्राणी
आत्मरूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ १६॥ जीव कव कत न
मिल के निन्न निन्न पर देस॥ प्राणी आत्मरूप है परतें
निन्नत्रिकाल॥ १७॥ मां है मां है संघ है मिले न ही ल बले
स॥ प्राणी आत्मरूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ दीघन क
र्मिनि आच्छादियो पांत भान पर का स॥ प्राणी आत्मरू
प है परतें निन्नत्रिकाल॥ १८॥ हे ज्यों का त्यों सा स्वतारं च
क दो यन नां स॥ प्राणी आत्मरूप है परतें निन्नत्रिकाल
१९॥ लाली कुल के फटक में फटक न लाली होय प्राणी आ
त्मरूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ २०॥ पर संगति पर भाव है
सुख स्वरूप न कोय॥ प्राणी आत्मरूप अनूप है परतें नि
न्नत्रिकाल॥ २१॥ असथा वर नर नार की देव आदि वज्र
निदा प्राणी आत्मरूप अनूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ २२॥
२३॥ गुण ज्ञानादि अनंत है पर जें सक त अनंत॥ प्राणी
आत्मरूप अनूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ २४॥ निह वै
एक सं रूप है ज्यो पट सहज सुपेदा प्राणी आत्मरूप
अनूप है परतें निन्नत्रिकाल॥ २५॥ द्यं न त अनुभों की
जिये या को यह सिद्धांत॥ प्राणी आत्मरूप अनुप है प
रतें निन्नत्रिकाल॥ २६॥ इति षट्सं पूर्णः॥

॥ अथ स्वयंभूनामालिख्यते ॥ चौपरी ॥ राजविषे जुगलितिसुषकि
 या ॥ राजत्याज्यनवसिवपददिया ॥ स्वयं बोध स्वयंभूनागवांनानां वंदौ
 आदिनाथगुणषोनाशा इंद्रवीरसागरजललायामेखंलायगा ॥
 यवजायभदनविनांसिक सुषकरता ॥ वंदौ अजित अजिता ॥
 पदकारापास कलघांन करिकरमविनांसा ॥ घात अघातस
 कलउपरस ॥ लह्यो मुक्तपदसुष अविकाया वंदौ संनवनव
 उधराय ॥ मातापुत्रमरे नमंजाय सुपिनै सोले देवे साय भूप
 छफलमुनहरयाय ॥ मंदौ अजिते दन मन लाया ॥ धा सवकुंवा
 दघादी सिरदाय जीते स्यादवा दधन धरा जिन धरम परक
 सकखांम ॥ सुमति देवपदकरो पुतांमा ॥ ५ ॥ गरभ अगा ऊं ध
 नपति आया ॥ करीनगर सेना अ धिकाय ॥ धर धरतन पंदरे
 मांसा ॥ नमो पदम प्रसु सुषकी रासि ॥ ६ ॥ इंद्र फनिं इतरिंदरि
 काला ॥ वांती सुत सुन हौं हिषु स्यात्ता ॥ चारे सना गपांन दातार
 नमो सुपारसनाथ निहार ॥ ७ ॥ सुगन छिया की स है तुम मां
 हि ॥ दीष अ वारे कोरीनां हि मोहमाहात मतां सक दीप नो
 चंद प्रचुराष समीपा ॥ जी वारे विधत प करे मविनांसा ॥ तैरेने
 दत्तारित परकासा ॥ तिज अ नि छन वि ई छ कदांन ॥ वंदौ पु
 ह्यदंत मनि आंन ॥ एी न वि सुष दाय सुगन तै आया दसवे
 धधर्म कह्यो जिन राया ॥ आप समांन स वनि सुष देहा ॥ वंदौ सी
 तल धरम न नेहा ॥ १० ॥ समता सुधस कोप विषतांसा ॥ छ दशां
 गवांती परकासा ॥ चार संघ आ नंद दा तारा ॥ नमो श्री अंस जि ॥
 नेश्वर सारा ॥ ११ ॥ रतन त्रय सिर मुकट विसाल ॥ सोनें कंठ सुगु
 न मन लाया ॥ मुकट नारन रता भगवांन ॥ वास पूज्य वंदो ध
 रघांन ॥ १२ ॥ पदम समा धिस रूप जिने सा ॥ ग्यांती ध्यानी हि
 त सुप देस ॥ करम न स न स्तान ग वंन ॥ वास पूज्य वंदो ध
 धस्थंन ॥ १३ ॥ मास सिव सुष विलसता ॥ वंदौ विमलनांथ न
 गवंत ॥ १४ ॥ अंतरवाहिर परगहनारा परम दिगं वर हताको

नवमुक्तो
७५

धर सरवनांमसिवसुषविलसंतावंदौविमलनाथजगवंत
शुभ्रं चरवांहिरपरगहारापरमदिगंवरवृत्तकौंधरसरव
जीवहितराहदिषायानमौंअनंतवचनमनकाय॥१६॥सातव
त्वपंचासतकाय॥अनथनवोंछदरवऊनायालोकअलोकस
कलपरकासावंदौधर्मनांथअघनांसा॥१७॥पंचमचक्रवर्तिवि
धनोग॥कांमदेवदादशममनोगसांतकरनसौलमजिनरा
यासांतनांथवंदौहरयाया॥१८॥वऊथुतकरेहरषनहिहोडी
निदेंदोषगहैनहिंसोयासीलवांनपरब्रह्मसरूपावंदौकुं
थनांथसिवभूपा॥१९॥वारेंगुनपूजेसुषदायाथुतवंदनांकरे
अधिकायाजाकीनिजथुतकवऊनहीयावंदौंअरजिनव
रपददोया॥२०॥परनौरतनत्रेअनुसाराईसनोंव्याहसमेंवै
राग॥वालवृष्टपूरनवृत्तधरावंदौंमछिनाथजिनसारा॥२१॥
विनउपदेसस्वर्यवैराग॥थुतलोकांतकरेंपगलागा॥नमः
सिद्धकहिसववृत्तलेहिं॥वंदौंमुनिसुवृत्तवृत्तदेहि॥२२॥आ
वकविद्यावंतनिहाराभगतजावसोंदियोंअहारावरवे
रतनरासिततकालावंदौंनमिप्रभुदीनदयाला॥२३॥सव
जीवनिकेवंदीछौरारागदोषदोवंधनतोरारजमततजि
सिवतियकोमिलेनेमनांथवंदौसुषमिले॥२४॥दैतकि
थेउपसगअपारा॥घांनदेविआयोंफनिधरागयोक्रम
वसवसुषकरस्याम॥नमोंमेरसमयारसस्वांन॥२५॥नौसा
गरतेंजीवअपारा॥धरमयोगमेंधरेनिहारा॥वृत्तकादेद
याविचारावरघमांनवऊवंदौंवारा॥२६॥दोहाचोदीसों
पदकमलजुगवंदौंमनवचकाया॥घांनतपदेंसुनेंसदा
सोप्रभुकींनसुंहाय॥२७॥ईतिस्वर्यनुसौत्रनाथसंपूर्ण॥॥
अथचारसैंछहजीवसमासादोहा॥वंदौंनेमिजिनंदपदस
वजीवनसुषदाया॥वालब्रह्मचारीनयेपसुंगनवंधछुडाय
जीवसमांसअनेकविधिभाषेगीमहसारा॥नेमवंदगुरवंदिकें

करुणकप्रधिकार॥२॥चोपरी॥एष्वी कायउनेदवषांन की
 मलमांटीकविनवषांन॥पंती पाव कयोंनविचारनित्यई
 तरसाधारनधरात्रसांतोस्त्रुहमसातोंथूल॥ईन केचोदे
 नेदकचूल॥कहीप्रत्येककायदोजातापरतिष्ठतप्रतिष्ठ
 तज्ञांताधादीहा॥ह्रवबेलछोटाविरषवडावषत्ररुर्कदये
 चनेदपरतेककेलषततांहिमतमंद॥५॥जवईनिमांहिने
 गोदहैतवपरतिष्ठतजांति॥जवनिगोदनहिंपाईयेप्रपर
 तिष्ठतवमांहिदी॥जातदसौंपरतेककीवेचोदेहैचोवीसा
 परजप्रपरजप्रलवघसोंनेदवहतरदीसा॥७॥वितेचोई
 त्रिविधपरजप्रपरजप्रलषविकलत्रैकेनेदनवहिंसा
 करेनिषघा॥१०॥चोपरी॥कर्मभूमितिरजंचविष्पातागर्जज
 सनमूर्छनदोजातगरनजपरजप्रपरजप्रवीता॥प्रल
 वधिहसनमूर्छनतीनएसैनीपंचप्रसैनीपंचदसौंनेदज
 लचरतिरजंच॥दसौंनेदथलचरपशुकायादसौंव्योमचर
 उनेसुनारी॥१०॥करमभूमितिरजंचमकारातीसनेदभाषे
 निरधारा॥नोगभूमिप्रवसुंनोसुंजाता॥थलचरनचचर
 दोसरधसंता॥११॥परजप्रपर्यापतदोनेद॥चारनेदजांनो
 विनुषेद॥उतममध्यमजघन्यभूतने॥चारैनेदजिनांगम
 नते॥१२॥दीहा॥पंचेदीतिरजंचकेकहेवियालीसनेदते
 रेनेदमनुष्यकेसमकौंनरमउछेद॥१३॥चोपरी॥उतम॥
 नोगभूमिसुषषांति॥उतमपात्रदांतफलजांता॥मध्यमज॥
 घन्यनोगनुवदोया॥चोथैकुंनोगभूतरजोया॥१४॥पंचमम
 लेहषंडमकारा॥छवेत्राचारजगरनकारा॥परजप्रपर॥
 जडषादसजांति॥अलवधितरईनमेंनहिमांनार॥१५॥प्र॥
 डिध्र॥नारिज्योमथनतांनिकांषमेंपाईये॥नरनारीके॥
 मलमूतरमेंगाईये॥सुरदेमेंसंमूर्छनमेंनीजीघरा॥अल
 वघपरजायतेदयाधरहीपरा॥१६॥सौरवा नरकपटलनुन

वासापरजत्रपरजायतकहे। जीवसमांसप्रकासासातामें
 त्रवानवै॥२१॥चोपरी॥त्रिसवपटलसुरगकेपावाभुवनय
 तीदसद्यंतरत्रावा। जोतिकयाचछियासीनये। परजत्र
 परजापतिगिनलये॥२१॥दोहा। नरकमांहिअठवनेय
 मुर्कसौतेईस॥नरतेरेंसवदेसकेसतकवहसरदीसाश
 र्थ अडिह्त्र॥परजापत एकसों छियासीजांतियै॥अप्रज
 पतेईकसोंछ्यासीमांतिये॥अलवधपरजापतेजीवचो
 तीसहैं। चवसतघटपरकरनांकरैमुनीसहैं। २१॥ दोहा
 नियतयेकचेतनमरीभेदसरवव्योहार। निहचैअरु
 व्योहारकाजांननहारासार॥२२॥ सुदयासमताअप
 में यहपरदयाविचार। ह्यांनतसुपरदयाकरैतेविरले
 संसार॥२२॥ ईतिचारसैंघटजीवसमांससंपूर्णः। अथ
 दशाथांनचोवीसीलिषतें॥ रिषवदेवरिषदेववीरगंभी
 रधीरकति॥ चारवीसजगदीसईसतेईससुगुनगुन
 सुरगवांमतिजनांममात्तपुरांमघरनतना॥ आया
 कायसुंभचित्रसुंकतआसनदसवरनना। असगाय
 पुंमनुपजायबुद्धिपापकरोंमंगलअमरासिरनाय
 नमोंनुतजोरकरनौजिनंदनवतायहरारिषभदेवरि
 षननाथदृषनलछनतनसोहैं। नांनिरायकुलकमा
 लमातमरुदेव्यासोहैं। चोंरासीलषपुषत्रावसतपं
 चधनुषतन॥ नगरअजोध्याजनमकनकवसुंवर॥
 नहरनमना। सर्वार्थसिधतेंगमनपदमांसना॥ केव
 ल्गपांनवरसिरसिरअजितअजितअजितरिपुअ
 जितहेमतनगजलछननमा। पिताशयजितशनुअ॥
 अषरगासन॥ आसन॥ लषवहतरपुषत्रावपुरज।
 मअयोध्या॥ धनुषचारसैंसाटगढवचवऊप्रतिवोभा
 ध्या॥ सजिविजयथांनपरघांनपदवसेविजैसैनांउदर

सिरणे ॥ संभवनाथ ॥ संभवसेनवहरनपुरीसावत्रीजांतो
मातसुषेनांरूपभूपदिहरजप्रदानो ॥ षरगांसनसुषस्वाद
आयग्रेवेयकतैः प्राये ॥ विक्रतुरंगजुतंगरंगकंचनकंचन
मेगाणं ॥ धितसावलाषपूरवनुगतिधनुषध्यारसेंलषि
चतुरसिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर
ध ॥ अजिनंदन ॥ अजिनंदन ॥ अजिनंदकंदसुषभूपस्वयं
वय ॥ मातासिधारया कथासुंवरनतनमनहरतीनसक
तपंचासघनुषतननगरविनाता ॥ पुत्रलाषपंचासतास
कपिलछनमीता ॥ षरगासनविजयविमानतैकरमणे
तासपरकासकर ॥ सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनं
दनवतापहर ॥ ५ ॥ सुमतिनाथा ॥ सुमतिसुमतिदातार
सारवससवैजयंतमना ॥ भूपमेधरयतातमातमंगला
करनकतना ॥ पुत्रलाषवालीसईसतनधनुषतीनसें
चक्रवाकलषिवित्रपरगआसनसुषविलसें छह
सासअमांऊगर्नतैंनयोविततीसुरनगरसिरनाय
नमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर ॥ ६ ॥ पञ्चप्रभु
पदमपदमभविभवरपदमलछनसुषदाशी ॥ धर
नभूपगुनकूपसकूपसुसीमांगाशी ॥ अंतमयेवेय
कवासडसें पंचासचापतनषरगासना ॥ वज्रसकतर
कततनहरषकरममना ॥ धिततीसलाषपूरवपुरीको
संवीसवसनसुषरा ॥ सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनं
दनवतापहर ॥ ७ ॥ सुषारसा ॥ देतसुपाससुपासचवग्रीव
कतैः प्राणं ॥ सुप्रतिष्ठापालपृथ्वीषेनांमनभाणं ॥ नगर
वनाशसधंसस्वांमघरगामनराजौ ॥ विक्रसाथियावी
सलाषपूरवधितिछाजैतनहरववरनदोसैधनुषसु
रदारेचोसववमरा ॥ सिरनायनमौजुतजोरकरभोजि ॥
नंदनवतापहर ॥ ८ ॥ चंद्रप्रभु ॥ चंद्रप्रभुधनचंद्रचंद्रपुरा ॥
चंद्रदेविक्रगना ॥ महासेतविष्णुतमांतलछमनासेततना

विजयंततैः श्रायकायषरगांसनधरीः श्रावपुच्छदसलाष
 नयेसवकौमुषकारीः मेदसैधनषतननविकजनहंसयाप
 तुममांससरासिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवताप
 हरः ॥ सुवधिनाथः सुविधिसुविधिकरतारसारशानतके
 र्यानीः महानूपसुग्रीवजीवजयरामांरानीः लज्जलवरन
 सरीरधीरषरगांसनधरोः का। कंदीपुरसाषलाषदोहर
 वमांतौ ॥ तनधनुषएकसौभौरहतसहतविहंजलचरम
 करः सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर
 १० ॥ सीतलनाथः सीतलसीतलवचननयपुरश्रारनस
 वरवरदिदरथतातविष्यातसुनंदामाताश्रवतरनवेध
 नुषसरीरधीरकंचनमैंगायौः श्रावपुच्छकलाषषरगा
 श्रासतसुषपायौः श्रीहृद्यिककेवलप्रगटनिन्ननिन्न
 नाष्योसुपरः सिरनाथनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवताप
 हरः ११ ॥ श्रेयांसनाथः नजश्रेयांसश्रेः शंसस्वर्गसौलनके
 वासीः विष्णुराजमहाराजमातनंदापरकासीः श्रसीवाप
 ततमाश्रयायगेनेकौलंछनाषरगांसनजगवांससिंधपु
 रकतकवरततनः शौरसीलाषवरसमुगतिऽषदावान
 लमेघकरः सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापह
 रः १२ ॥ वासपूज्यनाथः वासपूज्यसंवभूजनूपवसुविधि
 सोपूज्योः दसमलोकतैः श्रापकरतसुभकायतहजौः सतर
 चापसरीरधीरचंपापुरश्राणः लल्लतमहिषमतोगजोगय
 दसासनगायेः शितिलाषवहतखिवरसकीजयावतीमाता
 सुमराः सिरनायनमौजुतजोरकरभोजिनंदनवतापहर
 विमलनाथः विमलविमलश्रदलोकिलोकदादसवस
 स्वांमीः कपिलपुरश्रायकायकंचनजगनांमीः कृतवम्सा
 नृपालवालजपस्यासामाताः सूकरूधिरुंसोनिसानसावध
 मुवनश्रतिसाताः शितिसावलाषवरसतिसुषीषरगांस
 ततैजवरः सिरनायनमौजुगजोरकरभोजिनंदनवतापहर

थ्या॥ अतंतनांथ॥ सुगुन अतंत अतंत अतंत सुरसोलजि
 नेखरासिंधसेननपरायमायजपस्यामाकेधरा॥ कनकवरन
 परगासतासपंचासतापतना॥ आवलापहैंतीसईसकोसेही
 लछना॥ परगासनकोसलपुरजनमकुलतहां आवोपह
 रासिरनायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥ श
 घर्मनाथधर्मसुंधर्मप्रकासताससरवारथसिधनुघनां
 नराज्जसष्यातमातमुप्रनादेवीऊये॥ परगासनविंडा
 पापचापचालीसपंचसना॥ आवलीषदसवरससरस
 कंचनतनहैमनां॥ लषिषरगचिह्नसुमरतनपुरपारम
 पावैंसुरतिकर॥ सिरनायनमौं जुतजोरकरनोजिनंद
 नवतापहर॥ र्ही॥ सांतिनाथसांतिजगतसवसांतिमो
 गसरवारथसिधरिध॥ कांमदेवतनकनकतनवोद
 हैंतचोतिधिविखसेननपतातमांतअपरागतत्वलं
 छना॥ हथनांपुरमेंआपकायचालीसधनसनायिति॥
 लाषवरसआसनपदमनांमरटैअघजायटर॥ सिर
 नायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥ शकुं
 यनाथ॥ कुंपुकुंथुरषवारसारसर्वरिथवसा॥ हस्तिनां
 गपुरआयचामीकरहरसससरिसेंननपजेनत्रैत्तश्री
 कांतासुनमना॥ पचातवैंहजारवरसपेतीसधनुषतन
 षरगांसनलछनगांससुनतारेजनवैराग्यधरसिर
 नायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवतापहर॥ शपी॥ अर
 अरि करिहरिसिधजयंतविमांतजांतजन॥ नूपसुंदर
 सनसारमित्रसेनांमाताभनि॥ हस्तिनांगपुरआयचा
 पतनहीसविराजै॥ थितिवौरासीसहसवरसकंचनछ
 विछजै॥ परगासनलंछनमीनसुभवैनजलदसरस
 विकनरा॥ सिरनायनमौं जुतजोरकरनोजिनंदनवताप
 हर॥ शपी॥ महिनाथमहिकरमरिपुमहयानअपराजे
 तजांनौं॥ मिथलापुरअवतारसारघटचिह्नपिछांनौं॥ कुं

नराजमहाराजभरगत्रासनसरदहिये।धनुषपचीसस
 रीरसहसपधपनथितिलहिये।देवीप्रजावतीकनक
 तनत्रमलत्रचलत्रविकलत्रजरसिरनायनमो।
 जुगजोरकरभोजिनंदनवतापहर।२०।मुतिसुवतना
 थ।मुनिसुवतवृत्तवर्गस्वर्गप्रांतकेथांनी।नूपसुमे
 त्रपवित्रमित्रसुनसोमारांती।राजगहीमेंत्रायकाय
 कज्जलचविछजै।वरससहसथितितीसवीसतन
 चापविरजै।लंछनकछ्वात्रासनभरगदीनदया
 लदयानजरसिरनायनमो।जुगजोरकरभोजिनंद
 नवतापहर।२१।नमनाथ।नमितमिसुरतरराज
 जसरवारथसिघकर।विजयराजमाहाराजविष्ण
 तारांती।नुरधरा।त्राववरसदससहपुरीमिथुलासु
 षदासी।पद्मेधनुषसरीरभरगत्रासनलौलासी।तन
 कनकवरनलंछनकमलग्पांतजांतहरिभ्रमतिमर
 सिरनायनमो।जुगजोरिकरिभोजिनंदनवतापहर।
 २२।नेमिनाथ।नेमिघरमरथनेमजयंतविमानवास
 कियसमदविजैमहाराजसिवादेवीजांतोंजियनग
 रधारिकातांमस्यांमतनजनमनहारी।त्राववरसई
 कसहसचापदसरजमतहारी।भरगासनत्रासनमो
 षकौंसंघचिह्नहरिवंसतर।सिरनायनमो।जुगजोरि
 करभोजिनंदनवतापहर।२३।पारसनाथपासपाव
 त्रयतांसवासपानतकरिआएं।त्रस्वसेनत्रवद
 तमातब्रह्मीमननाएं।नगरवतारसथांतजांतफ
 नलछतनांमी।त्रावएकसौंवरसभरगत्रासनसे
 वगामी।तत्वहरितवरननकरधरनवज्रप्रगटसंक
 रसिषरासिरनायनमो।जुगजोरिकभोजिनंदनवता
 पहर।२४।वर्धमानवर्धमानजसवर्धमानत्रद्युतविमां

नगति नगरकुं रुधैरधरसारसिधारथरूपरां नीधियका
रनीवनीकंचनछविकाया॥आववहस्तरवरसजोगषरगा
सनध्याया॥तनसातहाथमृगनाथपतितुमतेंश्रवलोंध
रमजरसिरनायनमोजुगजरिकरजोजिनंदनवतापह
र२५॥रिषभश्रजितसंनवश्रजिनंदनसुमतिपदमसम
जिनसुपासप्रसुचंदसुंविधिसीतलश्रेयांसनम॥वास
पूज्यजीविमलश्रनंतधरमपदरमां॥सातकुंशुश्ररिम
ह्रसुमुनसोविरतवीसमां॥नमिनेमपासवीरेसपदश्र
ष्टसिधनोतिधघरा॥सिरनायनमोजुगजोरिकरजोजिनं
दनवतापहर२६॥पंचकुंमारनांमवांसपुंज्यसूरपूज्यम
ह्रविधमह्रजयंकर॥नेमिदेहजमनेमियासजोपांसछ
यंकर॥महावीरमहावीरधीरपरपीरनिवारन॥वडेपुस
षसंसारसारसंपतसुषकारन॥एपंचकुमरपदशीसुम
रकविनसीलवालकनुमर॥सिरनायनमोजुगजोरिक
रजोजिनंदनवभयहरन॥२७॥कलपबहकलपतैचि
ततैचिंतामनिमन॥पारसहं परसतैंकरतहितएकज
नमजन॥नगतश्रलकलयश्रचिंतश्रसरसनिहारी
नामी॥जोजोसवसुषदेहिंकोंतनुपमांदेखां॥मी॥होनि
पटसिथलताकेविषेचपलचितनिसदिनफिकरसि
रतांयनमोजुगजोरिकरजोजिनंदनवभयहरन॥२८॥मह
पुरांनप्रवांतजांतश्रावोविघ्नेवरनन॥वासववांतवषां
नजांतदोलछनश्रासन॥होपकोपसंदेहनेहकरितहो
निहारोसुहृदसोसुहृफेरिकोकवित्तसमारोहोश्रलप
बुद्धिबुद्धिनविषेएकवातलीनीपकरसिरनायनमोजुग
जोरिकरिजोजिनंदनवभयहरन॥२९॥जैजैमलब्रह्म
चरिजश्रदलवलसकलवनाया॥एकयेकजिनखांम
नामदसदसगुनगाणं॥सुनतसुनतचित्तचुनतधनत
षसंततश्रीनी॥ह्यांततरायनुपायगायजिनपापकहांवी

गदजनमजरामृतनहिंनगतनगति एकवदविगणसिरनाय
नमोजुगजरकरिनोजिनंदनोतापहरात्रणे इतिदसधांनद्यौदीदी
सपूर्णाः॥१॥ अथदसवोलपचीसीलिपत्त॥ छंदस्यै॥ एकसस
पत्रनेददोयविधिविधितियेदमै॥ रत्ननत्रैकरितीतधारविध
वादिक्तमै॥ पंचमगतिमुंचितोरुआपषट्कारकरजै॥ साक्षोने
करिभिनन्त्रावगुनसहितविरजै॥ नवनोकषायदसबंध
हरितासरूपहिरदेधरो॥ पूजोघ्यार्कगार्कसदाजिहतिह
विधनवजलत्तरो॥ १॥ अथयेकवोलकेचौवीसनेदानंदौ
धांनीएकएकघांनीअघनासक॥ येकदरवत्राकासए
ककेवलसवनासक॥ परमानूयेकचलैएककालानेय
रसै॥ एकसमैतिरअंसएकतीर्थकरदरसै॥ ईकगुरुनिर
गयंजहांअसमएकदयामारगनला॥ ईकसमैजीवस्त्रि
गतिकरैयेकआयअनुमौकला॥ २॥ पुनः॥ येकप्रानचोद
हेबंधईकतेरयजिनवरा॥ एकमेरमरजादयेकमिथ्याव
घातकरा॥ जघनदेहईकसमैराज्जोदैंअनुजावै॥ धर्मअथ
मीविमानएकवससिवपदयावै॥ सुतगपांनकरमविनईक
समैजीवततनोपरनमै॥ ईकनमप्रदेशवऊदेसकौवै
देतजिनवचनमै॥ ३॥ अथदोयवोलकेचौवीसनेदान
मोंडविधजिनरायजीवनिस्जीववषांनै॥ सिद्धत्रौरसं
सारनेदत्रसयावरजानै॥ कहीप्रत्येकनिगोदतिस्पईत
रसाधारन॥ सुखमधूलवषांनपंचइंदीमनविनमित
आगमअघातमकथनसुनसुपरनेदकौपरनएथे
रकल्पयागजिनकल्पधरकेवलज्ञानदरसनबंध
पुनः॥ वंदोवंदसरूपसाधआवकसुषदायकनितअ
नितप्रवांनगुनीगुनसवकेगपायक॥ पुंनपापपरकास
तासफलसुषडषभाषै॥ रूपअरूपनिहारदोयपरिग
हनहिंराषै॥ दोनेदृषांनवरनिकरैदरवभावसंपूजि
ये॥ निहवैमोहारसंभारमनदोयदयामैरुंजिये॥ ५॥ अथ

यतीनवोलकेचौवीसनेद॥तीनसाधआराधवचन
 मनकायलायकरि॥तीनपात्रसरधंसतीनविधआ
 तममनधर॥तीनलोककौंजांनकायतीनौअवधसे
 संषअसंषअनंतदरवगुनपरजविचारो॥संसेविमें
 हविअमरहितध्यानध्येयध्यातासुनौ॥करताकर्मकि
 रियासमकृपांतगेएग्यातासुनौ॥ही॥पुनः॥सामोयक
 तिऊंवारतीनसवसह्ननसाकं॥तीनोंदरसनमौहज
 नममृतजरामिटाऊं॥तजतीनोंअग्यांततीनसमकि
 तमतआंतौं॥तीनसमेंअनहारदेवगुरुधर्मप्रवां
 नौं॥लषभावपारगांमीत्रिविधतीनकरमसौंनेन
 हैं॥तजरादोषअरुमोहकौंतीनचेतनांचिनहै॥७॥
 अथआरवोलकेचौवीसनेद॥चतुराननभगवांन
 दांनविधचारवतावै॥आरआराधनआरअर्थने
 कौंपावै॥चारसंघआधसख्यारविधवेदवषांनेंन
 मेंचारविधदेवचारनिछेप्येजांतौं॥चऊंघातिकरम
 गिरचूरकरिजरसंग्याचारोमडी॥चवध्यांनवषांनवे
 धंसंसोचारभावनांमनभडी॥हीपुनः॥सहितअनंत
 चतुष्टयचारचौकविनांसीआरकषायजलायचार
 विकथानहिंजासी॥प्रोतचारप्रकारचारदरसन
 परकासक॥पुंदगलकेगुनचारनांस्विऊंसीलवि
 नांसक॥सहिवारजातवपसर्गकौंआरनेदमनव
 सकिया॥तितबंधवारपरकारहस्विवगतिकौंपा
 नीदिया॥८॥अथपंचवोलकेचौवीसनेद॥नमों
 पंचपदसारपंचइंडीवसकीजै॥पंचलवधकौंपाय
 पंचस्वाध्यायपटीजै॥चारतपंचविचारपंचपरमाद
 विसारौं॥अंतरायविधपंचपंचमिथ्याततिवारोपां
 चौसरीरसमतजौंनीदपंचनहिंकीजिये॥धरपंचम

हा दृष्टमावसौ पंचसमितिचित्तदीजिये ॥१०॥ पुनः ॥ सिद्धपंच
 हीनावपांचपेतालीजांनौ ॥ पंचाचारविचारपंचसिक्का
 रनमांनौ ॥ पंचजीतिकीदेवपंचगीलेसाधारनपदपं
 चासतकायमूलकेजावपंचगतनवपंचपराचरतन
 निकलपंचनरकडषसौंडरो ॥ षड्भेदपंचथावरसम
 कपंचकल्पानकपदधरो ॥१०॥ अथषट्बोलकेचौवी
 सनेद नमौ छमतमेंसारदर्वषट्नेदप्रकासकवाह
 जतषट्नेदनावतपषट्दयनांसाकाषट्प्रनाय
 तनतजौहांनिषट्दधश्चुरलघा ॥ पुदगलकेषट्ने
 दक्रियाषट्गेहमोहश्च ॥ षट्नरकजायतारीकुमते
 षट्विधसमकितवरनया ॥ पूजादिकर्मषट्पांषहर
 षट्आवसकसौंसुषनया ॥१२॥ पुनः ॥ षट्मंगलवै
 दामछहोंपरजायतिजांतौ ॥ षट्सेनांचकैससंघना
 नषट्परवांतौ ॥ संस्थांतषट्जांतछविधपरजेनै
 धरौ ॥ छहौकालपरनामकायषट्दयाविचारों
 जियमरनवेदषट्दिसिचलैषट्लेस्याजौधारिहैं ॥ ष
 ट्अविधपांतकेनेदषटविधनिहचैव्योहारहैं ॥ १२
 अथसातबोलकेचौवीसनेद ॥ सातनरकनयका
 रव्यसनसातौतजजाडी ॥ सातषेतधनपरचप्रकृत
 सातौंडषदाडी ॥ सक्तसातविधसैनरतनसवसात
 किप्रधरसातअचैतनरतन ॥ सातचेतनचकैस
 रलषसातधतमेंतन ॥ असुचिमौंनसातविधध
 रकैदात्तागुनसातौसातविधअंतगयकौंठारिके
 १४ ॥ पुनः ॥ सातनेंगसरधोनजांतन ॥ जोगसात
 हैं ॥ समुदघातहेसातसातसंजमविष्णुतहैं ॥ तीत्त
 जोगविधसातसाततनमेंलंघांने ॥ सातस्वरनके
 नेदसीलहतसातौजांतौ ॥ निजनामस्वांदसातौउद

धिईहांसातहीषेतहैं।प्रभुतांमईतसातोदलैंसाततत
 सिवहेतहैं।१५॥अथआवबोलकेवौवीसनेदआवमू
 लगुनपालआवमदतजोंसयातैं।सम्पकआवौअंग
 ग्यांनकेआववषांने।आववौरनतिगोदआवगुनस
 रगतरोजैं।आवजुगलमेंदेवआठविधअंतरछांजे
 पूजियेंआवविधदेवजितआवौअंगनिवाइये।दिऊरे
 आवमंगलदरवआवपहरलौलाइये।१६।पुनः।आ
 वौप्रवचनधारजोगकेआवअंगहैं।आवरिचदातार
 फरसकेआवअंगहैं।आवसमेंहंमदिआवनपमांतव
 षांतैं।आवनेदसतआदआवलौकांतकजांतैं।अंग।
 लनुतमभुवरोमवसआवप्रातहास्जभलेसवआव
 ग्यांतयावकविषेंकावकरमआवौजलैं।१७॥अथन
 वबोलकेवौवीसनेद।तवौपदारथधारदरसतांवर
 नीतौविध।तौनेनगमआदचक्रधारीकैतौनिधि।तौ
 नारायतजांतमांततौहैंवलनहर।प्रतिनारायणतवै
 तवौंतारदहरिहितकरातौनेगुनपरजेंदरवकीआव
 वंधतौवारिहैं।तौगुनथांनककेनेदतौसमकिततौ
 परकारहैं।१८।पुनः।आयकगुनतौतमौंसीलतौवारि
 संतारौं।आयचित्ततौनेदसांतरसतौमेंधरौं।तौगैवेय
 कनुरधारतौतगुतरस्त्रेबुध।जौतनेदतौजांतयांच।
 मंगलतौपदसुध।तौगुनथांनकतौकौरमुंतिनौ।
 गुरअछरअंकसवतौदांततनीविधजांतकैतौधम
 गतिवितांगरम।१९।अथदसबोलकेवौवीसनेदने
 पूजोंदसअवतारजनमदसगुनजितसाहव।धात
 घसतदससुगुनदसौसमकितभाषेसव।ईअआदद
 सनेदभवतवासीदसजांतैं।पुद्गलदसपरजायस
 दसनेदवषांतैं।दसदोषरहतिआलौचता।कोमकुं

म०
१०

विष्टादसतजोः सुवन्नादिजीवकेनेददसवर्ष्यादृत्तदसवे
 धसजोः ॥ २० ॥ पुन्य ॥ दसौदिसामतरोकप्रानदसजिन्नेत
 नां ॥ दावतनेंदसनेदसंगदससाधलेतनां ॥ दसविधहेंदि
 गपालनिरजरादसविधजीती ॥ दसौविशेषसुभाक्त्रे
 कदससवपदवांती ॥ दसविधकूर्दांनफलनरकऽषद
 ससामानिकगुनदरव ॥ सुतसमोसरतमेंदसधुजाधर
 मध्यांनदसविधसरवा ॥ २१ ॥ अथषट्नवजथा ॥ असत
 कथनउपचारजीवकोंजनमनजांतो ॥ असतविनांउ
 पचारकायआतमकोंमांतो ॥ सांचकथनउपचारहंस
 कोरागविचारो ॥ सांचविनांउपचारग्यांतचेतनकोंध
 रो ॥ निहचैअसुदतिरनेदनेरागसरूपीआतमो ॥ आदे
 यदतिहचैसमकरग्यांतरूपपरमांतमां ॥ २२ ॥ अथदर
 वकरमनावकरमसुदनावकोंकरतापुदगलजीव
 व्योहारनिहचै ॥ यथा ॥ दरवकरमकोंकरोंजीवव्योहा
 रवतावै ॥ दरवकरमपुदगलसरूपनिहचैतैगावैना
 वकर्मकरतारधारव्योहारसुपुदगलभावकरमआ
 तमारूपनिहचैतैकोवल ॥ दोनोअसुदजियमोहमें
 पुदगलबंधलगावना ॥ अननवोंसुरूपुदगलअनु
 जीवग्यांतमेंनावना ॥ २३ ॥ अथसिंहारूपसरधेनजथा
 नरनेविषयनिमोहिकरोपरचौहनमेंनरा ॥ परचौदरव
 सुषेतसदाअरचौश्रीजितवराधरचौवारंवारअतरेवै
 मनसुषदायक ॥ पुदगलधरमअधरमव्योमजमजडज
 ग्यायक ॥ सवअकृतअतादिकअजरअमरगुनपर
 जायदरवमरी ॥ अतिनासैकेवलआरसीमोहिमोहेस
 रधानरी ॥ २४ ॥ अथकविलघुताअरुममतात्याग
 अथदृषनसेनगुनसेनगोतममरोतमगतधरासक
 लपापसिरनायपुंनउपजायुधुधवराकहेकवितहित

कारसाखहेहीनअधिकअति॥छुमावरोंसुद्धकरोंदोष
मतिधरोंविपलमतियहसवदहंनवारिधलहरगतन
पारकौंपायहै॥द्यांततज्ञांतीआतममगतयहपुदगल
परजायहै॥२५॥ईतिदसबोलप्रचीसीसंपूर्ण॥२५॥श्री॥
अथजिनगुणमालालिखमीसंपूर्ण॥असोकपुहपमंजरी॥
छंदसवेया॥३॥समोसरतश्रुतिमांतयंनदेवश्रीसरोव
रीमलीविशेषषातकागंभीरपेषपुःपवारराजहीरूप
कोटनाटसातवागदोयनेंविशालवेदकाधुजासताल
सालआदिछाजही॥हेमकोटकल्पसुखवागसोहनेंज
तसुखरत्नपुंजधंसंमआवलीमनोग्पगाजही॥वज्रकोट
चारपोलदारस्नेवसोलनीतवीचवेदकात्रिपीठसंजु
जीविराजही॥१॥दसगुनजनमतनथा॥वलतोअत्र
लवीरश्रमकेनहोयनीरहितमितमीवीवांतीश्रीनी
कौंसुंहावती॥आदिसंसथानहेगंभीरसंघनतधीररूपकी
सोनाअनूपसवकोटियावती॥सहसआवलसुनसरी
रलोहहैषीरदेहकीसुगंधश्रीरगंधकौंलजावती॥मल
कौंतलेसलीयेनपजेंदसोजितेसमेरकरेंकौंसोसुरे
सनकनावती॥२॥घातकर्मतांससेतीदसगुनजथा
जोजनसोसोसुखिछव्योमचलेंअंतरिछचारोंमुखचारो
दिवसवविद्यापतिहैं॥जीवकौंतबंधहोयनुपसर्गनांहे
कोयकोलाहारलेतनांहिपांनसुधरतिहैंनिर्मलसरू
पमांहिसनकीनपेरेंछोहितयकेसबदेनांहिआषना
लगतेहैं॥घातियाकरमतांसदसोंगुनपरगासजिनकी
नगतिकियेपायनेंनगतहैं॥३॥चौदेंगुनदेवकृतजथा
अरधमांगधीनाषा॥श्वैरितफलफूलसिंहस्यालपीत
रीतआरसीआवतिहैं॥पोनउहारेमेंघजलकनसुगंध
फरेपापतलैकंजधरेआनंदसवतिहैं॥निर्मलगगनश्री

रदसोदिमानुज्जलहैफलेषेतसोनेभूमिधर्मचक्रमनि॥
 हैं॥आवोमंगलीकसारसुरकोऐजेकारचोदेंअतिसय॥
 तैरेदेवकृतघतिहैं॥६॥आवघातहारजजया॥फलसत
 मुषचरषतमांनोंचंदनिकोंदेवऊंडनीकेवाजेजाजेंया
 पजारजी॥सिंघासनतीनसेतीतीनलोकसांहिवहोंती
 नछत्रकहेरलत्रयदातारजी॥जांनोंअवरसुपेदचौस
 वचमरदरेऔरकहांसोकवृछहूंअसोकधरजी॥जा
 मंडलआरसीहैंवनीसुधधरसीहैनमोंआवघातहा
 रजकेसेरदाखी॥५॥अथअनेतचउष्टयजया॥लोक
 लोकद्वगुनपरजायतिहूंकालढोंकीज्योउकेराषे
 णांनमेंप्रकासहैं॥चंदनोतअसंघाततेंअनेतगुनीजो
 तसोऊनांहिलगेंऐसेंदर्शनकीरासिहैंतिरावाधसा
 स्वतोअनाकुलअनेतसुखअंसहंनलोकमांहिरी
 शीमुषजासहै॥सतइसेतीजोरवलकोंनहीहैंउरअ
 नेतचतुष्टैनाथवंदोंअघनांहैं॥६॥छियालीसगुनजय
 दसोंजनमतसारदसोंघातघातकारचोदेंसुरकृत्यपा
 तहारजआवोगहैं॥अनेतचउष्टैकहिवतकोंछया
 लीसहैं॥गुनहैंअनेततैरेंणांनीनमेंलहैं॥तारनकों
 मोनमेघधरकोंप्रवांनऔरसंभूरमनिलहरतातें
 अधिककहै॥कोननांतिनाषेजोहिथिरताऔंबुधि
 नांहिद्यांनतसेवकनैंत्यारेत्यारेसरदहैं७॥इतिश्रीजि
 नगुनमालसमीसमाप्ता॥अथपदलिषतेः॥रागवसेत
 मोहितारोहोदेवाधिदेवमेंमनवचतनकरिकरोंसेव॥मो
 हितारोहोदेवाधिदेव॥तुमदीनदयालअनाथनाथह
 मंहंकोराषोआपसाथा॥१॥मोहितारोहोदेवाधिदेवय
 हमारवारसंसारदेसा॥तुमचरनकलयतरुहरकलेस
 १॥मोहितारोहोदेवाधिदेव॥तुमनांमरसायनजीवपी

याद्यां नतिः प्रजगमरननवृत्तीयाधमौहतारो हो देवाथे
 देवा ईति ॥ ईति ॥ केदारो रेजिय क्रोध का हे कौरे ॥ दिषिके अ
 विवेक प्रोती ॥ क्यो विवेक न धरे ॥ शरिजिय क्रोध का हे कौरे ॥
 करे ॥ जिसे जैसी तु दे आवें ॥ सो क्रिया आचरे स हज ते अय
 नो विगारे ॥ जाय डरगत परे ॥ शरिजिय क्रोध का हे कौरे
 ॥ होई संगति गुन सवति कौं सवजग तु दरे ॥ तुम न लेक
 र न ले सव कौं ॥ चुरे लषम त जरे ॥ शरिजिय क्रोध का हे
 कौरे ॥ श्रौ वैद पर विष हर सकत नहिं आय जय को
 मरे ॥ वरु कषाय ति गो दवा सा छि मां द्यो नत नरे ॥ रेजि
 य क्रोध का हे कौं करे ॥ ईध ॥ ईति ॥ श्रै से मित्र सौं करि
 प्यारी ॥ विषें विलास समक नहिया कौं ॥ ग्यो न ध्यात अ
 धिकारी ॥ श्रै से मित्र सौं करि प्यारी ॥ श्रु उपल चला वै से
 क लपा वैं श्रां वरी त ग हि सारी ॥ दी न न ही अ नि मां ती न
 ही म ध्य द सा व य व हारी ॥ श्रै से मित्र सौं करि प्यारी ॥ श्रु
 जा दौ त करे न हिं चा है सु र ग त की र त मारी ॥ जी व त द
 सा म त क र तौ ती र ग दौ ष प र हारी ॥ श्रै से मित्र सौं क
 रि प्यारी ॥ श्रु ॥ चंदन भूम त दी त रु र वि स सि वार द से नु प
 गारी ॥ हे म र ज ति त ही पु रु ष नि क र व सुं धा ती र थ ध
 री ॥ श्रै से मित्र सौं करि प्यारी ॥ ईध ॥ ईति ॥ श्रौर कौं वि
 सार पारने मपेम सार ॥ रोग से भ कौं विजोग भोग हौं
 अपार ॥ यारने मपेम सार श्रौर कौं विसार ॥ इय जा
 य सु धु पा य ध्यां त को नि वार ॥ पारने मपेम सार श्रौर
 कौं विसार ॥ ॥ पर म डी त धर्म ती त स र्म री त कार ॥ पार
 ने मपेम सार श्रौर कौं विसार ॥ ॥ मो द नं स का म ड्य
 स क्रोध लो न हार ॥ पारने मपेम सार श्रौर कौं विसार
 ॥ पा य हां न श्रा य ग्पां न जा य कौं करार ॥ पारने मपेम
 सार श्रौर कौं विसार ॥ ही दी न ता न ही न ता त स्व ग मो ध

पद ०
६२

धारहेमराजजी॥ संचारधूमधामज्जार॥ धारतेमयेमसार॥
त्रोरकोविसार॥७॥ इति॥ ईदीचेततसवहीमेंघाटवाटन
हिंशोर॥ दीपमांडमंदिरपरगांसेंथोंततमेंसिरमोरचित
तसवहीमेंघाटवाटनहिंशोर॥ उतमनीचकरमसो
जगमेंनिन्नमुकतकीवीर॥ काहित्रराधोंकाहिविरा
धोयहमिष्याकीदीराचेततसवहीमेंघाटवाटनहिंशोर
रा॥ गजकुंथवावरावजांनोंमांनोंसोनाघोरकौनपु
रुवकीनिंदाकीजेकाकीकजिगोर॥ चेततसवहीमेंघ
टवाटनहिंशोर॥ केवलज्ञातमईसवरजेयहसर
धसिवत्रोरहेमराजआस्वादेजांनैत्रनुनोंत्रंमृतकै
रा॥ चेततसवहीमेंघाटवाटनहिंशोर॥ इति॥ ई॥ फू
लीवसंतफूलीवसंत॥ जहत्रादीस्वरसिवपुरमए॥ भर
तभूपवहतरजिनग्रहकवकमईसवतिरमए॥ फूली
वसंतफूलीवसंत॥ तीनचोवीसरतनमेंप्रतिमांत्रं
गरंगजेजेनए॥ सिद्धसमानतीससमसवकेत्रदनुत
सोनापरनए॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥ वालआदे
आहंवकौरमुतिसवनिमुकतमुषत्रनुनए॥ तीनत्र
टाडीफागनिषगमिलगावेंगीतनएनए॥ फूलीवसंत
फूलीवसंत॥ त्र॥ वसुजोंजनवसुंपैडीगंगा॥ फिरीवज
तसुरआलए॥ द्यांततसोकैलासनमोहोगुंनकांयेंजे
वरनए॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥ ५॥ इति॥ ईदीतुंमग्यं
नविनोंफूलीवसंत॥ पऊमनमधुकरमुषसौरमंता
तुंमग्यांनविषेनोंफूलीवसंत॥ ६॥ दिनवडेनएवैरागा
जावा॥ मिष्यामतिरजतीकोंघटावा॥ तुंमग्यांनविषेफू
लीवसंत॥ ७॥ वऊफूलीफेलीसुरुचिवेला॥ ग्याताज
नसमतासंगकेला॥ तुंमज्ञांतविनोंफूलीवसंत॥ ३
द्यांततवांनीपिंकमधररूपसुरनरपसुंआनंदप

नरूपसुंमज्ञानविज्ञो फुली वसंत धा ईति ॥ ६६ ॥ ग्पोनीजीवद
यानितपालें ॥ आरंभतें परघात होत है ॥ क्रोधघात निज टालें
हिंसा त्याग दया कहां वैजलें कषाय वदनमें ॥ बाहिर त्यागी ॥
अंतर दागी ॥ पञ्चैतरक सदनमें ॥ २ ॥ ग्पोनीजीवदयानित
पालें ॥ करे दया पर आलस जावी ताको कहिये पापी ॥ सांत
सुनाव प्रमाद न जाकें ॥ सो परमारथ आपी ॥ ग्पोनीजीवदया
नितपालें ॥ ३ ॥ सिधलाचार निरुद्धि मरहनां सहनां वज्र
उषजाता ॥ द्यो नत वोलति मोलति जीमनि करे जतन सो
ग्याता ॥ ग्पोनीजीवदयानितपालें ॥ ४ ॥ ईति ॥ ७० ॥ कारज एक
ब्रह्म ही सेती ॥ अंग संग न हिं व हिर भूत सब ॥ घन हार
साम ग्रीतिती ॥ कारज ब्रह्म एक ही सेती ॥ सो लह सुरग न
व ग्रे वेयक में उषी ॥ सुषते सात में तत कावेती ॥ जा सिव
कारन मुंतिगत धावें ॥ सो तेरे घट आत द सेती ॥ कारज
एक ब्रह्म ही सेती ॥ २ ॥ दांम सील जपत पढत पूजा अफ
ल ग्पोत वित किरिया केती ॥ पंच दरव तो तें तित्तपारे न
री रोग विधजेती ॥ कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥ ३ ॥ अवनो
सी जग परगो सी ॥ द्यो नत ना सी सुकलावेती ॥ तजो ला
लजत के विकल पं सब ॥ अनु नों मग न सु विद्या एनी
कारज एक ब्रह्म ही सेती ॥ ४ ॥ ईति ॥ ७१ ॥ होरी चेतन बो
ले होरी ॥ सताने मिळमा वसंत में ॥ समता प्रांत प्रिया सं
ग गोरी ॥ चेतन बेलें होरी मन को मट पे म को पांती ता
में करुना के सर घोरी ॥ ग्पोत ध्यो न पिचकारी भरि न
रि आ पस में छौरे होरा होरी ॥ चेतन बेलें है ही ॥ २ ॥ गुरु
के वचन मृदंग वजत है ॥ नैदौ नों उफ टाल टकोरी सं
जम अतर विमल हत चूका नाव गुलाल नैरे नर को
री चेतन बेलें होरी ॥ ३ ॥ धरम मिटा डी तप वज्र मे वास
मरस आनंद अमल कटोरी ॥ द्यो नत सुंमत कहें सधि
पन सो चिस्ती वों यह जुग जुग जोरी ॥ चेतन बेलें होरी ॥

इति ॥ १२ ॥ नौरनयोनं जज्ञी जितराजं सफलं होहि तेरे सब कें
 म ॥ धनसंपत्तिमनवंछितनोग ॥ सबविधश्रातवनें संजोग
 नौरनयोनं जज्ञी जितराज ॥ शकलपहृच्छताके घररहें ॥
 कामधेनुनितसेवावहें ॥ पारसचिंतामनिसमुदायहि
 तसों श्रायमिलें सुषदाय ॥ नौरनयोनं श्रीजितराज ॥ १३ ॥ इल
 नतें सुलनकें जाय ॥ रोगसौगडषहरपलाय ॥ सेवादेवा
 करें मनलाय ॥ विघनजुलटमंगलवहराय ॥ नौरनयोनं
 जज्ञी श्रीजितराज ॥ श्रायतमृतपिसाचतवले ॥ राज
 चोरकें जोरतचले ॥ जसश्रादरसों नागप्रकास ॥ ह्यो ॥
 नतिस्वरगमुकतपदवास ॥ नौरनयोनं जज्ञी श्रीजित
 राज ॥ १४ ॥ इति ॥ १३ ॥ जिनकें हिरदै नगवांन वसें तिन श्रां
 न कों ध्यांन किया न किया ॥ चक्री एकमिलापन एतें ॥
 औरतरनमिलियामिलया ॥ जिनकें हिरदै नगवांन
 वसें तिन श्रांन कों ध्यांन किया न किया ॥ इकचिंतमन
 वंछितदायक औरतगनगहिया ॥ पारस एक कनी कर
 आवें और धनतलहिफलहिया ॥ जिनकें हिरदै नगवां
 न वसें तिन श्रांन कों ध्यांन किया न किया ॥ १५ ॥ एकनां वद
 सदि सजियारा औरग्रहननुदियानुदिया ॥ एकका
 ल्यतरुसबसुषदाता ॥ औरतरुननुगियानुगिया जि
 नकें हिरदै नगवांन वसें तिन श्रांन कों ध्यांन किया न
 किया ॥ एकअनै महादानदेयकें ॥ औरसुंदानदिया
 नदिया ॥ ह्यो नतगपांन सुंधारसचाष्यो ॥ अंमृतशोरपे
 यानपिया ॥ जिनकें हिरदै नगवांन वसें तिन श्रांन कों
 ध्यांन किया न किया ॥ १६ ॥ इति ॥ १४ ॥ श्रायों सहजवसें
 तयेलोसबहोरीहोरीहो ॥ नुतबुधदयाछमां बरुवाही
 इतिजियरतनत्रैगुनजोरी ॥ होगपांन ध्यांनरुफताल
 वनतहें ॥ अनहितसबदहोतघनघौरा ॥ घरससुंरा
 गगुलाखजुडतहें समतारंगडऊंनैघौराहों ॥ १५ ॥ पारसन

सुतर नरे पिचकारी छौरत दौ नो करितोरा इत नैं कहै तार
तुम का की उन तैं कहैं कौन छौरा ३॥ आव का व अ नु नौ ॥
पाव क मैं जल बुज सां त न डी सुं च उ रें ॥ द्यां न त सि व अ
नंद चंद छु वि देषें स जन नै न च कोरा ॥ १५ ॥ अ ज त
तां थ सौ मन ला वौरे कर सों ताल व च न सुष ना ष्यो मै च
त ल गा वौरे ॥ अ ज त तां थ सों मन ला वौरे ॥ ग्यां न द र स
सुष व ल गु न धारी ॥ अ नंत च तु ष्य ध्या वौरे ॥ अ व गा ह
नां अ वा ध मूर त अ गु रु अ ल क व त ला वौरे ॥ अ ज
त तां थ सों मन ला वौरे ॥ कर नां सा ग र गु न र त नां ग र ०
जो ति नु जा ग र ना वौरे ॥ त्रि न व त ना य क न व न य धा य
क अ तं द द्वा य क गा वौरे ॥ अ ज त ता थ सों मन ला वौरे
३ ॥ य र म ति रं ज न या त क नं ज न न वि रं ज न व ह र वौरे
द्यां न त जें सा सा हि व से वौ तै सी प द वी पा वौरे ॥ अ ज त नं
थ सों मन ला वौरे ॥ १६ ॥ इ ति ॥ १६ ॥ रा ग आ सा व री ॥ अ व
ह म अ म र न एं न म रें गें ॥ त न का र न मि थ्या त की यो त ज
कौ करि दे ह ध रें गें ॥ अ व ह म अ म र न एं न म रें गें ॥ उ य
जे म रें काल तैं घां ती ॥ ता तैं काल ह रें गें ॥ रा ग दो ष ज रा
बंध करत हैं ॥ इ न कौं नां स करें गें ॥ अ व ह म अ म र न एं
न म रें गें ॥ दे ह वि नां सी मैं अ वि नां सी नै द ग्यां न करें गें
जा सी जा सी ह म थि र वा सी वौ षें हो नि ष रें गें ॥ अ व ह
म अ म र न एं न म रें गें ॥ म रें अ नंत वार वि न स म कै अ
व स व ष वि स रें गें ॥ द्यां न त ति प ह नि क ट अ ह र हौं
वि न सु म रें सु म रें गें ॥ अ व ह म अ म र न एं न म रें गें ॥ अ
व ह म अ म र न एं न म रें गें ॥ १७ ॥ इ ति ॥ आ सा उ री ॥ ना
डी ग्यां नी सो डी कहिये कर म उ दै सु ष ष नो ग तें रा गा
वि रो ध त ल हिये ॥ भा डी ग्यां नी सो डी कहिये ॥ कौं ऊं
ग्यां न क्रि पा तैं कौं ऊं सि व मा र ग व स ला वें ॥ नै ति ह वै वे
व हार सा धि कै दौ नों चि तरि का वै गा भा डी ग्यां नी सो क

हिये ॥ १ ॥ कोरी कहै जीव छिनने गुर कोरी नित्य वषां नैं परजय
 दरवतनय परमानें ॥ दो नें समता आनें ॥ नारी ग्यां नी सौ कहि
 ये ॥ २ ॥ कोरी कहें नु देहे सोरी कोरी ॥ नुहि मवो लैं द्यो न तस्य
 दसु तुला में दो नो वस्तें तो लैं ॥ नारी ग्यां नी सौ कहिये ध ॥ ३ ॥
 ति ॥ १ ॥ नारी कौ न धरम हम चालें ॥ एक कहै जिह कुल
 में आएं वा कुर कौ कुल पावें ॥ नारी कौ न धरम हम चालें ॥
 सिवमत बोध सुं वेद नें पाय कामी मांसक अरु जेता ॥ आ
 य सरा हें आगम गा है का की सर ध अत्रेता ॥ नारी कौ न
 धरम हम चालें ॥ २ ॥ परमे सरयें आया हौं ता की वात्त सुं
 न जैं ॥ मूवे वज्र तन वोलें क वज्र वकी फिकर क्या की ज्ये
 नारी कौ न धरम हम चालें ॥ ३ ॥ जिन सवमत के न्याय सं
 च करि मारग एक वताया ॥ द्यां न तसौं गुर पूरा पाया नाम
 हमार आया ॥ नारी कौ न धरम हम चालें ॥ ४ ॥ इंदी रा
 ग गौरी ॥ हमारो कारज कै सैं होया ॥ कारण पंच सु कत म
 रग के तिनमें कै हें दोया ॥ हमारो कारज कै सैं होया ॥ हीन
 संघन न लघ आर्गघा अलप मनीषा जोरी कचे भाव
 न सचे साथी सव जग देखो दोरी ॥ हमारो कारज कै सैं
 होया ॥ २ ॥ इंदी पंच सुं विषय न दौरे मांते क ह्यान कोरी सा
 धरन चिरकाल वस्यो में धरम विनो फिर सोया ॥ हमा
 रों कारज कै सैं होया ॥ ३ ॥ चिंता वडी न क छुवन आ वै अ
 व स व चिंता षोरी ॥ द्यां न त एक शुद्ध निज पद ल वि आ
 प में आपस मोरी ॥ हमारों कारज कै सैं होया ॥ ४ ॥ इंदी
 रा गौरी ॥ हमारों कारज कै सैं होरी ॥ आत्म आतम परप
 र्जांते ॥ ती नो सैं से घोया ॥ हमारों कारज कै सैं होरी अ
 तस माधि मरन करित न तजि हौं हि स क्र सु र लोरी ॥ वि
 वधि नोग न प नोग नोग वै धरमत नो फल सोरी हमा ॥
 रों कारज कै सैं होया ॥ २ ॥ श्री आ व वि दे ह नू प कै राज सं
 पदा नोरी ॥ कारण पंच ल हें ग है उ धर पंच महा वृत्त जोरी

॥ अथ स ह्यप्रनामजिनसेन कृतलिख्यते ॥ स्वयंभुवेन मस्तु म
 मुत्याद्यात्मानमात्मनि स्वात्मनैव तयोऽहृतवृत्तये चित्तस्पष्टतये ॥ १ ॥
 नमस्ते जगतां एते लक्ष्मीर्नर्न नमोस्तुते ॥ विदांवर नमस्तुभ्यं
 नमस्ते वदतांवर ॥ २ ॥ कामशत्रुहणं देवमामनंति मनीषिणः त्वा
 मानमस्तुरेण मौलिनामालाभ्यर्चितक्रमं ॥ ३ ॥ ध्यानदुष्णनिर्निन्न
 घनघातिमहातरुः ॥ अनंतनवसंतानजयादासीरं नंतजित् ॥ ४ ॥
 त्रैलोक्यनिर्जयाचासुर्हृस्पमतिडर्जयः ॥ मृत्फराजं विजित्पार्सी
 जिंनमृत्फंजयोन्नवान् ॥ ५ ॥ विधुताशेषसंसारबंधनोन्नमवां ॥
 धवः त्रिपुरारिस्वमीश्रीसिः ॥ जन्ममृत्युजरांतकृत ॥ ६ ॥ त्रिका
 लविषयाशेषतत्त्वज्ञेदात्रिधोत्थितं ॥ केवलारम्भदध्वदुखि
 नेत्रोसित्वमीशितः ॥ ७ ॥ स्वामंधकंतकंपाङ्गमोहांधासुर्मर्द
 नात् ॥ अर्धतेनारयोयस्मादर्धनारीश्वरोस्यतः ॥ ८ ॥ शिवः शिव
 पदाध्यासादुरितारिहरोहरः ॥ शक्रः ॥ कृतशंलोकेशंभव ॥
 स्वंनवन्मुखे ॥ ९ ॥ हृषिकेशिजागज्ज्येष्ठः पुरुः पुरुगुणोदयैः
 नानेयोनात्तिसंज्ञतेरिह्वाकुकुलनंदनः ॥ १० ॥ त्वमेकः पुरु
 षस्कंधस्वंधेलोकस्पलोचने त्वेत्रिधाबुद्धसत्मागीस्त्रिज्ञः
 स्त्रिज्ञानधारकः ॥ ११ ॥ चतुःशरणमांगल्पमूर्तिस्वंचतुरस्रध
 यंचतुस्तमयोदेवः पावनस्वंपुनीहिमां ॥ १२ ॥ स्वर्गावतरणेतु
 ष्यसद्योजात्मानेनमः जन्मानिषेकचामायं वामदेवनमो
 स्तुते ॥ १३ ॥ सुनिःक्रांतावधोराय ॥ परंप्रशममीयुषे केवल
 ज्ञानसंनिधौ ॥ श्रीज्ञानाय नमोस्तुते ॥ १४ ॥ पुरुस्तत्पुरुषे
 न ॥ विमुक्तिपदज्ञगिने ॥ नमस्तत्पुरुषावस्थानाविनीते
 यविज्रते ॥ १५ ॥ ज्ञानावरणनिर्हासान्तमस्तेनंतचक्षुषेर्दर्श
 नांवरणोच्छेदन्नमस्ते विश्वदृश्यने ॥ १६ ॥ नमोदर्शितमोहघ्ने
 द्वायिकामलदृष्टये नमश्चारिन्नमोहघ्ने ॥ विरागाय मेहो ज
 षे ॥ १७ ॥ नमस्तेनंतवीर्याय नमो नंतसुरवात्मने ॥ नमस्तेनंत
 लोकाय ॥ लोका लोकविलोकिने ॥ १८ ॥ नमस्तेनंतदानाय
 नमस्तेनंतलब्धये नमस्तेनंतजोगाय ॥ नमो नंतोपज्ञो गिने
 १९ ॥ नमः परमयोगाय नमस्तुभ्यमयो नये ॥ नमः परमपूताय न

मस्तेपरमर्षये॥२०॥ नमःपरमविद्यायानमःपरमतच्छिदे नमः
 परमतत्वाय॥ नमस्तेपरमात्मनि॥२१॥ नमःपरमरूपाय नमःपर
 मतेजसे॥ नमःपरममागार्गीय॥ नमस्तेपरमेष्ठिते॥२२॥ परमं
 जेजुषेधामपरमज्योतिषे नमः॥ नमःपरितमःशान्तधाम्नेप
 रतमात्मने॥२३॥ नमःक्षीणकलंकय॥ क्षीणबंधनमोस्तुते
 नमस्तेक्षीणमोहाय॥ क्षीणदोषायते नमः॥२४॥ नमःसुगत
 ये तुभंशो नतां गतिमीयुये॥ नमस्तेतींद्रियज्ञानसुखायाने
 द्रियात्मने॥२५॥ कायबंधननिर्मेक्षादकाययनमोस्तुतेन
 मस्तुभ्यमयोगाययोगिनामधियोगिने॥२६॥ अवेदायन
 मस्तुभ्यमकषायायते नमःपरमविज्ञानतमःपरमसंयम
 नमःपरमहृष्टपरमार्थायतयिते॥२७॥ नमस्तुभ्यमलेत्रपाय
 शुचलेत्रपांशकसृष्टे॥ नमो नव्येतरावस्थां अतीतापवि
 मोक्षिणे॥२८॥ संज्ञसंज्ञिष्यावस्थात्मतिरिक्तामत्माने
 नमस्तेवीतसंज्ञायतमःक्षायिकहृष्टये॥२९॥ अनाहाराय
 सृष्टायतमःपरमनाजुषे॥ अतीतात्रोषदोषायत्रवाक्त्रोःपा
 रमीयुषे॥३०॥ अजरायनमस्तुभ्यंनमस्तेस्तादजन्मने॥ अमृत
 विनमस्तुभ्यामचलायाक्षरात्मने॥३१॥ अलमास्तांगुणसो
 त्रमनेतास्तावकागुणाः॥ त्वांतामस्मृतिमात्रेणपर्युयासि॥
 त्रिषामहे॥३२॥ प्रसिद्धाष्टमहश्रेष्ठलक्षणं त्वांगिरांपतिना
 म्नामष्टमहश्रेणातोष्टुमोनीष्टसिद्धये॥३३॥ इतिस्तुतिः॥
 श्रीमान्स्वयंभूर्वैषमःशंनवःशंनुरात्मन्ः स्वयंभुजःप्रभुर्गो
 काविश्वमूरपुनर्नवः॥३४॥ विश्वात्माविश्वलोकेशोविश्वत
 श्चक्षुरक्षरः॥ विश्वविद्धिंश्चविद्येशो॥ विश्वयोनिरतश्चरः॥
 ३५॥ विश्वहृश्चाविभुर्धाताविश्वेशोविश्वलोचनःविश्वभाष
 विधुर्वेधाःशाश्वतोविश्वतोमुखः॥३६॥ विश्वकमीजगन्ने
 ष्टोविश्वमूर्त्तिर्जिनेश्वरःविश्वहृविश्वभूतेशोविश्वज्योति
 र्गतीश्वरः॥३७॥ जिनोजिह्वुरमेयात्माविश्वरीशो जगत्पति
 अतंतजिदचित्तात्मानमबंधुरबंधनः॥३८॥ युगादिपुठयो

ब्रह्मा पंचब्रह्ममयः शिवः परः परतरः सूक्ष्मः परमेष्ठीसनातनः ४
 स्वयं ज्योतिरजो जन्मा ब्रह्म यो निरयो तिजः मोह हरिर्विजय जित
 धर्मचक्री दयाध्वजः ॥ ४१ ॥ प्रशांतारिरनेतात्मा योगी योगीशू
 रार्चितः ब्रह्मविद्ब्रह्मतत्त्वज्ञो ब्रह्मोद्याविद्यतीश्वरः ॥ ४२ ॥ सिद्धो
 बुधः प्रबुधात्मा सिद्धार्थः सिद्धशासनः सिद्धसिद्धातविद्येयः
 सिद्धसाधो जगद्धितः ॥ ४३ ॥ सहिष्णुरमुतो नंतः प्रनविष्णु
 र्नेवोद्भवः प्रनृक्षुरजरो यज्योन्नाजिष्णुधीश्वरो मयः ॥ ४४ ॥ वि
 नावसुरसंनृक्षुः स्वयं नृक्षुः पुरातनः परमात्मा परं ज्योतिः।
 सिजगातपरमेश्वरः ॥ ४५ ॥ इति श्रीमच्छ्रुतं ॥ १ ॥ दिव्यनाथापति
 दिव्यः पूतवीकपूतशासनः पूतात्मा परमज्योतिर्धर्माध्वे
 दमीश्वरः ॥ ४६ ॥ श्रीपतिर्नेगवान्तर्हन्तरजाविरजाः शुचिः १
 र्यकृत्केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोमलः ॥ ४७ ॥ अनंतदि
 सिर्ज्ञानात्मा स्वयं बुद्धं प्रजापतिः मुक्तः शक्तो निराबाधो नि
 कलो मुचनेश्वरः ॥ ४८ ॥ तिंज नोजग ज्योतिर्निरुक्तोक्तिर्निराम
 यः अचलस्थिति रक्षो ज्यैः कूटस्थः स्याणुरक्षयः ॥ ४९ ॥ अग्रणी
 र्यामणीर्नेता प्रणेता न्यायशास्त्रकृतः शास्ता धर्मपतिर्धर्मो
 धर्माधर्मतीर्यकृतः ॥ ५० ॥ दृषध्वजो दृषाधीशी दृषकेतुर्दृषायुधः
 दृषो दृषपतिर्नेता दृषनांको दृषोद्भवः ॥ ५१ ॥ हिण्यना निर्नृतत्मानृतनृ
 तनावनः प्रनवो विनवो नास्वानृनवो नावो नवांतकः ॥ ५२ ॥ हिरण्य
 गर्भः श्रीगर्भः प्रनृतविनवो नवः स्वयंप्रभुः प्रनृतात्मा नृतनाथो
 जगात्प्रभुः प्रसर्वादिः सर्वदृक्कार्षः सर्वज्ञः सर्वदर्शनः सर्वोत्तम
 सर्वलोकेन्द्रः सर्ववित्सर्वलोकजितः ॥ ५३ ॥ सुगतिः सुश्रुतः सुश्रु
 तमुवाकनूरिर्बहुश्रुतः विश्रुतो विश्रुतः पादो विश्वशीर्षः शुचिश्र
 वाः ॥ ५४ ॥ सहश्रुशीर्षः क्षेत्रज्ञः सहश्राद्धः सहश्रपातः ॥ नृतभज
 नवज्ञगी ॥ विश्वविद्यामहेश्वरः ॥ ५५ ॥ इति दिव्यश्रुतं ॥ २ ॥ स्यवि
 ष्टः स्यविरो ज्येष्ठदृष्टः प्रेष्टो वरिष्ठधीः स्येष्टो गरिष्टो वर्हिष्टः प्रेष्टो
 णिष्टो गरिष्टगी ॥ ५६ ॥ विश्वमुद्दिश्वसुडु विश्वेडु विश्वेनु विश्वना
 यकः विश्वासी विश्वरूपात्म विश्वजिद्धिजितांतकः ॥ ५७ ॥ विनयो
 विनवो वीरो विशोको विजरो जरनृ चिरागो वितो संजो वि

महप्रनाम
६

वीतमत्सरः॥५॥ वितेयजनताबंधुर्विलीताशेषकल्मषः वियो
गोयोगविद्विदानविधातासुविधिःसुधीः॥६॥ शांतिनाकृष्ट्ये
वीमूर्तिःशांतिनाकलिलात्मकः वायुमूर्तिरसंगात्मावा
क्लिमूर्तिरधर्मधरु॥६॥ सुयज्वायजमानात्मासुन्वासत्रामपूजे
तःऋत्विगपज्ञपपतिर्यज्मोयज्ञांगममृतं हविः॥६२॥ सोममूर्ति
रमूर्तीत्मा॥ निर्लेपोनिर्मलोत्तलः॥ सोममूर्तिः
मूर्तिर्महाप्रजः॥६३॥ मंत्रविमंत्रकृन्मंत्रामंत्रमूर्तिरनेतंगः स्व
तंत्रस्तंनकृत्स्वतः कृतांतंतः कृतांतकृत्॥६४॥ कृतीकृतार्थः स
कृत्यः कृतकृत्यः कृतकृतु
ऋचः॥६५॥ ब्रह्मनिष्ठः परंब्रह्मब्रह्मात्माब्रह्मसंनवः महाब्रह्म
पतिर्वहेडमहाब्रह्मपदेश्वरः॥६
धर्मदमप्रभुः प्रशमात्माप्रशांतात्मापुराणपुरुषोत्तमः॥६७॥
॥ इति स्थविष्ठशतं ॥ शमहाशोकध्वजोशोकः कंस्रष्टाप्र
ष्टरः पद्मेराः यज्ञसंभूतिः पद्मनन्निरनुत्तरः॥६८॥ पद्मयोन्निजे
गद्येनिरिसः सुः सुतीश्वरः स्तवनाहोऋषीकेशोजितजेयः कृ
तक्रियः॥६९॥ गणाधियोगएज्यष्टेगुणः पुण्योगाणायणीः गु
णकरोगुणान्नेधिर्गुणज्ञेगुणनायकः॥७०॥ गुणादरीगुणो
च्छेदीनिर्युगः पुण्यगीर्गुणः शरणः पुण्यवाकृष्टोवरोणः पु
ण्यः युक्तः॥७१॥ अगणः पुण्यधीर्गणः
धर्मारामोगुणशामः पुण्यपुण्यनिरोधकः॥७२॥
पात्माविपाप्यावीतकल्मषः निर्द्वोनिर्मदः शांतोनिर्मोहो
निरुपश्रवः॥७३॥ निर्निमेषोतिराहारोनिःक्रियोनिरुपश्रव
निःकलंकोतिरस्तेनानिर्हृतागोनिराश्रवः॥७४॥ विशालेवि
पुलज्योतिरतुलोचित्पवैभवः सुसंघतः सुगुणात्मसुभ्रत्सुन
यतत्वजित्॥७५॥ एकविद्योमहाविद्योमुनिः परिष्टपतिः श्री
शोविद्यनिधिः साक्षी विनेताविहतांतकः॥७६॥ पिता
हः पाताः पवित्रः पावनोगतिः प्रातानिषावरोवर्योवरदः परम
पुमान्॥७७॥ कविंपुराणपुरुषोविधीयानृपजः
बोहेतुर्भुवनैकधितोमहः॥७८॥ इति महाशतं॥॥ श्री वृक्षल

क्षणःश्नक्षणेनक्षणःश्चक्षुर्लक्षणःनिरक्षःपुंक्षरीकाक्षःपुं
 क्षरेक्षणः॥७९॥सिद्धिःसिद्धसंकल्पःसिद्धात्मासिद्धसाधनं
 बुद्धोद्भोमहांबोधिवर्द्धमानोमहर्द्धिकः॥८०॥विदांगोवेदवि
 वेद्योजातरूपोविदांवरःवेदवेद्यःस्वसंवेद्यो॥विवेदोवदत्तं
 वः॥८१॥अनादिनिधनोमक्तोमक्तचाग्यक्तशासनःयु
 गदिक्कद्युगाधारोयुगादिर्जगदादिजः॥८२॥अतीशोतीशि
 योधीशोमहेशोतीशियार्थहृक्अनिश्रियोहमिशोमहेइम
 हितोमहान्॥८३॥उक्तवःकारणंकर्त्तापारगोभवतारकश्च
 मह्योगहनंगुह्यंपरमेश्वरः॥८४॥अनंतर्द्धिरमेयर्द्धि
 समयधीःशायःशायहरोन्मयः॥प्रत्ययोगोग्निमोयजः॥८५॥
 महातपामहातेजामहोदक्कोमहोदयः॥महायशामहाधामा
 महासत्वोमहाधृतिः॥८६॥महाधैर्योमहावीर्यो॥महासंपन्न
 हावलः॥महाशक्तिर्महाज्योतिः॥महाश्रुतिर्महाद्युतिः॥८७॥
 ७॥महाप्रतिर्महानीतिर्महाक्षांतिर्महादयः॥महाप्रज्ञोम
 हानंदो॥महाज्ञागोमहाकविः॥८८॥महामहामहाकीर्त्ति
 र्महाकांतिर्महावपुः॥महादानोमहाज्ञानोमहायोगोम
 हागुणः॥८९॥महामह्यतिःशक्तमहाकल्याणपंचकःम
 हाप्रभुर्महाशक्तिहाय्योधीशोमहेश्वरः॥९०॥इतिश्रीब्रह्म
 शतं॥महामुक्तिर्महाध्यानोमहामौनीमहादमःमहाहमे
 महाश्रीलोमहायज्ञोमहामखः॥९१॥महाव्रतपतिर्महोमहा
 कांतिधरोधिपः॥महामैत्रीमयोमेयोमहोपायोमहोमयः॥९२॥
 महाकारुणिकोमंतामहामैत्रोमहायतिः॥महानादोमहाशो
 योमहेज्योमहासायतिः॥९३॥महाधुरंधरोधुर्यो॥महोदार्यो
 महिष्ठवाक्॥महात्तामहासाधामा॥महर्षिर्महितोदयः॥९४॥
 महाक्लेशाकुशसरो॥महाश्रुतपतिर्गुरुःमहापराक्र
 मोतंतो॥महाक्रोधरिपुर्वेत्री॥९५॥महान्वाधिसंतारी
 महामोहाद्विह्वदनः॥महागुणाकरैह्यातोमहायोमीश
 वःशमी॥९६॥महाध्यानप्रतिष्ठातमहाधर्मीमहाव्रतम

हाकर्मरिहात्मज्ञो महादेवोमहेशिता ॥ १७७ ॥ सर्वकेशापहः
 साधुः सर्वदोषदरोहरः असंख्येयो प्रमेयात्मा ॥ त्रामात्मा प्र
 माकरः ॥ १७८ ॥ सर्वयोगीश्वरो चित्तः श्रुतात्मा विष्टरश्रवाः श
 तात्मा दमतीर्थेशो ॥ योगात्मा ज्ञानसर्वगः ॥ १७९ ॥ प्रधानमा
 त्मा प्रकृतिः परमः परमोदयः प्रक्षीणबंधः कामारिः क्षेमक
 क्षेमशासनः ॥ १८० ॥ प्राणवः प्राणयः प्राणः प्राणदः प्राणतेशु
 रः प्रमाणं प्राणिधिर्देहो दक्षिणो ध्वस्मुरध्वरः ॥ १८१ ॥ आनं
 दो नन्दनो नंदो वंद्यो नित्यो नितेन्दकः कामहा कामदः काम
 कामधेनुररिंजयः ॥ १८२ ॥ इति महा मुनिशतं ॥ असंस्कृतसु
 संस्कारो प्राकृतो वैकृतांतकृत्तन्तकृत्कांतयुः कोति
 श्रितामणिरजीष्ठदात्र ॥ अजितोजित कामारि रमितो
 मितसासनः जितक्रोधो जितामित्रो जितकेशो जितान्त
 कः ॥ १८३ ॥ जितेन्द्रः परमानंदो मुनीन्द्रोऽन्दिस्वनः महीन्द्रवधे
 योगीन्द्रो यतीन्द्रो नां नितेन्दनः ॥ १८४ ॥ नानेयो नानिजो जा
 मसुवतो मनु रूत्तमः ॥ अनेधे नित्ययो नाश्वानधिकोधिगुरुः
 सुःगीः ॥ १८५ ॥ सुमेधा विक्रमी स्वामी उराधर्षो निरुत्सुकः वि
 शिष्टः शिष्टनुक्त्रिष्टः प्रत्ययः कामनेनद्वः ॥ १८६ ॥ क्षेमीक्षे
 मं करोक्ष्मः ॥ क्षेमधर्मपतिः क्षमी ॥ अथाहो ज्ञाननिर्ण
 हो ध्यानगम्पो निरुत्तरः ॥ १८७ ॥ सुकृती धातुरिज्यार्हः सु
 नयश्चतुरातनः ॥ श्रीनिवासश्चतुर्वक्रश्चतुरास्यश्चतु
 मुखः ॥ १८८ ॥ सत्यात्मा सत्यविज्ञानः सत्यवाक् सत्यशा
 सनः ॥ सत्यात्रीः सत्यसंधानः सत्यः ॥ सत्यरायणः ११
 स्थेयान्स्थवीयान्नेदीयान्द्वीयान्द्वरद्वीतः अणु
 रणीयाननणुं गुराद्योगरीयसां ॥ १८९ ॥ सदायोगः स
 दानोगः सदात्मः सदाशिवः सदागतिः सदासौख्यः
 सदाविद्यः सदादयः ॥ १९० ॥ सुघोषः सुमुखः सौम्यः सु
 खदः सुहितसुकृतः सुसुप्तो युस्मिन्नृकोसा ॥ लोकाद्युपे
 दमेश्वरः ॥ १९१ ॥ इति असंस्कृतशतसमूहहृदस्यतिर्द्वीमी

वाचस्पतिरुदारधीः मनीषी धिषणोधीमान् त्रिमुषीशोगिरापतिः
 ११४ ॥ नैकरूपो न योत्तुंगो नैकात्मानैकधर्मकृत ॥ अत्र विज्ञेयो प्रत
 कर्मात्मा कृतज्ञः कृतलक्षणः ॥ ११५ ॥ ज्ञानगर्भो द्यागर्भो रत्नागर्भ
 प्रज्ञास्वरः ॥ पद्मगर्भो जिगर्भो हिमगर्भः सुदर्शनः ॥ ११६ ॥ हनन्मीरि
 स्त्रिदशाभ्यक्षो ॥ हृदीयानि नर्शिता ॥ मनो हरो मनो ज्ञागो धशि
 गंजीशासनः ॥ ११७ ॥ धर्मयूपो द्यायागो ॥ धर्मनेमिर्मुनीश्वरं
 धर्मचक्रायुधो देवः कर्महा धर्मधोषणाः ॥ ११८ ॥ अमोघवाग
 मोघाज्ञो निर्ममो मोघशासनः ॥ सुरूपः सुजगत्पागी समयज्ञं स
 माहितः ॥ ११९ ॥ सुस्थितः स्वास्थ्यनाकृस्वस्थो नीरजस्को निरुद्ध
 अलेयो निःकलंकात्मा वीतरागो गतस्यहः ॥ १२० ॥ वरेपेन्द्रियो वि
 मुक्तात्मानिः सपत्नोजितेन्द्रियः प्रज्ञातो न तथामर्षिर्मंगलं म
 लहानयः ॥ १२१ ॥ अनीहृद्युपमानूतो ॥ हृषिर्हैवमगोचरः अमृ
 तीमूर्तिमानेको नैको नानैकतत्त्वहृक् ॥ १२२ ॥ अथ्यात्मगमे
 गम्पात्मा योगविद्योगिचंद्रितः ॥ सर्वत्रगः सदा जगती त्रिका
 लविषयार्थहृक् ॥ १२३ ॥ मूंकरः ॥ त्रं वदेदं तो दमीक्षांति परं यण
 अधिपः परमानंदो परात्मज्ञः परात्मज्ञः परापरः ॥ १२४ ॥ त्रिजगद्
 ह्यनोऽप्यर्षिस्त्रिजगन्मंगलोदयः त्रिजगत्यतिपूज्या किस्त्रिलो
 काग्रशिखामणिः ॥ १२५ ॥ इति वृहच्छंता ८०० ॥ त्रिकालदर्शी लो
 के त्रोलोकधाता हृद्वृतः सर्वलोकातिगः पूज्यः सर्वलोकैक
 सारधिः ॥ १२६ ॥ पुराणः पुरुषः पूर्वेः कृतपूर्वंगविस्तरः आदिदे
 वः पुराणाद्यः पुरुदेवो धिदेवता ॥ १२७ ॥ युगमुखो युगज्येष्ठो यु
 गदिस्थितिदेवः कल्याणवर्णः कल्याणः कल्पः कल्याण
 लक्षणः ॥ १२८ ॥ कल्याणप्रकृतिर्दीप्तः कल्याणात्मा विकल्पः
 विकलंकः कलातीतः कलिलम्बः कलाधरः ॥ १२९ ॥ देवदेवो
 जगन्नाथो ॥ जगद्धुर्जगद्धिः जगद्विषी लोकाज्ञः सर्वगो ज
 गदग्रजः ॥ १३० ॥ चराचरगुरुर्गोप्यो ॥ गूढात्मा गूढगोचरः सद्योजा
 तः प्रकाशात्मा ज्वलन्ज्वलनसत्प्रजः ॥ १३१ ॥ आदित्यवर्णो नि
 र्मानिः सुप्रजः कनकप्रजः सुवर्णवर्णो रुक्मानः सूर्यकोटिसम

सहस्रनाव
एवं

प्रजः॥१२२॥ तपनीयनिजसुंगोवालाङ्गो नोतलप्रजः संभ्राजुव
बुर्हेमानस्तं सचामीकरत्विः॥१२३॥ तिष्ठसकनकचायः कनकां
चनसन्निभः हिरण्यवर्णः स्वर्णभः॥ श्रातकुंजनिनप्रजः॥१२४॥ सु
म्ना नो जातसूपा नो दीपजां वृन्दद्युतिः सुधौतकलधौतश्रीप्रदीप्तो
हाटकद्युतिः॥१२५॥ त्रिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः स्पष्टः स्पष्टाक्षरंदमः शत्रु
घ्नो प्रतिघो मोघः प्रशास्ताशासितास्वभूः॥१२६॥ शान्तिनिघो मुनि
ज्येष्ठः शिवतातिः शिवप्रदः शान्तिदः शान्तिकच्छान्तिः कान्तिवा
नूकामितप्रदः॥१२७॥ प्रियानिधि रधिष्ठानमप्रतिष्ठः प्रतिष्ठितः
सुस्थिरः स्यावरस्याणुः प्रदीयानुप्रथितः प्रथुः॥१२८॥ इति त्रिका
लशतम्॥ एदिवासावांतरसनो॥ निर्यये शोदिगंवरः निः किं
चनो निराशं सो ज्ञानचक्षुरमो मुहः॥१२९॥ एतेजोशशिरनंतौ जा
ज्ञानाब्धिः शीलसागरः॥ तेजोमयो मितज्योतिर्ज्योतिर्मूर्तिस्त
मोपहः॥१३०॥ जगच्चूडामणिर्हीनः शंवान्विघ्नविनाशकः क
लिघ्नः कर्मत्रात्रुघ्नो लोकालोकप्रकाशकः॥१३१॥ अनिशु
रतंचालुर्जागरूकः प्रमामयः लक्ष्मीपतिर्जगज्योतिर्धर्मरा
जः प्रः जंहितः॥१३२॥ मुमुक्षुर्बंधमोक्षज्ञो जितो जितमन्मथः
प्रशांतरसत्रौ लघो॥ जमपेटकनायकः॥१३३॥ मूलकर्ती खिल
ज्योतिर्मलघो मूलकारणं श्रातोवागीश्वरः श्रेयानुश्रायसोक्तिर्ने
रुक्तिवाक्॥१३४॥ प्रवक्ता वचसामीशो मारजिदिश्वजाववितसुत
वुस्तनुनिर्मुक्तः सुगतो हतडुर्नयः॥१३५॥ श्रीशः श्रीश्रितपादाज्ञो
वीतनीरनयंकरः उच्छन्नदोषो निर्बिघ्नो निम्बलो लोकवत्सलः
॥१३६॥ लोकोत्तरो लोकपतिर्दुर्लोकचक्षुरपारधीः धीरधीर्बुद्धिसमा
र्गः शुद्धः सृष्टतपूतवाक्॥१३७॥ प्रज्ञापारमितः प्राज्ञो यतिनियः
यमितेन्द्रियः॥ जदंतो जद्रकद्रदः कल्पहृक्षो वरप्रदः॥१३८॥ समुन्म
लितकर्मरिः कर्मकाष्ठाशुशुद्धाणिः कर्मण्यः कर्मवः प्रांशुहे
यादियविचक्षणः॥१३९॥ अनंतशक्तिरच्छेद्यस्त्रिपुरारिस्त्रि
लोचनः॥ त्रिनेत्रस्मं वकस्मद्वः केवलज्ञानवीक्षणः॥१४०॥ समं
तत्रदः शान्तारिर्धर्माचाष्पीदयानिधिः सद्धमद्वर्त्री जितानंगः॥

कृपालुर्धर्मद्विशकः ॥१५५॥ इति दिवासासतं ॥ मुन्युः सुख
 साङ्गतः पुण्यपराशिर्निगमयः धर्मपालो जगत्पालो ॥ धर्मसा
 म्राज्यनायकः ॥१५६॥ इति अत्यंत कच्छतं ॥ १५७॥ धाम्नापते
 तवाम्निनामान्पागमकोविदैः समुच्चितामनुध्यायन्पुमान्
 श्रुतस्मृतिर्नवेत् ॥१५८॥ गोचरोपि गिरामात्रात्वमवागोचरो म
 तस्तोता तथाप्यसंदिग्धं त्वसोत्तीष्टं फलं न जेत् ॥१५९॥ त्वमतो
 सिजगत्बन्धुस्त्वमतो सिजगत्त्रिषु क्वत्वमतो सिजगत्प्रातात्वमा
 तो सिजगत्क्षितः ॥१६०॥ त्वमेकं जगतां ज्योतिस्त्वं द्विरूपोपयो
 गजाक्त्वं त्रिरूपैकमुत्कृपंगं स्वोत्पानंतचतुष्टयः ॥१६१॥ त्वं
 पंचब्रह्मतत्त्वात्मा पंचकल्पाणामनायकः ॥ षड्देवभावतत्त्वज्ञस्त
 सप्तनयसंग्रहः ॥१६२॥ दिमाष्टगुणामूर्तिस्त्वं तवकेवलद्विस
 दभावतारनिर्दोषो ॥ मायाहिरमेश्वर ॥१६३॥ पुष्पनामा व
 लीहृद्यविलसस्तोत्रमलया ॥ नवंतंवरिवस्वामः प्रसी
 दानुग्रहाणनः ॥१६४॥ इदंस्तोत्रमनुस्मृत्युत्तमवति
 नाक्तिकः स्युः संपादं पवत्येनं सस्थातं कल्पेण जाजने
 १६० ॥ ततः सदेदं पुण्यार्थी पुमान्पवतु पुण्यधीः पौरुह
 ती श्रियं प्राप्नुयुः परमाम्नि लायुकः ॥१६१॥ स्तुत्वेति म
 धवादेवं ॥ नृगचस्जगद्गुरुं ॥ ततस्तीर्थविहारस्य ॥ अथात्प्रस्तावनामि
 मां ॥१६२॥ नगावतनयसस्यानां पार्ष्वग्रहशोषिणां ॥ धर्मामृतप्रसेके
 नत्वमेधिशरणं विनो ॥१६३॥ नमसां र्थाधिपशोच ह्याध्वजविरा
 जित ॥ धर्मचक्रमिदं सज्जं त्वज्जयोद्योगसाधनं ॥१६४॥ निर्द्वयमो
 हघृतनां मुक्तिमार्गो परोधिनी ॥ तवोपदेशं सन्मार्गं कालोयं
 मरुमुपस्थितः ॥१६५॥ इति प्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयं नर्तुर्जिगीषतः ॥
 पुनरुक्ततरावाचः ॥ षडराशन्शनक्रतोः ॥१६६॥ तं देवं त्रिद
 शाधियाच्चितपदं घातिक्षयानंतरं शोक्तानंतचतुष्टयं जिन
 मिमान्मात्रानां तद्विनां ॥ मानस्यं न विलोकिनां न तजग
 त्मानं त्रिलोकं यति ॥ शान्तं तं चतुष्टयं जिनमिमान्कृपाप्र
 बंधं महे ॥१६७॥ इति श्रीजिनश्रेयसाचार्यविरचितं जिनाष्टोत्तर
 शतं नाम स्तवतं समाप्तः ॥ ॐ श्रीशुभोत्सहस्रनामधारक श्री
 जिनेशोत्रं महार्घं निर्वशात् ॥

श्रुतं

जिनेशोत्रं महार्घं निर्वशात्

॥६०॥ उैनमः ॥ अथ सहस्रनाम आसाधरजी कृत लिख्यते
 ॥ श्री सारदाये नमः ॥ १ ॥ शो नवांगने गोषु निर्विणोडः खनीरु
 कः ॥ २ ॥ एष विज्ञायामित्वां शरणं करुणाणां ॥ ३ ॥ सुरवलात्स
 यामोहात्प्राम्बुवहिरितस्ततः ॥ मुखे कहेतौर्नामापित्बना
 ज्ञातवानुरा ॥ ४ ॥ अथ मोहग्रहावेशत्रैयिलोकिंचडन्मखः
 अतंतगुणमासेमः ॥ फत्वांशुत्वास्तोतुमुद्यतः ॥ ५ ॥ अक्षयप्रोत्सा
 र्थमाणोपिडरंशक्त्यातिरस्कृतः ॥ त्वानामाष्टसहस्रेणस्तुत
 त्मानंपुनाम्यहं ॥ ६ ॥ जिते सर्वज्ञयज्ञार्हतीर्थकृन्नाथयोगिन
 निर्वीणवृहबुधां तदृतांचाद्योत्तरैशतैः ॥ ७ ॥ अतद्यया ॥ जिनो
 जिते जे जिनराट् जिनदृष्टे जिनोत्तमः ॥ जिनधिपो जिनधी
 शो जिनस्वामि जितेश्वरः ॥ ८ ॥ जितनाथो जिनपतिर्जिनराजो जि
 नाधिराट् ॥ जिनप्रज्ञ जिनविभुर्जिनमूर्तिर्जिताधिपः ॥ ९ ॥ जि
 तनेता जिनेशानो जितेनो जिननाथकः ॥ जितेदु जितपरिवृटे
 जितदेवो जितेशिता ॥ १० ॥ जिनधिराजो जिनयो जितेशो जिनश
 सिता ॥ जितनाथोपि जिनधिपतिर्जिनपालकः ॥ ११ ॥ जितचं
 द्रो जिनदित्यो जिनार्क्यो जिनकुंजरः ॥ जितेदुर्जितधोरयो
 जिनधुर्प्यो जिनोतरः ॥ १२ ॥ जिनवर्ष्यो जिनवरो जिनसिंहो जि
 नोदहः ॥ जिनर्षभो जिनवृषो जिनरत्नो जिनोरसः ॥ १३ ॥ जितेश
 विकश्च जिनशामणीर्जिनसुतमः ॥ जिनश्वर्हः परमजिनो जिन
 पुरेगमः ॥ १४ ॥ जिनश्रेष्ठो जिनज्येष्ठो जिनरवो जिनार्गुमः श्रीजि
 नश्चोत्तमजिनो जिनहंदारकोरजेत् ॥ १५ ॥ निर्विघ्नो विरजाः शु
 धो निस्तमरको निरंजनः ॥ धातिकर्मातकः ॥ कर्ममर्मादित्क
 र्महानघः ॥ १६ ॥ वीतरागो सुददेषो निर्मोहो निर्मदोगदः वे
 दद्वो निर्ममोसंगो निर्मयो वीरविस्मयः ॥ १७ ॥ अस्वप्रेष्टे
 प्रमोजन्मानिस्वेदो निर्जरो मरः ॥ अरसतीतो निश्चिंतो निर्वि
 वादश्चिष्ययत् ॥ १८ ॥ ७ ॥ इति श्री जिनशतं ॥ १ ॥ ७ ॥
 सर्वद्विः सर्वविश्वेदशी सद्वावलोकनः ॥ अनंतविक्रमो
 नंतत्रिपेनितसुखात्मकः ॥ अनंतसौरवो विश्वज्ञो विश्व
 दृश्वविलार्थहृक् ॥ न्यक्षद्विष्वतश्चुर्विष्वचसुशेषा

वित्॥२॥ आनंदः परमानंदः सदानंदः सिद्धौदयः नित्यानंदो म
 हानंदः परानंदः परोदयः ॥३॥ परमोजः परतेजः परंशामपरम
 हः ॥ इत्याज्योतिः परंज्योतिः परं ब्रह्म परं महः ॥४॥ प्रत्यग्पात्मा प्र
 बुधात्मा महात्मात्ममहोदयः ॥ परमात्मा प्राज्ञात्मा परात्मात्म
 निकेतनः ॥५॥ परमेष्ठी महिष्ठात्मा श्रेष्ठात्मा स्वात्मनिष्ठतः ॥
 ब्रह्मनिष्ठो महानिष्ठो निरुदात्मा हृदात्महृक् ॥ ६ ॥ एकविद्यो
 महाविद्यो महाब्रह्मपदेश्वरः ॥ पंचब्रह्ममनः सार्धः ॥ सर्वविद्येश्व
 रः स्वप्नः ॥७॥ अनंतधीरनंतात्मानंतशक्तिरनंतहृक् ॥ अनंता
 नंतधीशक्तिरनंतचिदनंतमुत् ॥८॥ सदाप्रकाशः सार्धार्थः सा
 द्वाकारीममशुधी ॥ कर्मसाक्षी जगच्चतुरलक्ष्यात्मा चलस्थि
 तिः ॥ ९ ॥ निरावाधो प्रतर्द्धात्मा धर्मचक्री विदां वरः ॥ नृतात्मा
 हज्ज्योतिर्विश्वज्योतिरतिंश्रियः ॥१०॥ केवली केवलालोको
 लोका लोका विलोकनः ॥ विविक्तः केवलो व्यक्तः शरणेषु चिंत्य
 वेनवः ॥ विश्वनृद्धिश्चरूपात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः ॥ विश्वा
 प्रापी स्वयंज्योतिरचित्पात्मा मितप्रतः ॥१२॥ महोदायो महो
 धिर्महो लानो महोदयः ॥ महोपयोगः सुगतिर्महानोगो महा
 नोगो महावलः ॥ १३ ॥ शक्तिश्री सर्वज्ञशतां ॥ १४ ॥ यज्ञार्हेर्निर्गोवान
 र्हेर्महार्हेर्मधवाचितः ॥ नृतार्थयज्ञपुरषो नृतार्थः क्रतुपौ
 रुषः ॥१॥ पूज्यो नद्वारकस्तत्र नवानत्र नवान्माहान् महाम
 हाहेस्तत्रायुस्ततो दीर्घो पुरर्धवाक् ॥२॥ आराध्यः परमार
 ध्यः पंचकल्याणपूजितः ॥ ३ ॥ विश्वधिगुणोदयो वसुधारा चै
 तास्पदः ॥ ४ ॥ सु स्वप्नदर्शी हिमोजाः शचीसेवितमातृकः ॥ स्पा
 इनतगर्भः ॥ श्रीपूतगर्भो गर्भोत्सवो छितः ॥ ५ ॥ दिव्यो पचा
 रो पचिनः पद्मनूर्निक्लः ॥ स्वजः ॥ सर्वोपजन्मा पुण्यागोना
 स्वानदभूतदैवतः ॥ ६ ॥ विश्वविज्ञतसंनृतिर्विश्वदेवागमाभू
 तः ॥ शचीसृष्टप्रतिष्ठेदः महस्त्राक्षहृगुभवः ॥ ७ ॥ नृत्यदैराव
 तासीनः सर्वशक्रनमस्कृतः हर्षाकुलामरस्वगश्चरणार्थि
 मतोभवः ॥८॥ ओमविद्युपदाशुधीस्नानपीठायतादिगत्

विस्नातां बुस्नातवासवः ॥ ७ ॥ गंधावुपूतत्रैतो
शुचीशुचिश्रवा ॥ कृतार्थितशुचीहस्तः ॥ शक्रो

ष्टनामकः ॥ १ ॥ शक्रारुद्रानंदनृत्यः ॥ शुचीविस्मापितां विक
चतुस्रंतपित्कोरैदपूरुमनोरथः ॥ २० ॥ प्राज्ञार्थी ॥ कृतसेवोदे
वधीषु ॥ शुबोधमः ॥ दीक्षाक्षणक्षमजगतुर्भुवः ॥ स्वः ॥ यताडि
तः ॥ २१ ॥ कुवेरनिर्मितास्थानः ॥ श्रीयुग्योगीश्वरार्चितः ॥ ब्रह्म
ज्ञो ब्रह्मविद्येद्योयाज्जोयतिः ॥ क्रमः ॥ २२ ॥ यज्ञांगममृतं यज्ञो
हविः ॥ स्तुत्यः ॥ स्तुतीश्वरः ॥ नावोमहामहयतिर्महायज्ञोऽप्या
जकः ॥ २३ ॥ द्यायोगोजगत्सृज्यः ॥ पूजाहो जगदर्थितः ॥ देवाधिदेव
शक्राद्यो दिवदेवो जगत्सृजा ॥ २४ ॥ संसृतदेवः ॥ संध्याचोपयन्ना
यानो जयश्रुजि ॥ जमंडलीचतुः ॥ षष्टिचामरो देव उडुजि ॥ २५ ॥
गसृष्टासनश्रुत्रयराट्पुष्पवृष्टिनाकृ ॥ दिमाशोकोमान
मदीसंगीताहेष्टिमंगलः ॥ २६ ॥ ॥ इति श्रीयज्ञार्हशतं ॥ ३ ॥ ॥
तीर्थकृतीर्थसृतीर्थकरस्तीर्थकरः ॥ सुदंकातीर्थकृतीर्थकृती
तीर्थिसस्तीर्थनायकः ॥ २ ॥ धर्मतीर्थकरस्तीर्थः ॥ एतातीर्थक
रकः ॥ तीर्थप्रवृत्तेकस्तीर्थसंघसौथितारकः ॥ सत्सावाक्याधिप
सत्यः ॥ असिनो प्रतिनासनः ॥ ३ ॥ स्वावादी दिव्या ॥ हिमध्वजि ॥
२ ॥ आहृतार्थवाक् ॥ पुण्यवागर्थः ॥ वागर्हमागधीयोक्तिरिदवाक्
४ ॥ अनेकांतदिगेकांतध्वांतनिहुर्नयांत कृत ॥ सार्थवाग
प्रयत्नोक्तिप्रतितीर्थमदधवाक् ॥ ५ ॥ स्यात्कारध्वजवागी
हायेतवाक्चलौषवाक् ॥ अपौरुषेयवाक्शास्त्रारुधवा
कससंनंगिवाक् ॥ ६ ॥ अवरणीगी ॥ सर्वनाथामयगीर्भक्त
वर्षगी ॥ अमोघवागक्रमवागवाचानंतनागसंनंगि
वाक् ॥ ७ ॥ अद्वैतगी ॥ सृष्टगी ॥ सत्यानुजयगी ॥ सुगी ॥
योजनवायिगी ॥ क्षीरोगरीस्तीर्थकृत्वागी ॥ ८ ॥ जमैका
स्रमयुः ॥ मनुश्रुत्रयुः ॥ प्रमार्थयुः ॥ प्रज्ञांतयुः ॥ ९ ॥ शश्रुयुः ॥ शु
गुर्नियतकालगुः ॥ १० ॥ सुश्रुतिः ॥ सुश्रुतो जपश्रुतिः ॥ सु
श्रुत्तदाश्रुतिः ॥ धर्मश्रुतिः ॥ श्रुतिपतिः ॥ श्रुत्सुहृत्तार्कव
श्रुतिः ॥ ११ ॥ निर्वाणमार्गदिग्मार्गदेशकः ॥ सर्वमार्गदे

दिक्॥ सारस्वतपथस्तीर्थः परमोत्तमतीर्थकृत॥ १॥ देष्टावागमीश्व
 रोधर्मशास्त्राकोधर्मदेशकः॥ वागीश्वरस्वयीमायस्त्रिजंगीशो
 गिरांपतिः॥ २॥ सिद्धाज्ञः सिद्धवागाज्ञासिद्धः सिद्धैकशासनः ज
 गत्सिद्धसिद्धांतः॥ सिद्धमंत्रः सुसिद्धवाक्॥ ३॥ शुचिश्चानि
 रुक्तोक्तिस्तंत्रकृतन्यायशास्त्रकृत॥ महिष्ठवागमहानादः क
 वीज्ञोडंडनिखानः॥ ४॥ इति श्रीतीर्थकृतं॥ ५॥ नाथः पतिः
 परिहृष्टस्वामिजर्ताविभुः प्रभुः॥ ईश्वरोधीश्वरोधीशोधीशातो
 धीशितेशिता॥ ६॥ ईशोधिपतिरीशानइतइंशोधिपोधिभू
 महेश्वरोमहेशानोमहेशः परमेशिता॥ ७॥ अधिदेवोमहादे
 वोदेवस्त्रिभुवनेश्वरः॥ विश्वेशोविश्वभूतेशोविश्वेष्टविश्वेष्ट
 रोधिराट्॥ ८॥ लोकेश्वरोलोकपतिलोकनाथोजगत्पतिः
 त्रेलोकपनाथोलोकेशोजगन्नाथोजगत्पुः॥ ९॥ पिताप
 रः परतरोजेताजिह्वुरनीश्वरः॥ कर्ताप्रभुश्चुर्जीजिह्वुः प्र
 नविंशुः॥ स्वयंप्रभुः॥ १०॥ लोकजिह्वुश्चिह्वुश्चिह्वुविजेतवि
 श्वजित्वरः॥ जगज्जिताजगज्जेत्रैजगज्जिह्वुर्जगज्जयी॥ ११॥
 अण्णीयमिणीनेतानृत्वेवः॥ स्वरोधीश्वरः॥ धर्मनायकः॥ रूपा
 शोभतनाथश्चतुर्भुवः॥ १२॥ गतिः पातां हृषोवर्ष्यमंत्रकृतु
 मुनलक्षणाः॥ लोकाधक्षेत्राधषोभमबंधुर्निरुक्तकः॥ १३॥
 धीरोजाधितोजपस्त्रिजगत्परमेश्वरः॥ विश्वाशीः शिर्वलोके
 शोविजवोभुवतेश्वरः॥ १४॥ त्रिजगद्भ्रजस्तुंगस्त्रिजगन्मगले
 दयः॥ धर्मचक्रायुधः॥ सद्योजातश्चैलोक्यमंगलः॥ १५॥ वरदोष
 तिद्योच्छेदोद्दद्यातनयंकरः॥ महानोगोनिरोपमोधर्मसा
 म्राज्यनायकः॥ १६॥ इति श्रीनाथशांतं॥ १७॥ योगीश्वरः निर्वैद
 : साम्पारोहणात्परः॥ सामायिकीसामायकेनि॥ प्रमादोप्रतिक्र
 मः॥ १८॥ यमध्याननियमः॥ स्वप्तिस्तपरमाज्ञानः॥ प्राणायामवर्ण
 सिद्धप्रसाहारोजितेन्द्रियः॥ १९॥ करणाधीश्वरोधर्मध्याननिष्ठः॥
 समाधिराट्॥ स्फुरत्समरत्रीभावः॥ एकीकरणनायकः॥ २०॥
 निर्ग्रथनाथोयोगीश्वरांबिःसाधुर्योतिमुनिः॥ महर्षिः साधुधै
 र्योपतिनाथोमुनिश्वरः॥ २१॥ महामुनिर्महामौनामहाध्यामीम

त्मा

हावृती॥ महात्मो महाशीलो महाशान्तिमहात्मः॥ ५॥ निर्वृत्तयो
 निर्वृत्तमस्वांतो धर्माध्वजो दयाध्वजः ब्रह्मयोनिः स्वयंबुद्धो ब्रह्मो
 ज्ञो ब्रह्म तत्त्ववित्॥ ६॥ पूतात्मा स्वातकोदांतो नदंतो वीतममः
 धर्मवृक्षा युधो ह्योमः शुक्लामृतो रुचः॥ ७॥ मंत्रमूर्तिः स्वमौम
 स्वतंत्री ब्रह्मसंभवः॥ सुप्रसन्नो गुणां नोधि पुण्यापुण्यनिरोधक
 ८॥ सुसंवृतसुगुप्तात्मा सिधात्मा निरुपश्रवः महोदको महोपायोज
 गदेकपितामहः॥ ९॥ महाकारुणिको गुणो महाकेशां कुशः शुचि
 अरिंजयः सदायोगः॥ सदाभोगसदाधृतिः॥ १०॥ परमोदासितानास
 नसत्प्राणीः शान्तिनायकाः॥ अपूर्वद्वैद्यो योगज्ञो धर्ममूर्तिरधर्मध
 क्कारथब्रह्मेण महाब्रह्मपतिः कृतकृत्यः॥ कृतकृतुः॥ गुणाकरेणुणे
 चेदीनिर्निर्मेषो निराश्रयः॥ ११॥ स्वरिः सुनयतत्वज्ञो महामैत्रीप्र
 यः॥ रामी॥ प्रह्लाणवधो निर्द्वेषः॥ परमर्षिरनंतरा॥ १२॥ इति श्री
 योगशातं॥॥ निर्वाणः सागरः साज्ञैः महासाधुरुद्राकृतः वि
 मलानो यश्चुघानः॥ श्रीधरो दत्त इत्यपि॥ १३॥ अमलानो युधरोधि
 संयमश्च त्रिवस्तथा॥ पुष्पांजलिः शिवगणः॥ उक्ता हो ज्ञानसंर
 कः॥ १४॥ परमेश्वर इत्युक्तो विमलेशो यशोधरः॥ कृष्णज्ञानमतिः
 सुधमतिः॥ श्रीनक्षत्राति युक्॥ १५॥ दृष्यस्तद्वदजितः संभवश्चा
 जिनंदनः॥ मुनिभिः सुमतिः पद्मप्रजः प्रोक्तः सुपार्श्वक॥ १६॥ चंद्रप्रजः
 पुष्पदंतः शीतलश्रेयसाक्षयः॥ वासुः पूज्यश्च विमलोनंतजिह्वर्म
 इत्यपि॥ १७॥ शान्तिः कृपुुरो मद्धिः सुवृत्तो नमिरप्यतः नेमिः पा
 र्श्वो वर्धमानो महावीरः सवीरकः॥ १८॥ सन्मतिश्चाकथिमहिति
 महावीर इत्यथो॥ महापद्मः स्वरदेवः सुप्रजश्च स्वयंप्रजः॥ १९॥ स
 र्वायुधोजयदेवो नवे नवे उदयदेवकः॥ प्रजादेव उदंकश्च प्रश्न
 कीर्तिर्जयनिधः॥ २०॥ पूर्णबुद्धिर्निःकषायो विज्ञेयो विमलश्च
 वहलो निर्मलश्चित्रगुप्तः॥ समाधिगुप्तकः॥ एष स्वयंभूश्चापि क
 दृष्येजियना य इतीरतः॥ श्रीविमलो दिमवादे नंतवीरोपुदी
 रितः॥ २१॥ पुरुदेवो य सुविधिः प्रज्ञापारमितो वयः॥ पुराणपु
 रुषो धर्मसारथिः॥ शिवकीर्तनः॥ २२॥ विश्वकर्माक्षरो उदमा
 विश्वभूर्विश्वनाथकः॥ दिगंबरो निरातंको निरार्षो नवांतरुः॥ २३

दृष्टवतो नयतु गोतिः कलंको कलाधरः सर्वज्ञो शापहो दोमः क्षांतः
 वृक्षलक्षणः ॥ १३ ॥ इति श्रीनिर्घाणशतं ॥ : ॥ इति चतुर्मुखे धाता
 विधाता कमलासनः ॥ अत्र मूलात्मनूः शृष्टासु रज्ज्वेष्टः प्रजापतिः ॥ १ ॥
 हिरण्यगर्भो वेदज्ञो वेदांगो वेदपारगः ॥ अजो मनुः ॥ शतानंदो हंसय
 नसूयी मयः ॥ विष्णुस्त्रिविक्रमशौरिः ॥ श्रीपतिः पुरुषोत्तमः वै
 कंठः ॥ पुंडरीकाक्षो रुषीकेशो हरिः ॥ स्वभूः ॥ विश्वं नरो सुखं
 श्रीमर्धवो वलिवंधनः ॥ अधो रंजो मधुदंष्ट्रीकेशो विष्टरश्मि
 ॥ श्रीवसलां च न श्रीमान्भुतो नरकांतकः ॥ विष्णुकसेनश्चक्रो
 णिः पद्मनाभो जनार्दनः ॥ ५ ॥ श्रीकंठः शंकरः शंभुः कपाली टषके
 तनः ॥ मृत्युंजयो विरुपाक्षो वामदेवः ॥ स्त्रिलोचनः ॥ ६ ॥ उमाप
 तिः ॥ पशुपतिः ॥ स्मरारिस्त्रिपुरांतकः ॥ अर्धनारीशूरो रुद्रो
 नवोत्तर्गः सदाशिवः ॥ ७ ॥ जगत्कर्तृधिकारातिरौ नोदिनि
 धनो हरिः ॥ महासेनस्तारकजिह्वा नाथो विनायकः ॥ वि
 रोचने धियं नृणां दशात्मविभावसुः ॥ द्विजाराधो बृहज्जमु
 श्चित्रनानुस्तनूतयातः ॥ १ ॥ द्विजराजः सुधसत्रो चिरोषधी
 शः ॥ कलातिथिः ॥ नक्षत्रनाथः ॥ शुभ्रांशुः ॥ सोमः ॥ कुमद्वो
 धचरः ॥ १० ॥ लेखर्वजो निलः ॥ पुण्यजनः ॥ पुण्यजनेश्वरः ॥ धर्म
 राजो नो गिराजः ॥ प्रचेतान्मिनंदनः ॥ ११ ॥ सिंहकांतनयश्या
 यानंदनो बृहतांपतिः ॥ पूर्वदेवोपदेष्टा च द्विजराजसमुद्भवः
 ॥ १२ ॥ इति श्रीब्रह्मशतं ॥ ७ ॥ कुशोदरावलशाक्यः ॥ षडभिज्ञस्तथा
 गता समंततः सुगतः ॥ श्रीघनो नूतकोटदिकु ॥ ५ ॥ सिधार्थो मा
 रजिठास्ताक्षणकैकसुलक्षणः ॥ बोधिसत्वो निर्विकल्पहरिणो
 धयवाघपि ॥ २ ॥ महाकृपालुर्नैरात्मवादी संतानशासकः ॥ सामा
 न्यलक्षणचणः ॥ पंचस्कंधदमयात्महृक् ॥ ३ ॥ नूतार्थेनावना ॥
 सिद्धश्चतुर्भूमिकसात्रानः ॥ चतुर्गण्यसत्त्वक्तनिराश्रयविद
 न्वयः ॥ ४ ॥ योगो वैशेषिकतुतुनावजित्पदार्थदिकु ॥ नैयाय
 कः षोडशार्थवादी पंचार्थवर्त्मकः ॥ ५ ॥ ज्ञानांतराभ्रवोधः
 समवायवसार्थजित् ॥ नूतैकसाधवर्णो तो निर्विशेषगु
 णामृतः ॥ ६ ॥ सारम्भः समीक्षकपिल ॥ पंचविंशतितत्त्वविद

श्रीचपरमनिष्ठहोसंतनिर्देषः ॥ १४ ॥ अशिक्षोत्रामकोदीक्षेदीक्षको
 दीक्षितोक्षयः अगमोगमकोरम्योरम्यकोज्ञातनिर्मेरः ॥ १५ ॥ इति ॥
 श्रीअंतकृत्यतं ॥ १० ॥ महायोगीश्वरोऽमसिधेदेहोपुनर्भवः ॥ ज्ञाने
 कश्चिज्जीवयंतः ॥ सिधोलेकाग्रामुकः ॥ ११ ॥ इति श्रीअंत
 कं ॥ ११ ॥ इदमष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं नक्तितोर्हितां ॥ योनंतानामधी
 तेशौमुत्तं तमुक्ति मश्रुते ॥ इदं लोकोत्तमं पुंसं मिदं शरण
 मुत्वाणं इदं मंगलमग्नी यमिदं परमयावतं ॥ १२ ॥ इदमेव परं तीर्थ
 मिदमेवाष्टसाधनं इदमेवाखिलकेशसकेशक्षयकारणं ॥ १३ ॥ ए
 तेषामेकमर्षेर्हन् नाम्ना मुद्यमवन्तधैः ॥ मुञ्चते किंपुनः सर्व
 एष्यंस्तु जिनायते ॥ इति श्रीआशाधरसूरिविरचिते जि
 नसहस्रनाममनोहरस्तवने संसर्ग ॥ ॥ श्री ॥ श्री ॥
 ॥ अथ अकलं काष्ठकलिष्यते ॥ काव्यं ॥ त्रैलोक्यं सकलं त्रिका
 लविषयं सलोकमालोकितं साक्षाद्येन यया स्वयं करतले रेखात्र
 यं सागुलिं शोभयेत्तया मयांतकजरालोलबलोमादयो ॥ नालं य
 त्यदलं घनाय समहादेवो मया वंद्यते ॥ दधयेन पुरत्रयं शरं नुवा
 ती त्रिधिवा वक्रिता ॥ योवा नृत्पति मत्तव त्पिठवने यस्यात्मजो वागु
 हः ॥ सोयं किममं करोत्यदृशरोषातिमोहक्षयं ॥ कवायः सत्रुसर्व
 वित्तनुहतां क्षेमकरः शंकरः ॥ यत्राद्येन विदारितं कररुहैर्दत्तं
 वक्षस्वलां ॥ शारथ्येन यत्तं जयस्य मरेयो मारये कौरवान् ॥ नासौ वि
 श्वुरनेककालविषयं पदं ज्ञातममाहृतं विश्वं र्वाप्यविजं जिते सनु
 महाविश्वुः विमिष्टामस ॥ ॥ उर्वस्यामुदेयादिगावडुलं चेतो य
 दीयं पुनः ॥ पात्री दंडकमंडुपुत्रतयोर्यसा कृतार्थस्थितिं ॥
 अविर्जावयितुं नवंति स्रकयं वृहानवेर्महिं ॥ ॥ सुश्राप्रम
 रागरोपरहितो ज्ञाना कृष्टं ताथैस्तु न ॥ ४ ॥ येन ॥ ॥ गधुपिस्ति
 समस्य कवलं जीवमिभूतं वदन् कर्मा कर्मफलं ननु कश्चित्ति यो व
 कास बुधः कथं ॥ यज्ञाने द्वा एव तिवस्तु सकलं ज्ञातुं नत्राकासदा
 योर्जनतयुगाय ज्ञात्रयमिदं साक्षात्सबुद्धे मम ॥ ५ ॥ ईश किं हि नलि
 गोयदिविगततयः श्रुत्वा पाणिः कथं सान्नाय ॥ किं नैतच्चागीय
 तिरिति सकथं सांगनः सात्मन् ॥ ॥ आज्ञः किं वृत्तान्मासकलवि

दितिकिंवेत्तितात्मांतरायंसंक्षेपात्सम्पुक्तं पशुपतिमयसुःको
त्रधीमानुपास्ते॥६॥ बुद्ध्या चर्मादिसूत्री सुरयुवतिरमावेशविजांतवे
ताशंभुः षड्गंधारी गिरिपतितनयापांगलीलानुविष्टः विष्णुशुक्र
धिपः सन्डह्तिरमगमत्गोपनायस्यमोहादर्दं न विधुस्तगगोजि
तसकलजयः कोयमेघासनाय॥७॥ एको रसतिविप्रसार्यककु
जां चक्रे सहस्रं जुजामेकः शेषतु जंगमो गत्रायने। आदाय निजाय
ते॥ दृष्टु चाकृतिलोत्तमां मुखमगादेकश्चतुर्वक्त्रतामेते मुक्तिप
यं वदंति विडुषामि सैतदस्य ज्ञते॥८॥ यो विश्वं वेद्यते यं जननजल
निधेर्ने गिनः पारदृश्या पूर्वापर्या विरुद्धं च मननुपमं निःकलं कं
दीयंतं वंदे साधु वंद्यं सकलगुणनिधिं ध्रुवस्तदोषं दिवं तं बुद्धं च
र्मानं शतदलतिलयं केशवं वाशिष्ठं वा॥९॥ मायानास्ति जटा
कपालमुकुटं च ज्ञानमुर्ध्ववली षड्गानं च वासुकिर्न च धनुः शू
लेन चोगं मुखं कामोयस्यने कामिनीन च वृषो गीतं न वृत्सपुनः
सोयपानुति रंजनोजिनपतिः सर्वत्र सूक्ष्मः शिवः॥१०॥ नो बुद्ध्या
कितमृतलं न वहरेः शंभोर्न मुञ्जं कितं नो चं शर्कं करं कितं
सुरपतेर्वज्रं कितं नैव च॥ षट् वक्रं कितं बोधदेव उत नु क्यचे
ह्नौन्ती कितं न गंतं पश्य समंततो जगदिदं नैनेऽमुञ्जं कितं॥११॥ मौजिदं
डकमंडलुघ्नतयो नोलां छनं वृहणोरुद्रस्यापि जटाकपालमु
कटं कौपीन षड्गाना विष्णोश्चक्रगदादिशंघमत्रुलं वैधस्यरक्तं
वरं न गंतं पश्यतवादि नो जगदिदं जैनेऽमुञ्जं कितं॥१२॥ नाहकार
वशीकृतेन मनसानक्षेपिणाकेवलं नैरात्म्यं प्रतिपद्यतश्चपति
नेकारुण्यबुद्ध्या मया राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि शयो विद
धात्सनां वैधौयान् सकलान् विजित्य सुगतः पादेन चिस्मिति
ता॥१३॥ षड्गानैव हस्तेतर शिररचितालं वितानैव माला नस्मागने
वशूलन च गिरिडुहितानैव हस्ते कपालं च शर्धनैव मूर्द्धिनं च वृषग
नं नैव कंठे फणीजातं वदत्यक्तदोषं न वज्रवयमर्थं न ईश्वरं देवं
किबोधो जगत्पानमेयमहिमादिवो कलंकः कलौ काले योजनता सुध्या
निहितो देवो कलंको जिनः यस्य स्फुरदिवेकमुद्गलहरी जाले प्रमेया कु
लानिर्मगाना तनुते नरा गवती तारा शिरः कपना॥१५॥ सातषाण्डुदेवता न
गवती मनोपितृनाम हेष एमासावधिजाप्रशोखन गवान जटा कलंकश्चो
वाकृद्भ्रोलपरपरा शिरमत्ते नृने जमो मज्जनमापारं महते स्य विस्मितम
तिः संताडिते तस्ततः॥१६॥ इति अकलंका एकसंश्लेषः॥

॥ अथ मंगल पांचमो लिखते ॥ ॥ एण विविपंच परम गुरु गुरु
 जिन सामणो ॥ सकल इमि हिदा तारति विघन विना सणो ॥ सा
 रद अरु गुरो तम सुमति प्रकासणो ॥ मंगल करुं च संघ हपा
 पण सणो ॥ पाप पण सण गुण ह गुरु वा दोष अष्टादश र ह्यौ
 धरि ध्यान कर्म ॥ विना शिकेवल ज्ञान अ विचल जिन ल ह्यौ ॥ शुभ
 पंच कल्याण क विराजित सकल सुर नर धार्इये ॥ त्रैलोक्य ना
 थ सुदेव जिन वरजा तमंगल गाइयो ॥ १ ॥ जाकै गर्भ कल्याण क
 धन पति प्राइयो ॥ अवधि ज्ञान परिमाण सुइं इय चाइयो रवि
 न ववार हजो जन नयर सुहावनी ॥ कनकर यण मणि मंडित मं
 दिर अतिवणी ॥ अतिवशी पोरि पगार प रिषा सुवन नुपवन सो
 हण ॥ नर नारि सुंदर चतुर वेष सुदेवि जन मन मोहिये ॥ महंज व
 कय ह छ ह मास प्रथम हिरत न धारा वर षियो ॥ फुनिरुचि कि वा
 सि ति जत ति सेवा कर हि सव विधि हर षियो ॥ २ ॥ सुर कुंजर स
 म कुंजर धवल सु रंधरो ॥ केसरिके सरिसो जित न ष सि षि सुंदरो
 कमला कमल नय न दोय दाम सुहावनी ॥ रवि शशि मंडल म
 धुर मीन जुग पावनी ॥ पावनी कनक घट जुग म पुर न कमला
 कलित सरो वरो ॥ कल्लोल माला कुलित सी गर सिं ह्यी ठ मनो
 हरो ॥ रमणी क अ म र वि मान फुनि पति सुवन न वि छ वि छ ज ए
 रुचिर त्व र शि दिपं ति द ह न सु ते ज पु ज वि रा ज ए ॥ ३ ॥ एस षि सो
 ल ह सु प ना सु ती सै न ही ॥ दे षि मा या मनो हर प छि म रै न ही ॥ ३
 वि पर जा ति पि या पु छि यो अ व धि प्र का शि यो ॥ त्रि नु व न प ति सु
 त हो सी यो फ ल ति ह जा सि यो ॥ जा सि यो फ ल त ह ॥ चि त दं प ति
 पर म अ नं दि त न ए ॥ छ ह मा स परि न व मा स फु नि ल हं र य ॥
 ति दि न सु ख सं ग ए ॥ गर्जा व तार म हं त म हि मां सु न त स व सु
 ष पा व ए ॥ त्रै लो क्य ना थ सु दे व जिन वर जा त मंग ल गा इ
 ये ॥ ४ ॥ इ ति प्र थ म मंग ल सं पू र्ण ॥ १ ॥ अ थ द्वि ती य मंग ल लि ख ते
 म ति शु त अ व धि वि रा जित जिन ज व जन मि या ॥ ति ऊं लो

नयोत्तोनितसुरगानजरमियो॥कलयवासिष्णुबंधनाहरवजि
 या॥ज्योतिकषरिहरिनादसहजगलगाजिया॥जियामह
 नहिंसंखनावननवनशाहसुहावने॥मंतरनिलयपदुयत
 हवाजै॥कहतेमहिमांकोवने॥कंपितसुरासनत्रवधिवलने
 नजनमनिश्रैजानियो॥धनराजतवाजरजमायामईतिरमि
 आनियो॥५॥योजनलक्षगयंदवदनसोतिरमये॥वदनवदन
 वसुदेतदंतसरसंवण॥सरसरसोपणवीसकमलनीडाजण
 कमलिनिकमलिनिकमलयवीसविगजण॥राजयतिक
 कमकमलत्रोतरसोमनोहरदलवने॥दलदलअपठरा
 नटहिनाटकहावजावसुहावने॥तहांकनककिंकिणि
 वरविचित्रमुअमरमंडितसोहरा॥धनघंटेचमरधुजापताका
 देषिचिनुवनमोहरा॥क्षतिहकरिहरिचदिआइयोसुरएद्वि
 वारियो॥पुरहिप्टद्विणदेनहजिनजयकारियो॥गुपका
 यजिनजननीहसुखनिशारची॥मायामईशिपुराधितु
 जिनअमोशची॥आमोशचीजिनरूपदेष्टनयनतया
 तिनपूजये॥तवपरमहरधितदयहरिणासहसलोचनह
 जये॥पुनिकरिष्णामसुप्रथमईइउछंगाधरिप्रभुलीनहो॥इशा
 नइइसुचंडछविकरिछत्रप्रभुशिरदीनहो॥७॥सनतकुमारम
 रमहोइचमरयुगादारण॥शेषशक्रजयजीवशाहउधारण॥७॥
 छवसहितचतुरविधसुरहरधितनये॥योजनसहसनमाण
 वेगगानउलंघिगाण॥लघिगाणसुरगिरिजहांपांहुकवनविरे
 त्रविराजिण॥पांहुकशिलाताहांअर्धचंद्रसमातमणिछवि
 डाजेण॥योजनपवासविशालडुगुणीआयामवसुर्जवीग
 णी॥वरअष्टमंगलकमलकलमितसिंहपीवसुहावणी॥८
 रचिमणिमंडपशोजितमअसिंहासणो॥थाप्पोपूरवमुख
 तहांप्रभुकमलासणो॥वाजहितालमदंगवीणवीनाधुनी
 डंडनिप्रमुखमधुरधुनिअवरजुवाजनी॥वाजनीवाजैसचा
 सबमिलिधवलमंगलगावही॥अतिकरहिहृत्ससुरांगना

सवदेवकौतुकत्रावही॥ नरिषीरसागरजलजुहायहिहायसुरगि
 रिलावही॥ सौधर्मअरुईसांनइंसुकलशलैप्रमुन्हावही॥ एण
 वदनउदरअवागाहकलसगतजानिये॥ एकआरिवसुजोजन
 मानप्रमानियो॥ सहसअवोत्तरकलसप्रनूकैसिरदरै॥ फुनिमि
 गारप्रसुरवआचारसवैकरै॥ करिअगदप्रमुमहिमामहोत्सव
 आनिफुनिमातैदयौ॥ धनपतिहैसेवाराधिसुरपति॥ आप्सुर
 लोकहगयो॥ जन्माजिषेकमहंतमहिमासुनतसवसुषया॥
 इयो॥ जैलोकप्रनाथसुदेवजिनवरजगत्तमंगलगाईए॥ १०इति॥
 ६ श्रीमंगलं॥ अथतृतीया॥ अमजलरहितसरीरसदासवमलरा
 लौ॥ धीरवरावररुधिरप्रथमआकृतिसल्लो॥ प्रथमसारसंहा
 ननस्वरूपविराजए॥ सहजसुगंधसुलघनमंदितछाजए॥ अ
 जैअतुलैवलपरमप्रियहितमधुरवचनसुहावने॥ दशाअहज
 अतिसयसुजगमूर्तिवालसीलकहावने॥ आवालकालत्रि
 लोकपतिमनिरुचितउचितजुनिततये॥ अमरेपुनीतपुनी
 तअनुपरमसकलजोगतिजोगएं॥ ११॥ अवतनुजोगविस्तक
 दाचितचितये॥ धनजोवनपियपुत्रकलितअनितये॥ कोइत
 सरनमरनुदिनडषचक्रगतिनस्यो॥ डषसुषएकहीजुगतेजी
 वविधितसिपस्यो॥ पस्येविधिवसिआनचेतनआनजडजुक
 लेवरो॥ तनअसुचिपरतैहोइआअवपरपरहेसंवरो॥ निज
 रातपवलहोइसमकितविनुसदात्रिजुवनजम्यो॥ इहनेनवि
 वेकवितांनकवरूपरमधर्मविषेरम्यो॥ १२॥ एप्रनुवारहयाव
 नजावननाश्या॥ लोकांतिकंवरदेवनियोगैआईया॥ कुसुमं
 जलेदेचरनकमलसिरनाइयौ॥ स्वयंबुधप्रमुपुतिकरितिन
 समुक्ताइयो॥ समुकायप्रमुकोंगाएनिजपदफुनिमहोछोइ
 क्रियो॥ रचिरुचिरचित्रविचित्रसिविकाकरिसुनंदनवनलि
 यो॥ तहंपंचमूवीलोचकीनोंप्रथमसिद्धनुतिकरी॥ मंदि
 यमहावृतपंचडर्हरसकलपरिग्रहपरिहरे॥ १३॥ मणिमयजा
 जनकेशपरिधिपसुरपती॥ धीरसमुदजलधिपिकरिगयोअम

रावती॥ तपसंजमवलप्रभु कैमन परजैत्रयो॥ मोनसहिततपकर
तकालकछूतहांगयो॥ गयोतहंकछूकालतपवलरिदिवसुवे
द्विमिद्विया॥ जिमुधर्मध्यानवलेनषयमयसप्रकृतिप्रसिद्धे
या॥ षिपिसातवैगुणजतनविनुतहां॥ तीनप्रकृतिजुबुधवे
करिकरणतीनप्रथमसुकलवलक्षपकश्रेणीप्रभुचदो १
४॥ प्रकृतिछतीसतवैगुणयांनविनासिए॥ दसमैस्रषिम्लो
नप्रकृतितिहिनासिये॥ सुकलध्यानपदहृजोफुतिप्रभुप्र
रियो॥ वारहमैगुणसोरहप्रकृतिजुचूरियो॥ चूरियोत्रिसविप्र
कृतिहृविधिघातियाकर्मातणी॥ तपकियोध्यानपर्यंतवा
रहविधित्रिलोकसिरोमनी॥ निःक्रमनकल्याणकसुमहे
मांसुनतसबसुषपाईये॥ त्रैलोक्यनाथसुदवजिनवरजग
तमंगलगाइये॥ १५॥ शतितृतिवमंगल॥ ३॥ तेरहमैगुणया
नसजोगिजिनैश्वरो॥ अनंतचतुष्टयमंदितनयोपरमेश्व
रो॥ समोसरणतवधनपतिवहुविधिनिरमियो॥ आगम
जुगतिप्रमाणगंगनतलिपरिवयो॥ परिवयोचित्रविचित्रघ
णिमयसनामंफसोहएं॥ तहांमध्यवारहवनेकोवेवनक
सुरनेरमोहएं॥ मुनिकल्पवासिनिअर्जिकातहांजोतिनौम
नवनतिया॥ फुनिनूमनौमसुकल्पसुरनरपसुतिकोचनिचे
विया॥ १६॥ मध्यप्रदेशतीनमणिपीतहांवने॥ गंधकूटीसि
घासनकमलसुहावने॥ तीनछत्रसिरसोन्नितत्रिभुवनमो
हएं॥ अंतरीषकमलासनप्रभुतनसोहएं॥ सोहएचोसविष्म
रदुरतहांअसोकतरुतलिछाजए॥ फुनिदिमध्यनिप्रतिश
भूजनतहदेवडुंडुनिवाजएं॥ सुरभुष्यवृष्टिसुप्रनामंडलकोदे
रविछविछाजएं॥ इमअष्टअनुपमप्रातिहार्यसुवरविमृति
विराजए॥ १७॥ जोजनसहइकमानसुरनिक्षचकुदिसिगग
नगमनअरुप्रानीवधनअहोनिशि॥ निरुपसर्गोनिराहा
रसदाजगदीसएं॥ आनतआरिचकुदिससोन्नितदीसएंदी
सेहअसेसविज्ञोषविद्याविजववरईश्वरपते॥ छायाविव

वर्जितशुद्धफटिकसमानतनप्रभुकोवन्मो॥ नहिनयनपलक
यतनकटाचितकेसनषमञ्जाएइहघातियाषयजनितअति
सयदसविचित्रविराजो॥ १७॥ सकलअरथमागधियाजाषाजा
नियो॥ सकलजीवातिमैत्रीजाववधानियो॥ सवरतिकेफल
फूलवनस्पतिमनहै॥ दर्पीणसमतहअवनिपवनगतिअ
नुसै॥ अनुसैरेपरमांतंदसवकै॥ नारिनरजेसेघता॥ जेज
नप्रमाणधरातिउज्जलमारजहिमारुतदेवता॥ फुनिक
रहिमेघकुमारगंधोदकमुष्टिमुहावनी॥ पदकमलत
लिसुरधिपहिकमलमुधरनिससिसोजावनी॥ १८॥ अम
लगानतलिअरुदिसितहअनुसारही॥ चतुरतिकाइदेव
तिसुरहिक्कारही॥ धर्मचक्रचलैआगौरविजिहिलाजही॥ फु
निभंगारप्रमुखसुमंगलराजही॥ राजहितिचोदहचारुअ
तिसयदेवरचितमुहावने॥ जिनराजकेवलज्ञानमहिमा
औरकहतकहावने॥ तहांइअयकियोमहोडोसजा
सेनितअतिवनी॥ धर्मोपदेशकियोतहांउछलियाती
जिनतनी॥ १९॥ दुधातषाअरुगाघेषअसुहावने॥ जन्मज
राअरुमरात्रिदोषजावने॥ रोगसोगनयविस्मयअरुनिशघनी॥
खेदषेदमदमोहअरुअज्ञानागनी॥ गनिआअठारहदोषतिनिकीर
रहितदेवनिरंजने॥ नवपरमकेवललब्धिमंथितसिवरमनि
मनरेजने॥ श्रीज्ञानकल्याणकसुमहिमासुनतसवसुषपाश्ये
त्रैलोकनाथसुदेवजिनवरजगतमंगलगाश्ये॥ इतिचौथोमं
गलसंपूर्ण॥ ४॥ केवलदृष्टिवाराचरदेषोजारिसो॥ नविनि
शतिउपदेशो जिनवरत्तारिसो॥ नवनयनीतनविकजमसर
निजुआश्या॥ रत्नत्रयलक्षनमिवपंथलगाश्या॥ लाश्यांप्र
जुनमफुनिप्रभुत्रितियसुकलजुप्रियो॥ तजितेरहैगुनया
नप्रभुतहप्रकृतिवहतरचूरियो॥ फुनिचोदहैगुणप्रकृति
तेरहतुरियसुकलवलेहती॥ इमघातिवसुविधिकर्मपडचेस
मयमैपंचमगती॥ २०॥ लोकमिषरतनुवातवलेमहिसंठियो

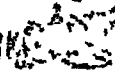
मंगलजीजा
१०६

यो धर्मद्वयविनुगमननजिहित्रागौकियो॥मदनरहितमूर्खोह्य॥
अंवरजारिसो॥किमपिहीनजितनुतैतयोअनुतारिसो तारे॥
सिजुपर्ययनित्यत्रविचल॥अर्थपर्ययविनुषई॥नियतदृष्टि
अनंतगुणव्यवहारनयवसुगुणमङ्गु॥वस्तुस्वभावविनाव
विरहितसुखपरिणतिपरिनयो॥चिद्रूपपरमानंदमंदिरसुखपर
मातमनयो॥२३॥तनुपरिमाणदामिनिपरिसवधिरिगाए रहेसे
षनषकेसरूपजेपरिनयो॥तवहरिप्रसुषचतुरविधिसुरगतसे
नसचोभायामईनखकेससहितजिते तनुरचो॥रचित्रगा
रचंदनप्रमुषपरिमलज्वमजिनजैकारियो॥पदपसितंआनि
कुमारमुकुटानलसुविधिसंस्कारियो॥निर्घीणकल्याणकसु
महिमांसुततसवसुषपाईयो॥त्रैलोक्यनाथसुदेवजिनवरज
गतमंगलगाइये॥इतिश्रीपंचमंगलरूपचंद्रकृतसंपूर्ण॥५॥
मैमतिहीनजगतिवसुनावनजाइया॥मंगलगीतप्रबंधसुजि
नगुतगाईया॥जोइसुसुनइवधानइसुरधरिगावइमनवेडे
तफलसोनरनिश्चैपावण॥पावइसुअष्टौसिद्धिनवनिधिमन
प्रीतिहुमांनए॥अमनावइद्वैसकलमंनके॥जिनस्वरूपसु
जानए॥फुनिहरिहिपातिकटरहिविघनसुहोयमंगलनित
नयो॥ननिरूपचंद्रत्रिलोकप्रभुजिनदेववौसंघहजयो॥२५॥ इ
तिश्रीपंचमकल्याणकमंगलसमासमत्स्वाध्यायसंपूर्णः॥॥
अथविषापहाडनाशालीष्यते॥धौपई॥श्रीरिषननाथविमला
गुणईस॥वईमानवंदौचौवीस॥गणधरगौतमसारदमायावरदीजे
मुहिवुद्धिसहाय॥१॥सिद्धसाधसतगुरअवधार॥करुंकवितत्रात
मउपगार॥विषापहरसंतवनउच्चर॥सर्वश्रौषधीईमृतधार॥३॥मैरे
मंत्रतुम्हारेनाम॥तुमहीगारुडगरुडसमांत॥तुंमसमवैद्यनकोशं
सार॥तुंमस्यांनेतिहुलोकमकार॥३॥तुमविषहरणकरणजगसंत
नमौनमौनितिदेवअनंत॥तुमगुणमहिमांअगमअपार॥सुरगुरसे
सलहैनहीपार॥४॥तुंमपरमातमापरमानंद॥कलपवृक्षसवसुष
केचंद्रा॥मुदितमेरमहिमंडलधीर॥विद्यासागरगहरगंजीर॥५॥तुम
दधिमथनमहावलवीर॥संकटविकटनयजंजननीर॥तुमजगतार

तुमजगदीसा वेदउधारणविस्वावीसा॥ धरतनवितामणितुंमगुण
 रास॥ चित्रावेलिचितहरनवितास॥ उपसर्गहरणतुंमनामसतल
 मांमंत्रतंत्रतुमहीमनमूल॥ ७॥ जैसैवजुपरवतपरिहार॥ ज्यौतुमने
 मविषापहार॥ नागदमनितुंमनामकहाहि॥ विसहरविषमदमै
 छिनमांहि॥ ८॥ तुमसुमरणचित्तैमनमांहि॥ विषयिवतईमृतकैज
 हि॥ नांमसुधारसवरषेजहां॥ पापमूलरहैनाहीतहां॥ ९॥ ज्यौपार
 सैकोपरसैलोद॥ निजगुणतजिकंचनसमहोह॥ स्यौतुंमसुमरण
 साधेभ्रंच॥ नीचजपावैपदर्शकंच॥ १०॥ जेतुमनाममंत्रमनकूलामह
 मंत्रसखीवनमूल॥ मूरिषमंरमनजानैनेवा॥ करमकलंकदहनतु
 मदेवा॥ ११॥ जेतुमनामगरुडकागहै॥ कालजुजंगमकैमैरहै॥ तुम
 धनंतस्जहाजिनराय॥ मरननपावैकोतिहिंवाय॥ १२॥ तुम्हारोजस
 उदयोघटजास॥ सांसोसीतनआपैतास॥ जीवैदादरवरषैतो
 य॥ सुनिवांतीसरजीवनहोय॥ १३॥ तुंमविनकौनकरैमुहिसारतु
 मविनकौनउतारैपारा॥ दयावंततुमदीनदयाल॥ तुमकरताहरत
 करपाल॥ १४॥ सरगैंआयौश्रीजिनराय॥ श्रवमुहिकाजसुधारे
 आया॥ मैरैयहपूजीधनपूता॥ साहकहैराघोघरसूर॥ १५॥ ककं
 वीनतीवारंवाश॥ तुंमविनकौनकरैउपगार॥ तुमपैगंवरतुम
 हीपीरा॥ तुमविनकोकाटैपरपीर॥ १६॥ विग्रहग्रहडुषविषतिवि
 योग॥ रोलाघोलजलंधररोग॥ चरणकमलरजतनकौंलाय॥ १७
 ष्टमाधियुरगंधमिठाय॥ १८॥ मैअनाथतुमत्रिभुवननाथमात
 पितातुमसजनसेगाता॥ तुमसमदाताकौंउनदंन॥ श्रैरकहाजा
 चोजगनांन॥ १९॥ प्रभुतुमपतितउधारनआहि॥ वाहगहेंकीला
 जनिवाहि॥ जहांदेखौतहांतुमहीआय॥ घटघटजोतिरहीवह
 राय॥ २०॥ वाटघाटविषमनयजह॥ तुमवितकौनसहाईतहां
 विकटविथाअंतरजलवाय॥ नांमलेतछिनमांहिविलाय॥ २१॥
 आचारिजमांनतुगअवसांन॥ संकटसुमसौंनामनिधानन
 कांमरतुमनक्तिसह॥ पणराघोप्रगटेतिहिंवाय॥ २२॥

॥ वादराजन्तपदेषनगयो॥ एकीजावकिये ७

संदेह॥ ऋषगयो कंचनसमदेह॥ २३॥ कल्याण मंदिरकमदचंद्रवयो
राजा विक्रमविसैनयो सेवकजां नितुम करी सहाय पार्श्वनाथप्र
गटेति हिं गाय॥ २३॥ नसमवाधिसुमंतनद्रनरी संनूस्ततिजि
नस्तुतिवरी॥ गर्भमाधिविमलमतिनरी॥ तहांपनिसहायतुम्
हीवरी॥ २४॥ नवसदंतंश्रीपालनरेस॥ सांससंकटजलमूखेस
तहांपनितुंमहीनयेसहाय॥ आनंदसौधरिपुंजेजाय॥ २५॥ स
नाडसासनपकस्योचीर॥ ज्योतिपनराष्ठीकरिधीरसीतांल
ष्ठिमनदीनोसांच॥ रावणजीतिननीषणराज॥ २६॥ सेवसुदर
शाणसहायकीयो॥ सूलीसिंघासणतुंमहीदीयो॥ आषाढभृ
तधस्योतुंमध्मान॥ नाटिकनाचैकेवलपांता॥ २७॥ सिंहसपी
टिकजीवप्रतेका॥ तुमसुमरंतराषीटेका॥ त्रैसीकैइंइकजन
कीसाधि॥ साहकहैसरणागतगधि॥ २८॥ यहत्रोसजीवैयोव
ला॥ मेरोसंदेहमितैततकालावंदीबोडविडदमहाराज॥ अपनोव
दुदनिवाहोलाजा॥ २९॥ औरआलंवनमैरेनाहि॥ मैनिहचोक
नोमनमांहि॥ ३०॥ चरणकमलछांडौंनहीसेवा॥ मैरैतौतुंमसद
गुरदेव॥ ३१॥ तुंमहीसूरिजतुंमहीचंद॥ मिथ्यामोहनिकंदन
कंद॥ धरमचक्रतुमघारनधीरा॥ विसहचक्रविदारनवीरा॥ ३२॥
चोरअगनिजलभूतपिशाच॥ जलजंगलअटवीजदास॥ डरइ
ग्रामनराजावसिहीया॥ तुमप्रसादगंजैनहिकोय॥ ३३॥ हयोगयेर
यसवलसावंता॥ सिंघसाईलमहामयवंता॥ दिठबंधनविग्रह
विकराला॥ तुमसुमरनभूटैततकाला॥ ३४॥ पयपन्नगहीनकने
नाजा॥ ताकोतुमवकसोगजराजा॥ एकउथाप्रिययोफिरिगज
तुंमप्रभुवडेगरीवनवाजा॥ ३५॥ पानीसोपयदासकरो॥ नस्या
रतुंमरीताकरो॥ तुमकरताहरताकरताया॥ कीरीऊंजरकरत
नवारा॥ ३६॥ गुनअनंतअलयमोहिगपाना॥ कहांलगप्रभुके
करुंवषांनि॥ अगमपंथसकैनहीमोहि॥ तुम्हारोचरीत्रवनि
आवैतौहि॥ ३७॥ नयोसपरससाहंसकीयो॥ दयावंतआयदर
शाणदीयो॥ साहपूतसचेतननयो॥ हस्तहस्तसोघरकंगयो॥ ३८॥
धनिदशाणदेसोन्नगवंता॥ आजिधनिमुपनैनयवितप्रभुके

केचरणकमलहूनयो॥जनममुकारयमेरोनयो॥त्रणकरपंकज॥
 करनाऊंसीस॥मुक्तिअपरघक्षमोजगदीस॥संवत्सतरासैशुन
 थाना॥नारबोलतथिचौदसिजांन॥३५॥पटैसुणैतहांपरमाने
 कल्पवृक्षसवमुषकेवृंदं॥अष्टसिद्धिनवनिधिनतिलहे॥अचल
 कीर्तिआचारजकहे॥४०॥दोह॥जयजंजनरंजिनजगतविष
 पहारगनाम॥सांसोतजिसुमरोसद॥सतिसाहिवकानामध
 इतिश्रीविष्णुपहारनामासंपूर्ण॥ श्री ॥अथपरमजोतिलि
 ष्यते॥दोह॥ परमजोतिपरमातम॥परमजांनपरवी
 नावंदौपरमांनंदम॥घटघटअंतरलीन॥चौघईनिरनेक
 णपरमपरधान॥नवशामूइजलतारणजांन॥शिवमंदिरअ
 घहरणअतंद॥वंदौणसचरणअरिविंद॥शकमवमांनजंज
 नवरवीर॥गरमासागरगुणहंतीर॥सुरगुरपारलहैनहिज
 समैअजातजपूजमतास॥३॥अनुसरूपअतिअगमअथा
 हकौहमसंपैहोयनिवाहे॥अंदिनअंधउलकोपूत॥क
 हनसकेरविकिरणउद्योत॥४॥मोहहीनजांणोमनमाहित
 उनतुंमगुणवरणेजांहि॥प्रलयपयोधकरेजलवोन॥प्रादे
 रतनगिनैवैकोना॥५॥तुंमअसंखंखनिरमलयणसांनिमैम
 तिहीनकहूनिजवांनज्यौवा॥लैकनिजवाहपसारिसागर
 रमितकहेविचारि॥६॥जेजोगीइकरैतपषेदा॥तोऊनजांणै
 तुमगुणनेदा॥जगतिजावमुक्तिमनअनिलाष॥ज्योपंषीबोले
 निजनाष॥७॥तुमजसमहिमांअगमिअपार॥नामएकत्रि
 मुवैनेआधार॥आवैपवनपदमसिरहोयग्रीषमतपतिनि
 वारैसोय॥८॥तुमआवतेनविजनघटमांहि॥करमनिचं
 धसिथसैजांहि॥ज्यौचंदनतरुबोलेमोर॥डरेनुयंगलगैब
 ऊंवोर॥९॥तुंमनिरषतजिनदीनदृष्यासंकटतैह
 काल॥ज्यौपशुघेरिलीएनिसिचोर॥तेतजिजागैदे
 रा॥१०॥तुमजविजनतारककिमहोय॥तेचित्तधारितिरै
 तोहि॥यहत्रैसोकरिजांणिसुजावतिरैमसकज्योगरनित

वाव ॥११॥ जिन सब देव किये वसिवां मते छिन मै जीते सकु का
 म ज्यो जल करे आग निकल हान वडवान लपी विसो पान ॥१२॥
 तुम अनंत गरवा गुण लिये ॥ कौ करि न कि धरौ निज हियो ॥ कै
 ल घुरु पति रे संसार ॥ यह प्रभु महि मां आ म अ पार ॥१३॥ क्रोधने
 वारि कियो मन सांति ॥ कर म सु भट जी ते क हि जां ति ॥ यह पटं त
 र दे षो सं सार ॥ नी ल वृ द्ध ज्यौं दे हे नु धार ॥ १४ ॥ मुनि जन हिये
 कमल निज टोय ॥ सिंघ रूप सम धा वै तोय ॥ कमल करण का
 वन न हे अोर कमल बीज नु प जन की गो र ॥ १५ ॥ ज व नु म धां
 न धरै मुनि कोय ॥ त व वि दे ह पर मा त म हौ य ॥ जै सैं धा तु सि ला
 त नु ल्पा ग ॥ क न क स रूप ध वै ज व अा ग ॥ १६ ॥ जा के मन तुं म
 करे नि वा सैं वि न सि जा य स व वि ग्र ह ता स ॥ १७ ॥ क रै वि बु ध जे अ
 त म धां न ॥ तु म प्र ना व तैं हो य नि दां न ॥ जै सैं नी र सु धा अ नु मं
 न ॥ पी व त वि ष य वि कार की हां न ॥ १८ ॥ तुं म न ग वं त वि म ल गु
 ण ली न ॥ स म ल रूप मा नैं म ति ही न ॥ ज्यौं ती लियारो ग श्रा ग
 है ॥ ध र्ण वि व र्ण सं ष सौ क है ॥ १९ ॥ दो ह ॥ नि क ट र हि त नु प दे
 श मु नि ॥ त र व र न ये अ सौ क ॥ अोर वि क्र ग त जी व स व श्रा
 ट हो त न व लो क ॥ २० ॥ सु म न वृ ष्टि जो मु र करै ॥ हे ट वी ट मु ष मे
 य ॥ त्यौ तु म से व त सु म न जन ॥ वं ध अ धो मु ष हो य ॥ २१ ॥ नु प जी तु
 म हि य नु द धि तै ॥ वां णी सु धा स मां न ॥ ज हां पी व त न वि जन ल हे
 अ ज र अ म र प द थ्यां न ॥ २२ ॥ क रै इ सार ति लो क को ए मु र चा म
 दो य ना व स हि त जो जन न मै त सु ग ति न र ध ज हो य ॥ २३ ॥ सिंघ
 स न गि र मै रू स म प्र नु य न ग र जि त धोर ॥ स्या म सु त न ध न रूप ल
 षि ॥ ना व त ध वि जन मो र ॥ २४ ॥ इ वि हि त हो य अ सौ क द ल
 तु म प्रामं ड ल दे षि ॥ वी त रा ग के नि क र तैं ॥ रह त रा ग वि शो
 ष ॥ २५ ॥ सी ष क है ति कुं लो क कुं ॥ ए सु र डं डु नि ना दा सि व प
 सार य वा ह जि न ॥ न जो त जो पर मा द ॥ २६ ॥ ती न छ त्र त्रि नु व
 त नु दि त मु क्त ग न छ वि दे त ॥ त्रि वि धि रूप ध रि म न कु न्वा रि
 से व त न ष त स मे त ॥ २७ ॥ प थ डी छ र ॥ ॥ प्र भु तु म शरी र ति र

रत्नजेष परतापपुंजजे सुखहेम ॥ अंतिधवलसुजसरूपासप्रान ॥
 तिनकेगठतीनविराजमान ॥ २१ ॥ सेवैसुरिंदकरिनिमतनालति
 नसीसमुकटतजिदेवमाला ॥ तुमचरणलागतलहलहेप्रीतिना
 हीरमैत्रवरजिनसुमंतरीति ॥ २२ ॥ प्रभुनोगविमुषतनकर्मदाह
 जिनपारकरतनवजलनिवाह ॥ ज्योमाटीकलससुपकहोया ॥
 लेनारत्रधोमुखतिरहिंसोया ॥ तुममहाराजनिरधननिरास
 तजिविनोविनोसवजगविकास ॥ अक्षरसुनावसौलिषनको
 या ॥ महिमाअनंतनगवंतसोया ॥ २३ ॥ कोपियोकमठनिजवैरदे
 रदेधि ॥ तिनकरीधूलिवरषाविशेष ॥ प्रभुनुमवायानयोहीनसे
 नयोपापलंपटमलीन ॥ २४ ॥ गरजंतघोरघतत्रंधकार ॥ चमकं
 तवीज्जलमुरालधार ॥ वरषंतकमवधरध्यांतकू ॥ उत्तरकर
 तैनिजनवशमू ॥ २५ ॥ वस्तुछंदः ॥ मेघमालीमेघमालीत्रापव
 लफेरिजेजेतुरतपिसाच ॥ गणनाथपासउपसर्गकारण ॥ अगा
 निजालमूकंतमुषधुनिकरतजिममतवारुण ॥ कालरूपवि
 करालतनरुंडमालतिनकंवा ॥ वहेनिसंकएहरंकनिजकरे
 करमदिहांगति ॥ २६ ॥ चौपई ॥ जेतुमचरणकमलतिडुकाल ॥
 सेवैतजिमायाजंजाल ॥ नावजगतिमनहरषिअपार ॥ धन्पधत
 जगतअवतार ॥ २७ ॥ नवसागरमैफिरतअजांत ॥ मैतुमसुजस
 सुजससुमौंनहिकान ॥ जेप्रभुनाममंत्रमनिधरौ ॥ तामुविपति
 नुयंगमडुरै ॥ २८ ॥ मनवंछितफलजिनपदमांहि ॥ मैपूरवन्नव
 जेनांहि ॥ मायामगनफिसोअप्रान ॥ करैरंकजनमुफअपमं
 त ॥ २९ ॥ मोहतिमरचायेदिगमोहि ॥ जनमांतरदेखेनहितोहि
 ज्योडुरजनमुफिसंगतिगहै ॥ मरमछेदकेकवचनकहै ॥ ३० ॥
 सुन्यौंकानजसपूजेपाय ॥ तैनंतदेखेरूपअघाय ॥ नक्तिहे
 तनयोचितचाव ॥ दुषदायककरियाविननाव ॥ ३१ ॥ महारा
 जसरणागतिपाल ॥ पतितउधारणदीनदयाल ॥ सुमरणक
 रूनिवायंनिजसीस ॥ मुफडुषहरिकरोजगदीस ॥ धोकरम
 निकंदतमहिमासार ॥ असरणसरणसुजसविसतारनहि

नजोति सेयेप्रनुनुमसेयाय॥ तोमुफजनमत्र कारथजाय॥ ५१॥ सुरगण
 १०९ वंदितदयानिधान॥ जगतारणजगपतिजाजानि॥ दुषसागर
 तिमोहितिकामि॥ तिरजैथानदेहुसुषरासि॥ ५२॥ मैतुमचरण॥
 कमलगुणगाय॥ वहुविधिजगतिकरीमनलाय॥ जनमजनम
 प्रनुपाकतौहि॥ एहसेवाफलदीजेमोहि॥ ५३॥ छुष्ययुंद॥ इ
 हविधिश्रीनगचंतसुजसयेजविजननासहि॥ तेनिजपुन्यनं
 नारसंचिचिरपापपणसहि॥ रोमरायहुलसंतत्रंगत्रंगप्रमु
 केगुनमहि॥ सुर्गसंपदानुंजिवेगिपंचमगतिपावहि॥ इहकल
 णमंदिरकियो॥ क्रमुदचंदकीबुधि॥ जायाकहतवणारसी॥ कर
 णसमकितशुभ॥ ५४॥ इतिश्रीकल्याणमिदिरकीनाथासं
 पूर्ण॥ ११॥ अथकल्याणमंभुसंस्थातलिख्यते॥ श्री॥ श्री॥ ५
 ॥ अथतिर्वाणकांडगायलिख्यते॥ अगवयमिउसहो॥ चंपाएवांस
 पुजजिएणाहो॥ उजंतेणोमिजिणो॥ पावाएणिबुदेमहावीरो॥ १॥ वीसं
 तुजिएवरिंद॥ अमरसुरवंदिदधुदकिलेशा॥ समेदेगिरसिहरेणि
 वाणगयाणमोतेसि॥ २॥ वरदत्तोयवरंगो॥ सायरदयतावररणये॥
 आरुवकोडिसहिया॥ एिच्चाणगयाणमोतेसि॥ ३॥ एमिसामिष्णु
 णो॥ संबुकुमारोतहेवत्रणिरुहो॥ वाहत्तरिकोडीउ॥ उजंतेसत्तसया
 सिरसा॥ ४॥ रामसुयाविणजणा॥ लाडणारिंदाणपंचकोडीउ॥ पावा
 एगिरिसहिरो॥ एिच्चाणगयाणमोतेसि॥ ५॥ पंडुसयातिणजणा॥ दिविडण
 रिंदाणत्रवकोडीउ॥ सेतुंजयगिरिसिहरे॥ एिच्चाणगयाणमोतेसि॥ ६॥
 संतेजेवलनदा॥ जडवणरिंदाणत्रवकोडीउ॥ गजपंथेगिरिसिहरेणि
 च्चाणगयाणमोतेसि॥ ७॥ रामहणुसुगीउ॥ गवगवारकेवणीलमहाण
 लो॥ एवणवदीकोमीउ॥ तुंगियगिरिणिबुदेवंदे॥ ८॥ एंगणंगकु
 मारा॥ कोडापंचधुणिवरेसहिया॥ सवणगिरिवरसिहरे॥ एिच्चा
 णगयाणमोतेसि॥ ९॥ दहसुहरायस्सुमुआठकोमीपंचधुणिव
 रिसहिया॥ रेवाणइतमंगो॥ एिच्चाणगयाणमोतेसि॥ १०॥ रेवाणइत
 रिपच्छिमनायमिसिखवरकूडे॥ दोच्चकीदहकप्ये॥ आकडयको
 णिबुदेवंदे॥ ११॥ चक्रवाणीवरणयरो॥ दक्षिणनायमिचूलगिरि

लपूः कृत्स्नं जगत्प्रमिदं प्रकटीकरोषि। मस्यो न जातु मरुतां च
 लिता चलानां दीपो परस्वमसिनाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ ना
 स्तं कदाचिदुपयासितं राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युग
 पज्जगति ॥ नां नो धरोदर निरुद्ध महाप्रभावः सूर्यातिशायि
 महिमासि मुनींश्च लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांध
 कारं ॥ गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विभ्रजते तव मुखा
 ब्रम तत्प्रकांतिविद्योतय ज्जादपूर्वशशांकविंवां ॥ १८ ॥ किंश
 च्चेरीषु शशिनाक्लि विवश्रतावायुष्मन्मुखे डलितेषु तम
 स्सुनाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके कार्ये कि
 यज्जलधरैर्जलभारतमैः ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विजाति
 तावकत्रानैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजो मा हृमणि
 शुयाति यथा महत्त्वं नैवं तु काचत्रकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥
 ममेव हरिहरद्वय एव दृष्ट्वा ॥ दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयितोषमे
 ति ॥ किं वीक्षते न भवतां वियेन नात्पः ॥ कश्चिन्मनो हरति
 नाथ नवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रा
 न्नात्मा सुतं ब्रह्मपमं जननी प्रसुता ॥ सर्वादिशोद्धतिभानि
 सहस्ररस्मिंश्चैव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥ २२ ॥ त्वामो
 मनंति मुनयः परमं प ॥ मादित्यवर्णममलंतमसः पुरस्ता
 त् ॥ त्वामेव सम्पुपलम्पजयंति मृकंतात्पः ॥ शिवः शिवपदस
 मुनींश्च यथा ॥ २३ ॥ त्वामवयं विभुमचित्तमसंख्यमर्षं ॥ ब्रह्मा
 णामीश्वरमतं तमनंगकेतुं ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं
 ज्ञानं स्वरूपममलं प्रवदंति संत ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधाश्चि
 तबुद्धिवोधा ॥ स्वशं करोसि नुवनत्रयशं करत्वात् ॥ धातासि
 धीरसिवमार्गविधेर्विधानात् ॥ अकं त्वमेव जगत्तपुस्वी
 त्तमोसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमंस्त्रिभुवनार्तिहरां यनाथ ॥ तुभ्यं नमः
 क्षितितलामलनूषणाय ॥ तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय
 तुभ्यं नमोजितज्ञबोदधिसोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोत्रयदि
 नामगुणैरशौघैस्त्वं संश्रितो निरवकासतया मुनीश ॥ दोषै
 रुपात्तविबुधाश्च यजातगर्भैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपि क्षितोसि ॥

६

वीत्र

स्तोत्रेकिसाहस्रपितं प्रथमं जिनेंद्रं ॥ १ ॥ युगं ॥ बुध्याविनापिविबुधा
 र्चितपादपीठं ॥ स्तोत्रं समुद्यतिमतिविगतत्रयोदशं ॥ बालं विहाय जला
 संस्थितमिडुविं व मनः कश्चिज्जितनः सहसाग्रहीतुं ॥ ३ ॥ वक्रं गुणा
 नगुणसमुद्राशांककांतान् ॥ कस्तेहमः सुरगुरुप्रतिमोपिवुध्वा ॥
 कल्यांतकालपवनोदतनक्रवक्रं ॥ कोवातरीतुमलमंबुनिधिं नुजा
 ष्यां ॥ ४ ॥ सोहंतथापित्वनक्तिवशात्सुनीश ॥ कर्तुंस्तवं विगतत्राक्ति
 रपिप्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्यमृगोमृगेंद्रं ॥ नाभ्येति किंतिज
 शिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतापरिहासधाम त्व
 ङ्गः क्तिरेवमुखरीकुरुते वलान्मां ॥ यत्कोकिलः किलमधोमधुरं
 विरौति ॥ तच्चारुचक्षुकलिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वसंस्तवेतनवसं
 ततिसंनिवृत्तं ॥ पापं द्वाणं ह्यमुपैति शरीरज्ञाजं ॥ आक्रांतलो
 कमलिनीलमसेषमाशु ॥ सूर्याशुचिन्नमिवशास्त्रं मंधकरं ॥
 मत्वेतिनाथतवस्तंस्तवं नमयेद ॥ मारुततेतनुधियाभिर्वधनावा
 व ॥ चेतोहरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु ॥ मुक्ताफलकृतिमुपैति नृ
 दविंड ॥ ७ ॥ आस्तांतवस्तवतमस्तसमस्तदोषं ॥ त्वत्संकयापिजग
 तांडरितानिहंति ॥ हरेसहस्रकिरणः कुरुते प्रजेव ॥ पद्माकरेषु ज
 लजानिविकारांजां जि ॥ ८ ॥ नात्पशुतं भुवननृषणभूतनाथभूते
 र्गुणैर्भुविभवंतमनिष्टुवंतः ॥ त्रुत्यानवंति नवंतो ननु तैर्न किंच नृसा
 श्रितं यद्गृह्णात्प्रसमं करोति ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा नवंतमनिमेषविलोकनी
 यं नात्प्रतोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वापयः त्रिशिकरकृतिड
 ग्धसिंधोः क्षारं जलं जलनिधेरसितुं कश्चेत् ॥ १० ॥ येः शांतरागरुचि
 निः परमाणुनिस्त्वं ॥ निर्मापिस्त्रिभुवनैकललामभूत् ॥ तावंतां व
 खलुतेष्वणवः पृथिव्यां यत्ते समातमपरं नहिरूपमस्ति ॥ ११ ॥ वक्रं
 कृते सुरतरोरानेत्रहारिनिःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं वि
 वंकलं कमलिनं कृतिशाकरस्य यद्दासरेजवतिपांशुपलाशाक
 ल्यां ॥ १२ ॥ संपूर्णमंडलशाशांककलाकलापश्रुतागुणास्त्रिभुवनं
 तवलंधयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं कस्तान्निवा
 रयति संवरतोयथेषु ॥ १३ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगानिर्नी
 तं मनागपि मतो न विकारमार्गं ॥ कल्यांतकालमरुताचलिताचले
 नाकिमंदरादिशि धिरंचलितं कदाचित् ॥ १४ ॥ निर्धूमवर्तिरप्यवर्जितते

लघुः कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि। मम्यो न जातु मरुतांच
लिताचलानां दीपो परस्वमसिनाथजगत्सकाशाः ॥१६॥ ना
स्तं कदाचिदुपयासिन राहुगम्यः स्पष्टीकरोषि सहसा युग
पज्जगंति ॥ नां नो धरोदर निरुद्ध महाप्रभावः सूर्योतिशायि
महिमासि मुनीं इलोके ॥१७॥ नित्योदयं दलितमोहमहांध
कारं ॥ गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विश्राजते तव मुखा
ब्जमनस्य कांतिविद्योतयज्जागदपूर्वशशांकविंवां ॥ १८॥ किंश
र्वरीषु शशिनाक्लि विवश्वतावायुष्मन्मुखे डलितेषु तम
सुनाथ ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनिजीवलोके कार्ये कि
यज्जलधरैर्जलभारतमैः ॥ १९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विनातिह
तावकशां नैवं तथा हरिहरदिषु नायकेषु ॥ तेजो माहमणि
षु याति यथा महत्वं नैवं तु काचशकले किरणकुलेपि ॥ २०॥
ममेव हरिहरद्वय एव दृष्ट्वा ॥ दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयितोषमे
ति ॥ किं वीक्षते न भवतां नु विये न नात्यः ॥ कश्चिन्मनो हरति
नाथ नवांतरेपि ॥ २१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रा
न्नाम्यासुतं बडुपमं जननी प्रसुता ॥ सच्चीदिशो दधति नानि
सहस्ररस्मिंशचे वदिगजनयति स्फुरदं शुजालं ॥ २२॥ त्वामा
मनंति मुनयः परमं प ॥ मादित्यवर्णममलंतमसः पुरस्ता
त् ॥ त्वामेव सम्पुपलम्पजयेति मृकंतास्यः शिवः शिवपदस्य
मुनीं प्रपंथाः ॥ २३॥ वामव्यये विभुमचित्तमसंख्यमद्यं ॥ ब्रह्मा
णमीश्वरमतं तमतंगकेतुं ॥ योगीश्वरं विदितयोगमतेकमेकं
ज्ञानं स्वरूपममलं प्रवदंति स ॥ २४॥ बुद्धस्वमेव विबुधाश्चि
तबुद्धिवोधा ॥ त्वं शं करोसि नुवनत्रयशं करत्वात् ॥ धातासि
धीरसिवमार्गविधेर्विधाना ॥ अक्तं त्वमेव जगत्तपुस्यो
त्तमोसि ॥ २५॥ तुभ्यं नमंस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ॥ तुभ्यं नमः
क्षितितलामलनृषणाय ॥ तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमोजितज्ञबोदधिसोषणाय ॥ २६॥ कोविस्मयोत्रयदि
नामगुणैरशौषैस्त्वं संश्रितो निरवकासतया मुनीनां दोषै
रुपात्तविबुधाश्प्रयजातगर्भैः स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीदितोसि ॥ २७॥

६

वीत्र

तोसि २७

उच्चैश्चोक्तक संश्रितमुत्तमयुष्मानातिरूपममलंनवतोनितांते
 स्पष्टोच्चसत्किरणमस्ततमोवितानं॥ विंवरवेरिवपयोधरपार्श्वव
 ति॥२०॥ सिंहासनेमणिमयूषशिषाविचित्रेविश्राजतेतववपुःक
 नकावदातं॥ विंववियद्विलसदंशुलतावितानं॥ उंगोदयादिशिर
 सीवसदस्यधुमे॥२१॥ कुंदावदातचलचामरचारुशोभंविश्राजते
 तववपुःकलयोतकांतं॥ उच्चछत्रांकशुचिनिर्भरवारिधारमुच्चै
 स्तटंशुगिरेरिवशातकोनं॥२२॥ छत्रत्रयंतवविनातिश्रांकांकं
 तमुच्चैस्थितंस्वगितनानुकरप्रतापं॥ मुक्ताफलप्रकरजालवि
 द्दुहसोभं॥ प्रहापया॥ त्रिजातःपरमेश्वरत्वं॥२३॥ गंभीरतारवपु
 रितद्विग्विनागस्रैलोक्यलोकशुभसंगमभृतिदक्षः॥ सधर्म
 राज्यजयघोषणघोषकसन्॥ खेडंडनिर्धनतितेयशसः॥ प्रवादी
 २४॥ मंदारसुंदरनमेरुसुंपारिजातसंतानंकादिक्कसमोकरदृशि
 रुद्धा॥ गंधोदविंडुशुभमंदमरुत्पातादिः॥ आदिवःपततितेव
 यसांततिर्वा॥२५॥ शुभतप्रजावलयनृशिविजाविज्ञोस्ते॥ लोका
 त्रयेक्षतिमतांक्षतिमाक्षिपंती॥ शोद्धृद्वाकरनिरंतरनृसंभ
 दीप्याजयत्पिनिशामपिसौमसौम्या॥२६॥ स्वर्गीयवर्गगममा
 र्ग्विमा॥ गणेषुःसधर्मतत्वकथतेकपटुस्त्रिलोकादिमधुनि
 र्भवति तेविशंदाथतर्वाजायास्वजावपरिणामगुणप्रयोऽप्यः॥२७॥
 उन्निहहेमनवपंकजपुंजकांतीपयुद्धसन्नरवमपूषशिरवा
 निरामौ॥ पादौपदानितवयत्रजिनेऽधत्तः॥ पद्मानितत्रविबुधा
 परिकल्पयंतिः॥२८॥ इच्छेयथातवविनृत्तिरंनृर्जितेऽः॥ धर्मो
 पदेत्नातविधौततथापरस्य॥२९॥ यादृगप्रजादिनरुतः॥ प्रहतांध
 कारा॥ तादृगुक्तोप्रहगणस्यविकारोपि॥३०॥ श्रयोतन्मदाक्लि
 विलोककपोलमूल॥ मत्तत्रमम्रनादविद्वहकोयं ऐरावतान
 मित्रमुद्यतमापतंतं॥ दृष्टानयंनवतितो नवदाश्रितानां॥३१॥ नि
 ज्जेनकुंजगलडद्वलशोणितान्कमुक्ताफलप्रकरनृषितनृमि
 नागः॥ अहक्रमःक्रमगतांहरिणाधिपोपि॥ नाक्रामतिक्रमयुगा
 चलसंश्रितंते॥३२॥ कल्यांतकालपवनोः॥ चतवृत्तिकल्पं॥ हाव
 नलंहालितमुहलमुत्फुलिगं॥ विश्वजिषेत्सुमिबन्मुखमापतंतं
 त्वन्नामकीर्तनजलंशमयत्सरोषं॥३३॥ रकेक्षणांसमदकोकिलक
 वनीलां॥ क्रोधोदतंफणितमुत्फणमापतंतं॥ आक्रामतिक्रमयुगे
 ननिरस्तशंका॥ च्चन्नामनादसतीहृदियस्यपुंसः॥३४॥ वलाउद
 गगजगर्जितनीमनाद॥ माजौवलंवलवतामपिनृपतीनां॥ उच्चदि

वाकरमयूषत्रिषापविहं। त्वकीर्तनात्तमश्वाश्रुतिदामुपैति॥४२
 कंताग्रत्तिन्नगजशोणितवरिवाह॥ वेगावतारतरणसुरयोध
 मे॥ युद्धेजयंविजितडुर्जयजेययक्षाः। त्वाद्यंपंकजवनाश्रयिणे
 लजंते॥४३॥ अंतोनिधौलुमितनीषणतक्रचक्रो॥ पावीनपीठ
 नषदोत्वणवाडवानौ॥ रंगतरंगशिषिरस्थितयानपात्रांशू
 संविहायजवतःस्मरणाच्छ्रुंति॥४४॥ उरूतनीषणजलोद्भू
 रभुजाःशोभांदशामुपगताश्रुतजीविताशाः॥ वत्सादपंक
 जरजोमृतादिग्धदेहामर्त्याजवंतिमकरधूजतुल्यरूपाः॥४५॥
 पादकंठमुरुश्रंखलवेष्टितांगा॥ गाढं वृहन्निगडकोटिनिघृष्ट
 जंघा॥ त्वंताममंत्रमन्त्रिंमनुजाःस्मरंतः॥ सद्यस्वयंविगत
 बंधनयानवंति॥४६॥ मत्तद्विप्रेन्द्रमृगरजदवानलाहि॥ संग्रामवारि
 धिमहोदरबंधनोत्तं॥ तस्माश्रुताश्रामुपयातिनयंनियेवयस्तावकं
 स्तवमिमंमतिमानधीति॥४७॥ स्तोत्रस्रजंतवजिनेन्द्रगुणैर्निबंधं
 तक्तमयारुचिरवर्णविचित्रपुष्पं॥ धत्तेजतोयश्हकंवगताम
 जस्रं॥ तंमानतुंगमवशासमुपैतिलक्ष्मी॥४८॥ इतिश्रीमानतुंग
 आचार्यविरचितेश्रीनक्तामवस्तोत्रसंपूर्णं॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥
 ॥६०॥ श्रीसखत्येतमः॥ अथदशसूत्रलिख्यते॥ अथस्वाध्यायः॥
 त्रैकाल्यं प्रथमं नवपदसहितं जीवषट्कायलेत्रयाः पंचान्पेर्वस्ति
 काया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्र्येदाः॥ इत्येतन्मोक्षमूलं त्रि
 वतमहितैः प्रोक्तमर्हन्निशैः प्रत्येतिश्रद्धातिस्मृतिचमतिम
 न्यः सर्वैश्चंद्रदृष्टिः॥ १॥ सिद्धेजयप्पसिद्धेचतुर्द्विहत्राराहणाफलं
 यत्तेवंदितात्प्ररहंतेवोचंत्त्राराहणाकमसौ॥ २॥ उज्जोवणमु
 ज्जवणंणिवाहणंसाहंणिचंणंदंसाणणाएचरितंतवाणमा
 हणान्णिया॥ ३॥ इतिस्वाध्यायः॥ मोक्षमार्गस्यनेतारंनेतारं
 कर्मनृत्तांज्ञातारंवेश्वतत्वात्॥ वंदेततुणालजुये॥ ४॥ सम
 ग्दर्शनंज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गाः॥ ५॥ तत्त्वार्थप्रधानंसा
 म्यग्दर्शनं॥ ६॥ तन्निर्गोदधिगमाद्य॥ ७॥ जीवजीवप्रववं
 धसंवरनिर्जरा मोक्षस्ति त्वं॥ ८॥ नामस्थापनाद्व्यनवावतस्व

ए-च

पकरणेष्टवेदियं॥१७॥ लब्धुपयोगोनावेदियं॥१८॥ स्पर्शरसनघ्राण
 चक्षुःश्रोत्राणि॥१९॥ स्पर्शरसांधवर्णश्रवणस्तदर्थः॥२०॥ श्रुतमनि
 द्रियस्या॥२१॥ वनस्पतंतानामेकं॥२२॥ कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्य
 दीनामेकैकवृध्यानि॥२३॥ संज्ञितः समनस्काः॥२४॥ विग्रहगतौ
 कर्मयोगः॥२५॥ अनुश्रौणगतिः॥२६॥ अविग्रहाजीवस्या॥२७॥
 विग्रहवतीचसंसारिणः प्राक्चतुर्भ्यः॥२८॥ एकसमयाविग्रहा॥२९॥
 एकंक्षेत्रीनवानाहारका॥३०॥ समूर्ध्वतंगनेपपादाजनमः॥३१॥
 सचित्तशीतसंवृतांसेतरामिश्राश्चैकत्रास्तद्योनया॥३२॥ जगु
 जंडजपोतानांगर्जः॥३३॥ हेवनारकाणमुपपाद॥३४॥ शेषा
 णासमुर्ध्वतां॥३५॥ ऊदारिकवैक्रियिकहारकतैजसकाम्मण
 निशरीराणि॥३६॥ परंपरंस्वह्मं॥३७॥ पुदेस्तोसंभेयगुणं प्राक्तै
 जसात्॥३८॥ अनंतगुणोपरेशर्षा॥ अतीयाते॥३९॥ अनादि
 संवर्धेच॥४०॥ सर्वस्याधशतदादीनानात्पानियुगपदेक ^{स्त्रिंशत्} चतु
 र्भ्यः॥४१॥ तिरुपजोग मंत्या॥४२॥ गर्जसमूर्ध्वतजमाद्यं॥४३॥ उप
 पादिकं वैक्रियकं॥४४॥ लब्धिप्रत्ययेच॥४५॥ तेजसमयि॥४६॥ शु
 नेविश्रुधर्ममाघातिचाहारकंप्रमत्तसंयतस्यैव॥४७॥ नारक
 समूर्ध्वेनोनपुंसकानि॥४८॥ नदेवाः॥४९॥ श्रोत्रखिवेदाः॥५०॥ अ
 पपादिकचरमोत्तमदेहासंखेयवर्षायुषोनपवर्षायुषः॥५१॥
 त्र॥ इतितत्वार्थ॥ धिगमेमोक्षशास्त्रेद्वितीयोध्याय॥२॥ रत्नत्र
 क्कंवालुकायंकभूमतमोमहातमप्रमात्रमयोधनांबुवाताकात्र
 प्रतिष्ठासप्तयोध॥३॥ तासुत्रिंशत्संच विंशतपंचदशदशत्रि
 पंचोत्तेकतरकशतसहस्राणिपंचचैवयथाक्रमे॥४॥ नारकानि
 त्याश्रुततस्त्रेयाः परिणामदेहवेदनाविक्रया॥५॥ परस्परोदीरत
 डःखाः॥६॥ संक्षिप्तसुरोदीरितडःखाश्चप्राक्चतुर्भ्यः॥७॥ अनेष्ट
 कत्रिसप्तदशसप्तदशवाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाः सत्वा
 नांपरास्थितिः॥८॥ जंबूद्वीपलवाणोदादयः श्रुततामानोक्षीपस
 मुद्राः॥९॥ विधिर्विक्रंजाः पूर्वपूर्वपरिक्षेपिणोवर्लयाकृतयः॥१०॥
 तन्मध्येमेरुनाभिर्हेतोयोजतशतसहस्रविक्रंजो जंबूद्वीपगर्षा
 नरतहैमवतहरिविदेहरमाकहैरण्यवतैरावतवर्षाः क्षेत्राणि

१०॥ तदिनाजनःपूर्वापरायताहिमवन्महाहिमवन्निषधनीवक
 शिखरिणोवर्षधरपर्वताः॥११॥ हेमार्जुनतपनीप्रबैद्युर्ज
 तहेममयाः॥१२॥ मणिविचित्रपाश्र्वाःऊपरिमूलेचतुस्रविस्त
 राः॥१३॥ पद्ममहापद्मतिगिञ्जकेसरिमहापुंडरीकपुंडरीकाक
 दास्तेषामुपरि॥१४॥ प्रथमोयोजनसहस्रायामःस्तद्विंशति
 नोऽरुदः॥१५॥ द्वायोजनवगाहः॥१६॥ तन्मध्येयोजनंपुष्करं
 तद्विगुणं द्विगुणं कृदाःपुष्कराणिच॥१७॥ तन्निवासिनोदे
 व्यःश्रीक्रीडतिकीर्त्तिकुशलक्ष्मःपत्न्योपमस्थितपःससाम
 निकपरिषत्काः॥१८॥ गंगासिंधुरोहित्रोहितास्याहरिहरि
 कांताशीतोत्तरीद्वारीनरकांतसुवर्णरूपकूलारकारको
 दासरितस्तनमध्यगाः॥१९॥ योर्धयोःपूर्वोपूर्वगाः॥२०॥ शो
 भास्वपरगाः॥२१॥ चतुर्द्वानदीसहस्रपरिवृतागंगासिंधाद
 योनद्यः॥२२॥ नरतपस्वित्रातिपंचयोजनत्रातविस्तारःषड्भुजै
 नविंशतिनागायोजनस्य॥२३॥ तद्विगुणं द्विगुणं विस्तारावर्षध
 रवर्षाविदेहांताः॥२४॥ उत्तरादक्षिणातुष्मा॥२५॥ नरतैरावत
 योर्ध्विज्ञासौषट्समायास्यामुत्सर्पिणीवसर्पिणीत्याः॥२६॥
 तास्यामपराभूमयोवस्थिताः॥२७॥ एकद्वित्रिपत्न्योपमस्थित
 योहेमचतकहरिवर्षकदेवऊरुवकाः॥२८॥ तथोत्तराः॥२९॥
 विदेहेषुसंखेयकालाः॥३०॥ नरतस्यविंशतिजंघ्नीपसनवति
 त्रानागाः॥३१॥ द्वितीयांखंडे॥३२॥ पुष्करार्धच॥३३॥ प्राग्मा
 तुषोत्तरानुष्याः॥३४॥ आर्षस्त्रिंशश्च॥३५॥ नरतैरावतवि
 देहाःकर्मभूमयोत्तरदेवऊरुत्तरस्यः३६॥ स्थितीपरावरेत्रिप
 त्न्योपमांतर्माहूर्त्ते॥३७॥ तिर्यग्योनिजातांच॥३८॥ श्रितेन
 त्वार्थद्विगमेमोक्षशास्त्रे॥३९॥ तृतीयोध्याय॥४०॥ देवाश्चुसि
 कायाः॥४१॥ अदितस्त्रिषुपीतांतलेश्याः॥४२॥ द्वाष्टपंचदशदशविक
 ल्याःकल्पोपपन्नपर्यताः॥४३॥ इन्द्रसामाः॥ नित्रायस्त्रिंशःपारिष
 दात्प्रहलोकपालातीकप्रकीर्त्तकानियोगपकित्विषिकायै
 कत्राः॥४४॥ त्रायस्त्रिंशद्वोकपालवर्जाभंतरज्योतिष्काः॥४५॥ पूर्व
 योर्धीजाः॥४६॥ कायप्रवीचाराभ्राएशानात॥४७॥ शौघाःसर्पिरूप

राष्ट्रमतः प्रवीचाराः ॥ ७ ॥ परे प्रवीचाराः ॥ ८ ॥ जवनवासिनो सुरताग
 विकल्पुर्णाग्निवातस्तनितोदधिदीपदेकुमाराः ॥ १० ॥ अंतराः कि
 नरकिंपुरुषमहोरगांधर्वयक्षराक्षसजृतपिशाचाः ॥ ११ ॥ ज्योतिष्का
 सखीचंद्रम सौगहनक्षत्रशकीर्त्तिकतारकाश्च ॥ १२ ॥ मेरुप्रदक्षिणा
 नित्यगतयो नृलोकोः ॥ १३ ॥ तत्कृतः कालविजागा ॥ १४ ॥ वहिरवस्थि
 ताः ॥ १५ ॥ वैमानिकाः ॥ १६ ॥ कल्पोपपन्नाः कल्यातीताश्च ॥ १७ ॥ उ
 पयुपरि ॥ १८ ॥ सौधर्मैशानर्शनकुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलांत
 वकापिष्टशुक्रमहाशुक्रत्रातारसंहप्रारिष्यानतप्राणतयोरार
 णामृतयोर्नवसुरैवेपकेषुविजयवैजयंतजयंतापराजितेषु
 वीर्यसिद्धौच ॥ १९ ॥ स्थितिश्चावसुखकृतिलेखाविशुद्धिदियाः
 वधिविषयतोधिकाः ॥ २० ॥ प्रतिशरीरपरिश्रहाजिमानतोहीन
 रथापीतपक्षशुक्लेत्रपाहिनिशेषेषु ॥ २१ ॥ अग्निदेवकेसुः क
 ल्याः ॥ २२ ॥ ब्रह्मलोकलयलौकांतिका ॥ २३ ॥ सारस्वतादिस्त
 न्यरुणागर्दतोयतुषितामावाधिरिषाश्च ॥ २४ ॥ विजयादिषु
 चरमाः ॥ २५ ॥ पपादिकमनुष्येभ्यः श्रेष्ठस्तिर्यग्योतयः ॥ २६ ॥ स्थि
 तिरसुरतासुं पृथीपशोषाणां सागरोत्रिपल्पोपमार्द्धहीनम
 ताः ॥ २७ ॥ सौधर्मैशानयोसागरो यमेधिके ॥ २८ ॥ सनकुमारमा
 हेन्द्रयोसप्तः ॥ २९ ॥ त्रिसप्ततवैकादशत्रयोदशपंचदशत्रिरधि
 कानितु ॥ ३० ॥ अरणाचुताहर्मकेकेतनवसुरैवेपकेषुविज
 यादिषुसर्वीर्यसिद्धौच ॥ ३१ ॥ अपरापल्पोपमधिकं ॥ ३२ ॥ पर
 तः परतः पूर्वापूर्वांतराः ॥ ३३ ॥ नारकाणांचद्वितीयादिषु
 दशवर्षसहस्राणिप्रथमायां ॥ ३४ ॥ जवनेषुच ॥ ३५ ॥ अंतराणांच
 ३६ ॥ परापल्पोपमधिकं ॥ ३७ ॥ ज्योतिष्काणांच ॥ ३८ ॥ तदष्टम
 गोपरा ॥ ३९ ॥ लौकांतिकानाम् सौसागरोपमाणिसर्षेषां ॥ ४० ॥
 ॥ इति तत्त्वार्थाधिगामे मोक्षशास्त्रे चतुर्थोऽध्याये ॥ ४१ ॥ अजी
 वकायाधर्माधर्माकाशपुङ्गवाः ॥ ४२ ॥ अग्निः ॥ ४३ ॥ जीवाश्चाशनि
 त्यावस्थितामरुपाणि ॥ ४४ ॥ कृपाणिपुङ्गवाः ॥ ४५ ॥ आकाशादेक
 इत्याणि ॥ ४६ ॥ निःक्रियाणि च ॥ ४७ ॥ असंख्येयाः प्रदेशाधर्माधर्मैक
 वानां ॥ ४८ ॥ आकाशत्रयानंता ॥ ४९ ॥ संख्येयासंख्येयाश्चपुङ्गवानां ॥ ५० ॥

नाणोः॥१॥लोककासेवगाहः॥१२॥धर्मधर्मयोःकृत्वाएक
 प्रदेशादिषुभोज्यःपुद्गलानां॥१३॥असंख्येयजागदिषुजीवा
 नां॥१४॥प्रदेशसंहारविसर्पीज्यांशदीपवत्तारुणतिस्थित्युप
 होधर्माधर्मयोरुपकारः॥१५॥आकाशास्वावगाहं॥१६॥शरीर
 वाङ्मनःश्राणापानापुद्गलानां॥१७॥सुखदुःखजीवित्तिमर
 णोपग्रहाश्च॥१८॥परसरोपग्रहोजीवानां॥१९॥वर्तनापरिण
 मक्रियापरत्वापरत्वेचकालस्य॥२०॥स्पर्शरिसगंधवर्णवंतपु
 ङलाः॥२१॥त्राष्टबंधसौदम्पस्थोत्पसंस्थानजेदतमश्नुयात्
 योद्योतवंतश्च॥२२॥अणवःस्कंधाश्च॥२३॥जेदसंघातेन्यःउत्पद्यते
 जेदादणुः॥२४॥जेदसंघाताभ्यांचाक्षुषः॥२५॥सद्बलक्षणं॥२६॥उ
 त्पादमयद्यौमयुक्तंमत्तत्रणेतज्ञावात्मयंतिसं॥२७॥अर्पितान
 र्पितासिधेः॥२८॥स्निग्धसूक्ष्मत्वाबंधः॥२९॥नजघन्यगुणानां॥३०॥
 गुणसामेसदृशास्तं॥३१॥अदिकादिगुणानां॥३२॥बंधेधिकौ
 परिणामिकौच॥३३॥गुणपर्यवद्भवं॥३४॥कालश्च॥३५॥सोने
 तसमयः॥३६॥इत्याश्रयानिर्गुणगुणाः॥३७॥तज्ञावपरिणाम
 ३८॥इतित्वार्थीधिगमेमोक्षशास्त्रेयंमोक्षध्याये॥३९॥॥॥
 कायवाङ्मनकर्मयोगः॥४०॥सत्राश्रवः॥४१॥शुभपुण्यपसाशुभप
 पस्यः॥४२॥सकषायाकषाययोःसांप्रायकेर्षापययो॥४३॥इन्द्रिय
 कषायावृत्तक्रियाःपंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याःपूर्वस्मनेदा
 :॥४४॥तीव्रमंदजाताज्ञातज्ञावाधिकरणावीर्यविशेषेस्तद्विश्रो
 षः॥४५॥अधिकरणंजीवाजीवाः॥४६॥आद्यंसंरंजसमारंजारंजये
 गकृतकारितानुमतकषायविशेषेस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकत्राः
 ४७॥निवर्तनानिद्वेषसंयोगानिसर्गद्वैचतुर्द्विजिनेदा॥४८॥॥॥त
 स्रदोषनिष्कवमात्स

णयोगः॥४९॥दुस्वशोकतापाकंदन
 यस्थानान्यसद्वैद्यस्य॥५०॥नूतवर्तिनुकंषादानसरागसंय
 द्योगाहंतिशोचमितिसद्वैद्यस्य॥५१॥केव
 देवावर्णवादीदर्शनमोहस्य॥५२॥
 चारित्रमोहस्य॥५३॥वकारंजपरिग्रहत्वंतारकसायुषः

मायातेर्योगयोनस्य ॥१६॥ अत्पारंजपरिग्रहत्वंमानुषस्य ॥१७॥ स्वभाव
 मार्हेत्वंच ॥१८॥ निःश्रीलवृत्तत्वंचसर्वेषां ॥१९॥ सरागसंयमासंयमा
 कामनिर्जरा ॥ बालतपांसिदेवस्य ॥२०॥ सम्पत्कंच ॥२१॥ योगवक्रंत
 विसंवादानंच ॥२२॥ शुभस्यनाम्नः ॥ तद्विपरीतंशुभस्य ॥२३॥ दर्शन
 विशुद्धिर्विनयसंपन्नताश्रीलवृत्तेषुनतीचारोनीक्षणज्ञानोपये
 गसंवेगोशक्तिस्त्यागशक्तिस्तपसाधुसमाधिर्वैयावृत्त्यकरणम
 हेदाचार्यवक्रुश्रुतनक्तिप्रवचननक्तिरावरपकापरिहाणिमार्ग
 प्रभावानाप्रवचनवत्सलत्वमितितीर्थकरत्वस्य ॥२४॥ परात्मनि
 दाप्रसंसेसदसंजुणोच्छादनोसदभावनेचनचैर्गोत्रस्य ॥२५॥ तद्विप
 र्ययौर्नीचैर्वैस्नुत्सेकौचौत्तरस्य ॥२६॥ विघ्नकरणमंतरायस्य ॥२७
 शतितत्त्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेषुधोधायः ॥६॥ हिंसावृत्तस्ते
 यावृत्तपरिग्रहेभ्योविरतिर्वृतं ॥ देशसर्वतोणुमहती ॥२८॥ तत्स्यै
 र्पर्येजावनापंचपंच ॥ ३॥ वाङ्मनोणुमीर्यादाननिक्षेपणसमे
 त्यालोकितपानिज्ञेजनातिपंच ॥ ४॥ क्रोधलोभनीरुत्वहास्यप्र
 त्पारखानान्पुवीचीनापणंचपंच ॥ ५॥ शून्यागारनिमोक्षिताव
 सपरोपरोधारकरणजैद्वशुद्धिसधर्माविसंवादाःपंच ॥ ६॥ स्त्री
 रागकथाश्रवणतन्मनोहरंगतिरीक्षणपूर्वरतानुसमरण
 वृषेष्टरसस्वशरीरसंस्कारस्यागापंच ॥ ७॥ मनोज्ञामनोज्ञैश्चि
 विषयरागद्वेषवर्जितानिपंच ॥ ८॥ हिंसादिष्विहामुत्रापायाव
 द्यदर्शनं ॥ ९॥ दुःखमेवा ॥ १०॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्यानि
 चसत्वगुणाधिकक्तिरूपमानाविनयेषु ॥ ११॥ जगत्कायस्वभावे
 वासंवेगवैराग्यार्थ ॥ १२॥ प्रमत्तयोगात्याणव्यपरोपणं हिंसा ॥ १३
 असदनिधानमनृतं ॥ १४॥ अदत्तादातंस्तेषु ॥ १५॥ मैयुनमवृह
 १६॥ मूर्च्छापरिग्रह ॥ १७॥ निःशल्पोवृत्ती ॥ १८॥ अर्ग्येनगास्थ ॥
 १९॥ अणुवृत्तोगारी ॥ २०॥ दिदेशानर्थदेडविरतिसामाधि
 कशोषधोपवासोपनोगपरिमाणातिथिसंविनागवृत्तसंय
 न्म ॥ २१॥ मारणातिकीसह्येषणजोषिता ॥ २२॥ शंकाकाद
 विचिकित्सान्पहृष्टिप्रशासासंस्तवाः ॥ सम्पादष्टेरतीचारा २३
 वृत्तश्लेषुपंचपंचयथाक्रमं ॥ २४॥ बंधवधघेदातिनारोप

एतन्नपाननिरोधाः ॥ २५ ॥ मिथ्योपदेशरहोमाख्यानरुदले
 खक्रियान्पासापहारसाकारमंत्रनेदाः ॥ २६ ॥ स्तेनप्रयोगतद
 कृतादानविदुहराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूप
 कम्बवहाराः ॥ २७ ॥ परविवाहकरणेत्वरिकापरिगृहीताभ्र
 पगृहीतागमनानंकीडाकामतीव्रान्निवृत्तिनिवेशाः ॥ २८ ॥ दे
 त्रवास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकृप्यप्रमाणातिक्र
 माः ॥ २९ ॥ उर्ध्वस्तिर्योग्यतिक्रमक्षेत्रदक्षिण्यतराधान्या
 नि ॥ ३० ॥ आनयनशेषप्रयोगशुद्धरूपानुयाजुलक्षेयाः ॥ ३१ ॥ कं
 दर्पकौकुचमौखर्षीसमीक्ष्याधिकरणोपज्ञोगपरिज्ञोगन्य
 क्वानि ॥ ३२ ॥ योगः ॥ प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३३ ॥
 अस्यवेदिताप्रमाज्जितोत्सर्गादानसंस्तरोपक्रमाणानादर
 स्मृत्यनुपस्थानानि ॥ ३४ ॥ सचित्तसंबंधसन्निश्रान्तिषवडः
 पक्काहारः ॥ ३५ ॥ सचित्तनिक्षेपापिधानपरमपदेशकरण
 मात्सर्पकालातिक्रमाः ॥ ३६ ॥ जीधितमरणसंज्ञामित्रानुय
 गमुखानुबंधनिदानानि ॥ ३७ ॥ अनुग्रहार्थस्वस्पातिसर्गेव
 नं ॥ ३८ ॥ विधिद्वयदाहपात्रविशेषातद्विशेषा ॥ ३९ ॥ शति
 तंत्वार्थाधिगमेमोक्षशास्त्रेसप्तमोऽध्याये ॥ ४० ॥ मिथ्याद
 र्शनाविरतिप्रमादकषायोगाबंधहेतवः ॥ ४१ ॥ सकषायत्वान्जी
 वः कर्मणोयोगपानंपुरुलानादत्तेसंबंधा ॥ ४२ ॥ प्रकृतिस्थित्यनु
 ज्ञागप्रदेशास्तद्विधयः ॥ ४३ ॥ आद्योज्ञानदर्शनावरणवेदनी
 यमोहनीयापन्नामगोत्रांतरायाः ॥ ४४ ॥ पंचनवद्वष्टाविंशति
 चतुर्विंशत्वारिंशद्विपंचनेदाययाक्रमं ॥ ४५ ॥ मतिष्कृतावधि
 मनःपर्ययकेवलानां ॥ ४६ ॥ चतुरचतुरवधिकेवलानां ॥ ४७ ॥
 ज्ञानिज्ञानिज्ञाप्रचलाप्रचलाप्रचलास्मानगृह्यश्रु ॥ ४८ ॥
 दसचेद्य ॥ ४९ ॥ दर्शनावरिन्नमोहनीयाकषायकषयवेद
 नीयाख्यास्त्रिद्वितवषोडशनेदाः ॥ अंतंतानुवंसम्पत्कमि
 थ्यात्वतडज्ञयासकषायकषायोहास्परतिरतिशोकनयनुय
 सास्त्रीपुंनपुंसकवेदाः ॥ अनंतानुबंधप्रत्याख्यातप्रत्याख्यान
 संज्वलनविकल्पाश्रैकराः क्रोधमानमायातोना ॥ ५० ॥ नारक

तेर्ष्योनिमानुषदैवाति॥१७॥पतिजातिशरीरंगोपांगनिर्माण
 बंधणसंघातसंस्थानसंहतनस्पर्शगंधवर्णानुपूर्वाग्रुलघूप
 घातपरघातातपोद्योतोच्छासविहायोगतयः॥प्रत्येकशरीरत्रा
 सश्रुतगसुस्वरश्रुतसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेययत्रास्कीर्तिसेता
 णितीर्थकरत्वंच॥१८॥उच्चैर्नीचैश्च॥१९॥दातलाननोगोपने
 वीर्याणां॥२०॥आदितस्तिस्वृणामंतरायस्पत्रिसत्सागरोप
 मकोटीकोद्युःपरस्थितिः॥२१॥सप्ततिर्मेहनीयस्य॥२२॥विंश
 तितामगोत्रयोः॥२३॥त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाएपायुषः॥२४॥
 अपराघादत्रामरुतीवेदनीयस्य॥२५॥नामगोत्रयोरद्वौ॥२६॥
 त्रौषाणामंतर्मुकुती॥२७॥विपाकोनुनवः॥२८॥सयथानामः
 २९॥ततश्चनिर्जरी॥३०॥नामप्रत्ययाःसर्वतोयोगविशेषात्स
 द्दमेकक्षेत्रावगाहस्थिताः॥३१॥सर्वात्मप्रदेशेषुनंतानंतप्रदे
 शाः॥३२॥सदेद्यःशुभायुनामगोत्राणिपुण्यां॥३३॥अतोमत्त
 पायां॥३४॥इतितत्त्वार्थधिगमेमोक्षशास्त्रेषुमोक्षायः
 ॥३५॥आश्रवनिरोधःसंवरः॥३६॥सगुणिसमितिधर्मनुप्रेक्षापरीषह
 जयचारित्र्यै॥३७॥तपसानिर्जराच॥३८॥सम्पयोगतिग्रहोभुक्तिं
 ध॥ईर्ष्यानाषेष्णादाननिक्षेपोत्सर्गःसमितयः॥३९॥उत्तमक्षम
 माईवाज्जिवसत्पशौचसंवरनिर्जरालोकवोधिदुष्टैर्नयर्मस
 रखातत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षा॥४०॥मार्गामवतनिर्जरार्थपरि
 षोटमाःपरीषाहाः॥४१॥ह्युत्पियासात्रीतोष्ट्रंदंशमसकनाम्
 अरतिस्त्रीचर्यानिषद्याश्याक्रोशवधयात्रालानरोगवृ
 णस्पत्रीमलसत्कारपुरस्काराश्रजाज्ञानादर्शनानि॥४२॥सू
 क्ष्मसांपरायणद्वयस्थवीतरायोश्चतुर्दश॥४३॥एकादशजिने
 १४॥वाहरसांपरायसर्वैः॥१५॥ज्ञानावरणोश्रजाज्ञाने॥१६॥दर्श
 नमोहांतरायरिदर्शनालाभौ॥१७॥चारित्र्यमोहेनाप्यारतिश्च
 निषद्याक्रोशयात्रासत्कारपुरस्काराः॥१८॥वेदनीशेषाः
 १९॥एकादयोत्राज्यानियुगपदेकस्मिन्नेकोविंशति॥२०॥सा
 मायिकचेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपरायण

शमत्रपा

त्रयमश्रुतिप्रतिसेवनातीर्थलिङ्गलिङ्गोपपादस्थानविकल्पतः साध्याः

ष्वातमतिचारित्रं ॥ १८ ॥ अनसनावमोहस्य चक्षुषिपरिसंस्कार
 सपरित्यागविविक्तशवासनकायकेत्रावाह्यंतपः ॥ १९ ॥
 प्रायश्चित्तविनयवैषाहस्यस्वाध्यायमुत्सर्गध्यानासुखरंशे
 नचचतुर्दशपंचोदितेदायथाक्रमंजागृह्यानात् ॥ २० ॥ आत्नो
 चनाप्रतिक्रमणतडुन्नयविवेकमुत्सर्गितपश्चेदपरिहारो
 स्थापनाः ॥ २१ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः ॥ २२ ॥ आचार्योपा
 ध्यायतपस्विस्वैद्यालानागाणकुलसंघसाधमनोज्ञानां ॥ २
 ३ ॥ वाचनाप्रवृत्तानुप्रेक्षाभ्यायधर्मोपदेशाः ॥ २४ ॥ बाह्याभ
 तरोपध्मोः ॥ २५ ॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचित्तनियोधोधांन
 मांतर्मुहूर्त्तौ ॥ २६ ॥ आर्त्तरोद्धर्म्मशुक्लानिः ॥ २७ ॥ परेमोह
 हेतुः ॥ २८ ॥ आर्त्तममनोज्ञस्यसंप्रयोगे तद्विप्रयोगायस्मृति स
 मन्वाहाराः ॥ २९ ॥ विपरीतमनोज्ञस्य ॥ ३० ॥ वेदनायाश्च ॥ ३१ ॥
 निदानंच ॥ ३२ ॥ तद्विरतदेशविरतप्रमतसंयतानां ॥ ३३ ॥ हे
 सानृतस्तेयविषयसंक्षणे न्योरौद्धमविरतिदेशविरतयोः ॥ ३४ ॥
 आज्ञापायविपाकसंस्थानविचयायधर्म्मः ॥ ३५ ॥ शुक्लेश्वेर्
 व्वेविदः ॥ ३६ ॥ परेकेवलिनः ॥ ३७ ॥ पृथक्कैकत्ववितर्कविचार
 सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिमुरतक्रियानिबृत्तीनी ॥ ३८ ॥ अकयोग
 काययोगयोगात् ॥ ३९ ॥ एकाग्रये सर्वैतर्कविचारेष्वेध ॥ ४० ॥ अर्
 चारंघितीयं विततर्कश्रुतं ॥ ४१ ॥ विचारोर्थमंजनयोगसंक्र
 तिः ॥ ४२ ॥ सम्पद्दृष्टिश्चावकविरतानंतवियोजकदर्शनमोहहा
 पकोपज्ञांतमोहहापकहीणमोहजिनाः क्रमसोसंख्येयुण
 तिर्जरा ॥ ४३ ॥ पुलाकवकुसैकुसीलतिर्ग्रथस्तातकानिगुंथ
 थः ॥ ४४ ॥ इतितत्कार्याधिगमेमोहशास्त्रे नवमोध्यायः ॥ ४५ ॥ मोह
 यादज्ञानदर्शनावरणंतंरायक्षयाच्चकेवलं ॥ ४६ ॥ वंधहेतवावने
 र्जराभ्यांकल्मसकर्मविप्रमोहोमोहः ॥ ४७ ॥ उपशमिकादिन
 वत्तानांच ॥ ४८ ॥ अन्यत्रकेवलसम्पत्कज्ञानदर्शनसिद्धेते
 मः ॥ ४९ ॥ तदंतंरमूर्ध्गच्छत्यालोकांतात्पूर्वप्रयोगादसंगत्
 र्धंछेदातथागतिपरिणामच्च ॥ ५० ॥ आविष्कृतलालचक्रव
 प्रगतलेपालाववदेरंडबीजवदनिशिरावच्च ॥ ५१ ॥ धर्म्मस्तिका

मामावात ॥ इत्रकालगतलिङ्गतीर्थचारित्रप्रसेकवुखुचोदितज्ञानावगहसातमंसात्त

॥॥ अथ नवग्रह पूजन लिखिते ॥ श्लोक ॥ प्रणमाद्यंत
 तीर्थसधर्मतीर्थप्रवर्तकानव्यविद्योपशंस्यर्थग्रहाचार
 एतेमया ॥ शमार्तंडेडकुञ्जः सोम्यः स्वरि सुक्रकतांतक
 :रऊश्रुकेतसंयुक्त ॥ ग्रहगोतिकरातवः ॥ दोहा ॥ आदे
 अंतजिनवरतमं ॥ धर्मप्रकाशतहायनव्यविद्युपशं
 तिकौ ॥ ग्रहपूजाचितधार ॥ कालदोषपरभावसो ॥ वे
 कल्पच्छेतांहि ॥ जिनपूजामें ग्रहनकी ॥ पूजामिथ्यातो
 हि ॥ धाईसहीजंबूदीपमें ॥ सधिरविमिथुनप्रमांन ॥ ग्रहन
 च्चत्रतारासहित ॥ जोतिकचक्रप्रमांन ॥ पातितहीकेअनु
 सारसैं ॥ कर्मचक्रकीचाल ॥ सुषडषजानैं जीवकौ ॥ जिन
 वचनेत्रविशाल ॥ हीप्याताप्रह्नव्याकरणमें ॥ प्रह्नअंगहैं
 आता ॥ नचवाऊंमुखजतितजौ ॥ सुनंतकीयोमुखपाव
 ण ॥ अत्रधिधारमुनिराजजो कहैं पूर्वकृतकर्मजुतही
 वचअनुसारसैं ॥ हरिहृदयकाभमीपी ॥ सोरवा ॥ पूज्यौप
 द्यजितिंद ॥ गोचरलगतविषैयदा ॥ सूर्यकरैडषडंद ॥ सु
 खहोवैंसवजीवकौ ॥ एअडिह्ना ॥ पंचकल्पानकसहि
 तगपांनपंचमल्हसैं ॥ समौसरणसुखसाधिमुक्तिमांही
 वसैं ॥ आकातनकरितिष्टेसंनिधीकीजिये ॥ सूर्यग्रहै
 कैस्थांतिजगतसुखलीजिये ॥ शोर्जेजौश्रीसूर्यमांलि
 क्काल्मनिग्रहगोतिनिमतये ॥ अतरावतरावतरसं
 वौषट्ठ ॥ अत्रतिष्टष्टः ठःठः संनिथापनं ॥ अत्रमम
 संतिहितोभवन्नववषट्ठसंनिधापनं ॥ छंदत्रिभंगीने
 सोनेकीरुगारीसवसुखकारीदीरोक्षधिजलसरिल
 जे ॥ नवतापमिटाशीत्रवातसाशीधराजिनचरनन
 दीजे ॥ पञ्चप्रभुस्वामीसिवमगगामीनविकमोरसूने
 गूजतहैं ॥ दिनकरडषजाशी ॥ पापनसांशीसवसुषदर्श
 पूजतहैं ॥ जेजौसूर्यारिष्टनिवारकाययदमप्रभूजिनै
 प्राय ॥ जल ॥ शमलयागिरचंदनदाहतिकंदनजिनपद

नवग्रह
११७

वंदनसुषदाशी॥कुंकुमजुतलीजेचरननकीजेतापहरी
जेडषदाशी॥पद्मप्रणेदिनकरणे॥१॥ॐ॥वेदनाथ॥तंडल
गुनमंडितसोरजिअषंडितपूजितपंडितहितकारी॥
अक्षयपदपावेअक्षितचदावेगावेगुनसिवसुखकार
पद्मप्रनुस्वामीसिवसुखगामीनविकमोरसुंतिहुंजत
हैं॥दिनकरडषजांशी॥पापनसांशीसवसुषदाशीपूजतहैं
ॐ॥सू०॥अक्षतं॥शुभककुंदमगावोकमलचदांके
वकुलवेलिईगचित्तहारी॥मंदारलेआवंमदतनसांजे
सिवसुषपांजेहितकारी॥पद्म०दिनकरणे॥१॥ॐ॥पुष्प
ध॥गोघृतलेधरियेवाजेकरियेजरियेहाटकमयधारी
वजनवज्जलीजेपूजाकीजेदोषपुष्टादिकअघहारी
पद्मप्रनुस्वामीसिवमगगामीनविकमोरसुंतिहुंज
तहैं॥दिनकरडखजांशीपापनसांशीसवसुषदाशीपू
जतहैं॥ॐ॥सूर्य०॥नैवेद्यं॥५॥मणिदीपकलीजेधीव
नरिजेकीजेघनसारकीवाती॥जगजोतिजगाममल
गमगजगममोहतिमरकौहैंघातीपद्म०दिन०॥ॐ॥
ॐ॥सूर्य०॥दीपं॥६॥कालागुरुधूपंअधिकअनूप्ये
निर्मलरूपंघनसारं॥वेवोप्रक्षत्रागेंपातिकनारेंजा
गेंधुनडखसवहारं॥पद्मप्रनुस्वामीसिवमगगामी
नविकमोरसुंतिहुंजतहैं॥दिनकरडषजांशियापन
सांशीसवसुषदाशीपूजतहैं॥ॐ॥सू०॥धूपं॥७॥श्री॥
फललेआवोसेवचदाकेअंवअमृतफलआदिवरं
वाञ्छितफलपांजेनिगुनगांजेडषदांशीसवकर्महरं
पद्मप्रणे॥दिन०॥ॐ॥सू०॥फलां॥१॥जलचंदनत्या
यासुमनसुहायातंडलमुक्तासमकहिये॥वरुदीपकल
जेधूपषेवीजेफललेवसुंक्रमनैदहिये॥पद्मप्रनु०दि
नकरणे॥ॐ॥सू०॥अर्घ्यं॥१॥अडिलासलिलगंधलेरू
लसुगंधितलीजियेतंडललेवरुदीपकधूपषेवीजिये॥

फलले अर्घवनो यपदमप्रनु पूजिये। कमलमोहको।
 दोषतुरतहीधुजिये। पूर्णाधीशे। अथजयमालालिखते।
 जेहें सुषकारीसवउषहारीमारीरोगादिकहरने। इंद्रदे
 कश्रावे। प्रचुगुतगावेंमंदिरगिरमंजनकरने। न्यत्या।
 दिकसाजेंडं दनीवाजेंतीनलोकसेवतचरणे॥ पदम
 प्रनु पूजतपातिकधूजतनवनवनविमांगतसरणे
 १॥ पछडीछं॥ जयपदमप्रनु पूजाकराय॥ सूरजा
 ग्रहउषनतुरतजाय। नोजेजनसमोसरणविषातणे
 घंटाकालरिसौनेविज्ञान। १॥ सतइंजनमतजिसचर।
 नश्राय। दससप्तगणधरसौंभाधराय। वांतीघनयो
 रघटाजुघोर। घनसवदसुनततनविनचहंमौर। २॥ ना
 मंडलसौंजालषतनूर। इंद्रादिककोटिकलजतसूर
 तहांबृहन्नसोकमहानुतंगसवजीवनसोकहरेन्न
 नंग। ३॥ सुमनादिकसुरवर्षाकराय। वेदोगचमरवेस
 विदराय॥ सिंघासनतीनत्रिलोकईस। त्रयछत्रफिरे
 तगजडितसीस। ४॥ मणिमरीचवतिमुकुरंदसार। त्र
 यधुलिसालसुंदरप्रपार। कलाणकपांचूंमुषनिधे
 न। पंचमगतिदाताहैसुंजान। ५॥ सादेवारहकोडीजुस
 रावाजाविनषेदवजैअपार। धरनेंइनरेंइसुरेइईसत्र।
 यलोकनमतकरघारसीस। ६॥ सुनमुकरमावरनस
 सक्ताशेदेनेहाथजोरकरवारवार। जाकेपदनमत।
 आनंदहोत। इतिअगेंदिनकरछिपतजोति। ७॥ मनो
 शुद्धसमुद्धदयविचार। सुषदातासवतनकौंअपार
 मनवचतनचितपूजानिहार। कजेंसुषदायकजगता
 सारा। ८॥ घता॥ सवजनहितकारीसुषन्नतिमारीमारी
 रोगादिकहरणे॥ पापादिकदोरेंग्रहतिवारेंनकिजीवसु
 वसुषकरणे॥ ईसासीवाह॥ अथचंजरिनिवारकचं
 प्रचुपूजालिख्यते॥ सोरवानिसपतिपीडवांतिगोच

रलगनविषेजवैवसुंविधिवउरसुंजांन॥चंद्रप्रभूजाक
 रो॥श॥अडिह्य॥चंद्रपरीकेवीचिचंद्रप्रभू॥अवतरे॥ललितसो
 हेंचंद्रसवतकोमनहरे॥नविजीवसुषकारदर्विसेधरस
 हों॥सोमदोषकेहेतथापनांकरतहों॥जैश्रीचंद्रारिष्ट
 निवारणाय॥अत्रावतरावतरणश॥कंचनफारीजटिता
 जडाउंहीरोदकनरहितहिचदानो॥जगतगुरुहों॥जै
 नाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभूजोंमनलाया॥सोमदोष
 तातैमिठजाया॥जगतगुरु॥जैश्रीचंद्रारिष्टनिव
 रकचंद्रप्रभुजिनैंदाया॥जलं॥मलयगिरकेसरघनस
 रचरचितजिनभवतापतिवार॥जगतगुरुहों॥जैजैना
 थ॥चंद्रनं॥कमलकुंदकेतकीअनंग॥कल्पतरु
 जसवहरेअनंग॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथ॥पुष्प॥श
 खंडरहितसअक्षतससिरुपा॥जुंजचदायहोयशिवा
 रूप॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभू
 पूजोंमनलाया॥सोमदोषतातैमिठजाया॥जगतगुरु
 हों॥ध॥अक्षतं॥घेवरवावरमोदकलेऊं॥दोषक्षयहर
 यालनरेऊं॥जगतगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥न
 नेवेद्यं॥मणिमयदीपकचतुनरेऊं॥वातीवरतसु
 तिमरहरेऊं॥जगतगुरुहों॥दीपं॥कालागुरुकी
 कणीषीषाय॥वसुंविधिकर्मजुंवरतनशाय॥जगत
 गुरुहों॥धूपं॥श्रीफलअंवसदाफलसेउंचोचमो
 चअंमृतफललेऊं॥जगतगुरुहों॥पीफले॥जलगंध
 पुष्पसालिनैवेद्यं॥दीपधूपफलअर्घ्यअनिंद्या॥जग
 तगुरुहों॥जैजैनाथजगतगुरुहों॥चंद्रप्रभूजोंमन
 लाया॥सोमदोषतातैमिठजाया॥जगतगुरुहों॥अ
 र्घ्यं॥ध॥जलचंद्रनवकफूलजुतेडललीजियो॥डग्ध
 सर्करासहितसुंब्यंजनकीजियो॥दीपधूपफलअर्घ्य
 वमायधरीजियो॥जउडवपूजों॥सोमजिनैंइहरीजियो

शृणुष्व॥ अथ जयमाला॥ चंद्रप्रचरनं सवसुषुभरनं क
 रनं आत्महितत्रतुलं॥ इषं इजहरने नवजलतरनं मन
 हं सुन्नकरविपुलं॥ शं नममनःकदयमिथ्या ततम
 नोशका॥ केवलज्ञानसूर्यप्रतिभासकं॥ चंद्रप्रचरनम
 हरनसवसुषुकरं॥ शाकिनीस्तग्रहसोमडषसवहरं॥ शं
 वर्धनं चंद्रमांधर्मजलनिधि महाजगतसुषुकारसिवमा
 र्गप्रनुनग्रह्या॥ चंद्रप्रचरनमनहरनसवणोत्पात्तगो
 श्रीरतिधीरवरवीरहो॥ तीनहं लोकसवजगतकेनी
 रहो॥ चंद्रप्रणो॥ ध॥ विकटकंदर्पकोंदर्पछितमेंहरक
 र्मवसुं पापसवत्रापहीतैकल्या॥ चंद्रप्रणो॥ ध॥ सोमपुरा
 नगरमेंजतमप्रनुतैलह्या॥ क्रोधञ्जललोचमदमोनमा
 यादह॥ चंद्रप्रचरनमनहरनसवसुषुकरं॥ शाकिनी
 न्तग्रहसोमडषसवहरं॥ पा॥ देहजितराजकीसर्वशोना
 धरो॥ स्फटकमणिक्रांतितिहिदेविलज्याकरे॥ हीचंद्रा
 वत्रौराकहजारलञ्जतमहादाहिने॥ चरनकोनिसापते
 गहरह्या॥ चंद्रप्रणो॥ कहतमनसुषुजलधिचंद्रप्रण
 जिये॥ सोमडषतांसिकैजगतनयधृजिये॥ चंद्रप्रणो॥ देव
 शा॥ पापतापके॥ हरनकोंधर्ममिस्तरसपूर॥ चंद्रप्रनुजि
 नप्रजिये॥ हीयजत्रानंदनूर॥ ए॥ ईतिचंद्रप्रणपूजा॥ अ
 यनोमारिष्टनिवारकवासुं पूज्यपूजा॥ दोहा॥ वासपू
 ज्यपूजतचरनं॥ नृसुतदोषफनाया॥ तातैजविपूजाक
 रो॥ मतमेंअतिहरषाय॥ शं॥ अडिछत्रवासवजाकेजतम
 समयहरषाईये॥ आयोगजलैसाजिमहासुषुपाईये
 खेमंदिरगिरजायसुहृवणकराईके॥ सोप्योमातागे
 हनुंतां वधरायके॥ नैकीनोमारिष्टनिवारकवासुं
 जिजितेजय॥ अत्रावतराणेअत्रतिष्ठ॥ अत्रमम०
 स्यापतेगीताछंद॥ कतककारीअधिकनुतिमरतन
 अदितसुंलीजियो॥ परमइहकोजलसंगंधितधारचरन

नदीजिये। घृतनयऽषहरितांसेहरषहिरदैंधारिकें। वास
 पूजिजितेंद्रपूजोंसकलआरतदारिकें। जैकीनोमारिष्टति
 वारकवासपूज्जितेंद्राय। जलंशश्रीखंडमलयजुमहा
 सीतलसुरनिचंद्रकघसिधरो। जितचरनचरचौंनविक
 हितसौंपापतापसवैंहरो। नूतनयणेवासणेजैकीचंदन
 श। अवखंडषंडितसुरनिमंडितथालनरिकरमेंगहो
 अक्षितपुंजदिवायजितपदअषयपदसहजैलहो
 नूतनयणे। वासणे। अहोतंणेकमलकुंदगुलावव
 पापारजातिकअक्षिघनेंपुष्पपूजितचरनप्रभुकेकुसु
 मसरतवहीहनेंनूतनयहृषहरितासेंहरषहिरदैंधा
 रिहकें। वासुंपूज्जितेंद्रपूजोंसकलआरितदारिकेंघ
 पुष्पगोसर्पेसद्यमगायनविजनडग्धामिश्रितशर्करा
 चरुचारुलेकरिजजोंजितपदक्षयावेदनसवहरान
 नूतनयणे। प। नैवेद्यं। मणिजडितचंदनदीपसुंदरसद्य
 घृततामेंनरोंजद्योतकरिजितचरनआगेंहृदयमिष्या
 तमहरो। नूतनयणे। दीदीपं। कालाअगरघृतसारमिश्र
 तदेवदेवसरुफूलसुंहावनेंवेवतधूममेंस्वर्गमोक्षित
 करतवसुंकर्मनिहते। नूतनयणे। धूपं। ७। श्रीफलअ
 नाख्युंआंवनीबुंचोचमोचसदाफलं। जितचरनचर
 चतफलनसेतीमोक्षफलदातारलं। नूतनयनणे। फी
 फलं। जलगंधअक्षतसंफूलव्यंजनदीपधूपफलो
 तमं। जितराजअर्घ्यचदायनविजनलेजंसुक्तिसुररो
 तमंनूतनयनणे। अर्घ्यं। अडिह्य। सुरजितजलश्रीखंड
 कुसुमतंडलनले। व्यंजनदीपकधूपसदाफलसोरनिवा
 सपूज्जितचरनअरघ्यसुनदीजिये। मंगलग्रहऽषदारे
 सुंमंगललीजिये। १०। शृणुधिं। अथजयमानालिषते।
 मंगलग्रहहरतंमंगलकरतंसुषकरसिवयनीवरनं
 आत्महितकरनंभवजलतिरनंवासपूज्जसेवतचरनं१

इंद्रनरेंद्रघणेंद्रुदेवं आपकरैजितवरकीसेवं वासपूज्य
 जितपूजकरो मंगलदोषसहजपरिहरो २ विजयाजननीम
 नहरषायेजनकजुवसुंपूज्यहिसुषदाये वासपूज्य मंगल
 शुभललितकरिललितकाय चंपापुरजनमेजिनराय
 वासपूज्य मंगल महिषांश्रंकचरनमेंपस्थो देवतसव
 कोसंसयहरो वासपूज्य मंगल ५ फागुनअसितजु
 चोदसिजाताकैवैराग्यसुंधरियोंधानां वास मंगल
 घातिघातियाकेवलपाया जेतधर्मजगमेंप्रगटाय वा
 सपूज्यजितपूजाकरो मंगलदोषसवेपरिहरो ६ षट्
 सतएकमुनिसरथयो गिरमंदारसिवालेगयो वास
 मंगल ६ मंगलहेतजजौजितराय मंगलग्रहक्षनमि
 टजाय वास मंगल ७ पूजनघनेकीजेदोषहरीजे
 छीजैपातिकजनमजरा सुषकेअधिकारीग्रहउषहा
 रीनारीभवदधिनीरतरा १० इत्यात्रीवादि॥ अथबुधग्र
 हारिष्टतिवारकअष्टजितपूजालिषते॥ दोहा॥ बुधग्रह
 पीडाकरैपूजौंआवजिनेस आवीगुनजितमेंलहसैताव
 तसीससुरेस १ सुषय विमलनाथजिनतमौंजुअनेत
 नाथजिन धर्मनाथजिनवंदिवंदिहोसांतिसांतिकरि
 कुंथुअर्हजिनसुमरिसुमरितमिवर्धमांतजिन इतिअं
 वो जितजजौंजजौसुषकरनचरनतित बुधमहाग्रह
 शुभताधरतकरतजोरजव आकातकरतिष्टिसंनि
 धीकरिऊंतवै २ उंझैबुधग्रहारिष्टतिवारकअष्टजि
 नाथ अतं अत्रतिं अत्रमं स्यापनं गीताछंदं
 हिमकारीजडिसमतिजलनरोदीरोदकतनां धरदे
 जिनचरनआगैंपायतापहुंतासनां विमलनाथअने
 तनाथसुंधर्मनाथजेसातये उंथुअर्हजुनमियजिन
 महावीरआवजितंजये उंझैसोम्यग्रहारिष्टतिवारक
 अष्टजिनाये जलं १ सुरभिसुरभितलेऊंचंदनघसौंऊं

कमसंगही जितधरनचरचितमिटेग्रीषममोहतापनुनेग
 हीविमलने कुंथनेचंदने। अक्षतअखंडितनुनयकोधिसमो
 नयुअनुअतिघने। लेकनकथालभरायनविजव पूंजहे
 वसुंहावने। विमलनाथअनंततायसुंधर्मनाथनुसंते
 ये॥ कुंथुअरहनुनमियेजितमहावीरअष्टजितंजयेउ
 ङ्गी॥ अक्षतं। मंदारमल्लीमालतीमचकूंदमरधामोते
 या॥ कमलकुंदकसुंनकरतांकांमवांएजुंघातिया विम
 लने। कुंथुनेउंङ्गी। पुष्पं। ध॥ श्रुतसद्यमिश्रतसकरामृतक
 रकुंजतनावसं। ग्रहसौम्यसांतिजुहोतजिनकेचरनचर
 चोंनावसो। विमल कुंथुनेउंङ्गीनेवेद्यं। ५ मनिजडितही
 टकदीपसंदरवर्तिकाघनसारहै। सर्पिसहितसिषाप्रका
 सितआरतीतमहारहै। विमल कुंथुनेउंङ्गी। दीपं। लोवांत
 अगरकपूरचंदनलोगचूरनलीजिये। अगनिधंमविव
 जितजितचरनआगेवेइये। विमल कुंथुनेउंङ्गी। श्रुपं। ७। क
 लपपादपजनितश्रीफलफलसमूहवदाइये। नत्तिलाव
 वदायकरिकैसरसश्रीफलपाइये। विमल कुंथुनेउंङ्गी।
 फलं। ८। सुनसलिलचंदनअक्षतसुंमननुंछ्याहरचव
 कलीजिये। मणिदीपधूपफलसहितवसुंशिविअर्थइने
 विधिदीजिये। विमलने कुंथुनेउंङ्गी। अर्थं। ९। दोहा॥ जल
 चंदनआदिकदर्वपूजोवसुंजितराय॥ सौम्यतमूंक्षनमे
 टे पूंअर्थवदाय १०। पूर्णांर्थं। छप्यय। विमलनाथजि
 ततमोंतमोंनुअनंततायजित। धर्मनाथकूंतितमोंत
 मोंसांतिकरताजित। कुंथुनाथपदवंदिवंदिहो। अरह
 जित। नमिप्रणमिजितपायपायतमिवर्धमांतनमिए
 आतौंजितराजकुंहांथजोरिसिरधरतहोसौम्यनयउव
 हरनकोमंगलअरतिकरतहो। शंखंदपदडी। जयविम
 लविमलआत्मप्रकास। षट्क्षयचराचरलोकनास। जय
 जयअनंततयुंतेहैअनंता। सुरनरजसगावैलहैअनंततर

जयधर्मधुराधरधर्मनाथजगजीवनधारनमुक्तिसायण
जयसांतिनाथजगशांतिकरन॥नविजीवनकेडखडरिता
हरता॥जयकुंभुंजिनकुंभुंवादिजीव॥प्रतिपालनकरिसु
षदेअतीव॥जयअरहजितेस्वरअष्टकमेंरिपुनासिली
योसमरमतिसमीध॥जयनमितमियेसुरनरषगोसईजादि
चंड्युतिकरतसेसा॥जयवर्द्धमानजयवर्द्धमान नुपदे५सदे
यलहिमुक्तिघांन॥५॥जयवसुंजिनपूजितमनलगायस
सिसुनअरिष्टसवहरिजाय॥मनवचतनकरिसुगजोर
होय॥घता एआवजितेस्वरनमतसुरेसरनव्यजीवमं
गलकरतं॥मनवंचित पूरेपोतिकघूरै॥जनममरनसा
गरतिरतं॥७॥आसीरवादा॥अथगुरुअरिष्टनिवारकअ
ष्टजितपूजनादौह॥मनवचकायासुद्धकरि॥पूजेआव
जितेस॥गुरुअरिष्टसवतासके॥नुपजेसोथअसेस॥छ
प्यय रिषननाथजितराजअजितसंचवस्वामी॥अनि
तंदनजितसुमतिसुपारसशीतलतामी॥प्रीश्रेयोसजे
तदेवसेवसवकरतसुरासुर॥मनवंचितदातारसारजे
ततीतलौकगुरुं॥संनवषटावःवःतिष्टसंलिधीऊंजी
ये॥गरुअरिष्टकेतांसकौंआवजितेस्वरपूजिये॥ऊं
सुरगुरुअरिष्टनिवारकअष्टजिताय॥अत्रोअत्रति
अत्रमम॥स्थापते॥त्रिनेगीछंद॥जलजललीजे
मनसुचिकीजेहाटकमयत्रंगारनरं॥जितधरदिवाइ
त्रिषांतसाडीभवजलतिधितेपारपरं रिषनअजितसं
नवअनितंदनसुमतिसुपारसनाथवरं सीतलनाथ
श्रेयोसजितेस्वरपूजतसुरगुरदोषवरं॥ऊंजीसुरगुरु
अरिष्टनिवारकअष्टजिताय॥जलं॥श॥मलयगिरा
चंदनदाहनिकंदनकुंभुंमसुनलेघनसारं॥चर्वोजि
तकरनेनवतपहरतंमनवंचितसवसौष्यकरं॥रिष
नोसीतल॥ऊंजी॥चंदनं॥सरलसालिककिसनजीर

०५० कवांसमतीयजुमनहरेणुनयकोटिकश्रुश्रुषंडितश्रु
 २२१ षयगुनसिवपदधरंरिषभणेसीतलणेनैवेद्ये। श्रुतंश्रुचंप
 कचवेलीकरकेतकीमालतीमरवौवौलसरं कमलकुं
 मुदगलां वरुं दजुसुनमुहीसेव तीयपरं रिषणे। शीतानै
 पुष्पं। ध। घेवरहि सुंवावरपुपपुरियमोदक फेनीपीयवरे
 सुरहीघृतययसरकरापुतविवधिवरुसुतक्षयकरे
 रिषणे। शीतनेनैवेद्ये। पामनिकेजडितसुवनयाल
 लेकदलीसुतघृतमांहितरं। दीपकउद्योतंनमस्य।
 ह्योतनिजगुंनत्वभिनाभारनरंश्रिषणे। शीतनेनैवेद्ये।
 यं। ह्येदंनश्रुगरलोगसुतगरंविवधिविलेसुरनि
 तरं। येवतजितश्रुगैपातिकनागैध्वामिसिवसुं कर्म
 जरे। कृषणेनैवेद्ये। ७। वादांसुपारीश्रीफलनारी। चोव
 मोचकमरुषसुवरं। लेकेफलनानाजिनपदप्रजितसे
 वसुषयानां देतत्वरो। कृणेनैवेद्ये। फले। फेजलचंदनफल
 तंडलउलंचरुदीपकलेफयफले। वसुंविधिसैश्रर
 चैवसुंविधिविचैकीजेश्रविचलमुक्तिघरं। कृषणे
 शीतनेनैवेद्ये। १०। श्रुद्विष्टमनवचकायाशुद्धपवि
 तरंजिये। लेकरिश्रावौदर्विश्रावजिनप्रजिये। मंग
 लीकवजं वस्तु प्रणसवलीजिये। पूरणश्ररघचलाय
 श्रारतीकीजिये। १२। पूरणे। छंद। सुरुगुरुडषनांस।
 नकल्पषत्रासववसुंजिनवसुंविधिपुंजकरं। नवभक्त
 प्रघहरणंसवसुषकरणंनमजीवशिवधामधरं। १५। ज
 यषनदेवव्रषनांकसार। जयधर्मधुरंधरधीरधारणे
 जयश्रुजितकर्मश्ररिप्रकलजोनि। जयजीतिलीयों।
 वसुंगुंननिष्ठां। १७। जयसंनवसंनवदंनछेद। जयसु
 क्तिरमालहियौश्रषेद। जयजगजनसुषकरताश्रप
 राश्र। जयसुमतिदेवदेवाधिदेवजयसुंभमतिजुतकरहे
 सेव। जयजयहिसंपारसस्वपरमांन। जयसौलोकश्र

लोकप्रकाशनां॥ जयशीतलजिनजगसांतिकर्तजा
यजतमजरामसुदहनहर्ता॥ जयश्रेयकरतश्रेयांसनाथ
जयश्रेयसुंपेयदेसुक्तिसया॥ जयजयगुनगिरमाजगपु
धंत॥ जयसुरतरसेसकरेवषांत॥ जयमनसुषसागरन
मतसीस॥ जयसुरगुरुहृषनमेदिईस॥ होघता॥ आवजिते
स्वरपूजतां॥ आवकर्मडमजाय॥ आवसिधिनवतिधिल
ह॥ सुरगुरुहोयसहाय॥ आसीरवादे॥ ७॥ अथसुक्राश्रे
एतिवारकपुष्पदंतजिनपूजने दोहा॥ पुष्पदंतजिनरा
जकौनविपूजौमनलाय॥ मनवचकायासुधसो कवि॥
अरिष्टमिडिजाय॥ अडिहरगोचरमैंग्रहसुक्रआयज
वडमकरै॥ पुष्पदंतजिननाममंत्रमनमैधरैआकातन
करतिष्टसंनिधीरुजिये॥ शूर्जेडीसुक्रग्रहायअरिष्ट
निवारकपुष्पदंतजिनायअत्राणेसोरवा॥ नीरमलस
तसुनाय॥ गंगाजलकारीनरो॥ कविअरिष्टमोडिजायपु
ष्पदंतपूजाकरो॥ शूर्जेडीसुक्रग्रहायअरिष्टनिवारकपुष्प
दंतजिनैशाय॥ जले॥ कुंकुममलयघसाया॥ कनककटो
रीमैधरो॥ कवि०२॥ चंद्रनं॥ तंडुलअक्षतलाय॥ नवस
हिततुसपरिहरौ॥ कवि३॥ अक्षतं॥ कमलबंवेलीजा
य॥ जुदीकुंदसुकेवडौकवि०४॥ पुष्पं॥ अंजनविविधि
वणाय॥ मधुरखादसुतआचरोकविअणे॥ तैवेद्यं॥
कंचनदीपकराय॥ कदलीसुतवातीकरो॥ कविअ०
पुष्पदंतपूजाकरो॥ हीदीपं॥ अगरकपुरमिडिजायणे
लौंगधूपवजं विसरो॥ कवि॥ दीफलं॥ नीरादिकलेआ
य॥ अर्घदेतपातिकटैशे॥ कवि०५॥ अर्घ्यं॥ अडिहर॥ जल
चंद्रनं॥ अक्षतं॥ औरफलघने॥ चरुदीपकवजं धूप
फलअतिसौहने॥ गीतनृत्यगुनगायअनर्घपूरनक
रो॥ पुष्पदंतजिनपूजिसुक्रडमनहरो॥ शूर्णं॥ अथ
जयमालविष्णुसे॥ मनवचतनधावोपापनसावो॥ स

जाय ॥ हो प्रोणी मुंति सुवृत्त जिने ॐ क्लीं जलने ॥ प्रोणी चंद
 नघसिमलियागिरी ॥ और कुंकुमतामें कारि हो प्रोणी जितं
 पदधरचौनावसों ॥ जासौ जन्मजराज्वरजाय हो प्रोणी मुं
 तिसुवृत्तारवि सुवृत्त उषमिदिजाय हो प्रोणी ॐ क्लीं चंदनं ॥ २
 प्रोणी उज्जलससिसमली जिये ॥ तंडलकोरिसमांत हो
 प्रोणी पांचपूजदेजावसों ॥ अथ यपदसुषपाय हो प्रोणी
 मुंति सुवृत्तारविने ॐ नमः ॥ अक्षतं ॥ प्रोणी वेलिचमेल २
 केवरो ॥ करुनां कुमदगुलाव हो प्रोणी केतकी कंदल
 ले पूजिये ॥ तव काम अस्ति मिदिजाय हो य प्रोणी मुंते
 सुवृत्तारवि सुवृत्त ॐ क्लीं ॥ पुष्पं ॥ प्रोणी व्यंजननाजाति
 के ॥ षट् रसकर संजुत हो प्रोणी ॥ जित पद पूजों भावसों
 तव जाय पुद्यादिकरी गहो प्रोणी मुंति नारविने ॐ नै
 वेद्यं ॥ ५ ॥ प्रोणी रतन जीतितमनासनी ॥ दीपक कंचन
 थारहों प्रोणी जित प्रागें आरती करों ॥ नव आरति त
 मजाय हो प्रोणी मुंति नारविने ॐ नदी पं दी ॥ प्रोणी चंदन
 अग्रक परले सबधेवों पावक मोहि हो प्रोणी ॥ अष्ट
 करमजरि अरकै ॥ जित पूजन सब सुष हो य हो प्रोणी
 मुंति नारविने ॐ ॥ धूपं ॥ ७ ॥ प्रोणी अवन्नारपिष्पफल
 मोचवीचविदांम हो प्रोणी फलसैं जित पद पूजिये पा
 विसिवफल सार हो प्रोणी मुंति नारविने ॐ न फलं ॥ ८ ॥ प्रो
 णी नीरादिक वसुं दविले ॥ मतवचकाय लगाय हो प्रोणी २
 अष्ट करमकोतासकै ॥ अष्ट महागुंन पाय हो प्रोणी मुंते
 रविने ॐ अर्घ्यं ॥ ९ ॥ प्रोणी अडिल ॥ जलवेदन ले फल और
 अक्षत घने ॥ चरु दीपक वज्रधुप महाफल सोहने ॥ पूर्ण
 अरघवणा यजिता ये ऊजिये ॥ मुंति सुवृत्त जित राय नाव
 सों पूजिये ॥ पूर्णार्घ्यं ॥ १० ॥ जयमाल लिषते ॥ दोहा ॥ मुंति
 सुवृत्त सुवृत्त धरन ॥ त्याग करन जगजाल ॥ सनिग्रह पीडा
 हरन को ॥ पदो हरमजयमाला ॥ ११ ॥ छंद पदवी ॥ जयजय मुंते

मुहूर्तत्रिजगतराय॥सत्तईइआपकेनमतपाय॥जयजय
 पञ्चावतीगर्भत्राय॥आवणवंदिडतियाहर्षसाया॥जयज
 यसुंमित्रग्रहजन्मलीना॥वैसाषक्रह्णदसमीप्रदीना॥जय
 जयदसप्रतिसयलसब्रकायत्रयग्यांनसहितहितमि
 तकहांया॥जयजयतनलछिनसैहसुंआवा॥नदीजी॥
 वनमेंयुतिकरेपाठा॥जयजयसोद्यर्मसुरेसआय॥जम्
 कल्याणककरेसुंनाया॥४॥जयजयतपलेवैसाषमांस
 सुंदिदसमीकर्मकलकनांस॥जयजयवैसाषजुअसे
 तपत्त॥नौमीकेवललहिजगप्रतत्ता॥५॥जयजयरघि॥
 योंतवसमोसनी॥सुरतरषगुमुनिसवचितहर्न॥जयज
 यछालीसगुनसहितदेव॥सत्तईइआयतहांकरत॥
 सेव॥६॥जयजयफागएवदिहादसीष॥सिवथांनव॥
 सेगुनसिद्धलीय॥जयजयशनिपीडाहरनहेता॥मनसु
 षसागरकरसुषतिकेत॥७॥घत्ता॥सुंतिसुंभतस्वामीसव
 जगतांमीनविजीववजसुषकरतं॥मनवंछितपूरैपाते
 कचूरैविसुतग्रहपीडाहरनं॥८॥आसीवादि॥अथराजं
 अरिष्टतिवारकतेमनांथपूजते॥अडिघ्र॥गौचरमेंज
 कआयराजंपीडाधरें॥निमनांथजितरायजवेंपूजाक
 रें॥आवदरविलेशुद्धनावहियआंतिकें॥स्यांमपुस्या
 मनलायभक्तिकोंवांतिकें॥१॥पूजोनेमजितेसनव्यम
 नलायकें॥राजंदेयडषरासिमेरवजंआयकें॥आर्क
 तनकरितिष्टतिष्टवःवः॥नुचरेंहीयसंनिधीभक्तिसले
 पूजाकरें॥२॥नेंझीराजंअरिष्टतिवारकायेनेमनांथ
 जितेंद्रायअत्राण॥गीताचंद॥कनककारीमणिजडित
 लीसीतनुदकनरायकें॥प्रभुनेमजिनकेचरनआगेंध
 रदेमनलायकें॥जवरराजंगौचररांसिमडषदेशीडषसुं
 नावसौतवनेमिजिनकेंभावसेतीचरणपूजोंचावसों
 १॥नेंझीराजंअरिणालं॥श्रीखंडमलयमिलायकें॥

सरकदलीसुततामेंघसौ जिनचरणचरचितनाव
धरिकेंपापतापतवेतसौ॥जवणेचंदने॥अक्षतत्रु
पमसालिसंभवकनकभाजनलेरीकें॥जिनत्रय
पूजचदायनाविजतएकमनचितदेईकें॥जवणे॥३॥
अक्षतं॥कमलकुंदगुलावकुंजाकेतकीकरुनीन
ने॥सुमनलेकेसुमनसेती॥एजितेंजिनत्रयटलेज
वराङ्गगोचररासितेंडषडईडष्टसुभावसौ॥तवकेमज
नके॥नावसेतीचरनपूजोनावसौ॥ध॥पुष्प॥विविधियं
जनरसाजिनतमनहरक्षधाडषतकोहरे॥जरियाल
कंचतनावसेतीनेमजिनत्रागोधरे॥जवणेनिवेद्यं
मणिमयदीपकत्पनरिकेंचंद्रज्योतिसुंजगमगेते
जहातलेप्रभुआरतीकरेमोहतमतवहीजगे॥तिज
हांतलेप्रभुपआरतीकरेमोहतमतवहीजगे॥जव
राङ्गो॥दीपं॥कृष्णाअगरलोवांतलोगत्रोरड्य
सुगंधमें॥तिजचरनत्रागेअग्निधरेधूपधूपसुरने
वमें॥जवराङ्गो॥७॥धूपं॥अंवाविजोरानारियरश्री॥
फलसुपारीसेवकी॥फललेमतोहरसरसमीवेष
जिलेजिनदेवको॥जवराङ्गो॥८॥फलं॥जलगंधअ
क्षतपुष्पसुरनितचरुमतोहरलीजिये॥दीपधूपक
लोघसुंदरअर्घजिनपददीजिये॥जवराङ्गोचररासे
मेंडषदेईडष्टसुभावसौ॥तवनेमजिनकेनावसेती
चरनपूजोनावसौ॥अर्थे॥अडिह्र॥आवदरवलेसार
नेमप्रभुपूजियेराङ्गहोरी॥ग्रहशांतिपापसवधुजिये
मनबंधितफलपायहोयवडनागसौ॥जोपूजेजिन
देववडेअनुरागसौपूर्णार्थे॥अथजयमाला॥श्रीनेम
जिनेस्वरजगपरमेस्वरजीवदयाधुरधारधरोमेंसर
णआयोसीसनवायोसिंहासनसुतदृषहरहरे॥शुभ
जयजिननेमसुंतेमधारकरुणांकरजगजनजलधित

राजैकैकालिकसुदिच्छविप्रधानसिवदेवीनुरत्रवतरेश्रो
 ता॥१॥जैजैश्रावनसुदिच्छविदेव इंद्रादिहृदयविधिकरिये
 सेवाजैजैजडकुलमंडनदिनेसा॥सुरनरषगत्रस्तुतिकरत
 सेसा॥जैजैशुचिसुक्रनुदासहोय॥छतिकौतयकरिनित
 आलजोया॥जैजैनिर्मलतनतिर्विकार नामंडलछवि
 सोनात्रपारा॥जैजैअस्वतिशुदिग्यांतनीता॥तिथप्रथम
 पहस्रजगसुषतिघांता॥जैजैनविजननुषदेशदेशीसुंते
 पंचमिगतिसाधनकरेई॥५॥जैजैछविसावनसुकप
 क्षसवलोकालोककीयोप्रतक्ष॥जैजैवसुंविधिविधे
 सकलनांसा॥लहिषुषअनंतसिवलोकवीसा॥५॥जैजै
 अजरामरपदप्रधान॥क्षेत्रिभुवनयतिलोकाग्रथांत
 जैजैछायासुतपीरहती॥मनसुद्धसमुद्रजुगहियसर्नई
 घता॥नविजनसुषदाई॥सेवसुहार्दमतवचकायागां
 वतहो॥सवहृषनजाईपापनसांईनेमिसहार्दधावत
 हो॥१॥इत्याशोर्वादा॥अष्टकेत्रअटिष्टनिवारकमनि
 पाश्र्वजितपूजनांदोहाकेउअयागोचरविषोकरेअरि
 ष्टकीहांणि॥मह्विपाश्र्वजितपूजियेमतबंधितसुदानि
 श॥अडिह्वामह्विपाश्र्वजितदवेसेवक्कंकीजियेभक्ति
 नावसुंइव्यसुंधकरलीजियेआफाननकरतिष्टति
 ष्टवःवःकरो॥ममसंनिधीकरघजिहरषहियमैंधरो
 श॥जैजैकेउअरिष्टनिवारकायमह्विपाश्र्वजिनैंश्राया
 अत्रावतरा०उतमगंगाजलत्यायमणिमयनरिफ
 शी॥जिनचरनधरदेसारजन्मजराहारी॥मैंपूजोमह्वि
 जितेशपाससुषकारी॥ग्रहकेउअरिष्टनिवारकमन
 सुषहितकारी॥श॥जैजैकेउअरिष्टनिवारिकमह्विपा
 श्र्वजिनैंश्रा०जले॥श्रीखंडमलयतरुल्यायेकदलीसुतज
 रीघसिकेशरिचरननल्यायेनवअघतपहारी॥मैंपूजोम
 लजितेशपारससुषकारी॥ग्रहकेउअरिष्टनिवारमनसुष

हितकारी शंखेदनं तंडलश्रद्धतत्रविकारमुक्तासम
 सौहै॥ भरिलेंहांकमेंधारसुरतरमनमोहै॥ में पूजोमहज्जे
 नेश पारससुषकारी॥ ग्रहकेउत्ररिष्टनिवारकमनसुष
 हितकारी॥ २॥ श्रद्धतं॥ लेफूलसुगंधतसारश्रद्धिगुंजा
 करै॥ पदपंकजजितहिचदायकांमविद्याजुहरै॥ में पूजै
 ०॥ पुष्पं॥ व्यंजनवज्रविधिपरकारषट्कसखादमईधक
 जितचरनचदायकंचनधारलईमें पूजों॥ नैवेद्यं॥ मणि॥
 दीपकत्पनरायचंद्रककीवातीजवजोतिजहोलहा
 कायमोहतिमरघाती॥ में पूजोमह्निजिनेसपारससुष
 कारी॥ ग्रहकेउत्ररिष्टनिवारकमनसुषहितकारी॥ ही
 दीपं॥ कृष्णागरचंदनव्यायेधूपदहनवेशमोदितसुरण
 नकैजायरुचिसेतीलेईमें पूजो॥ ७॥ धूपं॥ वज्रचोचमोच
 वादांमश्रीफलफलदाशी॥ श्रद्धंतफलवज्रसुषधाम
 लीजेमनलाशीमें पूजों॥ फलं॥ जलचंदनसुलेईतंडल
 श्रद्धहारी॥ चरुदीपधूपफलदेईश्रद्धकरोंभारी॥ में पूजै
 ०॥ ८॥ श्रद्धै॥ श्रद्धिह्र॥ लेवसुंज्यविशेषसुमंगलगाई
 कैंगीतनृत्यकरवायजुतुरवजाईकै॥ मनमेंहरषचदा
 यश्रद्धपूरणकरों॥ केउदोषकूंमेटिपापसवपरिहरों॥ श
 पूणार्थी॥ जयमहिजिनेस्वरसेवकरों॥ सुरपाश्र्नांयजे
 नचरणामोंमनवचतनलाईश्रद्धभुतगाडीकरोश्रार
 तीपापवसों॥ १॥ जैजैत्रिभुवनपतिदेवदेव इंद्रादिक
 सुरनरकरईसेवाजैजैतिजगुनग्यायकमहंतगुनव
 रननकरतनलऊंश्रंतरा॥ १॥ जैजैपरमांसगुनगरिष्ट
 नवपदतितांसनपरमईष्ट॥ जैजैश्रद्धादुःखदोषनांस
 करेषसमलोकालोकनासा॥ २॥ जैजैवसुकर्मकलंक
 छीतसम्पत्कआदिवसुंगुननलीना॥ जैजैवसुंप्रतिहार
 जश्रद्धनृपवसुंश्रिभुनभूमिकोनएंभूषा॥ ३॥ जैजैश्रद्धे
 तुंमदेहधारवराणादिरहितहैरूपसारजैजैश्रद्धरामर

पदप्राण। गुणगुणान्त्रलौकालौकमानाजैजैसुषसता।
 बोधदशी। निजगुनजुत्तपरगुननाहिपरसेजैजैचितसुधस
 मुद्सारकरजौरनमतहेवारवार। घसा। मनवंछितदा
 र्क। सेवसहार्क। जोमनिनिजमनध्यांनधरे। ग्रहउष।
 मिदिजाशै। सौष्यलहार्जिनवोवीसपूजकरेंह। र्शितिन
 द्विप्रहपूजासंपूर्णः॥ ॥ श्री॥ ॥ श्री॥ ॥ श्री॥ ॥
 अथवारजावनीलिषत्ते॥ दोहा॥ राजाराणंछत्रपति
 हंयिनकेत्रसवार। मरनांसवकंरकदिना। अयनीअपा
 नीवार। शदलवलदेरीदेवता। मातपितापरिवार। मरती
 वलांजीवकं। कोरनराघनहारा। हांमविनांनिरधना।
 उषी। त्रिष्ठावसिधनवांन। कहीनसुषीसंसारमेंसवज
 गदेषांछांन। अ। आयअकेलोत्रोत्तरे। मेरेअकेलोहोय
 पुंन्यधमीविनांयाजीवको। साथीसगौनकोयाधा। जहो
 देहअपनीनही। श्रीरनअपनंकोरीघरसंपतिपर।
 गटयह। परिहेपरियणलोपणपा। दिपैचांमचांदरमटी
 हांटपीजरादेहा। भीतरयासवजगतमौ। श्रीरनहीधि
 नगीह। ही। सोरवा। मोहनीदकैजौरजगवासीधूंमैंसदा
 करमचोरचक्रंवेोरसरवसलदैसुधिनही। ७। सतगुरदे
 हजगाय। मोहनीदजवउपसमैं। तवकछ्वनैउपावक
 रमचोरआवतरूको। जो। ज्ञानदीपतपतेलनरिघरा।
 सोधेअंमहौर। याविधिविनतिकसैंनही। विवेपरवचो
 र। ८। चौदहराजंउसंगनमः लौकपुरुषसंवांन। यामैं
 जीवअतादिकों। नरमतहैंविनज्ञांन। १०। जाचैंसुरत
 रुदेवसुषचिंतामणिचितरेति विनजीचेविनचितये।
 धर्मसुकलसुषदेन। ११। धनकनकंवनराजसुषसे॥
 त्वमहैंकरजांन। उलंनहैंसंसारमैं। एकजिथारथगं
 न०॥ १२॥ र्शितिन० वाराजावनीसंपूर्णः॥ रागसौरउवि॥
 लावल॥ करमगतिकाहूंसोनदरेटिकविकल्पलाष

कोटिकरतेरहो॥ कांमनयेकसरे। करमणे॥ अंतरायनयो
रिषनजितेसुयचक्रीमांनगरे। सादिसहससुऊसगरभ
पकेयो॥

११ पदरागसौरवा॥ जीयारेयादेहविरां
णीमतिअपणावें। टिक। सासधसतमयअरमलमूत्रः
नांवलीयांघनिआवें। जीया०। श। यासैं। डीतिकरैमति
नाई। डरगतिमांहिफलावें। आये। जांतिनजोतिजसां
हिव। ज्योसिवपुरदरसावें। जियारेयादेहविरांणीमते
अपणावें॥ रागकापी॥ सुंजांतीडारेमारिगअपणों
जोयाटिक। आयकायथिरतांरहैगी॥ जांनतहैसव।
कीया। कंवीकीसांचीकरिमांनता। कमबधेनित्यतीय
सुजा०। श। आयापरकौंनेदलष्येविता। नरमतहैपद
घोया॥ तंनिश्रेकरिदेषिसयाते। जनममरणडषहोय
सुजा०। २। नरनवकुलश्रावककौंपायों। सोविरथा
मतिघोय। श्रेसरवीतिगयेपिछतेहैं। कहेदेसहंतेहे
सुजा०। ३। येहमुतिछांडिलागिसुनमारग। रागादिक
मलधसेय। जिनवांणीधारेतेसाहिवमुक्तिवध्वरहो
य। सुजांती॥ ४। पदराग॥ प्रभूतेरेसांकडेथा। कौयार०
प्रभूटिक। लविजगतिकीनीरधीरजा। तुरतसुंनतपु
कार। प्रभू०। श। जांनकीकूंदिव्यदीतीरवीरांमविचारे
अगनिकुंडप्रचंडसासननयोजलविसतारा। प्रभूते
२। चंडवालासतीकूंजवन्नयोंसंकटभार। महावीरजि
नवरआपआये॥ हूंवोंजेजेकार। प्रभूमेरोसांकडेकौं
यार। श। ईतिसंपूणी॥ रेषता॥ जगतयेहरैनिकासुयतां।
समकिदिलदेषिकेंअपतां। कविनयामोहकीधरा
नयासवजांतसंसार०। २। घडाज्योनीरकाफूटा। पा।
तजैसैंडालकाट्टा। श्रेसीनरजांतिजिनगांती॥ अ
जोकिनचेतअनिमांती। २। भूलौमतिदेषितनगोरा।

जगतमें जीवनां थोरा ॥ तजों मघलो न चउ यरी ॥ रहों नै
 निसंक जगमां ही ॥ ३ ॥ सजन परवार सुत दारा सवें नसरो
 जहें नपारा ॥ निकसि जव प्राण जावे गा ॥ को री नहिं कां मि
 आवे गा ॥ ४ ॥ सदा भक्ति जाणिया देहा ॥ लगावों नां वसुं
 नेहां ॥ कहें जम काल काधे रा ॥ कहें सिव चंद जन ते रा
 जगत ये ऐति का सपनां ॥ सम कि दिल देखि के अपनां
 ॥ १ ॥ रीति संप्रणी ॥ ऊषडी ॥ अवन न मेरा वे सुं नि सुं नि सी
 ष सयानी ॥ जिन वर चरनां वे करि करि श्री ति सुं ज्ञानी
 करि श्री त सुं ज्ञानी सिव सुषदां नी धनि जी त व हें पंच
 दिनां ॥ कौटिव रस जीवों किस लेषों ॥ जिन चरणां भुजा
 नक्ति विनां ॥ नर परजाय पाय अति नुति मग्रह वसि
 यह लाहो लैरे ॥ समजे सम कि बोले गुरज्ञानी सी ष
 सयानी मत मेरा ॥ २ ॥ तू सति तर से वै संपति देखि परा
 री बोया लुं निया वे यह निज पूर्व कुं मारी ॥ पूर्व कुं मारी
 संपति पारी ॥ देखि देखि मत करि मरे वो यव मूल सलत
 रुचूं हूँ को आमत की आस करौं ॥ अव कछु सम कि वा
 धित रचों साज्यो फिर परभव सुषदा रसें करि निज धं
 तदां ततप संजम देखि विनो परि मति तर से ॥ ३ ॥ जो जग
 दी से वे सुंदर अर सुषदा री सो सब फले पावें धरम कल
 पड मजारी ॥ सो सब फलिया धर्म कलपडु सरघ पा
 यक वक्रुं रिधि सही ॥ तेज उरंग तुंग गजन व विधिके
 चो दहर तत छबंड मरी ॥ रति उणियार रूप की सीमां
 सहं सख्या एवें तारि वरें ॥ सो सब जो नि धरम फलना
 री जो जग सुंदर दिष्टि परें ॥ ४ ॥ लगे अ सुंदर वे कंटक व
 न घने रे ॥ ति वर न गये गुन पलटें ॥ अवन हिं देखे ना वे
 ध मोटा मही कां ति करि अजलं ॥ करि अपनां सल जे उ
 अंति आगि में र्धन होय गा ॥ अ धर सम कि समे राणे च
 रण वा चलतां नां हि वै ॥ चरघा भया पुरां नां ॥ ॥ श्री

पदराग॥ कालसकलजगजीतावेकोईकालजीता॥ अ
 कसमाचरिमप्रातिदवोचैजेसैमृगकूंजीता॥ वेकोईका
 लनजीता॥ शवलयरिपरिमहानडजोघातिनसवव
 सिकरिलीता॥ ताकोडरराषतनहिंकवहूयहदेधी॥
 विपरीता॥ कालने॥ ३॥ कूंवीमायासोजलुनाया॥ मंनि
 राषीप्रपनीता॥ देघपेटग्रहछांडिवलावत हाथणुं
 लावतरीता॥ वेकोईकालने॥ यासेलीजीताहेतेही
 नयाहेंसुक्तिकामीता॥ वारूंवारजोडिकरितिनकूंन
 वलनमोसतकीनी॥ कालसकलजगजीतावेको
 ईकालनजीता २॥ इतीसं०॥ ४॥ इरागकूंजोटी॥ जने
 नांमजपित्तूंजीवडा॥ नरजन्मडलनपाईया॥ देक॥ लष
 जोतिचौरासीतणोंडषमूदत्तविसराईया॥ शलषिन्न
 मततीनूंलोकमेंयो कालअनंताछाईया॥ कोईनुदें
 अवनगिकेंतूनीवतीराअईया॥ सवजांतिस्वार
 थकेसगेतिनहेतमूरिषधाईया॥ जिन०॥ २॥ जेहैसे
 रोमणिधनितेअरहंतकेगुणगाईया॥ संपत्तिचहो
 अविचलसदापरनेहतजिनजिसाईया॥ जिननां
 मजपित्तूंजीवडानरजन्मडलनपाईया॥ ४॥ संपूर्ण
 ॥ अथप्रमातिबोलबाकापदलिषते॥ जिनदेवयेक
 हीजपनां॥ इसराक्याकरनांक्याकरनां॥ अतदेवतै
 काजतसरनांक्योमिथ्यामेंपडनां॥ इसराक्याकरनां
 २॥ देक॥ नहोमेंभ्रमणकरणकाकारणछांडिछांडिप
 रिसरणां॥ वीतरागसरवज्ञपायकेविधिसेंपारुत
 णां॥ इसराक्याकरनां॥ २॥ जबलौनेदनावनहीजो
 ण्योः॥ मतिगतिमेंडषनरणां॥ सिधिसरूपमितेमो
 हिसाहिव॥ फेरिनजगमेंफिरणां॥ इसराक्याकर
 नां॥ अथपदसंपूर्ण॥ अथरागनेरुमेंलिषते॥ सुर
 तिक्वैसीराजेतिरषतमन२तीर्थकरकरधांनधरत

द०
२७

हैं परमात्मपरकाजें निरघमन सांसांश्रागें दिष्ट कुंधा
 रि सुषुंलकतमांनुलाजें ॥ अननवरसकिलकतमां
 नुंश्रैसें आसनसुधविराजें निरघमन ॥ अथनुतरूप
 अनुपममैहैमांतीनलोकमैंछाजें ॥ जाकीछविदेवता
 इंद्रादिकचंद्रसूर्यमंलाजें ॥ निरघमन ॥ धरिअनुया
 गविलोकतजाकुंअसुभकरमतजिनागें ॥ ज्यो जगा
 रांमवनें सुमरणतें अनहदवाजावाजें ॥ निरघमनसु
 रति केसीराजें ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ पदप्रभातिलिषते ॥ चंदजे
 नराजकेचरनचिंतवनकरतरोगडषसोकअघ
 हरिभाजें ॥ हेक ॥ जवैंपरैंभीरतवध्यानहियमैंधरुंअ
 सुनसवजायसुनकजसाजें ॥ चंदजिनराजकेचर
 यापसवहीगयेपुंन्यपरगदनयेभक्तिकेजोगतैंरा
 जराजें ॥ कामअरनांतुनासिचरनछविनिरघिकरै
 तिदितएकसीदेखलाजें ॥ चंद्रजिनराजचमरतरु
 सोकसुरपुष्यवर्षाकरै ॥ तीनसिरचत्रआसनसुंछ
 जें ॥ देहकीकांतिफुंनिडंडनिवजतहै ॥ निजसुषसरूप
 लिषिणांतगपाजें ॥ चंदजिनराजकेचरनचिंतवनक
 रतरोगडषसोकअघहरिभाजें ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ पदलीरवह
 जुरिमौलिषते ॥ मनवातुप्रनुजीसुंध्यानलगाया ॥ आं
 नश्रौरआंसहीडरासश्रौरडरमति ॥ हारैंश्रांणीकुंवा
 धिर्कांमहठाय ॥ मनवातु ॥ श ॥ भाईश्रौरवंदसवकटं
 वकवीलौतैरे ॥ हारैंश्रांणीकुंवंधेर्कांमहठाय ॥ मन
 वातु ॥ ३ ॥ हाथजोडिबीनतीकरैछप्रनुतुमहीसुं ॥ हा
 रैंवंदेसुधरआवैंसोजोय ॥ मनवासुप्रनुजीसुंध्या
 नलगाया ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ रिषतालिषते ॥ धरिधनिआ
 जिकीयेही ॥ सरैसवहोकाजमोमनके ॥ गयेअघ ॥
 हरिसवनजिकें ॥ लप्पाप्रमुषआदिजिनवरका
 विपतिनांसिसकलमेशी ॥ जरेतंडारसेपतिका ॥ ३ ॥

सुधाके मेघजंवरसें लष्यावे ॥ २ ॥ नदी परतीत ए मेरे सा
 ही हो देव देवन कां ॥ ट्टी मिथ्यात की मोरीः लष्यावे
 रदत्रैसा शुभ्यां मैतोः ॥ जगत के पार परनें का ॥ नवल
 आनें दूजं पायाः ॥ लष्यावे ॥ संपूर्णः ॥ कीये आरोधनो
 तिरी ॥ हीये आनें द व्यापत हैं ॥ तिहारे दरस कूं देवै ॥ स
 कल ही पापनासत हैं ॥ श ॥ नली विधि पूजिऊं की नी
 व हो रि सुं न दान दी ना हैं ॥ करो जिन भक्ति हित तैं ही
 ज मारा सुध की ना हैं ॥ श ॥ थ क्यो मैं ट्टि कै सगरे लषे
 में सुर विशेषा हैं ॥ न ही कोरी तुम तुल देवा जगत स
 व हे रि देष्या हैं ॥ श ॥ स ही हो जगत पति तुम ही ॥ नुघार
 क विरद नारा हैं ॥ कहां लो की जिये महिमां ॥ करत
 ज स ई इ हा स्या हैं ॥ घा ॥ हरो उष मो त एां अब ही ॥ लगे
 जो संग सार हैं ॥ प्रभु जी या अरज चित धरिये ॥ नव
 ल चेरा तिहा रा हैं ॥ इति हं र्णी ॥ विषे त्याग शुभ कारे
 ज लागे ॥ प्रभु सु मर न दी वार वे ॥ जग ना एक जग वे
 द न करिये ॥ ये ही जगत में सार वे ॥ विषे त्यागि जा श दी
 न ड पित स व ही के रि छ क ॥ निर धरा आ धर वे ॥ म
 म छो डि ग ह्त्रे और कट्क स व ये वां छा मन धर वे
 लग पार हो जिन चर न न से ती ॥ ज्यो सुष ही य अ पार
 वे ॥ विषे त्यागि ॥ २ ॥ नवल कह्य ह्त्रे रज की जि
 यो न व द धि पार उ तार वे ॥ विषे त्याग ॥ ३ ॥ पद संपूर्ण
 पद ने रु की चाल में लिखते ॥ प्रभु चरणार हं द नो निने
 द के रा ॥ टिक ॥ को टि ना तुं मे द ति हो न धन का व जे रा वे
 ती न लो क व्या पित हैं प्रताप है घने रा ॥ पूजे चरणार वि
 द ॥ १ ॥ मरुति के देषे पाप आ वत न ही ते रा ॥ से व त चर
 णार हं द कर म ही त जे रा ॥ पूजे चरणार वि द ॥ २ ॥ जो
 धा परि म हरि की ज्यो ला वों म ति वे रा ॥ स्वामी अर दं
 सिये ही दी जे मो च डे रा ॥ पूजे चरणार ॥ हं द ॥ ३ ॥ संपूर्णः

रागविलाजलमै॥ षोयोरैगवारतैसारोदितयोहिषोयो०
 टेक॥ सामांयकपुजानहिंकीनी॥ ऐतिभईडगछायालेने
 ज्ञानरिसौयो॥ षोयोरैगवारतैसारोदितयोहिषोयो॥ १
 वालयनकछुपांनकीयोनही॥ जोवनवणित्तालार
 तैसुभवीजनवोयो॥ षोयो० २॥ वृद्धिपणेंतसनांअतिप
 रणी॥ सवधरकौंडषनारतैतिजिहात्तमदोयो॥ षोयो०
 ३॥ सुगुरुवचनदरियावमैरे॥ आयोआपसमहारि०
 तैविषदासनधोयो॥ षोयोरैगवार० ४॥ संपूर्ण॥ अ
 पदलावणीमैलिषते॥ अरजहमारीसुणोंदीनपते
 कौंननोतितिरनां॥ हमधूषीफिरतसंसारचत्तरग
 तिसोसुंमसुंतिरणं॥ टेक॥ घोराघोरतरककैनीतरे
 नानांडषनरणं॥ साडनमारणछेदएनेदण॥ और
 देहधरणं॥ अरजहमारी १॥ कवकं कतिरजं वजोने
 पायकै॥ गलैयासिधरणं॥ बुधातिरथाअरसीतहं
 सतताः॥ मारिमंरिकरणं॥ अरजहमारि २॥ मिन
 षाजनमपायकैं विसस्योः॥ विषेनोगरणं॥ रंवरं
 कछिनमोहिदीषत॥ कहुंनोहीसरणं॥ अरजहमा
 रि ३॥ देवविजृतिपायकैंसुंदरअदिकदेषिकरणः॥
 तवमालामुरकाणेंलागी॥ सोचकीयोमरणं० अर
 जहमारि ४॥ अैसेअनेतवारमैनदक्यो॥ कहुंनोहि
 सरणं॥ साहिवमोंसरणंगतिरावो॥ जनममरणह
 रणं॥ अरजहमारीसुणोंदीनपतिकौंननोतितिरणं
 ५॥ संपूर्ण॥ पदशमसहरटीमैलिषते॥ चतुरनरमनकुं
 समकांणं॥ विघटघाटपाषंडजगसिखरपारउतर
 जांणं॥ टेक॥ मधुबुधधरनमिष्याजलजंडा॥ इंदकउ
 नमांनो॥ यावधरैतौंपकरिडवोवैकुणुरसुगुरदानो॥
 चतुरनरमनकुंसमकांणं॥ शनकटजायसौंजलपी
 विसौंहीयहैरणं॥ जलघारोअतिरोगवडावे॥ रागदोष

माता॥ चतुरनरमनकूं समकायां॥ १॥ कुं धरमनुजाडगेला
 हेमोहप्रमछातो॥ कोमलोमदेउंचोरलुटेरा करेवहोतअ
 ना॥ चतुरनर॥ ३॥ कुवदियोनतावफकफेलेत्रलाजक
 र्त्राणां॥ घरचीलारविमलनावतीलीजेसुनमानो॥ चतु
 स्नराध॥ सुनदपोनसत्तगुरधेवदया॥ अनकेसंगत्राणां
 देवकहेसिवपुरजोचाले॥ सावधानस्याणां॥ चतुरनरम
 नकूं समकायां॥ ५॥ संपूर्ण॥ पददुशुशीलिते॥ आयक
 यथिरनहीरहगीजाएतहेसवकोया॥ कंडीकूंसांचीक
 रमांनः॥ करमवंदैनतेतोया॥ सुरनरग्यांतीडारैमारगत्र
 पणोजोय॥ आयापुरकाजेदलष्यावननरमतहेपद
 गोया॥ तुनश्रकरिदेषिसयातांजन्ममरणउषदेईसुर
 ग्यांतीडारै॥ १॥ उत्तमकुलसरावगकौपायो॥ सोअवर
 यामतिषोवो॥ अवसरवीत्यापरपछितावैकहदेतह
 तोयहैं॥ सुरग्यांतीडारै॥ २॥ परमतिछेंडिलागिसुधमा
 रग॥ रागादिकमलधेय॥ जिणवाणीधारीतिसाहिव
 मुक्तिचंडवरहोय॥ सुरग्यांतीडारै॥ ३॥ संपूर्ण॥ चालनध
 लामेंलिषते॥ कोईनहीमंतातेराजुमैदिक॥ समकसोचकरे
 देप्रसयातांतुतो फरतत्रकेला॥ जुगमेंकोईनहीमंताते
 रा॥ ४॥ सुयनेंदासेसाररघ्याहैंहटवाडेदामेला॥ विनसिज
 यत्रंजुलिकाजलजुतुतोगरभमहैला॥ जुगमेंकोरी
 रसिदामाताकुमतिकुमातामीहलोमकरिषैला॥ येते
 रेसवहैंउषदाशीनुलिरहोर्नजंगेला॥ जुगम॥ ४॥ पातै
 सोचसमांलग्यांतकरिफेरिंमैलेप्रहिंवेलाः॥ जनिवां
 णीसाहिवउरधरोपावेमोषिमहेला॥ जुगमेंकोरीन
 हीमंतातेरा॥ ५॥ संपूर्ण॥ वीतगईसारीरनिशांणीलारे
 टेक॥ दोयघडीकौंतडक्योरहो॥ छोंडिदेहसवफेमःशां
 णीलारेवीत॥ उत्तमनरनवसंगतिआत्म॥ मतिषे
 लयोसवजैत॥ शांणीलारे॥ २॥ जोकसुकरणीहोसोही

ने

करि सुणसतगुरकेवैन॥३॥ इतिसंपुर्ण

॥ अथेनेमिनाथजीकादसनबलिबलि॥ महेष्वावालाहे
प्रभुनावस्योजी॥ महेष्वावालानेमकवार॥ वादीराजलवि
तवेजी॥ अरुजकराछावारंवार॥ येतौप्रभुदष्पालहीजी॥
जायचद्राछोगदगिरनांशि॥ महेनीसंजमहौप्रभुलेय
स्याजी॥ संजमलेस्यायाकीसाथ॥ वाराभासांहोंप्रभुना
वनांजी॥ नानाविधितेजीतयसार॥ नवसमुद्रहैप्रभुकं
डियाजी॥ गहोहमारोजीतुंमहोय॥ अत्रमोहिसारोप्र
भुजीतुंमघणीजी॥ २॥ नवनवकीमेंयांकीचरयांजी॥ २
शुवैभवभीरायोसाथि॥ पहलैभवतोंप्रभुजीनीलछो
जी॥ मेंनीलाणीथाकीसांथि॥ सुनिवरकुंतोमारणताव
याजी॥ हवकरिराषामेहजिणवार॥ सुनिवरकुंतोयेवंद
नांकरिजी॥ सुजगतिवांधीयेजीवार॥ अत्रमोहेस्यारो॥ ३
उजैनवतोंऊवासेवहीजी॥ नांमधरायोतपदनकेतऊं
देवाणीथाकीसंगरहीजी॥ तपमिलिकीयोदोन्यासांथ
अत्रमोहेस्यारों॥ ४॥ तीजैनवतोंसुरपहलासुगमेंजी॥ ४
रीअपहरायेप्रभुमोही॥ नानांविधितेजीसुषभोगयाजी
वेविविमाहाहमतुमदोयदेव॥ तीर्थकरहेप्रभुवंदिया
जी॥ क्षेत्रविदेहाहेप्रभुजाय॥ पहलानवसुंवांधेयोंदोकांजे
जी॥ पायोसरमजेहअपार॥ अत्रमोहे०५॥ चौथेनवतो
होप्रभुआशीयाजी॥ धीघाघरकाहेकुलमांहि॥ चिंतागत
वीनांमधरायेजी॥ विजयारघगिरहिरमांहि॥ वंडावंस
मेंहोप्रभुपयांजी॥ जदवीमेंछीथाकीलार॥ अत्रमोहे
स्यारो०६॥ पंचमनवतोचौथासुगमेंजी॥ मोटादेवजई
जहोया॥ श्रीरदेवतोसवसेवाकरेजी॥ सीसतवावैसवही
तोय॥ अत्र०७॥ छठेनवतोअपराजितऊवाजी॥ राजाऊव
जीकोईसार॥ वरतजपाल्योहेसुरावगतलोंजी॥ पुंभु

पजायो दोसासारमे नषादेही को लाहो लहो जी ॥ धर्म जने सु
 रहे को शी पाया ॥ अब मो हे सारो ॥ ७ ॥ अच्युत इंद्र कुवा न वसा लेवे
 जी ॥ स्वर्ग सी लेवे नुप न्या जाय ॥ तिथ सागर तो हिवां शी सकी जी
 ती न हसत की को र्जाय ॥ वा का सुष को जी को शी अंत नही ॥
 जी ॥ कह्यो किनी से हे को र्जाय ॥ अब मो हि सारो ॥ ८ ॥ स्वरप
 ति असे कन व अवे जी ॥ राजु ल कुल मे मे हे अब तारा ॥ राणी
 परणी प्रभु अति घणी जी ॥ मे पट राणी छी जि ह वारा सा ध मुं
 ती श्वर हो प्रभु योषिया जी ॥ दां न द ज दीयो चार घर कारा ॥
 रत्न जया ल्या हे श्राव गत एों जी ॥ धर्म जने सुर हो प्रभु योषि
 यो जी ॥ तीर्थ कर प्रभु जी त व वं घ्या जी ॥ जो तुं मजा एों स व नि
 रधार ॥ अब मो हे सारो ॥ ९ ॥ अह मिंदर को नी पद पा शी पोई
 जी ॥ नवनव की कुंजिय छें वात वा का सुष को जी को र्जा अंत न
 ही जी ॥ कह्यो किनी से हे को र्जाय ॥ अब मो य ॥ दस मां न व ते
 हे प्रभु आ शी या जी ॥ जो ड कुल मे हे अब तार सेवा देवी मा
 ता न रघु र्जा जी ॥ नगर ड्वारिका कही को र्जा सा ॥ १० ॥ सम द
 विजे जी रा हे ला डी ला जी ॥ कुल मे वं द ज वं दस मां ना मा त
 पिता तों हे हरष त भया जी ॥ तीर्थ कर सु त हे को शी जां एा ज
 नम स मे तों सुं शी ति आ र्था जी ॥ मे र गिरा परि हे ले ज्या य ॥
 जल ल्या य के जी सह स्त्र अ वी तर कल स द ला यें ॥ ११ ॥ ज
 नम स मे को वर न न कर स के जी ॥ स्वरप ति क हे त नै या व पा
 रा ॥ वाजा वा ज्या प्रभु जी अति घणी जी ॥ इध वि स व द अ पा
 रा जनम म हो छव देवा सो धि के जी ॥ ता त मा ले ने सो प्यो आ
 य ॥ जनम सुं फल सुं र अ प नों जां ति के जी ॥ सिद्ध स्यां न का
 यो ह व्या जाय ॥ अब मो हे ॥ १२ ॥ नि सि दी य जि की प्रभु जी च
 दि र ही जी क्रीडा करि हे आ ग एा मां हि ॥ वाल परो सो प्रभु जी
 र म त हे जी ॥ ई स वि धि दि व ज र एा गुं मां य ॥ एक दिन तो वे १
 डा मा हा राज हे जी सुं न क्रीडा की कर वा जाय ॥ रति व सं त तो
 हे आ र्नि ली जी जल क्रीडा नी स व ही क रा य ॥ अब मो हे ॥ १३ ॥

कैरूपयाडं वहलधरुजा दवाजी॥ मतो मतो छे हे जी हवार सा
 रामे ही वलकुंणामें घणो जी जी को त्रवही करो वी चार॥ को ई
 वता विपांडव महा वली जी॥ को ई वता वै के सिव राय॥ सारा
 ही को हे वल तो लियो जी॥ षडास नामें सवही आया निम
 नाथ की सरजर कौ नही जी॥ वदन रहे सवही विलघाय
 त्रवणे १४॥ के सिव के मन संसों उ पनो जी॥ निमत जग्यो नी
 पुं छण जाय॥ व्यां ह करा वी ने म कुं वार को जी॥ मन में वै राग्य
 हे उ पजाय॥ उग्र से ए कौं टी को ने जियो जी॥ राज ल दो नो री
 उ म गाय॥ समद विजे जी रा हे त नं दन जी॥ उग्र से न वी मन ह
 रषाय॥ वडी वघाई सवघर वार में जी॥ सजे नगर वा हे को री
 पाय॥ त्रवणे १५॥ ल ग न लिषायो सु न दिन सो धि के जी दी
 नो व प्रजल लगन पढाय स म द विजे जी कल स सो पिये
 जी॥ पो ह ज कह ज धी दाय॥ जां न दिगं वर प्रभु की हृद व नी जी
 छपन कौ डि सवही सिर दार॥ जा द व वं सी सारा संग ली पा
 जी॥ च द या व्या ह ज ने म कु मार॥ त्रवणे १६॥ जु न्यां ग द नी
 ड र ल न आ र्श या जी॥ तो र न च टि याने म कुं मार॥ प सुं व न
 को नी हे वा डो न सो जी॥ ज्यो जी वां करी पु कार॥ सु ए पी पु का
 र जी वां त ए पी जी मन वै राग्य हे उ पजाय तोरण से ती रथ के
 रियो जी जा य च द्रा छे ग ट गिर नार॥ पा च र खां प्रभु मे सु ए ल
 ही जी॥ तो ड गे ए नो सर हार त्रवणे १७॥ ता त मा त नी यो स म
 जा र्श या जी मे ह नी आ री थां की लार॥ प्र र ज क रू ड प्रभु ये चि त
 धरो जी॥ ये क वा त की वा त ह जार॥ न व स मु ड्ज ल प्रभु जी उ
 रहे जी॥ तु म ही उ तारो ज ल से पार॥ से व क वा डो हे प्रभु वी म
 वै जी॥ न वि जी व न को हो आ धर वे १८॥ राज ल त व ही हे
 अ र ज कान र्श जी॥ उ र्ध्व र त प ह त हे को र्ध र सु र्ग सो ल वे
 सु र ल ल तां ग न यो जी॥ अ स्त्री लिं ग छे धि को र्श सार नि म
 तां थ जी को मु क्त ग या जी॥ सी हि स थां न क प हो या जाय गो
 सी सु ए सी प द सी ना व सो जी॥ सो पंच म ग ति हे को र्श पा य ०
 त्रवणे १९॥ इ ति द स न व ने म ता थ जी का सं श्रुं ॥

अथनेमनायजीकोवाशमासोलीयते॥सहलोहेआयोछेसा
 वणमासंघेलाणचालोतीजडीजी॥सहलोहेराजलंकीपोछेसी।
 गारनेममनावणकारणजीसहलोहेनेमजीसीयोछेवरागफी
 रीयाछोचोयवीजी॥१॥सहलोहेनाडुनंरायातलावमहीक्व
 लवीगासीयाजीसहलोहेनेमजीनकहजोजायकेलघकरे
 तोवाहडोजीसेहलोहेमाहनंतहीलगारी॥येहेनीसजमले
 पस्याजी॥२॥सहलोहेआसोजीअथीकारडसराहोथेयरीकरो।
 जी॥सहलोहेनेमजीकीयकडीफटे॥हाथजोडावीनतीकरने
 सहलोहेनेमनमानवाताराजलमनवीलीषोगयोजी॥३॥सहले
 हेकातीमंकोणवीचारनेमनदीषवीसतोजी॥सहलोहेघरीयर
 दीवलाजोपऊदीवलावीनकारेहोजी॥सहलोहेकामणीकी
 पोछेसीगारुनेमवोहणोमोरहाजी॥४॥सहलोहेमागाअमंर
 जाद॥ऊनेमनोणोकोरहजी॥सहलोहेवामणअप्रडगवार॥
 कुडौलगनंलाष्यायोजी॥सहलोहेमाहामकाइचुकवीणअ
 वगणऊकोप्ररीहरीजी॥सहलोहेयोसमपुरीअसीसं॥ऊजीनरा
 सीकोरोहंजी॥सहलोहेचालोसषीदससाथी॥पहरीपटमंरसव
 टोजी॥सहलोहेनेमजीनकहजोजायेराजलअवअरजनजी
 ॥सहलोहेमाहामासकीरतीऊनेमनोणोकोरोहजीसहलो
 हेनेहनतोऊजायअणवतकीआरतडीजी॥सहलोहेवा
 मणनकाइदोसकरमलाषोसोपायेयोजी॥७॥सहलोहेआयो
 छेफागणमासहोलापुजणआलायजी॥सहलोहेषेलसषीव
 संतं॥षेलवामणवाएआजी॥सहलोहेषेलसाहुपोणऊवीएषे
 लीकोरहजी॥८॥सहलोहेआपोछेचैतमास॥ममतानाजीमंनंतं
 एजी॥सहलोहेसनामसमकाय॥ओरअंलावरआणीस्याज
 सहलोहेनेमवीनाओरकोनहीपातावरवराजाणीस्याजी॥९॥स
 हलोहेवसाषावतमाहीदषतलनुमीरहाजी॥सहलोहेराजलतो
 ल्योवोलकडवामीषसहकीहोजी॥सहलोहेदेषीचीतवीचार

पेही गोत
१२५

सासोनागोमनतगोजी॥१०॥सहलोहेत्रायोछैजेठमासएजल
मनगाछोकीपोजी॥सहलोहेतोयोछैतोसरहारंमंसंतोषो
त्रायंपुजीसंहलोहेनेमजीसुकहजोनाय्यामेहानासडामले
मीलाजी॥११॥सहलोहेत्रसाछात्रयाकारगीरनासाचछीवा
लीस्याजी॥सहलोहेराजलनेमकवारदोन्यामीलीकरतपली
पोजी॥सहलोहेयोह्याछैमोषाडवाराजनमसुयारोत्रायपणोजी
१२॥सहलोहेजवाछैजनकारपुजणत्रायामादेववताज॥सह
लोहेराजलनेमकवारजीहीकीतूहरगापस्याजी॥सहलोहे
पासीसुषत्रपारयासीसपतीत्रतीयनीजी॥सहलोहेदेषसवंस
मारसुजाणावाणीगावमनतणीज॥सहलोहेगावसवनरीता
रीतरीत्रायसुधरागापस्याजीसपुरण॥दसकतलीदुमीराम
गोधाम॥१॥त्रबैतेरार्यथ्यानवोर्यत्रतेरार्यथकोचलायोतामैएती
वस्तुडरिक्काणवहराईतीकोकागदकामाकासाहिमीनापानस
यानेरिकागोदीकांलिषिचलायोताकोउवाजुवाबत्रायोतीकी
नकलकागदकरारमितीफागणसुदि॥धसंबत१७॥धणकीसा
गानेरिकामहाजनानेकानावतजलासरहंसिधिस्रासागनिसि
जसथानेकत्रनेकवोपमाजोगनाइजीश्रीमुर्कददासजीजाइ
जीश्रीदयाचदजीजाइजीश्रीमहास्येयजीजाइजीश्रीछाजुसा
इजीवाकील्याणदासजीत्रासुदरदासजीवाबाहारीलालजीस्म
ससाहिमाजोगपलियतकामथिहरकीसतदासचितामणिदेवी
दासतंदलालजगनाथकेमश्रीसबदबसात्रवाकासमाच
रेनलाछैथाकासदानलाचाहिजेत्रर्षचिकागदथाकोत्र
योसमाचारजाणमात्रागैइहबिधिहोयछीतामइतनाहा
लमेटीमातजलपाचीछीत्रजबरामगोदीकाकाडेरांमै
छीनासुतकसछौ॥

॥१॥श्रीप्रतिमाजीआगसाजराणहोतीत्रवेनीरात्रणहोय
॥२॥छै॥श्रीजगवानजीकीपुजाबविकरवात्रवेतनाहोयक
त्रारछै॥श्रीदेकराजीमर्नडाररहेछैसोत्रवेर्नमारडरिक्

कर्मोच्चागासेतीर्त्नारराषिवानैपावेनिरमायलवहरायो॥

४॥ आनीजलीटपरिपधएयकलसटालतसोअबेमाजीकाप्रति॥

मातोवेदीउपरिवारजेजेवाकीनेठैहरहेअरमुटाअगैअलाह॥

दाकलसटालेअसेतोयाविधिअेआगासेताउमेदमारखाजोप॥

नीरतिनहोयः

५॥ अरसोतिकविधिषेत्रपालनोवग्रहकीपुजाहोयचीसोमनेकरा

द्विअस्त्रादेकराजामैजुवाषेततासोमने॥॥

१७ देऊराजीमैबीरणावगेसेतीबहालिलेतासोमनेः॥

६॥ आजीकीपुजाकरताअरस्यामपइसायालतासोमने॥

एदेहराजमिमाललेतासोमनेः॥

१० देहराजीमैजोजिगजातासोअबेदरवाजावारेरहमाहिपसि

वानेपेवेः॥

११ देहराजीमजुत्याकोजोफोलेजातासोअबेमनेकरोदरवा

जावारेरहे॥

१२ लोंगवगेकोअवोत्रीपुपियोचारामैशालिचहोमतासोमने

+॥ राचुपहलीमोजिगमाजतासोमनकमा॥

१३॥ अबेमहाजनहाराछमाजधैपाणापुजनेमहाजनहील्येदे

१४ नाहवएमीजिगघरघरसेतील्यावतासोअबेम॥

नेकर्मोअरएकसरावगीहाएकघरसेतील्यावेः॥

१५॥ कुलीवगेनिरमायलकोअंगीकारकरेतीनमानानहा

१६ तालजालरिजीजागकसावदवजावतासोमनेः॥

१७॥ रांधोनाजचटावतासोमने॥

१८ थालोमीचहतीसोमनेः॥

१९॥ देहराजीमैआपसमेकोइकहीनेउविउमोनहोयएक

जगवानजीकीवदगीमैरहे॥

२०॥ नादवासदि१५केदिनलुगाइआजीकीबेदीचोगिरदा

फेरआपसमैकटकालेरसोमनेः॥

ही॥६॥ छठे विक्रमसौ संबत् ३॥ मोत्र अहंकारा ॥ बंससोमकू
 लचक्रंवांण ॥ उततत्र हंकास्यौ ॥ राजिश्वा अने रामंजीकूलदे
 व्याचक्रेश्वरी ॥ सामसकेला ॥ सातवौ विक्रमसौ संबत् ४ ॥
 गोत्रतरपतिहेलावंससोमकूलचक्रवाण ॥ उतततरयस्ये
 राजिश्वा नरोतमगिरकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ छै विक्रमसुसं
 वत् ५ ॥ विसाषगोत्रपावडे फिथस्य ॥ बंससोमकूलचक्रं
 वांण उततकीथस्यौ ॥ राजिश्वा काजरांमकूलदेव्याचक्रे
 स्वरी ॥ ए ॥ नवमो विक्रमसौ संबत् ६ ॥ मासजेष्टगोत्रजल
 वाण बंससोमकूलचक्रंवांण उततजलवाण ॥ राजिश्वा
 जसोमयकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ १० ॥ दसमो विक्रमसौ सं
 वत् ७ ॥ मासत्रसादगोत्रत्रुलरा बंससोमकूलचक्रंवां
 ण उततत्रुलाण ॥ राजिश्वा धुधरमलकूलदेव्याचक्रे
 श्वरी ॥ ११ ॥ ग्यारवो विक्रमसौ संबत् ८ ॥ मासकातीगोत्र
 दंडोघा बंससोमकूलचक्रंवांण ॥ उततपनड २ डोथोरा
 जादमतारिकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ १२ ॥ बारहो विक्रम
 सौ संबत् ९ ॥ मासफागुणगोत्रराजनर ॥ बंससोमकूल
 चक्रंवांण ॥ उततपतराजनरारांमस्यंयकूलदेव्या
 चक्रेश्वरी ॥ १३ ॥ तेहरमो विक्रमसौ संबत् १० ॥ मासजेष्टगो
 त्रउकड्रा बंससोमकूलचक्रंवांण ॥ उततपनडकड्रोरा
 जाडजनस्यंषजीकूलदेव्याचक्रेश्वरी ॥ १४ ॥ चौदवोगोत्रवि
 क्रमसौ संबत् ॥

रीवप्रसांभीया सत्सहजार १७००० सोकोडीधनमुवात्पाके
 पांसीदेवीनरहो तबनागनगरसौनटरकत्रपसजितजीपसंके
 तनममनसोत्रज्ञजिनसेनजीवेलोनेचिदाकीधोकहीजवंडेने
 धूपेपाय... तर्दमासमागिधिरगोत्रसाहबडावंससोमकूलर
 कं... बाण उमनसाहबडोरजासाहिमलजी। कूलदेव्याचक्रेश्वरी
 आठेदोदसिवाकीफेरिजेनहा। १५गोत्रविक्रमसोसंबत्। एमास
 बेसाधगोत्रपाटणावंससोमकूलवृवरउतनपारणिराजाप्रम
 रंमजीकूलदेव्याआमणिबाहणबलधलादेनोक्षीहोयगा।
 पूर्ववेतोक्षीहोयाइहत्रहजिनसेनजीपनिजेनीकीया। आत्र
 थंगउतपति। जसोत्रदीजीकेवारेसबएकछासोभ्रजमोम
 द्जीजैनधर्मकोबिद्यमानंजंणिकरिसरबसिष्यजताजना।
 मेकहीजुषडेलेउतपातऊवोसोत्रवकोईजावी। तबसगत
 कलो। जजाहनेश्रीगुरुआपत्रापाकरैसोजावेसोआगुरुआ
 ग्यानोत्रारहीनेकरीछात्ररजिनसेनजीउतमतथकोहो
 प्रकरिकहीषंडेलेऊजासु। तदिसबलपत्राग्याविनांहा।
 गमनकीयो। तदिसिष्यछात्पाविचारीजोषोतोउतमतहो।
 यत्ररगयोसोजिनसेनजीषंडेलेजायत्ररषंडेलेवालमहा।
 जतछाश्रेष्टात्यांमैआयवाकीरष्याकरैरष्याकरैत्ररर।
 जाषंडेलगिरकागोलीमेटासोषंडेलेगिरआदिनारीशु। चौहातो
 जेनीकीपानैठायछैजिनसेनजीकालवसिऊबातेठायछैगोतन
 बांधोषंडेलगिरआदिचौदाजार्तोजेनीकीयागोतबांधोयछै
 बाकीगोतत्रोरत्रोरंआचाप्यप्रतिबोधागोत्र। ५५चौरासीपर
 जंतषंडेलाकागावांपुआवकन दारकांआयणकीयाजसोत्रइ
 जीपछैजिनसेनषुहागावमैरहा। जतीसोमहाजतानैप्रतिबो
 धिआगांवमैजिनसेनजीरहा। जसोत्रइजीताईतोबनवासी
 छायाछैत्रइबाऊजीपाटिबैघासगलाजत्यांआणमोना।
 अरुआयनम्यापणिजिनसेनजीआग्यानोमांनयणिरु
 रिनगयातेठायुंगछुबिरुइहोतागया। पणिअइवाऊजी
 ताईजीवनवासारहा। अरुसोतांबरनीयणदिनताईवनमै

तेजायत्रहारकीयो। जेठपाछेअठवाकजाडरसीसदीजबुगुरूले
 पीछेघारीबांछांसिद्धिमतिहोह तेठामुआदिसुसुएजीतीकीये
 आस्त्रोरखुराणपुरानपञ्चा। जितसेनजीकालचसिजवा। अर
 जेठहीसुंयाकापंध्यांकेमागधीनाषाछुटतीगरियाठवरति।
 औरपकडीतेठपाछेग छुआपत्रापणावाध्या। समोधिकरे
 आपणजदारकआवककीयाभावगाकेप्रग्रहकीयो। यह
 कासोषंडेलवालभावकाकावसकीया। जातिगोतवोरसात
 कोतपसीलछे। १ प्रथमगोत्रसाहबंससोमकूलचोहराउतन।
 षडेली। राजाषंडेलगिरकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसोसंब
 त२कौ। २ गोत्रनवसोवंससोमकूलचोहरा। इतननावसो।
 राजानावस्यकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसोसंबत३। ३ गो
 त्रपहाडाउवससोमकूलचक्रवाणउतनपहाडोराराजापूर।
 एचंद्रकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसोसंबत३। ४ गोत्रपापडी
 बालवंससोमकूलचक्रवाणउतनपापडिराजापोमस्यकूल
 देव्याचक्रेश्वरी। इकसूर्यमांताविक्रमसुसंबत३। ५ गोत्रअ
 रडकावंससोमकूलचक्रवाणउतनअरडकोराजाअजब।
 स्यकूलदेव्याचक्रेश्वरी। आठेचौरसियासेनहीचाकीकोअ
 पमानकरेनहा। ६ गोत्रअहंकास्पावंससोमकूलचक्रवाण
 उतनअहंकास्योराजाअनेरामकूलदेव्याचक्रेश्वरीसोसके
 लीविक्रमसोसंबत। ७ गोत्रनरपत्यावंससोमकूलचक्रवाण
 उतननरपत्यागजामरौतमगिरकूलदेव्याचक्रेश्वरीवि
 क्रमसुसंबत। ८ गोत्रपाडेजिथसावंससोमकूलचक्रवाण
 इतनकीथम्योराजाकाकारंमजीकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्र
 मसोसंबत। ९ मासबैसाषा। १० गोत्रजलवाणंवंससोमकूल
 चक्रवाणउतनजलवाणो। राजाजसोपपकूलदेव्याचक्रेश्व
 रीविक्रमसुसंबत। ११ मासजैश। १२ गोत्रतुलणंवंससोमकू
 लचक्रवाण। उतनतुलाणोराजातुधरमलकूलदेव्याच
 क्रेश्वरी। विक्रमसुसंबत। १३ मासअसाद। १४ गोत्रदरजेद

शेरासीगो
१३४

वंससोमकूलचक्रवांणउत्तनदरजेद्योराजादमतारिकूलदेव्या
चक्रेश्वरी॥विक्रमसुसंबत्॥५॥मामकाती॥११॥गोत्रराजनधवंससो
मकूलचक्रवांणउत्तनराजनईराजारांमस्यंधकूलदेव्याचक्रे
श्वरीविक्रमसौसंबत्ईमासफामुण॥१२॥गोत्रइकडावंससो
मकूलचौहाणउत्तनइकडो॥राजाइरजनस्यंधकूलदेव्याच
क्रेश्वरी॥विक्रमसौसंबत्ईमासजेष्ट॥१४॥गोत्रसाहबडावंस
सोमकूलचक्रवांणउत्तनसाहबडे॥राजासाहिमलजीकू
लजीकूलदेव्याचक्रेश्वरीविक्रमसौसंबत्ईमासत्रसाटात्रा
ठेचोदसीचाकीफेरिजेनहा॥सौत्राठकैदानचाकीफेरितब
हाथसोहाथलागाभेलिवालागाकहीजेप्रहारेहादि
नपुजिनीकसोयांमुनेफेरिअबजदिछे॥५॥जोऊजोसाहब
डोमाहारावंसकौ॥त्रौरकूलदेव्यायुजेतदिसौत्रौरलपुजे
लागासंबत्॥१४॥४॥कासौचक्रेश्वरीवजनककरुईइहत्र
हषडेलगिशवंगेरहजई॥१५॥जतिबोहराछासोजिनसे
नजीनैजेनीकीयाचक्रेश्वराषंडेलगिरिकीगोलिमिटासा
सुंयादेवाकूलदेव्याठाहराजिनसेनजीपछै॥त्रौरत्रौरत्रा
चार्यगोबायुयोत्रबायोत्याकोतपसाला॥११॥गोत्रपाटणा
र्यससोमकूलचक्रवांणउत्तनपाटणा॥राजापरसरामजी
कूलदेव्याप्रमणिवाहाणबलधलादेतोइषाहोयगायबे
चेतोइषाहोयविक्रमसौसंबत्॥एमीतीबैसाषसुदि॥५॥पा
छैसंबत्॥१२॥५॥श्वारेधरमचंद्रसिधांतीकेबछराजवासर
जपाटणाऊवासुकातीत्रालमैएकनाईबोलिमैएकनाई
सांभरिकूमावैवासौबोलिमैसुंकातीकादंमप्रकंतानहांत
दित्ररजसूरतिलिषिहरमपातिसाहासुंत्ररजपंजायबु
डायेबिठोकरीगण्योमुमसलमानहवोफेरिहाकिमकैसांभ
रियायोत्रोनाईसंरासुसलमानकसं॥सोधिजायनायानैपका
आ॥जोथेसुसलमानहोहत्तदिवासरजवैसागनाईमसल
तिकरीत्रापसमैजोफलोधिप्राप्राधनायजीकीजातकोन

लेसायत्रहरकीयो जेअपत्तैमद्वजाऊनीउरसासदीजनुगुस्तं
 लोपाक्षेपारीबोछंमिदिमनिहोह तैमसुत्रादिसुसुसुअते
 कीयोअरत्रोरपुराणपुराणपडा जिनसेनजीकालवचिऊक
 अत्रैअहीसुयाकापंअंकेमामधीनामात्रुत्तीमरियाठवर
 तित्रोरपकडा तैमपत्तैमद्वजापत्रापसुवाअं समेक्षि
 स्थि वलेरछटासोजोकहामेहयान्मनाथजीकीजातबोली
 छानोम्हांकोनारिवछराजनैत्रांअदिषांतदिजात्रात्रोवोसो
 अबमेहथांस्योमिल्यामनोरथसिधिऊवोसोसुसलमानजा
 त्राकरिआवांतदिहला। अबसुसलमानहांतोजात्रालामे
 नहीतीसुजात्राकरिआवांछातदिवछराजकहोमैतीचालु
 गा। सोयेसाणफलोधीनैचालतागैलामैमसलतिकारासा।
 जोबछराजनैदिनारिदेमादिजे। सोगैलामैदिनारिदेमाप्रोसो।
 सोपीरऊवोसोसारोआयानैदवलदेवालाग्या। तदिसारक
 हिजोअबऊंसीहोप्राइअबयेसहइकरोतदियीरकहि
 जोतदियांनैहोउमाहासुदि। २। नैकुंडामैषायसोवासापा
 टणीकायाकापीरतैमानैजायपीराणकुंडामैषापसंबत
 २३। वासाकोसोटोयंडसी। २४। गोत्रराणउमनरावेवंसया
 मेचाकूलदेव्यात्रोरल। २५। गोत्रराणउतनराठकोषंसं
 मेचाकूलदेव्यात्रोरल। २६। गोत्रमोदाठतनमीहोवंसयांमै
 चाकूलदेव्यात्रोरल। २७। गोत्रमोघ्राउतनमोघ्रावेसयाम्ये
 चाकूलदेव्यात्रोरल। २८। गोत्रमेअरावतंततरावत्योवं
 सपामेचाकूलदेव्यात्रोरल। २९। गोत्रबिलालाउतनविलासे
 वंसयांमेचाकूलदिव्योत्रोरल। ३०। गोत्रजगराजउतनजरा
 जबंसतादेचाकूलदेव्यासोनल। ३१। गोत्रछाहडाउतनछाह
 डोवंसनादेचाकूलदेव्यासोनल। ३२। गोत्रश्रीमूलराजतन
 मूलराजवंसमोहिलकूलदेव्याश्रीदेवी। ३३। गोत्रलटावाल
 टावालउतनलटावालवंसमोहिलकूलदेव्याश्रीदेवी। ३४।
 गोत्रगोनवंसउतनगोनवंसवंसवंसदेवडाकूलदेव्याहंम।
 ३५। गोत्रकूलजाणउतनकूलजाणोवंसदेवडाकूलदेव्यादे

चौरसा
१३५

मा १८ गोत्रबोरषं उत न बोरषं शोबेसंगे हे लौतकूलदेव्या।
श्री १२ गोत्रमोहनी उत न सोहना वंस सोलषी कूलदेव्या आम
णि २० उत न सोरई जीगां वकै नाई सीरई गीत छै सो नाना षा छै
कूलदेव्या आमणि ॥ अरसागर सोना पातिष्ठा २४ सासा अरि
कराई सीव त्वा ए ए ए वैसा ष सुदिग वारे माघ र्द के अर ष ड
गुमो जीषं जे लामे स तुकार वरस १२ ताई दायो संवत् १२२३
का सालमें ३१ गोत्रयाव डो उत न माव ड्यो वंस सो लषी कूल
देव्या आमणि ३१ गोत्रवृज्ज ह्या उत न षे डेलो वंस सुं दार हा
यमे ह्यो डो ष्यो ज दि सुं वज्ज ह्या क हां या वज्ज ज षा छै कू
लदेव्या आमणि ३३ गोत्रश्याप त्या उत न श्याप त्यो वंस सो
लषी कूलदेव्या आमणि ३४ गोत्रगधा या उत न य यो वंस
सोलषी कूलदेव्या आमणि ३५ गोत्र लोहपां उ त न लो हो
ग्यो वंस सो लषी कूल देव्या आमणि ३६ गोत्रया य त्या उत
न या प त्या वंस सो लषी कूल देव्या आमणि ३७ गोत्रने छुं उ
त न तु छे वंस सो लषी कूल देव्या आमणि ३८ गोत्रवा उ वा
उ उत न वा उ वा उ वे स च दे ले कूल देव्या मा तणि ३९ गोत्र
मोल स स्या उत न मोल स स्या च स च दे ल कूल देव्या मा तणि
४० गोत्रनंग ध्या उत न न गं ध्यां षो कूल देव्या ना ह रिणि ४१ गोत्र
त्र गोत्रनंग ध्या उत न न गं ध्यो वंस गो ड कूल देव्या ना ह रिणि सो या
दिहा डी रूपा की छी सो ग ला य १ मिथा स ए घ डा षो अर दि हा
डी सो नां की घ ण ई अर रा ति ज ग ला गा सो गो धा मे सा ह नं द गो
धो मि र द र च्छा ती ह ष रि उ हा र त्रि पे डो प डो सो ह नं द को मा
यो का द्वि दि हा ड स मे त ले ग या त दि सो गो धा हा थो दि र पू
ज बा ला ग्या म र ती व रो ती क ऊ र हा थो पू ज ना व नां द रि को
लि तो ह ष पा वै उ दिन सू रु टि प डि ग ई जो म्हा कै ती सा ति ना थ र
जा दि हा डी छे सो सां ति ना थ जी तो ति र्थ कर छै सो ये क हे छे सो
ने लि सुं क हे छै संवत् १२४३ ई ह न ह पू जे ला गा नां द रि गो
धा के म मे छै वंस गो धा मे वै क ठे ल्या ती स स्या संवत् १२४६ क
साल में त्या को व्यो रो स ह दे व को वे रो जि रा दे व मणि दे व सो

जिणदेवकातो गोधाही कहावे अरु मणि देवकाठी ल्या कहावे से
संवत् १२३० का सुंकाल पड्यो सवत् १२४२ तां ईबरस १२तां ईसे
सतुकार दीयो ठी लरा संवत् १२४३ देऊरो कारयो वौरन टारक सुज
कीतां कै। ४२ गोत्र अजमेरा उतन अजमेरा उतन अजमेरी वंस
गोड कूल देव्या नादणी। ४३ गोत्र चो धरी वन चौ धस्यो वंस गोहिल
कूल देव्या पद्मावती। ४४ गोत्र सेठी उतन सेठी वंस गोहिल कू
ल देव्या पद्मावती। ४५ गोत्र पाटो धी उतन पाटो धी वंस गोहिल
कूल देव्या पद्मावती। ४६ दूतिक सेठी गोत्र उतन उ सेठी वंस
मेरठा कूल देव्या लोहसली। ४७ गोत्र लुहाड्या उतणि। ४८ गो
त्र नरपाला उतन नरपाला वंस धया कूल देव्या नादणि। ४९ गोत्र
सरबाड्या उतन सरबाड्यो वंस धया कूल देव्या नादणि। ५० गोत्र
दोसी उतन दोस्यो वंस पडियार कूल देव्या चावड्या। ५१ गोत्र
कडवागिर उतन कडवागिर वंस पडियार कूल देव्या चारवा
ड्या। ५२ गोत्र वंदायका उतन वंदायको वंस सोलोत कूल देव्या
चौधिवि दायक प्रतमादो मूपूजै। ५३ गोत्र मोल्या उतन मोल्ये
वंस पडियार कूल देव्या नादणि। ५४ गोत्र बडसालि उतन ब
डसाल्यो वंस पडियार कूल देव्या नादणि। ५५ गोत्र पाड्या उ
तन पांड्यो वंस निरबाण कूल देव्या सरसल। ५६ गोत्र हतिक प
ड्या आमपा उतन पा वड्यो कूल देव्या आमणि आठौ चो द
सिमाय देहिजे व ही बलध वैचे नही। ५७ गोत्र वजमो हाप
उतन वंडेलो वजर हथो सुदार कूल देव्या मोहिणि। ॥ ॥
इत्र है चौरासी जातिक वंस गाव उतन कूल देव्या सुधालि
व्या है ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मन्मथ न धरदा सकत जषडी लषते ।
मनमो हिलो रेसीष सुगुरकी मानिले वै टेक प्रासं सारखारसा ।
गरबिचिकाल अन्नंत गुमायो । नरुजवना मरतन चिन्ता मणि ।
नागि उदेकरि मायो । मन व १५ ऊचै कूल अरसंग तिन्ना छी । सम
कि देषि मनमांही । सब विधि नली बण विना ई मोल बणोता

माही॥मन०॥२॥इसत्रोसरमेधरमनसेया॥विषयतसूरतिमां
 ए॥इसविधिघाटसुहेलाजांन्या॥क्यासमक्यात्वेशांणि॥मन०॥
 कंचननाजनगंगाजलविधि॥षलरंथीक्याकीया॥नस्तवपा
 यविषयुषसेया॥फिदितुसाटाजीया॥मन०॥७॥त्रैसांत्रोसर
 यापत्रजाग्या॥सुषदाबीजनबोया॥विषेविषादतुवारिजसटे
 जनसजोह्वाखुषोयांमन०॥५॥अठपहरमैकहरकरीतै॥सा
 शोयडीगुमाईकोडांमर्याहाथिनआवे॥पावडीचतरांई
 मन०॥३॥पापधहुरावीयननौड॥मानिकसातूमेराफलचन
 दीबारहोयजवरोवैगावहोतेरा॥मन०॥७॥त्रोसुंसमफिसमफि
 सिहलूकरिलैकचूनलाई॥अजिजगवंतनगईसगईत्रवर
 षिरीकौनाईमन०॥४॥त्रैसैकहकरिगुससमफवे॥जोउरमै
 तननहिधारे॥यासूत्रधिककहाकौरिका॥लाठीलेकरिमारे
 मन०॥२॥उरदीआषिउयाडनवालाभेदनमिलियाकोईभू
 धरबलिवलिसतगुरकी॥दिलदीविदनघोरी॥मन०॥

अबमनमैरैवेसुनिसुनिषसुपानी॥जितवस्वरनांचेकरि
 करिप्रीतिसुपानी॥करिप्रीतिसुपानी॥शिवसुषदानधनजा
 तवहैपंचदिना॥कोडिवररषजीवमौकिसलेवैजितचरणवुज
 जकिवना॥तरपरजायापत्रतिउतिमगर्जसफललाहोलह
 रे॥समफिसमफिप्राणीउरग्यांतीषीषसयांतीमनमेकथनूस
 तितरसेवेसंपतिदेविपराईबोयालूनीयावेनीजिजपूर्वकु
 माई॥पूर्वकुमाईसंपतिपाईदेविदेविमतिफूरिमेंरे॥वोपबं
 वीहसूरलतकनो॥इंकोआवनकीआ॥सकै॥अवनर
 समफिबाधिकचूसोदाज्योपस्त्रिवसुषदरसो॥करिजितधर्मद
 नतपसंजमदेविबिन्नोपरमतितरसो॥२॥जोजागदीसेवेसुंदर
 हेसुषदाईसोसुबनफलिपावेधर्मकल्या॥डुमभाईसो
 सबधर्मकेलपडुमफलियारतियायकअवरिडिसहीते
 जतुरांतुरंगगजनीनिधिचौदहरतनचषंडमई॥रतउनि

न प्रभुमेव्यं न कौ। तुम प्रसाद न हरिष न यो निज ध्यान कौ॥७॥
 तु परमा तम देषि तु पदं अय नौ लिष्ये॥ अत म अ न मो र स अ
 पू र्व गू ण च ष्ये॥ सां सो स ब मे टि ग यो म्हा अ नं द य यो ब्र ल॥
 अ षि ड त ति ज प द नी ज ध ट म ल यो॥ य न मो न मो प्र नु दे ष
 ह रि ष उ रि अ नि कै॥ म ग न न यो नु म नि र ष त जि न प्र नू ज्ञा न्ते
 कौ॥ यो ह न क्ति ग ति त र नारा ज्ञो म नि थ रि गा व ही॥ अ न रा ज क
 ह सु या मु क ति सु ष या व ही॥ ए ॥ १ ॥ इ ति वी न ती सं पू र्ण ॥
 अ थ अ जि त ना थ जी की बी न ती टा ल गी त ना थ डी की म
 दे व ध र म गू र ब द के जी॥ सार व ला मु या ई॥ अ जि त ज रा ज
 जी मो हि प्पा रा ला गा जी॥ था रा तो ला गो वा लि हा र्ब ॥ अ ध र
 ती ये मे ह॥ अ जि स थ बि ज या रे॥ रा णी त रा ण प्र नू कं षि ली यो
 अ व ता रा अ जि त ३॥ न ग र ३॥ अ जो ध्या के वि षे॥ रा जा जि
 त स ठ उ क दार अ जि त २॥ इ च म हो च्च व अ र्था ॥ की यो
 ज न्म त रा णे र उ च्छा हे॥ अ डि ता ध इ इ इ र णा बी न वा प्र नु
 तु म त्रि न व न क रा य॥ अ जि त ५॥ हे म ब र ण का या दि षे॥ प्र
 नू को टि सूर्य च्छ पि जा य॥ अ जि त ६॥ स डि ण स ह स अ ठो
 त रा प्र नू दे ष त अ ध म टि जा ई॥ अ जि त ७॥ सु ष ना ना बि धे
 नो ग या प्र नू क ह त न अ व पा प र॥ अ जि त ५॥ त व म न मे यो
 चि त यो॥ प्र नू लो डि य रि गृ ह नार॥ अ जि त ७॥ त य ध रि क
 रि न जि का ज कौ प्र नू घा त्रा या क र्म प्र जा रि॥ अ डि ता २७॥
 त व सु र प ति म लि अ र्था प्र नू स तू ति की री म न ला यो॥ अ
 जि त २१॥ के व ल ज्ञा न नु या प के॥ प्र नू सि द्ध स रू प स म्हा री
 अ डि ता २२॥ जे न बि ज न स र णो ली यो रू यो अ नु रू त्र म र य
 द सा रा॥ अ जि त २३॥ स्या रा त र ण डि हा ज हो प्र नू न व स मू
 र्कौ या र॥ अ जि त २४॥ ति न र नारा मा य रा प्र नू सु णि सी म न
 र वि च्छा रि॥ अ जि त २५॥ च द क र णा वी न ती प्र नू रा षो
 आ या रा॥ अ जि त २६॥ सं पू र्ण ॥ ॥ श्री ॥ ॥ १९ ॥

नगरतहां देवपूजा आदि आ वक के षट्कर्मनिमें साध
धत अरदायिक सम्पत्करूप सूर्यके प्रकासकरिसमूल
तिनष्टकीयों है मिथ्या तव अनंतानुबंधी कषायरूप यो
मोहं धकारजानें त्रैसों विमलवाहननामां वैश्य अरता
के रतिका रूपके नुनहारहे रूपजाके अरहंत देवकी पर
मभक्ति की धरणहारी लक्ष्मीमतीनां मां स्त्री सोपं वेदि
यसंबंधी मतों हरजोगनीनोगतें जे दोर्ज सेवाणीतिने
के वेतेरे दोर्जनाशितिके जीव अरिजंजय अमितं जय
नां मां पुत्रनये ॥ वरुणरिपितानें सप्तवर्षकें अनंतरजेनो
पाध्यायके समीपहमदोर्जनिकुं च्यासं अनुयोगके
समस्तशास्त्रपढाये ॥ वरुणरिपितानें विद्याध्ययनकी
येपीछें हमदोर्जनिको विवाहकरनां विद्यायासोह
मनें गृहवासमें कैदहीनेका कारणजो विवाहसों ना
ही कीया ॥ वरुणिकुमारकालविषे ही आकाशतलमें
जलकरिअरेजे मेघनिके पटलतिनका विलयकहे
एतत्कालविनाशदेधिसंयमधरिगुरुकें समीपह
मसमस्तवाह्यअभंतरपरिग्रहकौ त्याग करिजामें
कार्जप्रकारही श्रवणकहिं धारिप्रकारके सस्त्रक
रिअंगका आच्छादनतां ही ॥ त्रैसीनिरावरणीभगवत
दीक्षाअंगीकारकरी ॥ वरुणरितीखरहतअंगीकारक
रिअरचतुरपुरुषनिके चितरुं कंचमतकारके करने
वाले त्रैसें महाननुग्रहपञ्चरणतिके प्रभाव करिहम
चारिणरिषिनये ॥ जो सार्वभौमषट्षंडकी समस्तधा
राका ईछकछत्रनायकहमारैर्जपरिस्नेहका कारण
अपनें पूर्वभवका संबंधजांणि भावार्थ ॥ हमदोर्ज पूर्व
भवमें तेरे लघुनाशिये ॥ तातें तेरा हमारैर्जपरिअत्यंत
स्नेहभयाहै ॥ वरुणरिचक्रवर्तिकेहैहैं ॥ होतपोधनमोहिके
र्जअधितीयसत्पार्थनुपदेशदेर्जमुनिकेहैहैं ॥ जो राजन

आवेनी नंदी स्वरसूतकी विधि सहित सिद्ध चक्रकौप
 रिचक्रवर्तिकही जो आपफुरमाडी कितं नंदी स्वरसूत-
 कार करिसो तो मेरे उं परि आपका वडा प्रसाद भया ॥ परंतु जो
 यती ईमो सूत किएसी विधि करिं सो विधि क्रपा करिक
 हो ॥ तव सुनि कहै हे जो राज नई सजं वृद्धी यतें आवमो नंदी
 स्वरनामां की ये हैं ॥ भावार्थ प्रथम जं वृद्धी ये हैं ॥ १ ॥ द्वितीय २
 यध्यत की खंड हैं ॥ २ ॥ तृतीय वृद्धी पुष्कर वर हैं ॥ ३ ॥ चतुर्थी
 वृद्धी वरुण वर हैं ॥ ४ ॥ पंचम वृद्धी र वर हैं ॥ ५ ॥ षष्ठम वृद्धी
 वर हैं ॥ ६ ॥ सप्तम वृद्धी र वर हैं ॥ ७ ॥ अष्टम वृद्धी प नं
 दी स्वर वर हैं ॥ ८ ॥ तिस नंदी स्वर वृद्धी प विषें अर्हंत देव कै चै-
 त्यालय हे तिन कों स्वरूप कहूं सो तं सुणि ॥ तिस नंदी
 स्वर वृद्धी के मध्य पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर दिशा विषें ई
 नही नाम के धार कते रहते रह्य वरत हैं सब मिलि व्याहं दे
 शा के वां वन ॥ ५२ ॥ पर्वत हैं ॥ तिन पर्वत निकै शिखर परे
 एक एक चै त्यालय हैं ॥ ते चै त्यालय जो जो योजन के सो
 लां वे हैं ॥ अरय चास पंचास योजन के चौडे हैं ॥ अरपि चै
 तरिपि चै तरियो जन जो भाय मान हैं ॥ अरयं च व ए मणि
 निकै समूह करे जडित सुवर्ण मरी जिन के पी व हैं पुरस २
 ह ॥ तिन चै त्यालय तिनमें श्री मंडप में गंध कुटी के मध्य ए
 क सो आवरतन निकै सिंहासन हैं ॥ तिन एक एक सिंहास
 न उं परि अष्ट प्रातिहार्यो निकै रि जो भाय मान पंच सें धनु
 षकी उत मनुं वी अर अ पनी प्रचूर प्रभा करि जो ती हैं स्
 र्थं चं इ मां तिकी कांति जिनूं तें ॥ असी अरहंत देव की वज्र
 मणी मयी एक एक प्रतिमां विराजै हैं ॥ ते प्रतिमां नी एक
 चै त्यालय में एक सों आव हैं ॥ अर ती सही नंदी स्वर वृद्धी पक २
 व्याहं दिशा तिनमें लाष योजन की चौडी लां बीस मचौ को ॥
 रहजार योजन की ऊंडी अर वन उपवन निकै रि मंडित ॥
 चारि चारि वावडी हैं ॥ तहां असाटक कति गफा गुण रं नती

मांसशुक्लपक्षके अंतके अष्टमीतैलेपपूर्णमांसीलौआ।
 षड्दिनपर्यंतनिरंतरचोसवीप्रहरचेत्यालयनिमेंईजादिक।
 देवजिनप्रतिमांति कौ पूजनकरेहैं। तहांसोधर्मस्वर्गकोई
 इहैप्रधानअग्नेस्वरजिनमेंअैसेचतुर्णिकायके देवदशप्रकार
 रत्नवनवासीदेवअरआव प्रकारके अंतरदेवपांचप्रकार
 के ज्योतिषीदेवसोलास्वर्गसंबंधीसोलाप्रकारके कल्पवृक्ष
 सीदेवगजतुरंगसिंहशाईलवहलजैसे कंकडे आदिअप
 पनेंअपनेंवांहनर्तुपरिचटे। अरमृदंगढोलवंसरीवीणा
 कुंडलीआदिअनेक प्रकारके वादित्रनिकानादकरिया
 सकीयाहैदिशातिकामध्यभागजिनमें। अरअपनीदे
 वांगनांआदिपरिवारकरिवेष्टितचतुर्णिकायके देवते
 नकरिजितमंदिरनिमेंआयकरिवजूरिएकसोंआवसुष
 णके कलसनिमें पंचमांसीरसमुद्रकोजलत्यायसिति
 प्रतिमांति कौ अभिषेककरतेजये। वजूरिजलचंदनअ
 क्षतपुष्पतैवेददीपधूपफलईनअष्टद्वयति तै पूजना
 करिअर्घ्यदायवजूरिजितेंइदेवके गुणांनुवादकरिग
 नितस्तोत्रपाठपदिकरिवतीसईद्वयिकरिसहितचतु
 र्णिकायके देवअपनेंस्थानकजायहैं। न्योसर्वभोग्जो
 विधिदेवनिनेंआचरनकरीसोविधितुंजीकरिसोविधे
 जैसेहैंतैसेतोहिकरुंसीतुंरुंणि। असाठमेंकातीमेंफा
 गुणमेंईनतीनमांसकीशुक्लपक्षविषेअष्टदिनपर्यंत
 यहव्रतकरिएहैसोकेसेंकरिएहैसोंतुंरुंणि। सप्तमीके
 दितस्नानकरिअष्टद्वयति तैजिनेंइदेवकौं पूजनकरिए
 कवारभोजनकरे। वजूरिपवित्रहोयदेवशास्त्रगुरुनि
 कौ पूजनकरिपीछेसंध्यासमयकीसामांयिककरिव
 जूरिगुरुनिकेंसमीपअष्टदिनलोब्रह्मचर्यव्रतअरभ्रं
 मिपरिश्रयतअरपत्रशाकादिकतिकात्यागअंगीका
 रकरिअरअष्टमीकौंउपवाशाग्रहणकरिधर्मध्यानेतैस

सतीकी रात्रि व्यतीत करे। वज्ररि अष्टमी के दिन प्रभात त
 जिनें इ देव के मंदिर में मंडप रचना करे। अर मंडप के
 रूनादि पांच मेरुनिकास्थापना करे। अर तिन पंच मे
 नतिका कटनीति परिजिन विंवति कूं स्थापन करे।
 ताके अनंतर स्नान करि अष्ट विधि पूजा नकी प्राशु कसा
 सहित चेल्यालय में जाय। अर जिनें इ देव के प्रति विंवति
 को अनिषेक करि पीछे जल चंदन अक्षत पुष्प ने वेद्यदी
 पधूप फल ईन अष्ट इव्यनि तै जिनें इ देव कों पूजन करि म
 अर महार्घ सहित तीन प्रक्षणां देय करि जिनें इ देव निके
 चरणतिका अथ नाग में महा अर्घ्य चढ़ाय पीछे यह चोई स
 तीर्थ कर देवतिका जयमाला कों पाव पदिये। सो संस्कृत
 कथाकार कहें हैं। यह पाव हमारे गुरुति करि विरचित हैं
 ॥ अथ जयमाला लिष्यते ॥ ईकती ॥ सा ॥ ३३ ॥ नमस्ति ॥
 काम कौ कवि नद्यास का हूं येन सहे जात ता कूं मूल तै
 विघाति न रेपो भूम मन कों। जिन के नांम समरण तै अने
 क नव के संचित पाप अपद विनशा सवन के। रजनी
 कहौ आधर छाये अति इति धार नुंग तदिव सकारन
 शे जे नक्षे न कों ॥ पछडी छंद ॥ दृष्य देव कूं च न छवि छों
 जे ॥ धनुष पांच से तुंग विराजें ॥ दृष्य न चिक्र पादनि तल से
 हे वंश स्त्रिका जिन गमन सो हैं ॥ १ ॥ अजित जिने शकन त
 नराजें सदा चारि सें धनुष विराजें ॥ गज लक्ष्मण मन अ
 नंदकारी ॥ वंश स्त्रिका कियो अविकारी ॥ २ ॥ संनव जिन
 तन हे मस मां ॥ धनुष चारि सें तुंग प्रमां ॥ तुरंग चिक्र
 सब कों सुख दाता ॥ वंश स्त्रिका कियो जंग रखाता ॥ ३ ॥
 त कूं नत न जित अज नंदन ॥ सादा तीन सें ई सु अर्घ्य न ॥
 न ॥ बो दर लक्ष्मण मत्त लराजें ॥ वंश स्त्रिका कतिल क श्री व
 ताजें ॥ ४ ॥ सुमति जिने श हे मत नभा सें ॥ धनुष तीन सें तुंग
 प्रका सें कों क चिक्र सब जन सुख दाशी ॥ वंश स्त्रिका कस्ति

॥ अथ आरती दसक लिख्यते ॥ इह विधमंगल आरती कीजे ॥ पंचपरा
 पद जनमुषलीजे इह विधमंगल आरती कीजे ॥ अथ अरती श्रीजि
 नराजा ॥ नवजलपारगतारजिहाजा ॥ इह विधमंगल आरती कीजे ॥ यज्ञी
 आरती सिधनकेरी ॥ सुमिरनकरतमिदैनवफेरी ॥ इह विधमंगल आरती
 कीजे ॥ तीजी आरती सरि मुक्तिदा ॥ जनमजनमपुषइरि करिंदा ॥ इह वि
 धिमंगल आरती कीजे ॥ ३ ॥ चौथी आरती श्रीउवजाया ॥ दरसनदेषतपा
 पपलाया ॥ इह विधिमंगल आरती कीजे ॥ पांचमी आरती साधतुमारी कु
 मतिविनासनसिक्त्रधिकारी ॥ इह विधिमंगल आरती कीजे ॥ छठी ग्या
 रे प्रतिमांधारी ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ इह विधिमंगल आरती कीजे
 सातमी आरती श्रीजिनवाणी ॥ द्यांनतसुरगमुकतसुषदांनी ॥ इह वि
 धिमंगल आरती कीजे ॥ १ ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ कर्मदलनसं
 ततिहितकारी ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ सुरनरअसुरकरततुम
 सेवा ॥ तुमहिदेवेदेवतिकेदेवा आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ अंबमहा
 वृतदुधरधारे रागदोषघरनांमविनारे ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥
 नवजयनीतसराणजे आयेते परमारथपंथलगाये ॥ आरती श्रीजि
 नराजतुम्हारी ॥ जोतुमनामजपैमनमाही ॥ जनममरननयजाकौंन
 ही ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ समोसराणसंपूर्ण सोनाजीतेको
 घमांनबललोना ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी ॥ तुमगुणहमकैसैक
 रियावै ॥ गांधरकहतिपारनहिपावै ॥ आरती श्रीजिनराजतुम्हारी
 क्युणासागरकरुणाकीजे ॥ द्यांनतसेवककौसुषदीजे ॥ आरती श्री
 जिनराजतुम्हारी ॥ २ ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ अधमनुधार
 एअतमकाजाकी ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ जालछीकेसवअ
 निलाषी ॥ सोसाधनकर्हमवतनाही ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥
 सवजगजीतिलियोजिननारी ॥ सोसाधननागनिवतछारी ॥ आरती
 कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ विषयनसवजियवोरेकीने ॥ तेसाधनविषव
 ततजदीने ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ नूकोराजचहतसवप्राणी
 जीरनितिणवत्पागतधमनी ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥ शत्रुमित्रुड
 षसुषसमानै ॥ लानअलानवरावरजानै ॥ आरती कीजे श्रीमुनिराजकी ॥
 होकाययीहरवृत्तधारे ॥ सवकौआपसमातनिहारे ॥ आरती कीजे श्री

मुतिराजकी॥ इह आरती पढ़ै जोगावै॥ ध्यान तमन वंछित फल पावै॥
 किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ आत्म अंकथ जस बुघन मेरी॥ किह
 विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ समुद्र विजै सुतर जमत बारी॥ यौ कहियु
 तिनहि होय तुमारी॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ कोटि घंज वेदी
 छवि सारी॥ समो सरण थुत तुम तै न्यारी॥ किह विध आरती करौ प्रभु
 तेरी॥ आरज्ञान जु ततिन के स्वामी॥ सेवक के प्रभु॥ इह चव घंामी॥ कि
 ह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ मुनि के वचन न विकसि वजाही॥ सो पुदा
 गल मै तुम गुण नाही॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ आतम जो तसमा
 नवता कुं॥ ए विस सिदीप क मूढ कर्क॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥
 नमत त्रिजापति सो जाउन की॥ तुम सो जा तुम मै तिज गुन की॥ किह विध
 आरती करौ प्रभु तेरी॥ आन सिंघ महाराजा गावै॥ तुम महि मां तुम ही वा
 वनि आवै॥ किह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अथ निश्चय आरते इह वि
 ध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अमल अवाधित तिज गुण केरी॥ इह विध
 आरती करौ प्रभु तेरी॥ ज्ञान दरस सुषुवल गुण धारी॥ परिमातम अवे
 कल अ विकारी॥ इह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ क्रोध आदि रागादि
 न तेरी॥ जनम जरा मृत कर्म न तेरी॥ इह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अवपु
 अबंध करण सुषुनाही॥ अनप अनाकुल सिव पदवासी॥ इह विध अ
 रती करौ प्रभु तेरी॥ रूप नरेष ननेष न कोइ॥ चित मूरति मूरति नहि होइ
 इह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ अल अनादि अनंत अरोगी॥ सिध वि
 सुध सुआतम नोगी॥ गुन अनत किम वचन वतावै॥ दीप चंदन विजा
 वन नावै॥ इह विध आरती करौ प्रभु तेरी॥ ५॥ आगै आत्मा की आरती
 करौ आरती आत्म देवा॥ गुण परजाप अंतत अनेवा॥ करु आरती आ
 त्म देवा॥ जा मै सब जग वहु जग मां हि॥ स्वतजगत मै जग सम नां ही क
 इ आरती आत्म देवा॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर धपावै॥ साथ सकल जिह के गुण
 गावै करु आरती आत्म देवा॥ विन जा नै जिय चिर न वडीले॥ जिह जा नै
 न सिव पद घोले॥ शिष्य नै वचन किरि कहिये॥ वचना ती तदसा तिस
 लहिये॥ करु आरती आत्म देवा॥ सुपर जेद कोषे दूछेदा॥ आप्त
 प्ये आपति वेदा॥ करु आरती आत्म देवा॥ सो परमातम पद सुषु
 श करु आरती आत्म देवा॥ इती अवीध विध मोहारी॥ सो तिहु काल करम सुखार

ताहोहिविहारीदासविष्णुता॥ करौआरतीआत्मदेवावा॥६॥ गोरीए
 गआरती॥ कहलैपूजाजागतवढावैजोगवस्तकहंतैलेआवै
 कहलैपूजाजागतवढावै॥ हीखदधिजलमेरडलावैसोगिरिनी
 रकहांहमपवै॥२॥ कहलैपूजाजागतवढावैसमोसरएविधसर्वव
 नावैसोनवतैमुषकादिषलवै॥३॥ कहलैपूजाजागतवढावैजलफ
 सुरगलेकतैलावै॥ सोहमेतहिकहचढावै॥ कहलैपूजाजागतव
 वै॥ नचैगावैवीनवजावै॥ सोनसकतिकिमपुन्यउपावै॥४॥ कहलैपू
 जाजागतवढावै॥ शदशांगश्रुतजोपुतगावै॥ सोहमबुद्धिनकहावता
 वै॥ आरध्यांनधरानधरध्यावै॥ सोथिरतानहिस्रयलकहावै॥ द्यांनत
 सीतसहितसिरनवै॥ जनमनतमयहृत्तककमावै॥५॥ शतिपरागगोरी॥
 करौआरतीवर्धमानकी॥ पावापुरनिखानथानकी॥ करौआरतीवि
 र्धमानकी॥ राविनांसवजगजनतारे॥ दोषविनांसवकर्मविदारेक
 रोआरतीवर्धमानकी॥२॥ सीलधरंधरसिवतियजोगी॥ मनवचका
 यनकहियेजोगी॥३॥ करौआरतीवर्धमानकी॥ रतनत्रयनिधिपर
 थदहारी॥ ग्यानसुधानेजनव्रतधारी॥४॥ करौआरतीवर्धमानकी॥ लोक
 आलोक्याप्रतिजमांही॥ सुषमैडंडीसुषडघनांही॥५॥ करौआरती
 वर्धमानकी॥ पंचकल्याणकपूजविगामी॥ विमलदिगंबरअंतरसा
 गी॥६॥ करौआरतीवर्धमानकीगुनमनिनृषननृषनस्वामी॥ जागत
 उदासजांतखंभी॥७॥ करौआरतीवर्धमानकी॥ कहैकहांलौतु
 मसवजातै॥ द्यांनतकीअनलाघप्रमाने॥८॥ करौआरतीवर्धमान
 की॥ शतिश्रीमहावीरजीकीआरतीसंपूर्ण॥ कहलैआरतीजागत
 करैजी॥ तुमलायकनहिहाथपरैजी॥ कहलैआरतीजागतकरैजी॥
 धीखलधिकोनीरचढायै॥ कहलैदेवैमेंहीजललायै॥ कहलैआ
 रतीजागतकरैजी॥ अजलमुक्ताफलसंपूजे॥ हमपैतंडलऔरनइ
 कहलैआरतीजागतकरैजी॥ कल्पवृक्षफलफूलतुहारैसिवकक
 लेनगातविथौषतसुंदनआगरनलागे॥ कौणसुगंधधैरुमआगे॥
 कहलैआरतीजागतकरैजी॥ नषसमकोदिचंदरवितांही॥ दीपका
 जोतिकहौ॥ किंहमांही॥ ग्यानसुधानेजनव्रतधारी॥ निवजकहाकौ
 संसारी॥ कहलैआरतीजागतकरैजी॥ द्यांनसकलसमानचढा

क्रियातिहारितिसुषपावैकहा लैआरतीनगतकरैजी॥ इति संपूर्ण॥ आरती
मंगलआरती आतमरांम॥ तनमंदिरमनउत्तमवाम॥ समरसज
लचंदनआनंद॥ तंडलतत्वस्वरूपमंदा॥ यसमैसारफूलनिकीमाल
अननौमुप्रनेवजजरियाला॥ मंगलआरती आतमरांम दीपक
ग्यानध्यानकीधूप॥ तिरमलनावमहाफलरूप॥ मंगलआरती आत
मरांम सुगुनजविकजनइकरालीन॥ तिहचैनौध्यानगतप्रवीनी॥ मंग
लआरती आतमरांम॥ धनउत्तसाहसुहनहदंगाना॥ परमसमाधिनि
रतपरधाना॥ मंगलआरती आतमरांम॥ घाहजआतमजावचवस
अंतरकैपरमात्मधावा॥ मंगलआरती आतमरांम॥ साहवसेवकनेदमि
नाय॥ घ्यानताकमेकहेजाय॥ मंगलआरती आतमरांम॥ इति आर
ती संपूर्ण॥ अथपार्श्वनाथजीकीस्तवनमुयंगप्रयाताछंद॥ १॥
तिरिदंफुनिदंसुरिदंअधीसं॥ सतइस्वपूजेनजेनायसीसं॥ मुतिदंगतिदं
नैजेरहाथं॥ नमोदिवदेवंसदापार्श्वनाथ॥ जिदंमृगिदंगसोतूधु
डावै॥ महाआगतेंनागतेंतूववै॥ महानीरतैजुधतैतूवचोवै॥ म
हारोगतैबंधतैतूषुलवै॥ दुषीउपहस्तासुषीमुप्रकरता॥ सेवसे
वताकौमहानंदनर्ता॥ हरेजहराक्षसमृतपिसाचं॥ विषमाकनी
विघ्ननवैनेअवाचं॥ शदलिडीतिकोदर्वकेदानदीने॥ अपूत्रीतिको
तैनेलेपुत्रकीनेमहासंकर्तौतैनेकालैविद्यातासवैसंपदामर्वकौ
दिहदाता॥ महाचौरकेवज्रकौनेनिवायेमहापौनकेपुंजमैतूजवारे॥
महाक्रोधकीआगकौमैप्रधारा॥ महालेनसैलेसहीवज्रजारा॥ ५॥
महामोहअंधेरकौं ग्यातनातं॥ महाकर्मकंतारकौदोषप्रधानं कि
थेनागना॥ श्रीअधोलोकस्वामी॥ हसौमानतैदैतकैकैअकामी॥ व
तुहीकल्पद्वंदुहीकामधेना॥ तुहीदिअचिंतामनंतासएनांमसुन
ककेउप्रसेतीबुडावै॥ महास्वर्गमैमोक्षमैतूवसावै॥ ७॥ करैलोहके
हेमपांघाननामी॥ रतैनांमसोकौनहोयमोक्षगामी॥ करैसेवता
कीकरैदेवसेवा॥ सुतेवेनसेईलहैज्ञाननेवा॥ ८॥ जपेजापताकौ
कहापायलागै॥ ९॥ धरध्यानताकेसवेदोषनागै॥ विनांतोहिजानै
धरेनेतोयनेरोतिहरेकपातैसरेकाजमेरो॥ १०॥ दोहाः ॥ गणध
इधनकरसकै॥ तुमवीनतीजमवाता॥ घानतशीतिनिहारकै॥ वीजि॥
आपसमानं॥ ११॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्तवनसंपूर्ण॥ छंदः हि०॥

ॐ नमः सिद्धान्तमस्कारः अथ श्रीजिनमगवानदेवाधिदेवकौपूजन

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ अथ श्रीजिनपूजाविधिः

कात्रर्थमूलसंयुक्तकरिणहैवालीषणहै

परमात्मादेवजोगवानक्षोमस्कार

न अथोच्छ्वालिषते ॥ परमात्मानमः श्लो

नेजिनतुमजयवंताहो
जयवंताहो जयवंताहो
नेसेतीनवारकहासर्वोक्त
रणनिमि

नेजिनतुमकौ
नमस्कारहो
श्रैसेतीनवार

कह्योअतिनक्ति
नावेनिकेप्राट

नेनिमतेनमस्कार

नेजयजयजयनमोस्त नमोस्त नमोस्त

नमस्कारहो अरिहंतनिके

नमस्कारहो छिदनि
रुं

नमस्कारहो अच
र्यनिके

नमो अरहंताणं ॥ एमो सिद्धाणं ॥ एमो आर्य

नमस्कारहो उपाध्यायनिके

नमस्कारहो लोकविधैसम

शियाणं ॥ एमो अवश्यायाणं ॥ एमो लोएसवा

ससाधुनिके

आरिपदार्थहैमंगलरूपहै

अरिहंतमंगलकारीहै

साहुणं ॥ चतारिमंगलं ॥ अरहंतमंगलं ॥

सिद्धमंगलरूपहै

सर्वमुनिराजमंगलक
रुहै

केवलासर्वस्कारकरिक
साहै

सिद्धमंगलं ॥ साहुमंगलं ॥ १ ॥ केवलपणं

धर्ममंगलकारा

गोहितकृष्टउत्तमहै

अरहतलोकविषैउत्तमहै

श्वर

२४९

मोमंगलं॥५॥ चत्तारलोगुत्तमा॥ अरहतलोगु

सिखलोकविषैउत्तमहै

मुनिलोकविषैउत्तमहै

सर्वज्ञ

तमा॥ सिखलोगुत्तमा॥ साङ्गलोगुत्तमाकेव

करिकला

धर्मलोकविषैउत्तमहै

चारिपदार्यनिहीकैसर

लेपमतो॥ धर्मो लो गुत्तमा॥२॥ चत्तारिसरणं

एभैप्रापतिहोतहे

अरहतनिके सरणप्राप्तहोऊ

सिखनिके

पञ्चजामि॥ अरहतसरणंपञ्चजामि॥ सिख

सरणप्राप्तहोऊ

साधुमुनिके सरणप्राप्तहोऊ

केवल

सरणंपञ्चजामि॥ साङ्गसरणंपञ्चजामिकेव

लीकरिजाबित धर्म कैसरणप्राप्तहोहै

३

अरिहं

लिपणिलो॥ धर्मो सरणंपञ्चजामि॥३॥ उन्न

तकोनमत्कारहोहै

वासनारीरकरिपवित्रहोऊअथवा
अपवित्रहोहुअथवाअधिरहोऊ

औरएक
तत्रायन

मोहतेस्वाहा॥ अपवित्रपवित्रोवा॥ स्वस्थिते ।

करिधिरहोऽथवात्र
धिरहोऽ

जोकोईपुरुषपंचमसकार मंत्रध्यावैहै

सोसर्वपाप

इस्थितोपिवा॥ध्यायेत्पंचमसकारान्॥सर्वपा

निकरिधुटतहैकेर
रुकहैहै

४

जलादिकवाशक्तिकेअनावतेअ
पवित्रहोऊचापवित्रहोऊ

औरसमस्तो

पैःप्रमुच्यते॥४॥अपवित्रःपवित्रोवा॥सर्वा

गादिअरस्याकोंशासहोऊ

जोजीवपरमात्माकेवलीअरहंतनका
सुमरणकरैहै

सोबौरअमं

स्यांगतोपिवा॥यःस्मरेत्परमात्मानं॥सर्वा

हीवितहीहैसवपवितातिस
ऊमई

५

किसीअन्यकरिअनजाययहै
असानमसकारमंत्र

समस्तसुख

अंतरोशुचिः॥५॥अपराजितमंत्रोयं॥सर्वेचि

केविघनकरणकरिकर
एनिकादिनासकहै

औरसमस्तसुखदायकपाप
कानासकमंगलकार्यविषै

अथममुख्यमंगलय
हीकस्रोहै

घनविनाशाने॥मंगलेषुचसर्वेषु॥प्रथममंगल

६

पंचपरमेष्ठीकानमस्काररूपमं
त्र

समस्तपापनिकाशाकर
णहारहै

मतः॥६॥एसोपंचणमोयारो॥सर्वपापपणा॥

औरसमस्तमंगलकार्यजिदि
धै

अथममुख्ययहीमंगलहै

स एण॥मंगलाणंचसर्वेसि॥पढमहोऽमंगलं ७

अद्वैतसिद्धिप्रकाशसंस्कृत
संस्कृत

आहुतकेवलीका अर्थका
अद्वैत

सिद्धिप्रकाश
उक्तप्रकारे

ज्ञाद्वय

अद्वैतमित्यन्तरं बुद्धिः ॥ वाचिकं परमेष्ठीनः ॥ सिद्धिचक्र

१५५

अपनामममोर्तमिबद्धो
अपनामममोर्तमिबद्धो
वदोक्त

सोऽनदेभ्यश्चतुष्टयसंयुक्त
निकोत्रियोगकरिभेनममकार
करोऊ

ज्ञानावरणत्रा

सप्तसदी ॥ जं ॥ सर्वतः प्राणामांमहं ॥ ए ॥ कर्माष्टक

द्विअष्टकमेतिक
रिसर्वथारहितन
एह

कर्मरहित्वात्मस्वप्नमोक्षति
कीज्ञानादिलक्ष्मीसोदीहेचिक्त
जाके

सप्तसद्वादिअष्ट

विनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीतिकेतनं सम्पत्कादि

गुणनरुमिसंयुक्तहै

असेसिद्धसमूहनिर्कोमनम
सकारकरोहो

वाचात्मंतरलक्ष्मी
युक्तजेतीर्थकर

गुणोपेतं ॥ सिद्धचक्रं नमामहं ॥ ए ॥ श्रीमज्जितेधम

तिनकोत्रियोगकरिनमस्कार
करिकेसेदेतीर्थकरत्रिलोक
कास्वामीहै

अनेकात्मतकाना
यकस्वामीहै

अनंतज्ञानदिचतुष्ट
यकरिपूज्यहै

निबंधजात्रयेरीत्रपाछादनायकमनेतचउष्ट

उक्तप्रमुखसंघसंबंधीयेसम्पत्कहैतीनकोत्रियुगुणउप
जावणकेकारणहै

तिनकोम

यार्हं ॥ श्रीमूक्तसंघसुदृशां सुकृतैकहै ॥ जैने

मस्कारकरितीर्थकरनिकीपूजाकारिधा
नयप्रसन्नमोक्षरिकीजिएहै

कल्याण
होऊ

तीनलोककोशिष्वा
दायकवडेगुरुअैसे

यज्ञविधिरिप्रमयमभय ॥ १५ ॥ स्वस्तित्रिकगुरुवे

जुगलाधरादिपूजार्थेकर

कल्याण होऊ

आपणाजुचैतमनिज स्वरूप कीजुअजुत महिमाका प्रादनातिसविषेजलाधिररूपम यातिननिमते

जितपुंगवाय॥ स्वस्तिस्वनाचमहिमोदयसुस्थिताय

कल्याण होऊ	केवलज्ञानप्रकासकेनिजस्वरूपवत्प्रौखत कष्टकेवलदर्शनस्वरूपहेतिनिनिमति	कल्याणहोऊआनं दरसपूर्ण
------------	--	-----------------------

स्वस्तिप्रकाससहजोर्तितदमयाय स्वस्तिप्रसन्न

मनोहरआशूर्यकारीकेवलज्ञान वासमवसरणविचिनवयुक्तहे	११	कल्याण करऊ	अपनेप्रदेशनिमोउगत काममलरहितकेवल
--	----	------------	---------------------------------

ललिताश्रुतवैजयाय॥ ११॥ स्वस्तिबलहिमलवो

ज्ञानतिसप्रश्रुतकाश्रा वीचंडमासमानहेतिन निमति	कल्याण करऊ	अपनानि जस्वरूप	परब्रह्मकास्वरूप तिसकेप्रतेत्तम्या नकरि	प्रकास कोकरे हे
---	------------	----------------	---	-----------------

धसुधाक्षवाय स्वस्तिस्वनाचपरमवविनासक

कल्याण करऊ	तीनलोकविषेकैल्याहेचैतमज्ञानभावका उपजनाजिनके	कल्याणकरऊ
------------	---	-----------

या॥ स्वस्तित्रिलोकविततैकचिडुज्जमाय॥ स्वस्तित्रि

तीनकालसंबंधीसकलजावनिविषेज्ञान करिविस्तारपायौहे	१२	वासुदेवक्रियाकी शुधताकोश्रांगिका
--	----	----------------------------------

कालसकलायतविस्तृताय॥ १२॥ इमस्याशुधे

करिकैसीहेजैसीजिनदेवसैकहीहे	अंतरंगपरणमनकीशु धताको
----------------------------	-----------------------

मधि... मयथातरूपं॥ नावस्यशुधेमध्ये

वदुतशुधताकोश्राघहोने काहेअजिलाषजामेंश्रेया जानता	सोवालसाप्रथमपकारणआ लवनतिके	नानाप्रकारे न कोअलवने करि
--	----------------------------	---------------------------

कामधिगुणकाम॥ आलवनानिविधान्यवत्तं

हेपुराणपुरुषानमेपवित्रउत्तम

जोबसुतिनको
निश्चैकरि

समस्तनिके
यहमेएकही

पुरानघु

निघस्तनिनूतमखेलामय

	यहप्रत्यक्षप्रकासरूपनिर्मलकेवलज्ञानरूपअग्नि विधे	पवि त्रज्ञे
--	---	----------------

मेकएवाअस्मिन्ज्वलदिमलकेवलबोधवज्ञो॥पु

होइसौ	समस्तह्रएकमनहोयकरिहोमकरे ॐ	१५	विधिपूर्वकपूजनकी
-------	-------------------------------	----	------------------

एणसमग्रमहमेकमनाजहोमि॥१५५॥विधिपद्म

प्रतिशानिमित्त	जिनविबन्धो	फूलनिकीअंजुलीक्षेपणीसोनाघु कलश ३५	धरम
----------------	------------	---	-----

तिज्ञानायजिनप्रतिमायेपरिपुष्पाजलिच्छिषेत॥श्री

करिशोभा यमानति निस्वामी	कल्याण करे	कामक्रोधादिकरिजी तेनाएंअैसेसामी	सुखकारीहैउतपतिजि नकैसेकल्याणकरऊ	सर्व गपए
-------------------------------	---------------	------------------------------------	------------------------------------	-------------

इषमस्वस्तिस्वस्तिअजितः॥श्रीसंभवस्वस्तिस्वस्ति

कहेआनेदकारी	उत्तकृष्टचेतनपरिलि नकेजतरि	कमलनिकीसीकांति हैजिनकी
-------------	-------------------------------	---------------------------

श्रीअजितेदतः॥श्रीसुमतिस्वस्ति॥स्वस्तिश्रीपद्मः

नलाहैनिकटजिनका अैसेसामी	बंदमोकीसीकांतिहैजिन कीउज्जल	फूलबनहैसुगंधउ ज्जलदंतजिनके
----------------------------	--------------------------------	-------------------------------

श्रीसुयाश्रीःस्वस्ति॥स्वस्तिश्रीचंद्रः॥श्रीपुष्पदंतः॥

ध्याजलिद्विपेताश्रुतपुज

२५३

॥ गुरुनिकेचरणकमलका ॥ कैसेहेगुरुतप
जुगलं गुरुनिका ॥

नेगंजीरहे

ज्यस्य॥ पादपद्मयुगंगुरोऽगतपःश्राप्तप्रतिष्ठस्यारिष्ठ

उक्तष्टहैस्वरूपजिन ॥ त्रैसाकहिकरिगुरुचरणश्रागेफूलक्षैपै
का

२

हात्मतः॥ ॥ इत्सुचार्यगुरुचरणेषुपरिपुष्पा

गुरुचरणपुजवेकीप्रतिज्ञाकरि

ईदे ॥ धरणेइ

क्षपता॥ गुरुचरणपुजनप्रतिज्ञाय॥ देवेइ

एजातिनिकरिवंदनीक ॥ उक्तष्टहैर ॥ सोजायमानउक्तष्ट
है ॥ एकमलपद् ॥ श्राकृतिप्रक्षरुल
वीजिनकी ॥ जिनकातिनको

नरइवद्यान्शुभसदान्मोहितशाखर्णान्॥ दुग्धादि

एजि ॥ त्रैसंजलस ॥ देवशास्त्र ॥ गुरु ॥ पूजतहोमै
महनकीरि ॥ तीर्थकर ॥

दिगुणैर्जलोद्यै॥ जिनैइसिधांतयतीनयजे ॥ ॥ ३

श्रीपमानपंमब्रह्मअनेतानंतज्ञानशक्तिकेधारकतिनकोनमस्कारकरोहो

हंश्रीपर ॥ श्रीश्रीशुभब्रह्मणेनतानंतज्ञानशक्तयेनमःज

सुकेनाशनिमति ॥ अहंतनिकोंजलचढावोहो ॥ शक्तिमंत्रः

मत्क नाशनायाअहंशुभजलनि। द्यापामीतिस्वाहा

श्रीजग
तकाना
य

हेजिनतुम
हीहोना

नाथहोस्वामी
हो

संसारसमुद्रमेंडुवताप
एनिके

जजोजातापतो जयजय नवीनेस्वामीनयानसिमज्जतां

मोरामोहत्रंघकारमेठनिनिमतिप्रजातकारी १
जो

हेजिननाथतुमकूं

जयजयमहामोहघातप्रजातकृतेर्षीना जयजयजिनेशरत

होस्वामीप्रधमैकरोहो

श्रैसैपदकरिदेवचरत्रागैफूलनि

नाथप्रसीदकरोमंहरा प्रस्तुचारिजेजिनचरणारुहप

कीअंजलिदोषणी

देवचरणपूजतेकीप्रतिज्ञाकरी

रिघुष्याजलिदियेल जिनचरणपूजनप्रतिज्ञा

हेदेव हेसोनायमान
सरस्वतीदेवी

हेजावती
भगवानक
रिउपजा

तुमारेचरणसोईकम
लनएतितकाजुगल
विषे

प्राप्त
होऊ

देविश्रीश्रुतदेवतजगवंतित्वत्पादपंकेरुह ॥ छंदेयां

सोअपणपणकौंपास
होऊ

श्रीकह
नहो

जकेक
रि

मैयहंप्रार्थना
करोहो

हेमातामैरुद
यविषे

मि सि लीमुखत्वमपरंनक्त्यामयाप्रार्थते मातश्चेतसि

तुमवास
करोमै

जिनमुखकरिउपजे
होश्रैसेतुमनिरतर

रक्षाकरोमुफ
कौ

समकके
दनेकरि

मुऊवि ३स
धै

तिष्ठमेजिनमुखोऽहूतेसदात्रायहिमा ॥ दृग्दातेनमयिप्रसि

नहोरुषांनेपूजनहो

अव

१

श्रैसैकहिकरिपुस्तकसास्त्र
मेंफूलयेपण

धनवति ॥ सपूज्यामोथना ॥ ५ सुचार्येषु स्तकाग्रहपरिषु

सिद्धनिकों	आचार्यनिकों	उपाध्यायनिकों	सर्वसाधुनिकों
------------	-------------	---------------	---------------

सिद्धम् ॥ आचार्यम् ॥ उपाध्यायम् ॥ सर्वसाधुम्

प्रथमानुयोगायनिकों	करणनुयोगांकों	चरणानु
--------------------	---------------	--------

म् ॥ प्रथमानुयोगाय ॥ करणनुयोगाय ॥ चरणानु

योगकों	इमानुयोगकों एधव रखतीकेगुण	सम्पगदर्शनकों	सम्पग
--------	------------------------------	---------------	-------

नुयोगाय ॥ इमानुयोगाय ॥ सम्पगदर्शनाय ॥ सम्पग

ज्ञानकों	सम्पक्चारित्रकों ^ए तीनगुरुके गुण	इतिकोंजलचढावौहौ ^ए त्रैकैइ
----------	--	--------------------------------------

ज्ञानाय ॥ सम्पक्चारित्राय ॥ जलनिविद्यामीतिस्

इतिमंत्र जलं	तडफडा वते	ऐसातीनलोककाउद ^ए में भरहते	समस्तजीवति निकाअहितइ
-----------------	--------------	---	-------------------------

दा ॥ जल ॥ ताम्पत्रिलोकेदरमध्ववर्ति ॥ सम्पस

रिकरणहोहेवचनजिनकारितिकों	वावनाचंदन करि	कैसाहैरासम्प कालोनीऊचा
--------------------------	------------------	---------------------------

सत्वाहितहारिवाक्यान् ॥ श्रीचंदनैगंधिविलुब्ध

हेभ्रमजहां	तिसकरिहे रगुरुका कोश्रुजोदो	संसारआतापहरिकरणनिमत	चंदनं और
------------	-----------------------------------	---------------------	----------

नृगै ॥ जिनेइणउंईश्रीसंसारतापविनात्राय

सर्वहिंकीनाईपटणा इ	नाईपारजिनकाऐसासंसार सोईमहावडासमुद्र	तिसकेपारगता रणोंकोंवडे
-----------------------	--	---------------------------

चंदनं ॥ २ ॥ अपारसंसारमहासमुद्र ॥ शोतारणो

नलीनक्ति
करि

लावाअपंडित
हैअंगजिनका

असैउजलचावलनिक
शिमृहतिनकरिदेवगुरु

ज्ञादे०

१५५

ज्यतरीनुनक्त्या॥ दीर्घाक्षतां लाक्षतोद्ये

निकों
पूजोहो

असंडितमोक्षपदप्राप्तिनिमित्तिअक्षतचटाऊहं

३

जिने५०॥ अषंडितपदप्राप्तये॥ अक्षतां॥ निर्वी

विनययुक्तनयेलेनअजीवतेईयेकमलतिनिकेवि
कासनेकोसूप्यसमानहै

उक्तमलजिनैदीक्षाके
है

विनीतनमाज्वविबोधसूर्यान्॥ वर्णासुचर्णा

कहनेकाएकधो
रीतिनको

ऊंदेकमलआ
दि

फुलनिकरिदेवगुरुआ

कथनेकधूर्यान्॥ ऊंदरविदप्रमुखेः प्रसूनै॥ जिने

पूजोहो

कामरूपीवांएकानाशनिमित्तिहूलचटावौहो
पुष्पं

घोटाहोगर्व
जाके

५०॥ कुसमवांएविधुंसमाय॥ पुष्पं॥ ध॥ कुदप्य

असा
काम

सोईह
वाफैला

सबंदसर्प

तिसकोंसावधानहोइकरि
नशनेकोंकुंडस

मानतिनिको

कुदप्यविसर्पसर्प॥ प्रसप्यनिर्नाशनवैनतेयान

उक्तषुसारचस्तुनक
विउपजे

असैनेवेदानकरिकै
सोहेरसपूर्णहै

तिनिकरिदेव
गुरुआसूपूजो
है

सुधादिक
वेदकेरोग

प्राज्याज्यसारेश्रुनीरसाद्ये॥ जिने५॥ कंधावेद

हरिकारेणनिमति

नेवेद्यचटावो

हरिकीयाहै
उद्यमजिसमै

नीरोगविनाशाय॥ पा॥ नेवेद्य॥ घस्तोद्यमाधीकृत॥

फलवदावौ हौ	४	अलङ्कारचंदनअक्षतपुष्पानिके ससूत्रनिकरि			
फलंनि०फलं॥ ७॥ सधारीगंधाक्षतपुष्पजाते॥					
नैवेद्यदीपनिर्मलधूपकीधूवांनिकरि	नानाप्रकारकेफलनिकरि निवड				
नैवेद्यदीपामलधूपधूमै॥ फलैविचित्रैर्घनपुन्य					
पुन्यउपजावलेकौ जोग्य	देवगुरुशा स्त्रकोपूजो	अर्घचढारो ए	जेजीव पूजन	तीर्थैक र	सास्त्र
योग्यान॥ जितेंद्र०॥ अर्घ्य॥ १॥ येपूजाजिननाथ					
मुनितिनकी भक्ति करि	नित्यकरैहै	तावकाल विधे	नानाप्रका		
शास्त्रयमिनामत्तपासदाकुरुते॥ त्रैसंध्यासुविचे					
रकाव्याहेरचनाकेविधे	षट्तासंतामुनि	तेपुन्यपूर्णमुनिराजसे			
त्रकामरचनामुच्चारयंतोनराः॥ पुन्याद्यामुनिरा					
बंधीयसकरिसंयुक्तहोइ	कैसेहैतपजिनकेगहणाहै	ऐसेवेनमजीव			
जकीर्तिसहितानूत्वातपोनृषणा॥ स्तेनमसक					
केवलज्ञानकरिमनो इ	मुक्तिकोंपावेहैउत्कृष्ट को	१	शूलनिकीर्ति जुलीक्षेपणी		
लावबोधरूचिरांसिद्धिलंततेपरा॥ १॥ पुष्पांजलि					

श्रेयसाश्रयकी एहैसमस्तजीवश्रेयसैसमस्तमोहश्रेय देदीप्य
करताशनेकोदीपकसमानतिनकेकैसैहैः

विश्वविश्व॥ मोहाधकारप्रतियातिदीपान्॥ दीपैः

मानसुवर्णकेपात्रनिधस्वा हेतिनकरि	देवगुरुसा स्वप्नों है	मोहाधकारविनासमाय निमत्ते
-------------------------------------	-----------------------------	-----------------------------

नकाचनपात्रसंस्थे॥ जिनै ३०॥ मोहाधकारविना

दीपकंचटा वैहै ६	धनविमकापुष्टसमृद्धिहेतिनके बल नेविधै धूपकरि
-----------------------	---

शाय॥ दी॥ दीपि॥ दुष्टाष्टकर्मधनपुष्टज्वालासंधूप

देदीप्य मान	धूपनिकरि कैसा है हरि कीये है और व स्तकी सुगंधअपनी वासना करि	देवगु रुशा
----------------	--	---------------

नेनाश्वरधूमकेतै॥ धूपैर्विधूतान्पसुगंधगंधै॥ जिनै

सूक्ष्म जो	अष्टकर्मदहननिमतिधूपचटावैहै	दो नरूपन्याश तिरूपनया
---------------	----------------------------	--------------------------

३०॥ अष्टकर्मदहनाय॥ धूपं॥ ७॥ कनकलु

म्पनाहीतिनकीअत्यमतीनिकेवादनिसैनाहीसखलितहैप्रजावनि
नकातिनकौं

मनसामगाम्पान्॥ कृवादेवा दरवलित्प्रजावान्॥ फले

फलेनिकरिअत्यर्थपणैकरिकैसैहै मोक्षफलकेदाताहै तिनकरि	देवगुरुसा स्वरूप जो	मोक्षफलशक्तिनि
---	---------------------------	----------------

ला रलंमोक्षफनिसारे॥ जिनै ३०॥ मोक्षफलशसाये

रुषभ अजितहेनामजिनका

सन्नव

वडुरिअजिननेदन

सुमतिनाथ

रिषभोजितनाथाश्च॥ सन्नवश्चाजिननेदनः॥ सुमतिःप

पद्मपन्न

वडुरि

सुपार्श्वः

जिननिमैउत्तरकृष्ट

१

चंद्रपन्न

पुष्पदत्त

अनासश्च॥ सुपार्श्वोजिनसत्तम॥ १॥ चंद्रानःपुष्प

वडुरि सीतल ज्ञानादिकानि करियु
ल कस्वरूपके ज्ञाता

श्रेयोनाथ

वासु
ज

दत्तस्य॥ शीतलोत्तगावानमुनिः॥ श्रेयांसोवांसु

वडुरि

विमलकैसैहै निर्मलहैक्रातिजिनकी

अनंतहेमहिमाजिन
की

पुष्पश्च॥ विमलोविमलदुति॥ अनंतोधर्मन

धर्मकाधोरी

शांतिकाकरणहाएजिनोत्त

असैअरहनायस्वामीनाम

थाश्च॥ शांतिकुचुर्जिनोत्तमः॥ अरहश्चमहन्न

ह्यनाथमेयवंता
रहै

हरिवंशविष्णुपजे

नाथाच्च॥ सुव्रतानमितीर्थकृत्॥ हरिवंशमुचु

असैअरिष्टनेमिजिनवर

हरिकीयाहैकर्ममलैजिन

कर्मव्दैसवैरी

तौ॥ रिष्टनेमिर्जिनेश्वरः॥ ध्रुस्तोपसागदित्यारी॥ प

शैले पार्श्वनाथ धरेंद्रक
रिपूजनीक

४

कर्मनाशानं
हारे

महावीरतीर्थकर

सिधार्य

शैलनागोदपूजित ॥ ४ ॥ कर्मातकनाहावीरः सिधार्य

५६

जाके कलमवत्तपनित्रए एते तीर्थकर देवश्च
सुरात्रिके समूहा करि

पूजनीक है निर्मल है आकृति
जिनकी

कुलसंभवः एते सुरासुरोयेण ॥ पूजिता विमलत्वियः

५ पूजनीक है भरतादिक

राजानिकरि कैंसे है प्रचू
विभूति युक्त है

ते तीर्थकर

५ ॥ पूजिता भरताद्यैश्च ॥ नृपेक्षैर्नृतिभूरितिः चतुर्विध

आरिप्रकारके संघ
को

शांतिकैंकर कुकसी है शा
तिसंभ्रती है

६

तीर्थकर विषै
क्ति

स संघस्य ॥ शांति कुकुं उशाश्रुती ॥ ६ ॥ जिनेनक्ति जि

फेरि दोष
वाशीति

प्राटने
निमत्त
कसा

निरंतर

होऊमैरे

एही सम्पत्तग
ए है

संसारका
नासक है

नेनक्ति ॥ जिनेनक्तिः ॥ सदा सुमे ॥ सम्पत्तमेव संसारै

अमोक्षका कारण है

७

सास्त्रविषै नक्ति दोषवार फेरिकहना

वारणमोक्षकारण ॥ ७ ॥ श्रुतेनक्तिः श्रुतेनक्तिः श्रु

श्रीतिप्रम
टने निमत्ते

निरंतर होऊ
मैरे

एही सम्पत्तान है संसार

कानाशक अमो
क्षका कारण

तेनक्तिः सदा सुमे ॥ सम्पत्तमेव संसार वारणमोक्षका

विषे
गुरुनक्ति

फेरि दोष वाशीति प्राटने निमत्ते

निरंतर होऊमैरे

रणं गुरो नक्ति गुरो नक्तिः ॥ गुरो नक्तिः सदा सुमे ॥ वा

एही वास्त्रि है संसार
का नासक

मोक्षका कारण है

८

अवेजयमालकदि
ए है

रिन्नमेव संसार वारणमोक्षकारण ॥ ८ ॥ अथ जेयमाल

॥ नैमिसिद्धेयः ॥ गाथा ॥

गति ॥ धर्मेण ॥ इन्द्रियगतिने ५		कायनेदातिकेभः ॥ ६	
१	एकेन्द्रजाति	नरकाति १	पृथ्वीकाय १
२	द्वेन्द्रजाति	तिर्यचाति २	अपकाय २
३	तेन्द्रजाति	मनुष्याति ३	तेजसकाय ३
४	चोद्रेन्द्रजा	देवगति ४	वायुकाय ४
५	पंचेन्द्रजा	वेद तेकौन	वनस्पतीकाय ५
१५	जोगपञ्चाश	स्त्रीवेद १	त्रसकाय ६
४	मनकातो	पुरुषवेद २	संकलनकीचौकडीध
१	सत्यमनजो	नपुंसकवेद ३	संकलनक्रोथजलरेष
२	असत्यमन	अनंतानुबंधी.चे	संकलनमानवैतस्यन
३	उन्नयमन.	अनंतानुबंधी.के.पाष	संकलनमायाचचरवत
४	अनुन्नयमवे	अनंतानुबंधीमानपाषान	संकलनलोजहृग्शरं
५	वचनकेध	अनंतानुबंधीमायाबंध	हास्यादिकनौकषायल
१	सत्यवचन	अनंतानुबंधीलोन्नय	हास्य १ सोग १ स्त्रीवे १
२	असत्यवच	अप्रत्याख्यानकीचौ	रति २ जय १ पुरुष २
३	उन्नयवचजे	प्रत्याख्यानक्रोथहृलदे	अरति ३ पुगप ३ नपुंस ३
४	अनुन्नयवच	प्रत्याख्यानमानअसिख्ये	ज्ञानसुज्ञा. ऊज्ञान
७	कायकेजोग	अप्रत्याख्यानमायाप्रा	मतिगपान १ ऊमतिज्ञ ६
१	कुरारिकहि	अप्रत्याख्यानलोन्नय	शुतज्ञान २ कुशुति ७
२	कुरारिकमिश्र	प्रत्याख्यानकीचौ	अवधिज्ञा ३ ऊत्रावधि ८
३	वैक्रियककाय	प्रत्याख्यातकीचौ	मनपर्जय ४ एवंपान
४	वैक्रियकमिश्र	प्रत्याख्यातक्रोथधूलो	केवलज्ञा ५ ८ ८
५	आहारककाय	प्रत्या. मा. काष्टस्यंज	
६	आहारकमिश्र	प्रत्या. मायागोमूत्रव	
७	काययोग	प्रत्याख्यातलो. क मुने	
७	काष्टमानेयो	रासा	

७	संयमनेदः ॥ तैकोनः १	जीविसमासनेदः १० तैकोन
१	सामायकसंयम	गाथाः ॥ अडविहधाते लिचेयविम
२	द्वेदोपस्थापनसंयम	ल असलिसलीं सुपयदियअ
३	परिहारविमुद्धिसंयम	पयदियतिङ्गुणियाजीवसगवण
४	सूक्ष्मसापरायसंयमः	अस्याअर्थः ॥ तिगुने ॥ ५७ ॥
५	जयाष्यातसंयम	१० जीसैमास ॥ प्रजासेः ॥ अप्रजासे अत
६	संजसासंयतासंजम	विप्रजापते ॥ ५७ ॥
७	असंजतासंयमः ॥ एवं संजम ७	२ उष्णीकायसूक्ष्मवादः ॥
४	दशोन्नतेदतेकोन ॥ ४ ॥	२ अप्रकायसूक्ष्मवादः ॥
	चक्षुदर्शन ॥ १ ॥ अनक्षुदर्शन २	२ तेजकायसूक्ष्मवादः
	अवधिदर्श ॥ ३ ॥ केवलदर्शन ४	२ वायुकायसूक्ष्मवादः ॥
	अमनेद २ तैकोन ॥	२ नित्यतिगोदसूक्ष्मवादः ॥
	नमः ॥ १ ॥ अमः ॥ २ ॥ एष २	२ इतरतिगोदसूक्ष्मवादः ॥
	सम्पत्कनेदः ॥ ६ ॥ तैकोन	२ वंशस्पतीकायमुप्रतिष्ठितअशुपति ॥ श्रुति ॥
	मिथ्यातसम्प १ ॥ उपसम ४	२ पंचेदीसेनी १ ॥ असेनी २ ॥ एवं ॥
	समयमिथ्यात २ ॥ वेदक ५	३ वेइं १ ॥ तें २ ॥ चउइं ३ ॥ य ३ ॥
	समयप्रकृति ३ ॥ दाइक ६	३ प्रजापतेनेदतेकोन ॥
	संयमीनेदः ॥ २ ॥ तैकोन	गाथा ॥ आदा २ ॥ सरीरिदिया ॥ एजरी
	संज्ञी ॥ १ ॥ असंज्ञी ॥ एवं ॥ २ ॥	आणपाणनासमणे ॥ चतारिपंचद
	आहारकनेदः ॥ २ ॥ तैकोन	पियेइंदियवियलाअसलिसली ॥ १० ॥
	आहारक ॥ २ ॥ अनाहारक एव	१ आहारपरजाक्षि ॥ शरीरपर्जीसि ॥ ५ ॥
	गुणस्थान १ ॥ तैकोन ॥ गाथा ॥	२ इंदियपर्योसि ॥ स्वासगुत्वासपर्जीसि ॥ ५ ॥
	गुनजीवायजनेपसाससंयम	३ नामपर्योसि ॥ मनपर्योसाएवं ॥ ६ ॥
	गानार्त्वाउरगोठियकमसो	२० ज्ञाननेदः १० तैकोन
	वीसेतुपरूपतानलिया १ ॥	गाथा ॥ पंचविइंदिययाणा ॥ माणवप
१	मिथ्याते ॥ ८ ॥ अपूर्वकरण ॥	कायएणतिलिवलयाणा ॥ अणुपा
२	सासादन ॥ ९ ॥ अनिदृत्तिक ॥	णायाणा ॥ आउगायाणेणहेतिदह ॥ पाए
३	मिप्र ॥ १० ॥ सूक्ष्मसापराय ॥	५ स्परसथरसन ॥ गंयत्र वर्ण ॥ प्रोत्र
४	अदत्त ॥ ११ ॥ उपसातकषा ॥	३ पावे ॥ मनवचन ॥ कायत्र स्वां ॥
५	दक्षविरत ॥ १२ ॥ दीनमोद ॥	२ उस्वासप्रान ॥ आसुप्रान ॥ १ ॥
६	प्रमत्त ॥ १३ ॥ संजोगकेरल ॥	४ संज्ञातेकोन ४
७	अप्रमत्त ॥ १४ ॥ अयोगकेरल ॥	५ अहारसग्पा ॥ ३ मेथुनसंज्ञा
		३ अयसंज्ञा ॥ ४ परियहसंज्ञा
		११ उपयोगदर्शना ॥ ५ ॥ पानोपयो ॥ ५
		१२ ज्ञानावियपद्मवियजाइयकुलके
		१३ डिसंयुपासचेमाहाति ॥ हिमणिय ॥
		१४ कमेणचोवीसगणा ॥ एण ॥ अर्थ ॥
		१५ ध्यानकनेदसौलातेकोन ॥ कोनसेसौकटिएहे ॥ १६ ॥ ॥

२२	शुद्धी कायके ॥२५॥ विकलत्रयकके ॥ पंचे शी के एकत्र ऊडी ॥२०८॥
७	अपकायके ॥७॥ वैडीके ॥ ॥२५॥ नरकगतिके
३	तेजकायके ॥१॥ ॥६॥ तैडीयके ॥ ॥२६॥ देवागतिके
७	वाक्कायके ॥१॥ ॥७॥ चौडीयके ॥ ॥२३॥ तिर्यंगागतिके
२६	वनस्पतिकायके ॥ ॥२१॥ मनुष्यागतिके

इति संपूर्ण ॥२३॥ ॥ एव २५७ ॥ कुलकोटिजाननी

अथ सोलासुप्रनाचंद्रगुणतिराजनैः प्रायासो लिख्यते ॥

२० ॥ इति अकालजसूरजआश्रित्यो ॥ तीकोफलरायजोवैजी ॥ जायाजी
 पंचमकालका ॥ केवलज्ञानीनहीहोसीजी ॥ चंद्रगुण २ ॥ लज्जिचिं
 चंद्रमाचालती ॥ तीकोफलराजादेवौजी ॥ जिनमत्तधमीजिनेसुरो न
 मेंपाघंडीघणालेख्यौजी चंद्रगुण ४ ॥ प्यारीजीनारी समाचारी ॥ अर्षोदेव
 मंचलाजी ॥ सीषदीयाजी सुमैमानसी गुरुकाशेहीहोसीजी ॥ चंद्रगु
 ५ ॥ चौथोसुपनौजी वाराफणो ॥ नादेवौचिकरालेजी ॥ केतायकवरस
 कौंआत्तरोजी ॥ पडसीवारावरसकोकालेजी ॥ चंद्र ६ ॥ देवविमाने
 पाछोफिसौजी ॥ सुपनोपंचमहेवौजी ॥ देवविद्याधरनैआसीजी हो
 सीलब्धविठेटीजी ॥ चंद्र ७ ॥ छठेसुपनैजीरौडीपरै ॥ कमलविकस
 तौदेवौजी ॥ वराणजीआसंमायला ॥ वाण्यकैजिनधर्मलेखौजी
 चंद्र ८ ॥ नूतनूतएपादेघानाचता ॥ सुपनोसातवेजोसीजी ॥ मिथ
 तीधर्मकीमानता ॥ अधिकीअधिकीहोसी ॥ चंद्र ९ ॥ सुपनौदेव्येज
 राजाआगवौ ॥ आज्ञाकौविमकारोजी ॥ उद्योतहोसीजीनधर्मके
 विचविचमांचैअंधेरोजी ॥ चंद्र १० ॥ तलावसुकौजीतीनोदिसा
 दिषणदिसार्थ ॥ तीथेडोजी ॥ तीनोदिसाजीधर्मनाहोसी ॥ दिक्षिण
 देसाधर्मजोडौसी ॥ चंद्र ११ ॥ सोनाकाया ॥ लमेकुकरा ॥ देव्यौछैषी
 रघाडघतोजी ॥ दसमौसुपनामैराजासक ॥ होजासीअनमतम
 तोजी ॥ चंद्र १२ ॥ हाथीजीवपरिवांदरोसुपनौगपारघोरसज
 मलेछराजानचाहोसी ॥ हिंडुएकलोपासीजी ॥ चंद्र १३ ॥ नीच
 तनैलक्ष्मीवासाहोसी ॥ उतणाघरकरसीजी ॥ बढसीजीचुगलीचो
 रटा ॥ सउकारमनमैडरसीजी ॥ १४ ॥ चंद्र १४ ॥ छेडसीकारसमुद्धने ॥ सुपने
 तिरमोकूडोजी ॥ क्षत्रीजीवचनलोपसी ॥ ताकौवीसवासयोडोर
 हसीजी ॥ १५ ॥ चंद्र १५ ॥ वछडाजुप्याजी ॥ २५ ॥ सुपनोचौदवोदेव्यौ
 जी ॥ तनुनपुखधर्मपलिसी ॥ वृक्षिसयलधरमधौसीजी ॥ चंद्र १६ ॥ राज
 कवचदोउट्यो ॥ सुपनोपंचवोरचासीजी ॥ राजाजीसमकितलेनहीमि

मथ्यातमेयडतासी॥ चंद्र० १७ ॥ विनामहावतहाथीलडे सुयनोष
लवोदेष्मोजी॥ केतायकवरसाके आतरे॥ मागपामेहेनही मिल
सीजी॥ चंद्र० १८ ॥ विपाकसुत्रकीचूलिका॥ मुनिजश्वार्जुकि
योनीचोडोजी॥ वीनतीअणसारेप्रमाणतै॥ जेमालकीनीछैजे
डोजी॥ १५ ॥ इति सोलेख्येन

अथ दूलीपत्ने ॥१॥ अथ समाधि मरत लिख्यते ॥ जोगी रासा
 कीवाल गौतम स्वामी वंद्यो नामी मरत समाधि लला है ॥ मेक व
 पो कनि सिदि नथ्यां कंग कंचन कला है ॥ देव धरम गुरु श्री ति
 महं दिट सात विस नत हि जानै ॥ स्या गि वार्सो अ निष संजमी
 वो खत नित वानै ॥ अच क्री उषरी चू लह बु हारी यानी त्र सत वि
 राथै ॥ वन जको रे पर दर्व हरे न हि कर्म छ हो इ म साथै ॥ पूजा साख
 गुरु की सेवा संज मत पक्ष ऊं टां नी ॥ पर उप गारी अ ल प अ हारी
 सामो प्र क वि ध ग्यां नी ॥ १ ॥ जा प ज ये ति ऊं जोग धरे धिर तन की म
 म म ता टो रे ॥ अंत समै वै राग संतारे ध्यां न समा धि वि चारै ॥ आ ग
 ल गै अरु ना व रु वै त व ध र्म वि ध न ज व अ वै ॥ च्यारि प्रकार अ
 हार त्या गि के मंत्र मु प्र न मे ध्या वै ॥ २ ॥ रोग अ सा ध ज रा व ऊ दे धै
 कारा व ऊ दे धै कार नि श्रौ र ति हा रे ॥ वात व ती है जो व न अ वै न प्र
 न व त कौं न रे ॥ जो त व नै तो ध र्मे र हि के स व सौं हो य नि रा ला मा न पि
 ता सु त ति य कौं सौं ये नि ज य रि ग ह अ हि काल ॥ ३ ॥ कु छ वै त्या ले
 कु छ अ व क ज न कु छ ड मि या ध न दे र्शे ॥ छि मां छि मां स व सौं क
 रि अ छै म न को स ल्य ह ने र्शे ॥ सु बु नि सौं मि लि नि ज क र्जे रै मै व ज
 करी बु रा ई तु म से पी त म कौं ड म टी ने ते स व व क सौं जार्शे ॥ ४ ॥ ध न
 ध र ती जो मु षं ते मां गै सो स व दे सं तो धै ॥ छ हौं का य के धां नी ऊ प
 र क रु ना जा व न रो धै ॥ ना चै ध र वै वे इ क जा गै कु छ जो ज न कु छ
 पै ले ॥ ह धा धारी क्र म क्र म त जि के वा छी अ हार प है ले ॥ ५ ॥ छ छि
 त्या गि के पां नी रा धै पा नी त जि सं धा र नूं मि मां हि धि र अ स न मां
 ने सा ध र मी टि ग ब्या र ज वं तु म जां नो य ह न जं पे है त व जि न वां नी ॥
 कहि यो ॥ पौ कहि मों न लियो स न्या सी पंच पर म मन ग हियो ॥ ६ ॥ च्या
 धो अ रा ध न म न ध्या वै वारै जा व न न वै ॥ द स ल छ न मु न ध र्म वि च
 रि र न त त्र य म न ल्या वै ॥ ये ति स सौं लै ष ट य न ध्या रौ दो य क व र न वि च
 रै ॥ कां पां ते र ड ष की टै र ग्यां न म ई तूं सारै ॥ ७ ॥ अ ज र अ म र नि ज गु
 न पू रौ प र मा नं द सु भ वै ॥ आ नं द कं द चि दानं द सा हि व ती न ज ग
 य ति ध्या वै ॥ शु धा नृ ष दि क हौं हि य रि सै स है ना व स म रा धै
 चार पां चों स व त्या गे पां न सु धा र्चा धै ॥ ८ ॥ हा म चो म र हि सू क जा

शान्तवि
२६७

यसवथर्मलीनजनन्यागो॥ अदनुतपुंन्यनुपायसुरगमैसेजउवेजे
जागो॥ नहांसोंआवेसिवपटपावैविलसेसुषन्नंतता शान्तनयह
गतिहोहिहमारजेनधरमजेवंता॥२७॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ ॥ प्रथमनमो अरिहंतांतडतिपनमोसिहांतंजी त्रि
तयतमौआरियातांनमोउवह्यामानंजी॥ पंचमनमोलोएसव
सारुनंगुनागाऊंजी॥ चारैमंगलअरिहंतसिद्धसाधुधर्मध्याऊंजी॥
चारोउतमलोकमैजितसिधसाधसुधर्मजी चारोसुरनगहो जिनवर
सिधसाधर्मपर्यंजी॥ सुषन्नचंद्रप्रभुसांतजिनवर्द्धमानमनवदो जीऊ
ईहोहिगीचोवीसीसवनमपायनिकंदो जी॥ २॥ श्रीजिनक्वचनसुहा
वनेस्पादवादअविरुद्धजी॥ तीनतवतमेदीपकावंदोत्रिकरासु
द्धंजी॥ प्रतिमाश्रीनगवंतकीखगमत्यपातालंजी॥ इत्यत्रकृत्य
उनेदसोंवंदकरौत्रिकालंजी॥ ३॥ पूरवपायजुमैकीयोक्त्तकारन
अनमोदंजी॥ मनवचकायत्रिनेदसोंसोसवमिथ्याहोदंजी॥ आगो
पायजुहोयगोउतचासविधिनासोजी॥ वर्तमानअयछेकरौतुम
आगोपरकासोजी॥ धसर्वजीवसोंमित्रतागुनीदेवहृषाऊंजीदी
नदयासगसोंसमताचारोनावनजाऊंजी॥ प्रभूपूजो जुगनेदसोंसुर
पदपंकजसेऊंजी॥ आगमअन्यासोंसदारतनअयनितवेऊंजी
५॥ अह्रमात्रअरयअनमिलनूलिकहोसुषमाऊंजी॥ शान
दोयहरसांऊकोंअर्थरात्रमैनाऊंजी॥ शान नदीनदयारमौनो
नोतगतसुदीजेजा॥ अंतसमाधिमरम करौरागविरोधहराजे
जी॥ ६॥ इति संपूर्ण ॥ अथ ॥

वंदोश्रीजिनराजपट्रिहसिद्धदतारविघ्नहरतमंगलकर
नदारिददलिनअपार॥ चोपई॥ मिथ्यातावकरमबंधनयोउ
रिनितारनवनवनवडषदयो॥ सोसवतासनगतितेहोइ राहे
नप्रभुडषकारतकोपा॥ ज्ञानजोतअधनमसुयकाराअयट
प्रकासकहैगाराधामोमननवनवसेतुवनास॥ तहोनमर
मरकोकामप्रसूजागदमनक्वकाया॥ करौहर्षजलवद
ऊवाशविषयआलचिरकालअपारा॥ जाजेतजतनवंत
द्वाराधप्रथमकनकमैभूसवकस्यो॥ नविकाआगसुरते

अवनत्यौ॥ वितग्रह्यां नहरतुमत्राय॥ करोहेमतनचित्रनकाय॥ ५॥ वि
 नुस्वारथसवजगमुषदाय॥ जांत्यौसर्वेइत्यपरजाय॥ भगतिरचीचि
 तमज्यामोहि॥ तुमवसऽषगनकैसैहौहि॥ ६॥ नम्यो जगनवनमैचि
 रकाल॥ नपज्योषिदऽगनिविकराल॥ तुमनयसुधासीतवावरासु
 व्युदैलहिसवतपहरी॥ ७॥ गमनप्रजावकामलकैदेव॥ परमल
 श्रीसुतकनकअनेव॥ मोमनपरसेतुमसवकाय॥ क्योममिलैसु
 कसवसुषत्राय॥ ८॥ विधवनतजिसिवसुषयरकियौ॥ मदनमां
 नछिनमैहरलियौ॥ पीतपात्रवचसुधापिवंत॥ विषैरेगरियुत्रा
 सहनंत॥ ९॥ तुमदिगमांतसथंनदुरहै॥ रतनरासिवऊसोनाल
 है॥ देषतमांनरोगस्यहोय॥ जद्यपिहैयाहनमयसोय॥ १०॥ तुममू
 रतिगिरसपरसवाय॥ लगेकर्मरजपुंजपलाय॥ ध्यांततोहिनर
 कमलमफार॥ होइपरमपदजगतिस्त्वार॥ ११॥ नवनवपायोऽष
 अषार॥ यादकरतलागतअसधार॥ तुमसवजांनअधानक्रि
 याल॥ करीजातअवहोहियाल॥ १२॥ यापीस्वांनअंतकीवा
 र॥ लहौसुगीसुषसुननोकार॥ जयोंअमलमनतुमनगवांन
 अचरिजकहावरोसिवधांत॥ १३॥ तुमप्रनुसुङ्ग्यांतजिगवंत
 तालीनगतिविनांजोसंतमोहजरेदितमोषकिवार॥ षोलस
 केनलहैसुषसार॥ १४॥ सुकतपंथअयंतमवऊनस्यौ॥ गटे॥
 कलेसविषमसिसतस्यौ॥ सुषसौसिवपदपुहवैकोय॥ जोतुम
 वचननदीपतहोय॥ १५॥ कर्मधराअतमनिधिनीरिदवीक
 वीयहिवैनहिकूर॥ नगतकुदालमोदलेसंतविलसैपरमाने
 दतुरंत॥ १६॥ स्यादवादहिमगिरिसौचली॥ तुमपदपरसवदधे
 शिवरली॥ नगतगंगमैमोमनह्याय॥ क्यो नपापमलकलुषि
 तजाश॥ १७॥ परमातमपिरपदसुषमई॥ मैसदोषतुमसवबुधुय
 ई॥ पद्यपिअसतयहध्यांनतुम्हार॥ तादपिसुवांकुतफलदात
 र॥ १८॥ वचननुदधिसवजगविसस्योस्यादलहरिमिथ्यामलह
 स्यौ॥ थिरमनहादशां गमनधरै॥ ग्यांतसुषापाजमजैहरै॥ १९॥
 नूषणवसंतकुसुमअसिगहै॥ सोजारचकदेवनलहै॥ तुमनि
 परिग्रह्यजेमनोगा॥ कौंतकाज नूषणअसिजोग॥ २०॥ तुमसे

गान्तवि
१६९

नानहि इंद्रजुनयौ ॥ एकाञ्चवतारीसोनयौ ॥ लोकनाथनौ वारि
धियोत ॥ सुकतकंसइदविथशुतहोत ॥ २१ ॥ राशुतववनसुपुद
गलरूप ॥ नहिव्यापैतुमगुनचिइय ॥ तदपिनगतदिदसुयाजुग
हे ॥ मनवंछितफलसुरतरुलहे ॥ २२ ॥ रागदोषविनपरमतदा
स ॥ वाहरहतिअरुसवजगदास सुवनतिलकतुमटिगरियु
तसे ॥ यहप्रनुताकहिअंननलसे ॥ २३ ॥ जसगावेसुरतरिअया
रागांतरूपगायकसंसार ॥ द्वादशांगपरिमोहनरहे ॥ युतिक
रसुगमपंथसिवलहे ॥ २४ ॥ अनेतचतुष्टयरूपनिहाल ॥ ध्यावे
मतरुचिसहितत्रिकालसुंन्यवांनसुजमाराहोइ ॥ तीर्थकरय
द्विलसेसोइ ॥ २५ ॥ इंद्रसेवकरियारनलहे ॥ गणधरादिसवगु
णनहिकहे ॥ हममतेननककियोकुछुएजाअगतनिसिवसु
रतरुसमदेजा ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सबदकाव्यहिततर्कमैवादराजसे
रताज ॥ एकीनचपरगटकियोद्यांनतनगतजिहाज ॥ २७ ॥ इति
अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

राजविषैजुगलि

निसुषकियाएजत्याजतवसिवपददिया ॥ स्वयं बोधस्वभू
नगवांन ॥ वंदौअदिनाथगुणवांन ॥ १ ॥ इंद्रवीरसागरजलत
यमेरकुलाएगायवजाय ॥ मदनविनासिकसुषकरताथवं
दौअजितपदकार ॥ २ ॥ सकलधांनकरिकरमरागवसंत ॥ मो
हतारोहोदेवाधिदेवमेमनवचननकरिकरौसेव ॥ मोहितारो
होदेवाधिदेव ॥ सुमदीनदयालअनाथनाथ ॥ हमरुकौराभों
आपसाथ ॥ ३ ॥ मोहतारोहोदेवाधिदेवयहमारवारसंसारदे
स ॥ सुमचरनकलयतसहरकलेस ॥ मोहतारोहो ॥ देवाधिदे
व ॥ सुमतामरसायनजीययायद्यांनतिअजरामरनप्रवृती
य ॥ ४ ॥ मोहतारोहोदेवाधिदेव ॥ इति ॥ केदारोरेजियक्रोध
काहेकोरे ॥ द्वेषिकैअविवेकघांन ॥ कौविवेकनधेरेरेजि
पक्रोधकाहेकोंकोरे ॥ जिसेजेसीउदैआवै ॥ सोक्रियाआचरे
सहजतूंअपतोंविगारे ॥ जायउरगतपरे ॥ २ ॥ रेजियक्रोधक
हेकोंकोरेहोइसंगतिगुनसवनिकोंसवजगउचरे ॥ सुम
नलेकरनलेसवको ॥ बुरेलयमनजरे ॥ ३ ॥ रेजियक्रोधक

हेकोंकरे॥ श्रवैदपरविषहरसकततहिआपनयकोमरे॥ वऊक
 वायनिगोदवासाछिमांघानतनरेरेजियक्रीधकाहेकोंकरे॥
 ५॥६॥ तिअसेमित्रसौकरिय्यारी॥ विषेविलाससमजनहियाए
 को॥ अपानध्यानअधिकारी॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ १७७॥ पल
 चलवैसोफलपावेंआवरीतगहिसारी॥ दीननहीअनिमां
 नीनांहीमध्यदसाव्यवहार॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ पूजा
 दांनकरेतहिचाहैसुखातकीरतजारी॥ जीवतदसामनकर
 जानीरगदोषकरहारी॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ चंदनजूम
 नदीतरुविससिवारदसेउपगारी॥ हेमराजतिनहीपुख
 निकरवकधात्रीरथधारी॥ असेमित्रसौकरिय्यारी॥ ६५॥६॥
 औरकोंविसारपारनेमपेमसार॥ रोगसोगकोविजोगजोगहै
 अपार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥ ७७॥ जायसुषुपापध
 नकोंनिवारपारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥ यर्मघातधर्म
 तीतसर्मरीतकार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥ नीदना
 सकामत्रासक्रीधलीजहार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार॥
 रधपायहांनआपपानजायकोकरार॥ पारनेमपेमसार॥
 औरकोंविसार॥ दीनतातहीनतातस्वर्गमोषहारहेमरा
 जजीसंनारधूमधसंनार॥ पारनेमपेमसार॥ औरकोंविसार
 ७॥६॥ तिदिचेतनसवहमैघाटवाटनहिऔर॥ दीपमांठ
 मंदिरपगासैसौतनमैसिरमोर॥ चेतनसवहमैघाटवाटन
 हिऔर॥ १७७॥ उत्तमनीचकरमसौजमैमित्रसुकतकीठोर॥ काहे
 आणधोकाहिविणधोकाहिविरोधोयहमिथ्याकीटोर॥ चे
 तनसवहीमैघाटवाटनहि॥ और॥ १७७॥ गजकुंभवावरवस्त्र
 नोंमानोंसोभाषोर॥ कौनपुरुषकीनिंदकीजैकाकीकीजै
 गोर॥ चेतनसवहीमैघाटवाटनहिऔर॥ १७७॥ केवलगंगानम
 ईसवरजैयहसरधासिवयो॥ हेमराजआस्वाहैजानैअनुने
 अमृतकोर॥ चेतनसवहमैघाटवाटनहिऔर॥ १७७॥ ७॥ कृ
 लीवसंतजह्नादासरसिवपुरगण॥ नरतनूपवहतर्जित॥
 मूहकमईसवनिरमण॥ फूलीवसंतफूलीवसंत॥ १७७॥ तीनचौ॥

वीसरत्ननमैप्रतिमोत्रंगरंगजेजेनए॥सिद्धसमांतसीससमा
सवकेत्रदत्तुतसोभापरनए॥फूलीवसंतफूलीवसंत॥वाल
आदिआरुंवकोरमुनिसवनिमुकतसुषत्रनुनए तीनत्रण
ईफागनिषगमिलगावेगीतनएनए॥फूलीवसंतफूलीवसंत
३।वसुजोजनवसुपैडीगंगाफिरावृक्तसुरत्रालए॥घानत
सोकैलासनमोहैंगुनकायैजांवरनए॥फूलीवसंतफूलीव
संत॥ध॥इति॥ईपीतुमग्यांतविज्ञोफूलीवसंत॥यजमनुमंफ
करसुचसौरमंत॥तुमग्यांतविज्ञोफूलीवसंत॥दिनवमे
नएवेरागजाव॥मिथ्यामतिरजनीकौयटाव॥तुमज्ञानविषे
फूलीवसंत॥वृक्तफूलीफैलीसुरुचिवेला॥ग्याताजतसमत
संगकेला॥तुमज्ञानविज्ञोफूलीवसंत॥घानतवांतीपिकम
धररूप॥सुरत्ररयसुत्रानंदयनरूप॥तुमज्ञानविज्ञोफूलीव
संत॥इति॥ईए॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥आरंभतेपर
यातहोतहै॥क्रोधघातविजटालेहिसात्यागदयाकहावेज
लेकषायवदतमें॥बाहिरत्यागीअंतरदागी॥यजचेतरकस
दनमें॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥करैदषायरत्रालसजावा
ताकौकहियेयाप॥सांतसुभावप्रमादनजाके॥सोपरमारघ
आपी॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥॥मिथ्या॥लाचारनिरुहि
मरहनां सहनांवृक्तडषघाता॥घानतवोलविमोलनिजीम
निकरेजततसौग्याता॥ग्यांतीजीवदयानितयाले॥॥॥॥
७वेकाअएकत्रसहीसेती॥अंगसंगनदिवहिरभूनसव
धनहारसामग्रातेती॥कारजएकत्रसहीसेती॥सोलहसुरग
नवकमैडष॥सुषतरसातमैतनकावेती॥जासिवकारनमु
निगनध्यावे॥सोतेरेयतअंनंदसेती॥कारजएकत्रसहीसे
ती॥॥घानसीलजयतपत्रतपूजाअफलग्यांवचितकिरिया
केती॥पंचदरवतीतैनितन्यारे॥न्यारीरोगविधजेती॥कारज
एकत्रसहीसेती॥मूंअवनामीअगपरगासीघानतभा
सीसुकलावेती॥तजोलालउनकेविकल्पसव॥अनुमोमग
नसुविद्याएती॥कारजएकत्रसहीसेती॥॥॥इति॥१॥होरीवेत

सब होरा होरी होउत बुध दया छ माव ऊचा दी इति जिपरत न ।
 त्रे गुन जोरी हो ग्यां न ध्यां न फता ल व न हे अ न हित सब द ।
 होत यत घोरा धर म सुरा ग गु लाल उ ड त हे सम तारंग ड ज नौ ।
 घोरा हे ॥ २ ॥ परसन उत्तर न रे पि च कारी छोर त दो नों करि नो ।
 रा इत तै क हे नार तु म का की उ त तै क हे कों न छोरा ॥ ३ ॥ अत्रा
 उ का क अ त्र नौ पा व क मै ज ल बु क सां ल न ई सु व उ रा ॥ ४ ॥ न
 त सि व अ न न द चं द छ वि दे ये स ज न नै न च को रा ॥ ५ ॥ इति ७५
 अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ कर सौं ता ल व च न मु ष ना ध्ये मै
 चित्त लगा वो रे ॥ अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ ग्यां न द र स सु
 ष ल गु न धा रा ॥ अ नं तं च तु ष्ट प ध्या वो रे ॥ अ व गा ह ना अ वा
 ध मूर त अ गु रु अ ल क व त ला वो रे ॥ २ ॥ अ ज त ना थ सौ म न
 ला वो रे ॥ कर ना सा ग र गु त र न ना ग र जो ति उ ज भा र ना वो
 रे ॥ त्रि न व न ना य क न व न य धा य क अ नं द दाय क गा वो रे
 अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ अ पर म नि रं ज न पा त क नं ज न न ।
 वि रं ज न व ह्ना वो रे ॥ द्या न त जै सा । स हि ष से वीं तै सी प द्वी या
 वो रे ॥ अ ज त ना थ सौ म न ला वो रे ॥ ३ ॥ इति ६। रा ग अ सा व ।
 रा ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रै गे ॥ व न का र न मि थ्या त द यो न
 न कौं करि दे ह् ध रै गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रै गे ॥ उ प जे मी
 काल तै श नो ॥ तां तै काल ह रै गे ॥ रा ग दो ष ज ग वं ध कर त हे
 इत को ना म करै गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रै गे ॥ दे ह वि ना सा
 मे अ वि ना सी ॥ ने द ग्यां न करै गे ॥ जा सी जा सी ह म धि र वा सी वो
 षे दो नि ष रै गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रै गे ॥ मे रें अ नं त वा र वि
 न स म रें अ व स व ड ष चि स रै गे ॥ ४ ॥ द्यां न त नि प ट नि क ट अ
 च्च र दे ॥ चित्त सु म रें सु म रै गे ॥ अ व ह म अ म र न ए न म रै गे ॥ अ
 व ह म अ म र न ए न म रै गे ॥ ७ ॥ इति अ सा उ रा ॥ ना ई ग्यां ना
 सो ई क हि ये क र म न दे सु ष ड ष नो ग तै रा ग वि रो ध न ल हि ये ना
 ई ग्यां ना सो ई क हि ये ॥ को क ग्यां न क्रि या तै को क सि व मा र ग व
 त ला वै ॥ नि नि ह वै वि व हा र सा धि कै दो नों चित्त रि का वै गे ॥ न
 ई ग्यां ना सो क हि ये ॥ २ ॥ को ई क हे जी व च्छि न नं गुर को ई निस

वषांते॥ परजयदरवतनयपरमाने॥ दोनूसमतात्राने॥ नाई
ग्यानीसोकहिये॥ ३॥ केईकहेउदेहेसोईकोईउहिमबोले॥ द्यांन
तस्यादसुतुलामेंदोनोवसैतोले॥ नाईपानीसोकहिये॥ ४॥ शि
ई॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ एककहेजिहकूलमेंआएवाकु
रकोकुलगावे॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ २॥ सिवमतबोधसुचे
दनेयायकमीमांसकच्छरुजेनां॥ आघसराहैंआंगमगाहैं
काकीसरधात्रेनां॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ २॥ परसेसरये
आयाहोताकीवानसुनीजे॥ मूवेवऊतनबोलेवऊवमीफिकर
क्याकीजो॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ ३॥ जिनसंवमतकेन्यायसं
चकरिमारगएकवताया॥ द्याततसोगुरुपूरायायाआगहमार
आया॥ नाईकोनधरमहमचाले॥ ४॥ १॥ रागीरी॥ हमारोकारज
केसेहोय॥ कारणपंचमुक्तमारगकेतिनमेंकेहैदोय॥ हमा
रोकारजकेसेहोय॥ हीनसंयननलक्ष्मिआऊषाअलयमनी
षाजीशकडेनावनसचेसाथीसवजादेष्टोदोश॥ हमारोका
रजकेसेहोय॥ २॥ इंद्रापंचसुविषयनदोरैमानैकह्यानकोइ
साधारतविरकालवस्योमैधरमविनाफिरसोअहमारोका
रजकेसेहोय॥ ३॥ चिंतावमीनकुछवनअवैअवसवचिंता
षो॥ ४॥ द्यांततएकसुदृष्टिजयदलविआपमैआयसमो॥
५॥ हमारोकारजकेसेहोय॥ ६॥ १॥ रागीरी॥ हमारोकारजत्रे
सेहोश॥ आतमआतमपरपरजाने॥ तानोंससेषोय॥ २॥ हमारो
कारजत्रेसेहोइ॥ अंतसमाधिमरनकरितनतजिहोहिसक्र
सुरलोइ॥ विवधिनीगउपनोगनीगवैधरमतनाफलसोइ॥ ह
मारोकारजत्रेसेहोय॥ ३॥ पूरीआवविदेहनूपकैराजसंपदा
नी॥ कारणपंचलहैगहैइइरपंचमहाव्रतजोइ॥ हमारोका
रजत्रेसेहोय॥ ४॥ नीनजोगधिरसहेपरीसहआवकरमसल
धोय॥ द्यांततसुषत्रनंतसिवदितसैजनमेंमरेनकोइ॥ हमा
रोकारजत्रेसेहोइ॥ ५॥ १॥ देषोनाईआजिनराजविराजेक
चतमणिमयसिंहपावपरिअंतराछुप्रनुछाजै॥ देषोनाईआ
जिनराजविराजे॥ २॥ हीनछत्रनिमुवनजस॥ जंपैचोसवचमरस

मानै॥ शान्तीजीजनयोरमोरसुनिह्रस्त्रहियातगजाजै देषोभाई
 श्रीजिनराजविराजै॥ १॥ सादेवारहकोमंडुमीआदिकवाजैव
 जै॥ वृक्षत्रशोकदिपतिनामंरुलकोमिसूरससिलाजै॥ दिषोभ
 र्श्रीजिनराजविराजै॥ २॥ पुह्यवृष्टिजलकनकमंद्यवनइंद्र
 सेवनितसाजै॥ प्रभुनचुलावेशानतत्रावेसुरनरयसुनिजकाजै
 देषोभाईश्रीजिनराजविराजै॥ ३॥ ॥ दिषोभाईश्रीतमराम
 विराजै॥ छहोदरवनवतत्वगेयहैआपसुग्यायछाजै देषोभा
 र्श्रीतमरामविराजै॥ ४॥ अरिहंतसिद्धसूरिगुरुमुनिवरयांचो
 पदजिहमांही॥ दरसनपांतचरनतयजिहमेंपट्टरकोऊनां
 ही॥ देषोभाईश्रीतमरामविराजै॥ ५॥ पांनचेतनां कहियै
 जाकीवाकीपुद्गलकेरी केवलग्यांनविभूतिजासकेआ
 नविनीभ्रमचेरी॥ देषोभाईश्रीतमरामविराजै॥ ६॥ एकेशपंचें
 दीपुद्गलजीवत्रतिहीग्यांता॥ शान्तताहीसुद्धरवको
 जानपनोसुषदाता॥ देषोभाईश्रीतमरामविराजै॥ ७॥ गोरदिश
 अत्रमोहतारलेऊमहावीरा॥ सिद्धरथमंदनजगवंदनयापा
 निकंदतथी॥ अत्रवहमतारलेऊमहावीरा॥ श्यांनीघ्यांनीहं
 तीजांती॥ वांतीराहरांतीरा॥ मोयकेकारुदोयनिवारतरोगवे॥
 दारतदीर॥ १॥ अत्रवमोहितारलेऊमहावीरा॥ आनंदपूरतसा
 मतासूरतचूरतआपदीरा॥ बालजतीदृढव्रतीसमकतीडा
 षदावातलनीरा॥ अत्रवमोहितारलेऊमहावीरा॥ गुनत्रने
 ततगवांतत्रंतनहीरा॥ शिकपूरहिमधीरा॥ शान्तएका
 ऊगुनहमपावेंहरकरेजवनीरा॥ अत्रवमोहतारलेऊमहा
 वीरा॥ १॥ गोर॥ ८॥ धाजैजेनेमताथपरमेश्वर॥ उत्तमयुसुषने
 कोंअतिडध्रुनवालशीलधरनेश्वर॥ जैजेनेमताथ
 परमेश्वर॥ तारापवैऊनूपसेयकरिजेअथतिमरदिनेश्वर
 १॥ तुमजसमहिमांहमकहाजातेनाषनसकतसुरेश्वर॥
 रइंद्रसचैमिलपूर्वेजेअमननरेश्वर॥ गुनत्रनेतहमअंतन
 पावेवरनसकतगनेश्वर॥ जैजेनेमताथपरमेश्वर॥ २॥ गु
 राधरसकलकरेयुतवाटेजेनूबजलपोतेश्वर॥ शान्तह

मच्छदमस्त्रुक्कहाकहेकहनसकतसरतेश्वर। जैनेनेमनाथपर।
भेम्बरा। ध। गीरी। ७५। अदिनाथतारनतरन। नातिरायमददेव्या।
नंदा। जनमन्त्रजोधात्रहाहरनं। अदिनाथतारनतरन। शकल
मवृच्छाणजुगलडधितभए। करमभूमिविधिमुषकरनं। अप॥
छरनुसमतलषवेते। भगतनमोगजोगधरनं। अदिनाथतार।
न। कायोत्सर्गिच्छासाधस्योदितवतषगमगपूजनचरन। धी
रजधारीवरषत्रहारीसहसवरसतपत्राचरते। अदिनाथतार।
नतरन। शकमनासिपरकासगंनकोसुरपतिकिभोसमोसर।
नं सवजनसुषदेसितपुरपुहचे। द्योन्नतनवितुमपदसरनेअ
दिनाथतारनतरन। ध। गीरी। ७६। अदिदेवपदंसेलीजेवती
यहहूजो। सिवमारगकौराहचनाचेत्रौरनकोईहूजो। सेली
जेसेलीजेवतीयहहूजो। देवधरमगुरसांवेजांनैकहूतीमार
गत्याप्ये। सेलीकेपरसादहमारो जिनचरननचितलाप्ये। से
लीजेवतीयहहूजो। इषचिरकालसह्योअतिभारीसोअवस।
हजविलाप्ये। इरितहरनमुषकरनमनीहरधरमपदारथ
पाप्ये। सेलीजेवतीयहहूजो। अद्योन्नतिकहेसकलसंतनि।
कौंनितप्रतिप्रनुगुनगाधो। जैनधरमपरधांतध्यानसोसव।
हीसिवसुषपावो सेजजेवतीयहहूजो। ७७। गगसोरवां दे
ष्योनेकफूललेनिकस्योविनुपूजाफलपायो। हरषतभाव।
मस्वोगजपगतलसुरगतअमरकहाप्ये। देषोनेकफूल
लेनिकस्योविनुपूजाफलपायो। शमालतिसुतादेहलीपू
जीअपछरइंइरिकाप्ये। हलीचरुसोदितवतषास्योदारि
दतुरततसाप्ये। दिष्योनेकफूललेनिकस्योविनुपूजाफल
पायो। पूजारहलकरजिनपुरुषनित्रिनसुरजवनवन
यो। चक्रनिस्तनयो जिनवरकोअवधिगंननुपजाप्ये। देषोने
कफूललेनिकस्योविनुपूजाफलपायो। अ। अरदरवलेष।
नुपूजोत्तापूजनसुरपतत्रायो। द्योन्नतत्रापसमानंकरतहे
सरधासोसिरताप्ये। देषोनेकफूललेनिकस्योविनुपूजाफ
लपायो। ध। इतिपद्ये। रागसारगा। भाईअपनपायाकमार

घानठपर

१६५

आए क्यों नपरीसे सहिये आगे तो तन वंघरु कह न है पूरव
 करम निदहिये ॥ नार्इ आपन पाप कमाण ॥ १ ॥ त्यों तजि माये जे
 नकों वहि धै घस्त्राये न हिये ॥ परवस तो सब ही वसहत हो
 सुवस सहे धन कहिये ॥ नार्इ आपन पाप कमाण ॥ २ ॥ रिण क
 हंम परने जदी जिमें मांगें क्यों ले रहिये ॥ कीटि जनमत पर
 उछन जे पद ते पद सहे जै लहिये नार्इ आपन पाप कमाण ॥ ३ ॥
 शिष डष्ट धन ले जलाल ची ॥ घान जा सरि सुवहिये ॥ घान तहे
 ऊसुवी सब मोते ए परनां मनि वहिये ॥ नार्इ आपन पाप कमाण
 ॥ ४ ॥ इति पंदां पंथां साग सोरठ ॥ नार्इ काया तेरी डष काटेरी ॥ वि
 षरत सीव कहा है ॥ तेरे पास सास तो तेरो ॥ ग्यो न सरि रमहा है
 नार्इ काया तेरी डष काटेरी ॥ १ ॥ वो देखतै न एप हिरतें कौ नैवे
 दगहा है

॥यादिद्वाली॥ :

१६७

१	तीनचोईसीका		बृहदाली	३२
१	दशोणवडो		जिनपूजाअष्टासूरी	३४
१	दशोणचोटी		इजाअष्टा	३६
२	नीवोणकाउभा		तीर्थकराकीजयमाल	३६
२	बपतामरजीना		वीसतीर्थकराकीजयपूजा	३७
४	एकेजावनाथा		मिथाकोअष्टक	३९
५	संस्कृतएकीना	सं	पुराकोअष्टक	३९
६	वीषापहाडसंस्कृत	सं	जिनवाणीपूजा	४०
७	कल्याणमिथर	सं	पंचमेरपूजाजाथा	४१
९	लक्ष्मीस्तात्र	सं	अष्टाईजीकीपूजाथा	४२
९	पारश्रुनाथस्तात्र		सोलाकारणकीजापू	४२
१०	देवाकीसीधाकीपू	सं	दसलक्षणजीकीजापू	४३
२१	सोलाकारणसंस्कृत	सं	रतनत्रयजीपूजापू	४५
२१	दसलक्षणसंस्कृत	सं	जैनस्तकजाथा	४७
२२	रतनत्रयसंस्कृत	सं	पदलीष्यते	५५
२२	अष्टाईजीकीपू	संस्कृत	वाइसपरिसह	५७
२४	पंचमेरपूजा	सं	समेदमिथरवीलास	५९
२४	पदलीष्या		चरवास्तक	६२
२५	संतिपाठ		वारघडीसरतकी	७२
२६	अक्षनिघण्टुपूजा		इसरीवारघडी	७६
२६	मुयमनूसतोर		राजकजीकीवतीसी	७७
२९	सोलाकारणसंस्कृत			

७३	पद्मशालिका	१३१	चारमास्यनेमनाथ
७४	स्वयंभूजाया	१३१	तेरापंथानएतीररता
७५	चारियेष्टेजीवासमास	+	करणीवानकरनी
७५	दसस्थानचौबीसी		चौरासीगोत्र
७७	दसबोल	१३५	मनमथकधरी
७९	जिनगुणमालासप्तमी	१३६	पदसारावीनती
७९	पदलिष्ठा	१३७	कथाअष्टानकाजी
७५	सहस्रनामजिनके	१४१	आरतीदसक
७७	सहस्रनामआसा०	१४५	नीश्वयआरती
१०२	अकलकाअष्ट	१४५	आत्मआरती
१०४	पंचमंगल	१४५	माहावीरजीकीआरती
१०६	वीषापहाडजा	१४७	पार्श्वनाथस्तोत्र
१०७	परमजोति	१४८	पूजाअर्थोमदी
१०७	निरवाणकोडगाथा	१४९	इअसग्रगाथाअर्थ
११०	अष्टतामरजीस्तोत्र	१५७	सोलासुयना
१११	दसमूत्र	१६०	पददानतरायकीरत
११७	नवग्रहपूरे		
१२५	पचारजावनापद		
१२५	दसअवनेमिनाथजी		